वाराणसी तान्त्रिक टेक्स्टस सिरीज नं० ६

श्रीकृष्णयामल महातन्त्रम्

सं० - डॉ० शीतला प्रसाद उपाध्याय

(प्राध्यापक शैवागम सं० सं० वि० वि० वाराणसी)

तान्त्रिक साहित्य में यामलतन्त्रों का प्रमुख स्थान रहा है। रुद्रयामल तन्त्र के प्रकाशन के बाद यह दूसरा यामल ग्रन्थ है जो आपके समक्ष प्रकाशित होने जा रहा है।

आज के गवेषणात्मक युग में एक ऐतिहासिक प्रश्न यह है कि वैष्णव साधना साहित्य में तान्त्रिक दृष्टि कैसे प्रविष्ट हुई ? प्राचीन काल से ही वैष्णव सम्प्रदाय की साधना में तत्त्व के ऊपर और लीला रहस्य के मूल में तान्त्रिक रहस्य किस-किस रूप में उपस्थित रहा है? इन सबके समाधान के लिए आवश्यक अन्य सामग्रियों में इस तन्त्र ग्रन्थ की उपादेयता स्वयं सिद्ध है, जैसा कि म० म० प० गोपीनाथ कविराज महोदय ने अपने ग्रन्थ "तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त" (पृ० - २९०) में कहा है....."श्रीकृष्ण-यामल महातन्त्र नामक ग्रन्थ में साधना और योग की दृष्टि के साथ वैष्णव दृष्टि कैसे मिल गयी थी, इसका पता चलता है...."।

इतना महत्वपूर्ण ग्रन्थ होते हुए भी यह अब तक मूल रूप में भी उपलब्ध नहीं रहा। यह संस्करण यथा उपलब्ध पाण्डुलिपियों के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें कुल २८ अध्याय हैं। प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका दी गई है जिसके कुछ पृष्ठ हिन्दी भाषा में भी हैं।

इस तन्त्र ग्रन्थ के प्रकाशन से तान्त्रिक साहित्य का भण्डार अवश्यमेव समृद्ध हो सकेगा तथा यह कार्य साधकों, विद्वानों और अनुसन्धाताओं के लिए अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होगा।

ग्रन्थ अत्यन्त सीमित संख्या में छप रहा है। अतः पाठकों से निवेदन है कि ५०/- एडवांस भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा ले। इस प्रकार एडवांस भेजने वालों को हम ग्रन्थ पर ३५% कमीशन काट कर वी. पी. से भेजेगें, डाक खर्च आप को देना होगा।

अत्यन्त शीघ्र प्रकाशित

तन्त्र ग्रन्थमाला ७

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

रामकुमार राय

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

देवता खण्ड

रामकुमार राय

प्राच्य प्रकाशन. वाराणसी

नवीन संस्करण १९९०

प्रकाशक :

प्राच्य प्रकाशन

पोस्ट बाक्स नं० २०३७

वाराणसी - २२१००२ (भारत)

मूल्य २०० रुपये

मुद्रक :

अनूप प्रिण्टिंग वर्क्स, जगतगंज, वाराणसी

TANTRA GRANTHAMALA No. 7

Hindi Mantra Maharnava

(Devata Khand)

Text with Hindi Translation by

RAM KUMAR RAI

Prachya Prakashan

Post Box No. 2037, Varanasi-221 002

1990

New Edition : 1990

PRACHYA PRAKASHAN

Post Box No. 2037

Varanasi-221 002

Price Rs. 200.00

Printed by
R. K. Rai
At the
Anoop Printing Works,
Varanasi–221 002

भूमिका

मन्त्रशास्त्र भारत का ऐसा विज्ञान है जिसके चमत्कारों को सुन देखकर सम्पूर्ण विश्व चकित है। इस प्राचीन विज्ञान का अधिकांश विवरण अब प्रायः लुप्त हो चला है जिसके कारण हमें बहुधा इसकी सत्यता तथा प्रामाणिकता पर ही सन्देह होने लगता है। फिर भी, यह एक शाश्वत शास्त्र है। इसकी सत्यता केवल साधना से ही प्रमाणित हो सकती है। इस शास्त्र की प्रतीत होनेवाली अप्रभावकता का मुख्य कारण ज्ञान तथा साधना का अभाव ही है। आज हर व्यक्ति केवल यही चाहता है कि उसे कोई ऐसा मन्त्र बता दिया जाय जिसे पढ़ने मात्र से ही वह चमत्कारिक परिणाम प्राप्त कर ले। परन्तु मन्त्रशास्त्र की प्रत्येक पुस्तक में उल्लेख है कि पुस्तक में लिखा मन्त्र निष्प्रभावी होता है क्योंकि प्रत्येक मन्त्र को जागृत करने के लिए विधिवत साधना की आवश्यकता होती है; और आज कदाचित ही कोई इस प्रकार की कठिन साधना में प्रवृत्त होने का धैर्य नहीं रखता है। प्राचीनकाल में जब हमारे ऋषि-मुनि ऐसी साधनायें करते थे तब उनको तदनुसार सिद्धियाँ भी प्राप्त होती थीं। इस मन्त्रशास्त्र के ही प्रभाव से प्राचीनकाल में मनुष्य न केवल देवताओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होता था, वरन् देवों को वशीभूत करके उनसे अपना प्रयोजन भी सिद्ध कर लेता था। इस मन्त्रशास्त्र के प्रभाव से ही अन्यान्य असुर और राक्षस देवों को पराजित करने में समर्थ हुये थे। परकायप्रवेश, जल तथा अग्नि का स्तम्भन, जल के भीतर अबाध गति, आकाशगमन, ब्रह्माण्ड के विभिन्न लोकों की यात्रा करने की क्षमता, अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व, वशित्व तथा कामावसायित्व आदि अष्टसिद्धियाँ, मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, शान्ति आदि षट्कर्म, शत्रुओं पर विजय, अस्त्र-शस्त्रों को प्रभावी या निष्प्रभावी बनाना, इत्यादि अनेक अलौकिक प्रतीत होनेवाले कार्य इस मन्त्रशास्त्र द्वारा ही सम्भव होते थे। आज भी यदि साधना द्वारा इस शास्त्र को सिद्ध कर लिया जाय

तो कुछ भी असम्भव नहीं है। परन्तु अब न तो किसी में इतना धैर्य है और न इस शास्त्र की विधियाँ ही कहीं एकत्र सुलभ हैं। मन्त्रमहोदधि (नौका टीका युक्त) के प्रकाशन से इस कमी को बहुत अंशों तक दूर किया गया है, किन्तु उसमें संग्रहीत मन्त्रों का क्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित होने से एक और अधिक विस्तृत संग्रह की आवश्यकता का सदैव अनुभव किया जाता रहा है।

प्रस्तु 'मन्त्र महार्णव' में इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है। जैसा इसका नाम है वैसा ही इसका गुण है। इसमें सभी प्रमुख देवताओं, दैत्यों, यक्षों, गन्धर्वों, किन्नरों, योगिनियों, अप्सराओं, देवकन्याओं, नागकन्याओं, राक्षसों और प्रेतादिकों से सम्बद्ध मन्त्र तथा उनके अनुष्ठान के सम्पूर्ण विधान को विधिवत और क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है। इनके अतिरिक्त भारत की प्राचीन रसायन क्रिया, इन्द्रजाल, कल्पादि, स्वप्नसिद्धि, कर्णपिशाचिनी, पुत्रोत्पत्ति और अन्यान्य काम्यकर्मों से सम्बद्ध यथाशक्ति सम्पूर्ण विधियों और तत्सम्बन्धी सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। इसमें ऐसी सुगम रीतियाँ बताई गई हैं जिनसे अल्पज्ञ भी सरलता से अनुष्ठान करते हुये अपने इष्ट को सिद्ध कर सकते हैं क्योंकि इष्टदेवता का मन्त्रोद्धार, देवासन, प्राणप्रतिष्ठा, आवरण पूजा, षोडशोपचार पूजन, स्तोत्र, कवच, हृदय, सहस्रनाम आदि सम्पूर्ण पञ्चाङ्ग एक ही स्थान पर विधिवत और क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

सम्पूर्ण ग्रन्थ इतना विशाल है कि इसे हम तीन भागों—देवता खण्ड, देवी खण्ड, और मिश्र खण्ड में प्रस्तुत कर रहे हैं।

अन्यान्य स्थानों पर हमने पुराने और दूषित पाठों को संशोधित करके प्रस्तुत किया है। अनेक नवीन सामग्री भी इसमें जोड़ दी गई है जिससे पूर्वकाल में प्रकाशित मूलमन्त्र महार्णव की अपेक्षा प्रस्तुत संस्करण अधिक प्रामाणिक, विश्वसनीय, उपयोगी, और अनेक मौलिकताओं से युक्त है।

मन्त्रशास्त्र की गोपनीयता को सुरक्षित रखने तथा अनधिकारियों के हाथ में न पड़ने देने की दृष्टि से मन्त्रों तथा अनुष्ठान-विधियों को संस्कृत में प्रच्छन्न रूप से कूट भाषा में व्यक्त किया जाता है। इसी कारण, कुछ लोग मन्त्रशास्त्र के ग्रन्थों को अनुवाद सहित प्रस्तुत करने का विरोध भी करते हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सिद्ध करने तथा इसके प्रति आस्था को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये इसे सर्वसुलभ बनाना आवश्यक है जिससे मन्त्रसिद्धि के परिणामस्वरूप तज्जनित फलों की पुष्टि हो सके। इसी उद्देश्य से हमने हिन्दी अनुवाद सहित ग्रन्थ को प्रस्तुत

करने का निश्चय किया है जिससे यह सर्वोपयोगी हो सके। अनधिकार चेष्टा से बचाने के लिये शास्त्र को ही लुप्त कर देना उचित नहीं है। फिर, स्वयं इस शास्त्र में ही लिखा है कि अनावश्यक और अनाधिकारिक प्रयोग का परिणाम स्वयं ऐसे साधक के लिये घातक होता है। अतः मेरा विचार है कि इस प्राचीन विज्ञान को गुप्त रखने की अपेक्षा सुलभ बनाकर इसके व्यापक प्रयोग से इसकी प्रभावोत्पादकता की पुष्टि करके हम इसकी प्राचीन मर्यादा की पुनः प्रतिष्ठा और सर्वसाधारण की इसके प्रति आस्थावृद्धि कर सकेंगे। इससे आज सर्वत्र जो यह धारणा बन गई है कि मन्त्र-तन्त्र सब मिथ्या हैं, इसका भी प्रतिकार होगा।

इन्हीं उद्देश्यों से मैंने मन्त्र महार्णव को हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत करने का निश्चय किया है। फिर भी, यह एक अत्यन्त गूढ़ विषय है और अनेक परम्पराओं तथा ग्रन्थों के लुप्त हो जाने से अनुवाद की कठिनाई और अपनी अल्पज्ञता को देखते हुए मैं यह नहीं कह सकता कि इस कार्य में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है। यदि किसी भी पाठक को कहीं कोई त्रुटि प्रतीत हो तो उनसे निवेदन है कि वे उससे मुझे अवगत कराने की कृपा करे जिससे भावी संस्करणों में मैं उनका निवारण करके ग्रन्थ को और अधिक शुद्ध और प्रभावी बना सकूं।

रामकुमार राय

विषय-सूची

चित्रसूची

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

देवता खण्ड

श्री गणेशाय नमः

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

पुंदेवतात्मक प्रथम खण्ड

प्रथम तरंग

मङ्गलाचरण

श्रीगणेशाय नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥
गणपतिं प्रणमामि सुसिद्धिदं हरसुतं कुचुमध्यमुखं विभुम् ।
गिरिसुतां गणराजसुवंदितां शिवमिहेप्सितदं शिवदं नृणाम् ॥ १ ॥
श्रीसूर्यप्रभृतीन्सुरांश्च सततं ये साक्षिणः कर्मणां
राधाकृष्णपदारविन्दयुगल ध्येयं सदा योगिभिः ।
सावित्र्य सुविभूषितं सुरवरं ब्रह्माणमीडेऽत्र ते
ग्रन्थे मन्त्रमहार्णवे प्रतिदिनं कुर्वन्तु सन्मङ्गलम् ॥ २ ॥

वक्ष्यते कलिसिद्धोयं ग्रन्थो मन्त्रमहार्णवः ॥ ३ ॥ सर्वतन्त्रेकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् । वक्ष्यामि परमप्रीत्या रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ॥ ४ ॥ नामूलं लिख्यते किञ्चिदिह विज्ञेयमादरात् । नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेद विधानके ॥५॥ तन्त्रान्तरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः । उक्तान्यनेक-देवानां प्रसिद्धानि च सन्ति वै ॥ ६ ॥ देशदेशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया । साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥७॥ त्रीणि खण्डानि ग्रन्थेस्मिन्पूर्वं मध्यं तथोत्तरम् । पुन्देवानां पूर्वखण्डे स्त्रीदेवीनां च मध्यमे । यक्षिणीप्रभृतीनां तु तथैवोत्तरखण्डके ॥ ८ ॥ अनुष्ठानं मया प्रोक्तं तरङ्गैस्तु पृथक्-पृथक् ॥ ९ ॥ संगृहीतमिमं ग्रन्थं मया च लघु बुद्धिना । अगीकुर्वन्तु शास्त्रज्ञा दयां कृत्वा ममोपरि ॥ १० ॥ यदि दोषो भवेत्कुत्रचिन्मदज्ञान-कारणात् । प्रार्थये सुजनास्तद्वै क्षमध्वं मेपराधकम् ॥ ११ ॥ यदत्र

वाक्यमधिकं न्यूनं यत्र च कुत्रचित् । रोषमुत्सृज्य तत्सर्वं निर्दोषं कुरुत द्विजाः ॥ १२ ॥

मैं कलियुग में सिद्धिप्रद मन्त्रमहार्णव को कह रहा हूं। सर्वतन्त्रों के मुकुट, सर्वसारमय, ध्रुव, समस्त मन्त्रग्रन्थों के रहस्यस्वरूप इस ग्रन्थ को परम प्रीति के कारण कहूंगा। इसमें शास्त्रीय प्रमाण से रहित कुछ भी नहीं लिखा जा रहा है। इसे आप भलीभाँति जान लें। नाना भेदविधानवाले इस तन्त्रग्रन्थ में संशय नहीं करना चाहिये। मुनीश्वरों ने विभिन्न तन्त्रों में एक ही देवता के लिये अनेक प्रकार के विधान बताये हैं जो सभी प्रसिद्ध हैं। मैंने दुर्गा की कृपा से साधकों के हितार्थ, विभिन्न देशों से उन सब का संग्रह किया है। इस ग्रन्थ में तीन खण्ड है : पूर्वखण्ड, मध्यखण्ड और उत्तरखण्ड, जिनमें क्रमशः पुंदेवताओं, देवियों और यक्षिणी आदि का वर्णन है। अलग-अलग तरङ्गों में मैंने इन सबका अनुष्ठान बताया है। इस ग्रन्थ की रचना मुझ लघुबुद्धिवाले व्यक्ति ने की है जिसे शास्त्रज्ञ मुझ पर कृपा कर स्वीकार करें। यदि मेरे अज्ञानवश कहीं पर कोई दोष रह गया हो तो मेरी प्रार्थना है कि सज्जन मेरे अपराध को क्षमा करें। हे द्विजगण ! इस ग्रन्थ में यदि कहीं पर कोई वाक्य न्यून या अधिक हो तो रोष का परित्याग करके आप उन सब को दोषरहित कर लें।

तत्रादौ तन्त्रसंज्ञाः ।

अब सबसे पहले मैं तन्त्रों के नामों का उल्लेख करूँगा :

सिद्धीश्वरं महातन्त्रं कालीतन्त्रं कुलार्णवम् । ज्ञानार्णवं नीलतन्त्रं फेत्कारीतन्त्रमुत्तमम् ॥१३॥ देव्यागमं चोत्तराख्यं श्रीक्रमंसिद्धियामलम् । मत्स्यसूक्तं सिद्धिसारं सिद्धिसारस्वतं तथा ॥ १४ ॥ वाराहीतन्त्रं देवेशि योगिनीतन्त्रमुत्तमम् । गणेशमर्षिणीतन्त्रं नित्यतन्त्रं शिवागमम् ॥ १५ ॥ चामुण्डाख्यं महेशानि मुण्डमालाख्यतन्त्रकम् । हंसमाहेश्वरं तन्त्रं निरुत्तरमनुत्तमम् ॥ १६ ॥ कुलप्रकाशकं देवि कल्पं गान्धर्वकं शिवे । क्रियासारं निबन्धाख्यं स्वतन्त्रं मन्त्रमुत्तमम् ॥१७॥ सम्मोहनं तन्त्रराजं ललिताख्यं तथा शिवे । राधाख्यं मालिनीतन्त्रं रुद्रयामलमुत्तमम् ॥ १८ ॥ बृहच्च श्रीक्रमं तन्त्रं गवाक्षं कुसुमादिनि । विशुद्धेश्वरतन्त्रं च मालिनीविजयं तथा ॥ १९ ॥ समयाचारतन्त्रं च भैरवीतन्त्रमुत्तमम् । योगिनीहृदयं तन्त्रं भैरवं परमेश्वरि ॥ २० ॥ सनत्कुमारकं तन्त्रं योनितन्त्रं प्रकीर्तितम् । तन्त्रान्तरं च देवेशि नवरत्नेश्वरं तथा ॥ २१ ॥ कुलचूडामणिं तन्त्रं भाव-

चूडामणीयकम् । तन्त्रदेवप्रकाशं च कामाख्यानामकं तथा ॥ २२ ॥ कामधेनुं कुमारीं च भूतडामरसंज्ञकम् । नलिनीविजयं तन्त्रं यामलं ब्रह्मयामलम् ॥ २३ ॥ विश्वसारं महातन्त्रं महाकुलकुलान्तनम् । कुलोड्डीशं कुब्जकाख्यं यन्त्रचिन्तामणीयकम् ॥ २४ ॥

तन्त्र ग्रन्थों की नामावली : १. सिद्धीश्वर तन्त्र, २. महातन्त्र, ३. कालीतन्त्र, ४. कुलार्णव तन्त्र, ५. ज्ञानार्णव तन्त्र, ६. नील तन्त्र, ७. फेत्कारी तन्त्र, ८. देव्यागम तन्त्र, ९. उत्तर तन्त्र, १०. श्रीक्रम तन्त्र, ११. सिद्धियामल तन्त्र, १२. मत्स्यसूक्त तन्त्र, १३. सिद्धिसार तन्त्र, १४. सिद्धिसारस्वत तन्त्र, १५. बाराही तन्त्र, १६. योगिनी तन्त्र, १७. गणेशमर्षिणी तन्त्र, १८. नित्य तन्त्र, १९. शिवागम तन्त्र, २०. चामुण्डा तन्त्र, २१. मुण्डमाला तन्त्र, २२. हंसमाहेश्वर तन्त्र, २३. निरुत्तर तन्त्र, २४. कुलप्रकाशक तन्त्र, २५. कल्प तन्त्र, २६. गान्धर्व तन्त्र, २७. क्रियासार तन्त्र, २८. निबन्ध तन्त्र, २९. स्वतन्त्र तन्त्र, ३०. सम्मोहन तन्त्र, ३१. तन्त्रराज तन्त्र, ३२. ललिता तन्त्र, ३३. राधा तन्त्र, ३४. मालिनी तन्त्र, ३५. रुद्रयामल तन्त्र, ३६. बृहत्तन्त्र, ३७. श्रीक्रम तन्त्र, ३८. गवाक्ष तन्त्र, ३९. कुसुमादिनी तन्त्र, ४०. विशुद्धेश्वर तन्त्र, ४१. मालिनी विजय तन्त्र, ४२. समयाचार तन्त्र, ४३. भैरवी तन्त्र, ४४. योगिनीहृदय तन्त्र, ४५. भैरव तन्त्र, ४६. सनत्कुमार तन्त्र, ४७. योनि तन्त्र, ४८. नवरत्नेश्वर तन्त्र, ४९. कुलचूड़ामणि तन्त्र, ५०. भावचूड़ामणि तन्त्र, ५१. तन्त्रदेवप्रकाश तन्त्र, ५२. कामाख्या तन्त्र, ५३. कामधेनु तन्त्र, ५४. कुमारी तन्त्र, ५५. भूतडामर तन्त्र, ५६. नलिनी-विजय तन्त्र, ५७. यामल तन्त्र, ५८. ब्रह्मयामल तन्त्र, ५९. विश्वसार तन्त्र, ६०. महातन्त्र, ६१. महाकुलकुलान्तन तन्त्र, ६२. कुलोड्डीश तन्त्र, ६३. कुब्जा तन्त्र, ६४. यन्त्रचिन्तामणि तन्त्र ।

एतानि तन्त्ररत्नानि सफलानि युगेयुगे । कालीविलासकादीनि तन्त्राणि परमेश्वरि ॥ २५ ॥ कलिकाले प्रसिद्धानि अश्वाक्रान्तासु भूमिषु ॥ २६ ॥

ये तन्त्ररत्न ग्रन्थ सभी युगों में फल देनेवाले हैं। हे परमेश्वरि ! कालीविलास आदि तन्त्र कलियुग में अश्वाक्रान्ता भूमियों में प्रसिद्ध हैं।

अथ साध्यजन्मनक्षत्रवृक्षा यथा

शारदातिलके : कारस्करोथ धात्री स्यादुदुम्बरतरुः पुनः । जम्बूः खदिरकृष्णाख्यौ वंशपिप्पलसंज्ञकौ ॥ २७ ॥ नागरोहिणीनामानौ पलाश-

प्लक्षसंज्ञको। अम्बष्ठबिल्वार्जुनाख्यविकङ्कतमहीरुहाः ॥ २८ ॥ बकुलः सरलः सर्ज्जो वंजुलः पनसार्ककौ। शमीकदम्बनिम्बाम्रमधूका वृक्षशाखिनः ॥ २९ ॥ इत्यश्विन्यादिक्रमेण योजयेत्।

साध्यजन्म नक्षत्र-वृक्ष नामावली : नक्षत्र सत्ताईस हैं और तदनुसार साध्यजन्मों से सम्बद्ध वृक्षों की नामावली शारदातिलक के अनुसार क्रम से दी जा रही है :

वृक्ष	नक्षत्र	वृक्ष	नक्षत्र
१. कारस्कर	अश्विनी	१४. बिल्व (बेल)	चित्रा
२. धात्री (आंवला)	भरणी	१५. अर्जुन	स्वाती
३. उदुम्बर (गूलर)	कृत्तिका	१६. विकङ्कत	विशाखा
४. जम्बू (जामुन)	रोहिणी	१७. बकुल (मौलसिरी)	अनुराधा
५. खदिर (खैर)	मृगशिरा	१८. सरल	ज्येष्ठा
६. कृष्ण	आर्द्रा	१९. सर्ज	मूल
७. वंश (बाँस)	पुनर्वसु	२०. वञ्जुल	पूर्वाषाढ़ा
८. पीपल	पुष्य	२१. पनस (कटहल)	उत्तराषाढ़ा
९. नाग	आश्लेषा	२२. अर्क (श्वेत मदार)	श्रवण
१०. रोहिणी	मघा	२३. शमी	धनिष्ठा
११. पलाश	पूर्वा फाल्गुनी	२४. कदम्ब (कदम)	शतभिषा
१२. प्लक्ष (पकड़ी)	उत्तरा फाल्गुनी	२५. निम्ब (नीम)	पूर्वाभाद्रपद
१३. अम्बष्ठ	हस्त	२६. आम्र (आम)	उत्तराभाद्रपद
		२७. मधूक (महुआ)	रेवती

अथ युगभेदेन देवताभेदः।

पूजास्कन्धे : ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः। द्वापरे भगवान् विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः ॥ ३० ॥

युगभेद से देवताभेद : पूजास्कन्ध के अनुसार सतयुग में ब्रह्मा देवता की पूजा होती है, त्रेतायुग में सूर्य देवता की पूजा होती है, द्वापर युग में विष्णु देवता की पूजा होती है तथा कलियुग में महेश्वर अर्थात् शिव देवता की महत्ता है इस कारण उन्हीं की पूजा होती है।

अथ पुरश्चरणकरणार्थमादावश्यकज्ञातव्यपदार्थानाह।

कुलार्णवे : तिथिवारञ्च नक्षत्रं योगमासात्तु पक्षकम्। दीपेशं कुलचक्राणि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३१ ॥ ऋषिच्छन्दोदेवताङ्गन्यास-

ध्यानार्चनादिकम्। बीजशक्ती कालवेधौ ज्ञात्वा मन्त्राणि साधयेत् ॥३२॥ पञ्चशुद्धासनं प्राणायाम न्यासाक्षिमालिकाः। दोषसंस्कारमुद्रादीन् ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३३ ॥ साध्यसाधककर्माणि लेखन्या द्रव्यपञ्चकम्। स्थानं यन्त्रप्रमाणं च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३४ ॥ अथवासनादिदिग्वर्णनाडीतत्त्वानुसङ्गतिम्। देवताकालसन्द्रां च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३५ ॥ उत्पत्तिवासनावर्णन्मूर्तिसंस्कारसंस्थितिम्। कुण्डद्रव्य प्रमाणादीन् ज्ञात्वा होमं समाचरेत् ॥ ३६ ॥ अग्निप्रभांधूम्रवर्णं ध्यानगन्धशिखाकृतीः। दूतचेष्टादिकं ज्ञात्वा कल्पयेत्तु शुभाशुभम् ॥ ३७ ॥ मन्त्रतत्त्वानुसन्धानं देहावेशादिलक्षणम्। मन्त्रोच्चारणभेदश्च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥३८॥ मण्डलं कलशं दिव्यं शुद्धगन्धाष्टकादिकम्। दीक्षां नामप्रदानादि च ज्ञात्वा दीक्षां समाचरेत् ॥ ३९ ॥ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं नियमं नाम वासनाम्। पूजाधारणयन्त्रादि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ४० ॥ पूजागृहप्रवेशादि कुलपूजनलक्षणम्। कुलद्रव्यादिशुद्धिश्च ज्ञात्वा पूजा समाचरेत् ॥ ४१ ॥

पुरश्चरण करने के लिये आवश्यक ज्ञातव्य पदार्थ : कुलार्णव तन्त्र के अनुसार साधक को चाहिये कि वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मास, ऋतु, पक्ष, दीपेश और कूर्मचक्र आदि को जानकर कर्म करे। ऋषि, छन्द, देवता, अङ्गन्यास, ध्यान, अर्चना, बीज, शक्ति, काल, वेध आदि को जानकर मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। पाँच प्रकार के शुद्ध आसन, प्राणायाम, रुद्राक्ष की माला, दोष-संस्कार, मुद्रा आदि को समझ कर कर्म करना चाहिये। साध्य, साधक, कर्म और लेखनी आदि पाँचों द्रव्य, स्थान तथा यन्त्रों के प्रमाणों को जान कर कर्म करना चाहिये। इसी प्रकार आसन, दिशा, वर्ण तथा नाड़ी आदि तत्वों की संगति को जानकर तथा देवता व काल की संज्ञा को जानकर कर्म करना चाहिये। उत्पत्ति, वासना, वर्ण, मूर्ति, संस्कार, संस्थिति, कुण्ड और द्रव्यों के प्रमाण आदि को जानकर होम करना चाहिये। अग्नि की प्रभा, धूये का वर्ण, ध्यान, गन्ध, शिखा, आकृति तथा दूत की चेष्टा आदि को जानकर शुभ या अशुभ लक्षणों को जानना चाहिये। मन्त्रतत्व के अनुसन्धान के आधार पर देहावेशादि के लक्षणों का अनुमान करना चाहिये, और मन्त्रोच्चारण भेद का ज्ञान प्राप्त करके साधन कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये। मण्डल, कलश, दिव्यशुद्धि, आठों प्रकार के गन्ध, दीक्षा तथा नामकरण आदि को समझ कर कर्म करना चाहिये। नित्य, नैमित्तिक, काम्य, नियम, नाम,

वासना, पूजा धारण करने वाले यन्त्रों को जानकर कर्म करना चाहिये। पूजागृह और उसमें प्रवेश आदि के नियम, कुलपूजन का लक्षण तथा कुल द्रव्यादि की शुद्धि को जानकर पूजा करनी चाहिये।

अथ गुरुशिष्यपरीक्षणम्।

ज्ञानेन क्रियया वापि गुरुः शिष्यं परीक्षयेत्। संवत्सरं तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा प्रयत्नतः ॥४२॥ शिष्योऽपि लक्षणैरेतैः कुर्याद्गुरुपरीक्षणम्। आनन्दाद्यैर्जपैस्तोत्रैर्ध्यानहोमार्चनादिषु ॥ ४३॥ ज्ञानोपदेशसामर्थ्यं मन्त्रशुद्धमपीश्वरम्। बोधकत्वं च विज्ञाय शिष्योभूयान्न चान्यथा ॥ ४४ ॥

गुरु शिष्य की परीक्षा : गुरु को चाहिये कि वह ज्ञान या क्रिया से शिष्य की प्रयत्नपूर्वक परीक्षा करे। यह परीक्षा एक वर्ष, छः मास या तीन मास तक हो सकती है। शिष्य भी इन्हीं लक्षणों से और जप, स्तोत्र, ध्यान, होम और अर्चना आदि में प्रवीणता के आधार पर गुरु की परीक्षा करे। शुद्ध मन्त्र और मन्त्र से शुद्ध, समर्थ और ज्ञानोपदेश करने में निपुण, पढ़ाने में प्रवीण गुरु को जानकर ही शिष्य बनना चाहिये। यदि गुरु में ये गुण न हों तो उसका शिष्यत्व स्वीकार नहीं करना चाहिये।

कुलार्णवतन्त्रे : श्रीगुरुः परमेशानि शुद्धवेषो मनोहरः। सर्वलक्षणसम्पन्नः सर्वावयवशोभितः ॥४५॥ अग्रगण्यो गभीरश्च पात्रापात्रविशेषवित्। शिवविष्णुसमः साधुर्न च दर्शनदूषकः ॥४६॥ नित्यनैमित्तिके काम्ये रतः कर्मण्यनिन्दिते। यदृच्छालाभसन्तुष्टो गुणदोषविभेदकः। इत्यादिलक्षणोपेतः श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥ ४७ ॥

कुलार्णव तन्त्र में भगवान् शिव ने पार्वतीजी से कहा है कि हे पार्वती! गुरु को शुद्ध वेश धारण करने वाला, मनोहर स्वरूप वाला, सब लक्षणों से सम्पन्न, सब अङ्गों से पूर्ण, अग्रगण्य अर्थात् नेतृत्व शक्ति वाला, गम्भीर स्वभाव वाला, पात्र और अपात्र का ज्ञान रखने वाला, शिव और विष्णु के समान साधु और देखने में अशुभ न होना चाहिये। गुरु को नित्य नैमित्तिक और निन्दारहित कर्मों में लगे रहना चाहिये। उसे स्वयं प्राप्त होनेवाले लाभ में सन्तुष्ट रहते हुये गुण और दोष के अन्तर का ज्ञाता होना चाहिये। हे प्रिये! इन सब लक्षणों से जो युक्त हो उसे गुरु कहा गया है।

अथ गुरुमाहात्म्यम्।

अत्रिनेत्रः शिवः साक्षादचतुर्बाहुरच्युतः। अचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥ ४८ ॥

गुरु माहात्म्य : कुलार्णव तन्त्र में भगवान् शिव ने पार्वतीजी से गुरु की महिमा के सम्बन्ध में कहा है कि हे प्रिये! गुरु को चाहिये कि वह तीन नेत्रों वाला न होकर भी शिव के समान, चार हाथों वाला न होकर भी अच्युत अर्थात् विष्णु के समान तथा चार मुखोंवाला न होकर भी ब्रह्मा के समान महान् होवे।

अथ त्याज्यगुरुः।

निन्दितस्तु पितुर्मन्त्रस्तथा मातामहस्य च। सोदरस्य कनिष्ठस्य वैरिपक्षाश्रितस्य च ॥ ४९ ॥ शूद्राणां च तथा स्त्रीणां गुरुत्वं न कदाचन। योग्यमाद्यं गुरुं त्यक्त्वा शिष्यः शूद्रं क्रियाविदम्। गुरुं समाश्रयेदन्यं यः प्रयाति स दुर्गतिम् ॥ ५० ॥

त्याज्य गुरु : पिता और नाना से मन्त्र लेना अर्थात् उन्हें दीक्षा गुरु बनाना निन्दित है। शत्रु पक्ष के आश्रित व्यक्ति, छोटे भाई, शूद्र तथा स्त्री आदि को गुरु नहीं बनाना चाहिये। जो योग्य श्रेष्ठ गुरु को छोड़कर क्रिया को जानने वाले शूद्र को गुरु बनाता है वह दुर्गति को प्राप्त होता है।

अथ त्याज्यशिष्यः।

न देयमर्थलुब्धाय पिशुनायास्थिराय च। भक्तिश्रद्धाविहीनाय शुश्रूषाविमुखाय च ॥ ५१ ॥

त्याज्य शिष्य : जो शिष्य धन का लोभी हो, चुगली करनेवाला हो, अस्थिर चित्तवाला हो, भक्ति और श्रद्धा से रहित हो और सेवा से विमुख हो, उसे दीक्षा नहीं देनी चाहिये।

दीक्षा मुहूर्तनिर्णयः।

वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्तिकेथ वा। फाल्गुने मार्गशीर्षे वा कुर्यान्मन्त्रस्य दीक्षणम् ॥ ५२ ॥ सिद्धान्तशेखरे : शरत्काले च मन्त्रस्य दीक्षा श्रेष्ठफलप्रदा। फाल्गुने मार्गशीर्षे च ज्येष्ठे दीक्षा तु मध्यमा ॥५३॥ आषाढे श्रावणे माघे कनिष्ठा सद्भिरादृता। निन्दितश्चाधिमासस्तु पौषो भाद्रपदस्तथा ॥ ५४ ॥

दीक्षामुहूर्तनिर्णय : मन्त्र की दीक्षा वैशाख, श्रावन, आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन या मार्गशीर्ष मास में देनी चाहिये। सिद्धान्तशेखर में कहा गया है कि शरत्काल में मन्त्र की दीक्षा श्रेष्ठ फल देने वाली होती है। फाल्गुन, मार्गशीर्ष तथा ज्येष्ठ में दी जानेवाली दीक्षा मध्यम फल देनेवाली होती है। अषाढ़ तथा श्रावण मास में दी जानेवाली दीक्षा कनिष्ठ फल

देनेवाली होती है। अधिमास के सभी महीनें तथा पौष और भाद्रपद दीक्षा के लिए निन्दित कहे गये हैं।

मुक्तिकामैः कृष्णपक्षे भूतिकामैः सिते सदा। पूर्णिमा पञ्चमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा॥ ५५॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ताः सर्वकामदाः। रवौ गुरौ विधौ दीक्षा कर्तव्या बुधशुक्रयोः॥ ५६॥

मुक्ति चाहने वालों को कृष्णपक्ष में दीक्षा लेनी चाहिये तथा लौकिक समृद्धि चाहने वालों को सदा शुक्लपक्ष में दीक्षा लेनी चाहिये। पूर्णिमा, पञ्चमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी तथा दशमी तिथियाँ सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली होती हैं। रविवार, बृहस्पतिवार, सोमवार, बुधवार तथा शुक्रवार को दीक्षा देनी चाहिये।

अश्विनीरोहिणीस्वातीविशाखाहस्तभेषु च। ज्येष्ठोत्तरात्रये चैव कुर्यान्मन्त्राभिषेचनम्॥ ५७॥

अश्विनी, रोहिणी स्वाती, विशाखा, हस्त, ज्येष्ठा तथा उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों में मन्त्र की दीक्षा देनी चाहिये।

श्रवणार्द्राधनिष्ठा च पुष्यः शतभिषा तथा। दीक्षानक्षत्रजातानीत्या-हुस्तन्त्रार्थकोविदाः॥ ५८॥

श्रावण, आर्द्रा, धनिष्ठा तथा शतभिषा नक्षत्रों को तन्त्रशास्त्र के मर्मज्ञों ने दीक्षानक्षत्र कहा है।

मेषकर्कटकन्यासु तुलायां वृश्चिके तथा। मकरे कुम्भके चैव दीक्षा सर्वशुभावहा॥ ५९॥

मेष, कर्कट, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर तथा कुम्भ राशियों में दीक्षा देना हर प्रकार से शुभ होता है।

षष्ठी भाद्रपदे मास्याश्विने कृष्णा यत्रोदशी। कार्तिके नवमी शुक्ला श्रावणे कृष्णपञ्चमी॥ ६०॥ एतानि देवपर्वाणि तीर्थकोटिफलानि च।

भाद्रपद के कृष्णपक्ष की षष्ठी, आश्विन के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी, कार्तिक के शुक्लपक्ष की नवमी, श्रावण के कृष्णपक्ष की पञ्चमी ये तिथियाँ देवपर्व कही गयी हैं और इनमें दीक्षा देने से करोड़ों तीर्थों का फल होता है।

निन्दितेष्वपि मासेषु दीक्षोक्ता ग्रहणे शुभा॥ ६१॥ न मासतिथि-वारादिशोधनं सूर्यपर्वणि। सिद्धिर्भवति मन्त्रस्य विनाभ्यासेन वेगतः॥६२॥

निन्दित महीनों में भी यदि ग्रहण लगा हो तो उस समय दीक्षा देना शुभ होता है। सूर्य पर्व में मास, तिथि तथा बार आदि के शोधन की

आवश्यकता नहीं होती। इस दिन बिना अभ्यास के ही वेगपूर्वक मन्त्र की सिद्धि हो जाती है।

रुद्रयामले : सतीर्थेर्कविधुग्रासे महापर्वणि चैव हि। मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत्॥ ६३॥

रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है कि एक साथ सूर्य तथा चन्द्रमा के ग्रहण लगने पर तथा महापर्व पर मन्त्र दीक्षा देनेवाले को मास और नक्षत्र आदि का शोधन नहीं करना चाहिये।

संहितायाम् : विषुवेप्ययनद्वन्द्वे संक्रांत्यां दमनोत्सवे। दीक्षा कार्यान्य-कालेपि पवित्रे गुरुपर्वणि॥ ६४॥ शैवागमे च : सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च। पुण्यक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे देवीपोठे चतुष्टये। प्रयागे श्रीगिरौ काश्यां कालाकालं न शोधयेत्॥ ६५॥ उपदेशसुधातन्त्रे : चन्द्रसूर्य-ग्रहे चैव सिद्धक्षेत्रे शिवालये। मन्त्रमात्रप्रकथनमुपदेशः स उच्यते॥६६॥ सारसंहितायाम् : तिथिं विनापि दीक्षायां विशिष्टं वासरं शृणु। दुर्लभे सद्गुरूणां च सकृत्सङ्ग उपस्थिते॥६७॥ तदनुज्ञा यदा लब्धा स दीक्षा-वसरो महान्। ग्रामे वा यदि वारण्ये क्षेत्रे वा यदि वा निशि। आगच्छति गुरुर्देवो यदा दीक्षा तदा भवेत्॥ ६८॥

संहिता में कहा गया है कि कर्क और मकर राशि पर सूर्य के पहुंचने पर, दोनों अयनों में, संक्रान्तियों पर और मदनोत्सव पर दीक्षा देनी चाहिये। इनके अतिरिक्त अन्य पवित्र महापर्वों पर भी दीक्षा देनी चाहिये। शैवागम में कहा गया है कि एक साथ सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण लगने पर, पुण्यारण्य में तथा वनों में, पुण्य क्षेत्र में, कुरुक्षेत्र में, चारो देवी पीठों में, प्रयाग में, श्रीपर्वत पर तथा काशीजी में काल का शोधन नहीं करना चाहिये। उपदेशसुधातन्त्र में कहा गया है कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण में, सिद्ध क्षेत्र में, शिवालय में केवल मन्त्र पढ़ देने से ही उपदेश हो जाता है। सारसंहिता में कहा गया है कि तिथि के बिना भी दीक्षा के लिये समय ये हैं, सुनो? सद्गुरु जब आसानी से न मिल सकें तो जभी उनकी उपस्थिति का अवसर हो तभी या जहाँ उनकी आज्ञा हो वहीं दीक्षा का महान् अवसर है। सद्गुरु यदि ग्राम में, अरण्य में, खेत पर, दिन में या रात्रि में जब आ जाँय तभी दीक्षा हो जानी चाहिये।

तत्त्वसारे : यदेवेच्छा तदा दीक्षा गुरोराज्ञानुरूपतः। न तिथिर्न व्रतो होमो न स्नानं न जपक्रिया। दीक्षायाः कारणं किं तु स्वेच्छा वाज्ञा

गुरोरिह ॥ ६९ ॥

तत्वसार में कहा गया है कि यदि सद्गुरु की अनुज्ञा हो तो जभी इच्छा हो तभी दीक्षा हो सकती है। दीक्षा का कारण न तिथि है, न व्रत, न होम, न स्नान, न जप, न क्रिया, किन्तु जब कभी भी अपनी इच्छा हो या गुरु की आज्ञा हो वही दीक्षा का समय है।

वैशम्पायनसंहितायाम् : सन्ध्यागर्जित निर्घोषभूकम्पोल्कानिपातनम्। एतानन्यांश्च दिवसान् स्मृत्युक्तांश्च परित्यज्येत् ॥ ७० ॥

वैशम्पायन संहिता में कहा गया है कि सायंकाल, बादल गरजते समय, भूकम्प के समय, उल्कापात के समय तथा स्मृति ग्रन्थों में कहे गये अन्य दिनों में दीक्षा देने का परित्याग कर देना चाहिये।

नारदीये : आचार्यादनभिप्राप्त मन्त्रश्चादत्तदक्षिणः। अभ्यस्तोपि सदा मन्त्रः श्रेयसे नावकल्पते ॥ ७१ ॥

नारदसंहिता के अनुसार आचार्य से मन्त्र-दीक्षा लिये बिना अथवा मन्त्र-दीक्षा की दक्षिणा न देने पर अभ्यास करने पर भी मन्त्र फलप्रद नहीं होता।

अथानुष्ठानारम्भे मुहूर्तनिर्णयः।

रुद्रयामले : कार्तिकाश्विवैशाखमाघेष मार्गशीर्षके। फाल्गुणे श्रावणे मन्त्रपुरश्चर्या प्रशस्यते ॥ ७२ ॥

अनुष्ठान प्रारम्भ करने के लिये मुहूर्तनिर्णय : रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है कि कार्तिक, आश्विन, वैशाख, माघ, मार्गशीर्ष, फाल्गुन तथा श्रावण मास में मन्त्र का पुरश्चरण करना उत्तम है।

वैशम्पायनसंहितायाम् : मन्त्रस्यारम्भणं मेषे धनधान्यप्रदं भवेत्। वृषे मरणमाप्नोति मिथुनेऽपत्यनाशनम् ॥ ७३ ॥ कर्कटे सर्वसिद्धिः स्यात् सिंहे मेधाविनाशनम्। कन्या लक्ष्मीप्रदा नित्यं तुलायां सर्वसिद्धयः ॥८७॥ वृश्चिके स्वर्णलाभः स्याद्धनुर्मानविनाशनम्। मकरः पुण्यदः प्रोक्तः कुम्भो धनसमृद्धिदः। मीनो दुःखप्रदो नित्यं मेवं मासविधिक्रमः ॥ ७५ ॥

वैशम्पायन संहिता के अनुसार मेष लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करना धन-धान्यप्रद होता है। वृष लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से मृत्यु होती है। मिथुन में मन्त्र का प्रारम्भ करने से सन्तान का नाश होता है। कर्कट लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से सब तरह की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। सिंह लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से बुद्धि का नाश होता है। कन्या लग्न

में मन्त्र का प्रारम्भ करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। वृश्चिक लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से स्वर्ण का लाभ होता है। धनु लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से मान का नाश होता है। मकर लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से पुण्य प्राप्त होता है। कुम्भ लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करना धन और समृद्धि दिलाने वाला होता है। मीन लग्न में मन्त्र का प्रारम्भ करने से दुःख प्राप्त होता है। इस प्रकार मन्त्र प्रारम्भ करने के लिये महीनों की व्यवस्था है।

तन्त्रसारे : चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे शुभे दिने। आरम्भे तु पुरश्चर्या हरौ सुप्तेन चाचरेत् ॥ ७६ ॥

तन्त्रसार के अनुसार शुक्लपक्ष में चन्द्र और नक्षत्रों के अनुकूल होने पर शुभ दिन में मन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिये। भगवान् विष्णु के शयन करने पर मन्त्र का पुरश्चरण नहीं करना चाहिये।

स्मृतितत्त्वे : पूर्णिमा पञ्चमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा। त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्वकामदा। या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा शुभदः स्मृतः ॥ ७७ ॥

स्मृतितत्व के अनुसार पूर्णिमा, पञ्चमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी तथा दशमी तिथियाँ मन्त्र पुरश्चरण के लिये उत्तम तथा सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं। अथवा जिस देव की जो तिथि होती है वह तिथि मन्त्र पुरश्चरण के लिए सुखद होती है।

पुरश्चरणदीपिकायाम् : मन्त्रारम्भो रवौ शुक्रे बुधे जीवं विशेषतः। शनौ मृत्युः क्षयो भौमे सोमे मध्यफलं स्मृतम् ॥ ७८ ॥

पुरश्चरण दीपिका में कहा गया है कि रविवार, शुक्रवार, बुधवार तथा वृहस्पतिवार को मन्त्र पुरश्चरण विशेष फलदायक होता है। शनिवार को मन्त्रारम्भ मृत्युकारक होता है। मङ्गलवार को मन्त्रारम्भ करने से क्षय होता है। सोमवार को मन्त्रारम्भ करने से मध्यम फल प्राप्त होता है।

मुहूर्तगणपतौ : पुनर्वसुद्वये हस्ते त्र्युत्तरे श्रवणत्रये। रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये। शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कीर्तितं बुधैः ॥ ७९ ॥

मुहूर्त गणपति के अनुसार पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, श्रवणा, धनिष्ठ, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, हस्त, अनुराधा तथा रोहिणी नक्षत्रों में पुण्य दिनों में शान्तिकर्म तथा पौष्टिक कर्म करने के लिए विद्वानों ने कहा है।

पुरश्चरणदीपिकायाम् : अश्विनीरोहिणी स्वातीविशाखाहस्तभेषु च । ज्येष्ठोत्तरात्रयेष्वेव कुर्यान्मन्त्राभिषेचनम् ॥ ८० ॥

पुरश्चरण दीपिका में कहा गया है कि अश्विनी, रोहिणी, स्वाती, विशाखा, हस्त, ज्येष्ठा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा तथा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रों में मन्त्राभिषेक करना चाहिये ।

शब्दकल्पद्रुमे : आर्द्रायां कृत्तिकायां च मन्त्रारम्भः प्रशस्यते । यदीशस्य कृशानोर्वा मन्त्रारम्भं यथाक्रमम् ॥ ८१ ॥

शब्दकल्पद्रुम में कहा गया है कि आर्द्रा और कृत्तिका नक्षत्रों में क्रमशः शिव या अग्नि का मन्त्रारम्भ उत्तम होता है ।

स्थिरलग्नं विष्णुमन्त्रे शिवमन्त्रे चरं ध्रुवम् । द्विस्वभावगतं लग्नं शक्तिमन्त्रे प्रशस्यते ॥ ८२ ॥

विष्णु के मन्त्र का उपदेश देने के लिये स्थिरलग्न अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ, उत्तम होते हैं । शिव के मन्त्र का उपदेश देने के लिये चार लग्न अर्थात् मेष, कर्क, तुला तथा मकर उत्तम होते हैं । शक्ति के मन्त्र का उपदेश देने के लिये द्विस्वभाव लग्न अर्थात् मिथुन, कन्या, धनु और मीन उत्तम होते हैं ।

अथ भक्ष्याभक्ष्यनिर्णयः ।

शारदातिलके : भक्ष्यं हविष्यं शाकानि विहितानि फलं ययः । मूलं सक्तुर्यवोत्पन्नो भक्ष्याण्येतानि मन्त्रिणाम् ॥ ८३ ॥ पुरश्चरणदीपिकायाम् : चरुमूलफलक्षीरदधिभिक्षान्नसक्तवः । शाकाश्चाष्टविध चान्नं साधकस्योच्यते बुधैः ॥ ८४ ॥

भक्ष्याभक्ष्य निर्णय : शारदा तिलक के अनुसार हविष्य, शाक, फल तथा दूध, कन्द तथा जव का सत्तू मन्त्र दीक्षा लेने वाले के लिये भक्ष्य हैं । पुरश्चरण दीपिका के अनुसार चरु, कन्द, फल, दूध, दही भिक्षान्न, सत्तू, शाक, आठ प्रकार के अन्न मन्त्र साधकों के लिये उत्तम भक्ष्य हैं ।

नारदीये : पयोव्रतस्य सिद्धिः स्याल्लक्षेणैव न संशयः । शाकभक्ष्यहविष्याशी कलौ लक्षत्रयं जपेत् ॥ ८५ ॥ देवीभागवते : भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वा भागचतुष्टयम् । एके भागो द्विजे भक्तो गोग्रासे च द्वितीयकः ॥८६॥ अतिथिभ्यस्तृतीयस्तु तदूर्ध्वं शिशुभार्ययोः । आश्रमस्य यथा यस्य कृत्वा ग्रासविधिं क्रमात् ॥ ८७ ॥ तदूर्ध्वं संख्ययास्याद्वा वानप्रस्थगृहस्थयोः । कुकुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥ ८८ ॥ अष्टौ ग्रासान्गृहस्थश्च वानप्रस्थस्तदर्धकम् । ब्रह्मचारी यथेष्टं च गोमूत्रविधिपूर्वकम् ॥ ८९ ॥

नारदीय के अनुसार दुग्ध मात्र पीकर मन्त्र की साधना करने वाले को एक लाख जप से ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है इसमें संशय नहीं है । शाक तथा हविष्य का आहार करनेवाले व्यक्ति को कलियुग में तीन लाख मन्त्र का जप करना चाहिये । देवी भागवत में कहा गया है कि शुद्ध भिक्षान्न लाकर उसका चार भाग करे । पहला भाग द्विज को, दूसरा भाग गाय को, तीसरा भाग अतिथि को उसके बाद शेष में से बच्चे तथा पत्नी को देना चाहिये । इसके बाद वानप्रस्थ तथा गृहस्थ आश्रम के अनुसार ग्रास का प्रमाण होता है । कुक्कुट के अण्डे के बराबर ग्रासमान का विधान है । गृहस्थ के लिये आठ ग्रास तथा वानप्रस्थ के लिये चार ग्रास कहा गया है । ब्रह्मचारी के लिये इच्छानुसार ग्रास विहित हैं । इसके साथ ही साधक को विधिपूर्वक गोमूत्र भी पीना चाहिये ।

ब्रह्मपात्रे तु भुंजीत मध्यपत्रविवर्जिते । दक्षं ब्रह्मोतरं विष्णुर्मध्यपत्रं महेश्वरः । अन्यथा भोजनाद्दोषात् सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ ९० ॥

साधक को ब्रह्मपात्र अर्थात् पत्तल में भोजन करना चाहिये । पत्तल में भी बीच का पत्र वर्जित है । दक्षिण पत्र में ब्रह्मा, उत्तर पत्र में विष्णु तथा मध्य पत्र में महेश्वर का निवास रहता है । इस नियम के विपरीत भोजन करने पर दोष होता है और सिद्धि प्राप्त करने में बाधा पड़ती है ।

अथ जपस्थाननिर्णयः :

पुरश्चरणचन्द्रिकायाम् : पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम् । तीर्थ प्रदेशाः सिन्धूनां सङ्गमः पावनं वनम् ॥ ९१ ॥ उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः । देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम् । साधनेषु प्रशस्यन्ते स्थानान्येतानि मन्त्रिणाम् ॥ ९२ ॥

जपस्थान का निर्णय : पुरश्चरण चन्द्रिका में कहा गया है कि मन्त्र की साधना करने वाले लोगों के लिये पुण्य क्षेत्र, नदी का तट, पर्वत की गुफा, पर्वत की चोटी, तीर्थ स्थान, नदियों का सङ्गम, पवित्र वन, एकान्त उद्यान, बेलवृक्ष की छाया, पर्वत का किनारा, देवमन्दिर, समुद्र का तट और निज गृह साधना के लिये उत्तम स्थान कहे गये हैं ।

नारदीये : शिवस्य सन्निधाने च सूर्याग्न्योर्वा गुरोरपि । दीपस्य ज्वलितस्यापि जपकर्म प्रशस्यते ॥९३॥ अटिवीः पर्वते पुण्ये नदीतीराणि यानि च । तन्त्रान्तरेपि : अश्वत्थामलकीमूलं गोशाला जलमध्यतः ॥९४॥ रुद्रयामले : म्लेच्छदुष्टमृगव्यालशङ्कातङ्कादिवर्जिते । कान्ते च पावने निन्दारहिते भक्तिसंयुते ॥ ९५ ॥

नारदीय के अनुसार जपकर्म के लिये शिव, सूर्य, अग्नि, गुरु या प्रज्वलित दीपक के निकट उत्तम स्थान माना गया है। इसी प्रकार वन, पुण्य पर्वत, सभी नदियों के तट जप के लिये उत्तम माने गये हैं। अन्य तन्त्रों में भी कहा गया है कि पीपल या आंवले की छाया, गोशाला, जलाशय जप के लिये उत्तम स्थान हैं। रुद्रयामल के अनुसार म्लेच्छ, दुष्ट, जानवर, शङ्का तथा रोगों से रहित, निन्दा रहित, भक्तिसंयुक्त, पवित्र वन जप के लिये उत्तम स्थान हैं।

समयाचारतन्त्रे : शृणु देवि विशेषेण उत्तराम्नाय हेतवे। वेश्यागृहे श्मशाने वा गत्वा मैथुनमाचरेत् ॥ ९६ ॥ ततो जपादिकं देवि कृत्वाशु लभते फलम्। अथवा स्वगृहे रात्रौ भक्तिमान् यः समाचरेत्। स प्राप्नोति फलं सर्वं चिन्ताभयविवर्जितः ॥ ९७ ॥ ज्ञानार्णवेपि : यत्र वा कुत्रचिद्भागे लिङ्गं यत्पश्चिमामुखम्। स्वयंभूर्वाणलिङ्गं वा वृषशूल्यं जलास्थितम् ॥९८॥ फेत्कारिणीतन्त्रे: एकलिङ्गे श्मशाने वा शून्यागारे चतुष्पथे। तत्रस्थः साधयेद्योगी विद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ ९९ ॥ महाकपिलपञ्चरात्रे : कुटी-विरक्तमित्येते देशाः स्युर्मन्त्रसिद्धिदाः। एकान्ते मठिकामध्ये स्थातव्यं हठयोगिना ॥ १०० ॥

समयाचार तन्त्र में कहा गया है : 'हे देवि, सुनो ! विशेष रूप से उत्तराम्नाय के लिये वेश्यागृह या श्मशान में जाकर मैथुन करना चाहिये। इसके बाद साधक जप आदि करके शीघ्र फल प्राप्त करता है। अथवा जो अपने घर में रात्रि में भक्तिपूर्वक साधना करता है वह सब चिन्ता के भय से रहित होकर फल प्राप्त करता है। ज्ञानार्णव के अनुसार कहीं भी पश्चिम की ओर जो शिव लिङ्ग अथवा जल में स्थित स्वयंभू या बाणलिङ्ग या वृषशूल्य हो वहाँ साधना करने से फल प्राप्त होता है। फेत्कारिणी तन्त्र के अनुसार एकलिङ्ग के पास, श्मशान में, शून्य घर में, अथवा चौराहे पर साधक त्रिभुवनेश्वरी विद्या की साधना करे। महाकपिल पंचरात्र में कहा गया है कि कुटी में, एकान्त मठिका में हठ योगी को बैठ कर साधना करनी चाहिये।

स्थानभेदेन जपमाहात्म्य :

गृहे शतगुणं विद्याद्गोष्ठे लक्षगुणं भवेत्। कोटिर्देवालये पुण्यमनन्तं शिवसन्निधौ ॥ १०१ ॥ शिववचनात् : गृहे जपं समं विद्याद्गोष्ठे शतगुणं भवेत्। नद्यां शतसहस्रं स्यादनन्तं शिवसन्निधौ ॥ १०२ ॥ समुद्रतीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च। पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥१०३॥

स्थानभेद से जपमाहात्म्य : घर में मन्त्र साधना करने पर सौ गुना फल होता है। गोशाला में मन्त्रसाधना से लाख गुना फल होता है। देवालय में मन्त्र की साधना करने पर करोड़ गुना फल होता है। शिव के निकट मन्त्र की साधना करने पर अनन्त फल प्राप्त होता है। शिववचन के अनुसार घर में जप से सम फल प्राप्त होता है, गोशाला में सौ गुना फल प्राप्त होता है। नदी में जप से हजार गुना फल प्राप्त होता है, शिव के निकट जप करने से अनन्त फल प्राप्त होता है। समुद्र के तट पर, तालाब में, मन्दिर में तथा सभी पुण्य आश्रमों में जप करने से करोड़गुना फल प्राप्त होता है।

स्थानभेदेन कालभेदः :

वटेरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे। अर्धरात्रेपिमध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत् ॥ १०४ ॥

स्थानभेद से कालभेद : बरगद की छाया में, वन में, श्मशान में, शून्य घर में तथा चौराहे पर आधी रात में या दोपहर को मन्त्र पुरश्चरण प्रारम्भ करना चाहिये।

स्थानलक्षणम् :

ग्रामात्क्रोशमितं स्थानं नद्यादौ स्वेच्छया मितम्। नगरादावथ क्रोशं क्रोशयुग्ममथापि वा आहारादिविहारार्थं तावतीं भूमिमाक्रमेत्।

स्थान का लक्षण : साधक को चाहिये कि वह आहार के लिये ग्राम से एक कोश तक, नदी तट से इच्छानुसार दूरी तक, नगर से एक कोश या दो कोश की दूरी तक भूमि का चयन करे।

एकलिङ्गलक्षणं फेत्कारिणीतन्त्रे : पञ्चक्रोशान्तरे यत्र न लिङ्गान्तर-मीक्ष्यते तदेकलिंगमाख्यातं तत्र सिद्धिरनुत्तमा ॥ १०५ ॥

एकलिङ्ग स्थान पर साधना से परम सिद्धि : फेत्कारिणी तन्त्र में एकलिङ्ग का लक्षण करते हुए कहा गया है कि पाँच कोश के बीच में यदि एक शिवलिङ्ग के अतिरिक्त अन्य लिङ्ग दिखाई न दे तो उस लिङ्ग को एकलिङ्ग कहते हैं। एकलिङ्ग के स्थान पर साधना करने से सर्वोत्तम सिद्धि की प्राप्ति होती है।

श्मशानलक्षणं फेत्कारिणीतन्त्रे : दह्यन्ते व्यसवो यत्र शवकीलक-संकुले। गृध्रगोमायुकाकाद्यैर्मांसलुब्धैर्यदावृतम्। तच्छमशानमिति ख्यातंपिशाचगणसेवितम् ॥ १०६ ॥

श्मशान का लक्षण : फेत्कारिणी तन्त्र में श्मशान का लक्षण बताते हुये कहा गया है कि जहाँ पर स्थान-स्थान पर मुर्दे जलाये जाते हैं और जो स्थान मांस के लोभी गीध, सियार तथा कौवे आदि पशुओं से भरा रहता है और जहाँ पर भूत, पिशाच आदि के दल निवास करते हैं उस स्थान को श्मशान कहते हैं।

चितालक्षणम् : असंस्कृता चिता ग्राह्या न तु संस्कारसंयुता। चाण्डालादिषु संप्राप्ताकेवलं शीघ्रसिद्धिदा ॥ १०७ ॥

चिता का लक्षण : चिता को ग्रहण करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि चिता संस्कारयुक्त न हो अपितु संस्कार से रहित हो। चाण्डाल आदि वर्गों की चिता असंस्कृत होती है, उसे ही साधना के लिये चुनना चाहिये क्योंकि वह शीघ्र सिद्धि देने वाली होती है।

अत्राधिकारिणः :

महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिकः शुचिः। महास्वच्छो दयावांश्च सर्वं भूतहितेरतः ॥ १०८ ॥

साधना के अधिकारी का लक्षण : जो अत्यन्त बलवान, महा बुद्धिमान, महा साहसिक, पवित्र, अत्यन्त स्वच्छ, दयावान्, सब प्राणियों के कल्याण में लगा हुआ हो वही साधना का अधिकारी है।

शून्यागारलक्षणं त्रिशक्तिरत्ने : काकादिनीडसंयुक्तं क्रिमिच्छत्रादिसंयुतम् नागरैर्दूरनिर्मुक्तं साध्वसोद्भवकारणम्। सौधं संवृद्धघासौघं शून्यागारं तदुच्यते ॥ १०९ ॥

शून्यागार का लक्षण : त्रिशक्तिरत्न के अनुसार जहाँ कौवे आदि अपना घोसला लगाये हों, कृमि अर्थात् वर्रे तथा मक्खियाँ छत्ते लगाये हों, जो नगर से दूर हो; जहाँ जाते ही भय का अनुभव हो, ऐसा घर जहाँ चारो ओर घास और छाड़-झङ्खाड़ उगे हों उसे शून्यागार कहते हैं।

चतुष्पथलक्षणं फेत्कारिणीतन्त्रे : चतुर्णां च पथा यत्र सम्पातो युगपद्भवेत्। तच्चतुष्पथमित्युक्तं रजन्यामिष्टदायकम् ॥ ११० ॥

चतुष्पथ का लक्षण : फेत्कारिणी तन्त्र में कहा गया है कि चतुष्पथ (चौराहा) उसे कहते हैं, जहाँ चार मार्ग एक साथ मिलते हों। इस स्थान पर रात्रि में साधना करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

मठलक्षणं कुलार्णवे : अल्पद्वारमरन्ध्रगर्तविवरं नात्युच्चनीचायतं सम्यग्गोमयसान्द्रालिप्तममलं निःशेषजन्तूज्झितम्। बाह्ये मण्डपवेदिकूपरुचिरं प्राकारसंवेष्टितं प्रोक्तं योगमठस्य लक्षणमिदं सिद्धैर्हठाभ्यासिभिः ॥ १११ ॥

मठ का लक्षण : कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है कि जिसका द्वार छोटा हो, जिसमें कोई छिद्र न हो, जो बहुत ऊँचा या नीचा न हो, जो अच्छी तरह गोबर से लिपा-पुता हो, जो पवित्र हो, जहाँ कोई कीड़े-मकोड़े न हों, जिसके बाहर मण्डप, वेदिका तथा कुआँ बना हो, जो सुन्दर हो, जिसके चारों ओर दीवाल का घेरा बना हो ऐसे आलय को सिद्ध हठयोगी मठ कहते हैं।

अथ दिग्निर्णयः : उपविश्यासने मन्त्री प्राङ्मुखो वा ह्युदङ्मुखः। रात्रावुदङ्मुखैः कार्यं देवकार्यं सदैवहि ॥ ११२ ॥

दिशा का निर्णय : साधक को चाहिये कि वह आसन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर साधना करे। रात्रि में सभी देवकार्य सदा उत्तराभिमुख बैठकर ही करना चाहिये।

महाभारते उद्योगपर्वणि : सुपर्ण उवाच। अनुशिष्टेस्मि देवेन गालवायातियोगिना ब्रूहि कामं तु कां याति इष्टं प्रथमतो दिशम् ॥११३॥ पूर्वां वा दक्षिणां वाहमथवा पश्चिमां दिशम्। उत्तरां वा द्विजश्रेष्ठ कुतो गच्छामि गालव ॥ ११४ ॥

इस विषय में महाभारत के उद्योगपर्व की यह कथा द्रष्टव्य है।

सुपर्ण बोला : श्रेष्ठ योगी गालवजी द्वारा मुझे उपदेश दिया गया है। मैंने उनसे पूछा कि, हे गालव ! पहले मैं किस इष्ट दिशा को जाऊँ ? पूर्व की ओर, दक्षिण की ओर, पश्चिम की ओर या उत्तर की ओर किस दिशा की ओर मैं जाऊँ ?

गालव उवाच। यस्यामुदयते पूर्वं सर्वलोकप्रभावनः। सविता यत्र सन्ध्यांत्र्यां साध्यानां वर्तते तु यः। व्रतद्वारं द्विजश्रेष्ठ दिवसस्य तथाध्वनः ॥ ११५ ॥

गालव ने उत्तर दिया : हे सुपर्ण, समस्त लोकों को प्रभावित करनेवाले सूर्य जिस दिशा में पहले उदित होते हैं तथा जो देवताओं के ध्यान के लिये वर्तमान होते हैं, हे द्विजश्रेष्ठ ! वही दिशा व्रत की दिशा होती है और वही दिन तथा मार्ग का प्रारम्भ होता है।

शिवपूजनदिग्विभागः शिवरहस्य : उत्तराभिमुखैः कार्यं श्रीमहादेवपूजनम्। प्राङ्मुखेनाथ वा कार्यं श्रीमहादेवपूजनम् ॥ पश्चिमाभिमुखैर्वापि कर्तव्यं शिवपूजनम्। दक्षिणाभिमुखैर्मर्त्यैर्न कर्तव्यं शिवार्चनम् ॥ ११६ ॥

शिव रहस्य के अनुसार शिव का पूजन उत्तर दिशा की ओर, पूर्व की ओर या पश्चिम की ओर मुख करके करना चाहिये। दक्षिण की ओर मुख करके शिव का पूजन कभी नहीं करना चाहिये।

ताराकाल्युपासनायां दिग्विभागः फेत्कारिण्याम् : प्राङ्मुखोदङ्-मुखो वापि वक्ष्यमाणक्रमेण तु। श्रीकामः शान्तिकामो वा पश्चिमाभि-मुखः स्थितः॥ ११७॥

ताराकल्युपासना के लिये फेत्कारिणी तन्त्र में कहा गया है कि साधक पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख अथवा पश्चिमाभिमुख होकर शान्ति के लिये साधना करे।

कालिकापुराणे : दिग्विभागेषु कौबेरी दिक् शिवाप्रीतिदायिनी। तस्मात्तन्मुख आसीनः पूजयेच्चण्डिकां सदा॥ ११८॥

कालिकापुराण में दिशाओं के निर्णय के सम्बन्ध में कहा गया है कि पार्वतीजी के लिये उत्तर दिशा अत्यन्त प्रीतदायिनी है अतः उत्तराभिमुख बैठकर सदा चण्डिका देवी की पूजा करनी चाहिये।

अथ स्नाननिर्णयः :

स्नानं त्रिषवणं प्रोक्तमशक्तौ द्विः सकृत्तथा। अस्नातस्य फलं नास्ति न च पितृनतर्पतः॥ ११९॥

स्नान निर्णय : स्नान तीन बार करना चाहिये। अशक्तावस्था में दो बार या एक बार भी किया जा सकता है। बिना स्नान किये या पितरों का बिना तर्पण किये साधक साधना का फल नहीं प्राप्त कर सकता।

अथ तिलकनिर्णयः :

केशवाद्यभिधानैस्तु स्थानेषु द्वादशस्वपि। ललाटोदरहृत्कण्ठदक्ष-पार्श्वांसकं ततः॥ १२०॥ वामपार्श्वांसकर्णे च पृष्ठदेशे ककुद्यपि। ललाटे तु गदां कुर्याद्धृदये नन्दकं पुनः॥ १२१॥ शङ्खं चक्रं भुजद्वन्द्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्द्धनि। इत्थं तु वैष्णवः कुर्याच्छैवः कुर्यात्त्रिपुण्ड्रकम्॥ १२२॥ अग्निहोत्रोत्थितं भस्मादायाग्निरिति मन्त्रः। अभिमन्त्र्य त्र्यम्बकेन कुर्यात्पश्च त्रिपुण्ड्रकम्॥ १२३॥

तिलक निर्णय : केशव आदि नामों से प्रसिद्ध शरीर के बारह स्थानों पर (ललाट, पेट, हृदय, कण्ठ, दाहिना पार्श्व, दाहिना कन्धा, बाँया पार्श्व, बायाँ कन्धा, दोनों कान, पीठ, ठोड़ी), ललाट पर गदा का चिह्न बनाना चाहिये, हृदय पर नन्दन का चिह्न बनाना चाहिये। दोनों हाथों पर शङ्ख-चक्र का चिह्न बनाना चाहिये। सिर पर धनुष और बाण का चिह्न बनाना

चाहिये। वैष्णव इस प्रकार अङ्गों को चिह्नित करें। शैव लोग त्रिपुण्ड धारण करें। होम के भस्म को 'आयाग्नि' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके और 'त्र्यम्बकं यजामहे' मन्त्र बोलकर भस्म से त्रिपुण्ड धारण करना चाहिये।

अथ आसननिर्णयः।

मन्त्रमहोदधौ : जपेन्निधाय दर्भास्त्रीन्कुशचर्मोवरासने। काष्ठपल्लव-वंशाश्मगोशकृत्तृणमृन्मयम्। विषयं कठिनं मन्त्री त्यजेदासनमाधिदम्॥ १२४॥

बैठने के लिये आसन : मन्त्र महोदधि के अनुसार मुंज, वस्त्र, कुशा या चर्म के उत्तम आसन पर बैठकर साधक को जप करना चाहिये। काठ, पल्लव, बाँस, पत्थर, गोबर, तृण के विषम और कठिन आसन को छोड़ देना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार के आसन रोगोत्पादक होते हैं।

तन्त्रान्तरे : वंशासने दरिद्रत्वं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःख-सम्भूतिर्दौर्भाग्यं दारुकासने॥ १२५॥

दूसरे तन्त्रों में लिखा है कि बाँस के आसन पर साधना करने से दरिद्रता होती है। पत्थर के आसन पर साधना करने से रोग होने की सम्भावना होती है। भूमि पर साधना करने से दुःख होने की सम्भावना होती है। लकड़ी के आसन पर बैठकर साधना करने से दुर्भाग्य की प्राप्ति होती है।

तूलकम्बलवस्त्राणि पट्टव्याघ्रमृगाजिनम्। कल्पयेदासनं धीमान्सौ-भाग्यं ज्ञानसिद्धिदम्॥ १२६॥

बुद्धिमान साधक को चाहिये कि वह रूई, कम्बल, वस्त्र, रेशम, व्याघ्र चर्म, हरिणचर्म या कृष्ण मृगचर्म का आसन बनावे। ये आसन सौभाग्य और सिद्धि को देने वाले होते हैं।

तृणासने यशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः। कृष्णासने ज्ञानसिद्धिर्मोक्ष-श्रीर्व्याघ्रचर्मणि॥ १२७॥

तृण के आसन पर साधना करने से यश की हानि होती है, पत्तों के आसन पर चित्त में भ्रान्ति पैदा होती है। कृष्णमृगचर्म के आसन पर साधना करने से ज्ञान की सिद्धि प्राप्त होती है और व्याघ्र के चर्म के आसन पर बैठकर साधना करने से मोक्ष तथा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

स्यात्पौष्टिकं च कौशेयं शान्तिकं वेत्रविष्टरम्। वंशासने व्याधिनाशो कम्बले दुःखमोचनम्॥ १२८॥

रेशम का आसन पुष्टि प्रदान करने वाला है। बेंत का आसन शान्ति देनेवाला है। बाँस का आसन रोग नाश करता है। कम्बल का आसन दु:खनाशक है।

स्यादाभिचारिकं नीले रक्त वश्यादिकं भवेत्। धवले शान्तिकं मोक्षः सर्वार्थश्चित्रकम्बले। सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते॥ १२९॥

अभिचार कर्म की सिद्धि के लिये आसन नीले रंग का होना चाहिये। वशीकरण आदि कर्म के लिये लाल रङ्ग का आसन होना चाहिये। मोक्ष और शान्ति कर्म के लिये सफेद आसन ठीक होता है। चितकबरा कम्बल सब प्रकार की सिद्धि प्रदान करता है। इन सबके अभाव में आसन के लिये कुशा का आसन ही ग्राह्य है।

हंसमाहेश्वरे : लोम्नि चैव यदासीनस्तदा सर्वं विनश्यति। लोमस्पर्शनमात्रेण सिद्धिहानिः प्रजायते। कुशासने मन्त्रसिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा॥ १३०॥

हंसमाहेश्वर तन्त्र में कहा गया है कि रोम से बने आसन पर साधक जब बैठता है तब उसका सब विनष्ट हो जाता है। रोम के स्पर्श मात्र से सिद्धि का नाश हो जाता है। कुशा के आसन पर मन्त्र की सिद्धि होती है इसमें विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

जानूर्वारन्तरे कृत्वा सम्यक्पादतले उभे। ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते।

साधना के लिये योगासन : दोनों जङ्घाओं पर अच्छी तरह दोनों पैरों को रखकर जब योगी सीधा बैठता है तब उस आसन को स्वस्तिक आसन कहते हैं।

ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले उभे। अंगुष्ठौ च निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥ १३१॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनां हृदयङ्गमम्।

दोनों जङ्घाओं पर दोनों पैरों को रखकर उनकी अंगुलियों को व्युत्क्रम से हाथों से पकड़ने पर पद्मासन कहा जाता है। यह योगियों का अत्यन्त प्रिय आसन है।

एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योरौ तथोत्तरम्। ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम्॥ १३२॥

एक पैर को नीचे करके दूसरे पैर को जांघ पर रखकर जब योगी सीधा बैठता है तब इस आसन को वीर आसन कहते हैं।

अथ मालानिर्णयः :

अरिष्टपुत्रजीवैश्च शङ्खपद्मैर्मणिस्तथा। कुशग्रन्थिश्च रुद्राक्षा उत्तमं चोत्तरोत्तरम्॥ १३३॥

माला निर्णय : माला बनाने के लिये अरिष्ट तथा पुत्रजीवा के बीज, शङ्ख, पद्मकाष्ठ, मणि, कुशाकी गाँठ, रुद्राक्ष ये उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं।

मन्त्रखण्डे : स्फाटिकी मौक्तिकी वापि प्रोतव्या सितसूत्रकैः। सर्वकर्मसमृद्ध्यर्थं जपेद्रुद्राक्षमालया॥ १३४॥

मन्त्रखण्ड के अनुसार स्फटिक या मोती को श्वेत धागे से गूंथ कर माला बनानी चाहिये। सब तरह के कर्मों की सिद्धि के लिये रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिये।

वैष्णवे तुलसीमाला गजदन्तैर्गणेश्वरे। त्रिपुराया जपे शस्ता रुद्राक्षं रक्तचन्दनैः॥ १३५॥

वैष्णव मन्त्र के लिये तुलसी की माला, गणेश मन्त्र के लिये हाथी के दाँत की माला तथा त्रिपुरा मन्त्र के जप के लिये रुद्राक्ष या लाल चन्दन की माला उत्तम होती है।

मन्त्रखण्डे : रेखयाष्टगुणं विद्यात् पुत्रजीवैर्दश स्मृतम्। शतं चन्दनशङ्खैश्च प्रवालैस्तु सहस्रकम्॥१३६॥ स्फाटिकैर्लक्षसाहस्रं मौक्तिकैर्लक्षमेव च। दशलक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते॥ १३७॥ कुशग्रन्थ्या च रुद्राक्षैरनन्तगुणितं भवेत्। अष्टोत्तरशतैर्माला पञ्चाशच्चतुराधिकैः॥१३८॥ सप्तविंशतिभिः कार्या एकग्रीवा समेरुका। मुखं मुखेन संयोज्य पुच्छं पुच्छेन योजयेत्॥ १३९॥ प्रोतव्या सितसूत्रेण सत्कर्मफलसिद्धये। पट्टसूत्रकृता माला देव्याः प्रीतिकरा मता॥ १४०॥ कार्याश्च वैष्णवी माला पद्मसूत्रैरथापि वा। ऊर्णाभिर्वल्कलैर्वापि शैवी माला प्रकीर्तिता॥१४१॥ कार्पाससूत्रैरन्येषां विदध्याज्जपमालिकाम्।

मन्त्रखण्ड में कहा गया है कि रेखा से जप करने में आठ गुना फल होता है। पुत्रजीवा की माला से जप करने पर दश गुना फल होता है। चन्दन और शङ्ख की माला से जप करने से सौगुना फल होता है। मूंगे की माला से जप करने से हजार गुना फल होता है। स्फटिक की माला से जप करने से लाख हजार गुना फल होता है। चाँदी के गुरियों की माला से दश लाख गुना फल होता है। सोने के गुरियों की माला से जप करने से करोड़ गुना फल होता है। किन्तु कुशा की गाँठ की गुरियों तथा

रुद्राक्ष की माला से जप करने पर अनन्त फल मिलता है। एक सौ आठ गुरियों की या चौवन गुरियों की अथवा सत्ताइस गुरियों की माला बनानी चाहिये। इन मालाओं में मेरु के साथ एक ग्रीवा बनानी चाहिये। रुद्राक्षों के मुख के साथ मुख तथा पूँछ के साथ पूँछ जोड़कर माला बनानी चाहिये। सत्कर्म के फल की सिद्धि के लिये मनिकाओं को सफेद धागे में गूंथना चाहिये। रेशम के सूत्र में गूँथी माला देवी को प्रीतिकर मानी गई है। वैष्णवी माला पद्मसूत्र से तथा शैवी माला ऊन और वल्कल के सूत्र से गूँथनी चाहिये। अन्य देवताओं के मन्त्र जाप के लिये कपास के धागे में माला गूँथनी चाहिये।

त्रिंशद्भिः स्याद्धनं पुष्टिः सप्तविंशतिभिर्भवेत् ॥ १४२ ॥ पञ्चविंशतिभिर्मोक्षः पञ्च स्यादभिचारणे। पञ्चाशद्भिः कुलेशानि सर्वसिद्धिरुदीरिता ॥ १४३ ॥

तीस माला के जप से धन प्राप्त होता है। सत्ताइस माला के जप से पुष्टि प्राप्त होती है। पचीस माला के जप से मोक्ष की सिद्धि होती है। अभिचार की सिद्धि के लिये पाँच माला का जप करना चाहिये। पचास माला के जप से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है।

जप्त्वाक्षमालां सकलां भ्रामयेदाशिखामणेः। प्रदक्षिणा पुनर्वक्रमारभ्यैवं समाचरेत् ॥ १४४ ॥ स्वयं वामेन हस्तेन जपमालां न संस्पृशेत्। अदीक्षितो द्विजो वापि स्पृशेच्चेच्छुद्धिमाचरेत् ॥ १४५ ॥ न धारयेत्करे मूर्ध्नि कण्ठे च जपमालिकाम्। जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले क्षिपेत् ॥ १४६ ॥ गुरुं प्रकाशयेद्धीमान्मन्त्रं नैव प्रकाशयेत्। अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥ १४७ ॥ कम्पनात्सिद्धिहानिस्स्याद्धननं बहुदुःखकृत्। शब्दे जाते भवेद्रोगी करभ्रष्टा विनाशकृत ॥ १४८ ॥

रुद्राक्ष की माला से जप करने के बाद माला की सुमेरु मनिका को पूरा घुमा देना चाहिये। पुनः वक्रगति से इसी प्रकार प्रदक्षिणा करनी चाहिये। स्वयं बाएं हाथ से जपमाला को नहीं छूना चाहिये। अदीक्षित द्विज भी यदि छू दे तो माला की पुनः शुद्धि करनी चाहिये। जपमाला को हाथ, सिर या कण्ठ में धारण नहीं करना चाहिये। जप के समय में जप करके माला को शुद्ध स्थाना पर रख देना चाहिये। गुरु को तो लोगों को बताया जा सकता है परन्तु मन्त्र को किसी को प्रकाशित नहीं करना चाहिये। रुद्राक्ष माला तथा मुद्रा को तो गुरूजी को भी नहीं दिखाना चाहिये। माला को हिलाने से सिद्धि नहीं होती। माला को हनन करने से बहुत दुःख होते हैं। जप के समय माला से शब्द निकलने पर साधक रोगी हो जाता है। यदि माला हाथ से नीचे गिर जाय तो उससे साधक का विनाश हो जाता है।

छिन्ने सूत्रे भवेन्मृत्युस्तस्माद्यत्नपरो भवेत्। जपान्ते कर्णदेशे वा उच्चस्थानेथवा न्यसेत् ॥ १३९ ॥ इति।

यदि माला का धागा टूट जाय तो साधक की मृत्यु होती है। इस कारण साधक को सावधान रहना चाहिये। जप के बाद खूंटी पर या ऊंचे स्थान पर माला को रखना चाहिये।

अथ रुद्राक्षमाहात्म्यं पद्मपुराणे :

शिखायां हस्तयोः कण्ठे कर्णयोश्चापि यो नरः। रुद्राक्षं धारयेद्भक्त्या शैवं लोकमवाप्नुयात् ॥ १५० ॥ रुद्राक्षे देहसंस्थे तु कुक्कुरो म्रियते यदि। सोपि रुद्रपदं याति किं पुनर्मानवा गुह ॥ १५१ ॥ यो ददाति द्विजातिभ्यो रुद्राक्षं भुवि षण्मुखम्। तस्य प्रीतो भवेद्रुद्रः प्रयच्छति निजं पदम् ॥१५२॥ नववक्त्रं तु रुद्राक्षं धारयेद्वामबाहुना। चतुर्दशमुखं चैव शिखायां धारयेद्बुधः ॥ १५३ ॥ सप्तविंशतिरुद्राक्षमालया देहसंस्थया। यत्करोति नरः पुण्यं सर्वं कोटिगुणं भवेत् ॥ १५४ ॥

पद्मपुराण के अनुसार रुद्राक्ष माहात्म्य :

पद्म पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति चोटी में, हाथ में अथवा कानों में रुद्राक्ष की माला को धारण करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है। यदि रुद्राक्ष की माला पहने हुये कुत्ता भी मर जाता है तो वह शिवलोक को चला जाता है, मनुष्य की तो कथा ही क्या है। जो द्विजातियों को छमुखी रुद्राक्ष दान देता है, उससे शिवजी प्रसन्न होकर उसे शिवलोक प्रदान करते हैं। नवमुख रुद्राक्ष बाएं हाथ में धारण करना चाहिये। चौदह मुख रुद्राक्ष शिखा में तथा सत्ताइस रुद्राक्ष की माला गले में जो व्यक्ति धारण करता है उसे करोड़ गुना पुण्य होता है।

स्कन्धपुराणे विशेषः : रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तके विंशती द्वे षट्षट् कर्णप्रदेशे करयुगलगता द्वादश द्वादशैव। बाह्वोरिन्दोः कलाभिः पृथकगिरशिखासूत्रयोरेकमेकं वक्षस्यष्टाधिकं स्यात्कलयति सततं स स्वयं नीलकण्ठः ॥ १५५ ॥

स्कन्ध पुराण में विशेष रूप से कहा गया है कि गले में बत्तीस रुद्राक्षों की माला, सिर में चालीस रुद्राक्षों की माला, प्रत्येक कान में छः छः रुद्राक्षों

की माला, हाथों में बारह-बारह रुद्राक्षों की माला, बाहुओं में सोलह-सोलह रुद्राक्षों की माला, शिखा में एक रुद्राक्ष तथा यज्ञोपवीत में एक रुद्राक्ष, वक्ष पर आठ से अधिक रुद्राक्षों को धारण करता है वह स्वयं नीलकण्ठ हो जाता है।

मुखभेदेन रुद्राक्षमाहात्म्यं स्कन्दपुराणे :

कार्तिकेय उवाच। एकद्वित्रिश्चतुःपञ्चषट्सप्तवसवो नव। दशैकादश द्वादश त्रयोदश चतुर्दश ॥ १५६ ॥ एतेषां तु मुखानां तु देवता कोत्र शङ्कर। गुणं च कीदृशं तेषां कथयस्व यथार्थतः ॥ १५७ ॥

मुखभेद से रुद्राक्ष माहात्म्य : स्कन्द पुराण में कार्तिकेय ने पूछा : हे शङ्कर ! एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नव, दश, एकादश, द्वादश, त्रयोदश, चतुर्दश मुखों वाले रुद्राक्षों के देवता कौन हैं ? उनके गुण क्या हैं ? यथार्थ रूप से आप बतायें।

शङ्कर उवाच। एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति। द्विवक्त्रो देवदेव्यौ[1] च गोवधं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १५८ ॥ त्रिवक्त्रो दहनः[2] साक्षाद्भ्रूणहत्यां व्यपोहति। चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ १५९ ॥ पञ्चवक्त्रः[3] स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नाम नामतः। षडवक्त्रः कार्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे ॥ १६० ॥ ब्रह्महत्यादिभिः[4] पापैर्मुच्यते नात्र संशयः। सप्तवक्त्रो महासेनो ह्यनन्तो नाम नागराट् ॥ १६१ ॥ गुरुतल्पादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः। अष्टवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो विनायकः ॥ १६२ ॥ पृष्ठोदरकरेणापि संस्पृशेद्वा गुरुस्त्रियम्। एवमादीनि पापानि चातिपापानि सर्वशः ॥ १६३ ॥ विघ्नास्तस्य च नश्यन्ति मुक्तो याति परां गतिम्। गुणा ह्येतेषु सर्वेषु अष्टवक्त्रेषु धारणात् ॥ १६४ ॥ नववक्त्रो भैरवः स्याद्धारयेद्वामके भुजे। शिवसायुज्य कारकः मुक्तिदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत् ॥ १६५ ॥ लक्षकोटिसहस्राणि ब्रह्महत्यां करोति यः। तत्सर्वं दहते शीघ्रं नववक्त्रस्य धारणात् ॥१६६॥ दशवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो जनार्दनः। ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वैताला ब्रह्मराक्षसाः ॥ १६७ ॥ पन्नगाश्च विनश्यन्ति दशवक्त्रस्य धारणात्। वक्त्रैकादशरुद्राक्षो रुद्र एकादशः स्मृतः ॥ १६८ ॥ शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य

1. मतान्तरे हरगौर्याविति पाठः।
2. पद्मपुराणे : त्रिवक्त्रोऽग्निस्त्रिजन्मोत्थपापराशिं प्रणाशयेदिति पाठः।
3. पद्मपुराणे : पञ्चवक्त्रस्तु कालाग्निरगम्याभक्ष्यपापनुत्। इति पाठः।
4. पद्मपुराणे : गर्भहत्यां व्यपोहतीति पाठः।

पुण्यफलं शृणु।

शङ्कर ने कहा : एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् शिव है। यह साक्षात् ब्रह्महत्या को दूर कर देता है। दो मुखवाले रुद्राक्ष के देवता शिव और पार्वती हैं। यह गोवध के पाप को निश्चय ही नष्ट कर देता है। तीन मुखों वाले रुद्राक्ष का देवता अग्नि है। यह भ्रूणहत्या के पाप को दूर करता है। चार मुख वाले रुद्राक्ष का देवता ब्रह्मा है। यह ब्रह्महत्या को दूर करता है। पाँच मुखों वाले रुद्राक्ष का देवता कालाग्नि रुद्र है। छः मुख वाले रुद्राक्ष का देवता कार्तिकेय है। इसे दाहिने हाथ में धारण करना चाहिये। यह ब्रह्महत्या आदि सभी पापों से मनुष्य को मुक्त कर देता है, इसमें कोई संशय नहीं है। सात मुखों वाले रुद्राक्ष का देवता महासेन अनन्त नामक नागराट् है। इससे गुरुतल्प आदि जो पाप होते हैं उनका नाश हो जाता है। आठ मुखों वाला रुद्राक्ष महासेन साक्षात् विनायक ही है। इसके धारण करने से यदि कोई गुरु की स्त्री को पीठ, पेट या हाथ से छू लेता है तो उससे जो पाप होते हैं वे सभी भारी पाप नष्ट हो जाते हैं। उसके सभी विघ्न दूर हो जाते हैं और वह मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करता है। नव मुखों वाले रुद्राक्ष का देवता भैरव है तथा इसे बायें हाथ में धारण करना चाहिये। यह शिव सायुज्यकारक, मुक्ति देनेवाला और मेरे समान बलवाला है। अरबों पाप भी जो कोई करता है या ब्रह्महत्या करता है, वह नव मुखी रुद्राक्ष के धारण करने से शीघ्र ही उन सब पापों को नष्ट कर देता है। दशमुखी रुद्राक्ष का देवता महासेन है जो साक्षात् देव जनार्दन है। ग्रह, पिशाच, वैताल, ब्रह्मराक्षस तथा पन्नग आदि दशमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से भाग जाते हैं। ग्यारह मुखी रुद्राक्ष के देवता साक्षात् एकादश रुद्र हैं। इसे शिखा में नित्य धारण करना चाहिये। इसका पुण्य फल सुनो :

अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च ॥ १६९ ॥ हेमशृङ्गस्य लक्षस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम्। तत्फलं समवाप्नोति रुद्रैकादशधाराणात् ॥१७०॥ रुद्राक्षद्वादशाक्षस्य कण्ठदेशे च धारणात्। आदित्यस्तुष्यते[1] नित्यं द्वादशार्कव्यवस्थितः ॥ १७१ ॥ त्रयोदशमुखः कामः सर्वकामफलप्रदः। चतुर्दशास्यः श्रीकण्ठोद्धारकरः परः ॥ १७२ ॥

एक हजार अश्वमेध यज्ञ का, सौ वाजपेय यज्ञ का, एक लाख स्वर्ण सींगों के दान का जो फल होता है उन सभी फलों को ग्यारहमुखी रुद्राक्ष

1. पद्मपुराणे : द्वादशाख्यो भवेदर्कः इति पाठः।

का धारणकर्ता प्राप्त कर लेता है। कण्ठ में बारहमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से द्वादशार्कव्यवस्थित आदित्य प्रसन्न होते हैं। त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष का देवता काम है। यह समस्त कामनाओं के फलों को प्रदान करता है। चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष का देवता श्रीकण्ठ है। यह रुद्राक्ष वंश का उद्धार कर्ता है।

अस्य धारणविधानं पद्मपुराणे : पञ्चामृतं पञ्चगव्यं स्नानकाले प्रयोजयेत्। रुद्राक्षस्य प्रतिष्ठायां मन्त्रः पञ्चाक्षरो यथा। ॐ त्र्यम्बकादि मन्त्रं च यथा तेन प्रयोजयेत् ॥ १७३ ॥

इसके धारण का विधान पद्मपुराण में इस प्रकार कहा है : स्नान के समय पञ्चामृत या पञ्चगव्य का प्रयोग करें। रुद्राक्ष की प्राणप्रतिष्ठा के लिये पञ्चाक्षर मन्त्र है, "त्र्यम्बकमित्यादि" जिसका प्रयोग करना चाहिये। मन्त्र यह है :

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। ॐ ह्रीं अघोरे घोरेहुं घोरतरेहुं ॐ ह्रीं श्रीं सर्वतः सर्वाङ्गे नमस्ते रुद्ररूपेहुम्। इति मन्त्रः।

अनेनापि च मन्त्रेण रुद्राक्षस्य द्विजोत्तमः। प्रतिष्ठां विधिवत्कुर्यात्ततोधिकफलं भवेत्। ततो यथा स्वमन्त्रेण धारयेद्भक्तिसंयुतः ॥ १७४ ॥

हे द्विजोत्तम, इस मन्त्र से रुद्राक्ष की विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये। इससे अधिक फल मिलता है। इसके बाद अपने मन्त्र से भक्तिपूर्वक इसे धारण करना चाहिये। इस रुद्राक्ष धारण में क्रमानुसार मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ॐ ह्रशं नमः १ ॐ ॐ नमः २ ॐ ॐ नमः ३ ॐ ह्रीं नमः ४ ॐ हूं नमः ५ ॐ हूं नमः ६ ॐ हुं नमः ७ ॐ सः हूं नमः ८ ॐ हं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रों नमः ११ ॐ हूँ ह्रीं नमः १२ ॐ क्षां चौं नमः १३ ॐ नमोनमः १४ इति रुद्राक्षधारणम्।[1]

अथ गोमुखीनिर्णयः :

वस्त्रेणाच्छादितकरं दक्षिणं यः सदा जपेत्। तस्य स्यात्सफलं जाप्यं

---

१. स्कन्धपुराणे धारणमन्त्रभेदः : ॐ ऐं नमः १ ॐ श्रीं नमः २ ॐ धुं ध्रूं नमः ३ ॐ ह्रीं हूं नमः ४ ॐ श्रीं नमः ५ ॐ ह्रीं नमः ६ ॐ ह्रीं नमः ७ ॐ कंवंनमः ८ ॐ ह्रीं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रीं नमः ११ ॐ ह्रां ह्रीं नमः १२ ॐ क्ष्यौं स्तौं नमः १३ ॐ ङं मां नमः १४ इति भेदः।

तद्धीनमफलं स्मृतम् ॥ १७५ ॥ भूतराक्षसवेतालाः सिद्धगन्धर्वचारणाः। हरन्ति प्रकटं यस्मातस्माद्गुप्तं जपेत्सुधीः ॥ १७६ ॥

गोमुखी निर्णय : दाहिने हाथ को वस्त्र से ढँक कर जो सदा जप करता है उसका जपना सफल होता है। हाथ ढँके बिना जप फलहीन हो जाता है। भूत, राक्षस, वैताल, सिद्ध, गन्धर्व तथा चारण खुले हाथ से किये जाने वाले जप का हरण कर लेते हैं। इसलिये बुद्धिमान गुप्त रूप से जप करे।

अथांगुलीनिर्णयः।

शिवाज्ञाविद्याग्रन्थे अंगुष्ठं मोक्षदं विद्यात्तर्ज्जनी शत्रुनाशिनी। मध्यमा धनदा शान्तिकरत्वे वा ह्यनामिका ॥ १७७ ॥ कनिष्ठा कर्षणे शस्ता जपकर्मणि शोभने। अंगुष्ठेन विना कर्म कृतं तदफलं यतः ॥ १७८ ॥ ग्रन्थान्तरे : मध्यमानामिकांगुष्ठैरक्षमालामणीशतैः। एवं जपस्य चैकस्य क्रमोयं चालयेज्जपेत् ॥ १७९ ॥ अंगुष्ठेन तु मोक्षाय मध्यमाघविवृद्धये। जपेदनामिकांगुष्ठैर्नेतराभ्यां कदाचन। अगुष्ठमध्यमायोगात्सर्वसिद्धिप्रदासने। मतान्तरे : अंगुष्ठैमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः। तर्जन्या न स्पृशेदेनां मुक्तिदो गणनक्रमः ॥ १८० ॥

जप में प्रयुक्त अंगुली का निर्णय : शिवाज्ञा विद्याग्रन्थ में लिखा है कि अंगूठे को मोक्ष देने वाला जानना चाहिये। तर्जनी को शत्रुनाशिनी जनना चाहिये। मध्यमा अंगुली धनदा कहलाती है तथा अनामिका शान्ति कर्मों में प्रशस्त कही गयी है। कनिष्ठा कर्षण कर्म में जप के लिये प्रशस्त कही गयी है। अंगूठे के बिना जो काम किया जाता है वह निष्फल होता है। अन्य तन्त्र में कहा गया है कि मध्यमा, अनामिका तथा अंगुष्ठ इनके द्वारा रुद्राक्ष की सौ मनिकाओं से जप का एक क्रम होता है। अतः इन्हीं अंगुलियों से जप करना चाहिये। अंगुष्ठ से जप करना मोक्षदायक होता है, और मध्यमा से जप करने पर पाप की वृद्धि होती है। अंगुष्ठ तथा अनामिका से जप करना चाहिये दूसरी अंगुलियों से कभी जप नहीं करना चाहिये। अंगुष्ठ और मध्यमा के योग से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। दूसरे मत में अंगुष्ठ और मध्यमा से माला को हर दो मणिकाओं के बीच से चलाना चाहिये। इसमें तर्जनी अंगुली से माला को नहीं छूना चाहिये। इस प्रकार किया गया जप मुक्ति का देनेवाला होता है।

अथ जपनिर्णयः गोभिलमते :

नैरन्तर्यंविधिः प्रोक्तो न दिनं व्यतिलङ्घयेत्। दिवसातिक्रमे तेषां

सिद्धिरोधः प्रजायते ॥ १८१ ॥ शनैः शनैरतिस्पष्टं न द्रुतं न विलम्बितम् । न न्यूनं नातिरिक्तं वा जपं कुर्याद्दिनेदिने ॥ १८२ ॥ तन्त्रसारे : मनः संहृत्य विषयान्मन्त्रार्थगतमानसः । न द्रुतं न विलम्वं च जपेन्मौक्तिकपंक्तिवत् ॥ १८३ ॥ उच्चरेदर्थमुद्दिश्य मानसः स जपः स्मृतः । जिह्वोष्ठौ चालयेत्किञ्चिद्देवतागतमानसः ॥ १८४ ॥ किञ्चिच्छ्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः स जपः स्मृतः । जिह्वाजपः शतगुणः सहस्रं मानसः स्मृतः । जिह्वाजपः स विज्ञेयः केवलं जिह्वया बुधैः ॥ १८५ ॥ वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तदर्धं वा महेश्वरि । एकलक्षावधि कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन् ॥ १८६ ॥ कल्पान्ते तु कृते संख्या त्रेतायां द्विगुणा स्मृता । द्वापरे त्रिगुणा प्रोक्ता कलौ संख्या चतुर्गुणा ॥ १८७ ॥

जपनिर्णय : गोभिल के मतानुसार जप निरन्तर और किसी भी दिन का उल्लङ्घन किये बिना करना चाहिये । एक दिन का भी नागा सिद्धि में बाधा उपस्थित करता है । धीरे-धीरे अत्यन्त स्पष्ट, न शीघ्रता से, न विलम्ब से, न कम न अधिक, अर्थात् नियम से जप करना चाहिये । तन्त्रासार के अनुसार विषयों से मन को हटाकर मन्त्रार्थ में मन को लगाकर न शीघ्रता से, न विलम्ब से मोती की पक्ति के समान जप करना चाहिये । अर्थ को लक्ष्य करके मन में उच्चारण को मानस जप कहा जाता है । देवता में चित्त लगाकर जीभ तथा ओठ कुछ-कुछ चलाते हुये किञ्चित श्रवण योग्य जो जप किया जाता है, वह उपांशु जप कहलाता है । जीभ से जप करना सौगुना और मानस जप हजारगुना फलदायक होता है । जिह्वा जप उसे कहते हैं, जिसमें केवल जिह्वा से ही जप किया जाता है । हे महेश्वरि, मन्त्र का जप वर्ण लक्ष या उसका आधा करना चाहिये । एक लाख तक जप करना चाहिये । महाप्रलय के बाद सत्युग में जप की जो सख्या होती है, उसकी दूनी संखया त्रेता में, तिगुनी द्वापर में तथा चौगुनी कलि में कही गयी है ।[1]

---

१. इस विषया का विस्तृत उल्लेख पुरश्चर्यार्णव के पृ० ५४१ पर इस प्रकार मिलता है : मनः संहृत्य विषयान्मन्त्रार्थगत मानसः । न द्रुतं न विलम्बित्वं जपेन्मौक्तिकपंक्तिवत् ॥ जपः स्यादक्षरावृत्तिर्मानसोपांशु वाचिकैः । धिया यदक्षरश्रेणीं वर्णस्वर पदात्मिकाम् । उच्चरेदर्थमुदिश्य मानसः पः जपः स्मृतः । जिह्वोष्ठौ चालयेत्किञ्चिद्देवतागतमानसः ॥ किञ्चिच्छ्रवणः स्यादुपांशुः सः जपः स्मृतः । मन्त्रमुच्चारयेद्वाचा वाचिकः

मन्त्रमहोदधौ : पुरश्चरण एकस्मिन्कृते जन्मान्तरौघतः । मन्त्रो यदि न सिद्धः स्यात्तदातत्पुनराचरेत् ॥ १८८ ॥ ग्रन्थान्तरे : सम्यगनुष्ठितो मन्त्रो यदि सिद्धिर्न जायते । पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १८९ ॥ पुनरनुष्ठितो मन्त्रो यदि सिद्धो न जायते । पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १९० ॥ पुनः सोऽनुष्ठितो मन्त्रो यदि सिद्धो न जायते । उपायास्तत्र कर्तव्याः सप्त शङ्करभाषिताः ॥१९१॥ भ्रामणं रोधनं वश्यं पीडनं शोषपोषण । दहनान्तं क्रमात्कुर्यात्ततः सिद्धोभवेत्पुनः ॥१९२॥ मन्त्रमहोदधौ : यद्वा समुद्रगाभिन्यां नद्यामिन्दुरविग्रहे । स्पर्शान्मोक्षान्तमाजप्य जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ १९३ ॥ विप्रान्संभोज्य नानान्नैर्मन्त्राणां सिद्धिमाप्नुयात् । सम्यग्जपपरस्यापि सिद्ध्यन्ति मनवोचिरात् ॥ १९४ ॥

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि अनन्त जन्मो के कर्मफल के कारण एक बार पुरश्चरण करने पर यदि मन्त्र सिद्ध न हो तो उस पुरश्चरण को पुनः करे । दूसरे ग्रन्थ में भी कहा गया है कि अच्छी तरह मन्त्र का अनुष्ठान करने पर यदि मन्त्र सिद्ध न हो तो पुनः उसी मन्त्र से अनुष्ठान करना चाहिये उससे निश्चय सिद्धि होती है । पुनः अनुष्ठान करने पर भी यदि मन्त्र सिद्ध नहीं होता है तो पुनः उसी मन्त्र से पुरश्चरण करना चाहिये उससे निश्चय सिद्धि होती है । यदि फिर भी उस मन्त्र का अनुष्ठान करने पर सिद्धि नहीं होती है तो महाराज शङ्कर द्वारा कहे गये ये सात उपाय करने चाहिये : भ्रामण रोधन, वश्य, पीडन, शोषण, पोषण तथा दहन । इन्हें क्रम से करना चाहिये इससे अवश्य सिद्धि होती है । मन्त्र महोदधि में कहा गया है कि चन्द्रग्रहण में समुद्रगामी नदी में ग्रहण के स्पर्श से मोक्ष पर्यन्त जप करके उसका दशांश हवन करना चाहिये । ब्राह्मणों को नाना प्रकार के अन्न खिलाकर साधक सिद्धि को प्राप्त करता है । जो अच्छी तरह जप में तल्लीन होता है उसके मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता हैं ।

अगस्त्यसंहितायाम् : ग्रहणेऽर्कस्य चेन्दोर्वा शुचिः पूर्वामुखोषितः । नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः । स्पर्शाद्विमुक्तिपर्यन्तं जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ॥ १९५ ॥

अगस्त्य संहिता में भी कहा गया है : सूर्य ग्रहण में या चन्द्रमा के ग्रहण में पवित्र हो उपवास करके समुद्र गामिनी नदी में नाभि तक जल में

सः जपः स्मृतः ॥ वाचिकाल्लक्षगुणितंउपांशुः परिकीर्तितः । उपांशोः कोटिगुणितो मानसस्तु प्रशस्यते ॥

पूर्वाभिमुख खड़े होकर ग्रहण के आरम्भ से समाप्तिपर्यन्त अन्य विषयों से मन को हटाकर साधक को मन्त्र का जप करना चाहिये।

रुद्रयामले : अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः। ग्रासाद्विमुक्तिपर्यन्तं जपेन्मन्त्रमनन्यधीः। इति कृत्वा न संदेहो जपस्य फलभाग्भवेत् ॥ १९६ ॥ श्रद्धादेरनुरोधेन यदि जाप्यं त्यजेन्नरः। स भवेद्देवता द्रोही पितॄन् सप्त नयेदधः ॥ १९७ ॥

रुद्रयामल में कहा गया है कि शुद्ध जल से स्नान करके पवित्र स्थान पर शान्तचित्त होकर ग्रहण के प्रारम्भ से ग्रहण की समाप्तिपर्यन्त जो मन्त्र का जप करे वह जप का फलभागी होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। श्रद्धा के अभाव में जो व्यक्ति जप को छोड़ देता है, वह देवता का द्रोही होता है और अपने सात पितरों को नरक में ले जाता है।

अथ होमनिर्णयः।

होमकालः : वसन्तश्चैव पूर्वाह्णेमध्यह्ने ग्रीष्म उच्यते। अपराह्णे भवेद्वर्षा शरच्चैवार्द्धरात्रिके। उषो हेमन्तकश्चैव सन्ध्यायां शैशिरः स्मृतः ॥ १९८ ॥ पुरश्चरणचन्द्रिकायाम् ततो जपदशांशेन होमं कुर्याद्दिनेदिने। अथवा लक्षसंख्यायां पूर्णायां होममाचरेत् ॥ १९९ ॥

होमनिर्णय काल : पूर्वाह्ण में वसन्त, मध्याह्न में ग्रीष्म, अपराह्ण में वर्षा, आधीरात में शरद्, उषाकाल में हेमन्त तथा सायंकाल में शिशिर ऋतु कहे गये हैं। पुरश्चरण चन्द्रिका में कहा गया है कि इसके बाद प्रतिदिन जप के दशांश से होम करना चाहिये। अथवा जब एक लाख जप की संख्या हो जाय तब होम करना चाहिये।

अथ होमस्थानं वायवीयसंहितायाम् :

अथाग्निकार्यं वक्ष्यामि कुण्डे वा स्थण्डिलेपि वा। वेद्यामप्यायसे पात्रे मृन्मये वा नवे शुभे। स्थण्डिले वा प्रकुर्वीत सुसिद्धैः सिकतैः सितैः ॥२००॥

होम का स्थान : वायवीय संहिता में कहा गया है होम कुण्ड और वेदी (स्थण्डिल) दोनों पर होता है। अब मैं उसकी विधि बतलाता हूं। वेदी में भी लोहे के पात्र में अथवा शुभ नये मिट्टी के पात्र में अथवा केवल वेदी पर उत्तम बालू को बिछाकर होम करना चाहिये।

अथ कुण्डस्वरूपम् :

चतुरस्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्रं सुवर्तुलम्। षडस्रं पङ्कजाकारमष्टास्रं तानि नामतः ॥ २०१ ॥ सर्वसिद्धिकरं कुण्डं चतुरस्रमुदाहृतम्। पुत्रप्रदं

योनिकुण्डमर्द्धेन्द्वाभं शुभप्रदम् ॥ २०२ ॥ शत्रुक्षयकरं त्र्यस्रं वर्तुलं शान्तिकर्माणि। छेदमारणयोः कुण्डं षडस्रं पद्मसन्निभम्। पुष्टिदं रोगशमनं कुण्डमष्टास्रमीरितम् ॥ २०३ ॥

कुण्ड का स्वरूप : हवनकुण्ड चौकोर, योनि के आकार का, अर्द्धचन्द्रमा के समान, त्रिकोण, गोल, षट्कोण, कमलाकार तथा अष्टकोण संज्ञक होते हैं। चौकोर हवनकुण्ड सभी सिद्धियों को देने वाला होता है। योनि के आकार का कुण्ड पुत्र देने वाला होता है। त्रिकोण हवनकुण्ड शत्रु क्षयकारी होता है। गोल हवनकुण्ड शान्ति कर्म में प्रशस्त होता है। छेदन और मारण में षट्कोण तथा कमलाकार कुण्ड कहे गये हैं। अष्टकोण हवनकुण्ड पुष्टिकारक और रोगों का शमन करने वाला कहा गया है।

वर्णभेदेन कुण्डप्रकारः :

विप्राणां चतुरस्रं स्याद्राज्ञां वर्तुलमिष्यते। वैश्यानामर्द्धचन्द्राभं शूद्राणां त्र्यस्रमीरितम्। चतुरस्रं तु सर्वेषां केचिदिच्छन्ति तान्त्रिकाः ॥ २०४ ॥

वर्णभेद से कुण्ड प्रकार : ब्राह्मणों के लिये चौकोर हवनकुण्ड, क्षत्रियों के लिये गोल, वैश्यों के लिये अर्द्धचन्द्राकार तथा शूद्रों के लिये त्रिकोण हवनकुण्ड बतलाया गया है। कुछ तान्त्रिक चौकोर हवनकुण्ड को सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला मानते हैं।

अथ कुण्डप्रमाणं नारदीये :

कुण्डं तु नारदेनोक्तं हस्तमात्रं शुभं मतम्। यावत्कुण्डस्य विस्तारः खननं तावदीरितम् ॥ २०५ ॥ हस्तप्रमाणम् : चतुर्विंशत्यंगुलाढ्यं हस्तं तस्य विदो विदुः। कर्तुर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमांगुलिपर्वणः ॥ २०६ ॥

कुण्ड प्रमाण : नारदीय में कहा गया है : नारदजी ने एक हाथ प्रमाण वाले हवनकुण्ड को शुभ माना है। हवनकुण्ड का जितना विस्तार हो उतनी ही गहराई होनी चाहिये। हाथ का परिमाण विद्वानों ने चौबीस अंगुल माना है। यज्ञकर्ता के दाहिने हाथ की अंगुली के पोर के परिमाण से हाथ का चौबीस अंगुल परिमाण माना गया है।

होमप्रमाणेन कुण्डप्रमाणम् :

मुष्टिमात्रमितं कुण्डं शतार्द्धे संप्रचक्षते। शतहोमेरत्निमात्रं हस्तमात्रं सहस्रके ॥ २०७ ॥ द्विहस्तमयुते लक्षे चतुर्हस्तमुदीरितम्। दशलक्षे तु षड्हस्तं कोट्यामष्टकरं स्मृतम्। मानहीनाधिकं कुण्डमनेकभयदं भवेत् ॥ २०८ ॥

होम द्रव्य प्रमाण से कुण्ड का परिमाण : पचास आहुति के लिये मुष्टिमात्र परिमाण का हवनकुण्ड बनाया जाता है। सौ आहुति के लिए आरत्नि मात्र परिमाण वाला कुण्ड ठीक होता है और हजार आहुतियों के लिये एक हाथ के परिमाण वाला हवनकुण्ड उत्तम होता है। लाख आहुतियों के लिये दो हाथ का हवनकुण्ड होता है। दश लाख आहुति के लिए छः हाथ का कुण्ड तथा एक करोड़ आहुति के लिये आठ हाथ का हवनकुण्ड कहा गया है। परिमाण से छोटा या बड़ा हवनकुण्ड अनेक प्रकार के भय देनेवाला होता है।

कुण्डस्याङ्गानि :

कुण्डरूपं तु जानीयात् परमं प्रकृतेर्वपुः। प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः। उदरं कुण्डमित्युक्तं योनिः पादौ तु पश्चिमे ॥२०९॥

कुण्ड के अङ्ग : कुण्ड को प्रकृति का रूप जानना चाहिये। पूर्व दिशा में प्रकृति का शिर है। उसके बाहु दक्षिण तथा उत्तर दिशा में हैं। उदर-कुण्ड का मध्य भाग है तथा योनि और दोनों पैर पश्चिम भाग हैं।

अथ कुण्डप्रमाणेन मेखलाप्रमाणम् :

कुण्डवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परम्। कुण्डानां यादृशं रूपं मेखलानां तु तादृशम् ॥ २१० ॥ कुण्डानां मेखलास्तिस्रो मुष्टिमात्रे तु ताः क्रमात्। उत्सेधायामतो ज्ञेया कण्ठार्द्धगलसंमिताः ॥ २११ ॥ अरत्नि-मात्रे कुण्डे स्युस्तास्त्रिद्व्येकांगुलात्मिकाः। एकहस्तमिते कुण्डे वेदाग्नि-नयनांगुलाः ॥ २१२ ॥ मेखलानां भवेदन्तः परितो नेमिरंगुलात्। एकहस्तस्य कुण्डस्य वर्द्धयेत्तत्क्रमात्सुधीः ॥ २१३ ॥ दशहस्तांतमन्येषा-मर्द्धांगुलवशात्पृथक्। कुण्डे द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेदगुणांगुलाः ॥ २१४ ॥ चतुर्हस्तेषु कुण्डेषुवसुतर्कयुगांगुलाः। कुण्डेरसकरे ताः स्युर्दशाष्टत्वं-गुलान्विताः ॥ २१५ ॥ वसुहस्तमिते कुण्डे भानुपंक्त्यष्टकान्विताः। दशहस्तमिते कुण्डेमनुभानुदशांगुला: विस्ताररोत्सेधतो ज्ञेया मेखला सर्वतो बुधैः ॥ २१६ ॥

कुण्ड प्रमाण से मेखला का प्रमाण : कुण्ड के समान मेखला बना कर उसके बाद योनि बनावे। कुण्डों का जैसा रूप होता है मेखलाओं का भी वैसा ही रूप होता है। कुण्डों की तीन मेखलायें मुष्टि के परिमाण से होती हैं। उसकी ऊँचाई-चौड़ाई से कण्ठ से आधे कण्ठ पर्यन्त जाननी चाहिये। आरत्निमात्र परिमाण वाले कुण्ड की मेखला तीन, दो तथा एक अंगल

परिमाण वाली जाननी चाहिये। एक हाथ परिमाण वाले हवनकुण्ड में चार, तीन तथा दो अंगुल की मेखलायें होनी चाहिये। मेखलाओं के चारों ओर भीतर नेमि एक अंगुल होनी चाहिये। चार हाथ वाले कुण्ड में आठ, छः और चार अंगुल की मेखलायें होनी चाहिये। छः हाथ वाले कुण्ड में दश, आठ और छः अंगुल परिमाण वाली मेखलायें होती हैं। आठ हाथ वाले हवनकुण्ड में मेखलायें बारह, दश तथा आठ अंगुल परिमाण वाली होती हैं। दश हाथ वाले हवन-कुण्ड में चौदह, बारह और दश अंगुल परिमाण की मेखलायें विस्तार और ऊँचाई की दृष्टि से समझना चाहिये।

योनिप्रमाणम् :

होतुरग्रे योनिरासामुपर्यश्वत्थपत्रवत्। मुष्ट्यारत्न्येकहस्तानां कुण्डानां योनिरीरिता ॥ २१७ ॥ षट्चतुर्द्व्यंगुलायाम विस्तारोन्नतिशालिनी। एकांगुलं तु योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखम् ॥ २१८ ॥ एकैकांगुलितो योनिं कुण्डेष्वन्येषु वर्द्धयेत्। यवद्वयक्रमेणैव योन्यग्रमपि वर्द्धयेत् ॥ २१९ ॥ स्थलादारभ्य[1] नालं स्याद्योन्या मध्यं सरन्ध्रकरम्। नार्पयेत्कुण्डकोणेषु योनिं तां तन्त्रवित्तमः ॥ २२० ॥

योनिप्रमाण : मुष्टि, आरत्नि तथा एक हाथ परिमाण वाले कुण्डों की योनि पीपल के पत्र के परिमाण की होती है। उनका विस्तार छः अंगुल, चार अगुल तथा दो अंगुल होता है। योनि का अग्रभाग एक अंगुल का कुछ नीचे मुख वाला होना चाहिये। अन्य कुण्डों में एक-एक अंगल योनि को बढ़ाये। योनि के अग्रभाग को भी दो जव के क्रम से बढ़ाये। स्थल भूमि से लेकर योनि के बीच में रंन्ध्रयुक्त नाल होना चाहिये। तन्त्र के विद्वान को चाहिये कि कुण्ड के कोनों में उस योनि को अर्पित न करे।

नाभिमानम् : कुण्डानां कल्पयेदन्तर्नाभिमम्बुजसन्निभाम्। तत्तत्कुण्डा-नुरूपं वा मानमस्या निगद्यते ॥ २२१ ॥ मुष्ट्यरत्न्येकहस्तानां नाभिरुत्से धतारतः। द्वित्रिवेदांगुलोपेतां कुण्डेष्वन्येषु वर्द्धयेत् ॥ २२२ ॥ यवयव-क्रमेणैव नाभिं पृथगुदारधीः। योनिकुण्डे योनिमब्जकुण्डे नाभिं। विवर्जयेत् ॥ २२३ ॥ नाभिक्षेत्रं त्रिधा भित्त्वा मध्ये कुर्वीत कर्णिकाम्। बहिरंशद्वये-नाष्टौ पत्राणि परिकल्पयेत् ॥ २२४ ॥

नाभिमान : कुण्डों की अन्तर्नाभि कमल के समान बनानी चाहिये। हर प्रकार के कुण्ड के अनुरूप इसका मान कहा जा रहा है। मुष्टि परिमाण,

१. स्थलात् भूमिमारभ्य इत्यर्थः। नालं योन्याधारं मृन्मयमूर्द्धाकारं कल्पयेत्। सरन्ध्रकं मेखलावालब्धुपरिस्तरणार्थं रन्ध्रं कल्पयेदित्यर्थः।

अरत्नि परिमाण तथा एक हाथ परिमाण वाले कुण्डों की ऊँचाई तथा विस्तार के आधार पर दो, तीन और चार अंगुल परिमाण की नाभि होनी चाहिये। आगे इनसे बड़े कुण्डों में इसी क्रम से बढ़ाना चाहिये। दो-दो जव के क्रम से ही बुद्धिमान मनुष्य कुण्ड की नाभि को बढ़ावे। योनिकुण्ड में योनि को और अब्ज कुण्ड में नाभि को वर्जित कर देना चाहिये। नाभि क्षेत्र को तीन भागों में काट कर बीच में कर्णिका बनानी चाहिये। बाहर दो अंश से आठ पत्र बनाने चाहिये।

शाकल्यप्रमाणं महार्णवे : तिलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा। अन्ये सौगन्धिकाः स्निग्धा गुग्गुल्वादियवैः समाः ॥ २२५ ॥ त्रिकारिकायाम् : आयुः क्षयं यवाधिक्यं यवसाम्यं धनक्षयम्। सर्वकामसमृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि ॥ २२६ ॥

शाकल्यप्रमाण : महार्णव के अनुसार शाकल्य प्रमाण इस प्रकार है : जव से तिल सदा दूना कहा गया है। अन्य सुगन्धि एवं स्निग्ध द्रव्य गुग्गुल आदि जव के बराबर कहे गये हैं। त्रिकारिका में कहा गया है कि जव की अधिकता से आयु का क्षय होता है। जव के बराबर होने से धन का क्षय होता है। सब कामनाओं की पूर्ति के लिये सदा ही तिल की अधिकता उचित होती है।

अथ द्रव्यभेदेनाहुतिप्रमाणं शारदातिलके :

अथात्र होमद्रव्याणां प्रमाणमभिधीयते। कर्षमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम् ॥२२७॥ उक्तानि पञ्च गव्यानि तत्समानि मनीषिभिः। तत्समं मधुदुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम् ॥२२८॥ दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसम्मिताः। पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः सक्तवोपितथा मताः ॥२२९॥ गुडं पलार्द्धमानं स्याच्छर्करापि तथा मता। ग्रासार्द्धं चरुमानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मतः ॥ २३० ॥ एकैकं पत्रपुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत्। कदलीफलनारङ्गफलान्येकैकशो विदुः ॥ २३१ ॥ मातुलुङ्गं चतुःखण्डं पनसं दशधा कृतम्। अष्टधा नारिकेलानि खण्डितानि विदुर्बुधाः ॥२३२॥ त्रिधा कृतं फलं बिल्वं कपिलं खण्डितं त्रिधा। उर्वारुकफलं होमे चोदितं खण्डितं त्रिधा ॥ २३३ ॥ फलान्यन्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशांगुलाः। दूर्वात्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुला ॥२३४॥ व्रीहयो मुष्टिमात्राः स्युर्मुद्गमाषा यवा अपि। तण्डुलाः स्युस्तदर्द्धांशाः कोद्रवा मुष्टिसम्मिताः ॥२३५॥ गोधूमा रक्तकलभा विहिता मुष्टिमानतः। तिलाश्चुलुकमात्राः स्युस्सर्षपा

स्तप्रमाणकाः ॥ २३६ ॥ शुक्तिप्रमाणं लवणं मरीचान्येकविंशतिः। पुरंबदरमानं स्याद्रामठं तत्समं स्मृतम् ॥ २३७ ॥ चन्दनागुरुकर्पूरकस्तूरीकुंकुमानि च। तिंतिडीबीजमानानि समुद्दिष्टानि देशिकैः ॥ २३८ ॥

द्रव्य भेद से आहुति का प्रमाण : शारदा तिलक के अनुसार होम के द्रव्यों का प्रमाण कहा जा रहा है। घी की आहुति एक कर्ष की होती है। दूध को एक शुक्ति के बराबर होती है। मनीषियों ने पञ्चगव्य की आहुति भी दूध की आहुति के समान एक शुक्ति कही है। उतना ही मधु, दूध और अन्न एक अक्ष प्रमाण का होना चाहिये। दही की आहुति एक प्रसृति (हथेलीभर) कही गयी है। लाजा की आहुति एक मुट्ठी कही गयी है। पृथुक (बहुरी) तथा सतुआ की आहुति का परिमाण भी उतना ही है। गुड़ की आहुति का परिमाण आधा पल माना गया है। शकर की आहुति का परिमाण भी उतना ही है। चरु की आहुति का परिमाण एक ग्रास का आधा माना गया है। गन्ने की आहुति का परिमाण उसका एक पोर कहा गया है। पत्र और पुष्प की आहुति का परिमाण एक-एक कहा गया है। इसी प्रकार पूए की आहुति का भी परिमाण है। केला, नारङ्गी आदि की आहुति एक-एक फल है। बिजौरा नीबू के चार टुकड़े करके आहुति में एक-एक टुकड़ा डाले। कटहल के दश टुकड़े करके एक-एक टुकड़े का होम करे। नारियल के आठ टुकड़े करके एक-एक की आहुति देनी चाहिये। बेल और कैंत के तीन टुकड़े कर एक-एक की आहुति देनी चाहिये। खरबूजे के तथा अन्य फलों के तीन टुकड़े करके एक-एक की आहुति देनी चाहिये। समिधायें दश अंगुल की होनी चाहिये। दूब की आहुति के लिए तीन दून की एक आहुति देनी चाहिये। गिलोय की आहुति देने के लिये उसके टुकड़े चार अंगुल के लेने चाहिये। धान, मूँग, उड़द, सब आहुति के लिये एक-एक मुट्ठी परिमाण में होने चाहिये। चावल आधी मुट्ठी होना चाहिये। कोदो एक मुट्ठीभर होना चाहिये। गेहूं, रक्तकलभ की आहुति का परिमाण एक मुट्ठी है। तिल और सरसों की आहुति की मात्रा हथेलीभर है। नमक की आहुति की मात्रा शुक्तिभर है। मरिच की आहुति की मात्रा इक्कीस है। गुग्गुल, हींग, चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, केसर तथा इमली के बीज की आहुति की मात्रा एक बेर के बराबर है।

अथाग्न्यङ्गानि :

बधिरत्वं कर्णहोमे नेत्रे त्वन्धत्वमाप्नुयात्। नासिकायां मनःपीडा शिरोहोमो हि मृत्युदः ॥ २३९ ॥ यतः काष्ठं ततः श्रोत्रं यतो भूम्यथ

नासिका। यतोल्पज्वलनं नेत्रं यतो भस्म ततः शिरः। यतः प्रज्वलितो वह्निस्तन्मुखं जातवेदसः ॥ २४० ॥

अग्नि का अङ्ग : अग्नि के कान में होम करने से होता बहरा हो जाता है, आँख में होम करने से अन्धा हो जाता है, नाक में होम करने से मन में पीड़ा होती है तथा शिर में होम करने से मृत्यु होती है। कुण्ड में जहाँ काष्ठ है वह अग्नि का कान है, जहाँ भूमि है वह नाक है, अग्नि का काम जलना उसकी आँख है, जहाँ भस्म है वह उसका शिर है, जो प्रचण्ड ज्वाला है वही अग्नि का मुख है।

अग्निवर्णेन शुभाशुभपरीक्षणम् :

स्वर्णसिन्दूरबालाकंकुंकुमक्षोदसन्निभः। भेरीवारिदहस्तिनां ध्वनिर्वह्नेः शुभावहः ॥२४१॥ नागचम्पकपुन्नागवकुलाः केतकानि च। यूथिकानुनिभो गन्धो गन्धो वह्नेः शुभावहः ॥२४२॥ काकस्वरस्वरो वह्नेर्यजमानस्य दुःखदः। कृष्णे कृष्णगतेर्वर्णे यजमानं विनाशयेत् ॥ २४३ ॥ एवं दुष्टेषु चिह्नेषु प्रायश्चित्तोपदेशकः। मूलेनाज्येन जुहुयात्पञ्चविंशतिराहुतीः ॥२४४॥

अग्नि के वर्ण, ध्वनि तथा गन्ध से शुभाशुभ विचार : सोना, सिन्दूर, वालसूर्य, केसर के चूर्ण के समान अग्नि का वर्ण दीख पड़ने पर तथा नगाड़ा, बादल तथा हाथी के समान अग्नि से ध्वनि प्रकट होने पर तथा नागचम्पा, पुन्नाग, मौलसरी, केतकी, जूही, के समान गन्ध प्रकट होने पर शुभ लक्षणों का ज्ञान होता है। जब अग्नि की ध्वनि कौवे के स्वर के समान निकले तो इससे यजमान को दुःख प्राप्त होता है। अग्नि से प्रकट होने वाली काली आभा यजमान को नष्ट कर डालती है। इस प्रकार दुष्ट चिह्नों के प्रकट होने पर प्रायश्चित्त का उपदेश किया गया है। ऐसे अवसर के उपस्थित होने पर मूलमन्त्र से घी की पचीस आहुतियाँ देनी चाहिए।

अथ पूर्णाहुतिविचारः संस्कारभास्करे शौनकः :

अन्ते पूर्णाहुतिं हुत्वा समुद्रादूर्मिसूक्ततः। सततमाज्यधारां तां पूर्णाहुतिमथाचरेत् ॥ २४५ ॥ ग्रन्थान्तरे : चतुर्गृहीतमाज्यं तद्गृहीत्वा स्रुचि मध्यतः। वस्त्रताम्बूलपूगादिफलपुष्पसमन्विताम् ॥ २४६ ॥ अधोमुखस्रुवच्छन्नां गन्धाक्षतैरलंकृताम्। पूर्वं दक्षिणहस्तेन पश्चाद्वामेन पाणिना ॥ २४७ ॥ अग्रमध्यममध्यस्थं मूलमध्यममध्यतः। पाणिद्वयेन होतव्यं पाणिरेको निरर्थकः ॥ २४८ ॥

पूर्णाहुति विचार : संस्कार भास्कर में शौनक ने कहा है : अन्त में समुद्र से ऊर्मि सूक्त तक पूर्णाहुति करके निरन्तर घी की धारा की पूर्णाहुति करनी चाहिए। दूसरे ग्रन्थ में कहा गया है कि वस्त्र, पान, सुपारी, आदि से युक्त स्रुच में चार बार घी लेकर अधोमुख स्रुवा से उसे ढककर गन्ध और अक्षत से उसे अलंकृत करके स्रुच के अग्रभाग के बीच में दाहिने हाथ से तथा मूल तथा अर्द्ध के मध्य भाग में बायें हाथ से पकड़ कर होम करना चाहिए। एक हाथ से होम करना निरर्थक है।

शान्ति रत्ने : ऐशान्यामाहरेद्भस्म स्रुचा वाथ स्रुवेण वा। अङ्कनं कारयेत्तेन शिरःकण्ठांसकेषु च ॥ २४९ ॥

शान्तिरत्न में कहा गया है कि ऐशानी दिशा से स्रुच या स्रुवा से यज्ञकुण्ड की भस्म निकाल कर शिर, कण्ठ तथा कन्धे पर उसे लगाना चाहिये।

होमेऽशक्तेरुपायो योगिनी हृदये :

होमकर्मण्यशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः। यद्यदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्याद्विगुणो जपः ॥२५०॥ होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्याचतुर्गुणः। विप्राणां क्षत्रियाणां च रससंख्यागुणः स्मृतः। वैश्यानां वसुसंख्याकमेषां स्त्रीणामयं विधिः ॥ २५१ ॥

होम करने में असमर्थता का उपाय : योगिनी तन्त्र के अनुसार होम करने में अशक्त ब्राह्मणों को दूना जप करना चाहिये। जो-जो अङ्ग टूट गया हो उसकी संख्या का दूना जप करना चाहिये। होम के अभाव में होम संख्या का चौगुना जप करना चाहिए। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को यह छ गुना कहा गया है और वैश्यों तथा स्त्रियों के लिए आठ गुना जप करने का विधान है।

अगस्त्यसंहितायान्तु : यदि होमेऽप्यशक्तः स्यात्पूजायां तर्पणेऽपि वा। तावत्संख्याजपेनैव ब्राह्मणाराधनेन च ॥ २५२ ॥

अगस्त्य संहिता में कहा गया है कि यदि होम-पूजा में या तर्पण में अशक्त हो तो उतनी संख्या के जप से तथा ब्राह्मणों की पूजा करने से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

अथ यन्त्रलेखनार्थे पात्रनिर्णयः :

स्वर्णादिपात्रे संलिख्य मातृकायन्त्रमुत्तमम्। काश्मीरचन्दनेनापि भस्मना वाथ सुव्रत ॥२५३॥ काश्मीरं शक्तिसंस्कारे चन्दनं वैष्णवे मनौ। शैवे भस्म समाख्यातं मातृकायन्त्रलेखने ॥ २५४ ॥

यन्त्र लिखने के लिए पात्र का निर्णय : हे सुव्रत! स्वर्ण आदि के पात्र में केसर, चन्दन, या भस्म से उत्तम मातृका यन्त्र को लिखना चाहिए। शक्ति

के संस्कार में केसर से, वैष्णव मन्त्र में चन्दन से, शैव मन्त्र में भस्म से मातृका यन्त्र के लिखने का उपदेश किया गया है।

धूपादिसमर्पणाङ्गनिर्णयः रुद्रयामले :

निवेदयेत्पुरोभागे गन्धं पुष्पं च भूषणम् । दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वा मतः ॥ २५५ ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे । नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः । धूपदीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत् ॥ २५६ ॥

धूपादि समर्पणाङ्ग निर्णय : रुद्रयामल में कहा गया है कि गन्ध, पुष्प और भूषण सब देवता के सम्मुख उपस्थित करना चाहिए। दीपक दक्षिण ओर बायें ओर या सम्मुख रखना चाहिये। धूप बायें ओर या सामने रखना चाहिये। दक्षिण ओर नहीं रखना चाहिये। नैवेद्य दाहिने या सामने रखना चाहिये, पीछे नहीं रखना चाहिये। धूप, दीप तथा नैवेद्य देवता के आगे प्रस्तुत करना चाहिये।

अथ गन्धनिर्णयः :

सर्वेषु गन्धजातेषु प्रशस्तो मलयोद्भवः । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यां मलयजं सदा ॥ २५७ ॥

गन्ध निर्णय : सभी गन्धों में मलयगिरि चन्दन श्रेष्ठ माना गया है। इसलिये हर प्रयत्न से मलयगिरि चन्दन सदा देना चाहिये।

देवभेदेन गन्धाः :

कृष्णागुरुः सकर्पूरः सहितो मलयोद्भवैः । वैष्णवप्रीतिदो गन्धः कामाख्यायाश्च भैरवे ॥ २५८ ॥ कुंकुमागरुकस्तूरीचन्द्रभागैः समीकृतैः । त्रिपुराप्रीतिदो गन्धस्तथा चण्डयाश्च शम्भुना ॥ २५९ ॥

देवता भेद से गन्ध भेद : काला अगर, कपूर तथा मलयगिरि का चन्दन वैष्णव देवताओं, कामाख्या तथा भैरव को प्रसन्नता देने वाले हैं।

केसर, अगर, कस्तूरी तथा कपूर एक में मिश्रित त्रिपुरा, चण्डी तथा शिवजी को प्रीतिदायक कहा गया है।

देवभेदेन गन्धाष्टकम् :

गन्धाष्टकं तत्त्रिविधं शक्तिविष्णुशिवात्मकम् । चन्दनागुरुकर्पूरचोरकुंकुमरोचनाः । जटामांसीकपियुताः शक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः ॥२६०॥ चन्दनागुरुह्रीवेरकुष्ठकुंकुमसेव्यकाः । जटामांसीमुरमिति विष्णोर्गन्धाष्टकं विदुः ॥ २६१ ॥ चन्दनागुरुकर्पूरतमालजलकुंकुमम् । कुशीतं कुष्ठसंयुक्तं शैवं

गन्धाष्टकं विदुः ॥ २६२ ॥

देव भेद से गन्धाष्टक : गन्धाष्टक तीन प्रकार का कहा गया है : १. शक्ति गन्धाष्टक, २. विष्णु गन्धाष्टक, ३. शिव गन्धाष्टक। चन्दन, अगर, कपूर, चोर, (ग्रन्थिपर्ण), केसर, गोरोचन, जटामासी, लोहबान, यह शक्ति गन्धाष्टक है। चन्दन, अगर, ह्रीबेर, कुष्ठ, केसर, सेव्यक, जटामासी, मुर यह विष्णुगन्धाष्टक कहलाता है। चन्दन, अगर, कपूर, तमाल, जल, केसर, कुशीत, कुष्ठ यह शैव गन्धाष्टक है।

गन्धार्पणे अंगुलीविचारः :

अनामिक्या च देवस्य ऋषीणां च तथैव च । गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः ॥ २६३ ॥ पितृणामर्पयेद्गन्धं तर्जन्या च सदैव हि । तथैव मध्यमांगुल्या धार्यं गन्धं स्वयं बुधैः ॥ २६४ ॥

गन्धार्पण में अंगुली का विचार : देवताओं को गन्ध अर्पण करने में यह ध्यान रखना चाहिये कि अनामिका अंगुली से देव तथा ऋषियों को प्रयत्नपूर्वक गन्धानुलेपन करना चाहिये। पितरों को सदा तर्जनी अंगुली से गन्धानुलेपन करना चाहिये। स्वयं मध्यमा अंगुली से गन्धानुलेपन करना चाहिये।

अथ फलपुष्पनिर्णयः।

मन्त्रमहोदधौ : श्वेतं पीतं हरेरिष्टं रक्तं रविगणेशयोः । अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः ॥ २६५ ॥ बन्धूकं केतकीं कुन्दं केसरं कुटजं जपाम् । शङ्करे नार्पयेद्विद्वान्मालतीं यूथिकामपि ॥ २६६ ॥ शक्तौ दूर्वार्कमन्दारान्मालूरं तगरं रवौ । विनायके तु तुलसीं नार्पयेज्जातुचिद्बुधः ॥ २६७ ॥

फल पुष्प का निर्णय : मन्त्र महोदधि में कहा गया है कि श्वेत तथा पीत पुष्प विष्णु को प्रिय हैं। लाल पुष्प सूर्य तथा गणेश को प्रिय हैं। बुद्धिमान व्यक्ति विष्णु को अक्षत, मदार तथा धतूर के फूलों को कभी न चढ़ाये। इसी प्रकार शङ्कर को गुलदुपहरिया, केतकी, कुन्द, मौलसरी, कौरैया, जपापुष्प, मालती तथा जूही न चढ़ाये। शक्ति को दूब, मदार, हरसिगार, बेल, एवं तगर, तथा सूर्य और गणेश को तुलसी कभी भी नहीं चढ़ाना चाहिये।

स्नाने विहिते पुष्पस्पर्शे दोषः लघुहारीतः :

स्नानं कृत्वा च ये केचित्पुष्पं गृह्णन्ति वै द्विजाः । देवतास्तत्र गृह्णन्ति भस्मी भवति काष्ठवत् ॥ २६८ ॥ पुष्पं पत्रं फलं देवे न प्रदद्यादधोमुखम् ।

पुष्पाञ्जलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥२६९॥ मन्त्रमहोदधौ : चम्पकं कमलं त्यक्त्वा कलिकामविवर्जयेत् । कुरण्टकं काञ्चनारं वर्जयेद्बृहतीयुगम् ॥ २७० ॥

स्नान के बाद पुष्प स्पर्श में दोष : लघु हारीत में कहा गया है कि स्नान करके जो द्विज फूल ग्रहण करते हैं, उन्हें देवता जले हुए काष्ठ की तरह ग्रहण नहीं करते । पुष्प, पत्र तथा फल अधोमुख देवता को अर्पित नहीं करना चाहिये । किन्तु पुष्पाञ्जलि में यह दोष नहीं है तथा बासी फूलों में भी यह दोष नहीं है । मन्त्रमहोदधि के अनुसार चम्पा और कमल की कलियों को छोड़कर अन्य फूलों की कली नहीं लेनी चाहिये । पीले रंग की कटसरैया, नागचम्पा, एवं दोनों प्रकार की बृहती के पुष्प भी वर्जित माने गये हैं ।

अथ सर्वदेवोपयोगिधूपः तन्त्रसारे :

गुग्गुलुं सरलं दारु पत्रं मलयसम्भवम् । ह्रीबेरमगुरुं कुष्ठं गुडं सर्जरसं घनम् ॥ २७१ ॥ हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजम् । षोडशाङ्गं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ २७२ ॥

सब देवों के लिए उपयोगी धूप : तन्त्रसार में कहा गया है कि गुग्गुल, सरल, देवदारु, मलयाचल के पत्र, ह्रीबेर, अगर, कुष्ठ, गुड, सर्जरस, घन, हरीतकी, नखी, लाख, जटामासी, शैलज यह सोलह अङ्गोंवाले धूप दैव और पित्र्य कर्मों में प्रशस्त कहे गये हैं ।

अथ दीपनिर्णयः ।

दीपपात्रं कालिका पुराणे : सुवृत्तवर्तिसस्नेहपात्रेऽभग्ने सुदर्शने । मृण्मये वृक्षकोटौ तु दीपं दद्यात्प्रयत्नतः ॥ २७३ ॥ तैजसं दारवं लौहं मार्तिक्यं नारिकेलजम् । तृणध्वजोद्भवं चापि दीपपात्रं प्रशस्यते ॥ २७४ ॥

दीपपात्र विचार : कालिकापुराण के अनुसार उत्तम, अखण्डित, गोलाकार वत्ती तथा स्नेह से युक्त मिट्टी या काष्ठ के बने दीपक देवता को चढ़ाना चाहिये । सोने का, काष्ठ का, लोहे का, मिट्टी का या नारियल का अथवा ताड़ या बाँस का दीपक उत्तम होता है ।

दीपविचारः :

न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम् । घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः ॥ २७५ ॥ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः । दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम् ॥ २७६ ॥ नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थमुपकल्पितम् । दीपहर्ता भवेदन्धः काणो निर्वापको भवेत् ॥२७७॥

दीप विचार : दीप में मिश्रित स्नेह नहीं देना चाहिये । सदा घी से या तिलके तेल से युक्त दीपक चढ़ाना चाहिये । घृतयुक्त दीपक देवता के दाहिनी ओर रखना चाहिये तथा तेल का दीपक उसके बायें ओर रखना चाहिये । दाहिने ओर श्वेत बत्ती तथा बायें ओर लाल बत्ती रखनी चाहिये । देवता के लिये चढ़ाये गये दीप को बुझाना नहीं चाहिये । देवता के दीपक को चुरा लेने वाला अन्धा हो जाता है और उसे बुझा देने वाला काना हो जाता है ।

अथ वाद्यनिर्णयो योगिनीतन्त्रे :

शिवागारे भल्लकं च सूर्यागारे तु शङ्खकम् । दुर्गागारे वंशवाद्यं माधुरीं च न वादयेत् ॥ २७८ ॥

वाद्य निर्णय : योगिनी तन्त्र में कहा गया है कि शिव के मन्दिर में भल्लक, सूर्य के मन्दिर में शंख, दुर्गा के मन्दिर में बाँसुरी और माधुरी नहीं बजना चाहिये ।

जय सिंहकल्पद्रुमे :

वादित्राणामभावे तु पूजाकाले च सर्वदा । घण्टाशब्दो नरैः कार्यः सर्ववाद्यमयी यतः ॥ २७९ ॥

जयसिंहकल्पद्रुम के अनुसार वाद्यों के अभाव में पूजा के समय सदा घण्टा बजाना चाहिये क्योंकि घण्टा सर्ववाद्यमय है ।

अथ नैवेद्यनिर्णयः :

भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पञ्चमम् । सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्यै निवेदयेत् ॥ २८० ॥

नैवेद्य निर्णय : भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय तथा चोष्य ये पाँचों प्रकार के नैवेद्य सदा सभी देवताओं को चढ़ाने चाहियें ।

नैवेद्यपात्राणि :

तैजसेषु च पात्रेषु सौवर्णे राजते तथा । ताम्रे वा प्रस्तरे वाथ पद्मपात्रेथ वा पुनः ॥ २८१ ॥ यज्ञदारुमये वापि नैवेद्यं स्थापयेद्बुधः । सर्वाभावे च माहेये स्वहस्तघटिते यदि ॥ २८२ ॥

नैवेद्य का पात्र : बुद्धिमान को चाहिये कि वह (धातु के) सोने या चाँदी के, ताँबे के, पत्थर के, कमल के या यज्ञीय काष्ठों के बने हुए पात्रों में नैवेद्य चढ़ाये । सबके अभाव में अपने हाथ से बनाये मिट्टी के पात्र में रखकर चढ़ाना चाहिये ।

नैवेद्यलक्षण :

अर्वाग्विसर्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते। विसर्ज्जिते जगन्नाथे निर्माल्यं भवति क्षणात्॥ २८३॥

नैवेद्य का लक्षण : नैवेद्य उसे कहते हैं जो द्रव्य देवता के सम्मुख उसके चरणों में अपने हाथ में से नीचे विसर्जित किया जाता है। जगन्नाथ के सम्मुख नैवेद्य विसर्जित करने पर वह तत्काल निर्माल्य हो जाता है। अर्थात् पुष्प आदि मुर्झा कर बेकार हो जाते हैं।

नैवेद्यत्यागनिषेधः।

आह्निकतत्त्वे : तृषार्ताः पशवो रुद्धाः कन्यका च रजस्वला। देवता च सनिर्माल्या हन्ति पुण्यं पुरा कृतम्॥ २८४॥

नैवेद्य त्याग का निषेध : आह्निक तत्व में कहा गया है कि प्यासे पशु यदि बंधे पड़े हों और कन्या यदि रजस्वला होकर घर में पड़ी हो तथा देवता यदि निर्माल्य सहित हो तो ये सब पूर्व किये गये पुण्य को समाप्त कर देते हैं। इसका आशय यह है कि नैवेद्य चढ़ा देने के बाद उसे उठा लेना चाहिए।

रुद्रयामले : निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्यं तद्विधानतः। तन्न चेद्भुज्यते मोहाद्भोक्तुमायान्ति देवताः॥ २८५॥ अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्। शालिग्रामशिलासङ्गात्सर्वं याति पवित्रताम्॥ २८६॥

रुद्रयामल में कहा गया है कि जो द्रव्य देवता को चढ़ाया गया है उसे विधानपूर्वक खाना चाहिये। अगर उसे मोह वश खाया नहीं गया तो उसे खाने के लिये देवता आते हैं। शिवजी पर चढ़ाया गया पत्र, पुष्प, फल एवं जल अग्राह्य होता है, किन्तु शालिग्राम शिला के स्पर्श से वह पवित्र हो जाता है।

उच्छिष्टाधिकारी मन्त्रमहोदधौ :

विष्वक्सेनो हरेरुक्तश्चण्डेश्वर उमापतेः। विकर्तनस्य चण्डांशुर्वक्रतुण्डो गणेशितुः। शक्तेरुच्छिष्टचाण्डाली स्मृता उच्छिष्टभोजिनः॥ २८७॥

देवता उच्छिष्ट खाने के अधिकारी : मन्त्रमहोदधि के अनुसार विष्णु के उच्छिष्टभोजी विश्वक्सेन, शिव के उच्छिष्टभोजी चण्डेश्वर, विकर्तन के उच्छिष्टभोजी चण्डांशु, गणेश के उच्छिष्टभोजी वक्रतुण्ड तथा शक्ति की उच्छिष्टभोजी चाण्डाली हैं।

अथ वस्त्रनिर्णयः।

जयसिंहकल्पद्रुमे : पीतकौशेयवसनं विष्णुप्रीत्यै प्रकीर्तितम्। रक्तं

शक्त्यर्कविघ्नानां शिवस्य च सितं प्रियम्। मलहीनं तथाऽछिद्रं क्षौमं कार्पासमेव च॥ २२८॥

वस्त्र निर्णय : जयसिंहकल्पद्रुप के अनुसार विष्णु की प्रसन्नता के लिये पीला, रेशमी वस्त्र कहा गहा है। शक्ति, सूर्य तथा गणेश की तृप्ति के लिये लाल वस्त्र कहा गया है। शिव की प्रसन्नता के लिये सफेद वस्त्र कहा गया है। मलहीन तथा छिद्र रहित रेशमी या कपास का वस्त्र उत्तम होता है।

अथ प्रदक्षिणानिर्णयः।

लिङ्गार्चनचन्द्रिकायाम् : एका चण्ड्यां रवौ सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके। चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिवे तिस्रः प्रदक्षिणाः॥ २८९॥ ग्रन्थान्तरे : एका चण्डया रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके। हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा॥ २९०॥

प्रदक्षिणानिर्णय : लिङ्गार्चन चन्द्रिका में कहा गया है कि चण्डिका की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात प्रदक्षिणायें, गणेश जी की तीन प्रदक्षिणायें, विष्णु की चार प्रदक्षिणायें तथा शिव की तीन प्रदक्षिणायें करनी चाहिये। अन्यग्रन्थ में चण्डिका की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात प्रदक्षिणायें, विनायक की तीन प्रदक्षिणायें, विष्णु की चार प्रदक्षिणायें तथा शिव की दो प्रदक्षिणायें करने का विधान है।

शिवप्रदक्षिणामाहात्म्यम् : पूजां कृत्वा च यः शम्भोर्न करोति प्रदक्षिणाम्। सा पूजा निष्फला तस्य पूजकः स च दाम्भिकः॥ २९१॥ भक्त्या करोति यः सम्यक् केवलं तु प्रदक्षिणम्। पूजा सर्वा कृता तेन स सम्यक्छिवपूजकः॥ २९२॥

शिवप्रदक्षिणा माहात्म्य में कहा गया है कि जो शिव की पूजा करके उनकी प्रदक्षिणा नहीं करता उसकी पूजा निष्फल होती है तथा वह पूजा करने वाला दाम्भिक होता है। जिस व्यक्ति ने भक्तिपूर्वक अच्छी तरह केवल प्रदक्षिणा ही की है उसने देवता की सब पूजाएँ कर लीं हैं।

अथ कूर्मनिर्णयः।

कूर्मचक्रस्यावश्यकता यामले : क्षेत्रमध्यं समाश्रित्य कूर्मचक्रं विचिन्तयेत्। कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम्। तज्जपस्य फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते॥ २९३॥ तन्त्रराजे : कूर्मस्थितिं सुविज्ञाय यो जपेदवधिस्थितिः। स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च॥ २९४॥

कूर्मनिर्णय : यामल में कूर्मचक्र की आवश्यकता बतलाते हुए कहा गया

है कि क्षेत्रमध्य में कूर्मचक्र का विचार करना चाहिये। कूर्मचक्र को बिना जाने यदि कोई जप या यज्ञ करता है उसका कोई फल नहीं होता। उसका सब किया कराया अनर्थ का कारण हो जाता है। तन्त्रराज में कहा गया है कि कूर्म स्थिति को अच्छी तरह जानकर जो पूरी अवधि तक जप करता है वह सभी पूर्वोक्त फलों को पता है। इसके विपरीत करने पर वह नष्ट हो जाता है।

पुरश्चरणचन्द्रिकोक्तकूर्मचक्रम्।

वर्तुलं नवकोष्ठं तत्कृत्वा कूर्माकृति लिखेत्। स्वरयुग्मं क्रमेणैव ऐन्द्रयाद्यष्टमु दिक्षु च ॥ २९५ ॥ कादीन् वर्णांल्लक्ष्मीशे मध्ये क्षेत्राधिपं यजेत्। क्षेत्रनामाद्यवर्णस्तु यस्मिन्कोष्ठे स्थितो भवेत् ॥ २९६ ॥ मुखं तु तस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ। कोष्ठे कुक्षि उभौ पादौ द्वौ शिष्टं पुच्छमीरितम् ॥ २९७ ॥

पुरश्चरण चन्द्रिकोक्त कूर्मचक्र : एक नवकोष्ठ वाला गोलक बनाकर उसमें कछुए की आकृति बनाएँ। ऐंद्रीं आदि आठ दिशाओं में क्रमशः स्वरयुग्मों को लिखे। ककारादि वर्णों को वैष्णवी दिशाओं में और बीच में क्षेत्राधिप को रखना चाहिये। क्षेत्र के नाम का आदिवर्ण जिस कोष्ठ में स्थित हो उस तरफ कछुए का मुख जानना चाहिए। उसके दोनों ओर हाथ जानना चाहिए। उसके बाद दोनों ओर कुक्षि तथा उसके नीचे दोनों ओर पैर जानना चाहिए।

मुखस्थो लभते सिद्धिंकरस्थः स्वल्पजीवनः। कुक्षिस्थितिरुदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ २९८ ॥ पुच्छस्थः पीड्यते मन्त्री बन्धनोच्चाटनादिभिः। कूर्मचक्रमिति प्रोक्तं मन्त्राणां सिद्धिसाधनम् ॥ २९९ ॥

मुखस्थ सिद्धि प्राप्त करता है, करस्थ अल्पायु होता है, कुक्षि की स्थिति उदासीन होती है, पादस्थित दुःख पाता है पुच्छस्थ मन्त्री बन्धन तथा उच्चाटन आदि से पीड़ित होता है। यह कूर्मचक्र मन्त्रों की सिद्धि का साधन कहा गया है।

मन्त्रमहोदधौ : नवधा तां धरां कृत्वा पूर्वादिषु समालिखेत्। कोष्ठेषु सप्त वर्गांश्च लक्षौ मध्ये तथा स्वरान् ॥ ३०० ॥ क्षेत्रनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेत्ततः। उपविश्य जपं कुर्यान्नान्यस्मिन्दुःखदे स्थले ॥ ३०१ ॥

मन्त्र महोदधि में कहा गया है कि उस भूमि को नव भागों में बाँटकर

पूर्वादि दिशाओं में कोष्ठों में सात वर्ग लिखकर तथा बीच में स्वर लिखें। क्षेत्र नाम का आदिवर्ण जिस कोष्ठक में हो वहाँ बैठकर जप करें। अन्य दुःखायी स्थल पर न बैठें।

पुरश्चरणचन्द्रिकोक्तं कूर्मचक्र

	ईशानभुजा	पूर्वमुख	अग्निभुजा	
	ल– क्ष– अं– अः–	अ– आ– क ख ग घ ङ	इ– ई– च छ ज झ ञ	
उत्तर कुक्षि दक्षि	ओ– औ– श ष स ह	त्रजा	उ– ऊ– ट ठ ड ढ ण	दक्षिण कुक्षि वाम
	ए–ऐ– य र ल व	लृ– लॄ प फ ब भ म	ऋ– ॠ– त थ द ध न	
	वायुपद	पश्चिमपुच्छ	नैर्ऋत्यपाद	

मन्त्रहोदधिप्रोक्तं कूर्मचक्र

	ईशान	पूर्व	अग्नि	
	ल– क्ष–	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	
उत्तर	श ष स ह	अंअः | अ आ | इ ई ओ औ | | उ ऊ ए ऐ | लृ लॄ | ऋ ॠ	ट ठ ड ढ ण	दक्षिण
	य र ल व	प फ ब भ म	त थ द ध न	
	वायुकोण	पश्चिम	नैर्ऋत्यकोण	

कक्षपुटो ।

देवस्थाने सुनिश्चित्य कूर्मचक्रं सुसिद्धिदम् । अष्टवर्गं लिखेद्धीमान्मध्यतो यावदुत्तरम् ॥ ३०२ ॥ लक्ष्मीशपदे क्षेत्रे वेद्यास्ते नवकोष्ठके । हृदास्य-भुजकट्यंघ्रिपुच्छे वर्गाः क्रमात्स्थिताः ॥ ३०३ ॥ पादादि यदि संज्ञानि तेषु क्षेत्राधिपा नव । अमृतो वृषभश्चैव शूलराजश्च वासुकिः ॥ ३०४ ॥ अमरा अजरश्चैव पूज्य शक्तियुतस्तथा । पद्मयोनिर्महाशङ्खो ज्ञेयास्तत्तदनुक्रमात् । माध्यात्पूर्वादितः पूज्या मन्त्रमत्रैव चोच्यते ॥ ३०५ ॥

कक्षपुटि के अनुसार देवस्थान में उत्तम सिद्धि देने वाला कूर्म चक्र बनाकर अष्टवर्ग को बीच में पूर्व से उत्तर दिशा तक विष्णु देवता वाली दिशा में वेदी के नव कोष्ठों में लिखे ।

कक्षपुटिप्रोक्तं कूर्म चक्र

	ईशान	पूर्व	अग्नि	
	दक्षभुजा महाशङ्ख ल. क्ष.	मुख वृषभ क ख ग घ ङ	वामभुजा शूलराज च छ ज झ ञ	
उत्तर	दक्षिणकटि पद्मयोनि श ष स ह	हृदय अमृत अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ अं अः	वामकटि वासुकि ट ठ ड ढ ण	दक्षि०
	दक्षांघ्रि पूज्य य र ल व	पुच्छ अजर प फ ब भ म	वामांघ्रि पूज्य अमर त थ द ध न	
	वायव्य	पश्चिम	नैऋत्यकोण	

हृदय, मुख, भुजा, कटि, पैर तथा पूंछ में वर्ग क्रम से लिखना चाहिये । पाद आदि जो नाम हैं उनमें नव क्षेत्राधिप होते हैं । उनके नाम ये हैं : अमृत वृषभ, शूलराज, वासुकि, अमर, अजर, शक्तियुत, पद्मयोनि, महाशङ्ख ये क्रम से जानने चाहिये । मध्य से पूर्वादि क्रम से ये पूज्य हैं । यहीं पर मन्त्र का उच्चारण किया जाता है । मन्त्र यह है :

ॐ अमुकक्षेत्रपाल देवीपुत्रावतारावतर बलि पिशितं गृह्ण गृह्ण खल खल सर्वविघ्नान् हन हन स्वाहा । वि०

अनेन मन्त्रेण अमृतादयः सर्वे क्षेत्रपालाः पूज्याः स्वस्या स्थितभूम्यां यः क्षेत्रपालः तस्योद्देशेन तन्नाम्ना बलिर्देयः ॥ ३०६ ॥ यत्रतत्र भवेद्वर्गे क्षेत्रनामाद्यमक्षरम् । तन्मुखं शेषवर्गेषु करकुक्ष्यंघ्रिकल्पना ॥ ३०७ ॥

इस मन्त्र से अमृत आदि सभी क्षेत्रपाल पूज्य हैं । अपनी भूमि में जो क्षेत्रपाल स्थित है उसके उद्देश्य से उसके नाम से बलि देना चाहिये । जिस जिस वर्ग में क्षेत्रपाल के नाम का आदि अक्षर हो उनके सम्मुख शेष वर्णों में हाथ, कुक्षि तथा पैर आदि की कल्पना करनी चाहिये ।

मुखस्थः क्षोभयेन्मन्त्री करस्थः स्वल्पभोगभाक् । कुक्षिस्थो ह्यत्युदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ ३०८ ॥ पुच्छस्थो वधबन्धं च जपादाप्नोति निश्चितम् । दीपस्थानं ततः क्षेत्रे ज्ञात्वा मन्त्राञ्छुचिर्जपेत् ॥ ३०९ ॥

जप करने से मुख पर बैठा साधक सबको हिला देता है । हाथ पर बैठा हुआ स्वल्प भोग को प्राप्त करता है । कुक्षि पर बैठा हुआ उदासीन होता है । पैर पर बैठा हुआ दुःख प्राप्त करता है । पूंछ पर बैठा हुआ बध और बन्धन को प्राप्त करता है । इसलिए क्षेत्र में दीप का स्थान जान कर पवित्र होकर मन्त्रों का जप करें ।

दीपस्थाने कूर्मविशेषः ।

क्षेत्राधिपस्य नाम्ना हि दीपस्थानं विचारयेत् । मुखं च नवधा कृत्वा स्वरवर्णादिकं लिखेत् ॥ ३१० ॥ साध्यनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेद्यदि । अथवा कूर्मकोष्ठे तु यत्र नामाक्षरं भवेत् ॥ ३११ ॥ दीपस्थानं हि तज्ज्ञेयं तत्र स्थित्वा मनुं जपेत् । क्षेत्रसाधकमन्त्राणामेकवाद्यमक्षरम् । यदि स्यात्स ध्रुवो मन्त्रः क्षिप्रमेव सुसिध्यति ॥ ३१२ ॥ तन्त्रराजे : कूर्मस्थितिं सुविज्ञाय यो जपेदवधिस्थितिः । स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च ॥ ३१३ ॥ यामले : कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम् । तज्जपस्य फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते ॥ ३१४॥

दीपस्थान में कूर्म विशेष : क्षेत्राधिप के नाम से दीपस्थान का विचार करना चाहिये । मुख का नव भाग करके यहाँ स्वरों तथा वर्णों को लिखना चाहिये । साध्य वस्तु के नाम का आदि वर्ण जिस कोष्ठ में हो अथवा कूर्म कोष्ठ में जहाँ नाम का अक्षर हो वही दीपस्थान है । वहाँ पर बैठकर मन्त्र का जप करना चाहिये । क्षेत्रसाधक मन्त्रों में से किसी एक का आदि अक्षर यदि हो तो निश्चय ही मन्त्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है । तन्त्रराज में

कहा गया है कि कूर्म स्थिति को जानकर जो निश्चित अवधि तक जप करता है वह उक्त फलों को प्राप्त करता है, विपरीत आचरण करने से वह नष्ट हो जाता है। यामल में भी कहा गया है कि कूर्म चक्र को बिना जाने जो जप या यज्ञ करता है वह उसका फल नहीं पाता, उसका सब व्यापार अनर्थकारक हो जाता है।

देवीयामले : कुरुक्षेत्रे प्रयोगे च गङ्गासागरसङ्गमे। महाकाले च काश्यां च कर्मस्थानं न चिन्तयेत् ॥ ३१५ ॥ गौतमीये : पर्वते सिन्धुतीरे वा पुण्यारण्ये नदीतटे। यदि कुर्यात्पुरश्चर्यां तत्र कूर्मं न चिन्तयेत्। ग्रामे वा यदि वास्तौ वा गृहे तं च विचिन्तयेत् ॥ ३१६ ॥ विश्वामित्रकल्पे : काशीपुरी च केदारो महाकालोथ नासिकम्। त्र्यम्बकं च महाक्षेत्रं पञ्च दीपा इमे भुवि ॥ ३१७ ॥ इति कूर्म।

कहाँ कूर्मविचार नहीं करना चाहिये : देवीयामल में कहा गया है कि कुरुक्षेत्र, प्रयाग, गङ्गासागरसङ्गम, महाकाल तथा काशी में कूर्मस्थान का विचार नहीं करना चाहिये। गौतमीय मत से पर्वत पर, समुद्र के तट, पुण्यारण्य में, नदी के तट पर यदि पुरश्चरण किया जाय तो वहाँ कूर्म स्थान का विचार नहीं करना चाहिये। ग्राम में बस्ती में या घर में कूर्मविचार करने की आवश्यकता होती है। विश्वामित्र कल्प में कहा गया है कि काशीपुरी, केदार, महाकाल, नासिक तथा त्र्यम्बक के महाक्षेत्र इस पृथ्वी पर पाँच द्वीप हैं जहाँ कूर्म विचार नहीं होता।

अथ सिद्धादिमन्त्रविचारः।

मालिनीविजये : ऋणासिद्धादियोगेषु मन्त्रे दाने विशेषतः। प्रसिद्धं नाम गृह्णीयाज्जागर्तिमनुजो यतः ॥३१८॥ सिद्धादिचक्रं मालिनीविजये : द्वादशारे तथा चक्रे कूटप्रान्तविवर्जितान्। आद्यन्तान्विलिखेद्वर्णान् पूर्वतो यावदीश्वरः ॥ ३१९ ॥ अङ्कानेकादिभान्वन्ताँल्लिखेत्पूर्वादितः क्रमात्। सिद्धः साध्यः सुसिद्धोरिश्चतुर्धा तु स्फुटो भवेत् ॥ ३२० ॥ मन्त्र साधकयोराद्यो वर्णः स्याद्यत्र कोष्ठगः। स एवं सततं ग्राह्यः स्ववर्णान्मन्त्र-वर्णतः ॥ ३२१ ॥ नवैकपञ्चमे सिद्धः साध्यः षड्दशयुग्मके। त्रिसप्तैकादशे मित्रं वेदाष्टद्वादशे रिपुः ॥ ३२२ ॥ मन्त्रमहोदधौ : नाम्नो मन्त्रस्य वर्णौघं चतुर्भिर्विभजेत् सुधीः। एकादिशेषे सिद्धादि क्रमाज्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३२३ ॥ सिद्धः सिध्यति कालेन साध्यस्तु जपहोमतः। सुसिद्धः प्राप्ति-मात्रेण साधकं भक्षयेदरिः ॥ ३२४ ॥

ऋण सिद्धादि मन्त्र विचार : मालिनीविजय में कहा गया है कि ऋणसिद्धादि योगों में विशेष रूप से मन्त्रदान में प्रसिद्ध नाम को ग्रहण करना चाहिये, जिससे मन्त्र जागृत होता है। सिद्धादि चक्र बनाने की विधि मालिनीविजय के अनुसार इस प्रकार है :

बारह कोष्टवाले चक्र को बनाकर उनमें कूट प्रान्तों को छोड़कर आदि और अन्त के वर्णों को ईश्वर तक लिखें। एक से लेकर बारह अङ्कों को पूर्वादि दिशा-क्रम से लिखें जिससे सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध तथा अरि चार प्रकार से प्रकट हो जाय। जिस कोष्ठ में मन्त्र और साधक का आदि वर्ण हो उसे ही सदा मन्त्रवर्ण से स्ववर्णों तक ग्रहण करना चाहिये। नव, एक तथा पाँच में सिद्ध होता है; साध्य छ तथा दशयुग्मों में; तीन, सात तथा ग्यारह में मित्र तथा चार, आठ और बारह में शत्रु होता है। मन्त्रमहोदधि में कहा गया है : नाम एवं मन्त्र के वर्णों को जोड़कर ४ का भाग लगाना चाहिये। यहाँ १ शेष होने पर मन्त्र सिद्ध, २ शेष होने पर साध्य, ३ शेष होने पर सुसिद्ध तथा ४ शेष होने पर शत्रु जानना चाहिये। सिद्ध मन्त्र निर्धारित समय पर सिद्ध होता है। साध्य जप और होम से सिद्ध होता है। सुसिद्ध दीक्षा द्वारा प्राप्ति मात्र से सिद्ध होता है। अरि साधक को खा जाता है।

सिद्धादियोग सम्बन्धी मालिनीविजय का अकडम चक्र | **सिद्धादियोग सम्बन्धी शुद्ध अकडम चक्र**

अथारिमन्त्रचक्रम्।

अथारिमित्रमन्त्रविचारः। समयाचारतन्त्रे : मन्त्राक्षरेण मन्त्रं च दीपनाम्नोर्भवेद्यदि। साधकस्य च नाम्नाथ किं न सिध्यन्ति मन्त्रिणः ॥ ३२५ ॥ तस्माच्चक्रं विचार्यैव मित्रं चेत्सर्वसिद्धिदम्। अरित्वसद्वयस्ये

हृ गकारेण परस्परम् ॥३२६॥ ऋद्वयस्य ठकारेण ठकारस्य च ऋद्वयम् । ऌद्वयस्य पकारेण पकारस्य च ऌद्वयम् ॥३२७॥ उद्वयस्य षकारेण षकार-स्योयुगेन तु । जकारस्य टकारेण ऌकारस्य खकारतः ॥३२८॥ डकारस्य तकारेण फकारस्य घकारतः । फकारस्य च रेफेण फकारस्य सकारतः । अरित्वमेषां वर्णानामन्येषां मित्रभावना ॥ ३२९ ॥

अरि-मित्र मन्त्र विचार : समयाचार तन्त्र के अनुसार मन्त्राक्षर से दीप का नाम तथा मन्त्रसाधक का नाम भी हो तो मन्त्रसाधक का क्या नहीं सिद्ध होता। इसलिये चक्र का विचार करके ही मित्र मन्त्र सब सिद्धियों का देनेवाला होता है। दोनों अकारों की, गकार के साथ परस्पर शत्रुता है। दोनों ऋकारों की ठकार के साथ ठकार की दोनों ऋकारों के साथ शत्रुता है। दोनों ऌकार की पकार के साथ तथा पकार की दोनों ऌकारों के साथ शत्रुता है। दोनों उकारों की षकार के साथ तथा षकार की दोनों उकारों के साथ शत्रुता है। जकार की टकार के साथ तथा ऌकार की खकार के साथ शत्रुता है। डकार की तकार से, फकार की घकार से, फकार की रेफ से, फकार की सकार से परस्पर शत्रुता है। शेष अन्य वर्णों में मित्रभावना है।

अरि मन्त्र चक्र

वैरि	अ आ	ऋ ॠ	ऌ ॡ	उ ऊ	ज	ऌ	ड	फ	फ	क
वैरि	ग	ठ	प	ष	ट	ख	त	घ	र	स

अरिमन्त्रदोषोद्धारो मालिनीविजये : अरिमन्त्रो गृहीतश्चेदज्ञानवश-तस्तदा । तस्य त्यागः प्रकर्तव्यस्तत्प्रकारोधुनोच्यते ॥ ३३० ॥

अरिमन्त्रदोषोद्धार के सम्बन्ध में मालिनी विजय में लिखा गया है कि यदि अज्ञानवश अरिमन्त्र ले लिया गया हो तो उसका त्याग कर देना चाहिये। उसकी विधि यहाँ कह रहे हैं—

सुदिने स्थापयेत्कुम्भं सर्वतोभद्रमण्डले। विलोमञ्च जपेन्मन्त्रं पूरयेत्तन्तु पायसा ॥ ३३१ ॥ तत्र देवं समावाह्य जपेदावरणार्चितः। तदग्रे स्थण्डिलं कृत्वा प्रतिष्ठाप्यानलं ततः ॥ ३३२ ॥ जुहुयान्मूलमन्त्रेण विलोमेन शतं घृतैः। दिक्पतिभ्यो बलिं दद्यात्पायसान्नैर्घृतान्वितैः ॥ ३३३ ॥ पुनः सम्पूज्य देवेशं प्रार्थयेन्मनुनामुना ।

अच्छे दिन सर्वतोभद्रमण्डल में एक कुम्भ की स्थापना करनी चाहिये। विलोम मन्त्र का जाप करके उस कुम्भ को जल से भर देना चाहिये। उसमें देवता का आवाहन करके आवरण से अर्चि पर्यन्त जप करना चाहिये। उसके आगे स्थण्डिल बनाकर उस पर अग्नि की स्थापना करके विलोम मूल-मन्त्र के द्वारा घी से सौ होम करे और दिक्पालों को बलि देकर घी सहित खीर से बलि देवे। पुनः पूजा करके इस मन्त्र से देवेश से प्रार्थना करे :

अनुकूटमनालोच्य मया तरलबुद्धिना ॥ ३३४ ॥ यदुपात्तं पूजितं च प्रभो मन्त्रस्य रूपकम्। तेन मे मनसः क्षोभमशेषंविनिवर्तय ॥ ३३५ ॥ पूजनं प्रत्यहं वा तु भूयाच्छ्रेयः सनातनम्। तनोतु मम कल्याणं पावनी भक्तिरस्तु मे ॥ ३३६ ॥

एवं सम्प्रार्थ्य देवेशं कर्पूरागुरुचन्दनैः। विलोमं विलिखेन्मन्त्रं ताडपत्रे तदर्चयेत् ॥ ३३७ ॥ प्रबध्य तु निजे मूर्ध्नि स्नायात्कुम्भस्थितैर्जलैः। पुनः सम्पूर्य तत्तोयैर्न पश्येन्मन्त्रपत्रकम् ॥ ३३८ ॥ सम्पूज्य कुम्भसहितं तडागे वा विनिःक्षिपेत्। विप्रान्सम्भोज्य मुच्येत पीडयासौ च मानवः ॥३३९॥

इस प्रकार देवेश से प्रार्थना करके कपूर, अगर तथा चन्दन से ताड़पत्र पर विलोम मन्त्र लिखकर उसकी पूजा करे और उसे अपने सिर पर बाँधकर घट में रखे जल से स्नान करे। फिर उस जल से घड़े को भरकर मन्त्र पत्रकों को न देखे अथवा कुम्भ सहित पूजा करके उसे तालाब में फेंक दे। ब्राह्मणों को भोजन कराकर मनुष्य इसकी पीड़ा से बच जाता।

अथ ऋणधनशोधनम् ।

मालिनीविजये : नामाद्यक्षरमारभ्य यावन्मन्त्रादिवर्णकम्। कृत्वा स्वरैर्बुधो भिद्यात्तदन्यद्विपरीतकम् ॥ ३४० ॥ कृत्वाधिको मन्त्रवर्ण ऋणी चेन्मन्त्रमुत्तमम्। स्वयं ऋणी च तन्मन्त्रं त्यजेत्पूर्वऋणी यतः ॥ ३४१ ॥ प्रकारान्तरोपि : मन्त्रसाधक नामार्णः साधकस्य तथैव च। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषैर्ऋणधनम्भवेत् ॥ ३४२ ॥

ऋण-धन शोधन : मालिनीविजय में कहा गया है कि नाम के आदि अक्षर से लेकर जब तक मन्त्र का आदिवर्ण न आ जाय तब तक बुद्धिमान् मनुष्य विपरीत स्वरों से भेदन करे। मन्त्रवर्ण अधिक होने पर मन्त्र ऋणी होता है। ऐसे मन्त्र को छोड़ दे क्योंकि वे पूर्वऋणी है। दूसरी विधि यह है कि साधक के नामवर्णों और मन्त्रवर्णों को जोड़कर आठ का भाग दे। शेष से ऋण धन होता का निश्चय होता है।

विना शुद्धि न जपोपयोगिमन्त्रः। येषां मनूनां सिद्धादिशोधनं नास्ति तान्ब्रुवे।

शुद्धि के विना जपोपयोगी ऐसे मन्त्र जिनका सिद्धादि शोधन नहीं होता अब उन्हें कह रहा हूं।

एकवर्णस्त्रीवर्णो वा पञ्चार्णो रसवर्णकः ॥ ३४३ ॥ सप्तार्णो नववर्णश्च रुद्रार्णो रदनाक्षरः। अष्टार्णो हंसमन्त्रश्च कूटो वेदोदितो ध्रुवम् ॥ ३४४ ॥ स्वप्नलब्धः स्त्रिया प्राप्तो माला मन्त्रो नृकेसरी। प्रसादो रवि-मन्त्रश्च वाराहो मातृकाः परा ॥ ३४५ ॥ त्रिपुरा काममन्त्रश्चाज्ञासिद्धः पक्षिनायकः। बौद्धमन्त्रा जैनमन्त्रा नैव सिद्धादिशोधनम्। एतद्भिन्नेषु मन्त्रेषु शुद्धिरावश्यकी मता ॥ ३४६ ॥

एक वर्णवाला, तीन वर्णवाला, पाँच वर्णवाला या छ वर्णवाला, सात वर्णवाला, नव वर्णवाला, बारह वर्णवाला या बत्तीस वर्णवाला, अथवा आठ वर्णवाला हंसमन्त्र निश्चितरूप से वेदों में कूट कहा गया है। स्वप्न में या स्त्री द्वारा प्राप्त मालामन्त्र, नृकेसरी, प्रसाद, रविमन्त्र, वाराह मन्त्र, मातृकाएँ, त्रिपुरा, काम मन्त्र, आज्ञासिद्धि पक्षिनायक, बौद्धमन्त्र, जैनमन्त्र, इनमें सिद्धादि के शोधन की आवश्यकता नहीं होती। इनके अतिरिक्त मन्त्रों में शुद्धि की आवश्यकता होती है।

सिद्धसारस्वते विशेषः : नपुन्सकस्य मन्त्रस्य सिद्धादीन्नैव शोधयेत् ॥ ३४७ ॥

सिद्ध सारस्वत में विशेष रूप से कहा गया है कि नपुंसक मन्त्र का सिद्धादि शोधन नहीं करना चाहिये।

शापरहितमन्त्राः। भीष्मपर्वणि या गीता सा प्रशस्ता कलौ युगे। विष्णोः सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ ३४८ ॥ गजेन्द्र-मोक्षणं चैव तथा कारुण्यकः स्तवः। नारसिंहं तथा स्तोत्रं स्तोत्रं श्रीरामसंज्ञकम् ॥ ३४९ ॥ देव्याः सप्तशतीस्तोत्रं तथा नामसहस्रकम्। श्लोकाष्टकं नीलकण्ठं शैवं नामसहस्रकम् ॥ ३५० ॥ त्रिपुरायाः प्रसादाख्यं सूर्यस्य स्तवराजकम्। पैत्रो रुचिस्तवो यश्च इन्द्राक्षीस्तोत्रमेव च ॥३५१॥ वैष्णवं च महालक्ष्म्याः स्तोत्रमिन्द्रेण भाषितम्। भार्गवाख्येन रामेण शप्तान्यन्यानि कारणात् ॥ ३५२ ॥

शापरहित मन्त्र ये हैं : भीष्मपर्व में जो गीता है वह कलियुग में प्रसस्त है। विष्णु सहस्रनामस्तोत्र पापनाशक है। गजेन्द्रमोक्ष, कारुण्यक स्तव, नरसिंह

स्तोत्र, श्रीरामस्तोत्र, दुर्गासप्तशती स्तोत्र, सहस्रनाम स्तोत्र, श्लोकाष्टक-नीलकण्ठ, शिवसहस्रनाम स्तोत्र, त्रिपुराप्रसाद स्तोत्र, सूर्यस्तवराज, पैत्र्यरूचि स्तोत्र, इन्द्राक्षी स्तोत्र, विष्णुस्तोत्र, इन्द्रप्रोक्त महालक्ष्मी स्तोत्र ये शापरहित हैं। इनके अतिरिक्त अन्य मन्त्र परशुराम द्वारा अभिशप्त हैं।

अथ कलिसिद्धिप्रदा मन्त्राः।

मन्त्रमहोदधौ : सिद्धिप्रदा कलियुगे ये मन्त्रास्तान्वदाम्यतः। त्र्यर्ण एकाक्षरोऽनुष्टुप् त्रिविधो नरकेसरी ॥ ३५३ ॥ एकाक्षरोर्जुनोनुष्टुब् द्विविधस्तुरगाननः। चिन्तामणिः क्षेत्रपालो भैरवो यक्षनायकः ॥ ३५४ ॥ गोपालो गजवक्त्रश्च चेटका यक्षिणी तथा। मातङ्गी सुन्दरी श्यामा तारा कर्णपिशाचिनी ॥३५५॥ शबर्य्येकजटा वर्मा काली नीलसरस्वती। त्रिपुरा कालरात्रिश्च कलाविष्टप्रदा इमे ॥ ३५६ ॥

कलि में सिद्धिप्रद मन्त्र : मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि कलियुग में सिद्धिदायक जो मन्त्र हैं, अब मैं उन्हें बतलाता हूं : नृसिंह का त्र्यक्षर, एकाक्षर एवं अनुष्टुप् इस तरह तीन प्रकार के नृसिंह मन्त्र; एकाक्षर एवं अनुष्टुप् दो प्रकार के अर्जुनमन्त्र; दो तरह के हयग्रीव मन्त्र; चिन्तामणि मन्त्र तथा क्षेत्रपाल मन्त्र; भैरव मन्त्र; यक्षराज मन्त्र; गोपाल मन्त्र; गणपति मन्त्र; चेटकायक्षिणी मन्त्र; मातङ्गी मन्त्र; सुन्दरी मन्त्र; श्यामा मन्त्र; तारा मन्त्र; कर्णपिशाचिनी मन्त्र; शबरी मन्त्र; एकजटा मन्त्र; वामाकाली मन्त्र; नील-सरस्वती मन्त्र; त्रिपुरा मन्त्र एवं कालरात्रि मन्त्र—ये सब कलियुग में अभीष्ट फलदायक माने गये हैं। ये मन्त्र चारों वर्णों के लिये उपयोगी हैं।

कलौ चतुर्वर्णोपयोगी मन्त्राः।

अघोरा दक्षिणामूर्तिरुमा माहेश्वरो मनुः। हयग्रीवो वराहश्च लक्ष्मी-नारायणस्तथा ॥ ३५७ ॥ प्रणवाद्याश्चतुर्वर्णा वह्नेर्मन्त्रास्तथा रवेः। प्रणवाद्यो गणपतिर्हरिद्रागणनायकः ॥ ३५८ ॥ सौराष्ट्राक्षरमन्त्रश्च तथा रामषडक्षरः। मन्त्रराजो ध्रुवादिश्च प्रणवो वैदिको मनुः ॥ ३५९ ॥ वर्णत्रयाय दातव्या एते शूद्राय नो बुधैः।

कलि में तीन वर्णों के लिए उपयोगी मन्त्र : अघोर मन्त्र, दक्षिणामूर्ति मन्त्र, उमामाहेश्वर मन्त्र, हयग्रीव मन्त्र, वराह मन्त्र, लक्ष्मीनारायण मन्त्र, प्रणव आदि चार वर्ण वाले अग्नि के मन्त्र, सूर्य के मन्त्र, प्रणवसहित गणपति मन्त्र तथा हरिद्रागणपति मन्त्र, अष्टाक्षर सूर्यमन्त्र, षडक्षर राम मन्त्र, प्रणवादि मन्त्रराज (नृसिंह मन्त्र), प्रणव एवं वैदिक मन्त्र—ये सब मन्त्र

ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तीन वर्णों के लोगों को देने चाहिये किन्तु शूद्रों को नहीं देने चाहिये।

सुदर्शनं पाशुपतमाग्नेयास्त्रं नृकेसरी। वर्णद्वयाय दातव्या नान्यवर्णे कदाचन। ३६०॥

दो वर्णों को दिये जानेवाले मन्त्र: सुदर्शन मन्त्र, पाशुपत मन्त्र आग्नेयास्त्र मन्त्र, नृकेसरी मन्त्र इन्हें दो वर्णों को अर्थात् ब्राह्मण और क्षत्रिय को देना चाहिये अन्य वर्ण को नहीं देना चाहिये।

छिन्नमस्ता च मातङ्गी त्रिपुरा कालिका शिवः। लघुश्यामा कालरात्रिर्गोपालो जानकीपतिः ॥३६१॥ उग्रतारा भैरवश्च देया वर्णचतुष्टये। मृगीदृशां विशेषेण मन्त्रा ये ते सुसिद्धिदाः॥ ३६२॥

चारों वर्णों के लिए: छिन्नमस्ता मन्त्र, मातङ्गी मन्त्र, त्रिपुरा मन्त्र, कालिका मन्त्र, शिव मन्त्र, लघुश्यामा मन्त्र, कालरात्रि मन्त्र, गोपाल मन्त्र, राम मन्त्र, उग्रतारा मन्त्र, भैरव मन्त्र ये सब मन्त्र चारों वर्णों को देने चाहिये। स्त्रियों को ये मन्त्र विशेष रूप से सिद्धिदायक हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा नार्योधिकारिणः। श्रद्धावन्तो देवगुरुद्विजपूजासु सर्वथा॥ ३६३॥

पूजा के अधिकारी: श्रद्धावान् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं स्त्रियाँ ये देवता, गुरु एवं ब्राह्मणों की पूजा के अधिकारी माने गये हैं।

मायां कामं श्रियं वाचं प्रदद्यान्मुखजन्मने। मायामृते बाहुजेभ्य ऊरुजेभ्यः श्रियं गिरम्॥ ३६४॥ वाणीवीजं तु शूद्रेभ्योन्येभ्यो वर्म वषण्नमः॥ ३६५॥

विविध वर्णों को देय बीजमन्त्र: ब्राह्मणों को माया (ह्रीं) काम (क्लीं) श्री (श्रीं) तथा वाक् (ऐं) बीज देने चाहिये। मायाबीज को छोड़कर शेष (क्लीं, श्रीं एवं ऐं) ये तीनों बीज क्षत्रियों को, श्री (श्रीं) एवं वाक् (ऐं) बीज वैश्यों को, वाग् बीज शूद्रों को तथा वर्म (हुं) वषट् एवं नमः ये अन्यों को देने चाहिये।

कुलार्णवे: दासस्य शिवभक्तस्य हितप्रियकरस्य च। शुद्रस्यापि प्रदातव्यं नमोन्तं प्रणवं विना॥ ३६६॥ विना हि प्रणवं मन्त्रः स्त्रीशूद्राणां प्रकीर्तितः। प्रणवेन समायुक्तास्तन्मन्त्राश्च विषोपमाः॥ ३६७॥

कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है कि शिवभक्त हित और प्रिय करनेवाले शूद्र को भी प्रणव के बिना नमः अन्तवाले मन्त्र को देना चाहिये। प्रणव के बिना मन्त्र स्त्रियों और शूद्रों के लिये कहा गया है। उसके लिये प्रणव से युक्त मन्त्र विष के समान हो जाते हैं।

आगमेपि: स्वाहाप्रणवसंयुक्तं मन्त्रं शूद्रे ददेद्द्विजः शूद्रश्चाण्डालतामेति विप्रः शूद्रत्वमेव हि॥ ३६८॥

आगम में भी कहा गया है कि जो द्विज स्वाहा और प्रणव से युक्त मन्त्र शूद्र को देता है वह शूद्र हो जाता है औय शूद्र चाण्डाल हो जाता है।

अथ मन्त्राणां पुंस्त्रीनपुन्सकविचारः।

शारदातिलके: पुन्मन्त्रा हुंफडन्तः स्युर्द्विठान्तास्तु स्त्रियो मताः। नपुन्सका नमोन्ताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा॥ ३६९॥

मन्त्रों का लिङ्ग विचार: शारदातिलक में कहा गया है कि पुलिङ्ग मन्त्र वे हैं जिनके अन्त में 'हुं फट्' होता है। जिनके अन्त में दो 'ठ' होते हैं वे स्त्रीलिंग मन्त्र होते हैं। जिनके अन्त में 'नमः' होता है वे नपुंसक मन्त्र होते हैं।

मन्त्रमहोदधौ: पुन्स्त्रीनपुन्सकाः प्रोक्ता मनवस्त्रिविधा बुधैः। वषडन्ता फडन्ताश्च पुमांसो मनवः स्मृताः॥ ३७०॥ वौषट् स्वाहान्तगा नार्यो हूंनमोन्ता नपुन्सकाः।

मन्त्रमहोदधि में भी कहा गया है कि विद्वानों ने पुलिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग तीन प्रकार के मन्त्र कहे हैं। जिन मन्त्रों के अन्त में 'वषट्' तथा फट् लगे रहते हैं वे मन्त्र पुलिंग कहे जाते हैं। जिनके अन्त में 'वौषट्' तथा 'स्वाहा' लगे हैं वे मन्त्र स्त्रीलिंग कहे जाते हैं। जिनके अन्त में 'हु' तथा नमः लगे हैं वे नपुंसक मन्त्र कहे जाते हैं।

वश्योच्चाटनरोधेषु पुमांसः सिद्धिदायकाः॥ ३७१॥ क्षुद्रकर्मरुजां नाशे स्त्रीमन्त्राः शीघ्रसिद्धिदाः। अभिचारे स्मृता क्लीबा एवं ते मनवस्त्रिधा॥ ३७२॥

वशीकरण तथा उच्चाटन में पुलिंग मन्त्र सिद्धिदायक होते हैं। क्षुद्रकर्मों में तथा रोगों के दूरीकरण में स्त्रीमन्त्र शीघ्र सिद्धि देनेवाले होते हैं। अभिचार कर्म में नपुंसक मन्त्र शीघ्र सिद्ध देनेवाले होते हैं। इस प्रकार मन्त्र तीन तरह के होते हैं।

अग्निचन्द्रसम्बन्धिमन्त्रा ग्रन्थान्तरे: प्रणवाक्षररेफहकारप्राया मन्त्रा आग्नेयाः। इन्द्रामृताक्षरप्राया मन्त्राः सौम्याः सूर्य वहति।

दूसरे ग्रन्थों में अग्नि और चन्द्रमा सम्बन्धी मन्त्र कहे गये हैं। जिन मन्त्रों में प्रणव अक्षर, रेफ, हकार, अधिक होते हैं वे आग्नेय कहे जाते हैं। इन्द्र और अमृत अक्षर जिनमें अधिक होते हैं वे मन्त्र सौम्य कहलाते हैं।

आग्नेयानां प्रबोधकालश्चन्द्रे सौम्यानाम् । स्वप्रबोधकाले मन्त्रग्रहणे जपे च कृते तात्कालिकसिद्धिः स्यादेवेति ॥ ३७३ ॥

सूर्योदय के समय आग्नेय मन्त्रों के जगने का समय है। चन्द्रोदय के समय सौम्य मन्त्रों के जगने का समय होता है। अपने-अपने प्रबोध काल में मन्त्र ग्रहण करने से या जप करने से तत्काल सिद्धि होती है।

बीजमन्त्रादिप्रकारो मन्त्रमहोदधौ। बीजमन्त्रास्तथा मन्त्रा मालामन्त्रास्तथापरे। त्रिधा मन्त्रगणा प्रोक्ता बुधैरागमवेदिभिः ॥ ३७४ ॥

बीजमन्त्र आदि की विधि मन्त्रमहोदधि में इस प्रकार कही गयी है : आगमविद विद्वानों द्वारा बीजमन्त्र, तथा मालामन्त्र ये तीन प्रकार के मन्त्र कहे गये हैं।

बीजमन्त्रा दशार्णान्तास्ततो मन्त्रानखावधिः। विंशत्यधिकवर्णा ये मालामन्त्रास्तु ते स्मृताः ॥ ३७५ ॥

'बीजमन्त्र' दश वर्णों तक होते हैं, ग्यारह से बीस वर्णों तक के 'मन्त्र' कहे जाते हैं और बीस से अधिक वर्णवाले मालामन्त्र कहे जाते हैं।

बाल्ये वयसि सिद्धयन्ति बीजमन्त्रा उपासितुम्। मन्त्राः सिद्धा यौवने तु मालामन्त्राश्च वार्द्धके ॥ ३७६ ॥

बाल्यावस्था में बीजमन्त्र सिद्ध होते हैं। युवावस्था में मन्त्र सिद्ध होते हैं। वृद्धावस्था में मालामन्त्र सिद्ध होते हैं।

उक्तान्यस्यामवस्थायामभीष्टप्राप्तये सुधीः। बीज मन्त्रादिमन्त्राणां द्विगुणं जपमाचरेत् ॥ ३७७ ॥

उपर्युक्त अवस्थाओं के विपरीत अवस्था में अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये बुद्धिमान् साधक को बीजमन्त्र, मन्त्र तथा मालामन्त्र का दूना जप करना चाहिये।

गुप्तचैतन्यशक्तियुक्तमन्त्राः शिवोपि : गुप्तवीर्याश्च ये मन्त्रा न दास्यन्ति फलं प्रिये। मन्त्रश्चैतन्यसहिताः सर्वसिद्धिकराः स्मृताः ॥३७८॥ चैतन्यरहिता मन्त्रा प्रोक्ता वर्णास्तु केवलाः। फलं नैव प्रयच्छन्ति लक्षकोटिजपादपि ॥ ३७९ ॥

गुप्त चैतन्ययुक्त मन्त्र : शिव जी ने कहा है कि हे प्रिये, गुप्त शक्तिवाले जो मन्त्र हैं वे फल नहीं देंगे। चैतन्ययुक्त मन्त्र सभी प्रकार की सिद्धियों के देने वाले हैं। चैतन्यरहित मन्त्र केवल वर्ण कहे गये हैं। ऐसे मन्त्र करोड़ों बार जप करने पर भी फल नहीं देते।

अथ कामनापरत्वेन मन्त्रादौ बीजनिर्णयः।

मालिनीविजये : यदि दोषे तु सर्वत्र मायाकाममथापि वा। क्षिप्त्वा ह्यादौ श्रियं दद्यात्सर्वदोषविमुक्तये ॥ ३८० ॥ प्रणवो भुवनेशानि रमाबीजमनोभवम् । जीवनं सर्वमन्त्राणामित्याहुर्भगवाञ्छिवः ॥ ३८१ ॥ श्रीबीजाद्यं यदा जप्यं तदा लक्ष्मीरचञ्चला। कामाद्यं जपनादेव सर्वलोकं वशं नयेत् ॥ ३८२ ॥ वागादिजपनादेव वाक्सिद्धिर्जायतेचिरात्। शक्तिबीजादिको मन्त्रो निर्दोषमचिराद्दिशेत् ॥ ३८३ ॥ पुटनात्प्रणवाभ्यां तु मोक्षमाप्नोति निश्चितम्। एवं मन्त्रवरं जप्त्वा किं न सिध्यति मन्त्रवित् ॥ ३८४ ॥

कामनापरक मन्त्रों में बीज निर्णय : मालिनीविजय में कहा गया है कि यदि सर्वत्र दोष हो तो सर्वदोषों की शान्ति के लिये माया 'ह्रीं' काम 'क्लीं' को या श्री 'श्रीं' को आदि में रखकर जप करना चाहिये। हे महेशानि, 'प्रणव' रामाबीज से उत्पन्न है। यह सभी मन्त्रों का जीवन है, प्राण है, ऐसा भगवान् शिव ने कहा है। आदि में श्रीबीज लगे मन्त्र का जप करने से अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है। काम (क्लीं) आदि वाले मन्त्र के जप से साधक समस्त लोक को वश में कर लेता है। वाक् आदि मन्त्रों के जप से चिरकालीन वाक्सिद्धि होती है। शक्तिबीज वाले मन्त्र दोषरहित तत्काल फल देते हैं। दो प्रणवों से पुटित करके मन्त्र का जप करने से अधिक निश्चित मोक्ष प्राप्त करता है। मन्त्रवेत्ता इस प्रकार मन्त्र का जप करके क्या सिद्ध नहीं कर सकता।

अथ कामनापरत्वेन मंत्रान्ते पल्लव निर्णयः :

हरगौरीतन्त्रे : मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरः पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः कामदुघो भवेत् ॥ ३८५ ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ ३८६ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना। यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ ३८७ ॥ वषडंतः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ ३८८ ॥ मनुमते। वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुंस्तंभे खे च मारणे ॥ स्वाहा तुष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥ ३८९ ॥ मतान्तरे ॥ वषड्वश्ये फडुच्चाटे हुंद्वेषे खे च मारणे। टस्तम्भे वौषडाकर्षे नमः सम्पत्तिहेतवे। स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मन्त्रपल्लवाः ॥ ३९० ॥

अथ कामनापरक मन्त्रान्त में पल्लव निर्णय : हरगौरीतन्त्र के अनुसार मन्त्रों का वास ही पल्लव है और शिर प्रणव है। शिर और पल्लव से युक्त मन्त्र कामनाओं को पूर्ण करनेवाला होता है। वशीकरण, आकर्षण और होम में 'स्वाहा' पल्लव लगाना सिद्धिदायक होता है। वौषट् पल्लवयुक्त मन्त्र पुष्टि आदि में सिद्धि कारक है।

हुंकार पल्लवयुक्त मन्त्र ब्राह्मण को छोड़कर अन्य के मारण में प्रयुक्त होता है। मन्त्र-भञ्जन कार्यों में, भारी भय दूर करने में वषट् पल्लवयुक्त मन्त्र का जप करना चाहिये यह ग्रहबाधा विनाशक है। उच्चाटन में फट् पल्लवयुक्त मन्त्र कहा गया है। मनु के मत से भी वषट् वशीकरण में उच्चाटन में फट्, हु स्तम्भन में और मारण में स्वाहा, तुष्टि-पुष्टि में ठः ठः, और नमः सब कुछ सिद्ध करने में प्रशस्त है। दूसरे मत में वशीकरण में वषट्, उच्चाटन में फट्, हुं द्वेषण और मारण में, स्तम्भन में वौषट्, सम्पत्ति के लिये नमः, तुष्टि-पुष्टि के लिये स्वाहा, ये सब मन्त्रों के पल्लव कहे गये हैं।

अथ मन्त्राणां छिन्नादिकदोषनिर्णयः :

शारदातिलके : छिन्नादिदुष्टा मन्त्रास्ते पालयन्ति न साधकम्। छिन्नो रुद्धः शक्तिहीनः पराङ्मुख उदीरितः ॥ ३९१ ॥ बधिरो नेत्रहीनश्च कीलितस्तंभितस्तथा। दग्धस्त्रस्तश्च भीतश्च मलिनश्च तिरस्कृतः ॥ ३९२ ॥ भेदितश्च सुषुप्तश्च मदोन्मत्तश्च मूर्छितः। हृतवीर्यश्च हीनश्च प्रध्वस्तो बालकस्ततः ॥ ३९३ ॥ कुमारश्च युवा प्रौढो वृद्धो निस्त्रिंश-कस्तथा। निर्बीजः सिद्धिहीनश्च मंदः कूटस्तथा पुनः ॥ ३९४ ॥ निरंशकः सत्वहीनः केकरो बीजहीनकः। धूमिलालिङ्गितौ स्यातां मोहितस्तु क्षुधार्तकः ॥३९५॥ अतिदृप्तोङ्गहीनः स्यादतिक्रुद्ध समीरितः। अतिक्रूरश्च सव्रीडः शान्तमानस एव च ॥ ३९६ ॥ स्थानभ्रष्टस्तु विकलः सोऽतिवृद्धः प्रकीर्तितः। निःस्नेहः पीडितश्चापि वक्ष्याम्येषाञ्च लक्षणम् ॥ ३९७ ॥

मन्त्रों के छिन्नादिक दोषों का निर्णय : शारदातिलक में कहा गया है : छिन्नादि दोषों से दुष्ट मन्त्र साधक का पालन नहीं करते। मन्त्र छिन्न, रुद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख, बधिर, अन्ध, कीलित, स्तम्भित, दग्ध, भीत, मलिन, तिरस्कृत, भेदित, सुषुप्त, मदोन्मत्त, मूर्च्छित, हतवीर्य, हीन, प्रध्वस्त, बालक, कुमार, युवा, प्रौढ़, वृद्ध, निस्त्रिंशक, निर्बीज, सिद्धिहीन, मन्द, कूट, निरंशक, सत्वहीन, केकर, बीजहीन, धूमिल, आलिंगित, मोहित, क्षुधार्त, अतिदृप्त, अंगहीन, अतिक्रूर, लज्जायुक्त, शान्तमानस, स्थानभ्रष्ट, विकल, अतिवृद्ध, निःस्नेह, तथा पीडित कहे गये हैं। अब मैं इनके लक्षणों को कहता हूं।

अथ लक्षणानि : मनोर्यस्यादिमध्यान्तेष्वानिलं बीजमुच्यते। संयुक्तं वापि युक्तं वा स्वराक्रान्तं त्रिधा पुनः ॥ ३९८ ॥ चतुर्धा पंचधा वाथ समन्त्रश्छिन्नसंज्ञकः।

जिस मन्त्र के आदि, मध्य और अन्त में अनिल बीज कहा जाता है, जो कि संयुक्त, युक्त या स्वराक्रान्त तीन प्रकार, चार प्रकार या पाँच प्रकार का होता है, वह मन्त्र 'छिन्न' संज्ञक होता है।

आदिमध्यावसानेषु भूबीजद्वन्द्वलांछितः ॥३९९॥ रुद्धमन्त्रः स विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिविवर्जितः ॥ ४०० ॥

जो मन्त्र आदि मध्य तथा अन्त में दो 'भूबीज' से युक्त होता है, वह मन्त्र भोग और मोक्ष से विवर्जित 'रुद्ध' संज्ञक कहलाता है।

मायात्रितत्त्वं श्रीबीजं रावहीनश्च यो मनुः। शक्तिहीनः स कथितो यस्य मध्ये न विद्यते ॥ ४०१ ॥

जो मन्त्र राव से हीन हो और जिसके बीच में मायाबीज 'ह्रीं' त्रितत्त्व बीज 'प्रणव' (ॐ) तथा श्रीबीज 'श्रीं' न हो वह 'शक्तिहीन' कहलाता है।

कामबीजं मुखे माया शिरस्यंकुशमेव च। असौ पराङ्मुखः प्रोक्तो हकारो बिन्दुसंयुतः ॥ ४०२ ॥

जिस मन्त्र के आदि में कामबीज 'क्लीं' न हो तथा अन्त में माया बीज 'ह्रीं' तथा अंकुशबीज 'क्रों' न हो वह 'पराङ्मुख' कहा गया है।

आद्यन्तमध्येष्विदुर्वा स भवेद्बधिरः स्मृतः।

जिस मन्त्र के आदि, मध्य और अन्त में बिन्दुयुक्त हकार अथवा इन्दु न हो वह 'बधिर' कहा गया है।

पञ्चवर्णो मनुर्यः स्याद्रेफार्केन्दुविवर्जितः ॥४०३॥ नेत्रहीनः स विज्ञयो दुःखशोकामयप्रदः।

जो पाँच वर्णों का मन्त्र हो और उसमें रेफ, अर्क, तथा इन्दु के बीज न हों वह दुःख, शोक और रोगकारक होता है तथा वह 'नेत्रहीन' कहलाता है।

आदिमध्यावसानेषु हसः प्रासाद वाग्भवौ। हकारो बिन्दुमाञ्जीवो रावश्चापि चतुष्फलः ॥ ४०४ ॥ माया नमामि च पदं नास्ति यस्मिन्स कीलितः।

जिस मन्त्र के आदि, मध्य और अन्त में हंस बीज, प्रासाद बीज, वाग्भव बीज, बिन्दुमान् हकार। जीव बीज राव तथा चतुष्फल का बीज, मायाबीज तथा 'नमामि' पद नहीं होता वह 'कीलित' कहलाता है।

एक मध्ये द्वयं मूर्ध्नि यस्मिन्नस्त्रपुरन्दरौ ॥४०५॥ विद्येते स तु मन्त्रः स्यात्स्तम्भितः सिद्धिरोधकः ।

जिस मन्त्र के मध्य में एक अस्त्रबीज तथा आदि दो में अस्त्रबीज तथा इन्द्रबीज हो वह सिद्धि को रोकने वाला 'स्तम्भित' कहलाता है ।

वह्निर्वायुसमायुक्तो यस्य मन्त्रस्य मूर्द्धनि ॥ ४०६ ॥ सप्तधा दृश्यते तं तु दग्धं मन्वीत मन्त्रवित् ।

जिस मन्त्र के आदि में अग्निबीज, सात वायुबीजों से युक्त दिखलाई देता है उसे मन्त्र जानने वाला 'दग्ध' माने ।

अस्त्रं द्वाभ्यां त्रिभिः षड्भिरष्टभिर्दृश्यतेक्षरैः ॥ ४०७ ॥ त्रस्तः सोभिहितो यस्य मुखे न प्रणवः स्थितः ।

जिस मन्त्र में दो, तीन, छ तथा आठ अक्षरों से अस्त्रबीज दिखलाई देता है तथा जिसके आदि में प्रणव नहीं है वह 'त्रस्त' कहलाता है ।

शिवो वा शक्तिरथवा भीताख्यः स प्रकीर्तितः ॥ ४०८ ॥ आदिमध्यावसानेषु भवेत्प्रार्णचतुष्टयम् । यस्य मन्त्रः स मलिनो मन्त्रवित्तं विवर्जयेत् ॥ ४०९ ॥

जिस मन्त्र के आदि, मध्य और अन्त में मिलाकर चार मकार हों वह 'मलिन' कहलाता है । मन्त्र का जानने वाला उसे छोड़ देवे ।

यस्य मध्ये दकारो वा क्रोधो वा मूर्द्धनि द्विधा । अस्त्रं तिष्ठति मन्त्रश्च स तिरस्कृत ईरितः ॥ ४१० ॥

जिस मन्त्र के मध्य में हकार हो या क्रोधबीज हो, आदि में तथा अन्त में दो अस्त्रबीज हों वह 'तिरस्कृत' कहा गया है ।

भ्योद्वयं हृदयं शीर्षे वषड् वौषट् च मध्यतः । यस्यासौ भेदितो मन्त्रस्त्याज्यः सिद्धिषु सूरिभि ॥ ४११ ॥

जिस मन्त्र के हृदय में भ्योद्वय हो, शीर्ष में वषट् हो और मध्य में वौषट् हो, वह 'भेदित' कहलाता है । विद्वानों द्वारा सब सिद्धियों में वह मन्त्र त्याज्य कहा गया है ।

त्रिवर्णो हंसहीनो यः सुषुप्तः समुदाहृतः । मन्त्रो वाप्यथ वा विद्या सप्ताधिकदशाक्षरः ॥ ४१२ ॥

सत्रह अक्षरों से अधिक विद्या हो या ऐसा मन्त्र जिसमें तीन वर्ण 'हंस' से हीन हों वह 'सुषुप्त' कहलाता है ।

फट्कारपञ्चकादिर्यो मदोन्मत्त उदीरितः । तद्वदस्त्रं स्थितं मध्ये

यस्य मन्त्रः समूर्च्छितः ॥४१३॥ विरामस्थानगं यस्य हृतवीर्यस्सकथ्यते ।

जिस मन्त्र के आदि में पाँच फट्कार हों उसे 'मदोन्मत्त' कहा गया है । उसी प्रकार जिस मन्त्र के मध्य में अस्त्र बीज हो वह 'मूर्छित' कहा गया है । जिस मन्त्र के अन्त में अस्त्रबीज हो वह 'हृतवीर्य' कहा जाता है ।

आदौ मध्ये तथा मूर्ध्नि चतुरस्त्रयुतो मनुः ॥ ४१४ ॥ ज्ञातव्यो हीन इत्येष यः स्यादष्टादशाक्षरः ।

अट्ठारह अक्षरों वाला जो मन्त्र आदि, मध्य तथा अन्त में चार अस्त्र-बीजों वाला हो, उसे 'हीन' जानना चाहिये ।

एकोनविंशत्यर्णो वा यो मन्त्रस्तारसंयुतः ॥ ४१५ ॥ हृल्लेखांकुश-बीजाढ्यस्तं प्रध्वस्तं प्रचक्षते । सप्तवर्णो मनुर्बालः कुमारोष्टाक्षरः स्मृतः ॥ ४१६ ॥ षोडशार्णो युवा प्रौढश्चत्वारिंशल्लिपिर्मनुः ।

जो मन्त्र उन्नीस वर्णों वाला हो और वह प्रणव से युक्त हो तथा जिसके आदि में मायाबीज और अंकुशबीज हो वह 'प्रध्वस्त' कहलाता है । सात वर्णों वाला मन्त्र बाल, आठ वर्णों वाला मन्त्र कुमार, सोलह वर्णों वाला मन्त्र युवा तथा चालीस वर्णों वाला मन्त्र प्रौढ कहलाता है ।

त्रिंशदर्णश्चतुः षष्टिवर्णो मन्त्रःशताक्षरः ॥४१७॥ चतुः शताक्षरश्चापि वृद्ध इत्यभिधीयते ।

तीस वर्णों वाला, साठ वर्णों वाला, सौ वर्णों वाला, चार सौ वर्णों वाला मन्त्र 'वृद्ध' कहलाता है ।

नवाक्षरो ध्रुवयुतो मनुर्निस्त्रिंश ईरितः ॥ ४१८ ॥

नव अक्षरों वाला मन्त्र जिसमें 'ध्रुवबीज' हो उसे 'निस्त्रिंश' कहा गया है ।

अस्यावसाने हृदयं शिरोमन्त्रश्च मध्यतः । शिखी वर्म च न स्यातां वौषट् फटकार एव वा ॥ ४१९ ॥ शिवशक्त्यर्ण हीनो वा स निर्बीज इतीरितः ।

जिसके अन्त में हृदय मन्त्र 'नमः' और शिरोमन्त्र 'स्वाहा' न हों तथा मध्य में शिखीमन्त्र, वर्ममन्त्र, वौषट्, या फट्कार न हों या जो शिव तथा शक्ति के बीजमन्त्रों से हीन हो वह मन्त्र 'निर्बीज' कहा गया है ।

एषुस्थानेषु फट्कारः षोढा यस्मिन्प्रदृश्यते ॥ ४२० ॥ स मंत्रः सिद्धिहीनः स्यान्मन्दः पंक्त्यक्षरो मनुः ।

जिस दशाक्षर मन्त्र के आदि, मध्य तथा अन्त में छ बार फट्कार

दिखलाई देता है, वह मन्त्र 'सिद्धिहीन' कहलाता है और वह हर कार्यों में मन्द होता है।

कूट एकाक्षरो मन्त्रः स एवोक्तो निरंशकः ॥ ४२१ ॥ द्विवर्णः सत्त्वहीनः स्याच्चतुर्वर्णश्च केकरः । षडक्षरो बीजहीनः सार्धसप्ताक्षरो मनुः ॥ ४२२ ॥ सार्द्धद्वादशवर्णो वा धूमितः स तु निन्दितः । सार्द्धबीजत्रयस्त द्वदेकविंशतिवर्णकः ॥ ४२३ ॥ विंशत्यर्णस्त्रिंशदर्णो यः स्यादालिङ्गितस्तु सः । द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो मोहितः परिकीर्तितः ॥ ४२४ ॥

एक अक्षर वाला मन्त्र 'कूट' कहलाता है। उसी को निरंशक भी कहते हैं। दो वर्णों वाला मन्त्र 'सत्वहीन' कहलाता है। चार वर्णों वाला मन्त्र 'केकर' कहलाता है। छ अक्षरों वाला मन्त्र 'बीजहीन' कहलाता है। साढ़े-सात वर्णों वाला या साढ़ेबाहर वर्णों वाला मन्त्र 'धूमित' कहलाता है, वह निन्दित है। उसी प्रकार साढ़े तीन बीजों से युक्त इक्कीस वर्णों वाला मन्त्र, बीस वर्णों वाला मन्त्र तथा तीस वर्णों वाला जो मन्त्र होता है वह 'आलिङ्गित' कहलाता है। बत्तीस अक्षरों वाला मन्त्र 'मोहित' कहलाता है।

चतुर्विंशतिवर्णो यः सप्तविंशतिवर्णकः । क्षुधार्तः स तु विज्ञेयो यश्चतुस्त्रिंशदर्णकः ॥ ४२५ ॥ एकादशाक्षरो वापि पञ्चविंशतिवर्णकः । त्रयोविंशतिवर्णो वा मन्त्र दृप्त उदाहृतः ॥ ४२६ ॥

चौबीस वर्णों वाला, सत्ताइस वर्णों वाला और चौंतीस वर्णों वाला मन्त्र क्षुधार्त तथा ग्यारह वर्णों वाला, पचीस वर्णों वाला तथा तेईस वर्णों वाला जो मन्त्र है वह 'दृप्त' कहलाता है।

षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः षट्त्रिंशद्वर्णकस्तथा । त्रिंशदेकोनवर्णो वाप्यंगहीनोभिधीयते ॥ ४२७ ॥

छब्बीस अक्षरों वाला, छत्तीस अक्षरों वाला तथा उन्नीस अक्षरों वाला मन्त्र अङ्गहीन कहलाता है।

अष्टाविंशत्यक्षरो य एकत्रिंशदथापि वा । अतिक्रूरः स कथितो निन्दितः सर्वकर्मसु ॥ ४२८ ॥ त्रिंशदक्षरको मन्त्रस्यस्त्रिंशदथापि वा । अतिक्रूरः स गदितो निन्दितः सर्वकर्मसु ॥ ४२९ ॥ ऊनचत्वारिंशदर्णः सप्तत्रिंशदथापि वा । कथयंत्यतिरिक्तं तं मन्त्रं मन्त्रविशारदाः ॥ ४३० ॥

अट्ठाइस अक्षरों वाला अथवा इकतीस अक्षरों वाला, तीस अक्षरों वाला मन्त्र 'अतिक्रूर' कहा गया है, यह सब कर्मों में निन्दित है। उन्तालीस अक्षरों वाले तथा सैंतीस अक्षरों वाले मन्त्र को मन्त्रविशारद 'अतिरिक्त' कहते हैं।

चत्वारिंशकमारभ्य द्विषष्टियावदापयेत् । तावत्संख्या निगदिता मन्त्राः सव्रीडसंज्ञकाः ॥ ४३१ ॥

चालीस से लेकर बासठ तक संख्यावाले मन्त्र 'सव्रीड' कहलाते हैं।

पञ्चषष्ट्यक्षरा ये स्युर्मन्त्रास्ते शान्तमानसाः । एकोनशतपर्यन्तं पञ्चषष्ट्यक्षरादित ॥ ४३२ ॥ ये मन्त्रास्ते निगदिता स्थानभ्रष्टाह्वया बुधैः ।

पैंसठ अक्षरों वाले जो मन्त्र हैं वे 'शान्तमानस' कहलाते हैं। पैंसठ से लेकर निन्यानबे पर्यन्त संख्या वाले जो मन्त्र हैं, उन्हें विद्वानों ने 'स्थानभ्रष्ट' कहा है।

त्रयोदशाक्षरा ये स्युर्मन्त्राः पञ्चदशाक्षराः ॥ ४३३ ॥ विकलास्तेभिधीयन्ते शतं सार्धशतं तथा ।

तेरह अक्षरों वाले तथा पन्द्रह अक्षरों वाले, सौ अक्षर वाले तथा डेढ़ सौ अक्षर वाले जो मन्त्र है वे 'विकल' कहे जाते हैं।

शतद्वयं द्विनवतिरेकहीनाथ वापि सा ॥ ४३४ ॥ शतत्रयं वा यत्संख्या निःस्नेहास्ते समीरिताः ।

एक्यानवे, बानवे, दो सौ तथा तीन सौ संख्या वाले मन्त्र 'निःस्नेह' कहे गये हैं।

चतुःशतान्यथारभ्य यावद्वर्णसहस्रकम् ॥ ४३५ ॥ अतिवृद्धाः स योगेषु परित्याज्याः सदा बुधैः ।

चार सौ से लेकर हजार वर्ण पर्यन्त अक्षरों वाले मन्त्र 'अतिवृद्ध' कहलाते हैं, योगों में विद्वानों द्वारा वे सदा त्याज्य हैं।

सहस्रार्णाधिका मन्त्रा दण्डका पीडिताह्वयाः ॥४३६॥ द्विसहस्राक्षरा मन्त्राः खण्डशः शतधा कृताः । ज्ञातव्या स्तोत्ररूपास्ते मन्त्रा एते यथा स्थिताः ॥४३७॥ यथा विद्याश्च बोद्धव्या मन्त्रिभिः काम्यकर्मसु ।

एक हजार से अधिक वर्णों वाले स्तुतिरूप मन्त्र 'पीडित' कहे गये हैं। दो हजार अक्षरों वाले मन्त्र सौ खण्डों में खण्डित किये गये 'स्तो रूप' कहे गये हैं। वे जैसे हैं वैसे ही काम्य कार्मों में साधकों द्वारा जानने योग्य हैं।

दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान्भजते जडः ॥ ४३८ ॥ सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ।

इन दोषों को बिना जाने जो मूर्ख मन्त्र का व्यवहार करता है, उसे करोड़ों कल्पों में भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

इत्यादिदोषदुष्टांस्तान्मन्त्रानात्मनि योजयेत् । शोधयेद्रुद्धपवनो बद्धया योनिमुद्रया ॥ ४३९ ॥

उपर्युक्त दोषों से दुष्ट मन्त्रों को जब आत्मा में युक्त करे तब योनिमुद्रा से वायु को बाँध कर उन मन्त्रों का शोधन करना चाहिये।

अथच्छिन्नत्वादिकदोषनिवारणार्थं दश संस्काराः मन्त्रमहोदधौ : मन्त्रश्चरणसम्पन्नो मन्त्रो हि फलदायकः । किं होमैः किं जपैश्चैव किं मन्त्रन्यास विस्तरैः ॥४४०॥ छिन्नत्वादिकदोषा ये पञ्चाशन्मन्त्रसंस्थिताः । तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्तकोटयः ॥ ४४१ ॥ अतस्तद्दोषशान्त्यर्थं संस्कारदशकं चरेत ॥ जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधकं तथा ॥ ४४२ ॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः । तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः ॥ ४४३ ॥

दोष निवारणार्थ दश संस्कार : मन्त्रमहोदधि के अनुसार समस्त चरणों से युक्त मन्त्र ही फलदायक होता है; होम, जप, और मन्त्र न्याय से क्या ? अर्थात् मन्त्रों का चरण युक्त होना अत्यन्त आवश्यक है। छिन्न आदि जो मन्त्रों के पचास दोष कहे गये हैं उनसे सात करोड़ मन्त्र प्रभावित हैं। इसलिये मन्त्र के दोष की शान्ति के लिये दश संस्कारों को व्यवहार में लाना चाहिये। वे संस्कार ये हैं।

१. जनन, २. जीवन, ३. ताडन, ४. बोधन, ५. अभिषेक, ६. विमलीकरण, ७. आप्यायन, ८. तर्पण, ९. दीपन, और १०. गुप्ति ये दश मन्त्र के संस्कार कहे गये हैं।

अथ जननसंस्कारः : भूर्जपत्रे लिखेत्सम्यक् त्रिकोणं रोचनादिभिः । वारुणं कोणमारभ्य सप्तधा विभजेत् समम् ॥ ४४४ ॥ एवमीशाग्निकोणाभ्यां जायन्ते तत्र योनयः । नववेदमितास्त्र विलिखेन्मातृकां क्रमात् ॥ ४४५ ॥ अकारादिहकारान्तामाशादिवरुणावधिः । देवीं तत्र समावाह्य पूजयेच्चन्दनादिभिः । ततः समुद्धरेन्मन्त्रं जननं तदुदीरितम् ॥ ४४६ ॥

जनन संस्कार : भोजपत्र पर गोरोचन आदि से समत्रिभुज लिखना चाहिये। पश्चिम के कोण से प्रारम्भ कर उसे ७ समान विभागों में विभक्त करना चाहिये। इसी प्रकार ईशान एवं आग्नेय कोणों से भी उसे ७-७ समान विभागों में बाँटना चाहिये। (ऐसा करने से) इसमें ४९ योनियाँ बन जाती हैं।

इस चक्र में ईशान कोण से प्रारम्भ कर पश्चिम तक अकार से हकार पर्यन्त समस्त वर्णों को लिखना चाहिये। उसपर मातृका देवी का आवाहन कर चन्दन आदि से उसका पूजन करना चाहिये। फिर उससे मन्त्र के १-१ वर्ण का उद्धार करना चाहिये। इसे जनन कहते हैं।

अथ द्वितीयो दीपनसंस्कारः : जपो हंसपुटस्यास्य सहस्रं दीपनं स्मृतम् ॥ ४४७ ॥

दीपन संस्कार : हंस मन्त्र से सम्पुटित इसका (मूलमन्त्र का) एक हजार जप करना 'दीपन' कहलाता है।

अथ तृतीयो बोधनसंस्कार : । नभोवह्नीन्दुयुक्तार्द्धिसंपुटस्य जपो मनोः । सहस्रपञ्चकमितो बोधनं तत् स्मृतं बुधैः ॥ ४४८ ॥

बोधन संस्कार : नभ (ह), वह्नि (र) एवं इन्दु (अनुस्वार) सहित अर्धीश (ऊ) अर्थात् 'ह्रूँ'—इससे सम्पुटित मूलमन्त्र का पाँच हजार जप करना 'बोधन' कहलाता है।

चतुर्थं ताडनमाह : सहस्रं प्रजपेदस्त्र पुटितं ताडनं हि तत् ।

ताडन संस्कार : अस्त्र अर्थात् (फट्) से सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हजार जप करना 'ताडन' कहलाता है।

पञ्चमम् अभिषेकमाह : वाग्घंसतारैर्जप्तेन सहस्रं पयसा मनुम् । अभिषिञ्चते वागाद्यैरभिषेकोयमीरितः ॥ ४४९ ॥

अभिषेक संस्कार : वाग् (ऐं) हंस (हसः) तथा तार (ॐ)—इस मन्त्र का एक हजार बार अभिमन्त्रित जल से इसी मन्त्र से अभिषेक करना 'अभिषेक' संस्कार कहलाता है।

षष्ठं विमलीकरणमाह । हरिवह्न्यन्वितस्तारो वषडंतो ध्रुवादिकः । सहस्रं तत्पुटो जप्यो विमलीकरणे मनुः ॥ ४५० ॥

विमलीकरण संस्कार : वह्नि (र) एवं तार (ॐ) सहित हरि (त्) अर्थात् त्रों इसके अन्त में वषट् तथा आदि में ध्रुव (ॐ) लगाने से बने 'ॐ त्रों वषट्,—इस मन्त्र से सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हजार जप करना 'विमलीकरण' कहलाता है।

सप्तमं जीवनमाह : स्वधावषट्पुटं जप्यात्सहस्रं जीवने मनुम् ।

जीवन संस्कार : 'स्वधा वषट्' मन्त्र से सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हजार बार जप करना 'जीवन' संस्कार कहलाता है।

अष्टमं तर्पणमाह : क्षीराज्ययुक्तपाथोभिस्तर्पणे तर्पयेन्मनुम् ॥४५१॥

तर्पण संस्कार : दूध, घी एवं जल के द्वारा मूलमन्त्र से उसी का तर्पण करना 'तर्पण' कहलाता है।

नवमं गोपनमाह : जपेन्मायापुटं मन्त्रं सहस्रं गोपनं हितम्।

गोपन संस्कार : माया (ह्रीं) बीज से सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हजार जप करना 'गोपन' कहलाता है।

दशममाप्यायनमाह : बालातार्तीयबीजेन गगनाद्येन सम्पुटम्। सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रमेतदाप्यायनं मतम् ॥ ४५२ ॥ संस्कारदशकं प्रोक्तं मनूनां दोषनाशकम् ॥ ४५३ ॥

आप्यायन संस्कार : बाला के तार्तीय बीज (सौः) के प्रारम्भ में गगन (ह) लगाकर उससे सम्पुटित मूलमन्त्र का एक हजार जप करना 'आप्यायन' कहलाता है। ये मन्त्रों के दोषों को दूर करनेवाले दश संस्कार कहे गये हैं।

अथ शारदातिलकोक्ता दश संस्काराः : कर्मण्यतिजडा मन्त्रा मन्त्रिणां योजिता अपि। तस्मात्तद्दोषनाशाय कर्तव्याः संस्क्रिया दश ॥ ४५४ ॥

शारदातिलकोक्त दश संस्कार : कार्य सिद्ध करने में अत्यन्त जड़ मन्त्र साधकों द्वारा प्रयुक्त किये जाने पर उनके दोषों के नाश के लिये दश संस्कार करना चाहिये।

मन्त्राणां दश संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धिदायिनः। जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा ॥४५५॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायनेपुनः। तर्पणं दीपनं गुप्तिश्चैताः स्युर्मन्त्रसंस्क्रियाः ॥ ४५६ ॥

सिद्धि देनेवाले मन्त्रों के दश संस्कार कहे जा रहे हैं : जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन तथा गुप्ति ये दश मन्त्रों के संस्कार हैं।

जननमाह : मन्त्राणां मातृकामध्यादुद्धारो जननं स्मृतम् ॥ ४५७ ॥

जनन : मातृकाओं के बीच से मन्त्रों का उद्धार 'जनन' कहलाता है।

जीवनमाह : प्रणवान्तरितान्कृत्वा मन्त्रवर्णाञ्जपेत्सुधीः। एतज्जीवनमित्याहुर्मन्त्रतन्त्रविशारदाः ॥ ४५८ ॥

सुधी प्रणवों से मन्त्रवर्णों को आन्तरित करके जप करे। इसे मन्त्र तन्त्र जाननेवालों ने 'जीवन' कहा है।

तडनमाह : मन्त्रवर्णान्समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा। प्रत्येकं वायुना मन्त्री ताडनं तदुदाहृतम् ॥ ४५९ ॥

ताडन : साधक मन्त्र के वर्णों को भोजपत्र पर लिखकर चन्दन के जल से वायुबीज के द्वारा ताडन करे।

बोधनमाह : विलिख्य मन्त्रं तं मन्त्री प्रसूनैः करवीरजैः। तन्मन्त्राक्षरसंख्यातैर्हन्याद्रेफेन बोधनम् ॥ ४६० ॥

बोधन : साधक भोजपत्र पर कुमकुम आदि से उस (मूलमन्त्र) मन्त्र को लिखकर मन्त्र के अक्षरों की जितनी संख्या हो उतनी बार रं बीजमन्त्र से कनेर के फलों द्वारा उसका ताडन करे।

अभिषेकमाह : स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया। अश्वत्थपल्लवैर्मन्त्रमभिषिचेद्विशुद्धये ॥ ४६१ ॥

अभिषेक : अपने-अपने शास्त्र के अनुसार साधक मन्त्र के अक्षरों की जितनी संख्या हो उतनी बार पीपल के पत्तों से मन्त्र की शुद्धि के लिये उसका अभिसिंचन करें।

विमलीकरणमाह : सञ्चिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिर्मन्त्रेण निर्दहेत्। मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं त्विदम् ॥ ४६२ ॥

विमलीकरण : मन से मन्त्र का चिन्तन करके मन्त्र में तीन दोषों को साधक ज्योतिमन्त्र से दग्ध करे। इसे विमलीकरण कहते हैं।

आप्यायनमाह : तारं व्योमाग्नि मनुयुग्दण्डी ज्योतिर्मनुर्मतः। कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णप्रोक्षणं मनोः। तेन मन्त्रेण विधिवदेतदाप्यायनं मतम् ॥ ४६३ ॥

आप्यायन : तार–प्रणव (ॐ) व्योम (ह) अग्नि (र) मनु (रौ) दण्डी (अनुस्वारयुक्त) मन्त्र 'ज्योतिमन्त्र' कहलाता है। मूलमन्त्र के अक्षरों की संख्या के बराबर कुशोदक से उसका विधिवत् प्रोक्षण करना चाहिये। यही आप्यायन है।

तर्पणमाह : मन्त्रेण वारिणा मन्त्रे तर्पणं तर्पणंस्मृतम् ॥ ४६४ ॥

तर्पण : मन्त्र से जल द्वारा मन्त्र में तर्पण करना तर्पण कहलाता है।

दीपनगोपनमाह : तारमाया रमायोगे मनोर्दीपनमुच्यते। जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशम् ॥ ४६५ ॥

दीपन : तार-प्रणव (ॐ) माया (ह्रीं) रमा (श्रीं) इनका योग होने पर मन्त्र का दीपन कहा जाता है।

गोपन : जिस मन्त्र का जप किया जाता है उसे प्रकाशित न करना गोपन कहलाता है।

संस्कारा दश ते प्रोक्ताः सर्वतन्त्रेषु गोपिताः। यान् कृत्वा सम्प्रदायेन मन्त्री वांछितमश्नुते॥ ४६६॥ ताम्बूले भूर्जपत्रे वा लिखित्वा च कर्तव्याः।

ये दश संस्कार कहे गये हैं। सभी तन्त्रों में ये गुप्त है। इन्हें सम्प्रदायानुसार सम्पन्न करके साधक इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकता है। मन्त्रों को पान या भोजपत्र पर लिखकर दश संस्कार करने चाहिये।

अथ शङ्करोक्ताः सप्त उपायाः : भ्रामणं बोधनं वश्यं पीडनम् पोषशोषणे। दहनान्तं क्रमात् कुर्यात्ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम्॥ ४६७॥

शङ्करोक्त सात उपाय : भ्रामण, बोधन, वश्य, पीडन, पोषण, शोषण तथा दहन ये सात संस्कार क्रम से करने से मन्त्र निश्चितरूप से सिद्ध होता है।

भ्रामणं वायुबीजेन प्रथमं क्रमयोगतः। तन्मन्त्रं यन्त्रमालिख्य सिक्तकर्पूरचन्दनैः॥ ४६८॥ उशीरचन्दनाभ्यां तु यन्त्रं सम्पुटमालिखेत्। पूजनाज्जपनाद्धोमाद्भ्रामितः सिद्धिदो भवेत्॥ ४६९॥ भ्रामितो यदि नो सिद्धो बोधनं तस्य कारयेत्। सारस्वतेन बीजेन सम्पुटीकृत्य सञ्जपेत्॥ ४७०॥ एवं रुद्धो भवेत्सिद्धो न चेदेतद्वशी कुरु। अलक्तं चन्दनं कुष्ठं हरिद्रामादनं शिला॥ ४७१॥ एतैस्तु यन्त्रमालिख्य भूर्जपत्रे सुशोभने। धृत्वा कण्ठे भवेत् सिद्धः पीडनं तस्य कारयेत्॥ ४७२॥ अधरोत्तरयोगेन पदानि परिजाप्य वै। ध्यायेच्च देवतां तद्वदधरोत्तररूपिणीम्॥ ४७३॥ विद्यामादित्यदुग्धेन लिखित्वाक्रम्यचांघ्रिणा। तथाभूतेन मन्त्रेण होमः कार्यो दिनेदिने॥ ४७४॥ पीडितो लज्जयाविष्टः सिद्धिः स्यादथ पोषयेत्। बालायां त्रितयं बीजमाद्यन्ते तस्य योजयेत्॥ ४७५॥ गोक्षीरमधुनालिख्य विद्यां पाणौ विधारयेत्। पोषितोयं भवेत् सिद्धो न चेत्कुर्वीत शोषणम्॥ ४७६॥ द्वाभ्यां च वायुबीजाभ्यां मन्त्रं कुर्याद्विदर्भितम्। एषा विद्या गले धार्या लिखित्वा वरभस्मना॥ ४७७॥ शोभितो न च सिद्धयेच्च दहनीयोग्निबीजतः। आग्नेयेन तु बीजेन मन्त्रस्यैकैकमक्षरम्॥ ४७८॥ आद्यन्तमध ऊर्ध्वं च योजयेद्दाहकर्मणि।

क्रमयोग से पहले वायुबीज से 'भ्रामण' संस्कार करना चाहिये। उस मन्त्र और यन्त्र को कपूर और चन्दन से सिक्त करके उशीर और चन्दन से मन्त्र को सम्पुट लिखे। पूजा, जप और होम से भ्रामित वह मन्त्र सिद्धि देने-

वाला होता है। यदि 'भ्रामण' संस्कार करने पर वह मन्त्र सिद्ध न हो तो उसका 'बोधन' संस्कार करना चाहिये। फिर सारस्वत बीज (ऐं) से सम्पुट करके जप करे। यदि ऐसा करने पर भी वह मन्त्र सिद्ध न हो तो वश्य संस्कार करना चाहिये। अलक्तक, चन्दन, कूठ, हल्दी, धतूरा, मैनसिल इनके रंग से अच्छे भोजपत्र पर यन्त्र को लिखना चाहिये। उसे कण्ठ में धारण करे तो वह सिद्ध होता है। यदि तब भी सिद्ध न हो तो 'पीडन' संस्कार करना चाहिये। अधरोत्तर योग से पदों को जप करके उसी प्रकार अधरोत्तर रूपिणी देवता का ध्यान करे। विद्या को मदार के दूध से लिखकर पैर से उसका आक्रम करके उस मन्त्र से प्रतिदिन होम करना चाहिये। तब वह लज्जा बीज (ह्रीं) से युक्त होकर सिद्ध हो जाता है। इसपर भी यदि सिद्ध न हो तो उसका 'पोषण' संस्कार करना चाहिये। बाला में तीन बीज (ऐं, क्लीं, सौः) उसके आदि और अन्त में जोड़ दें। गाय के दूध तथा मधु से विद्या को लिखकर हाथ में धारण करें। पोषित होने पर वह सिद्ध होतो है। यदि इसपर भी सिद्ध न हो तो उसका 'शोषण' संस्कार करना चाहिये। दो वायुबीजों से उसे विदर्भित करना चाहिये। इस विद्या को भस्म से लिखकर गले में धारण करना चाहिये। अगर इससे शोषित होने पर भी सिद्ध न हो तो अग्निबीज में उसका 'दहन' संस्कार करना चाहिये। अग्नि बीज से मन्त्र के एक-एक अक्षर को आदि, अन्त, नीचे तथा ऊपर दाहकर्म में जोड़ना चाहिये।

ब्रह्मवृक्षस्य तैलेन मन्त्रमालिख्य धारयन्॥ ४७९॥ कण्ठदेशे ततो मन्त्रसिद्धिः स्याच्छंकरोदिता।

पलाश के तेल से मन्त्र को लिखकर कण्ठ में धारण करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होती है। ऐसा शङ्कर जी ने कहा है।

इत्येतत्कथितं सम्यक् केवलं तव भक्तितः। एकेनैव कृतार्थः स्याद्बहुभिः किमु सुव्रते॥ ४८०॥

हे देवि, यह सब मैंने तुम्हारी भक्ति के कारण तुम्हें बतलाया है। हे सुव्रते, मनुष्य एक ही मन्त्र से कृतार्थ हो सकता है, बहुत मन्त्रों से क्या काम।

अथोत्कीलनविधिः : मन्त्रमहोदधौ : शिवेन कीलिता विद्या तदुत्कीलनमुच्यते।

उत्कीलन विधि : मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि शिव जी द्वारा विद्याएँ कीलित कर दी गयी हैं। उनके 'उत्कीलन' की विधि कही जा रही है।

मायातारपुटां मन्त्री जप्यादष्टोत्तरं शतम् ॥ ४८१ ॥ मन्त्रस्यादौ तथैवान्ते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा। एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मन्त्रिणा ॥ ४८२ ॥

साधक मायाबीज (ह्रीं) तार बीज 'प्रणव' (ॐ) से पुटित करके मन्त्र को एक सौ आठ बार जपे। मन्त्र के आदि तथा अन्त में इसी प्रकार करने से विद्या सिद्धिप्रदा होती है। सिद्धि चाहनेवालों द्वारा यह विधि निश्चय ही गोपनीय है।

तन्त्रान्तरे : भूर्जपत्रेष्टगन्धेन अष्टोत्तरशतं मूलं विलिख्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणान् भोजयेत्। ततस्ताम्रपात्रे जलमापूर्य प्रत्येकं क्षिपेत्। अथवा नद्यादौ क्षिपेत् उत्कीलनं भवति ॥ ४८३ ॥

दूसरे तन्त्रों में कहा गया है कि भोजपत्र पर अष्टगन्ध से (गोरोचन, कपूर, गजमद, मृगमद, अगर, केसर, सफेद चन्दन तथा लाल चन्दन से एक सौ आठ मूलमन्त्र को लिखकर पञ्चोपचारों से पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन कराये। इसके बाद ताम्रपत्र में जल भरकर उसमें प्रत्येक को छोड़े अथवा नदी या तालाब में फेंक दे। इससे कीलित मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है।

अन्यत् : मृत्तिकया नराकारामिष्टदेवप्रतिमां कृत्वा प्राणान्संस्थाप्य तता भूर्जपत्रेष्टगन्धेन मन्त्रं विलिख्य प्रतिमां हृदये संस्थाप्य मासान्तरे पञ्चोपचारैः सम्पूजयेत्। अष्टोत्तरशतं मूलं च जपेत् मासान्ते गुरोराज्ञया नद्यादौ प्रवाहयेत्। ब्राह्मणांश्च भोजयेत् तदा उत्कीलनं भवति ॥ ४८४ ॥

और भी कहा गया है कि मिट्टी से मनुष्य के आकार की देवता की प्रतिमा बनाकर उसमें प्राण की प्रतिष्ठा करके भोजपत्र पर अष्टगन्ध से मन्त्र को लिखकर प्रतिमा के हृदय में रखकर एक मास बाद पञ्चोपचारों से पूजा करे। एक सौ आठ बार मूलमन्त्र का जप करे। एक महीने बाद गुरु की आज्ञा से नदी आदि में उसे प्रवाहित कर दे और ब्राह्मणों को भोजन कराये तो कीलित मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है।

अथ पुरश्चरणनिर्णयः। मन्त्रसिद्धभाण्डागारे : फलिष्यतीति विश्वासः सिद्धेः प्रथमलक्षणम्। द्वितीयं श्रद्धया युक्तं तृतीयं गुरुपूजनम् ॥ ४८५ ॥ चतुर्थं समताभावं पञ्चमेन्द्रियनिग्रहम्। षष्ठं च प्रतिमाहारं सप्तमं नैव विद्यते ॥ ४८६ ॥

पुरश्चरण निर्णय : मन्त्रसिद्धि भाण्डागार में कहा गया है कि हमारा मन्त्र फलीभूत होगा ऐसा दृढ़ विश्वास मन्त्रसिद्धि का प्रथम लक्षण है। दूसरा

श्रद्धा से युक्त होना, तीसरा गुरु का पूजन करना, चौथा समताभाव, पाँचवाँ पाँचो इन्द्रियों का निग्रह तथा छठा प्रतिमाहार इनके अतिरिक्त कोई सिद्धि का लक्षण नहीं है।

मन्त्रमहोदधौ : निश्चयोत्साहधैर्याच्च तत्त्वज्ञानस्य दर्शनात्। अल्पाशी त्यक्तसङ्गश्च षड्भिर्मन्त्रः प्रसिध्यति ॥ ४८७ ॥

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि निश्चय, उत्साह, धैर्य, तत्वज्ञान का दर्शन, अल्पभोजन, संगका त्याग इन छ उपायों से मन्त्र सिद्ध होता है।

कुलप्रकाशतन्त्रे : उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रसादतः। मन्त्रप्रभावाद्भक्त्या च मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ४८८ ॥

कुलप्रकाश तन्त्र में कहा गया है कि उपदेश के सामर्थ्य से, गुरु की प्रसन्नता से, मन्त्र के प्रभाव से तथा शक्ति से मन्त्र की सिद्धि होती है।

शिवेपि : मनः संहारणं शौचं मौनं मन्त्रार्थचिन्तनम्। अव्यग्रत्वमनिर्वेदो जप सिद्धेस्तु हेतवः ॥ ४८९ ॥

शिव तन्त्र में भी कहा गया है कि मन का निग्रह करना, शौच, मौन, मन्त्र के अर्थ का चिन्तन, चञ्चल, न होना, निन्दा न करना, ये सब मन्त्र जप की सिद्धि में कारण हैं।

ग्रन्थान्तरे : अभ्यासात्सिद्धिमाप्नोति भोगयुक्तोपि मानवः। सकलः साधितार्थोपि सिद्धो भवति भूतले ॥ ४९० ॥

दूसरे ग्रन्थ में भी कहा गया है कि योगों से युक्त मनुष्य भी अभ्यास करता रहे तो सिद्धि को प्राप्त करता है। अभ्यास में लगे मनुष्य के सभी अर्थ इस संसार में सिद्ध हो जाते हैं।

अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि। मन्त्रैकशरणो विद्वान् मनसैवं समभ्यसेत्। न दोषो मानसे जापे सर्वदेशेपि सर्वदा ॥ ४९१ ॥

मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र हो, चल रहा हो या बैठा हो, सो रहा हो या जाग रहा हो एक मात्र मन्त्र के शरण में होकर विद्वान् मन से मन्त्र का अभ्यास करे। सदा मन्त्र के मानस जाप में कोई दोष नहीं है।

मन्त्रसिद्धिभाण्डागारे : प्रवासी बहुभक्षी च प्रजल्पी नियमारतः। नीचसङ्गाच्च लौल्याच्च षड्भिर्मन्त्रो न सिध्यति ॥ ४९२ ॥

मन्त्रसिद्धिभाण्डागार में कहा गया है कि जो मनुष्य प्रवासी, बहुत खाने वाला, बहुत बकवास करने वाला, नियमों का पालन न करने वाला, नीचों के साथ रहने वाला, तथा लालची होता है उसका इन दोषों के कारण मन्त्र सिद्ध नहीं होता।

स्त्रीभोग त्यागे महत्फलं देवीभागवते : मैथुनञ्च तदालापं तद्गोष्ठी-मपि वर्जयेत् । कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ॥ ४६३ ॥ सर्वत्र मैथुनत्यागं ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते । राज्ञश्चैव गृहस्थस्य ब्रह्मचर्यमुदाहृतम् ॥ ४६४ ॥ ऋतुस्नातेषु दारेषु सङ्गतिस्तु विधानतः । संस्कृतायां सवर्णायामृतं दृष्ट्वा प्रयत्नतः । रात्रौ तु गमनं कार्यं ब्रह्मचर्य हरेन्न तत् ॥ ४६५ ॥

देवीभागवत में स्त्रीत्याग में बहुत फल कहा गया है । मन्त्र साधक को सदा सब अवस्थाओं में मन, वचन, और कर्म से स्त्री से वार्तालाप तथा गोष्ठी भी करना छोड़ देना चाहिए । सर्वत्र मैथुन का परित्याग, ब्रह्मचर्य कहलाता है । गृहस्थ राजा के लिए भी ब्रह्मचर्य का पालन कहा गया है । ऋतुस्नान के बाद विधानानुसार स्त्रीसंगम करना चाहिए । वह भी प्रयत्नपूर्वक संस्कार सम्पन्न सवर्णा स्त्री में ऋतु को देखकर रात्रि में गमन करना चाहिए इससे ब्रह्मचर्य का हरण नहीं होता ।

शिवरहस्ये : व्यासाद्यैरपि दुर्वृत्तैः कृतः स्त्रीसंग्रहो मुदा । दुर्लभः पुरुषाणां तु नित्यमिन्द्रियनिग्रहः ॥ ४६६ ॥ विषयेभ्यस्तु सर्वेभ्यः स्त्रीरूपविषयो महान् । पुमांसं मोहयत्येव विरक्तमपि सत्वरम् । विषयेभ्यो निवृत्तिश्चेज्जितं तेन न संशयः ॥ ४६७ ॥

शिव रहस्य में भी कहा गया है कि व्यासादि दुराचारी व्यक्तियों द्वारा प्रसन्नता से स्त्री संग किया गया था । पुरुषों के लिये नित्य स्त्रीसंग्रह दुर्लभ है । समस्त विषयों में स्त्री रूप विषय सबसे अधिक बलवान् है । विरागी पुरुष को भी शीघ्र ही यह स्त्री रूप मोहित कर लेता है । अगर मनुष्य को विषयों से निवृत्ति है तो समझिये उसने सारे संसार को जीत लिया है इसमें कोई संशय नहीं है ।

पुरश्चरणे वणिग्दत्तधनं वर्ज्यं शिवरहस्ये : वणिग्दत्तेन वित्तेन तनुं यः पोषयिष्यति । भुक्त्वा स नरकं घोरं प्रयात्येव न संशयः ॥ ४६८ ॥

पुरश्चरण में बनिये द्वारा दिया गया धन शिवरहस्य में वर्जित किया गया है । बनिये द्वारा दिये गये धन से जो मनुष्य अपने शरीर का पोषण करेगा वह उस अन्न को खाकर घोर नरक को जायगा ।

योगिनीहृदये : ईश्वर उवाच : सर्वहिंसाविनिर्मुक्तः सर्वप्राणिहिते रतः । सोऽस्मिन्शास्त्रेऽधिकारी स्यात्तदन्ये भ्रष्टसाधकाः ॥ ४६६ ॥

योगिनीहृदय में इस प्रकार कहा गया है : ईश्वर बोले, जो मनुष्य समस्त

हिंसाओं से मुक्त है, समस्त प्राणियों के हित में लगा हुआ है वही इस शास्त्र में अधिकारी है, अन्य मनुष्य भ्रष्ट साधक हैं ।

कुलार्णवे पञ्चमखण्डे पञ्चदशोल्लासे : देव्युवाच : कुलेश श्रोतुमिच्छामि पुरश्चरणलक्षणम् । स्थानाहारादिभेदेन वद मे परमेश्वर ॥५००॥ ईश्वर उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मा त्वं परिपृच्छसि । तस्य श्रवणमात्रेण मन्त्रतत्त्वं प्रकाशते ॥ ५०१ ॥ जपयज्ञात्परो यज्ञो नापरोस्तीह कश्चन । तस्माज्जपेन धर्मार्थकाममोक्षं च साधयेत् ॥ ५०२ ॥ सर्वपादान् परित्यज्य मन्त्रपादं समाचरेत् । आब्रह्मजीवे दोषाश्च नियमातिक्रमोद्भवाः ॥ ५०३ ॥ ज्ञानाज्ञानकृताः सर्वे प्रणश्यन्ति यथा प्रिये । संसारे दुःखभूयिष्ठे यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥५०४॥ पञ्चाङ्गोपासनेनैव मन्त्रजापी सुखं व्रजेत् ।

कुलार्णव के पञ्चम खण्ड के पन्द्रहवें उल्लास में यह कहा गया है : देवी बोलीं, 'हे कुलेश, मैं पुरश्चरण का लक्षण सुनना चाहती हूं । हे परमेश्वर, स्नान और आहार आदि भेद से आप मुझे बतायें ।' ईश्वर बोले, 'हे देवि, सुनो, जो तुम मुझसे पूछती हो उसके श्रवण मात्र से मन्त्र के तत्व का प्रकाश होता है । जपयज्ञ से श्रेष्ठ यज्ञ इस संसार में अन्य कोई नहीं है । इसलिये जप से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की सिद्धि करनी चाहिये । समस्त पादों को छोड़कर केवल मन्त्रपाद का आश्रय लेना चाहिये । ब्रह्मा से लेकर सामान्य जीव तक को ज्ञान से या अज्ञान से नियमों के उल्लंघन से उत्पन्न जो दोष लगे हुए हैं वे सब जप से नष्ट हो जाते हैं । दुःख से भरे इस संसार में यदि कोई अपनी सफलता चाहता है तो वह पञ्चाङ्गोपासना से मन्त्र का जप करता हुआ सुख को प्राप्त होता है ।

मन्त्रं यन्त्रं पञ्जरं च स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥ ५०५ ॥ पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च । होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥ ५०६ ॥

मन्त्र, यन्त्र, पञ्जर, स्तोत्र, सहस्रनाम, तीनों काल की पूजा, नित्य जप करना, तर्पण करना, होम करना ब्राह्मणों को भोजन कराना यह सब पुरश्चरण कहलाता है ।

यद्यदङ्गं च विहीयेत तत्संख्याद्विगुणं जपम् । कुर्याद्धि त्रिचतु पञ्च संख्यं वा साधकः प्रिये ॥ ५०७ ॥ कुर्वीत साङ्गसिद्ध्यर्थं तदशक्तेन भक्तितः । सर्वदाङ्गविहीनस्य मन्त्री नेष्टमवाप्नुयात् ॥ ५०८ ॥

जो जो अंग कहे गये हैं उनमें से जितने की हानि हो उतना गुना अधिक

जप करना चाहिये। हे प्रिये, इस प्रकार सांग सिद्धि के लिये साधक को तिगुना, चौगुना या पचगुना भी जप करके हीन अङ्गों की पूर्ति करना चाहिये। उसमें अशक्त होने पर भक्तिपूर्वक यथाशक्ति जप करना चाहिये। साधक अंगविहीन पुरश्चरण से इष्टसिद्धि कभी नहीं पा सकता।

सम्यक्सिद्धैकमन्त्रस्य पञ्चाङ्गसेवनेन च। सर्वे मन्त्राश्च सिध्यन्ति तत्प्रभावात्कुलेश्वरि ॥ ५०९ ॥ उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रभावतः। मन्त्रप्रतापाद्भक्तेश्च मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ५१० ॥

हे कुलेश्वरि, अच्छी तरह पञ्चाङ्ग सेवन से एक मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर उसके प्रभाव से सभी मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। उपदेश के सामर्थ्य से, गुरु के प्रभाव से, मन्त्र के प्रताप से तथा भक्ति से मन्त्र सिद्धि होती है।

सिद्धमन्त्रं गुरोर्लब्ध्वा मन्त्रोयं शीघ्रसिद्धये। पूर्वजन्मकृताभ्यासान्मन्त्रोयं शीघ्रसिद्धिदः ॥ ५११ ॥ दीक्षापूर्वं कुलेशानि पारम्पर्यक्रमागतम्। न्यासलब्धं तु यन्मन्त्रं तच्च सिद्धं न संशयः ॥ ५१२ ॥

गुरु से सिद्ध मन्त्र को लेकर पुरश्चरण करना चाहिये। ऐसा मन्त्र शीघ्र सिद्धि देने वाला होता है। पूर्वजन्म में जिस मन्त्र का अभ्यास किया गया है उस अभ्यास से इस जन्म में वह मन्त्र शीघ्र सिद्धि देने वाला होता है। हे कुलेशानि, परंपरागत दीक्षापूर्वक प्राप्त जो मन्त्र होता है वह सिद्ध ही होता है।

मासमात्रं जपेन्मन्त्रं भूतलिप्यर्णसम्पुटम्। क्रमोत्क्रमात्सहस्रं तु तस्य सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ५१३ ॥

जो एक मास तक भूतलिपिवर्ण से सम्पुटित मन्त्र का एक हजार जप क्रम तथा उत्क्रम से करता है, उसका मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मण्डलं पूजयेन्मन्त्रं मातृकाक्षरसम्पुटम्। अनुलोमविलोमेन मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥५१४॥ त्रिषष्ट्यक्षरसंयुक्तं मातृकाक्षरसम्पुटम्। क्रमोत्क्रमं तु तज्जप्त्वामासात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ५१५ ॥ मातृकाजपमात्रेण मन्त्राणां कोटिकोटयः। जागृताः स्युर्न सन्देहो यत्तत्सर्वं तदुद्भवम् ॥ ५१६ ॥ अनेन कोटि मन्त्रेण चित्तव्याकुलकारकम्। मन्त्रगुरुकृपाव्याप्तमेकं स्यात्सर्वसिद्धिदम् ॥ ५१७ ॥

तिरसठ अक्षरों से युक्त, मातृका अक्षरों से सम्पुटित क्रमोत्क्रम से एक मास तक जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मातृका के जप मात्र से करोड़ों मन्त्र जागृत हो जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है क्योंकि सम्पूर्ण मन्त्र उसी में उत्पन्न हुए हैं। इस संसार में करोड़ों मन्त्र हैं जो चित्त को व्याकुल करते

हैं परन्तु गुरु की कृपा से व्याप्त एकाक्षर मन्त्र भी सब सिद्धियों को प्रदान करनेवाले होता है।

यदृच्छया श्रुतं मन्त्रंछद्मनापिच्छलेन वा। यत्र स्थितं च वाग्ध्वस्तं तज्जपेन ह्यनर्थकृत् ॥ ५१८ ॥ पुस्तके लिखितान्मन्त्रानालोक्य प्रजपन्ति ये। ब्रह्महत्यासमं तेषां पातकं परिकीर्तितम् ॥ ५१९ ॥

यदृच्छा से या छल-छद्म में सुने गये मन्त्र से या ऐसे जप से जिसमें वाणी लड़खड़ा गई है अनर्थ होता है। पुस्तक में लिखे मन्त्र को देखकर जप करने को ब्रह्महत्या के समान पाप कहा गया है।

स्नानासनप्राणायामन्यासमालाजपलक्षणम्। मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनुं पठेत् ॥ ५२० ॥ उभयोर्निष्फलं देवि भिन्नभाण्डोदकं यथा।

स्नान, आसन, प्राणायाम, न्यास, माला और जप के लक्षण: स्तोत्र का मानस स्मरण और मन्त्र का वाचिक पाठ हे देवि दोनों निष्फल होते हैं जैसे फूटे घड़े में पानी का रखना निष्फल हो जाता है।

शाणोल्लीढानि शस्त्राणि यथा स्युर्निशितानि वै ॥ ५२१ ॥ मन्त्राश्च मूर्तिमायान्ति संस्कारैर्दशभिस्तथा। भक्ष्यं हविष्यं शाकादि हविष्याणि फलं पयः ॥ ५२२ ॥ मूलं सक्तुर्यवान्नं च ह्यष्टान्येतानि मन्त्रिणां। यथान्नपानपूगस्य कुरुते धर्मसञ्चयम् ॥ ५२३ ॥

जैसे शान पर चढ़ाये गये शस्त्र तेज हो जाते हैं, वैसे ही मन्त्र भी दश संस्कारों से प्रकट रूप धारण कर लेते हैं। उन मन्त्रों के साधकों का आहार हविष्य, शाक आदि, फल, दूध, कन्द, सत्तू, जव तथा अन्न ये आठ पदार्थ हैं। अन्न पान के संग्रह के लिये साधक को धर्म का सञ्चय करना चाहिये।

अन्नदातुः फलस्यार्द्धं कर्तुश्चार्द्धं न संशयः। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन परान्नं वर्जयेत्सुधीः ॥ ५२४ ॥

आधा फल अन्न देनेवाला को प्राप्त होता है और आधा पुरश्चरण करनेवाले को मिलता है। इसमें कोई संशय नहीं है। इसलिये सभी प्रयत्नों से सुधी साधक को चाहिये कि वह दूसरे के अन्न का वर्जन करे।

पुरश्चरणकर्तुश्च करौ दग्धः प्रतिग्रहैः। मनो दग्धं परस्त्रीभिः कार्यसिद्धिः कथं भवेत् ॥ ५२५ ॥ मनोन्यत्र शिवोन्यत्र शक्तिरन्यत्र मारुतः। न सिध्यन्ति वरारोहे लक्षकोटिजपादपि ॥ ५२६ ॥ वादार्थं पठ्यते विद्या परार्थः क्रियते जपः। ख्यात्यर्थं दीयते दानं कथं सिद्धिर्वरानने ॥ ५२७ ॥ धनार्थं गम्यते तीर्थे दम्भार्थं क्रियते तपः। काम्यार्थं

देवतायात्रा कथं सिद्धिर्वरानने ॥ ५२८॥ अनित्येन तु देहेन न्यासं देवार्चनं जपम् । होमं कुर्वन्ति ये मूढा सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ५२९ ॥ तपोर्चनादिकं सर्वमपवित्रं भवेत् प्रिये । मलिनाङ्गपरा केशा मुखं दुर्गन्धसंयुतम् । यो जपेत्तं तदा हन्याद्देवता सुजुगुप्सितम् ॥ ५३० ॥

पुरश्चरणकर्ता का हाथ दान लेने से जल जाता है। परस्त्रियों में ध्यान लगाने से मन जल जाता है। तब कार्यसिद्धि कहाँ से हो। जिसका मन कहीं है, शिव कहीं है, शक्ति कहीं है, प्राणवायु कहीं है, हे वरारोहे, करोड़ों जप करने पर भी ऐसे व्यक्ति के मन्त्र सिद्ध नहीं होते। यदि वाद के लिये विद्या पढ़ी जाय, दूसरे के लिये जप किया जाय, यश के लिये दान दिया जाय तो हे वरानने, सिद्धि कैसे हो ? धन के लिये लोग तीर्थ में जाते हैं, दम्भ के लिये तप करते हैं, मनोकामना पूर्ति के लिये ही देवता-दर्शन के लिये जाते हैं। हे वरानने, तुम्हीं बताओ सिद्धि कैसे हो ?। अनित्य देह से न्यास, देवार्चन, जप और होम जो मूढ जन करते हैं वह सब निष्फल हो जाता है। हे प्रिये, जो साधक मलिन अङ्ग और केश से युक्त तथा दुर्गन्धित मुखयुक्त होकर जप करता है उस निन्दित व्यक्ति को देवता मार डालते हैं।

मन्त्रमहोदधौ : भूशय्यां ब्रह्मचर्यं च त्रिकालं देवतार्च्चनम् । नैमित्तिकार्चनम् देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत् ॥ ५३१ ॥ प्रत्यहंप्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित । एवं जपं समर्प्यान्ते दशांशं होममाचरेत् ॥ ५३२ ॥ तत्तत्कल्पोदितैर्द्रव्यैस्तदाधानमुदीर्यते ।

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि भूमि में शयन करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, त्रिकाल देवार्चन करना, नैमित्तिक पूजन, देवस्तुति तथा विश्वास का आश्रय लेना चाहिये। जप प्रतिदिन उतना ही करना चाहिये। कभी कम कभी अधिक नहीं। इस प्रकार जप समर्पित करके जप से दशांश होम करना चाहिये। तत्तत कल्प के अनुसार उन द्रव्यों से यज्ञ कहा जा रहा है :

प्राणायामं षडङ्गं च कृत्वा मूलेन मन्त्रवित् ॥ ५३३ ॥ हविष्यं निशि भुञ्जीत त्रिःस्नाय्यभ्यंगवर्जितः । व्यग्रतालस्यनिष्ठीवक्रोधं पादप्रसारणम् ॥ ५३४ ॥ अन्यभाषां त्यजेच्चैव जपकाले सदा सुधीः । स्त्रीशूद्रभाषणं निद्रां ताम्बूलं शयनं दिवा । प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्य वर्जयेत्सदा ॥ ५३५ ॥

मन्त्र जाननेवाला साधक मूलमन्त्र से षडङ्ग प्राणायाम करके तेल न लगाये हुये और तीन बार स्नान करके रात्रि में हविष्य का भोजन करे। व्यग्रता, आलस्य, थूकना, क्रोध करना, पैर फैलाना, अन्यथा बोलना

जपकाल में सुधी साधक को छोड़ देना चाहिये। इसी तरह स्त्री तथा शूद्र से बात करना, अधिक सोना, पान खाना, दिन में सोना, दान लेना, नाच-गाना करना, कुटिलता करना सदा छोड़ देना चाहिये।

तन्त्रान्तरेपि लवणं पललं चैव क्षारं क्षौद्रं रसान्तरम् । माषमुद्गमसूरांश्च कोद्रवांश्चणकानपि ॥ ५३६ ॥ असद्भाषणमन्याय्यं वर्जयेदन्यपूजनम् । बिना श्रमोचितं नित्यमथ नैमित्तिकञ्चरेत् ॥ ५३७ ॥ ताम्बूलं गन्धलेपं च पुष्पधारणमेव च । मैथुनं तत्कथालापं तद्गोष्ठीं परिवर्जयेत् ॥ ५३८ ॥ असङ्कल्पितकृत्यञ्च ह्यनिवेदितभोजनम् । न छिन्द्यान्नखरोमाणि न स्पृशेद्यदमङ्गलम् ॥ ५३९ ॥ नार्द्रवस्त्रो जपं कुर्याद्धोमं दानं प्रतिग्रहम् । सर्वं तद्राक्षसं विधाद्बहिर्जानु च यत्कृतम् ॥ ५४० ॥

दूसरे तन्त्रों में भी कहा गया है कि नमक, मांस, क्षार, शहद, दूसरे रस, उड़द, मूँग, कोदों, चने, असत्य भाषण, अन्याय, अन्य देवता का पूजन साधक छोड़ देवे। बिना थकावट के नित्य और नैमित्तिक कर्मों को करे। पान खाना, सुगन्ध लगाना, पुष्पधारण करना, मैथुन करना या उसके सम्बन्ध में बातें करना, गोष्ठी करना छोड़ देवे। कल्पित कर्म और देवता को बिना चढाए भोजन न करे। नख और बाल न काटे। जो अमाङ्गलिक वस्तु हो उसका स्पर्श न करे। भीगे वस्त्र से जप न करे। होम, दान या पतिग्रह तथा हाथों को दोनों जाँघों के बाहर रखकर जो काम किया जाय वह सब राक्षस कर्म जानना चाहिये।

न पदा पादमाक्रम्य तथैव हि पदा करौ । न चासमाहितमना न च संश्रावयञ्जपेत् ॥ ५४१ ॥

पैर को पैर पर रखकर तथा वैसी ही पैर को हाथ पर रखकर चञ्चलमन होकर अथवा सुनाते हुए साधक को जप नहीं करना चाहिये।

न च चंक्रमणैश्चैव न पार्श्वं चावलोकयेत् । न प्रवृत्तो न जल्पंश्च न प्रावृतशिरास्तथा ॥ ५४२ ॥

टहलते हुए, अगल-बगल देखते हुए जप नहीं करना चाहिये। कुछ करते या बातचीत करते हुए तथा शिर ढके हुए जप नहीं करना चाहिये।

अथानुष्ठाने छिक्कादिदोषनिवारणविधिः ।

योगिनीहृदये : पतितानामन्त्यजानां दर्शने भाषणे कृते । क्षुतेऽधोवायुगमने जृम्भणे जपमुत्सृजेत् ॥ ५४३ ॥ तथाचम्य च तत्प्राप्तौ प्राणायामं षडङ्गकम् । कृत्वाचम्य जपेच्छेषं यद्वा सूर्यादिदर्शनम् ॥ ५४४ ॥

अनुष्ठान में छींक आदि दोष निवारण विधि : योगिनी हृदय में कहा गया है कि पतित और अन्त्यजों के दर्शन तथा उनसे भाषण करने पर, छींक लगने पर, अधोवायु निकलने पर, जँभाई आने पर जप को छोड़ देना चाहिये। पुनः आचमन करके षडङ्ग प्राणायाम करने के पश्चात् अथवा सूर्य का दर्शन करके जप पूरा करना चाहिये।

तन्त्रान्तरेपि : सकृदुच्चरिते शब्दे प्रणवं समुदीरयेत्। प्रोक्तपामरशब्देपि प्रणवं सकृदुच्चरेत् ॥ ५४५ ॥

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि जप के समय एकाएक किसी शब्द का उच्चारण हो जाने पर प्रणव (ॐ) का एक बार उच्चारण करना चाहिये।

याज्ञवल्क्ये :

व्याहरेद्वैष्णवं मन्त्रं स्मरेद्वा विष्णुमव्ययम् ॥ ५४६ ॥ क्षुते तिष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्ठे तथानृते। पतितानां च सम्भाषे कर्णञ्च दक्षिणं स्पृशेत् ॥ ५४७ ॥ अग्निरापश्च वेदश्च सोमसूर्यानिलास्तथा। सर्व एव हि विप्रस्य कर्णे तिष्ठन्ति दक्षिणे ॥ ५४८ ॥

याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि वैष्णव मन्त्र (ॐ) पढ़ या विष्णु का ध्यान करे। छींक आने पर, थूकने पर, दाँत का जूठन निकालने पर, असत्य बोलने पर तथा पतितों से बात करने पर अपना दाहिना कान स्पर्श करे। अग्नि, जल, वेद, चन्द्रमा, सूर्य तथा वायु ये सभी ब्राह्मण दाहिने कान में रहते हैं।

सनत्कुमारसंहितायाम् : जपकाले यदा पश्येदशुचिं मन्त्रवित्तमः। प्राणायामं तदा कुर्यात्ततः शेषं समाचरेत् ॥ ५४९ ॥ यदा चैष पठेन्मन्त्री स्वयमप्यशुचिःपुनः। आचम्य प्रयतो भूत्वा न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥५५०॥

सनत्कुमार संहिता में कहा गया है कि जपकाल में यदि मन्त्रविद् साधक अपवित्र वस्तु को देख ले तो प्राणायाम करके आगे शेष जप को प्रारम्भ करे और जब साधक ही स्वयं अपवित्र अवस्था में मन्त्र का पाठ कर लेवे तो आचमन करके शान्त होकर पूर्ववत् न्यास करे।

पुरश्चरणे सूतकनिर्णयः : विनियोगं समारभ्य यथायथमथाचरेत्। पुरश्चरणमध्ये तु सूतकं नैव विद्यते ॥ ५५१ ॥

पुरश्चरण में सूतक का निर्णय : विनियोग प्रारम्भ करके जो साधक यथा त् विधि के अनुसार पुरश्चरण करता है उसे सूतक नहीं लगता।

सूतकनिवृत्तिः : जातसूतकमादौ स्यादन्ते वैमृतसूतकम्। सूतकद्वयनिर्मुक्तः स मन्त्रः सर्वसिद्धिदः ॥ ५५२ ॥ तस्माद्देवि प्रयत्नेन ध्रुवेण पुटितं ध्रुवम्। अष्टोत्तरशतं वापि सप्तवारं जपेदतः। जपान्ते च ततो जप्त्वा चतुर्वर्गफलाप्तये ॥ ५५३ ॥ तत्रैव : ब्रह्मबीजं मनौ दत्त्वा चाद्यन्ते च महेश्वरि। सप्तवारं जपेन्मन्त्री सूतकद्वयमुक्तये ॥ ५५४ ॥

सूतक निवृत्ति : पुरश्चरण के आदि में जात सूतक तथा अन्त में मृत सूतक लगता है। दोनों सूतकों से मुक्त मन्त्र सब सिद्धियों को देनेवाला होता है। हे देवि, इसलिये ध्रुव (ॐ) से पुटित ध्रुव (ॐ, का एक सौ आठ बार या सात बार जप के अन्त में चर्तुवर्ग फल प्राप्ति के लिये जप करना चाहिये। (वहीं पर) हे महेश्वरि, ब्रह्मबीज (ॐ) को मन्त्र के आदि और अन्त में रखकर दोनों सूतकों की निवृत्ति के लिये सात बार जप करना चाहिये।

पुरश्चरणादौ गायत्रीजपावश्यकता।

मन्त्रमहोदधौ : सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः। आदिदेवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम्। तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत् ॥ ५५५ ॥

पुरश्चरण के आदि में गायत्री जप की आवश्यकता : मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि सभी शाक्त द्विज हैं, शैव और वैष्णव द्विज नहीं हैं। क्योंकि शाक्त आदि देवी वेदमाता गायत्री की उपासना करते हैं। इसलिये पुरश्चरण के आदि में दस लाख गायत्री जप करना चाहिये।

तन्त्रान्तरे यस्य कस्यापि मन्त्रस्य पुरश्चरणमारभेत्। व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत्। विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ५५६ ॥

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि चाहे किसी भी मन्त्र का पुरश्चरण साधक करे, उसे तो व्याहृतियों से युक्त गायत्री मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिये। बिना गायत्री का जप किए वह सब निष्फल हो जाता है।

शाक्तानन्दतरंगिण्याम् : हविष्येणैव भोक्तव्यं कृत्वा देहविशोधनम्। प्रातः स्नात्वाथ सावित्र्या जपेत्पञ्चसहस्रकम् ॥ ५५७ ॥ त्रिसहस्रं सहस्रं वा जपेदष्टोत्तरं शुचिः। ज्ञाताज्ञातस्य पापस्य क्षयार्थं प्रथमं ततः ॥ ५५८ ॥ वाचिकसंकल्पापेक्षया मानसिकसंकल्पो मुख्यः। बीजार्णवतन्त्रे षोडशपटले: संकल्पो मानसो देवि चतुर्वर्ग फलप्रदः अत एव महेशानि संकल्पो मानसः स्मृतः ॥ ५६९ ॥ स्थूलो हि परमेशानि संकल्पो व्यर्थं उच्यते। संकल्पेन विना देवि यत्किञ्चित्कुरुते सुधीः। व्यर्थमेव हि देवेशि

तत्सर्वं मानसेन च ॥ ५६० ॥

शाक्तानन्द तरङ्गिणी में कहा गया है कि देह का शोधन करके हविष्य का ही भोजन करना चाहिये। प्रातः स्नान करके पवित्र होकर ज्ञात और अज्ञात पापों के नाश के लिए पुरश्चरण से पहले पाँच हजार, तीन हजार या एक हजार आठ गायत्री का जप करना चाहिये।

वाचिक सङ्कल्प की अपेक्षा मानसिक सङ्कल्प मुख्य है। बीजार्णव तन्त्र के सोलहवें पटल में कहा गया है कि हे देवि, मानस सङ्कल्प धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलों को देनेवाला है। हे महेशानि, इसीलिये सङ्कल्प मानस कहा गया है। हे महेशानि, स्थूल सङ्कल्प व्यर्थ कहा गया है। हे देवि, जो सुधी साधक सङ्कल्प के बिना प्रकट या मानस कर्म करता है वह सब व्यर्थ होता है।

देवतापञ्चाङ्गनिर्णयः पुरश्चरणचन्द्रिकायाम् : पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्रकम्। स्तोत्राणि चेति पञ्चाङ्गं देवताराधने स्मृतम् ॥ ५६१ ॥ कवचं देवतागात्रं पटलं देवताशिरः। पद्धतिर्देवहस्तौ तु मुखं साहस्रकं स्मृतम् ॥ ५६२ ॥

देवता पञ्चाङ्ग निर्णय : पुरश्चरण चन्द्रिका में कहा गया है कि पटल, पद्धति, वर्म (कवच), सहस्रनाम तथा स्तोत्र देवोपासना में ये पञ्चाङ्ग कहे गये हैं। कवच देवता का शरीर है, पटल देवता का शिर है, पद्धति देवता के दोनों हाथ हैं तथा सहस्र नाम देवता का मुख है।

पञ्चाङ्गोपासनानिर्णयः देवीरहस्य तन्त्रे : जप्त्वा मन्त्री मन्त्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः : तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः ॥ ५६३ ॥ भोजयेतद्दशांशेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्। जीवहीनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः। पुरश्चरण हीनोयं तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः ॥ ५६४ ॥

देवीरहस्य में कहा गया है कि साधक मन्त्रराज का जप करके दशांश होम करके होम से दशांश तर्पण तथा तर्पण से दशांश मार्जन तथा मार्जन से दशांश ब्राह्मण भोजन कराये तो मन्त्रसिद्धि निश्चित रूप से होती है। जैसे जीवहीन शरीर सभी कार्यों में असमर्थ होता है उसी प्रकार पुरश्चरणहीन मन्त्र भी असमर्थ होता है।

ग्रहणस्पर्शकालनिश्चयकरणम् : चक्षुषा दर्शनं राहोर्यत्तद्ग्रहण-मुच्यते। तत्र कर्माणि कुर्वीत गणनामात्रतो न हि ॥ ५६५ ॥

ग्रहणस्पर्शकालनिर्णय : जब राहु द्वारा चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण

आँख से दिखलाई दे तब उच्चाटन वशीकरण आदि कर्म करना चाहिये, गणना मात्र से नहीं।

अथ पुरश्चरणविधिः श्रीबीजार्णवतन्त्रे षोडशपटले देवीं प्रति शिव-वाक्यम् : एकदा परमेशानि कामाख्यायां महेश्वरि। दृष्टोपरागं यत्कर्म तच्छृणुष्व वरानने ॥५६६॥ कुतः स्नानं कुतः सन्ध्या प्राणायामः कुतः प्रिये। भूतिशुद्धिः कुतो भद्रे कुतः पूजा वरानने ॥ ५६७ ॥ कालातीत भयाद्देवि सर्वं सन्त्यज्य कामिनि। संकल्पं मानसं कृत्वा जपं कृत्वा वरानने ॥ ५६८ ॥ पञ्चाङ्गविधिना देवि सिद्धो भवति नान्यथा। मन्त्र-विद्या महेशानि कवचं स्तव एव च ॥ ५६९ ॥ ध्यानं वा परमेशानि न्यासो वा मकलानने। एकोच्चारेण देवेशि भवन्ति दश कोटयः ॥५७०॥ असंख्यः स जपो देवि ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। तत्कथं परमेशानि क्रियते जपसंख्यकम् ॥ ५७१ ॥ अतएव वरारोहे होमो नास्ति शुचिस्मिते। अभिषेकश्च देवेशि तथा च तर्पणादिकम् ॥ ५७२ ॥ भोजनं च महेशानि नास्ति वै कमलानने। चन्द्रसूर्यग्रहे देवि पञ्चाङ्गं नास्ति कामिनि। पञ्चाङ्गेन विना देवि सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ५७३ ॥ प्रथमे प्रहरे देवि चन्द्रग्रासो यदा भवेत्। चन्द्रग्रहणकाले तु जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७४ ॥ दिवसे च यदा भद्रे भास्करग्रहणं भवेत्। रात्रौ भुक्त्वा च पीत्वा च जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७५ ॥ सर्वेषु विष्णुमन्त्रेषु शिवगाणपयोस्तथा। शक्तिमन्त्रो महेशानि प्रशस्तः सततं जपे ॥ ५७६ ॥ संकल्पो यस्तु देवेशि मानसे समुपस्थितः। तं संकल्पं विजानीयाद्ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ ५७७ ॥ तस्मात्तु चञ्चलापाङ्गि संकल्पं नैव कारयेत्। इति बीजार्णवे तन्त्रे शिवेनैव प्रकाशितम् ॥ ५७८ ॥

पुरश्चरण विधि : बीजार्णव तन्त्र के षोडश पटल में कहा गया है कि एक बार कामाख्या में भगवान् शिव ने पार्वती से कहा : हे परमेशानि, ग्रहण में जो कर्म करना चाहिए उसे सुनो। उस समय स्नान कैसे, संध्या कैसे, प्रणायाम कैसे हो ? हे प्रिये उस समय भूतशुद्धि कैसे हो ? हे वरानने, उस समय पूजा कैसे सम्भव हो ? ग्रहण का समय बीत जाने के भय से, हे कामिनि, सब कुछ छोड़ कर मानस सङ्कल्प करके जप करके पञ्चांग विधि से मन्त्र सिद्ध होता है अन्यथा नहीं। हे महेशानि, मन्त्रविद्या, कवच, स्तव तथा ध्यान और न्यास एक बार उच्चारण करने से हे देवेशि, दस करोड़ गुना हो जाते हैं। चन्द्र

और सूर्य के ग्रहण में वे असंख्य हो जाते हैं। हे परमेशानि, तब जप की संख्या कैसे की जा सकती है? इसलिए हे वरारोहे, उस समय न होम है, न अभिषेक है, न तर्पण आदि है। हे महेशानि, उस समय ब्राह्मण भोजन भी नहीं कराया जा सकता। हे कमलानने, कामिनी, उस समय पञ्चांग भी नहीं सम्भव है। उस समय पञ्चांग के बिना ही सिद्धि होती है। हे देवि, प्रथम प्रहर में जब चन्द्रग्रास लगे तो उस समय जप तथा यज्ञ आदि करे। हे भद्रे, दिन में जब सूर्यग्रहण लगे तब रात में खा-पीकर जप और यज्ञादि करना चाहिए। सभी विष्णु मन्त्रों, शिवमन्त्रों तथा गणपति मन्त्रों में शक्ति का मन्त्र ही श्रेष्ठ है। हे महेशानि उसी का सदा जप करना चाहिये। हे देवेशि, चन्द्र-सूर्य के ग्रहण लगने पर मन में जो सङ्कल्प उपस्थित होता है उसे सङ्कल्प जानना चाहिए। हे चञ्चलापांगी, इसलिए सङ्कल्प न कराये। ऐसा बीजार्णव तन्त्र में शिवजी ने ही कहा है।

पुरश्चरणचन्द्रिकायाम् ग्रहणेऽर्कस्य चेन्दोर्वा शुचिः पूर्वमुखोषितः। नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः ॥ ५७९ ॥ ग्रहणान्मोक्षपर्यन्तं जपेन्मन्त्रं समाहितः। अनन्तरं दशांशेन क्रमाद्धोमादिकं चरेत् ॥ ५८० ॥ तदन्ते महतीं पूजां कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम्। ततो मन्त्रप्रसिद्ध्यर्थं गुरुं सम्पूज्य तोषयेत्। एवं च मन्त्रसिद्धिः स्याद्देवता च प्रसीदति ॥ ५८१ ॥

पुरश्चरण चन्द्रिका में कहा गया है कि सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण लगने पर उपवास करके समुद्रगामिनी नदी में नाभिमात्र जल में पूर्वाभिमुख खड़े होकर ग्रहण लगने से लेकर मोक्ष तक शान्तचित्त होकर जप करे। इसके बाद जप के दशांश से क्रमशः होम आदि करना चाहिए। इसके बाद वृहत् पूजन और तर्पण करना चाहिये। इसके पश्चात् मन्त्र की सिद्धि के लिए गुरु की पूजा करके उन्हें सन्तुष्ट करे। इस प्रकार मन्त्र की सिद्धि होती है और देवता प्रसन्न होता है।

रुद्रयामले : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः ॥ ५८२ ॥ ग्रहणान्मुक्ति पर्यन्तं जपेन्मन्त्र-मनन्यधीः। इति कृत्वा न सन्देहो जपस्य फलभाग्भवेत् ॥ ५८३ ॥

रुद्रयामल में कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से पुरश्चरण की व्यवस्था यह है कि शुद्ध जल से स्नान करके पवित्र स्नान में शान्तचित होकर ग्रहण लगने से लेकर मोक्ष पर्यन्त अन्य विषयों से मन को हटा कर जप करना चाहिये। ऐसा करने पर निःसन्देह साधक पुरश्चरण के फल का अधिकारी होता है।

तन्त्रान्तरेपि : यस्तु श्रद्धानुरोधेन ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। न करोति पुरश्चर्यां नरके स विपच्यते ॥ ५८४ ॥

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि जो साधक श्रद्धावश चन्द्र, सूर्य के ग्रहण में पुरश्चरण नहीं करता वह नरक की अग्नि में जलता है।

अथ सूर्योदयमारभ्य द्वितीयसूर्योदयपर्यन्तं पुरश्चरणं देवीरहस्ये। अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्यो-दयान्तरतम्। तावज्जप्त्वा निरातङ्को मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ ५८५ ॥

सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय पर्यन्त पुरश्चरण : देवीरहस्य में कहा गया है : अथवा दूसरे प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। सूर्योदय से प्रारम्भ करके अग्रिम सूर्योदय पर्यन्त निरन्तर जप किया गया मन्त्र कल्पद्रुम के समान अभीष्ट फलदायक होता है।

कृष्णाष्टमीमारभ्य कृष्णाष्टमीपर्यन्तमेकमासपुरश्चरणं मुण्डमालायाम् : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णाष्टमी भवेत्। सहस्रसंख्याजप्ते तु पुरश्चरणमिष्यते ॥ ५८६ ॥

कृष्णाष्टमी से आगामी कृष्णाष्टमी पर्यन्त एक मास का पुरश्चरण : मुण्डमाला तन्त्र में कहा गया है : अथवा अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। कृष्णाष्टमी से प्रारम्भ करके आगामी कृष्णाष्टमी पर्यन्त एक हजार जप करने पर पुरश्चरण सिद्ध होता।

कृष्णचतुर्दशीमारभ्य शुक्लनवमीपर्यन्तमेकादशदिनपुरश्चरणम्। मुण्डमालायाम् : कृष्णांचतुर्दशीं प्राप्य नवम्यन्तं महोत्सवे। अष्टमी नवमीरात्रौ पूजां कुर्याद्विशेषतः ॥ ५८७ ॥ दशम्यां पारणं कुर्यान्मत्स्य-मांसादिभिर्युतम्। षट्सहस्रं जपेन्नित्यं भक्तिभावपरायणः ॥ ५८८ ॥

कृष्णचतुर्दशी से शुक्लनवमी पर्यन्त ग्यारह दिन का पुरश्चरण : मुण्डमाला तन्त्र में कहा गया है कि कृष्णचतुर्दशी से प्रारम्भ करके नवमी पर्यन्त अष्टमी नवमी की रात के महोत्सव में विशेष रूप से पूजा करनी चाहिये। दशमी के दिन मछली-मांस आदि से युक्त पारण करना चाहिये। नित्य भक्ति भाव परायण होकर छः हजार जप करना चाहिये।

अष्टमीमारभ्य चतुर्दशीपर्यन्तं सप्तदिनपुरश्चरणम्। कालीतन्त्रे : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥ ५८९ ॥ सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्योदयान्तरम्। तावज्जप्त्वा निरातङ्कं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ ५९० ॥

अष्टमी से चतुर्दशी पर्यन्त सात दिन का पुरश्चरण : काली तन्त्र में

कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है : दोनों में से किसी भी पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय पर्यन्त निर्भय होकर जप करने से साधक सर्वसिद्धीश्वर हो जाता है।

भौमशनिवारपुरश्चरणं कालीतन्त्रे :

अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्डं समाहृतम् ॥ ५९१ ॥ पञ्चगव्येन मिलितं चन्दनाद्यैर्विशेषतः। निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानतः काननान्तरे ॥ ५९२ ॥ तत्र तद्दिवसे रात्रौसहस्रं यदि साधकः। एकाकी प्रजपेन्मन्त्रं स भवेत्कल्पपादपः ॥५९३॥

मंगल और शनिवार का पुरश्चरण : काली तन्त्र के अनुसार एक अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। मंगलवार या शनिवार को पुरुष का शिर लाकर उस पर पञ्चगव्य, चन्दन, कपूर आदि की विशेषरूप से लेप लगाकर वन की भूमि में आधे हाथ नीचे गाड़कर उसपर उस दिन रात्रि में वहीं बैठकर अकेला एक हजार मन्त्र जप करे तो वह मन्त्र कल्पतरु के समान हो जाता है, अर्थात् सभी इच्छाओं की पूर्ति करनेवाला हो जाता है।

कार्तिकफाल्गुनवैशाखेषु शुक्लपक्षे प्रतिपदामारभ्यैकादश्यतमेकादशदिने वैष्णवमन्त्रपुरश्चरणविधानम् चन्द्रपीठे : ऊर्जे तपसि राधे वा शुक्लपक्षे तु वैष्णवे।

कार्तिक, फाल्गुन, वैशाख के शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से एकादशी पर्यन्त ग्यारह दिन वैष्णव मन्त्र पुरश्चरण : चन्द्रपीठ तन्त्र में कहा गया है कि कार्तिक, फाल्गुन तथा वैशाखा के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से प्रारम्भ करके एकादशी तक ग्यारह दिन वैष्णव मन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिये।

एकादश्यन्तमैशे तु भूतान्तः फाल्गुऽनेतुस्मृतम् ॥ ५९४ ॥

फाल्गुन मास की प्रतिपदा से चतुर्दशी तक शैव मन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिये।

चतुर्दशीमारभ्य चतुर्दशीपर्यन्तं पञ्चदशदिनानि माहेश्वरपुरश्चरण विधानम्। अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। चतुर्दशीं समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ॥ ५९५ ॥ तावज्जपेन्महेशानि पुरश्चरणमिष्यते। केवलं जपमात्रेण मन्त्राः सिद्धा भवन्ति हि ॥ ५९६ ॥ बलिहोमादिदानेन विशेषात्पीठपूजने। योगिपीठं महापीठं कामरूपं तथापरम्। तयोरेकतमं पूज्यं रुद्रदेह इवापरः ॥ ५९७ ॥

चतुर्दशी से चतुर्दशी पर्यन्त माहेश्वर पुरश्चरण विधान : अथवा दूसरी तरह भी पुरश्चरण किया जा सकता है। हे महेशानि चतुर्दशी से प्रारम्भ करके आगामी चतुर्दशी तक जप पुरश्चरण करना चाहिये। इस प्रकार का मन्त्र जप मात्र से सिद्ध होता है। विशेष रूप से, बलि, होमादि दान से तथा पीठपूजन से मन्त्र सिद्ध होते हैं। योगपीठ, महापीठ तथा कामरूप, इनमें से प्रत्येक शिव के शरीर के समान पूज्य हैं।

भाद्रमार्गमाघेषु नवरात्रे वा गणेशमन्त्रपुरश्चरणविधानं चन्द्रपीठे अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। भाद्रेऽपि विघ्नराजत्वं माघमार्गौ स्ववासरात् ॥ ५९८ ॥ अन्येष्वपि च मन्त्रेषु पूर्वोक्तं नवरात्रकम्। जपो मातृकया प्रातःकालान्मध्यंदिनावधि ॥ ५९९ ॥ रात्रौ याममितः कार्यः पयोमूलफलाशिना। चतुर्थयामे कर्तव्या मालामन्त्रे दशांशतः ॥ ६०० ॥ विंशांशाद्वा दशांशाद्वा अन्येष्वपि हुतं मतम्। दक्षिणा च यथोक्ता च वित्तशाठ्यं न कारयेत्। एवं मन्त्रः प्रयोगार्हो भवत्येव न संशयः ॥ ६०१ ॥

भादों, मार्गशीर्ष तथा माघ मास में या नवरात्र में गणेश मन्त्र पुरश्चरण विधान : चन्द्रपीठ तन्त्र में कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। भादों, माघ, और मार्गशीर्ष मासों में गणेश जी के मन्त्र का पुरश्चरण तत्तत् मास की गणेश चतुर्थी के दिन से करना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य मन्त्रों के पुरश्चरण नवरात्र में करना चाहिये। जप मातृका से करना चाहिये। जप का समय प्रातःकाल से मध्याह्न तक है। दूध और फल-मूल का भोजन करते हुए रात्रि में पुरश्चरण चार घड़ी पर्यन्त करना चाहिये। चौथे याम में मालामन्त्र के पुरश्चरण में दशांश या विंशांश होम करना चाहिये। अन्य पुरश्चरणों में दशांश ही होम कहा गया है। दक्षिणा यथोक्त दी जानी चाहिए। धन की शठता नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार मन्त्र प्रयोग के योग्य हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है।

आश्विने चैत्रे वा प्रतिपदामारभ्य महानवमीपर्यन्तं नवरात्रे शक्ति पुरश्चरणविधानं चन्द्रपीठे : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। महालक्ष्मीं समारभ्य आमहानवमाश्वरीम्। कृष्णामा नवमो चैव मधौ शक्तेर्मनौ स्मृते ॥ ६०२ ॥

आश्विन या चैत्र प्रतिपदा से महानवमी पर्यन्त नवरात्र में पुरश्चरण का विधान : चन्द्रपीठ तन्त्र में कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से भी

पुरश्चरण किया जा सकता है। महालक्ष्मी से लेकर महानवमीश्वरी तक चैत्र मास की कृष्ण अमावास्या तथा नवमी शक्तिमन्त्र के लिये उत्तम तिथियाँ हैं।

शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यन्तं षडदिनपुरश्चरणविधानम् तन्त्रान्तरे:

अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यन्तं विशेषतः ॥६०३॥ भक्तितः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत्सहस्रकम्। जपेदेव तु विजने केवलं तिमिरालये ॥ ६०४ ॥ अष्टम्यादिनवम्यन्तमुपवासपरो भवेत्। स भवेत्सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा ॥ ६०५ ॥

शरत्काल में चतुर्थी से नवमी पर्यन्त छ दिन का पुरश्चरण-विधान : अन्य तन्त्र में कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से पुरश्चरण का विधान कहा गया है। शरत्काल में चतुर्थी से नवमी पर्यन्त विशेष रूप से भक्तिपूर्वक पूजा करके रात्रि में प्रतिदिन की तिथि की संख्या के अनुसार उतने ही हजार मन्त्र का जप एकान्त अँधेरे घर में करे। अष्टमी से नवमी तक उपवास करना चाहिए। जो ऐसा करता है वह समस्त सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। इसमें विचार नहीं करना चाहिये।

पुत्रजन्मोत्सव दिने पुरश्चरणविधानं देवीरहस्ये : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। पुत्रजन्मोत्सवदिने सूतिकाकुलमन्दिरे ॥ ६०६ ॥ मन्त्रिको मूलमन्त्रं स्वं जपेद्दशदिनावधि। दशांशसंस्कृतं मन्त्रं कुर्यात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ६०७ ॥

पुत्रजन्मोत्सव के दिन पुरश्चरण : देवीरहस्य में कहा गया है कि अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। पुत्रजन्मोत्सव के दिन सूतिका गृह में मान्त्रिक अपने मन्त्र को दश दिन तक जपे। दशांश संस्कार करने पर मन्त्र सिद्ध होता है।

मृतसूतक दिने पुरश्चरणविधानम्। देवीरहस्ये : अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते। मृतकाशौचादिवसे प्रथमे साधको जपेत् ॥ ६०८ ॥ मनुं दशदिनं रात्रौ धीरो भूत्वा यथार्थतः। एकादशाहानि सुधीः कुर्यान्मन्त्रं सुसंस्कृतम्। कर्मणा मनसा वाचा मंत्रः कल्पद्रुमो भवेत् ।६०९।

मृतसूतक के दिन पुरश्चरण-विधान : देवीरहस्य में कहा गया है कि अथवा अन्य प्रकार से भी पुरश्चरण किया जा सकता है। मृतकाशौच के प्रथम दिन रात्रि में शान्त होकर दश दिन तक अर्थसहित मन्त्र का जप करे। ग्यारहवें दिन साधक मन वाणी तथा कर्म से मन्त्र का दश संस्कार करे। इस प्रकार मन्त्र कल्पवृक्ष के समान हो जाता है।

अथ मन्त्रसिद्धिचिह्नानि वक्रतुण्डकल्पे : चित्तप्रसादो मनसश्च तुष्टिरल्पाशिता स्वप्नपराङ्मुखत्वम्। स्वप्ने प्रपापक्वफलं भवन्ति सिद्धस्य चिह्नानि भवन्ति सद्यः ॥ ६१० ॥

मन्त्रसिद्धि के चिह्न : वक्रतुण्ड कल्प में कहा गया है कि १. चित्त की प्रसन्नता, २. मन की सन्तुष्टि, ३. अल्पभोजन, ४. निद्रानाश, ५. स्वप्न में जलाशय या पके फलों का दर्शन शीघ्र ही मन्त्रसिद्धि के चिह्न होते हैं।

भैरवीतन्त्रे : ज्योतिः पश्यति सर्वत्र शरीरं वा प्रकाशयुक्। निजं शरीरमथ वा देवतामयमेव हि ॥ ६११ ॥

भैरवी तन्त्र में कहा गया है कि मन्त्र सिद्धि होने पर साधक सर्वत्र प्रकाश देखता है अथवा उसका शरीर प्रकाशयुक्त हो जाता है अथवा निज शरीर देवतामय हो जाता है।

नारदपञ्चरात्रे : नानाश्चर्यादिहृदय मन्त्रसिद्धिमयानि वै। अन्यानन्दप्रदान्याशु प्रत्यक्षेण बहिस्तथा ॥ ६१२ ॥ जडधीस्तु क्षणं विप्र क्षणमस्ति प्रहर्षितः। क्षणं दुन्दुभिनिर्घोषं शृणोत्यस्यान्तरिक्षतः ॥ ६१३ ॥ क्षणं च मधुरं वाद्यं नानागतिसमन्वितम्। आजिघ्रति क्षणं गन्धान् कर्पूरमृगनाभिजात् ॥६१४॥ उत्पतन्तं क्षणं वापि पश्यत्यात्मानमात्मनि। चन्द्रार्ककिरणाकीर्णं क्षणमालोकयेन्नभः ॥ ६१५ ॥ गजगोवृषनादांश्च शृणुयाच्च क्षणं द्विज। निर्भराम्बुदसंक्षोभं क्षणमाकम्पयन्त्यपि ॥ ६१६ ॥ तारकाणि विचित्राणि योगिनो नभसि स्थितान्। पश्यन्ति दाहयन्तं च क्षणं मन्त्रव्रती सदा ॥ ६१७ ॥ क्षणं किलिकिलारावं हंसबर्हिवं तथा। क्षणंमेघोदयं पश्येत्क्षणं रात्रि दिने सति ॥ ६१८ ॥ रात्रौ दिवसवल्लोकं सम्पूर्यं क्षणमाक्षते। बलेन परिपूर्णश्च तेजसा भास्करोपमः ॥ ६१९ ॥ पूर्णेन्दुसदृशः कान्त्या गमने विहगोपमः। समेन युक्त प्रौढेन गाम्भीर्येण मुखेन च ॥ ६२० ॥ स्वल्पासनेनासम्वृत्तो बहुनापि न बध्यते। विण्मूत्रयोरनल्पत्वं भवेत्तन्द्राजयस्तथा ॥६२१॥ जपध्यानगतो मन्त्री न खेदमधिगच्छति ॥ ६२२ ॥ विना भोजनपानाभ्यां पक्षमासादिकं मुने। इत्येवमादिभिश्चिह्नैर्महाविस्मयकारिभिः ॥ ६२३ ॥ एवमादीनि चिह्नानि यदा पश्यति मन्त्रवित्। सिद्धिं मन्त्रस्य जानीयाद्देवतायाः प्रसन्नताम्। ततो जपेऽधिकं यत्नं प्रकुर्याज्ज्ञानलब्धये ॥ ६२४ ॥

नारद पञ्चरात्र में कहा गया है कि मन्त्र की सिद्धि हो जाने पर नानाविध आचार्यों के अनुभव होते हैं। अन्य आनन्दप्रद आश्चर्य प्रत्यक्ष बाहर

दीख पड़ते हैं। एक क्षण में अपने आपको साधक जड़ के रूप में देखता है, दूसरे क्षण में ही चैतन्य और प्रहृष्ट अनुभव करने लगता है। क्षण में अन्तरिक्ष से नागड़े की आवाज सुनता है। क्षण में मधुर बाजे तथा नाना प्रकार के संगीत सुनता है। क्षण में कपूर तथा कस्तूरी के गन्धों को सूंघता है। अपने आप में अपने को ऊपर उड़ता हुआ अनुभव करता है। चन्द्रमा और सूर्यों से व्याप्त आकाश को देखता है। क्षण में वह हाथी, गाय तथा बैलों की ध्वनियों को सुनता है। क्षण में जलों से भरे बादलों को तेजी से मंडराते हुए देखता है। क्षण में साधक आकाश में विचित्र तारों को तथा योगियों को देखता है। क्षण में तेज से दहन करते हुए सूर्य को देखता है। मन्त्रव्रती क्षण में हंस और मोर की मधुर ध्वनियों को सुनता है। क्षण में घने बादलों को देखता है। क्षण में दिन में रात को देखता है। क्षण में रात में दिन की तरह पूरे संसार को देखता है। साधक मन्त्रसिद्धि के बाद बल से परिपूर्ण तथा तेज से सूर्य के समान, सौन्दर्य से पूर्ण चन्द्रमा के समान, गमन में पक्षी के समान तथा प्रौढ़ समभावना तथा गाम्भीर्य से युक्त हो जाता है। कम या अधिक देर तक के आसन के बन्धन में वह नहीं रहता। मल-मूत्र उसे अधिक नहीं होते। उसके शरीर पर झुरियाँ नहीं पड़ती। जब मन्त्र जप करने वाला इस प्रकार के चिह्नों को देखता है तो उसे यह जानना चाहिए कि उसे मन्त्र की सिद्धि हो गयी है और देवता उसपर प्रसन्न हैं। अतः उसे ज्ञान की प्राप्ति के लिए जप में अधिक यत्न करना चाहिए।

तन्त्रान्तरे : मन्त्राराधनशक्तस्य प्रथमं वत्सरत्रयम्। जायन्ते बहवो विघ्ना नियतं तस्य नारद ॥ ६२५ ॥ नोद्वेगः साधके यावत् कर्मणा मनसा यदि। तृतीयवत्सरादूर्ध्वं स्वयं सिध्यति मन्त्रराट् ॥ ६२६ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे निर्णयप्रकरणे प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

दूसरे तन्त्र में कहा गया है : हे नारद, मन्त्र की साधना करने वाले के लिए प्रथम तीन वर्ष निश्चित रूप से बहुत विघ्नमय होते हैं। यदि साधक में कर्म, मन और वचन से उद्वेग न हो तो तीसरे वर्ष के बाद मन्त्रराज् स्वयं सिद्ध हो जाता है।

इतिश्रीमन्त्रमहार्णव के देवता खण्ड के निर्णय प्रकरण में
प्रथम तरंग समाप्त

द्वितीय तरंग

मुद्रा प्रकरण

अथ मुद्राप्रकारः।

अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपिताः। याभिर्विरचिताभिश्च मोदन्ते मन्त्रदेवताः ॥ १ ॥

अब मैं सभी तन्त्रों में अत्यन्त गुप्त रक्खी गई मुद्राओं का वर्णन करूँगा। मुद्राओं के प्रदर्शन से मन्त्र-देवता प्रसन्न होते हैं।

अर्चने जपकाले च ध्याने काम्ये च कर्मणि। स्नाने चावाहने शङ्खे प्रतिष्ठायां च रक्षणे ॥ २ ॥ नैवेद्ये च तथान्यत्र तत्तत्कल्पप्रकाशिते। स्थाने मुद्राः प्रद्रष्टव्याः स्वस्वलक्षणलक्षिताः ॥ ३ ॥

तत्तत् कल्पों में प्रकाशित अर्चना, जप, ध्यान, काम्यकर्म, स्नान, आवाहन, शङ्ख बजाने, देवता की प्रतिष्ठा, रक्षण, नैवेद्य तथा अन्नादि प्रदान करने में स्वलक्षणों से युक्त मुद्राओं को अवश्य दिखाना चाहिये।

आवाहनादिका मुद्रा नव साधारणी मताः। तथा षडङ्गमुद्राश्च सर्वमन्त्रेषु योजयेत् ॥ ४ ॥

साधारणतया आवाहन के लिये नौ मुद्रायें हैं तथा सभी मन्त्रों में साधक को षडङ्ग मुद्राओं की योजना करनी चाहिये।

एकोनविंशतिर्मुद्रा विष्णोरुक्ता मनीषिभिः। शङ्खचक्रगदापद्मवेणु-श्रीवत्सकौस्तुभाः ॥ ५ ॥ वनमाला तथा ज्ञानमुद्रा बिल्वाह्वया तथा। गरुडाख्या परामुद्रा विष्णोर्मुद्रा सन्तोषदायकाः ॥ ६ ॥ नारसिंही च वाराही हयग्रीवी धनुस्तथा। बाणमुद्रा ततः पर्शुर्जगन्मोहिनिका च सा ॥ ७ ॥

मनीषियों ने विष्णु के लिये उन्नीस मुद्रायें कही हैं, यथा शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, वेणु, श्रीवत्स, कौस्तुभ, वनमाला, ज्ञान, बिल्व, गरुड, परा, नारसिंही, वाराही, हयग्रीवी, धनु, बाण, परशु, और जगन्मोहिनी। ये सभी मुद्रायें विष्णु को प्रिय हैं।

काम मुद्रा परा ख्याता शिवस्य दश मुद्रिकाः। लिङ्गयोनित्रिशूलाक्ष-

मालेष्टाभिर्मृगाह्वया ॥ ८ ॥ खट्वाङ्गा च कपालाख्या डमरुः शिवतोषिका ।

काममुद्राओं के नाम से प्रसिद्ध शिव के लिये दश मुद्रायें कही गई हैं, यथा लिङ्ग, योनि, त्रिशूल, अक्षमाला, वर, अभय, मृग, खट्वाङ्ग, कपाल और डमरु। ये सभी शिव को सन्तुष्ट करती हैं।

सूर्यस्यैकैव पद्माख्या सप्तमुद्रा गणेशितुः ॥ ९ ॥ दन्तपाशांकुशा-विघ्नपर्शुलड्डूकसंज्ञकाः । बीजपूराह्वया मुद्रा विज्ञेयाविघ्नपूजने ॥१०॥

सूर्य के लिये केवल एक पद्ममुद्रा और गणेश के लिये सात मुद्रायें कही गई हैं। दन्त, पाश, अंकुश, विघ्न, परशु, लड्डूक और बीज, ये गणेश की सात मुद्रायें हैं।

पाशांकुशवराभीतिखड्गचर्मधनुःशराः । मौशलीमुद्रिका दौर्गी मुद्रा शक्तेः प्रियंकराः ॥ ११ ॥

पाश, अंकुश, वर, अभय, खड्ग, चर्म, धनु, शर, मुषली और मुद्रिका, ये दश शक्ति की प्रिय दौर्गी मुद्रायें हैं।

लक्ष्मीमुद्रार्चने लक्ष्म्या वाग्वादिन्यास्तु पूजने । अक्षमाला तथा वीणा व्याख्या पुस्तकमुद्रिका ॥ १२ ॥

लक्ष्मी के पूजन में लक्ष्मी मुद्रा का और सरस्वती के पूजन में अक्षमाला, वीणा, व्याख्या और पुस्तक मुद्राओं का प्रदर्शन करना चाहिये।

सप्तजिह्वाह्वया मुद्रा विज्ञेया वह्निपूजने । मत्स्यमुद्रा च कूर्माख्या लेलिहा मुण्डसंज्ञिका ॥ १३ ॥

अग्नि की पूजा के लिये सप्तजिह्वा मुद्रा का विधान है। मत्स्य, कूर्म, लेलिहा, और मुण्ड भी इनकी मुद्राओं के नाम हैं।

महायोनिरिती ख्याता सर्वसिद्धि समृद्धिदाः । शक्त्यर्चने महायोनिः श्यामादौ मुण्डमुद्रिका ॥ १४ ॥

महायोनि मुद्रा सर्वसिद्धियों और समृद्धियों के लिये विख्यात है। शक्ति की अर्चना में महायोनि मुद्रा का तथा श्यामा आदि की पूजा में मुण्ड मुद्रा का प्रयोग होता है।

मत्स्यकूर्मलेलिहाख्या सर्वसाधारणी मता । दश मुद्राश्च समाख्याता-स्त्रिपुरायाः प्रपूजने ॥ १५ ॥ संक्षोभद्राविणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशाः । खेचरी बीजयोन्याख्या त्रिखण्डा परिकीर्तिता ॥ १६ ॥

मत्स्य, कूर्म और लेलिहा साधारण मुद्रायें बताई गई हैं। त्रिपुरा की

पूजा के लिये दश मुद्रायें कही गई हैं, यथा संक्षोभिणी, विद्राविणी, आकर्षिणी, वश्यकरी, उन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीज, योनि और त्रिखण्डा।

कुम्भमुद्राभिषेके स्यात्पद्ममुद्रासने तथा । कालकर्णी प्रयोक्तव्या विघ्नप्रशमकर्मणि ॥ १७ ॥ गालिनी च प्रयोक्तव्या जलशोधनकर्मणि ।

अभिषेक के लिये कुम्भ मुद्रा और आसन के लिये पद्ममुद्रा का विधान है। विघ्न शमन के कार्य में कालकर्णी का, तथा जलशोधन कर्म में गालिनी का प्रयोग करना चाहिये।

श्रीगोपालार्चने वेणुर्नृहरेर्नारसिंहिका ॥ १८ ॥ वराहस्य च पूजाया वराहाख्यां प्रदर्शयेत् ।

श्री गोपाल की पूजा में वेणुमुद्रा का, नृहरि की पूजा में नारसिंही मुद्रा का और वराह की पूजा में वाराही मुद्रा का प्रयोग करना चाहिये।

रामार्चने धनुर्बाणमुद्रे पर्शुस्तथार्चने ॥ १९ ॥ परशुरामस्य विज्ञेया तथा परशुमुद्रिका ।

श्रीराम की पूजा में धनुष-बाण और परशुराम की पूजा में परशु मुद्रा दिखानी चाहिये।

वासुदेवाह्वया ध्याने कुम्भमुद्रा तु रक्षणे ॥ २० ॥ सर्वत्र प्रार्थने चैव प्रार्थनाख्यां नियोजयेत् । उद्देशानुक्रमादासामुच्यते लक्षणन्तथा ॥ २१ ॥

वासुदेव के आवाहन और ध्यान में कुम्भ मुद्रा और सब प्रकार की प्रार्थना में सदैव प्रार्थना मुद्रा का प्रदर्शन करना चाहिये। अब आवश्यकता के अनुसार मुद्राओं के लक्षण बताते हैं।

अथावाहनादिनवमुद्रालक्षणम् । हस्ताभ्यामञ्जलिं बध्वानामिका मूलपर्वभिः । अंगुष्ठौ निःक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहिनी मता । इत्यावाहनी-मुद्राः ॥ १ ॥

आवाहनादि नव मुद्राओं के लक्षण :

दोनों हाथों से अञ्जलि बाँध कर दोनों अँगूठों को अपनी-अपनी अनामिकाओं के मूल पर्वों पर लगना चाहिये। इसे आवाहनी मुद्रा कहते हैं।

अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका स्मृता । इति स्थापनी-मुद्राः ॥ २ ॥

उक्त आवाहनी मुद्रा बनाकर उसे अधोमुख कर देने से स्थापनी मुद्रा बन जाती है।

उच्छ्रितांगुष्ठमुष्ट्योस्तु संयोगात्सन्निधापनी इति सन्निधापनी मुद्रा ।३।

दोनों हाथों से मुट्ठी बांध कर दोनों के अँगूठों को ऊपर खड़ा कर देने से सन्निधापिनी मुद्रा बनती है।

अन्तःप्रवेशितांगुष्ठासैव सम्बोधनी मता। इति सम्बोधनी मुद्रा ॥४॥

दोनों अँगूठों को दोनों मुट्ठियों के भीतर रखकर मुट्ठियों को उलट देने से सम्बोधिनी मुद्रा बनती है।

उत्तानमुष्टियुगला सम्मुखीकरणी मता। इति सम्मुखीकरणमुद्रा ॥५॥

जब सम्बोधिनी मुद्रा की मुट्ठियों को ऊपर घुमा दिया जाता है तब सम्मुखीकरण मुद्रा बन जाती है।

देवताङ्गे षडङ्गानां न्यासः स्यात् सकलीकृतिः। इतिशकलीकरण-मुद्रा ॥ ६ ॥

देवताओं के षडङ्गन्यास में सकलीकरण मुद्रा दिखानी चाहिये।

सव्यहस्तकृता मुष्टिर्दीर्घाधोमुखतर्जनी अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता मता। इत्यवगुण्ठनी मुद्रा ॥ ७ ॥

बायें हाथ की मुट्ठी बाँध कर तर्जनी को अधोमुख करके उसे नियमित रूप से आगे-पीछे करने से अवगुण्ठन मुद्रा बनती है।

अन्योन्याभिमुखा श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः। तथैव तर्जनी-मध्याधेनुमुद्रा समीरिता। अमृतीकरणं कुर्यात्तया साधकसत्तमः। इत्यमृतीकरणे धेनुमुद्रा ॥ ८ ॥

दाहिने हाथ की उँगुलियों को बायें हाथ की उँगलियों पर रक्खे। दाहिनी तर्जनी को मध्यमा के मध्य में लगाये। बायें हाथ की अनामिका को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से और दाहिने हाथ की अनामिका को बायें हाथ की कनिष्ठिका से लगाये। इस प्रकार सभी उँगलियों को योजित करने के बाद हाथों को उलट देने से धेनु मुद्रा बनती है। श्रेष्ठ साधक इस प्रकार धेनु मुद्रा दिखा कर अमृतीकरण (अर्थात् अमृत बीज वं का उच्चारण करते हुये) करते हैं।

अन्योन्यग्रथितांगुष्ठा प्रसारितकरांगुली। महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः। इति परमीकरणे महामुद्रा।

दोनों अँगूठों को एक दूसरे के साथ ग्रथित करके दोनों हाथों की उँगलियों को प्रसारित कर देना चाहिये। इसे परमीकरण की महामुद्रा कहते हैं।

प्रयोजयेदिमा मुद्रा देवताह्वानकर्मणि ॥ ९ ॥ इत्यावाहनादयो नव मुद्राः।

उपरोक्त ९ मुद्रायें देवताओं के आवाहनादि के लिये प्रयुक्त होती हैं।

षडङ्गन्यासोपयोगी षट्मुद्राओं के लक्षण

अङ्गन्यासक्षमा मुद्रास्तासां लक्षणमुच्यते।

अङ्गन्यास के लिये प्रयुक्त षडङ्ग मुद्राओं के लक्षणों को बताते हैं :

अंगुष्ठा ऋजवो हस्तशाखा भवेन्मुद्रा हृदये शीर्षके च। अधोऽगुष्ठा खलु मुष्टिः शिखायां करद्वन्द्वांगुलयो वर्मणि स्युः। नाराचमुष्ट्युद्धृतबाहुयुग्मकांगुष्ठतर्जन्युदितोध्वनिस्तु। विष्वक्विशक्तः कथिताऽस्त्रमुद्रा यात्राक्षिणी तर्जनिमध्यमे स्तः। नेत्रत्रयं मन्त्र भवेदनामा षडङ्गमुद्रा कथिता विधिज्ञैः। इति षडङ्गमुद्रा।

अनामिका और अँगूठे को छोड़ कर शेष उँगलियों को सीधा रखने पर हृदय मुद्रा बनती है। शिरोमुद्रा भी इसी प्रकार बनती है। मुट्ठी बाँधने के बाद अँगूठे को अधोमुख करने से शिखा मुद्रा बनती है; जब कि दोनों हाथों की उँगलियों को फैला देने से वर्म अथवा कवच मुद्रा बन जाती है। दोनों हाथों को बाण के समान फैलाकर तर्जनी और अँगूठे के घर्षण से चुटकी बजाने को अस्त्र मुद्रा कहते हैं। तर्जनी और मध्यमा, ये दो उँगलियां नेत्र मुद्रा हैं। जब नेत्रत्रय में न्यास करना हो तो तर्जनी और मध्यमा के साथ अनामिका को भी सम्मिलित कर लेने से नेत्रत्रय का प्रदर्शन किया जाता है। कर्मों को जानने वाले इन्हें ही षडङ्ग मुद्रायें कहते हैं।

विष्णु की १९ मुद्राओं के लक्षण

वैष्णवीनां तु मुद्राणां कथ्यन्ते लक्षणान्यथ। वामांगुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानां ततोमुष्टिमंगुष्ठं तु प्रसारयेत्। वामांगुल्यस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः। दक्षिणांगुष्ठसंपृष्टा मुद्रैषा शङ्खमुद्रिका। इति शङ्खमुद्रा ॥ १ ॥

अब वैष्णवी मुद्राओं और उनके लक्षणों को कहता हूं : बायें हाथ के अँगूठे को दाहिनी मुट्ठी में रक्खे, दाहिनी मुट्ठी को उर्ध्वमुख रखकर उसके अँगूठे को फैलाये। बायें हाथ की सभी उँगलियों को एक दूसरे के साथ सटाकर फैला दे। अब बायें हाथ की फैली उँगलियों को दाहिनी ओर घुमा कर दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करे। यह शङ्ख मुद्रा कहलाती है।

हस्तौ च सम्मुखौ कृत्वा सन्नतप्रोथितांगुली। तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ सुभुग्नौ सुप्रसारितौ। कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्रसंज्ञिका। इति चक्रमुद्रा ॥ २ ॥

दोनों हाथों सम्मुख इस प्रकार रक्खे कि हथेलियाँ ऊपर हों। फिर दोनों हाथों की उँगलियों को मोड़ कर मुट्ठियाँ बना ले। अब दोनों अँगूठों को झुका कर परस्पर स्पर्श कराये और तर्जनियों को छोड़ कर दोनों हाथों की उँगलियों को फैला दे। अँगूठे ही की भाँति दोनों तर्जनियाँ भी एक दूसरे का स्पर्श करती रहनी चाहिये। यह चक्र मुद्रा है।

अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वा तु ग्रथितांगुलीः। अंगुष्ठमध्यमे भूयः संलग्ने संप्रसारिते। गदामुद्रेयमुदिता विष्णोः सन्तोषवर्द्धिनी। इति गदामुद्रा ॥ ३ ॥

दोनों हाथों की हथेलियों को मिलाये, फिर दोनों हाथ की उँगलियाँ परस्पर ग्रथित करे। इस स्थिति में मध्यमा उँगलियों को मिलकर सामने की ओर फैला दे। यह विष्णु को प्रसन्न करने वाली गदा मुद्रा है।

हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संहतप्रोन्नतांगुलीः। तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका। इति पद्ममुद्रा ॥ ४ ॥

दोनों हाथों को सम्मुख करके हथेलियाँ ऊपर करे, उँगलियों को बन्द कर मुट्ठी बाँधे। अब दोनों अँगूठों को उँगलियों के ऊपर से पस्पर स्पर्श कराये। यह पद्म मुद्रा है।

ओष्ठेवामकरांगुष्ठे लग्नस्तस्य कनिष्ठके। दक्षिणांगुष्ठसंसर्गात्तत्कनिष्ठा प्रसारिता तर्जनीमध्यमानामाः किञ्चित्संकोच्य चालिताः। वेणुमुद्रा भवेदेषा सुगुप्ता प्रेयसी हरेः। इति वेणुमुद्रा ॥ ५ ॥

बायें हाथ के अँगूठे को ओठ का और कनिष्ठा को दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करना चाहिये। दाहिने हाथ की कनिष्ठा को फैला होना चाहिये। दाहिने हाथ की शेष तीन उँगलियों (तर्जनी, मध्यमा और अनामा) को थोड़ा झुका कर और आगे-पीछे चलायमान करना चाहिये। यह वेणुमुद्रा है जो अत्यन्त गोपनीय होने के साथ साथ श्री कृष्ण को अत्यधिक प्रिय है।

अन्योन्यस्पृष्टकरयोर्मध्यमानामिकांगुलीः। अंगुष्ठेन तु बध्नीयात्कनिष्ठामूलसंस्थिते। तर्जन्यौ कारयेदेषा मुद्रा श्रीवत्ससंज्ञिका। इति श्रीवत्समुद्रा ॥ ६ ॥

दोनों हाथों की हथेलियों को आमने सामने रखकर दोनों की मध्यमा और अनामिकाओं को थोड़ा झुकाकर अँगूठों से दबा ले। अब दोनों हाथों की तर्जनी को अपने-अपने हाथ की कनिष्ठिका मूलों में लगाये। यह श्रीवत्स मुद्रा है।

अनामां पृष्ठसंलग्नां दक्षिणस्य कनिष्ठिकाम्। कनिष्ठयान्ययाबध्य तर्जन्या दक्षया तथा। वामानामां च बध्नीयाद्दक्षिणांगुष्ठमूलकै। अंगुष्ठमध्यमे वामे संयोज्य सरलाः पराः। चतस्रोप्यग्रसंलग्ना मुद्रा कौस्तुभसंज्ञिका। इतिकौस्तुभमुद्रा ॥ ७ ॥

दाहिने हाथ के अँगूठे का स्पर्श करते हुये अनामिका और कनिष्ठिका को बायें हाथ की कनिष्ठिका से और दाहिनी तर्जनी को बाईं अनामा से बाँधे। बायें अँगूठे और मध्यमा से दाहिने अँगूठे के मूल का स्पर्श करे। शेष उँगलियों को सीधा रक्खे। दोनों हाथ की चारों उँगलियों को सीधा रक्खे। दोनों हाथ की चारों उँगलियाँ परस्पर स्पर्श करती रहनी चाहिये। यह कौस्तुभ मुद्रा है।

स्पृशेत्कण्ठादिपादान्तं तर्जन्यांगुष्ठया तथा। करद्वयेन मालान्वमुद्रेयं वनमालिका। इति वनमाला मुद्रा ॥ ८ ॥

दोनों हाथों की परस्पर स्पर्श किये हुये तर्जनी और अँगूठे से ग्रीवा से लेकर पाद पर्यन्त शरीर का स्पर्श करे। यह वनमाला मुद्रा है।

तर्जन्यंगुष्ठको सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्। वामहस्ताम्बुजं वामे जानमूर्द्धनि विन्यसेत्। ज्ञानमुद्रा भवेदेषा रामचन्द्रस्य प्रेयसी। इति ज्ञानमुद्रा ॥ ९ ॥

दाहिने हाथ के अँगूठे और तर्जनी को दूसरे से मिलाये, शेष उँगलियाँ थोड़ी झुकी रक्खे। इस प्रकार उँगलियों को सयोजित करके हाथ को हृदय पर रक्खे। बायें हाथ को बायें जाँघ पर इस प्रकार रक्खे कि हथेली ऊपर की ओर रहे। यह श्रीरामचन्द्र को अत्यन्त प्रिय ज्ञानमुद्रा है।

अंगुष्ठं वाममुद्धाटितमितरकरांगुष्ठकेनाथ बध्वा तस्याग्रं पीडयित्वांगुलिभिरपि च ता वामहस्तांगुलीभिः। बध्वा गाढं हृदि स्थापयतु विमलधीर्व्याहरन्मारबीजं बिल्वाख्या मुद्रिकैषा स्फुटमिह कथिता गोपनीया विधिज्ञैः। इति बिल्वाख्यमुद्रा ॥ १० ॥

बायें हाथ के अँगूठे को सीधा खड़ा करके उसे दाहिने अँगूठे से पकड़े, फिर इस बायें अँगूठे को पकड़े हुये दाहिने अँगूठे को दाहिने हाथ की सभी उँगलियों को (जो पहले से ही अँगूठे को पकड़े हुये हैं) पकड़े। साथ ही साथ कामबीज 'क्लीं' का उच्चारण भी करना चाहिये। यह बिल्व मुद्रा है जिसे ज्ञानियों ने अत्यन्त गोपनीय कहा है।

हस्तौ तु विमुखौ कृत्वा ग्रन्थयित्वा कनिष्ठिके। मिथस्तर्जनिके

श्लिष्टे श्लिष्टावंगुष्ठको तथा। मध्यमानामिका द्वे तु द्वौ पक्षाविव चालयेत्। एषा गरुडमुद्राख्या विष्णोः सन्तोषवर्द्धिनी। इति गरुडमुद्रा ॥ ११ ॥

दोनों हाथों के पृष्ठ भाग को एक दूसरे से मिलाइये। अब नीचे की ओर लटके हुए दोनों हाथों की तर्जनी और कनिष्ठिका को एक दूसरे के साथ ग्रथित कीजिये। इसी स्थिति में दोनों हाथों की अनामा और मध्यमाओं को उल्टी दिशाओं में किसी पक्षी के पह्नों की भाँति ऊपर नीचे कीजिये। यह विष्णु का सन्तोषवर्धन करने वाली गरुड़ मुद्रा है।

जानुमध्ये करौ दत्वा चिबुकोष्ठौ समाकृतौ। हस्तौ च भूमिसंलग्नौ कम्पमानः पुनः पुनः। मुखं च विवृतं कुर्याल्लेलिहानां च जिह्विकाम्। नारसिंही भवेदेषा मुद्रा तत्प्रीतिवर्द्धिनी। इति नारसिंही मुद्रा ॥ १२ ॥

दोनों जाँघों के बीच में हाथ रखकर भूमि पर रखिये; चिबुक और ओठों को परस्पर स्पर्श करना चाहिये। फिर भूमि पर रक्खे हाथों को बार-बार कम्पायमान कीजिये और मुख को सामान्य स्थिति में लाते हुये जिह्वा को लेलिहाना मुद्रा की भाँति बाहर निकालिये। यह विष्णु का प्रीतिवर्द्धन करने वाली नारसिंही मुद्रा है।

अंगुष्ठाभ्यां तु करयोरथाक्रम्य कनिष्ठिके। अधोमुखीभिः सर्वाभिः मुद्रेयं नृहरेः स्मृता। इति द्वितीया नृहरिमुद्रा ॥ १३ ॥

हथेलियों को अधोमुख करके दोनों हाथ के अँगूठों और कनिष्ठिकाओं को नीचे की ओर फैलाइये। इस प्रकार भी नृसिंह मुद्रा प्रदर्शित की जाती है।

दक्षोपरि करं वामं कृत्वोत्तानमधः सुधीः। भ्रामयेदिति सम्प्रोक्ता मुद्रावाराहसंज्ञिका। इति वाराहमुद्रा ॥ १३ ॥

दाहिने हाथ के पृष्ठभाग पर बायीं हथेली रखिये। बायें हाथ की उगलियों को इस प्रकार मोड़िये कि वे अधोमुख दाहिने हाथ की हथेली का स्पर्श करने लगें। अब इस प्रकार घूमी हुई बायें हाथ की उँगलियों को दाहिने हाथ की उंगलियों से पकड़ लीजिये। यह वाराह मुद्रा कहलाती है।

दक्षहस्तं चोर्ध्वमुखं वामहस्तमधोमुखम् अंगुल्यग्रं तु संयुक्तं मुद्रा वाराहसंज्ञिका। इति वाराहमुद्रा द्वितीया ॥ १३ ॥

दूसरी वाराह मुद्रा : बाईं हथेली को दाहिनी हथेली पर इस प्रकार रखिये कि दोनों हाथ की उँगलियों का अगला भाग परस्पर स्पर्श करता रहे। यह दूसरी वाराह मुद्रा है।

वामहस्ततले दक्षांगुलिमधोमुखीम्। संरोप्य मध्यमा नामेमुख

स्याधो विकुञ्चयेत्। हयग्रीवप्रिया मुद्रा तन्मूर्तेरनुकारिणी। इति हयग्रीवमुद्रा ॥ १४ ॥

दाहिने हाथ की उँगलियों को बाये हाथ की हथेली के नीचे रखिये। दाहिने हाथ की उँगलियाँ अधोमुख होनी चाहिये। अब उँगलियों को उठाइये और बायें हाथ की मध्यमा तथा अनामिका से दाहिने हाथ की उँगलियों को उठाते हुये मुख के पास लाकर खोल दीजिये। हयग्रीव के स्वरूप को व्यक्त करने वाली यह हयग्रैवी मुद्रा है।

वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रेण योजयेत्। अनामिकां कनिष्ठां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत्। स्पर्शयेद्वामके स्कन्धे धनुर्मुद्रेयमीरिता। इति धनुर्मुद्रा ॥ १५ ॥

बायें हाथ की मध्यमा को दाहिने हाथ की तर्जनी से और बायें हाथ की अनामिका को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से मिलाये। इस प्रकार मिली अनामिका और कनिष्ठा को अँगूठे से दबा कर उनसे बायें कन्धों का स्पर्श करे। यह धेनु मुद्रा है।

दक्षमुष्टेस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका। इति बाणमुद्रा ॥ १६ ॥

दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसकी तर्जनी को सीधी खड़ी करे। यह बाण मुद्रा है।

तते तलं तु करयोस्तिर्यक्संयोज्य चांगुलीम्। संहतां प्रसृतां कुर्यान्मुद्रेयं पर्शुसंज्ञिका। इति परशुमुद्रा ॥ १७ ॥

दोनों हथेलियों को मिलाकर हाथ को ऊपर नीचे इस प्रकार करें मानों कुल्हाड़ी चला रहे हों। यह परशु मुद्रा है।

ऊर्ध्वस्यांगुष्ठमुष्ठो द्वे मुद्रा त्रैलोक्यमोहिनी। इति त्रैलोक्यमोहिनी मुद्रा ॥ १८ ॥

दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर मुट्ठियों को मिलाये और फिर दोनों अँगूठों को परस्पर स्पर्श करते हुये उठाये। यह त्रैलोक्यमोहिनी मुद्रा है।

हस्तौ तु सम्पुटौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ तथा। तर्जन्यौ मध्यमा पृष्ठे ह्यंगुष्ठौ मध्यमाश्रितौ। काममुद्रेयमुदिता सर्वदेवप्रियङ्करी। इति काममुद्रा ॥ १९ ॥ इतिविष्णुमुद्रा।

दोनों हाथों को मिलाकर सम्पुट बनाये और उँगलियों को आगे फैली रक्खे। अब दोनों तर्जनियों को अपनी-अपनी मध्यमाओं के पीछे रक्खे।

दोनों अँगूठों को भी अपनी-अपनी मध्यमाओं पर रक्खे। सभी देवताओं को प्रिय और आनन्दकर यह काम मुद्रा है। विष्णु की मुद्रायें समाप्त।

शिव की दश मुद्राओं के लक्षण :

महादेवप्रियाणां च कथ्यन्ते लक्षणान्यथ। उच्छ्रितं दक्षिणांगुष्ठं वामांगुष्ठेन बन्धयेत्। वामांगुलीर्दक्षिणाभिरंगुलीभिश्च बन्धयेत्। लिङ्ग-मुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी। इति लिङ्गमुद्रा॥ १॥

अब महादेव को प्रिय मुद्राओं के लक्षण कहता हूं।

दाहिने हाथ के अँगूठे को ऊपर उठाकर उसे बायें अँगूठे से बाँधे। उसके बाद दोनों हाथों की उँगलियों को परस्पर बाँधे। यह शिवसान्निध्यकारक लिङ्ग मुद्रा है।

मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके। अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ। अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता। इति योनि-मुद्रा॥ २॥

दोनों कनिष्ठिकाओं को, तथा तर्जनी और अनामिकाओं को बाँधे। अनामिका को मध्यमा से पहले किञ्चित मिलाये और फिर उन्हें सीधा कर दे। अब दोनों अँगूठों को एक दूसरे पर रक्खे यह योनि मुद्रा कहलाती है।

अंगुष्ठेन कनिष्ठां तु बद्ध्वा शिष्टांगुलित्रयम्। प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता। इति त्रिशूलमुद्रा॥ ३॥

कनिष्ठिकाओं को अँगूठों से बाँधकर शेष उँगलियों को सीधा रक्खे। यह त्रिशूल मुद्रा है।

अंगुष्ठतर्जन्यग्रे तु ग्रन्थयित्वांगुलित्रयम्। प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता। इत्यक्षमाला मुद्रा॥ ४॥

अँगूठों और तर्जनियों के अग्रभाग को मिलाये। दोनों हाथों की शेष तीन-तीन उँगलियों को परस्पर ग्रथित करके सीधा करे। यह अक्षमाला मुद्रा है।

अधः स्थितो दक्षहस्तः प्रसृतो वरमुद्रिका। इति वरमुद्रा॥ ५॥

दाहिनी हथेली को अधोमुख करके हाथ को फैलाये। यह वर मुद्रा है।

ऊर्ध्वीकृतो वामहस्तः प्रसृतोभयमुद्रिका। इत्यभयमुद्रा॥ ६॥

बायें हाथ को उठाये और हथेली खुली रक्खे। यह अभय मुद्रा है।

मिलितानामिकांगुष्ठं मध्यमाग्रे नियोजयेत्। शिष्टांगुल्युच्छ्रिते कुर्यान्मृगमुद्रेयमीरिता। इति मृगमुद्रा॥ ७॥

अनामिका और अँगूठे को मिलाकर उस पर मध्यमा को भी रक्खे। शेष दो उँगलियों को ऊपर की ओर सीधा खड़ा करे। यह मृग मुद्रा है।

पञ्चांगुल्यो दक्षिणास्तु मिलिता ह्यूर्ध्वमूर्द्धता। खट्वाङ्गमुद्रा विख्याता शिवस्यातिप्रिया मता। इति खट्वाङ्गमुद्रा॥ ८॥

दाहिने हाथ की सभी उँगलियों को मिलाकर ऊपर उठाये। यह शिव की अत्यन्त प्रिय खट्वाङ्ग मुद्रा है।

पात्रवद्वामहस्तं च कृत्वांके वामके तथा। निधायोच्छ्रितवत्कुर्यान्मुद्रा कापालिकी मता। इति कपालाख्यमुद्रा॥ ९॥

बायें हाथ को पात्रवत बनाकर ऐसे व्यवहार करना चाहिये मानो अपनी बाईं ओर से कुछ उठाकर उस पात्र में रक्खा जा रहा है। यह कपाल की मुद्रा है।

मुष्टिं च शिथिलां बद्ध्वा ईषदुच्छ्रितमध्यमाम्। दक्षिणान्तूर्ध्व-मुत्तोल्य कर्णदेशे प्रचालयेत्। एषा मुद्रा डमरुका सर्वविघ्नविनाशिनी। इति डमरुमुद्रा॥ १०॥ इति शिवस्य दश मुद्राः।

हल्की मुट्ठी बाँधकर मध्यमाओं को थोड़ा ऊपर उठाये। फिर दाहिनी को कान तक उठाये। यह डमरू मुद्रा है जो सब विघ्नों का विनाश करती है।

गणेश जी की सात मुद्राओं के लक्षण :

ततो गणेशमुद्राणामुच्यन्ते लक्षणानि तु। उत्तानोर्ध्वमुखी मध्या सरला बद्धमुष्टिका। दन्तमुद्रा समाख्याता सर्वागमविशारदैः। इति दन्तमुद्रा॥ १॥

अब गणेश जी की मुद्रायें तथा उनके लक्षणों को बताते हैं। दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाधे और उनकी मध्यमा उँगलियों को सीधा करे। इसे सर्वागम-विशारदों ने दन्त मुद्रा कहा है।

वाममुष्टेस्तु तर्जन्या दक्षमुष्टेस्तु तर्जनीम्। संयोज्यांगुष्ठकाग्राभ्यां तर्जन्यग्रे समुत्क्षिपेत्। एषा पाशाह्वया मुद्रा विद्वद्भिः परिकीर्तिता। इति पाशमुद्रा॥ २॥

दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर बाईं तर्जनी को दाहिनी तर्जनी से बाँधे। फिर दोनों तर्जनियों को अपने-अपने अँगूठों से दबाये इसके बाद दाहिनी तर्जनी के अग्रभाग को कुछ अलग करे। इसे विद्वानों ने पाश मुद्रा कहा है।

ऋज्वीं च मध्यमां कृत्वा तर्जनीं मध्यपर्वणि। संयोज्याकुञ्चयेत्कि-

श्चिन्मुद्रैषांकुशसंज्ञिका । इत्यंकुशमुद्रा ॥ ३ ॥

दोनों मध्यमाओं को सीधा रखते हुए दोनों तर्जनियों को मध्य पोर के पास परस्पर बाँधे। अब तर्जनियों को थोड़ा झुकाकर एक दूसरे को खींचे। यह अँकुश मुद्रा है।

तर्जनी मध्यमा सन्धिनिःसृतांगुष्ठमुष्टिका। अधोमुखी दीर्घरूपा मध्यमा विघ्ननामिका। इति विघ्नमुद्रा ॥ ४ ॥

मुट्ठियाँ बाँधकर अँगूठों को तर्जनी तथा मध्यमाओं के बीच इस तरह रक्खे कि अँगूठे का अग्रभाग थोड़ा बाहर निकला दिखाई पड़े। अब मध्यमाओं को अधोमुख करे। यह विघ्न मुद्रा है।

पर्शुमुद्रा निगदिता प्रसिद्धा लड्डुमुद्रिका।

ऊपर वर्णित परशु मुद्रा ही लड्डूक मुद्रा के रूप में भी प्रसिद्ध है।

बीजपूराह्वया मुद्रा प्रसिद्धत्वादुपेक्षिता। इति पर्शुलड्डुकबीज-पूरादिमुद्राः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ इति गणेशसप्तमुद्राः।

बीजपूर मुद्रा कुछ उपेक्षित रही है क्योंकि यह प्रसिद्ध नहीं है।

शक्ति की दश मुद्रायें :

शाक्तेयीनां च मुद्राणां कथ्यन्ते लक्षणानि तु। पाशांकुशवराभीति-धनुर्बाणाः समीरिताः। इति षड् मुद्राः पूर्ववत् ज्ञेयाः।

अब शक्ति मुद्राओं तथा उनके लक्षणों को बताते हैं। पाश, अंकुश, वर, अभय, धनु और बाण इन छः मुद्राओं को पूर्ववत् जानना चाहिये।

कनिष्ठानामिका बद्ध्वा स्वांगुष्ठेनैव दक्षतः। मितांगुली च प्रसृते संस्पृष्टे खड्गमुद्रिका ॥ ७ ॥

कनिष्ठिका और अनामिका उँगलियों को एक दूसरे के साथ बाँधकर अँगूठों को उनसे मिलाये। शेष उँगलियों को एक साथ मिलाकर फैला दे। इस प्रकार खड्ग मुद्रा बनती है।

वामहस्तं तथा तिर्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च। आकुञ्चितांगुलि कुर्याच्चर्ममुद्रेयमीरिता। इति चर्ममुद्रा ॥ ८ ॥

फैले हुये बायें हाथ को थोड़ा मोड़कर उँगलियों को भी थोड़ा मोड़ ले। यह चर्म मुद्रा है।

मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम्। कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्वविघ्नविनाशिनी। इति मुसलमुद्रा ॥ ९ ॥

दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधे फिर दाहिनी मुट्ठी को बायें पर रक्खे। इसे

मुसल मुद्रा कहते हैं जो सभी विघ्न-बाधाओं को दूर करती है।

मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम्। कृत्वा शिरसि संयोगाद्दुर्गामुद्रेयमीरिता। इति दौर्गीमुद्रा ॥ १० ॥

दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँध कर दाहिनी मुट्ठी को बायें पर रक्खे और फिर उन्हें शिर से मिलावे। यह दुर्गा मुद्रा है।

लक्ष्मी की एक मुद्रा :

चक्रमुद्रां तथा बद्ध्वा मध्यमे द्वे प्रसार्य च। कनिष्ठके तथानीय तदग्रे मुष्टिके क्षिपेत्। लक्ष्मीमुद्रा परा ह्येषा सर्वसम्पत्प्रदायिनी। इति लक्ष्मीमुद्रा ॥ १ ॥

पहले चक्र मुद्रा बनाये और फिर मध्यमाओं को फैला दे। अब अनामिका और कनिष्ठिकाओं के बीच से अँगूठों को बाहर निकाले। सभी सम्पत्तियों को देने वाली यह लक्ष्मी मुद्रा है।

सरस्वती की पाँच मुद्रायें :

वीणावादनवद्धस्तौ कृत्वा सञ्चालयेच्छिरः। वीणामुद्रेयमाख्याता सरस्वत्याः प्रियङ्करी। इति वीणामुद्रा ॥ १ ॥

दोनों हाथों को इस प्रकार रक्खे मानो वीणा लिये हो और फिर कुछ देर तक वीणा बजाने का उपक्रम करे। यह सरस्वती की प्रिय वीणा मुद्रा है।

वामुमुष्टिं स्वाभिमुखीं कृत्वा पुस्तकमुद्रिका। इति पुस्तकमुद्रा ॥ २ ॥

बायें हाथ की मुट्ठी बनाकर अपने सामने करे। यह पुस्तक मुद्रा है।

दक्षिणांगुष्ठतर्जन्यावग्रलग्ने पराङ्मुखे प्रसार्य संहितोत्ताना ह्येषा व्याख्यानमुद्रिका श्रीरामस्य सरस्वत्या अत्यन्तप्रेयसी मता ॥ ३ ॥

दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे के अग्रभाग को मिलाये। शेष उँगलियों को मिलाकर ऊपर उठाये। यह श्रीराम और सरस्वती की अत्यन्त प्रिय व्याख्यान मुद्रा है।

अक्षमालामुद्रिका पूर्वोक्ता ज्ञेया। इति सरस्वतीपञ्चमुद्राः।

अक्षमाला आदि मुद्राओं को पूर्व वर्णन के अनुसार जानें।

वह्नि की एक मुद्रा :

मणिबन्धस्थितौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ करौ कनिष्ठांगुष्ठयुगले मिलितौ तौ प्रसारयेत्। सप्तजिह्वाख्यमुद्रेयं वैश्वानरप्रियङ्करी। इति सप्तजिह्वाख्याग्निमुद्रा ॥ १ ॥

अपनी-अपनी कलाइयों से हाथ को सीधा करके सभी उँगलियों को ऊपर उठाये। अब अँगूठे और कनिष्ठिकाओं के अग्रभाग को मिलाकर सामने फैलाये। यह वैश्वानर (अग्नि) की अत्यन्त प्रिय सप्तजिह्वा मुद्रा है।

अनेक अन्य मुद्राओं के लक्षण :

कनिष्ठांगुष्ठकौ सक्तौ करयोरितरेतरम्। तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः॥ मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शङ्खकस्योपचालिता॥ इति गालिनी मुद्रा॥ १॥

दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर रक्खे। कनिष्ठिकाओं को इस प्रकार मोड़े कि वे अपनी-अपनी हथेलियों का स्पर्श करें। तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उँगलियाँ सीधी और परस्पर मिली रहें। यह शङ्ख बजाने की गालिनी मुद्रा है।

दक्षांगुष्ठे परांगुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन तु। सावकाशामेकमुष्टिं कुर्यात्सा कुम्भमुद्रिका॥ इति कुम्भमुद्रा॥ २॥

दाहिने अँगूठे को बायें के ऊपर रक्खे। इसी अवस्था में दोनों हाथ की मुट्ठियाँ बाँधे परन्तु दोनों मुट्ठियों के बीच थोड़ी जगह होनी चाहिये। यह कुम्भ मुद्रा है।

मुष्ट्योरूर्ध्वकृतांगुष्ठौ तर्जन्यग्रे तु विन्यसेत्। सर्वरक्षाकरी ह्येषा कुम्भमुद्रेयमीरिता॥ इति कुम्भमुद्रा द्वितीया॥ २॥

दोनों हाथ को मिलाकर एक ही मुट्ठी बनाये और दोनों अँगूठों को मिलाकर तर्जनी के अग्रभाग पर रक्खे। यह द्वितीय कुम्भ मुद्रा है जो साधक की हर प्रकार से रक्षा करती है।

प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ च सम्मुखौ। कुर्यात्स्वहृदये सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका॥ इति प्रार्थनामुद्रा॥ ३॥

दोनों हाथों को फैलाये हुये हृदय पर रक्खे। यह प्रार्थना मुद्रा है।

अञ्जल्यञ्जलिमुद्रा स्याद्वासुदेवाभिधा न सा॥ इत्यञ्जलिमुद्रा॥ ४॥

दोनों हाथों को मिलाकर अञ्जलि बनाये। यह वासुदेव को प्रिय अञ्जलि मुद्रा है।

अंगुष्ठावुन्नतौ कृत्वा मुष्ट्योः संलग्नयोर्द्वयोः। तावेवाभिमुखौ कुर्यान्मुद्रैषा कालकर्णिका॥ इति कालकर्णी मुद्रा॥ ५॥

दोनों हाथों की बँधी मुट्ठियों को एक दूसरे से मिलाकर दोनों अँगूठों को ऊपर उठाये। इस प्रकार हाथों को अपने सामने रक्खे। यह कालकर्णी मुद्रा है।

दक्षिणा निबिडा मुष्टिरनामार्पिततर्जनी। मुद्रा विस्मयसंज्ञा स्याद्विस्मयावेशकारिणी॥ इति विस्मयमुद्रा॥ ६॥

दाहिने हाथ की कसकर मुट्ठी बनाकर उसकी तर्जनी से नाक को हल्के से दबाये। यह विस्मय मुद्रा है जो विस्मयावेश को व्यक्त करती है।

मुष्टिरूर्ध्वकृतांगुष्ठा दक्षिणा नादमुद्रिका।

दाहिने अँगूठे को बाईं मुट्ठी में बन्द करे। यह नाद मुद्रा है।

तर्जन्यंगुष्ठसंयोगादग्रतो बिन्दुमुद्रिका। इति बिन्दुमुद्रा॥ ७॥

तर्जनी और अँगूठे के अग्रभाग को मिलाये। यह विन्दु मुद्रा है।

अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वं स्याद्दक्षहस्तकम्। क्षिप्त्वांगुलीरंगुलीभिः संग्रथ्य परिवर्तयेत्। एषा संहारमुद्रा स्याद्विसर्जनविधौ स्मृता। इति संहारमुद्रा॥ ८॥

अधोमुख बायें हाथ को ऊर्ध्वमुख दाहिने हाथ पर रक्खे। दोनों हाथ की उँगलियों को परस्पर ग्रथित करे। इस प्रकार संयोजित हाथों को घुमाकर बिल्कुल उलट दे। देवता के विसर्जन के समय प्रयुक्त होने वाली यह संहार मुद्रा है।

दक्षपाणिपृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्। अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ्मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी। इति मत्स्यमुद्रा॥ ९॥

बाईं हथेली को दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर रक्खे और फिर दोनों अँगूठों को हथेली को पार करते हुये मिलाये। यह मत्स्य मुद्रा है।

वामहस्तस्य तर्जन्यां दक्षिणस्य करस्य च। वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा। अधोमुखैश्च तैः कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च। कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षं पाणिं च सर्वतः। कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि। इति कूर्ममुद्रा॥ १०॥

बाईं तर्जनी को दाहिनी कनिष्ठिका से मिलाये। पुनः दाहिनी तर्जनी को बायें अँगूठे से मिलाये और दाहिने अँगूठे को ऊपर उठा दे। अब बायें हाथ की मध्यमा और अनामिका को दाहिने हाथ की हथेली से लगाये। दाहिने हाथ को कछुवे की पीठ की तरह बनाये। देवता के ध्यान कर्म में प्रयुक्त होने वाली यह कूर्म मुद्रा है।

पृष्ठे क्रोडांतरेंगुष्ठमुष्टिं कृत्वा करस्य च। मध्यमाग्रं तु दक्षस्य तथालम्ब्य प्रयत्नतः। मध्यमेनाथ तर्जन्यामंगुष्ठाग्रे तु योजयेत्। दक्षिणं योजयेत्पाणिं वामभुष्टौ तु साधकः। दर्शयेद्दक्षिणे भागे मुण्डमुद्रेयमुच्यते। इति मुण्डमुद्रा॥ ११॥

अँगूठे को भीतर करके बायें हाथ की मुट्ठी बाधे। दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका को थोड़ा मोड़े। दाहिने अँगूठे को दाहिनी तर्जनी के मध्य पर्व पर लगाये। इस प्रकार संयोजित दाहिने हाथ पर बाईं मुट्ठी को रक्खे। फिर साधक इस प्रकार रक्खे हाथों की दाहिनी ओर अपनी दृष्टि को केन्द्रित करे। यह मुण्ड मुद्रा है।

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः। अनामायां क्षिपेद्वृद्धामूद्ध्वं कृत्वा कनिष्ठिकाम्। लेलिहा नाम मुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता। इति लेलिहा मुद्रा ॥ १२ ॥

तर्जनी, मध्यमा और अनामिका को बराबर करके अधोमुख करे। कनिष्ठिका को सीधा रक्खे। यह जीवन्यास में प्रयुक्त होने वाली लेलिहाना मुद्रा है।

तर्जन्यनामिकामध्ये कनिष्ठाक्रमयोगतः। कारयोर्योजयत्येव कनिष्ठामूलदेशतः। अंगुष्ठाग्रे तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिता। इति महायोनिमुद्रा ॥ १३ ॥

दोनों हाथों की तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिलाकर दोनों हथेलियों को इस प्रकार मिलाये कि उनका निचला भाग एक दूसरे को अच्छी तरह स्पर्श करता रहे। अब दोनों अंगूठों को अपनी-अपनी कनिष्ठिकाओं के मूल पर्वों पर रक्खे। यह महायोनि मुद्रा है।

परिवृत्तकरौ स्पृष्टावंगुष्ठौ कारयेत्समौ। अनामान्तर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती। कनिष्ठिके नियुञ्जीत निजस्थाने महेश्वरि त्रिखण्डेयं समाख्याता त्रिपुराध्यानकर्मणि। इति त्रिखण्डमुद्रा ॥ १४ ॥

दोनों हाथों को एक दूसरे को काटते हुये (दाहिना बाईं ओर और बायाँ दाहिनी ओर) पीठ पर रक्खे और अँगूठों को बराबर करके मिलाये। अनामिकाओं को भीतर की ओर फैलाये और तर्जनियों को थोड़ा मोड़े। कनिष्ठिकाओं को यथास्थान मिलाये। त्रिपुरा देवी के ध्यान में प्रयुक्त होने वाली यह त्रिखण्ड मुद्रा है।

मध्यमा मध्यगे कृत्वा कनिष्ठेंगुष्ठरोधिते। तर्जन्यौ दण्डवत्कुर्यान्मध्यमोपर्यनामिके। एषा च प्रथमा मुद्रा सर्वसंक्षोभकारिणी। इति प्रथमा मुद्रा ॥ १५ ॥

मध्यमा को मध्य में रखकर अँगूठों और कनिष्ठिकाओं को मिलाये। तर्जनी को सीधा और अनामिका को मध्यमा के ऊपर रक्खे। यह प्रथम सर्वसंक्षोभकारिणी मुद्रा है।

एतस्या एव मुद्राया तध्यमे सरले तथा। क्रियेते परमेशानि सर्वविद्रावणी परा। इति सर्वविद्रावणी ॥ १५ ॥

उपरोक्त संक्षोभकारिणी मुद्रा में जब मध्यमा को ढीला कर दिया जाता है तो, हे परमेशानि, वह सर्वविद्रावणी मुद्रा बन जाती है।

मध्यमार्तनीभ्यां च कनिष्ठानामिके समे। अंकुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि। अंगुष्ठं तु नियुञ्जीत कनिष्ठानामिकोपरि। इयमा कर्षणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षिणी मता। इत्याकर्षिणी मुद्रा ॥ १६ ॥

कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा तथा तर्जनी को बराबर करके मध्यमा को अँकुशाकार बनाकर कनिष्ठिका और अनामिका पर रक्खे और अँगूठे को उससे मिलाये। यह तीनों लोकों को आकर्षित करने वाली आकर्षिणी मुद्रा है।

पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृती। परिवर्तक्रमेणैव मध्यमे तदधोगते। क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिकादयः। संयोज्या निबिडाः सर्वा अंगुष्ठावग्रदेशतः। मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता। इति सर्ववश्यकरी मुद्रा ॥ १७ ॥

दोनों हाथों को मिलाकर सम्पुट बनाये और फिर तर्जनियों को अंकुशाकार करे। इसी प्रकार मध्यमा कनिष्ठिका और अनामिकाओं को भी क्रमशः मोड़े और सभी को अँगूठे के अग्रदेश से कसकर मिलाये। हे परमेश्वरी! यह सर्ववश्यकरी मुद्रा है।

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यगेंत्यजे। अनामिके तु सरले तद्वहिस्तर्जनीद्वयम्। दण्डाकारौ ततोंगुष्ठौ मध्यमानखदेशिकौ। मुद्रैवोन्मादिनी नाम्ना क्लेदिनी सर्वयोषिताम्। इत्युन्मादिनीमुद्रा ॥ १८ ॥

दोनों हाथों को सम्मुख करके मध्यमा को मध्यमा से और कनिष्ठिका को कनिष्ठिका से मिलाये। अनामिकाओं को सीधा रखकर परस्पर मिलाये तथा दोनों तर्जनियों को बाहर रक्खे जिससे अँगूठों को सीधे मध्यमाओं के नख पर रक्खा जा सके। यह सब स्त्रियों को क्लेदित करने वाली उन्मादिनी मुद्रा है।

अस्यां त्वनामिकायुग्ममधः कृत्वांकुशाकृति। तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत्। इत्थं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थसाधनी। इति महांकुशमुद्रा ॥ १९ ॥

दोनों अनामिकाओं को अंकुशाकार अधोमुख करके मिलाये। पुनः

दोनों तर्जनियों को भी उसी प्रकार अँकुशाकार करके मिलाये। यह सर्व इच्छाओं को पूर्ण करने वाली महांकुशा मुद्रा है।

सव्यं दक्षिणदेशेषु सव्यदेशे तु दक्षिणम्। बाहुं कृत्वा महादेवि हस्तौ सम्परिवर्तयेत्। कनिष्ठानामिके देवि मुक्ते तेन क्रमेण च। तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोद्ध्वंमपि मध्यमे। अंगुष्ठौ च महादेवि सरलावपि कारयेत्। इयं सा खेचरी मुद्रा सर्वोत्तमा मता। इति खेचरी मुद्रा ॥ २० ॥

हे देवि! बायें हाथ को दाहिनी ओर और दाहिने हाथ को बाईं ओर रक्खे। फिर इसी क्रम से कनिष्ठा और अनामिकाओं को मिलाये। दोनों तर्जनियों को एक दूसरे के ऊपर रक्खे। दोनों मध्यमाओं को सबके ऊपर उठाये। अँगूठों को सीधा रक्खे। यह सर्वोत्तम खेचरी मुद्रा है।

परिवृत्यकरौ स्पृष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये। तर्जन्यंगुष्ठयुगलं युगपत्कारयेत्ततः। अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत्। अथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तदनामिके। बीजमुद्रेयमचिरात्सर्वसिद्धिप्रदायिनी। इति बीजमुद्रा ॥ २१ ॥

हाथों को एक दूसरे को काटते हुये चन्द्राकार करे। दोनों अँगूठों को अपनी-अपनी तर्जनियों से मिलाये। फिर नीचे से दोनों कनिष्ठिकाओं को मध्यमाओं से मिलाये। इसी प्रकार अनामिकाओं को सबसे नीचे कुछ मोड़ कर मिलाये। यह सर्वसम्पत्तियों को बढ़ाने वाली बीजमुद्रा है।

मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते। अनामिकामध्यगते तथैव हि कनिष्ठिके। सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठपरिपीडिताः। एषा तु प्रथमा मुद्रायोनिमुद्रेति संज्ञिता। इति प्रथमा योनिमुद्रा ॥ २२ ॥

मुड़ी हुई मध्यमाओं को तर्जनियों पर रक्खे। इसी प्रकार अनामिकाओं और कनिष्ठिकाओं को भी मोड़ कर, सबको जोड़ कर एक साथ अँगूठों से दबाये। यह प्रथम योनिमुद्रा है।

बामहस्तेन मुष्टिं तु बद्ध्वा कर्णप्रदेशके। तर्जनीं सरलां कृत्वा भ्रामयेन्मनुवित्तमः। सौभाग्यदायिनी मुद्रा न्यासकालेपि सूचिता। इति सौभाग्यदायिनी मुद्रा ॥ २३ ॥

बायें हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसे कान तक लाये। फिर तर्जनी को सीधा कर, मन्त्र वित श्रेष्ठ साधक उसे वृत्ताकार घुमाये। न्यास के समय प्रयुक्त होने वाली यह सौभाग्यदायिनी मुद्रा है।

अन्तरंगुष्ठमुष्ट्या तु निरुध्य तर्जनीमिमाम्। रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा न्यासकाले तु सूचिता। इति रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा ॥ २४ ॥

अँगूठे को मुट्ठी के भीतर रखकर उसे तर्जनी से दबाये। न्यास के समय प्रयुक्त होने वाली यह रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा है।

बद्ध्वा तु योनिमुद्रां वै मध्यमे कुटिले कुरु। अंगुष्ठेन तदग्रे तु मुद्रेयं भूतिनी मता। इति भूतिनीमुद्रा ॥ २५ ॥

योनिमुद्रा बनाकर मध्यमाओं को मोड़े। अँगूठों के अग्रभाग को मध्यमाओं के अग्रभाग पर रक्खे। यह भूतिनी मुद्रा है।

वाममुष्टिं विधायाथ तर्जनीमध्यमे ततः। प्रसार्य तर्जनीमुद्रा निर्दिष्टा वज्रपाणिना। इति तर्जनी मुद्रा ॥ २६ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे मुद्राप्रकरणे द्वितीयस्तरंगः ॥२॥

तर्जनी और मध्यमा को दबाते हुये बायें हाथ से मुट्ठी बाँधे। फिर मुट्ठी बँधे दाहिने हाथ को कसकर उसकी तर्जनी को समाने फैलाये। यह तर्जनी मुद्रा है।

इदि श्रीमन्त्रमहार्णव के देवता खण्ड के मुद्रा प्रकरण में

द्वितीय तरङ्ग समाप्त।

तृतीय तरंग

भद्रमण्डल प्रकरण

तत्रादौ एकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमण्डलम् ।

सबसे पहले उन्नीस रेखाओंवाला सर्वतोभद्र मण्डल बताते हैं ।

व्रतराजे हेमाद्रौ स्कांदे : प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतीः खण्डेन्दुस्त्रिपदः कोणे शृङ्खला पञ्चभिः पदैः ॥ १ ॥ एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः । चतुर्विंशत्पदा वापी विंशत्या परिधि पदैः ॥ २ ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम् । श्वेतेन्दुः शृङ्खला कृष्णा वल्ली नीलेन पूरयेत् ॥ ३ ॥ भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णिका । वाह्यांतरदले श्वेता कर्णिका पीतवर्णिका ॥ ४ ॥ परिध्या वेष्टितम् पद्मं वाह्ये सत्त्वं रजस्तमः । तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्य सुरेश्वरान् ॥ ५ ॥

हेमाद्रि कृत व्रतराज में स्कन्दपुराणोक्त :

पूर्व और उत्तर को गई उन्नीस रेखाएँ बनानी चाहिए । कोने में तीन पदोंवाला खण्डेन्दु, पाँच पदों की श्रृङ्खला, ग्यारह पदों की बल्ली, नव पदों का भद्र, ४ पदों की वापी, बीस पदों की परिधि, मध्य में १६ पदों का पद्ममण्डल बनाना कहा गया है । इन्दु को श्वेत, श्रृङ्खला को काले तथा बल्ली को नीले रंग से भरना चाहिए । भद्र को लाल, वापी को श्वेत, परिधि को पीला रंगना चाहिये । पद्म के वाह्य और आभ्यन्तर दल श्वेत तथा कार्णिका को पीले रंग से रंगना चाहिये । परिधि से पद्म को वेष्टित करना चाहिए । बाहर सत्य, रज, तथा तम होना चाहिए । इस सर्बतोभद्र मण्डल में ब्रह्मा आदि सुरेश्वरों की स्थापना करनी चाहिए ।

तत्र देवताः व्रजराजे :

व्रतराज में देवताओं का वर्णन :

तत्रादौ संकल्पः ।

प्रारम्भ में इस प्रकार संकल्प करे :

देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतकायिका वाचिक मानसिक सांसर्गिक दोष परिहारार्थमिहामुत्र

सूर्यमण्डल
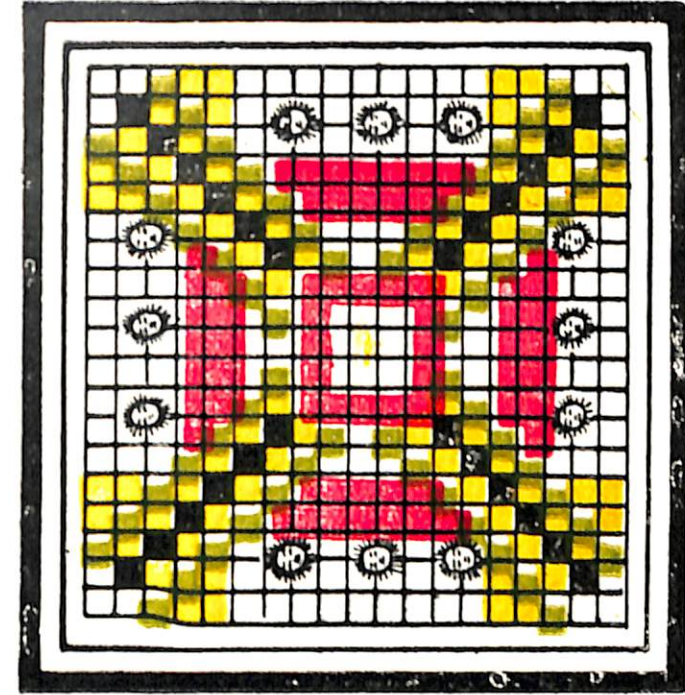
गणपतिभद्रमण्डल
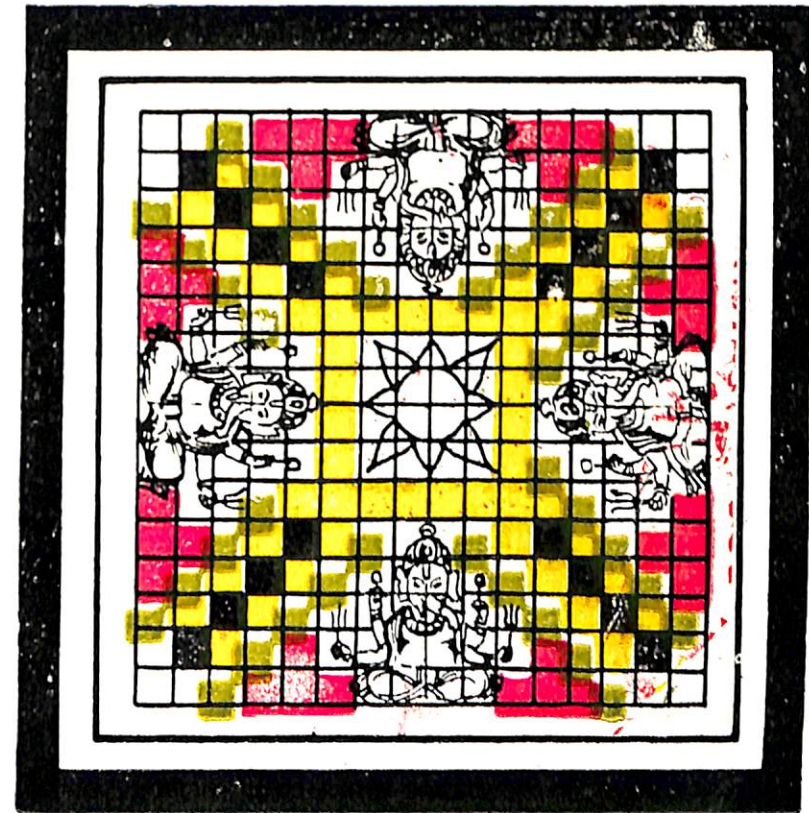
लघुगौरीतिलकाख्य एकलिङ्गतोभद्रमण्डल
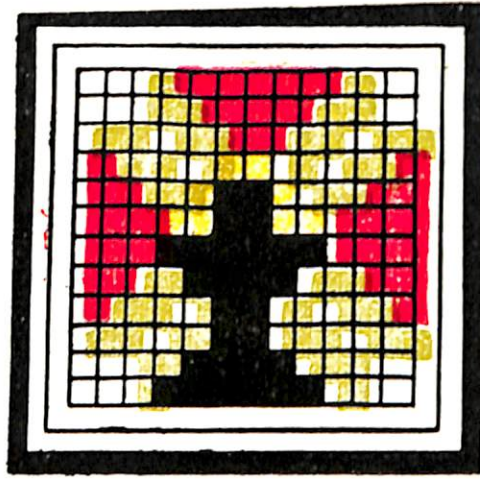
चतुस्त्रिंशद्रेखात्मक द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डल
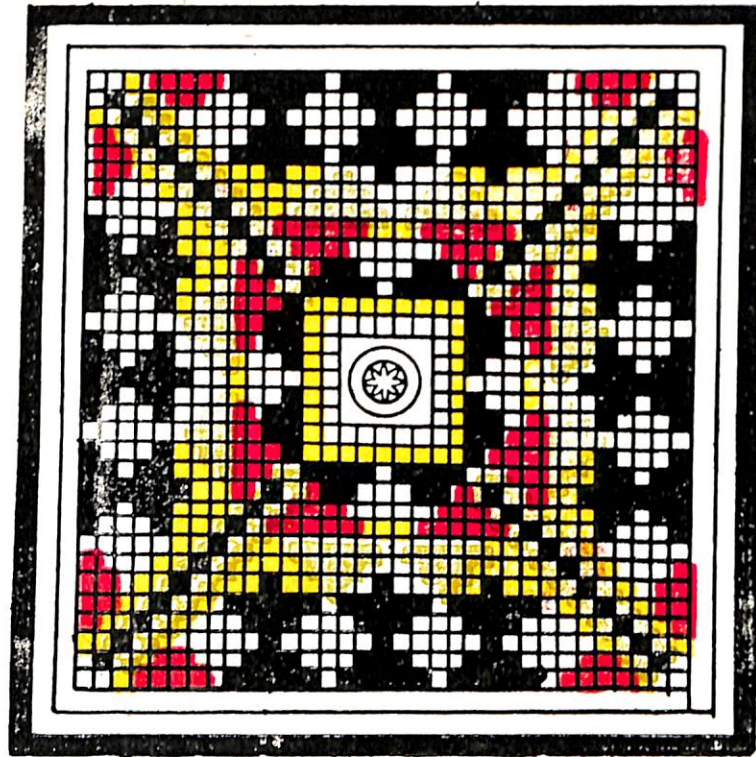
सुख सौभाग्यसुखसम्पत्त्यादिकफलप्राप्त्यर्थं श्रीअमुकदेवताप्रीतये अमुक-कालमारभ्यामुकदिनपर्यन्तं मया आचरितस्य व्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा एतत्सर्वतोभद्रमण्डले वेदपुराणोक्तमन्त्रैर्ब्रह्मादिषट्पञ्चाशद्देवतावाहन-प्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये। इति संकल्पः।

अक्षतान्गृहीत्वा। ततो मध्ये।

यह संकल्प है। अक्षत लेकर बीच में

ब्रह्मजज्ञानं, गौतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् मध्ये ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। एह्येहि धातस्तु समस्तसृष्टेः पद्मोद्भवः पद्मसुखप्रदातः। सुरासुरैर्वन्दितपादपद्म यज्ञे ममास्मिन्कुरु सन्निधानम्। भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव॥ १॥

इत्येवंप्रकारेण सर्वत्र देवतानामावाहनादिकं ज्ञेयम्। ततः उदीचीमारभ्य वायवी पर्यन्त सोमादयोऽष्टौ लोकपालाः स्थापनीयाः। तत्र क्रमः

इस प्रकार सर्वत्र देवताओं का आवाहनादिक जानना चाहिए। इसके बाद उत्तर से लेकर वायवी दिशा पर्यन्त सोम आदि आठ लोकपालों की स्थापना करनी चाहिए। उसमें क्रम यह है:

आप्यायस्व, राहूगणो गौतमः सोमो गायत्री उत्तरे सोमावाहने विनियोगः। ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतः सोमवृष्णियंभवावाजस्य-संगथे। कुबेरं गुह्यकाध्यक्षं सुरासुरनमस्कृतम्। धनदं शिबिकारूढं चिन्तयामि सदाप्रियम्। उत्तरे सोमम्॥ २॥

अभित्वा, अजीगर्तिः शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशान्यामीशाना-वाहने विनियोगः। ॐ अभित्वा देवसवितरीशानंवार्याणांसदावनभाग-मीमहे। आवाहयाम्यहं देवमीशानं च वरप्रदम्। सर्वलोकप्रपूज्यं त्वामीशानं पूजयाम्यहम्। ईशान्यामीशानम्॥ ३॥

इन्द्रंवो, मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री पूर्वे इन्द्रावाहने विनियोगः। ॐ इन्द्रंवोविश्वतस्परिहवामहेजनेभ्यः अस्माकमस्तुकेवलः। आवाहयाम्यहं देवं महेन्द्रं च महाप्रभुम्। पीतवर्णं गजारूढं वज्रपाणिं सुरेश्वरम्। पूर्वे इन्द्रम्॥ ४॥

अग्नि दूतं, काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आग्नेयामग्न्यावाहने

विनियोगः । ॐ अग्निदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदमअस्ययज्ञस्यसुक्रतुम् । अथाग्निमूर्तिं ध्यायामि सर्वाभीष्ट फलप्रदाम् । एकजिह्वां द्विशीर्षां च जटामुकुटमण्डिताम् । आग्नेयामग्निम् ॥ ५ ॥

यमाय सोमं, वैवस्वतो यमोऽनुष्टुप् दक्षिणे यमावाहने विनियोगः । ॐ यमायसोमंसुनुयमायजुहुताहविःयमँहयज्ञोगच्छत्यग्निदूतोअरंकृतः । अवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम् । ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् । दक्षिणे यमम् ॥ ६ ॥

मोषुणो, घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री नैर्ऋत्यां निर्ऋत्यावाहने विनियोगः । ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत् । पदीष्ठतृष्णयासह । आवाहयाम्यहं देवं निर्ऋतिं श्वेतरूपिणम् । लम्बकेशं विरूपाक्षं खड्गपाणिं दुरासदम् । नैर्ऋत्यां निर्ऋतिम् ॥ ७ ॥

तत्त्वायामि, शनुःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् पश्चिमे वरुणावाहने विनियोगः ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः । अहेडयानोवरुणेहवोध्युरुशकसमानआयुःप्रमोषीः । आवाहयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम् । रक्ताम्बरधरं देवं रक्तमालाविभूषितम् । पश्चिमे वरुणम् ॥ ८ ॥

वायोशतं, वामदेवो वायुरनुष्टुप् वायव्यां वाय्वावाहवे विनियोगः । ॐ वायो शत ँहराणायुवस्वपोष्याणाम् । उतवातेसहस्रिणोरथ आयातुपाजसा । अहमावाहयिष्यामि वायुं सर्वत्रं व्यापिनम् । ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं सर्वचैतन्यरूपिणम् । वायव्यां वायुम् ॥ ९ ॥

ज्मयाअत्र, मैत्रावरुणौ वसस्त्रिष्टुप् वायुसोमयोर्मध्ये वस्वावाहने विनियोगः । ॐ ज्मयाअत्रवसवोरेतदेवाउरावन्तरिक्षेमर्जयन्तशुभ्राः । अर्वाक्पथउरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्य जग्मुषोनोअस्य । धरो ध्रुवश्च रोमश्च आपश्चैव नलोनलः । प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोष्टौ प्रकीर्तिता । वायुसोममध्ये अष्टौ वसून् ॥ १० ॥

आरुद्रासः, श्यावाश्व एकादश रुद्रा जगती सोमेशयोर्मध्ये एकादशरुद्रावाहने विनियोगः । ॐ आरुद्रासइन्द्रवन्तः सजोषसोहिरण्यरथाः सुविताययंतनइयंवो अस्मत्प्रतिहर्यतेमतिस्तृष्याजेनदिवउत्साउदन्यवे । अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोथ रैवतः । हरश्च बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः । सविता च जयन्तश्च पिनाकी रुद्र एव च । सोमेशानयोर्मध्ये एकादश रुद्रान् ॥ ११ ॥

त्यांनु, मत्स्यः सामदो द्वादशादित्या गायत्री ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यावाहने विनियोगः । ॐ त्यांनुक्षत्रियाम् अवआदित्यान्याचिषामहेसुमृलीकां अभीष्टये । धाता मित्रो यमश्चेन्द्रो वरुणः सूर्य एव च । भागो विवस्वान् पुरुषः सविता विष्णुरेव च । त्वष्टेति द्वादशादित्यान् पूजयामि यथाविधि । ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान् ॥ १२ ॥

अश्विनावर्ति, राहुगणो गौतमोऽश्विनावुष्णिक् इन्द्राग्न्योर्मध्ये अश्व्यावाहने विनियोगः । ॐ अश्विनावर्तिरस्मादागोमदस्राहिरण्यवत् । अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतम् । रूपेणाप्रतिमौ देवौ सूर्यस्य तनयावुभौ । वडवागर्भसम्भूतौ मण्डले विशतामुभौ । इन्द्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ ॥१३॥

सोमासः, मधुच्छन्दा विश्वेदेवा गायत्री अग्नियमयोर्मध्ये विश्वेदेवावाहने विनियोगः । ॐ सोमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासआगतदाश्वासोदाशुषः सुत । क्रतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामलौ धूम्रलोचनौ । पुरूरवार्द्रवश्चैव विश्वेदेवा इमे दश । सोमपा अग्निष्वात्ताश्च बर्हिषदस्तु कालकाः । एकशृङ्गोवसुश्चैव द्वितीयः सोमपास्तथा । अग्नियममध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान् ॥ १४ ॥

अभित्यं, देवो गौतमो वामदेवः सप्त यक्षा अष्टी यमनिर्ऋत्योर्मध्ये सप्तयक्षावाहने विनियोगः । ॐ अभित्यं देवं सवितारमूण्योः कविक्रतुमर्चामिसत्यसवसंरत्नधामभिप्रियंमति । मूर्ध्वायस्यामतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतु कृपासुवः । अहमावाहयिष्यामि सप्तयक्षान्महाबलान् । पुण्यरूपान् पुण्यजनान् पुण्यकर्मरतान्सदा । यमनैर्ऋत मध्ये सप्त यक्षान् ॥ १५ ॥

आयंगौः, सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री निर्ऋतिवरुणमध्येसर्पावाहने विनियोगः । ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः पितरं च प्रयत्स्वः । आवाहयाम्यहं देवान्भूतनागान् महाबलान् । सर्पराजान्महाकायान्मणिमण्डलभूषितान् । निर्ऋति वरुणमध्ये भूतनागान् ॥ १६ ॥

अप्सरसाम्, ऐतश ऋष्यशृंङ्गो गन्धर्वाप्सरसोनुष्टुप् वरुणवाय्योर्मध्ये गन्धर्वाप्सरसआवाहने विनियोगः । ॐ अप्सरसांगन्धर्वाणांमृगाणाचरणेचरन् । केशीकेतस्यविद्वानसस्वास्वादुर्मदिन्तमः । आवाहयामि गन्धर्वान् साप्सरोगीततत्परान् । हाहाहूहूश्चैवमाद्यान् गन्धर्वाप्सरसस्तथा । वरुणवायुमध्ये गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरसः ॥ १७ ॥

यदक्रन्द, औचाथ्यो दीर्घतमास्कन्दस्त्रिष्टुप् ब्रह्मसोममध्ये स्कन्दा-

वाहने विनियोगः। ॐ यदक्रन्दःप्रथमंजायमानउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषान्। श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूउपस्तुत्यंमहिजातन्तेअर्वन्। एह्येहि षण्मुख सुरेश्वर तारकारे श्रीनीलकण्ठवरवाहन शक्तिपाणे। ओंकारकोटरसुरेश्वरपूज्यमान सान्निध्यमत्र कुरु ब्रह्मकुबेरमध्ये। इति स्कन्दम् ॥ १८ ॥ तत्रैव।

ऋषभम्, ऋषभो वैराजो नन्दीश्वरोनुष्टुपब्रह्मसोमयोर्मध्ये नन्दीश्वरावाहने विनियोगः। ॐ ऋषभं मासमानानां सपत्नानां वृषासहिम्। हन्तारं शत्रुणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्। आवाहयाम्यहं देवं वृषभं सर्वपूजितम्। महादेवासने मुख्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम्। स्कान्दादुत्तरे नन्दिनम् ॥ १९ ॥

कद्रुद्राय, घोरः कण्वः शूलो गायत्री तदुत्तरे शूलावाहने विनियोगः। ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसेमीढुष्टमायतव्यसेवोचेमशंतमंहृदे। आवाहयामि तं शूलं शस्त्रराजं महोज्ज्वलम्। दुष्टारिघातने दक्षं शिवबाहुविराजितम्। तत्रैव शूलम् ॥ २० ॥

कुमारं, कुमारो महाकालस्त्रिष्टुप् तदुत्तरे महाकालावाहने विनियोगः। ॐ कुमारंमातायुवतिः समुब्धंगुहाबिभर्तिनददाति पत्रे। अनिकमस्यनमिनज्जानासः पुरः पश्यन्तिनिहितमरातौ। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्। सर्वव्यापिनीमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। शूलादुत्तरे महाकालम् ॥ २१ ॥

अदितिः, लौक्यो बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप् ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षावाहने विनियोगः। ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातवतान्देवाअन्वजायन्तभद्राअमृतबन्धवः। आवाहयामि तान् देवान् कैलासाधिपपार्षदान्। दक्षादिप्रमुखान् सप्तगणाञ्चीव सुखावहान्। ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षादिसप्तगणान् ॥ २२ ॥

तामग्निवर्णां, सौभरिर्दुर्गास्त्रिष्टुप् ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गावाहने विनियोगाः। ॐ तामग्निवर्णांतपसाज्वलन्तीवैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम्। दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरासितरतेनमः। आगच्छ कोकिलेदुर्गेसिंहारूढे महाभुजे। विन्ध्याचलकृतावासे मण्डले त्वं समाविश। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गाम् ॥ २३ ॥

इदंविष्णुः, काण्वो मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये विष्णवावाहने विनियोगः। ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपांसुरे। आवाहयाम्यहं देवं श्रीविष्णुं कमलापतिम्। जगच्चक्षुर्विश्वजन्मस्थितिसंहारकारकम्। दुर्गापूर्वे विष्णुम् ॥ २४ ॥

उदीरतामवर, शंखः स्वधा पितरस्त्रिष्टुप् ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधावाहने विनियोगः। ॐ उदीरतामवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सौम्यासः। असुंयईयुवृकाऋतज्ञास्तेनोवंतुपितरोहवेषु। काव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति। तिष्ठत्युदीच्यां दिश्यर्कच्छविमावाहये स्वधाम्। ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधाम् ॥ २५ ॥

परंमृत्यो, संकुशिको मृत्युरोगास्त्रिष्टुप् ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगावाहने विनियोगः। ॐ परंमृत्योअनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात्। चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमानः प्रजांरीरिषोमोतवीरान्। इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि। न किञ्चिन्म्रियते तावद्यावदास्त इहांतकः। ब्रह्मयममध्ये मृत्युरोगान् ॥ २६ ॥

गणानांत्वा, शौनको गृत्समदो गणपतिर्जगती ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये गणपत्यावाहने विनियोगः। ॐ गणानांत्वागणपतिंहवामहे। कविंकवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठाराजंब्रह्मणाब्रह्मणस्पत आनःशृण्वन्नूतिभिः सादसानम्। एकदन्तं महाकायं पद्मकांचनसन्निभम्। लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देहं गणनायकम्। ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिम् ॥ २७ ॥

शन्नोदेवीः, आम्बरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये आवाहने विनियोगः। ॐ शन्नोदेवीरभीष्टयआपोभवन्तुपीतये। शन्योरभिस्रवन्तुनः। स्वच्छाः पवित्रा जनशुद्धिबीजा यदोभिरत्यन्तभयंकराश्च। कुर्वन्तु सन्निध्यमथाम्बुवेगास्सर्वस्य विश्वस्य च जीवरूपाः। ब्रह्मवरुणमध्ये अपः ॥ २८ ॥

मरुतो यस्य, राहूगणो गौतमो मरुतो गायत्री ब्रह्मवायोर्मध्ये मरुदावाहने विनियोगः। ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ससुगोपात मोजनः। आगच्छ त्वं महादेव मृगारूढ प्रभंजन। यज्ञसंरक्षणार्थाय मण्डले त्वं स्थिरो भव। ब्रह्मवायुमध्ये मरुद्भ्यो नमः मरुतः ॥ २९ ॥

स्योनापृथिवि, काण्वो मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिव्यावाहने विनियोगः। ॐ स्योनापृथिविनो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथाः एह्येहि वसुधे देवि शैलजीवनकानने। ब्रह्मणः पादमूले तु सन्निध्यं कुरु मे सदा। ब्रह्मपादमूले पृथिवीम् ॥ ३० ॥

इमंमेगंगे, सिन्धुक्षितप्रयामेधो गंगादिनद्यो जगती (तत्रैव) गंगादिनद्यावाहने विनियोगः। ॐ इमंमेगंगे यमुने सरस्वतिशुतुद्रिस्तोम ँ सचतापरुष्णिया। असिक्नियामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकोयेश्रृणुह्यासुषोमया। गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि सान्निध्यं कुर्वंतामिह। तत्रैव गंगादिसप्तसरितः ॥ ३१ ॥

धाम्नो, गौतमो वामदेवः सागरोऽनुष्टुप् (तत्रैव) सप्त सागरावाहने विनियोगः। ॐ धाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणनोमुञ्च। यदापोध्निया-वरुणोतिशपामहेततोवरुणनोमुञ्चमयिवापोमोषधीर्हिसी तोविश्वव्यचा - भूस्त्वेतोवरुणनोमुञ्च। क्षारेक्षुरसमद्योदान् घृतोदक्षीरकोदकौ। दधि-मण्डोदशुद्धोदौ सप्तैतान् स्थापयाम्यहम्। तत्रैव सप्तसागरान् ॥ ३२ ॥

तदुपरि मेरुं नाममन्त्रेण पूजयेत्। मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि ॥३३॥

ततो मण्डलाद्वहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण आयुधान्यावाहयेत्। तत्र क्रमः।

इसके बाद मण्डल के बाहर सोमादि के सान्निध्य में क्रम से आयुधों का आवाहन करे। उसमें क्रम यह है :

सोमसमीपे गदायै नमः, गदामावाहयामि ॥ ३४ ॥ ईशानसमीपे त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि ॥ ३५ ॥ इन्द्रसमीपे-वज्राय नमः वज्रमावाहयामि ॥ ३६ ॥ अग्निसमीपे-शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि ॥ ३७ ॥ यमसमीपे-दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि ॥ ३८ ॥ निर्ऋतिसमीपे-खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि ॥ ३९ ॥ वरुणसमीपे-पाशाय नमः पाशमावाहयामि ॥ ४० ॥ वायु समीपे-अंकुशाय नमः अंकुशमावाहयामि ॥ ४१ ॥

तद्वाह्ये ऊत्तरे-गौतमाय नमः गौतममावाहयामि। इति सर्वत्र ॥ ४२ ॥ ईशान्यां भारद्वाजाय नमः भारद्वाजम्० ॥ ४३ ॥ पूर्वे-विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रम्० ॥ ४४ ॥ अग्नेयां-कश्यपाय नमः कश्यपम् ॥ ४५ ॥ दक्षिणे जमदग्नये नमः जमदग्निम् ॥ ४६ ॥ नैर्ऋत्यां-वसिष्ठाय नमः वसिष्ठम्० ॥ ४७ ॥ पश्चिमे-अत्रये नमः अत्रिम्० ॥ ४८ ॥ वायव्याम्-अरुंधत्यै नमः अरुन्धतिम्० ॥ ४९ ॥

तद्वाह्ये-पूर्वादिक्रमेण ऐन्द्र्यै नमः ऐंद्रीम्० ॥५०॥कौमार्यै नमः कौमारीम्० ॥५१॥ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीम्० ॥ ५२ ॥ वाराह्यै नमः वाराहीम्० ॥ ५३ ॥ चामुण्डायै नमः चामुण्डाम्० ॥ ५४ ॥ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीम्० ॥ ५५ ॥ उत्तरस्यां-माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीम् ॥ ५६ ॥ वैनायक्यै नमः वैनायकीम्० ॥ ५७ ॥

इत्यष्टौ शक्तीः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सहैवावाहयेत् पूजयेदिति। अत्र एक देवतायाः षट्पञ्चाशद्गणनायामाधिक्यम्। तत्र शूलमहाकालयोः एकवद्भावत्वात् अग्नेस्त्रिशूलस्य ग्रहणात् पृथकत्वं न, गणिते सत्यपि एक एव देवता तेन न विरोधः। देवतास्तु षट्पञ्चाशदेवेत्यलमिति।

इत्येकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमण्डलं समाप्तम्।

इस प्रकार आठ शक्तियों की स्थापना करके साथ ही उनका आवाहन करे तथा उनकी पूजा करे। यहां ५६ कथन की गणना में एक देवता की अधिकता हो जाती है। परन्तु शूल और महाकाल के एकवद्भाव से त्रिशूल अग्नि के ग्रहण से पृथकता नहीं होती। गिनने पर भी एक ही देवता है इससे विरोध नहीं होता। देवता तो कथन ही हैं।

उन्नीस रेखाओं वाला सर्वतोभद्रमण्डल समाप्त हुआ।

अथ चतुस्त्रिंशद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्रमण्डलं सदैवतम्।

चौंतीस रेखाओं वाला द्वादशलिंगतोभद्रमण्डल देवतासहित

उक्तं च रुद्रयामले : रुद्र उवाच। उद्धारं कथयिष्येहं मदर्चार्थं तव प्रिये। चतुस्त्रिंशत् समारेखाः कुर्यात्पूर्वोत्तराः शुभाः ॥ १ ॥ मध्ये वृत्तं समालेख्यं तन्मध्ये तु दशारकम्। बहिरष्टदलं पद्मं ततः षोडशपत्रकम् ॥ २ ॥ चतुर्विंशतिपत्राढ्यं द्वात्रिंशत्पत्रकं तथा। चत्वारिंशत्पत्रकं तु वृत्तं सूर्यसमप्रभम् ॥ ३ ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदैः कोणे श्रृंखला दशकोष्ठिका। एकविंशत्पदा वल्ली भद्रं तु षट्पदैस्तथा ॥ ४ ॥ अष्टादशपदं लिंगं भद्रं चाष्टपदं तथा। त्रयोदशपदीं वापीं कुर्याल्लिङ्गस्य सन्निधौ ॥ ५ ॥ पूज्योपर्यपि भद्राणि भवन्ति नवभिः पदैः। एवं द्वादशलिङ्गाढ्यं वापीषोडशकान्वितम् ॥ ६ ॥ षट्पदाष्टकभाद्राढ्यं पूज्यं द्वादशकात्मकम्। मध्ये विंशति भद्रं तु कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥

रुद्रयामल में इस प्रकार कहा गया है : रुद्र बोले : हे प्रिये, मेरी पूजा के लिए शुभ रूप चौंतीस रेखाएं पूर्व और उत्तर की ओर करें। बीच में वृत्त बनाकर उसके बीच दश अरे बनाए। बाहर अष्टदल कमल, उसके बाद सोलह पत्रक बनाए। उसके बाद चौबीस पत्रात्मक, बत्तीस पत्रात्मक, चालीस पत्रात्मक सूर्य के समान वृत्त बनाना चाहिए। कोने में तीन पदों से खण्डेन्दु,

दश कोष्ठों की श्रृङ्खला, इक्कीस पदों वाली घल्ली तथा छ पदों का भद्र बनाना चाहिए। लिङ्ग अट्ठारह पदों वाला तथा भद्र आठ पदों वाला होना चाहिए लिंग के निकट त्रयोदश पदों की वापी बनानी चाहिए। पूज्य देवता के ऊपर नवपदों से भद्र बनाये जाते हैं। इस प्रकार बाहर लिङ्गों और सोलह वापियों से युक्त छ पद, आठ पद तथा बारह पदों के भद्रपूजनीय हैं। बीच में बीस भद्र पूर्व विद्वानों ने कहे हैं।

वर्णक्रमः। वर्णक्रममथो वक्ष्ये मङ्गलस्य च सिद्धये। धृष्टतण्डुलपिष्टेन कृष्णवर्णेन निर्मितम् ॥ ८ ॥ लिंगजातं सितेन्दुः स्याद्वल्ली बिल्वदलप्रभा शृखला कृष्णवर्णा च पीतं भद्रद्वयं भवेत् ॥ ९ ॥ सिता वाप्यस्तथा पूज्या मध्यभद्रे त्वयं क्रमः। पूज्योपर्यरुणे भद्रे सिते द्वे मध्यमं सितम् ॥ १० ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव बाह्यतः परिधित्रयम्। एवं सुशोभितं कार्यं मण्डलं शिवपूजने।

वर्णक्रम : मण्डल की सिद्धि के लिए मैं वर्णक्रम कह रहा हूं। घी, चावल, आटा तथा काले रंग से लिंग, चन्द्रमा श्वेत, बल्ली बिल्व पत्र के रंग की, श्रृङ्खला काले वर्ण की, दोनों भद्र पीले रग के, वापी सफेद तथा भद्र के बीच पूजनीय देवता रहते हैं। यह क्रम है। पूज्य के ऊपर लाल भद्र में दो सफेद तथा बीच का भी सफेद होना चाहिये। बाहर सत्व, रज तम परिधि से बाहर की ओर होते हैं। शिवपूजन में इस प्रकार सुशोभित मण्डल बनाना चाहिए।

अथ देवतास्थापनम्।

अथ देवतास्थापन :

प्रथम इस प्रकार संकल्प करे।

देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मान्तरे च सुख सौभाग्यसंतानादिफल प्राप्त्यर्थम् उमामहेश्वरदेवताप्रीतये मया आचरितस्य अमुकव्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा लिंगतोभद्रमण्डल देवतावाहन प्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये। इति संकल्पः।

मण्डलबाह्ये ईशानकोणे। गुरुवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि। एवं सर्वत्र ॥ १ ॥ अग्नेयां-गणपतये नमः ॥ २ ॥ नेर्ऋते दुर्गायै नमः ॥३॥ वायव्ये-क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ ततः भद्रमध्ये-श्रीसदाशिवाय नमः ॥५॥ इति स्थापयेत्।

ततः अष्टदले-पूर्वस्यां दिशि कालाग्निरुद्राय नमः। कूर्माय नमः।

मण्डूकाय नमः १। आग्नेयां-वाराहाय नमः। अनन्ताय नमः २। दक्षिणे-पृथिव्यै नमः। स्कन्दाय नमः ३। नैर्ऋत्यां-दिशि नलाय नमः। यमाय नमः ४। पश्चिमे-पत्रेभ्यो नमः। केसरेभ्यो नमः। कर्णिकायै नमः ५। वायव्यां-सिंहासनाय नमः। पद्मासनाय नमः ६। उत्तरे-धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः ७। ईशान्याम्-ऐश्वर्याय नमः। चिदाकाशाय नमः ८। पीठमध्ये-योगपीठात्मने नमः। इत्येक विंशतिदेवताः संस्थापयेत्।

ततः कर्णिकोपरि। पूर्वे-पृथिव्यै नमः १। दक्षिणे-कपालाय नमः २। पश्चिमे-सरिद्भ्यो नमः ३। उत्तरे-सागरेभ्यो नमः ४।

कर्णिकासमीपे-चत्वारि श्वेतभद्राणि तद्देवतास्थापनम्। पूर्वे-तत्पुरुषाय नमः १। दक्षिणे-अघोराय नमः २। पश्चिमे-सद्योजाताय नमः ३। उत्तरे-वामदेवाय नमः ४।

तत्समीपे-कृष्णानि अष्टौभद्राणि तद्देवतास्थापनम्। ऐशान्ये-भगवत्यै नमः १। पूर्वे-उमायैनमः २। आग्नेयां-शंकरप्रियायैनमः ३। दक्षिणे-पार्वत्यैनमः ४। नैर्ऋत्ये-गौर्यैनमः ५। पश्चिमे-काल्यै नमः ६। वायव्यां कौम्यै नमः ७। उत्तरे-विश्वंभर्यै नमः ८।

ततः कृष्णभद्राणाम् अधःअष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनम्। ऐशान्ये-नन्दिन्यै नमः १। पूर्वेमहाकालाय नमः २। आग्नेयां-वृषभाय नमः ३। दक्षिणे-भृंगकिरीटिने नमः ४। नैर्ऋत्यां-स्कन्दाय नमः ५। पश्चिमे-उमापतये नमः ६। वायव्यां-चण्डेश्वराय नमः ७। उत्तरे-सोम सूत्राय नमः ८।

अथ लिङ्गोपरि चत्वारि श्वेतभद्राणि तद्देवतास्थापनम्।

लिङ्ग के ऊपर श्वेत भद्रों के देवताओं का स्थापन :

पूर्वे-धात्रे नमः १। दक्षिणे-मित्राय नमः २। पश्चिमे-यमाय नमः ३। उत्तरे-रुद्राय नमः ४।

ततः तत्समीपलिङ्गोपरि अष्टौ पीतभद्राणि तद्देवतास्थापनम्।

उसके बाद उनके समीप लिङ्गों के ऊपर आठ पीत भद्रों के देवताओं का स्थापन :

ऐशान्ये-वरुणाय नमः १। पूर्वे-सूर्याय नमः २। अग्नेयां-भगाय नमः ३। दक्षिणे-विवस्वते नमः ४। नैर्ऋत्यां-पुरुषोत्तमाय नमः ५। पश्चिमे-सवित्रे नमः ६। वायव्ये-त्वष्ट्रे नमः ७। उत्तरे-विष्णवे नमः ८।

ततः द्वादशलिङ्गदेवतास्थापनं पूर्वादिचतुर्दिक्षु ।

फिर पूर्वादि चारों दिशाओं में द्वादश लिङ्गों के देवताओं का स्थापन :

पूर्वे-शिवाय नमः १ । एकनेत्राय नमः २ । एकरुद्राय नमः ३ ।

दक्षिणे-त्रिमूर्तये नमः १ । श्रीकण्ठाय नमः २ । वामदेवाय नमः ३ ।

पश्चिमे-ज्येष्ठाय नमः १ । श्रेष्ठाय नमः २ । रुद्राय नमः ३ ।

उत्तरे-कालाय नमः १ । कलकर्णिकाय नमः २ । बलविकर्णाय नमः ३ ।

अथ श्वेतषोडशवापीदेवतास्थापनमीशानादिक्रमेण ।

ईशानादि क्रम से श्वेत षोडश वापियों के देवताओं का स्थापन :

अणिमायै नमः १ । महिमायै नमः २ । लघिमायै नमः ३ । गरिमायै नमः ४ । प्राप्त्यै नमः ५ । प्राकाम्यायै नमः ६ । ईशितायै नमः ७ । वशितायै नमः ८ । ब्राह्म्यै नमः ९ । महेश्वर्यै नमः १० । कौमार्यै नमः ११ । वैष्णव्यै नमः १२ । वाराह्यै नमः १३ । इन्द्राण्यै नमः १४ । चामुण्डायै नमः १५ । चण्डिकायै नमः १६ ।

ततः वापीसमीपे अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ।

ईशानादि क्रम से वापियों के समीप रक्तभद्रों के देवताओं का स्थापन :

असिताङ्गभैरवाय नमः १ । रुरुभैरवाय नमः २ । चण्डभैरवाय नमः ३ । क्रोधभैरवाय नमः ४ । उन्मत्तभैरवाय नमः ५ । कालभैरवाय नमः ६ । भीषणभैरवाय नमः ७ । संहारभैरवाय नमः ८ ।

अथाष्टवल्लीदेवतास्थानपनमैशान्यादिक्रमेण ।

ईशानादि क्रम से अष्टवल्लिों के देवताओं का स्थापन :

घृताच्यै नमः १ । मेनकायै नमः २ । रम्भायै नमः ३ । उर्वश्यै नमः ४ । तिलोत्तमायै नमः ५ । सुकेश्यै नमः ६ । मञ्जुघोषायै नमः ७ । अप्सरोभ्यो नमः ८ ।

ततः मण्डलमध्ये परिधिसमीपे शृङ्खलादेवतास्थापनमाग्नेयादिक्रमेण ।

फिर आग्नेय कोण में परिधि के समीप मण्डल के मध्य में शृङ्खला-देवताओं का स्थापन :

आग्नेयां-भवाय नमः १ । शिवाय नमः २ । रुद्राय नमः ३ । पशुपतये नमः ४ । उग्राय नमः ५ । महादेवाय नमः ६ । भीमाय नमः ७ । ईशानाय नमः ८ । अनन्ताय नमः ९ । वासुकये नमः १० ।

ततः नैर्ऋत्ये-परिधिसमीपे शृङ्खलादेवतास्थापनम् ।

फिर परिधि के समीप नैर्ऋत्य कोण में शृङ्खला के देवताओं का स्थापन :

तक्षकाय नमः १ । कुलीरकाय नमः २ । कार्कोटकाय नमः ३ । शङ्खपालाय नमः ४ । कम्बलाय नमः ५ । अश्वतराय नमः ६ । वैन्याय नमः ७ । अङ्गाय नमः ८ । हैहयाय नमः ९ । अर्जुनाय नमः १० ।

वायव्ये-दशशृङ्खलादेवतास्थापनम् ।

वायव्य कोण में दश-शृङ्खला-देवताओं का स्थापन :

शकुन्तलाय नमः १ । भरताय नमः २ । नलाय नमः ३ । रामाय नमः ४ । सर्वभौमाय नमः ५ । निषधाय नमः ६ । विन्ध्याचलाय नमः ७ । माल्यवते नमः ८ । परियात्राय नमः ९ । सह्याय नमः १० ।

ततः ऐशान्ये-परिधिसमीपे दशशृङ्खलादेवतास्थापनम् ।

फिर ईशानकोण में परिधि के समीप दस-शृङ्खला-देवताओं का स्थापन :

हेमकूटाय नमः १ । गन्धमादनाय नमः २ । कुलाचलाय नमः ३ । हिमवते नमः ४ । रैवताचलाय नमः ५ । देवगिरये नमः ६ । मलयाचलया नमः ७ । कनकाचलाय नमः ८ । पृथिव्यै नमः ९ । अनन्ताय नमः १० ।

अथ चतुर्दिक्षु खण्डेन्दुदेवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ।

ईशानादिक्रम से चारों दिशाओं में खण्डेन्दु-देवताओं का स्थापन :

ऐशान्येअश्विनोकुमाराभ्यां नमः १ । आग्नेयां-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः २ । नैर्ऋते पितृभ्यो नमः ३ । वायव्यां-नागेभ्यो नमः ४ ।

ततः मण्डलाद्बहिः प्रथमं सत्त्वपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ।

फिर मण्डल के बाहर प्रथम सत्त्व परिधि में पूर्वादिक्रम से देवतास्थापन :

इन्द्राय नमः १ । अग्नये नमः २ । यमाय नमः ३ । निर्ऋतये नमः ४ । वरुणाय नमः ५ । वायवे नमः ६ । कुबेराय नमः ७ । ईश्वराय नमः ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये-ब्रह्मणे नमः ९ । वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये अनन्ताय नमः १० ।

तद्बहिः रजः परिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ।

उसके बाहर रजस परिधि में पूर्वादिक्रम से देवतास्थापन :

वज्राय नमः १ । शक्तये नमः २ । दण्डाय नमः ३ । खड्गाय नमः ४ । पाशाय नमः ५ । अंकुशाय नमः ६ । गदायै नमः ७ । त्रिशूलाय नमः ८ । पद्माय नमः ९ । चक्राय नमः १० ।

तद्बहिः तमोमयकृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ।

उसके बाहर तमोमय कृष्ण परिधि में पूर्वादिक्रम से देवतास्थापन :

कश्यपाय नमः १ । अत्रये नमः २ । भरद्वाजाय नमः ३ । विश्वामित्राय नमः ४ । गौतमाय नमः ५ । जमदग्नये नमः ६ । वसिष्ठाय नमः ७ । अरुन्धत्यै नमः ८ ।

ततः पूर्वे ऋग्वेदाय नमः १ । दक्षिणे-यजुर्वेदाय नमः २ । पश्चिमे सामवेदाय नमः ३ । उत्तरे-अथर्ववेदाय नमः ४ ।

एवमष्टोत्तर शत १०८ देवताः संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य ततः प्रधानदेवतां मण्डलमध्ये संस्थाप्य पूजयेत् । इति द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डल विधानम् ।

इस प्रकार एक सौ आठ देवताओं की स्थापना करके षोडश उपचारों से पूजा करके प्रधान देवता को मण्डल के बीच बैठाकर पूजा करे ।

इति द्वादश लिङ्गतोभद्र मण्डल विधान

अथ त्रयोदशरेखात्मकं लघुगौरीतिलकाख्यमेकलिङ्गतोभद्रमण्डलम् । तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्याः स्निग्धास्त्रयोदश । कोणेन्दुस्त्रिपदः कार्यः शृङ्खलास्त्रिपदाः सिताः ॥ १ ॥ वल्ली च षट्पदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत् । पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे ॥ २ ॥ पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः लिङ्गपार्श्वे तथा मूर्धन्यष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः ॥ ३ ॥ लिङ्गमेकं तथा गौर्यस्तिस्रश्चात्रं तु मण्डले । पूजयेन्मण्डलं चैव तस्य गौरी प्रसीदति । देवता पूर्वोक्ता एव । इति ।

त्रयोदश रेखात्मक लघुगौरी तिलकाख्य एकलिङ्गतोभद्र मण्डल : सीधी, पड़ी तथा खड़ी सीधी तेरह रेखाएं बनानी चाहिए । कोण में तीन पद का चन्द्रमा बनायें । शृङ्खला भी त्रिपदा सफेद बनाएँ । वल्ली षट्पदा नीली बनायें । उत्तर, पूर्व और दक्षिण में स्पष्ट रूप से बारह पदों से लाल भद्र बनायें । पश्चिम में महारुद्र को अट्ठाइस कोष्ठकों से बनाना चाहिए । लिंग के पास तथा मूर्धा में आठ कोष्टक पीले रंग के बनावें । इस मण्डल में एक लिङ्ग तथा तीन गौरी बनायें । और मण्डल की पूजा करें । जो ऐसा करता है उसपर गौरी सप्रन्न होती हैं । पूर्वोक्त देवताओं ही से यहां आशय है ।

इति लघु गौरी तिलकाख्यमेकलिङ्गतोभद्र मण्डल

अथ सूर्यभद्रम् । रेखाविंशतिसंयुक्तं भीमरथ्यास्तु मण्डलम् । सूर्यव्रतेषु सर्वेषु शस्यते मण्डलं त्विदम् ॥ १ ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदः कार्यः शृखला

षट्पदा मता । त्रयोदशपदैर्वल्ली भद्रं तु त्रिपदं मतम् ॥ २ ॥ सूर्यत्रयं प्रकुर्वीत सप्तविंशतिभिः पदैः । सूर्यत्रयं चतुष्कोणे पदमर्धसितं भवेत् ॥ ३ ॥ पदैस्तु नवभिः कृत्वा भवेत्सूर्यत्रयं ततः । सूर्योपरि भवेद्भद्रं पदं द्वादशसम्मितम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वमिन्दुं प्रकुर्वीत चतुर्भिस्तु सितैः पदैः । परिधिः षोडशपदा पद्मं नव पदं ततः ॥ ५ ॥ सत्त्वं रजस्तम इति रेखाः स्युर्मण्डलाद्बहिः । कृष्णा च शृङ्खलाज्ञेया वल्ली नीला प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥ भद्रान् पीतान् प्रकुर्वीत रवीन् रक्तान् प्रकारयेत् । पीतश्च परिधि प्रोक्तः पद्मं रक्तं तथैव च ॥ ७ ॥ इति भद्रमार्तण्डे सूर्यभद्रम् ।

अथ सूर्यभद्रमण्डल : बीस रेखाओं से भीमरथी का मण्डल बनता है । सूर्य के सभी व्रतों में यह मण्डल प्रयस्त है । खण्डेन्दु तीन पदों से बनाये, शृङ्खला छ पदों से बनाये, वल्ली तेरह पदों से बनाये और भद्र तीन पदों से बनाये । तीन सूर्य सत्ताइस पदों से बनाना चाहिए । तीन सूर्य चतुष्कोण में हों तथा आधा पद सफेद हो । इस प्रकार नव पदों से तीन सूर्य होगा । सूर्य के ऊपर भद्र होना चाहिए । यह पद बारह होना चाहिए । ऊपर चार सफेद पदों से चन्द्रमा बनाना चाहिए । षोडश पदों वाली परिधि होनी चाहिए । नव पदों वाला कमल होना चाहिए । मण्डल के बाहर सत्व, रज तथा तम की रेखायें होनी चाहिए । शृङ्खला काली जाननी चाहिए तथा वल्ली नीली बतायी गयी है । भद्रों को पीला बनाना चाहिए तथा सूर्य को लाल बनाना चाहिए । परिधि को पीला बनाना चाहिये । कमल को लाल बनाना चाहिए ।

इति भद्रमार्तण्ड में सूर्यभद्र

अथ गणपतिभद्रम् :

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मण्डलं सर्वसिद्धिदम् । नाम्ना च विघ्नमर्दाख्यं विनायकव्रते हितम् ॥ १ ॥ तिर्यगूर्ध्वं सप्तदश रेखाः कार्याः सुशोभनाः खण्डेन्दुस्त्रिपदः कोणे शृङ्खला च चतुष्पदैः ॥ २ ॥ कार्या नवपदा वल्ली भद्रं रक्तं चतुष्पदम् । ततो विंशतिकोष्ठेषु कार्यो गणपतिः शुभः ॥ ३ ॥ कोष्ठद्वयेन मुकुटं गणेशस्य च कारयेत् । पतिश्च परिधिः कार्यः पदैर्विंशतिभिस्तथा ॥ ४ ॥ मध्ये षोडशकोष्ठेन पद्मं कार्यं सुशोभनम् । सर्वतोभद्रदेवान्वै विशेषणात्र योजयेत् । इति गणपतिभद्रम् । इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे भद्रमण्डल प्रकरणे तृतीयस्तरङ्गः ॥३॥

अथ गणपति भद्रमण्डल : अब मैं सब सिद्धियों को देने वाला

विघ्ननाशक मण्डल कहूंगा। यह विनायक व्रत में हितकर है। पड़ी तथा खड़ी सीधी सुन्दर सत्रह रेखाएं बनानी चाहिए। कोण में तीन पदों वाला खण्डेन्दु बनाना चाहिए। शृङ्खला चार पदों की बनानी चाहिए। बल्ली नव पदों से बनानी चाहिए। भद्र चार पदों का रक्त वर्ण का बनाना चाहिए। इसके बाद बीस कोष्ठकों में शुभ गणपति को बनाना चाहिए। गणेश का मुकुट दो कोष्ठों से बनाये। परिधि पीले रंग की बीस कोष्ठों से बनानी चाहिए। यहाँ सर्वतोभद्र देवताओं को विशेष रूप से स्थापित करे।

इति गणपति भद्रमण्डल

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्डोक्त भद्रमण्डल प्रकरण में

तृतीय तरंग समाप्त

चतुर्थ तरंग

सर्वदेवोपयोगी पद्धति

तत्रादौ पञ्चांगपूजनं देवीरहस्ये : जप्त्वा मन्त्री मन्त्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः। तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः। भोजयेत्तद्दशांशेन मन्त्र सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।

प्रारम्भ में पञ्चाङ्ग पूजन करना चाहिये। देवीरहस्य में कहा गया है कि साधक मन्त्रराज का जप करके जप का दशांश होम करे। होम का दशांश तर्पण करे। तर्पण का दशांश मार्जन करे। मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन कराये। इससे निश्चय ही मन्त्र की सिद्धि होती है।

अथ पञ्चांगपूजने मन्त्रोद्धारणक्रमः आगमचिन्तामणौ : होमतर्पणयोः स्वाहा न्यासपूजनयोर्नमः। मन्त्रान्ते योजयेन्मन्त्री जपकाले यथा तथा।

पञ्चाङ्ग पूजन में मन्त्रोद्धार का क्रम : आगम चिन्तामणि में कहा गया है कि साधक होम तथा तर्पण में मन्त्र के अन्त में स्वाहा शब्द जोड़े। न्यास और पूजन में मन्त्र के अन्त में नमः जोड़। जपकाल में मन्त्र जैसा पहले रहा वैसा ही रहे।

अथ संक्षेपतः सर्वासां देवतानां नित्यपूजाविधिः रुद्रयामले : आदौ ऋष्यादिविन्यासः करशुद्धिस्ततः परम्। अंगुलीव्यापकौ कृत्वा हृदयादि न्यासः एव च ॥ १ ॥ तालत्रयं च दिग्बन्धः प्राणायामस्ततः परम्। ध्यानं पूजा जपश्चैव सर्वतन्त्रेष्वयं विधिः ॥ २॥

संक्षेप से सब देवताओं की नित्य पूजा-विधि : रुद्रयामल में कहा गया है कि प्रारम्भ में ऋष्यादि न्यास करने के बाद करशुद्धि करनी चाहिये। अंगुलियों से व्यापक करके हृदयादिन्यास करना चाहिये। तीन चुटकी बजा कर दिग्बन्ध करके प्राणायाम करना चाहिये। इसके बाद क्रमशः ध्यान, पूजा तथा जप करना चाहिये। सभी तन्त्रों में यही विधि है।

अथ पूजादिमाहात्म्यम्। पूजया विपुलं राज्यमग्निकार्येण सम्पदः। जपेन पापसंशुद्धिर्ज्ञानध्यानेन मुच्यते ॥ ३ ॥ त्रिकालं गन्धपुष्पाद्यैरर्चिते दैवते निशि। पुरश्चरणकृतेन विनैवासौ प्रसीदति ॥ ४ ॥

पूजा आदि का माहात्म्य : पूजा से विपुल राज्य तथा यज्ञ से सम्पत्तियाँ, जप से पापों की शुद्धि तथा ज्ञान-ध्यान से मुक्ति प्राप्त होती है। तीन कालों में गन्ध-पुष्पादि से देवता का पूजन करने पर रात्रि में पुरश्चरण मात्र करने के बिना ही देवता प्रसन्न हो जाते हैं।

तन्त्रान्तरेपि : एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत्पूजनं विना। जपांते च भवेत्पूजा पूजान्ते वा जपेन्मनुम् ॥ ५ ॥ मासार्द्धमथ वा मासमथ वा द्विगुणं तथा। यावत्फलाप्तिमान्योगी तावदेवं समाचरेत् ॥ ६ ॥ मन्त्रमहोदधौ: पूजनेन फलार्द्धं स्यादन्यदत्तैस्तु साधनैः।

चाहे एक ही बार पूजा हो, परन्तु बिना पूजा के जप न करे। जप के बाद पूजा या पूजा के बाद जप हो सकता है। मासार्द्ध या एक मास अथवा दो मास, जब तक फल की प्राप्ति न हो तब तक योगी इस प्रकार का आचारण करे। महोदधि में लिखा है कि अन्य व्यक्तियों द्वारा दिये गये साधनों से आधा फल होता है।

तन्त्रान्तरेपि : यदि पूजाद्यशक्तः स्याद्द्रव्याभावेन सुन्दरि। केवलं जपमात्रेण पुरश्चर्या विधीयते ॥ ७ ॥ नियमः पुरुषे ज्ञेयो न योषित्सु कदाचन। न न्यासो योषितां चात्र न ध्यानं न च पूजनम् ॥ ८ ॥ केवलं जपमात्रेण मन्त्राः सिध्यन्ति योषिताम् ॥ ९ ॥

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि हे सुन्दरि, यदि द्रव्याभाव से कोई पूजा करने में असमर्थ हो तो केवल जप मात्र से ही पुरश्चरण हो जाता है। नियम पुरुषों के लिये ही हैं स्त्रियों के लिये नहीं। स्त्रियों को न तो न्यास, न ध्यान और न पूजन करना है। स्त्रियों के मन्त्र केवल जपमात्र से सिद्ध हो जाते हैं।

अथ पूजायां पञ्चांगशुद्धिः। ज्ञानार्णवे : आत्मा स्थानं मन्त्रहव्ये देवशुद्धिस्तु पञ्चमी। यावन्न कुरुते देवि तस्य देवार्चनं कुतः। पञ्च शुद्धि बिना पूजा ह्यभिचाराय कल्पते।

पूजा में पञ्चाङ्ग शुद्धि : ज्ञानार्णव तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : हे देवि, साधक जब तक १. आत्मशुद्धि, २. स्थानशुद्धि, ३. मन्त्रशुद्धि, ४. हव्यशुद्धि, ५. देवशुद्धि इन पाँच शुद्धियों को नहीं करता तब तक उसकी देवपूजा कैसे सफल हो सकती है? पञ्चशुद्धि के बिना पूजा अभिचार का रूप धारण कर लेती है।

अथात्मशुद्धिप्रकार : सुस्नातैर्भूतशुद्धैश्च प्राणायामादिभिः प्रिये। षडङ्गाद्यखिलन्यासैरात्मशुद्धिरितीरिता ॥ ११ ॥

आत्मशुद्धि का प्रकार : हे प्रिये, अच्छे प्रकार स्नान, भूतिशुद्धि तथा प्राणायामादि से तथा षडंगादि न्यासों से आत्मशुद्धि होती है।

अथ मन्त्रशुद्धिप्रकारः : ग्रंथिता मातृकावर्णैर्मूल मन्त्राक्षराणि च। क्रमोत्क्रमाद्द्विरावृत्त्या मन्त्रशुद्धिरितीरिता ॥ १२ ॥

मन्त्रशुद्धि का प्रकार : मूल मन्त्राक्षरों को मातृकाक्षरों से गूँथ कर क्रम और उत्क्रम से आवृत्ति करने से मन्त्र की शुद्धि हो जाती है।

अथ द्रव्यशुद्धिप्रकारः : पूजाद्रव्याणि मूलास्त्रैः प्रोक्षणीयैर्विशेषतः। दर्शयेद्धेनुमुद्रादि द्रव्यशुद्धिरितीरिता ॥ १३ ॥

द्रव्यशुद्धि : मूलास्त्रों तथा विशेष प्रोक्षणीयों से तथा धेनु मुद्रादि के दिखाने से पूजाद्रव्य शुद्ध होते हैं।

अथ देवशुद्धिप्रकारः : पीठे देवं प्रतिष्ठाप्य सकलीकृत्य मन्त्रवित। मूलमन्त्रेण दीपादीन्माल्यादीनुदकेन च ॥ १४ ॥ त्रिवारं प्रोक्षयेद्विद्वान् देवशुद्धिरितीरिता। पञ्चशुद्धि विधायेत्थं पश्चाद्यजनमाचरेत् ॥ १५ ॥ स्थानमन्त्रेण स्थानं शोधयेत्।

देवशुद्धि का प्रकार : पीठ पर देवता की प्रतिष्ठा करने के बाद सकलीकरण कर दीपादि को तथा माला आदि को जल से विद्वान् साधक तीन बार प्रोक्षण करे। इससे देवशुद्धि हो जाती है। स्थान मन्त्र से स्थान की शुद्धि करे। इस प्रकार पञ्चशुद्धि करने के बाद यज्ञ प्रारम्भ करे।

अथ[1] षोडशोपचाराः। पाद्यार्घ्याचमनीयं च स्नानं वसनभूषणे। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनं तथा ॥ १६ ॥ ताम्बूलमर्चनस्तोत्रं तर्पणं च नमस्क्रियाम्। प्रयोजयेत्प्रपूजायामुपचारांस्तु षोडश ॥ १७ ॥

अथ षोडशोपचार : १. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमनीय, ४. स्नान, ५. वस्त्र, ६. आभूषण, ७. गन्ध, ८. पुष्प, ९. धूप, १०. दीप, ११. नैवेद्य, १२. आचमन, १३. ताम्बूल, १४. अर्चनस्तो, १५. तर्पण, १६. नमस्कार।

---

१. बृहत्पाराशरसंहितायाम्-पाद्ययावाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तमम्। द्वितीययासनं दद्यात्पाद्यं चैव तृतीयया। अर्घ्यं चतुर्थ्या दातव्यं पञ्चम्याचमनं तथा षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतकम्। यज्ञोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गन्धमेव च। पुष्पं देय दशम्या तु एकादश्या च धूपकम्। द्वादश्या दीपकं दद्यात्त्रयोदश्या निवेदयेत्। चतुर्दश्या नमस्कार पंचदश्या प्रदक्षिणाः। षोडश्योद्वासनं कुर्याच्छेषकर्माणि पूर्ववत्। तच्च सर्वं जपेद्भूयः पौरुषं सूक्तमेव च ॥ इति ॥

पूजा में इन सोलह उपचारों का प्रयोग करना चाहिये ।

अथ पञ्चोपचाराः । गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च । अखण्डफलमासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम् ॥ १४ ॥

पञ्चोपचार : १. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप, ५. नैवेद्यादि पञ्चोपचार से पूजन करने पर मनुष्य अखण्ड फलों को प्राप्त करके निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त करता है ।

आसनाद्युपचारफलं शैवरत्नाकरे : आवाहनं तु यो दद्यात्स च क्रतुफलं लभेत् । आसनं रुचिरं दत्त्वा शक्रतत्त्वमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ पाद्येन पादकं हन्यादर्घ्येणाप्नोत्यनर्घ्यताम् । ततश्चाचमनं दत्त्वा सुचित्तः सुखितां व्रजेत् ॥ २० ॥ स्नानं व्याधिभयं हन्याद्वस्त्रेणायुष्यवर्द्धनम् । उपवीतं तु यो दद्याद्ब्रह्मवेत्तृत्वमेव च ॥ २१ ॥ भूषणानि च यो दद्यादनापद्यवाप्नुयात् । गन्धेन लभते काममक्षतैरक्षतं भवेत् ॥ २२ ॥ नानापुष्पप्रदानेन स्वर्गे राज्यमवाप्नुयात् । धूपो दहति पापानि दीपो मृत्युविनाशनः । ॥ २३ ॥ सर्वमानस्तु नैवेद्यं दत्त्वा तृप्तिरतो भवेत् । मुखवासनदानेन कीर्तिमान भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥ नीराजनेन शुद्धात्मा दर्पणेन् प्रकाशयेत् । फलदः पुत्रवान्मर्त्यस्ताम्बूलात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥२५॥ प्रदक्षिणं तु यः कुर्यात्पापं हन्ति पदेपदे । दण्डप्रणामं यः कुर्याद्देवमुद्दिश्य सन्निधौ ॥ २६ ॥ वर्षाणि वसते स्वर्गे देहान्ते रेणुसंख्यया । स्तोत्रेण दिव्यदेहोपि वाग्मी भवति तत्क्षणात् ॥२७॥ पुराणपठनेनैव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥२८॥

शैवरत्नाकर में आसन आदि के उपचार का फल इस प्रकार मिलता है : जो आवाहन देता है वह यज्ञ का फल प्राप्त करता है। उत्तम आसन देने से मनुष्य इन्द्र का पद प्राप्त करता है। पाद्य देने से वह पापों का नष्ट करता है । अर्घ्य देने से मनुष्य अमूल्य बन जाता है । इसके बाद आचमनीय देने से वह स्वस्थचित्त होकर सुख पाता है। स्नान कराने से रोगों के भय से बच जाता है । वस्त्र देने से आयु की वृद्धि होती है । जो यज्ञोपवीत देता है वह वेदवेत्ता हो जाता है। जो भूषण देता है वह आपत्तियों से छुटकारा पाता है । गन्ध से मनुष्य काम की सिद्धि पाता है । अक्षतों से मनुष्य अक्षत हो जाता है। अनेक प्रकार के फूलों के देने से मनुष्य स्वर्ग में राज्य प्राप्त करता है। धूप पापों का नाश करता है। दीप मृत्यु का विनाश करता है। नैवेद्य देकर मनुष्य सबका मान्य होकर तृप्त रहता है। पान इलायची आदि देने से मनुष्य निश्चय ही कीर्ति प्राप्त करता है। नीराजन

से शुद्धात्मावाला हो जाता है । दर्पण दिखाने से मनुष्य प्रकाशित होता है। फल देने वाला मनुष्य पुत्रवान् होता है । पान देने से वह स्वर्ग प्राप्ता करता है । जो प्रदक्षिणा करता है वह पग-पग पर पापों का नाश करता है । जो देवता को दण्ड प्रणाम करता है वह देहान्त के बाद स्वर्ग में देवता के निकट बालू के कणों की संख्या के बराबर वर्षों तक निवास करता है । स्तोत्रपाठ से दिव्य देह होकर तत्काल वह वाग्मी हो जाता है । पुराण का पाठ करने से सभी पापों का शमन हो जाता है ।

अथ सर्वदेवतापूजनोपयोगितिथ्यादिकम् । चैत्रे शुक्लचतुर्दश्यां दमनैः पुष्पयेद्धारम् । नारायणं तु द्वादश्यामष्टम्यां गिरिनन्दिनीम् । सप्तम्यां भास्करं देवं चतुर्थ्यां गणनायकम् । एवं तत्ततिथौ तं तं पवित्रैः श्रावणेऽर्चयेत् । माघ कृष्णचतुर्दश्यां विशेषाच्छिवपूजनम् । आश्विनाद्यनवाहेषु दुर्गापूजा यथाविधि । गोपालं पूजयेद्विद्वान्नभः कृष्णाष्टमीदिने । एवं चैत्रसिते पक्षे नवम्यामर्चयेत्सुधीः । वैशाखाद्यचतुर्दश्यां नरसिंहं प्रपूजयेत् । यजेच्छुक्लचतुर्थ्यां तु गणेशं भाद्रमाघयोः । महालक्ष्मीं यजेद्विद्वान् भाद्रकृष्णाष्टमी दिने । माघस्य शुक्लसप्तम्यां विशेषाद्दिननायकम् । या काचित्सप्तमी शुक्लारविवारयुता यदि । तस्यां दिनेशं सम्पूज्य दद्यादर्घ्यं पुरोदितम् ।

सब देवताओं की पूजा के लिए उपयोगी तिथियाँ : चैत शुक्ल चतुर्दशी को दमन के फूलों से शिव की पूजा करनी चाहिये द्वादशी को विष्णु जी की पूजा करनी चाहिए। सप्तमी को सूर्य भगवान की पूजा करनी चाहिये । चतुर्थी को गणेश जी की पूजा करनी चाहिये । इसी प्रकार उन उन तिथियों को श्रावण में पवित्र दमन पुष्पों से पूजा करनी चाहिये । माघ कृष्ण चतुर्दशी को विशेष रूप से शिव की पूजा करनी चाहिये । अश्विन मास के प्रारम्भिक नव दिनों तक यथाविधि दुर्गापूजा करनी चाहिये । कृष्णाष्टमी को गोपाल की पूजा करनी चाहिए । चैत्र शुक्ल नवमी को सुधी मनुष्य को रामचन्द्रजी का पूजन करना चाहिये । वैशाख कृष्ण चतुर्थी को नृसिंहावतार की पूजा करनी चाहिये । भादों शुक्ल चतुर्थी तथा माघ शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी की पूजा करनी चाहिये । भादों कृष्ण अष्टमी को विद्वान् मनुष्य महालक्ष्मी का पूजन करे। माघ शुक्ल सप्तमी को विशेष रूप से सूर्य भगवान् की पूजा करनी चाहिये । यदि किसी मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि रविवार युक्त हो तो उस दिन सूर्यभगवान् की पूजा करके पूरोदित अर्घ्य देना चाहिये ।

अत्र सर्वमन्त्रानुष्ठानोपयोगिप्रारम्भात्पूर्वकृत्यम् । तत्रादौ चन्द्रताराबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्य भूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धि सम्पाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् । ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्ताङ्ग-विष्णु पूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होम चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । सर्वकर्मणामशक्तौ प्रायश्चित्ताङ्ग-पञ्चगव्य प्राशनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः ।

सब मन्त्रों के अनुष्ठानोपयोगी प्रारम्भ से पूर्व के कृत्य : इस विषय में चन्द्र तथा तारा आदि के बल से युक्त दिन में उत्तम मुहूर्त में तीर्थ, पुण्य क्षेत्र, निर्जन स्थान आदि में से कहीं अनुष्ठानयोग्य भूमि का चयन करके सफाई, दहन, खनन तथा संप्लावन आदि स्मृत्युक्त शोधन उपायों से शुद्धि करके जपस्थान के चारों दिशाओं में एक कोस या दो कोस तक चारो ओर आहार आदि सामग्री लाने तथा विचरण करने के लिये निश्चित करके जप के स्थान की भूमि पर कूर्म शोधन करना चाहिये। इसके बाद पुरश्चरण से पहले तीसरे दिन मुण्डन कराकर प्रायश्चित्ताङ्ग रूप में विष्णु पूजा, विष्णुतर्पण तथा विष्णु श्राद्ध, होम और चान्द्रायणादि व्रत करे। व्रत में अशक्त होने पर गोदान और द्रव्यदान करे। सभी कर्मों में अशक्त होने पर प्रायश्चित के अंग स्वरूप पञ्चगव्य प्राशन करे। इस विषय में यह मन्त्र है :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत् । तद्दिने उपवासं कुर्यात् । अशक्तश्चेत् पयः पानहविष्यान्नैकभुक्तिव्रतम् । पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् । तथा च ।

मूल मन्त्र पढ़कर प्रणव (ॐ) से पञ्चगव्य का पान करे। उस दिन उपवास करे। असमर्थ हो तो दुग्धपान या एक समय हविष्यान्न का सेवन करके व्रत रहे। पुरश्चरण के पूर्व दिन अपनी देह की शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दस हजार गायत्री का जप करना चाहिये। तदनुसार पहले इस प्रकार संकल्प करना चाहिये।

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवता पुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रेण सिध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ।[1]

इस प्रकार संकल्प करके दस हजार गायत्री का जप करे। इसके बाद इस मन्त्र से तर्पण करे।

गायत्र्याचार्यऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि । गायत्रीछन्दस्तर्पयामि । सवितारं देवं तर्पयामि ।

इति तर्पणं कुर्यात् । ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तौ शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् । तथा च स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मन्त्रः :

इस प्रकार तर्पण करने के बाद उस रात को देवता के निकट शुभ-अशुभ स्वप्न का विचार करे। तदनुसार स्नानादि करके विष्णु भगवान के चरण कमल का ध्यान करके कुशासन आदि की शय्या पर सुखपूर्वक बैठकर शिव जी से प्रार्थना करे। इस विषय में यह मन्त्र है :

ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन । इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः । क्रियासिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् । ततः निशि दृष्टं स्वप्नं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् । अथ वा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । इति पूर्वकृत्यम् ।

इस मन्त्र से एक सौ आठ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय। इसके बाद रात में देखे गये स्वप्न को गुरु से बताये अथवा स्वयं स्वप्न का विचार करे। यह पुरश्चरण से पूर्व का कृत्य है।

अथ प्रातःकृत्यम् । पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय

---

१. देवीभागवते-यस्य कस्यापि मन्त्रस्य पुरश्चरणमारभेत् । व्याहृतित्रय संयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् । नृसिंहार्कवराहाणां तांत्रिकं वैदिकं तथा । विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।

शुद्धासन उपविश्य स्वशिरसि सहस्रदलपङ्कजे कोटीन्दुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत् । तथा च :

प्रातःकृत्य : पुरश्चरण के दिन साधक प्रातःकाल से दो दण्ड पूर्व के ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर सोने के स्थान से बाहर जाकर हाथ पैर धोकर रात्रि के वस्त्र को छोड़कर अन्य वस्त्र धारण करके शुद्ध आसन पर बैठकर अपने सिर में स्थित करोड़ों चन्द्रमा के प्रकाशपीठ सहस्रदल कमल में श्री गुरु का ध्यान करे। ध्यान का मन्त्र यह है।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् । योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके :

प्रातः प्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरंततः । यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥

इत्यनेन मन्त्रेण सर्वं गुरुवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा मूलमन्त्रदेवतायाः प्रातःस्मरणं कुर्यात् । प्रातः स्मरणं कृत्वा गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरुवे समर्पयेत् ।

इस मन्त्र से सब कुछ गुरु को निवेदन करके उनकी आज्ञा लेकर मूल मन्त्र के देवता का प्रातःस्मरण करे। प्रातःस्मरण करके गुरु, मन्त्र, देवता तथा स्वयं की एकता की भावना करके अजपाजप गुरु को समर्पित करे। अजपाजप का संकल्प संक्षेप से करके इस मन्त्र का पाठ करे :

आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के । वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥

षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः । षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः । सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च ह्येवं तानि नियोजयेत् ॥ ३ ॥

इसके बाद गणेशजी को छ सौ, प्रजापति को छ हजार, विष्णु को छ हजार शिव को छ हजार, अपने आप को एक हजार, और परमात्मेश्वर को एक हजार तथा गुरु को एक हजार अजपा का निवेदन करना चाहिये। इसके बाद :

हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः । हंसोपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शम्भुः ॥ ४ ॥

इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिश्वासात्मकमजपा गायत्रीमन्त्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि । इत्युक्त्वाष्टोत्तरशतावृत्ति हंसगायत्रीं जपेत् ।

यह पढ़कर 'दिन रात चलने वाले इक्कीस हजार छ सौ श्वास प्रश्वासात्मक अजपा गायत्री मन्त्र जप श्री गणेश, ब्रह्मा विष्णु, शिव जी परमात्मा तथा गुरु को संख्या के अनुसार से समर्पित करता हूं" यह कहकर एक सौ आठ हंस गायत्री का जप करे। हंस गायत्री मन्त्र यह है :

अथ हंसगायत्रीमन्त्रः । हरिः ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि । हंसो हंसः प्रचोदयात् ।

इति जपित्वा :

इसका जप करके इस मन्त्र से प्रार्थना करे।

त्रैलोक्यचैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदायज्ञयैव । प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥

इससे प्रार्थना करके भूमि की प्रार्थना इस मन्त्र से करे :

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् । इति प्रातःकृत्यम् ।

इससे भूमि की प्रार्थना करके श्वास के अनुसार भूमि पर पैर रख कर बाहर जावे। यह प्रातःकाल का कृत्य समाप्त हुआ।

ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषं च कृत्वा दन्तधावनं कुर्यात् । तथा च आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ।

इसके बाद गाँव से बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त में उत्तराभिमुख होकर नंगे पैर शिर पर रखकर मलोत्सर्ग करके मिट्टी तथा जल से संख्यानुसार मलस्थान की सफाई करके हाथ पैर धोकर कुल्ला करके दातुन करे। आम, चम्पा या चिचिड़ा में से किसी की बारह अंगुल लम्बी दातुन लेकर इस मन्त्र से प्रार्थना करे :

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च। श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥

इति सम्प्रार्थ्य। 'ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा' इति मन्त्रेण काष्ठं छित्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' । इत्यनेन दन्तान् संशोध्य 'ऐं' मन्त्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निक्षिपेत्। मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात्। तत्रादौ तीर्थस्नानप्रयोगः।

इस मन्त्र से प्रार्थना करके 'ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा' इस मन्त्र से दातुन वृक्ष से काटकर, 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः।' इससे दांतो को साफ करके 'ऐं' मन्त्र से जीभ छीलकर दातुन को धोकर नैर्ऋत्य दिशा के शुद्ध देश में फेंक देवे। इसके बाद मूलमन्त्र से मुख धोकर आचमन करके स्नान करे। यहाँ पहले तीर्थस्नान की विधि बतला रहे हैं :

गङ्गायमुनादिनद्यभावेतडागादिकं गत्वा ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रे जले गत्वा शिखां बद्ध्वा आचम्य :

गङ्गा, जमुना आदि नदियों के अभाव में तालाब आदि पर जाकर हाथ पैर धोकर नाभि मात्र जल में खड़े होकर चोटी बाँधकर आचमन करके यह संकल्प बोले :

देशकालौ संकीर्त्य मम ज्ञाताज्ञातसमस्तपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवतामन्त्रपुरश्चरणाधिकारार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं चामुकप्रायश्चित्ताङ्गभूतमादौ तीर्थस्नानमहं करिष्ये।

इति संकल्प्य स्नात्वा पुनः आचम्य देवर्षिपितृतर्पणं कृत्वा ततो यक्ष्मणे तिलजलं दद्यात् तथा च :

यह संकल्प करके स्नान करे। तदन्तर आचमन करके देवता, ऋषि तथा पितरों का तर्पण करके यक्ष्मा को तिलोदक देना चाहिये। उसका मन्त्र यह है :

ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ १ ॥

इति यक्ष्मणे तिलोदकं दत्त्वा ततस्तीरमागत्य :

इस मन्त्र से यक्ष्मा को तिलोदक देकर किनारे आकर :

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥ १ ॥

इति जलाञ्जलिं तटे निक्षिप्य पुनराचम्य सूर्यायार्घ्यं दद्यात्।

इससे जलाञ्जलि देवे। इसके बाद पुनः आचमन करके सूर्य को अर्घ्य देवे। मन्त्र यह है :

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥ १ ॥

इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा जलाद्बहिर्निष्क्रम्य शुष्कं शुभं कार्पासोत्पत्तिवस्त्रं श्वेतवर्णं प्रयोगोक्तं वा परिधाय स्नायी वस्त्रं परिपीड्य गृहं गच्छेत्। इति तीर्थस्नानप्रयोगः।

इससे सूर्य को अर्घ्य देकर जल से बाहर निकालकर सूखे सुन्दर कपास के सूत से बने सफेद वस्त्र अथवा प्रयोग में कहे गये विधि के अनुसार वस्त्र पहन कर अपने भीगे वस्त्रों को धोकर गारकर अपने घर आवे।

इति तीर्थ स्नान प्रयोग।

अथ गृहस्नानप्रयोगः। तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन, ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मन्त्रः :

गृहस्नान प्रयोग : तत्काल कूप से निकाले जल से अथवा उष्ण जल से स्नान करके (बासी जल से नहीं) ताम्र आदि के बड़े घड़े में जल भर कर उसमें तीर्थों का आवाहन करे। मन्त्र ये हैं :

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि। एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ ३ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ ४ ॥

इति तीर्थान्यावाह्य।

ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमन्त्रेणाभिमन्त्र्य वरुणमन्त्रेण स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मन्त्रैः कुशत्रयेण शिरसि जलं प्रक्षिपेत्। तत्र मन्त्र :

इस मन्त्रों से तीर्थों का आवाहन करके 'ॐ ऋतं च सत्यभित्' इस अघमर्षण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वरुण मन्त्र से स्नान करके आगे कहे जाने वाले चार मन्त्रों से तीन कुशों द्वारा शिर पर जल छिड़के। मन्त्र ये हैं :

ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुद्गशुक्रं प्रजापते । मारतः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम् ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता । क्षालयन्ती निजस्पर्शादापोदेव्यः पुनन्तु माम् ॥ २ ॥ यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्द्धनि । ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नंतु वो नमः ॥ ३ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् । संतोषःक्षान्तिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः ॥ ४ ॥

इति शिरः प्रोक्ष्य हस्तेन जलमादाय नासिकायां संयोज्य ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमन्त्र पठित्वा जलं वामभागे निक्षिपेत् । एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पत्तिवस्त्रं परिधाय सूर्यमन्त्रेण सूर्यायार्घ्यं दत्वा स्नानीयवस्त्रं परिपीड्याचम्य शैवः पञ्चत्रिपुण्ड्रं वैष्णवो द्वादशोद्ध्र्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्यात् ।

इनसे सिर का प्रोक्षण करके हाथ से जल लेकर नासिका से छुलाकर 'ॐ ऋतञ्च सत्यमित्' इस अघमर्षण मन्त्र को पढ़कर जल को वाम भाग में फेंक देवे। इस प्रकार स्नान करके सूखे स्वच्छ कपास के बने वस्त्र को पहन कर सूर्य मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य देकर स्नान के वस्त्रों को साफकर गारकर पुनः आचमन करके शैव पञ्च त्रिपुण्ड्र और वैष्णव द्वादश उर्ध्व पुण्ड्र तिलक करे।

अथ तिलकधारणप्रकारः । तत्रादौ शैव भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकारः । वामहस्ते दक्षिणहस्तेनाग्निहोत्रोत्थितं भस्मादाय उदकमिश्रणानन्तरम् ।

तिलक धारण विधि : पहले शैव भस्मत्रिपुण्ड्र की विधि लिख रहे है : बाये हाथ में दाहिने हाथ से अग्निहोत्र का भस्म लेकर उसमें पानी मिलाने के बाद :

ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म, ॐ जलमिति भस्म, ॐ स्थलमिति भस्म, ॐ व्योमेति भस्म, सर्वं० ह वा इदंभस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति भस्माभिमन्त्र्य ॐ त्र्यम्बकं पठित्वा ॐ तत्पुरुषाय नमः ॥ १ ॥

इस मन्त्र से ललाट पर त्रिपुण्ड्र धारण करे :

पुनः ॐ त्र्यम्बकं पठित्वा ॐ अघोराय नमः इति दक्षिणांसे तिलकं कुर्यात् ॥ २ ॥

इसके बाद फिर 'ॐ त्र्यम्बकं' मन्त्र पढ़कर ॐ अघोराय नमः' इस मन्त्र से दक्षिणांस में तिलक करे।

पुनः ॐ त्र्यम्बकं पठित्वा ॐ सद्योजाताय नमः इति मन्त्रेण वामांसे तिलकं कुर्यात् ॥ ३ ॥

फिर ॐ अम्बकं' पढ़कर 'सद्योजाताम नमः' से वामांस में तिलक करे।

पुनः ॐ त्र्यम्बकं पठित्वा ॐ वामदेवाय नमः इति मन्त्रेण जठरे तिलकं कुर्यात् ॥ ४ ॥

फिर 'ॐ त्र्यम्बकं' मन्त्र पढ़कर 'ॐ वामदेवाय नमः' से जठरांग में तिलक करे।

पुनः ॐ त्र्यम्बकं पठित्वा ॐ ईशानाय नमः इति मन्त्रेण वक्षसि च त्रिपुड्रं कुर्यात् ॥ ५ ॥

फिर 'ॐ त्र्यम्बकं' पढ़कर 'ॐ ईशानाय नमः' मन्त्र से वक्ष में त्रिपुण्ड्र करे।

इति पञ्चत्रिपुड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां च धारयन् सन्ध्यावन्दनादि कर्म कुर्यात् । इति भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकारः ।

इस प्रकार पांच त्रिपुण्ड्र करके रुद्राक्ष की माला धारण किये हुये सन्ध्यावन्दनादि कर्म करे।

इति भस्म त्रिपुण्ड्र प्रकार

अथ वैष्णवानामूर्ध्वपुण्ड्रविधानम्[1]। गोपीचन्दनतुलसीमूलसिन्धुजाह्नवीतीरोद्भवमृदा केशवादिद्वादशनामभिर्ललाटादिषु द्वादशस्थानेषु ऊद्ध्र्वपुण्ड्रतिलकं कुर्यात् । तत्र क्रमः ।

वैष्णवों के ऊर्ध्व त्रिपुण्ड्र का विधान : गोपी-चन्दन, तुलसी की जड़, समुद्र तथा गङ्गा के तट की मिट्टी से केशव आदि बाहर नामों से ललाट आदि बारह स्थानों पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक लगाये। उसमें मन्त्रों का क्रम इस प्रकार है।

ॐ केशवाय नम इति ललाटे कार्यम् ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः इति उदरे कार्यम् ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः इति हृदये कार्यम् ॥ ३ ॥ ॐ गोविन्दाय नमः इति कण्ठे कार्यम् ॥ ४ ॥ ॐ विष्णवे नमः इति दक्षिणपार्श्व कार्यम् ॥ ५ ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः इति दक्षबाहौ कार्यम् ॥ ६ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः इति दक्षिणकर्णे कार्यम् ॥ ७ ॥ ॐ वामनाय नमः इति वामपार्श्वे कार्यम् ॥ ८ ॥ ॐ श्रीधराय नमः इति वामबाहौ कार्यम् ॥ ९ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः इति वामकर्णे कार्यम् ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः इति पृष्ठे कार्यम् ॥ ११ ॥ ॐ दामोदराय नमः इति ककुदि कार्यम् ॥ १२ ॥

---

१. ललाटे तु गदां कुर्याद्धृदये नन्दकं पुनः । शङ्खं चक्रं भुजद्वन्द्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्द्धनि । एतानि चिह्नानि धारयेत् ।

एवं द्वादशस्थानेषु तिलकं कुर्यात् । इति वैष्णवोर्ध्वपुण्ड्रविधानम् ।

इस प्रकार बाहर स्थानों में तिलक करे ।

इति वैष्णवोर्ध्वपुण्ड्र विधान ।

इति तिलकं कृत्वा वैदिकीं सन्ध्यां विधाय शिवमन्त्रेण तान्त्रिकीं कुर्यात् ।

इति प्रकार तिलक लगाकर वैदिक सन्ध्या करके शिव मन्त्र से तान्त्रिक सन्ध्या करे ।

अथ तान्त्रिकसन्ध्याप्रयोगः ।

तान्त्रिक सन्ध्या प्रयोग : प्रथम इस प्रकार संकल्प बोले :

देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताराधनयोग्यताजननार्थं मन्त्रसन्ध्यामहं करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करके :

ॐ ह्रां आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥

इति त्रिराचम्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकराङ्गन्यासौ कृत्वा मूलेन जलं संवीक्ष्य अस्त्राय फट् इति सम्प्रोक्ष्य अनेनैव दर्भेण संताड्य कवचाय हुम् इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुम्भमुद्रया मूर्ध्नि सिञ्चेत् । ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय हृदयादिषडङ्गमन्त्रेणाभिमन्त्र्य तद्गलितोदकबिन्दुभिर्दक्षहस्तेन हृदयादिषडङ्गन्यासमन्त्रद्वारा षड्भिः शिरसि मार्जयेत् ॥ ६ ॥ पुनः ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः इति मार्जयेत् ॥ ७ ॥

इन मन्त्रों से तीन बार आचमन करके मूलमन्त्र से प्राणायाम, ऋष्यादि कराङ्ग न्यास करके मूलमन्त्र से जल को देखकर 'अस्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रोक्षण करके इसी मन्त्र से दर्भ से ताड़न करके 'कवचाय हुम्' इससे अभ्युक्षण करके उसके जल से कुम्भ मुद्रा से शिर पर सिंचन करे । इसके बाद बाएँ हाथ में दाहिने हाथ से तीर्थ जल लेकर हृदय आदि षडङ्ग मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उससे गिरते हुये जलबिन्दुओं से हृदयादि षडङ्गन्यास मन्त्र के द्वारा दाहिने हाथ से छ बार शिर पर मार्जन करे । पुनः 'ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः' इस मन्त्र से मार्जन करे । मार्जन के मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः भवेभवेनातिभवेभवस्यमां-भवोद्भवाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ वामदेवाय नमः । ज्येष्ठाय नमः । श्रेष्ठाय

नमः । रुद्राय नमः । कालाय नमः । कलविकरणाय नमः । बलाय नमः । बलविकरणाय नमः । बलप्रमथनाय नमः । सर्वभूतदमनाय नमः । मनोन्मनाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ १० ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेस्तु सदाशिवोम् । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं मूलमन्त्रैश्च :

इन मन्त्रों से मार्जन करे ।

वामहस्तस्थजलं वामनासासमीपमानीय इडया देहान्तरादाकृष्य-पापौघं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तदुदकं दक्षिणया विरेच्य वामहस्तस्थं दक्षिणेनादाय पुरःकल्पितवज्रशिलायामस्त्रमन्त्रेण क्रोधादास्फालयेत् । ततः पूर्ववदाचम्य कराङ्गन्यासौ कृत्वा अर्घपात्रे जलं कृत्वा तदादाय मूलमुच्चार्य शिवरूपाय सूर्याय इममर्घ्यं स्वाहा । इति त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीमूलमन्त्रं जपेत् । गायत्रीमन्त्रो यथा :

बायें हाथ के जल को बायें नासिका के समीप लाकर इडा नाडी से शरीर के भीतर से पाप के समूह को खींच कर धोकर काले रङ्ग के उस जल को दक्षिण नासिका से निकाल कर बायें हाथ में स्थित जल को दाहिने हाथ से लेकर सामने रक्खे पत्थर पर अस्त्र मन्त्र से क्रोध से पटके । इसके बाद पहले के समान आचमन तथा कराङ्ग न्यास करके अर्घपात्र में जल लेकर मूलमन्त्र पढ़कर 'शिव रूपाय इममर्घ्यं स्वाहा' इससे तीन बार अर्घ्य देकर मूलमन्त्र से उपस्थान करके गायत्री मूलमन्त्र का जप करना चाहिये । गायत्री मन्त्र यह है :

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

इति गायत्रीमष्टाविंशतिमष्टोत्तरशतं वा मूलं च संजप्य जपं निवेद्य नमस्कुर्यात् । इति तान्त्रिकसन्ध्याप्रयोगः ।

इस गायत्री मन्त्र को अट्ठाइस बार या एक सौ आठ बार और मूलमन्त्र का जप करके उस जप को देवता को निवेदन करके नमस्कार करे ।

इति तान्त्रिक सन्ध्याप्रयोग

अथ द्वारपूजाप्रयोगः । पूजागृहद्वारमागत्यास्त्राय फडिति द्वारं संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् : ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् : ॐ वं वटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षं क्षेत्र-

पालाय नमः ॥ २ ॥ द्वारोपरि : ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ १ ॥ देहल्याम् ॐ अस्त्राय फट् इति पूजयेत् । इति द्वारपूजाप्रयोगः ।

द्वारपूजा प्रयोग : पूजागृह के द्वार पर आकर 'अस्त्राय फट्' इससे द्वार का प्रोक्षण करके दक्षिण शाखा में 'ॐ गं गणपतये नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः ।' वाम शाखा में 'ॐ वं वटुकाय नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।' द्वार के ऊपर 'ॐ सं सरस्वत्यै नमः ।' चौखट पर 'ॐ अस्त्राय फट्' इससे पूजा करे।

इति द्वारपूजा प्रयोग

अथ क्षेत्रकीलनम् ॥ जपस्थाने गत्वा पृथ्वीग्रहणं कुर्यात् । तद्यथा

अथ क्षेत्रकीलन : जपस्थान पर जाकर पृथिवी का ग्रहण करे। इसका मन्त्र यह है :

गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये । मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १ ॥

इति भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमवितस्तिमात्रान् दशकीलान् । ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशत-कृत्वोऽभिमन्त्रितान् :

इस मन्त्र से भूमि को लेकर पीपल, गूलर या पलाश में से किसी एक के काष्ठ की दश कीलियाँ एक वितस्ति लम्बी नाप की बनवानी चाहिये। 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से एक सौ आठ बार उन कीलियों को अभिमन्त्रित करके :

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः । विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्यसिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः । अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इतिमन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत् । ततस्तेषु ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण प्रत्येककीलान् सम्पूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालांश्च सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् । तन्त्र मन्त्रः

इन दो मन्त्रों से दशों दिशाओं में दश कीलियाँ गाडनी चाहिये। इसके बाद उन कीलियों में से प्रत्येक की 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से पूजा करके वहीं पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि लोकपालों का आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजा करके जपस्थान के बीच में गणेश, कूर्म, अनन्त, वसुधा

तथा क्षेत्रपाल की पूजा करके दिक्पालों और क्षेत्रपाल गणपतियों को उड़द तथा भात की बलि देकर उससे बाहर भूतबलि देवे। इसके मन्त्र ये हैं :

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः । मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे । भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः । ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् । ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा ।

इन दोनों मन्त्रों से दशों दिशाओं में बाहर उड़द और भात की बलि देवे। इसके बाद बायें हाथ की अँगुलियों से उत्सर्जन करके पुष्पांजलि लेकर :

ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् । सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु तान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् । इति क्षेत्रकीलनम् ।

इस मन्त्र से पुष्पांजलि देकर प्रणाम करके हाथ-पैर धोकर आचमन करे।

इति क्षेत्रकीलन ।

अथ प्रयोगविधानम् । ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् । यत्र जपकर्ता एक एव तत्र कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्यात् । यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र :

अथ प्रयोग विधान : इस मन्त्र से मण्डप के अन्दर प्रोक्षण करके बैठने की जगह कूर्म का शोधन करना चाहिये। जहाँ जपकर्ता एक ही है वहाँ कूर्म के मुख पर बैठकर जप तथा दीपक की स्थापना करे। जहाँ बहुत से जपकर्ता हों वहाँ कूर्म के मुख पर दीपक की स्थापना करनी चाहिये। इसके बाद कूर्म शोधन करके आसन के नीचे जलादि से त्रिकोण बनाकर :

ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥

इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तार्य स्यात्रितानां त्र्याणामासनानामुपरि क्रमेण :

इससे गन्ध, अक्षत तथा फूलों से पूजा करके उसपर कुशा बिछाये, उसपर मृगचर्म बिछाये; फिर उसके ऊपर कम्बल आदि कोई आसन बिछाकर तीनों आसनों के ऊपर क्रम से :

ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥

इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत् । तत्र मन्त्रः

इन मन्त्रों से तीन दर्भों को प्रत्येक आसन पर रक्खे । इस प्रकार आसन बिछाकर उसपर पूर्व मुख या उत्तर मुख बैठ कर आसन का शोधन करे । मन्त्र यह है :

विनियोग : ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छन्दः आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥

इति मन्त्रेणासनं प्रोक्षयेत् । ततः मूलमन्त्रेण शिखां बद्ध्वा ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ नारायणाय नमः ॥ २ ॥ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्यात् । तद्यथा दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैःशनैः प्राणाख्य वायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकम् ॥ १ ॥ पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं विरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुम्भयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासा पुटांगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपन् शनैःशनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा :

इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करे । इसके बाद मूल मन्त्र से शिखा बाँधकर 'ॐ केशवाय नमः, नारायणाय नमः, माधवाय नमः' इन मन्त्रों से तीन बार आचमन करे । इसके बाद दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने नासापुट को बन्द करके वाम नासापुट से मूल मन्त्र को सोलह बार जपते हुए धीरे-धीरे प्राणवायु को खींचकर शिर में सहस्रार चक्र में धारण करे । यह पूरक प्राणायाम है । दाहिने हाथ की अनामिका, तर्जनी और अँगूठे से दोनों नासापुटों को बन्द करके मूल मन्त्र को चौंसठ बार जपते हुए कुम्भक प्राणायाम करे । पुन दाहिने नासापुट से अँगूठे का निरोध हटा कर

मूलमन्त्र को बत्तीस बार जपता हुआ धीरे-धीरे उस वायु को निकाल दे । यह रेचन है । इस प्रकार तीन प्राणायाम करके संकल्प पढ़े :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्माहममुकदेवताया अमुकमन्त्रसिद्धिप्रतिबन्धकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमन्त्र सिद्धिकामोऽद्याराभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालममुकमन्त्रस्येयत्संख्याकजपतद्दशांशहोम तद्दशांशतर्पण तद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं जपरूपपुरश्चरणं वा करिष्ये ।

इति संकल्प्य ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा भूतशुद्धि कुर्यात् ।

इस प्रकार संकल्प करके 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से तीन चुटकी बजाकर दिशाओं का बन्धन करके भूतशुद्धि करे ।

अथ भूतशुद्धिप्रकारः ।

ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः सन्ध्या भूतानि पञ्च च । एते शुभाशुभस्येह कर्मणो मम साक्षिणः ॥ १ ॥ भो देव प्राकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम । तन्निस्सारय चित्तान्मे पापं तेस्तु नमोनमः ॥ २ ॥

इति प्रार्थ्य दक्षिणभागे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ वामभागे ॐ गणेशाय नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा भूतशुद्धि कुर्यात् । तथा च कुम्भकप्राणायामे मूलाधारात् कुण्डलनीं परदेवता विसतन्तुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीप कलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं गत्वा ॐ हंसः सोहं इति मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत् । ततः पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं वज्रलाञ्छितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमण्डलं (ॐ लं) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ १ ॥ जान्वादिनाभिपर्यन्तमर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयांकितं श्वेतवर्णमपां स्थानं सोममण्डलम् (ॐ वं) इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ २ ॥ नाभ्यादिहृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमग्निमण्डलम् (ॐ रं) इति वह्निबीजाढ्यंस्मरेत् ॥ ३ ॥ हृदयादिभ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दुलाञ्छितं धूम्राभं वायुमण्डलम् (ॐ यं) बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ४ ॥ भ्रूमध्यादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रान्तं वृत्तं स्वच्छं मनोहरमाकाशमण्डलम् (ॐ हं) बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ . ॥ एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्तभूमण्डले पादेन्द्रियं १ गगनं २ घ्राणं ३ गन्धः ब्रह्मा ५ निवृत्तिः ६ समानः ७ गन्तव्यदेश ८ श्च एवमष्टौ पदार्थाश्चिन्त्याः ॥ १ ॥

इन मन्त्रों से प्रार्थना करके दक्षिण भाग में श्रीगुरुभ्यो नमः। साम भाग में ॐ गणेशाय नमः। इससे नमस्कार करके भूतशुद्धि करनी चाहिये। कुम्भक प्राणायाम में मूलाधार से कमलनाल के तन्तु के समान कुण्डलिनी परदेवता को उठा कर ब्रह्मरन्ध्र में भेज कर हृदयस्थ जीव को कलिकाकार ग्रहण करके सुषुम्नामार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में जाकर 'ॐ हंसः सोहं' इस मन्त्र से जीव को ब्रह्म से युक्त करे। इसके बाद पैर से लेकर जंघे तक चौकोर वज्रचिह्नित स्वर्णवर्ण वाले पृथिवी मण्डल का ॐ लं इस भू बीज से स्मरण करे। जंघा से नाभि पर्यन्त अर्द्धचन्द्राकार दो कमलों से अङ्कित श्वेत वर्ण युक्त जल के स्थान सोम मण्डल का ॐ वं इस वरुण बीज से स्मरण करे। नाभि से हृदयपर्यन्त त्रिकोण स्वस्तिक से अंकित रक्तवर्ण अग्निमण्डल को ॐ रं इस अग्नि बीज से स्मरण करे। हृदय से भौं पर्यन्त वृत्त षड्विन्दु से अङ्कित धूएँ के रङ्ग के वायुमण्डल का ॐ यं बीज से स्मरण करे। भ्रूमध्य से लेकर ब्रह्मरन्ध्र तक वृत्त स्वच्छ मनोहर आकाश मण्डल का ॐ हं बीज से स्मरण करे। इस प्रकार भूतों को स्मरण करके पूर्वोक्त मण्डल में १-पादेन्द्रिय, २ गगन, ३-घ्राण, ४-गन्ध, ५ ब्रह्मा, ६-निवृत्ति, ७-समान, ८-गन्तव्यदेश इन आठों पदार्थों का चिन्तन करना चाहिये।

जलमण्डले हस्तेन्द्रिय १ ग्रहण २ ग्राह्य ३ रसना ४ रस ५ विष्णु ६ प्रतिष्ठो ७ दानाः ध्येयाः ॥ २ ॥

जलमण्डल में १-हस्तेन्द्रिय, २-ग्रहण, ३-ग्राह्य, ४-रसना, ५-रस, ६-प्रतिष्ठा, ७-दान इन सात पदार्थों का चिन्तन करना चाहिये।

तेजोमण्डले पायु १ विसर्ग २ विसर्जनीय ३ चक्षू ४ रूप ५ शिव ६ विद्या ७ व्यानाः ८ ध्येयाः ॥ ३ ॥

तेजोमण्डल में १ वायु, २-विसर्ग, ३-विसर्जनीय, ४ चक्षु, ५-रूप, ६-शिव, ७-विद्या, ८-व्यान इन आठ पदार्थों का चिन्तन करना चाहिये।

वायुमण्डले उपस्था १ नन्द २ स्त्री ३ स्पर्शन ४ स्पर्श ५ ईशान ६ शान्त्य ७ पानाः ८ ध्येयाः ॥ ४ ॥

वायुमण्ण में १-उपस्थ, २-नन्द, ३-स्त्री, ४ स्पर्शन, ५ स्पर्श, ६-ईशान, ७-शान्ति, ८-अपान इन आठ पदार्थों का चिन्तन करना चाहिये।

आकाशमण्डले वाग् १ वक्तव्य २ वदन ३ श्रोत्र ४ शब्द ५ सदाशिव ६ शान्त्यतीताः ७ प्राणा ८ इत्यष्टौ चिंत्याः ॥ ५ ॥

आकाशमण्डल में १-वाक्, २ वक्तव्य, ३-वदन, ४-श्रोत्र, ५-शब्द, ६-सदाशिव, ७-शान्त्यातीत, ८-प्राण इन आठ पदार्थों का चिन्तन करना चाहिये।

एवं भूतानि सञ्चिन्त्य पूर्वपूर्वकार्यस्योत्तरोत्तरं कारणे विलापनं ब्रह्मपर्यन्तं कार्यम् तथा च :

इस प्रकार पाँचों भूतों का चिन्तन करके पूर्वापर कार्य का उत्तरोत्तर कारण में ब्रह्मपर्यन्त जप करना चाहिये। यथा :

ॐ लं फट् इत्यनेन पञ्चगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामीति जले भुवं विलापयेत् ॥ १ ॥ ॐ वं हुं फट् इति चतुर्गुणा अपोग्नौ उपसंहरामीति वह्नौ जलं विलापयेत् ॥ २ ॥ ॐ हं हुं फट् इति त्रिगुणं तेजो वायावुपसंहरामीति वह्नि वायौ विलापयेत् ॥ ३ ॥ ॐ यं हुं फट् इति द्विगुणं वायुमाकाश उपसंहरामीति वायुमाकाशे विलापयेत् ॥ ४ ॥ ॐ हं हुं फट् इत्येकगुणमाकाशमहंङ्कार उपसंहरामीत्याकाशमहङ्कारे विलापयेत् ॥ ५ ॥ ॐ अहंङ्कारं महत्तत्त्व उपसंहरामीत्यहङ्कारं महत्तत्त्वे विलापयेत् ॥ ६ ॥ ॐ महत्तत्त्वं प्रकृतावुपसंहरामीति महत्तत्त्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॥ ७ ॥ ॐ प्रकृतिमात्मन्युपसंहारामीत्यनेन मायामात्मति विलापेत् ॥८॥

एवं शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत्। तथा च वासनामयं वामकुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेय-वाहुकं मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटियुतं तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमुपपातकमस्तकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहमेवं पापपुरुषं चिन्तयित्वा पूरक-प्राणायामे (ॐ यं) इति वायुबीजेन द्वात्रिंशद्वारं[३२] षोडशवारं वा ऽावर्तितेन पापपुरुषं शोषयेत् ॥ १ ॥ ततः स्वशरीरयुतं पापं कुम्भके (ॐ रं इति बह्निबीजेन चतुःषष्टि ६४ वारमावर्तितेन तदुत्था नाग्निना दहेत् ॥ २ ॥ ततो रेचकप्राणायामे (ॐ यं) इति वायुबीजं षोडशवारं[१६] द्वात्रिंशद्वारं[३२] वा जपित्वा दक्षिणनाड्या तद्भस्म स्वशरीराद्बहि रेचयेत् ॥ ३ ॥ ततो देहोत्थं भस्म (ॐ वं) इत्युच्चारितेन सुधाबीजेन तदुत्थाऽमृतेन संप्लाव्य पश्चात् (ॐ लं) इति भूबीजेन तद्भस्म घनीभूतं पिण्डं कृत्वा कनकाण्डवद्भावयेत् ॥ ४ ॥ ततः (ॐ हं) इति आकाशबीजं जपन् तत्पिण्डं मुकुराकारं भावयित्वा तस्य मूर्द्धादिन खान्ता अवयवा मनसा रचनीयाः ॥ ५ ॥ ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशादाकाशादीनि भूतान्युत्पादयेत्। तथा च ब्रह्मणः प्रकृतिः १ प्रकृतेर्महत् २ महतोऽहङ्कारः ३ अहंकारादाकाश ४ आकाशाद्वायुः ५ वायोरग्निः ६ अग्नेरापः ७ अद्भ्यः पृथिवी ८ पृथिव्या ओषध्यः ९

ओषधीभ्योऽन्नम् १० अन्नाद्रेतः ११ रेतसः पुरुषः १२ इत्युत्पाद्य ॐ हंसः सोहम् इति मन्त्रेण ब्रह्मणेकं भूतं जीवं स्वहृदयाम्बुजे संस्थाप्य कुण्डलीं मूलाधारगतां स्मरेत् ।

इस प्रकार शुद्ध सच्चिदानन्द होकर पापपुरुष का चिन्तन करे। तदनुसार वाम कुक्षि में वासनामय काले रङ्ग का अंगूठे मात्र परिमाण वाला ब्रह्महत्यारूपी शिरवाला, स्वर्ण चुरानेवाले हाथों से युक्त, मदिरापान हृदय युक्त, गुरुतल्प हृदय युक्त इन सबों के संसर्गी पापों से युक्त दोनों पैरों वाले तथा उपपापों के शिरवाले, तलवार और ढाल धारण किये दुष्ट, अधोमुख वाले, अत्यन्त दुस्सह इस प्रकार के पाप पुरुष का चिन्तन कर पूरक प्राणायाम में ॐ यं इस बीजमन्त्र से बत्तीस बार या सोलह बार आवर्तितकर पाप पुरुष को सुखाये। इसके बाद अपने शरीर से संयुक्त पाप को ॐ रं इस अग्नि बीज से चौंसठ बार आवर्तित करके उससे प्रकट अग्नि से जलाये।

इसके बाद रेचक प्राणायाम में ॐ यं इस वायु बीज से सोलह या बत्तीस बार जप करके दक्षिण नाड़ी से उसके भस्म को अपने शरीर के बाहर रेचन करे। उसके बाद देह से उठी भस्म को ॐ वं इस उच्चरित सुधाबीज से उठे अमृत से मिश्रित करके ॐ लं इस भूबीज से उस भस्म को घनीभूत पिण्ड बनाकर उसमें स्वर्णमय अण्ड की भावना करे। उसके बाद ॐ हं इस आकाश बीज को जपते हुए उस पिण्ड को दर्पण के समान भावित करके उसके सर से लेकर नखपर्यन्त अवयवों की मन से रचना करे। इसके बाद पुनः सृष्टि मार्ग से ब्रह्मा से आकाश आदि भूतों का उत्पादन करे। यथा :

१ ब्रह्मा से प्रकृति, २ प्रकृति से महत्तत्त्व, ३-महत्तत्त्व से अहङ्कार, ४ अहङ्कार से आकाश, ५ आकाश से आयु, ६-वायु से अग्नि, ७-अग्नि से जल, ८-जल से पृथिवी, ९-पृथिवी से औषधियाँ, १०-औषधि से अन्न, ११ अन्न से वीर्य, १२ वीर्य से पुरुष, इस प्रकार उत्पादन करके ॐ हंसः सोहम्, इस मन्त्र से ब्रह्मा से एकीभूत जीव को अपने हृदयकमल में स्थापित करके मूलाधारगत कुण्डली का इस प्रकार ध्यान करे :

अथ ध्यानम् ।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवगुणमथ चाप्यंकुशं पञ्चबाणान् । बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी

प्राणशक्तिः परा नः ॥ १ ॥ इति भूतशुद्धिप्रकारः ।

एवं भूतशुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठापयेत् ।

इस प्रकार भूतशुद्धि करके अपने शरीर में अपने इष्टदेवता के प्राण की प्रतिष्ठा करे।

अथ स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रकारः ।

विनियोग : अस्य स्वप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, स्वशरीरेऽमुकदेवताप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे ॥ २ ॥ ॐ प्राणशक्त्यै नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इतिऋष्यादिन्यासः ।

षडङ्गन्यास : ॐ ङं कं खं घं गं नाभौ वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाप्राणात्मने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ नं तं थं धं दं वाक्पाणिपायूपस्थात्मने कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ मं पं फं भं बं वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ शं यं रं लं हं षं क्षं सं लं बुद्धिमनोहङ्कार चित्तात्मने अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

इति हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा नाभेरारभ्य पादान्तम् (आं) इति पाशबीजं विन्यसेत् ॥ १ ॥ हृदयादारभ्य नाभ्यन्तम् (ह्रीं) इति शक्तिबीजं न्यसेत् ॥ २ ॥ मस्तकादारभ्य हृदयान्तं (क्रौं) इति सृणिबीजं न्यसेत् ॥ ३ ॥

इस प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करके नाभि से आरम्भ कर पादान्त तक पाशबीज आं का विन्यास करे। हृदय से आरम्भ कर नाभि पर्यन्त शक्ति बीज ह्रीं का न्यास करे। मस्तक से आरम्भ कर हृदय पर्यन्त सृणिबीज क्रौं का न्यास करे। फिर

ॐ यं त्वगात्मने नमः। ॐ रं असृगात्मने नमः। ॐ लं मांसात्मने नमः। ॐ वं मेदात्मने नमः। ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः। ॐ षं मज्जात्मने नमः। ॐ सं शुक्रात्मने नमः। ॐ ह्रौं ओजात्मने नमः। ॐ हं प्राणात्मने नमः। ॐ सं जीवात्मने नमः इति दृशि हृदि विन्यसेत् ॥ ४ ॥ ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं।

इन मन्त्रों से मूर्द्धा से चरणों तक व्यापक करे। फिर

मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ जयादिपीठ-शक्तिभ्यो नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा ॐ आं ह्रीं क्रौं पीठाय नमः।

इन मन्त्रों से मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवता और पीठशक्तियों का नमन कर 'ॐ आंह्रींक्रौं पीठाय नमः' से पीठ पर प्राणशक्ति देवी का इस प्रकार ध्यान करे :

अथ ध्यानम् ।

पाशं चापासृक्कपाले सृणीपूञ्शूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णम् । रक्तोदन्वेत्पातरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम् ॥ १ ॥

इसके ध्यान करके हृदय पर हाथ रख कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसंहंक्षंहंसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः प्राण इह प्राणः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंहंसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषं-संहंक्षंहंसःह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥३॥

इति वारत्रयेण स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणं प्रतिष्ठाप्य ततः (ॐ) इति प्रणवेन १५ पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्य गर्भाधानादि-पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि इति वदेत् :

इस मन्त्र से तीन बार अपने शरीर में अपने इष्टदेवता के प्राण की स्थापना करके 'ॐ' इस प्रणव से पन्द्रह आवृत्ति करके 'मम देहस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि' यह कहे।

एवं प्रतिष्ठाप्य देवतारूपमात्मानं भावयन् प्राणायामं कृत्वा देवं यजेत् ।

इति स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

इस प्रकार देवता की प्रतिष्ठा करके अपने आपको देवतारूप की भावना करते हुये (देवो भूत्वा देवं यजेत्) प्राणायाम करके देवता का यजन करे। (जिस प्रकार पर्वतों के धातुगत दोषों को अग्नि जला देता है उसी प्रकार व्यक्ति अन्तर्गत पापों को प्राणायाम से भस्म करे) ।

इति स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रयोग

अथान्तर्मातृकान्यासः

विनियोग : अस्यान्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं

कीलकम् अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ।

इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात् । तथा च इडया अइउऋऌएऐओऔ एभिः स्वरैः पूरयेत् । पुनः कुचुटुतुपु इति वर्ग-पञ्चकेन कुम्भयेत् । पुनः यरलवशषसह एभिरष्टभिर्वर्णैः रेचयेत् । इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्यात् तथा चः

इससे जल को भूमि पर छोड़कर इस प्रकार प्राणायाम करे : इड़ा नाडी को इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ इन स्वरों से पूर्ण करे। फिर कु चु टु तु पु इन पाँचों वर्गों से कुम्भक प्राणायाम करे। फिर य र ल व श ष स ह इन आठ वर्णों से रेचक प्राणायाम करे। इस प्रकार प्राणायाम करके निम्नलिखित प्रकार से ऋष्यादिन्यास करना चाहिये।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १। ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे २। ॐ उं सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये ३। ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ४। ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ५। ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ६। ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ चंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ उंटंठंडंढंणऊं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ओंपंफंबंभंमंऔंकनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ अंयंरं लंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

स्वरन्यास : ॐ अं कंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १। ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २। ॐ उंटंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट् ३। ॐ एंतंथंदंधंनंऐंकवचाय हुं ४। ॐ ओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयायवौषट् ५। ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

फिर कण्ठस्थषोडशदल पद्म में : ॐअंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः इन षोडशस्वरों का न्यास करे ॥ १ ॥

पुनः हृदयस्थ द्वादशदल में :

वर्णन्यास : ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। इन द्वादशवर्णों का विन्यास करे ॥ २ ॥

फिर नाभि के दश दलों में :

ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। इन दशवर्णों का विन्यास करे ॥ ३ ॥

अधोलिङ्ग के षडदलों में :

ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। इति बादिलान्तषड्वर्णो का विन्यास करे॥ ४॥

गुदा में स्थित आधार के चतुर्दल में :

ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। इति वादिसांत चतुर्वर्णों का विन्यास करे॥ ५॥

ललाटस्थ द्विदल में :

ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः इन दो वर्णों का विन्यास करे॥ ६॥

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्धे चतुष्के। वासान्ते वालमध्ये डफकटसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हंक्षतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥ १॥ इत्यन्तर्मातृकान्यासः।

इस प्रकार अन्तर्मातृका न्यास करके बहिर्मातृका न्यास करे।

अथ बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः[१] :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः मातृकान्यास देवता। हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः।

इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्। तथा च

इससे जल को भूमि पर फेंक कर इस प्रकार प्राणायाम करे।

इडया अइउऋऌएऐओऔ।

इन स्वरों से इडा नाडी (वाम नासिका) से पूरक करे।

पुनः कुचुटुतुपु।

इन पञ्चवर्गों से कुम्भक करे।

पुनः यरलवशषसह।

इन अष्टवर्णों से रेचक करे।

इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्यात्। तथा च :

इस प्रकार प्राणायाम करके इस प्रकार ऋष्यादिन्यास करे :

---

१. जपार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपिंविना। कृते तद्विफलं विद्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत्। (लिपि वर्णों के न्यास बिना सभी देवों के जप विफल होते हैं। अतः पहले लिपि न्यास करना चाहिये)।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १। ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे २। ॐ उं सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदय ३। ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये[१] ४। ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ५। ॐ अंक्षंकीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ इंचंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐउंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ओंपंफंबंभंमंऔं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १। ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २। ॐ टंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट् ३। ॐ एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं ४। ॐ ओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षं अः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके मातृका न्यास करे।

मातृकान्या : ॐ अं नमः शिरसि[२] १। ॐ आं नमः मुखे २। ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे ३। ॐ ईं नमः वामनेत्रे ४। ॐ उं नमः दक्षिणकर्णे ५। ॐ ऊं नमः वामकर्णे ६। ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ७। ॐॠं नमः वामनासापुटे ८। ॐ ऌं नमः दक्षिणकपोले[३] ९। ॐॡं नमः वामकपोले[४] १०। ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११। ॐ ऐं नम; अधरोष्ठे १२। ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३। ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ १४। ॐ अं नमः मूर्द्धनि[५] १५। ॐ अः नमः मुखवृत्ते[६] १६। ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले १७। ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे १८। ॐ गं नमः दक्षिणमणिबन्धे १९। ॐघं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २०। ॐ ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१। ॐ चं नमः वामबाहुमूले २२। ॐ छं नमः वामकूर्परे २३। ॐ जं नमः वाममणिबन्धे २४। ॐ झंनमः वामहस्तांगुलिमूले २५। ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६। ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले २७। ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनि २८। ॐ डं नमः दक्षिणगुल्फे २९। ॐ ढं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३०। ॐ णं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१। ॐ तं नमः वामपादमूले ३२। ॐ थं नमः वामजानुनि ३३। ॐ दं नमः वामगुल्फे ३४। ॐ धं नमः वामपादांगुलिमूले ३५। ॐ नं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६। ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे ३७।

---

१ स्त्रीलिङ्गपूजन में स्त्रीलिङ्ग का न्यास करे।

२ तन्त्रसार के अनुसार ललाटे। ३ दक्षिणगण्डे। ४ बामगण्डे। ५ कण्डे इति वा पाठः। ६ जिह्वाग्रे।

ॐ फं नमः वामपार्श्वे ३८ । ॐ वं नमः पृष्ठे ३९ । ॐ भं नमः नाभौ ४० । ॐ मं नमः उदरे ४१ । यं त्वगात्मने नमः हृदि ४२ । ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ४३ । ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ४४ । ॐ वं मेदआत्मने नमः वामांसे ४५ । ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६ । ॐ पं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७ । ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि-दक्षपादान्तम् ४८ । ॐ हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तम् ४९ । ॐ लं परमात्मने नमः जठरे[1] ५० । ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ५१ ।

इति विन्यस्य ध्यायेत् ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोः पत्संधिवक्षस्स्थलां भास्वन्मौलि-निबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् । मुद्रामक्षगुणं सुदाढ्यं कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥ १ ॥
इति बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ।

अथ सृष्टिक्रमः ।

तत्र तु विसर्गान्वितः प्रणवपुटितो वा मायालक्ष्मी बीजपूर्वो वा वाग्भवाद्यो वा न्यस्तव्यः । तत्र वाग्भवाद्यो यथा :

सृष्टिक्रम : उसमें विसर्गान्वित प्रणवपुटित या मायालक्ष्मी बीज पूर्व या वाग्भवादि बीज का न्यास करे । यहाँ वाग्भवादि का न्यास इस प्रकार है ।

ऐं अं नमः जिह्वाग्रे १ ऐं अः नमः कण्ठे २ ऐं कं नमः दक्षिणबाहुमूले ३ ऐं खं नमः दक्षिणकूर्परे ४ ऐं गं नमः दक्षिणमणिबन्धे ५ ऐं घं नमः दक्षिण-हस्तांगुलिमूले ६ ऐं ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे ७ ऐं चं नमः वामबाहुमूले ८ ऐं छं नमः वामकूर्परे ९ ऐं जं नमः वाममणिबन्धे १० ऐं झं नमः वाम-हस्तांगुलिमूले ११ ऐं ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १२ ऐं टं नमः दक्षिणपादमूले १३ ऐं ठं नमः दक्षिणजानुनि १४ ऐं डं नमः दक्षिणगुल्फे १५ ऐं ढं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले १६ ऐं णं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे १७ । ऐं तं नमः वाम-पादमूले १८ ऐं थं नमः वामजानुनि १९ ऐं दं नमः वामगुल्फे २० ऐं धं नमः वामपादांगुलिमूले २१ ऐं नं नमः वामपादांगुल्यग्रे २२ ऐं पं नमः दक्षिण-पार्श्वे २३ ऐं फं नमः वामपार्श्वे २४ ऐं बं नमः पृष्ठे २५ ऐं भं नमः नाभौ २६ ऐं मं नमः उदरे २७ ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि २८ ऐं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे २९ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि ३० ऐं वं मेदआत्मने नमः

१ मतान्तरे हृदयान्मस्तकान्तम् ।

वामांसे ३१ ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षभुजान्तम् ३२ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामभुजान्तम् ३३ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि-दक्षपादान्तम् ३४ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तम् ३५ ऐं लं परमात्मने नमः हृदयादिमस्तकान्तम् ३६ इति विन्यसेत् ।

इति सृष्टिक्रमः ।

अथ स्थितिक्रमः ।

स्थितिक्रम : उसमें पहले इस प्रकार ध्यान करे ।

सिन्दूरकान्तिमसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधानाम् । पार्श्वस्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गीं ध्यायेत्कराब्जधृत-पुस्तकवर्णमालाम् ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके न्यास करे ।

टंठंडं नमः ललाटे १ टंठंडं नमः मुखवृत्ते २ टंठंडं नमः दक्षनेत्रे ३ टंठंडं नमः वामनेत्रे ४ टंठंडं नमः दक्षकर्णे ५ टंठंडं नमः वामकर्णे ६ टंठंडं नमः दक्षनासायाम् ७ टंठंडं नमः वामनासायाम् ८ टंठंडं नमः दक्षगण्डे ९ टंठंडं नमः वामगण्डे १० टंठंडं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ टंठंडं नमः अधरोष्ठे १२ टंठंडं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३ टंठंडं नमः अधोदन्तपंक्तौ १४ टंठंडं नमः शिरसि १५ टंठंडं नमः मुखे १६ टंठंडं नमः जिह्वाग्रे १७ टंठंडं नमः कण्ठदेशे १८ टठडं नमः दक्षिणबाहुमूले १९ टंठंडं नमः दक्षिणकूर्परे २० टंठंडं नमः दक्षिणमणिबन्धे २१ टंठंडं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २२ टंठंडं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २३ टंठंडं नमः वामबाहुमूले २४ टंठंडं नमः वामकूर्परे २५ टंठंड नमः वाममणिबन्धे २६ टंठड नमः वामहस्तांगुलिमूले २७ टंठडं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २८ नमः टंठंड दक्षिणपादमूले २९ टंठंडं नमः दक्षिणजानुनि ३० टंठंडं नमः दक्षिणगुल्फे ३१ टंठंडं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३२ टंठंडं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३३ टंठडं नमः वामपादमूले ३४ टंठंड नमः वामजानुनि ३५ टंठडं नमः वामगुल्फे ३६ टंठंड नमः वामपादांगुलिमूले ३७ टंठड नमः वामपादांगुल्यग्रे ३८ टंठडं नमः दक्षपार्श्वे ३९ टंठंड नमः वामपार्श्वे ४० टंठंडं नमः पृष्ठे ४१ टंठंड नमः उदरे ४२ टंठंडं नमः हृदये ४३ टंठंडं नमः दक्षांसे ४४ टंठंड नमः ककुदि ४५ टंठंडं नमः वामांसे ४६ टंठड नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४७ टंठंड नमः हृदयादि-वामहस्तान्तम् ४८ टंठंडं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ४९ टंठंडं नमः हृदयादि-वामपादान्तम् ५० टंठंडं नमः हृदयादिमस्तकान्तम् ५१ । इति विन्यसेत् ।

इतिस्थितिक्रमः ।

अथ संहारक्रमः।

संहारक्रम : उसमें पहले इस प्रकार ध्यान करना चाहिये।

अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।
अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासांवर्णेश्वरीं च प्रणुमस्स्तनभारखिन्नाम् ॥१॥

इससे ध्यान करके न्यास करे।

ॐ क्षं नमः ललाटे १ ॐ हं नमः मुखवृत्ते २ ॐ सं नमः दक्षनेत्रे ३ ॐ षं नमः वामनेत्रे ४ ॐ शं नमः दक्षकर्णे ५ ॐ वं नमः वामकर्णे ६ ॐ लं नमः दक्षनासायाम् ७ ॐ रं नमः वामनासायाम् ८ य नमः दक्षगण्डे ९ ॐ मं नमः वामगण्डे १० ॐ भं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ ॐ वं नमः अधरोष्ठे १२ ॐ फं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३ ॐ पं नमः अधोदन्तपंक्तौ १४ ॐ नं नमः शिरसि १५ ॐ धं नमः मुखे १६ ॐ दं नमः दक्षिणबाहुमूले १७ ॐ थं नमः दक्षिणकूर्परे १८ ॐ तं नमः दक्षिणमणिबन्धे १९ ॐ णं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २० ॐ ढं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१ ॐ डं नमः वामबाहुमूले २२ ॐ ठं नमः वामकूर्परे २३ ॐ टं नमः वाममणिबन्धे २४ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ ॐ झं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६ ॐ जं नमः दक्षिणपादमूले २७ ॐ छं नमः दक्षिणजानुनि २८ ॐ चं नमः दक्षिणगुल्फे २९ ॐ ङं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३० ॐ घं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१ ॐ गं नमः वामपादमूले ३२ ॐ खं नमः वामजानुनि ३३ ॐ कं नमः वामगुल्फे ३४ ॐ अः नमः वामपादांगुलिमूले ३५ ॐ अं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ ॐ औं नमः दक्षपार्श्वे ३७ ॐ ओं नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ ऐं नमः पृष्ठे ३९ ॐ एं नमः नाभौ ४० ॐ लॄं नमः उदरे ४१ ॐ लृं नमः हृदये ४२ ॐ ॠं नमः दक्षांसे ४३ ॐ ऋं नमः नमः ककुदि ४४ ॐ ऊं नमः वामांसे ४५ ॐ उं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६ ॐ ईं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७ ॐ इं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ४८ ॐ आं आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तम् ४९ ॐ अं परमात्मने नमः हृदयादिमस्तकान्तम् ५० इति विन्यसेत्। इति संहारक्रमः।

इति न्यासं कृत्वा विष्णुमन्त्रे विष्णुकलामातृकान्यासः[1] १ शैवमन्त्रे

---

१ आगमोक्तेन विधिना नित्यं न्यासं करोति यः। देवताभावमाप्नोति मन्त्रसिद्धिः प्रजायते। न्यासांगुलीनियमस्तु यामले-हृदयं मध्यमानामतर्जनीभिः स्मृतं शिरः। मध्यमातर्जनीभ्यां स्यादंगुष्ठेन शिखा स्मृता। दशभिः कवचं प्रोक्तं तिसृभिर्नेत्रमीरितम्। अस्त्रादिद्वयं प्रोक्तं तदा तर्जनीमध्यमे इति।

श्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासः २ गणेशमन्त्रे गणेशकलामातृकान्यास ३ देवीमन्त्रे देवीकलामातृकान्यासः ४ सूर्यमन्त्रे सूर्यकलामातृकान्यासः ५ एवं तत्तत्प्रयोगेणावलोक्य न्यासं कुर्यात्। ततः ऋष्यादिन्यासं करन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च प्रयोगोक्तं कृत्वा मूलदेवतां ध्यात्वा ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सर्वाङ्गे व्यापकं कृत्वा पीठपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार न्यास करके विष्णु मन्त्र में विष्णुकलामातृका न्यास १, शैव मन्त्र में श्रीकण्ठादिकलामातृका न्यास २, गणेश मन्त्र में गणेशकला मातृका न्यास ३, देवी मन्त्र में देवीकलामातृकान्यास ४, सूर्य मन्त्र में सूर्यकलामातृकान्यास ५, इस प्रकार तत्तत्प्रयोगो का अवलोकन करके न्यास करे। फिर प्रयोगोक्त ऋष्यादि न्यास, करन्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास करके मूल देवता का ध्यान करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः' से सर्वाङ्ग में व्यापक करके पीठपूजा करे।

अथ पीठपूजाप्रयोगः।

पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले प्रयोगोक्तमण्डले वा तन्मध्ये मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थापयेत्। तत्र क्रमः :

पीठपूजाप्रयोग : पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में अथवा प्रयोगोक्त मण्डल के बीच में मण्डूकादि से लेकर परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करे। उसमें क्रम यह है :

पुष्प और अक्षत लेकर : स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः। दक्षिणे गणपतये नमः। मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः।

इस प्रकार नमस्कार करके पीठ के बीच में :

ॐ मं मण्डूकाय नमः १ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः २ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॐ कूं कूर्माय नमः ४ ॐ अं अनन्ताय नमः ५ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ६ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ७ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ८ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ९ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १० ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ११ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १२। आग्नेयाम् : ॐ धं धर्माय नमः १३। नैर्ऋत्याम् : ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १४। वायव्याम् : ॐ वैं वैराग्याय नमः १५। ऐशान्याम् : ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः १६। पूर्वे : ॐ अं अधर्माय नमः १७। दक्षिणे : ॐ अं अज्ञानाय नमः १८। पश्चिमे : ॐ अं अवैराग्याय नमः १९। उत्तरे : ॐ अं अनैश्वर्याय नमः २०। पुनः पीठमध्ये : ॐ आं आनन्दकन्दाय

नमः २१ ॐ सं सविन्नालाय नमः २२ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः २३ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २४ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २५ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २६ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः २७ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः २८ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः २९ ॐ सं सत्त्वाय नमः ३० ॐ रं रजसे नमः ३१ ॐ तं तमसे नमः ३२ ॐ आं आत्मने नमः ३३ ॐ पं परमात्मने नमः ३४ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ३५ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३६ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३७ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ३८ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३९ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४० ।

इन मन्त्रों से पीठदेवताओं की स्थापना करके प्रयोगोक्त नवपीठशक्तियों की पूजा करे ।

अथ यात्रा साधनप्रयोगः ।

तत्रादौ कलशस्थापनप्रयोगः : देवदक्षिणतः त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां ह्रीं विलिख्य ॐह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य मूलेन फट् इति मन्त्रेण त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोण मध्ये संस्थाप्य मूलेन नमः इति सम्पूजयेत् । ततः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण ताम्रादिकलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति मन्त्रेणापूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूजयेत् । इति कलशस्थापन-प्रयोगः १ ।

यात्रासाधनप्रयोग : उसमें पहले कलशस्थापन प्रयोग इस प्रकार करे :

देवता के दक्षिण ओर त्रिकोण मण्डल बनाकर जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के अन्दर माया (ह्रीं) लिख कर ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इस मन्त्र से पूजा करके मूल मन्त्र के साथ 'फट्' लगाकर त्रिपदाधार का प्रक्षालन करके त्रिकोण के मध्य में रख कर मूल मन्त्र के साथ नमः लगाकर पूजा करे । इसके बाद सुदर्शनाय फट् इस मन्त्र से ताम्रादि के कलश को साफ करके आधार के ऊपर दोनों हाथों से स्थापित करके रक्तवस्त्र, माला आदि से उसे भूषित करके मूलमन्त्र के साथ नमः इस मन्त्र से पूरा करके ॐभूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इससे वरुण का आवाहन करके उसके मध्ये अपने इष्ट देवता का ध्यान करके गन्ध, अक्षत और फूलों से पूजा करे ।

इति कलश स्थापन

अथ त्रिरर्घ्यस्थापनं तत्रादौ शङ्खस्थापनम् :

देवतामतः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मन्त्रेण सम्पूजयेत् ततः मूलेन फट् इति त्रिपदमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ॐ मं वह्नि-मण्डलाय दशकलात्मने अमुकपात्रासनाय नमः इत्याधारं सम्पूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत् ।

तीन अर्घ्यों की स्थापना : प्रारम्भ में शङ्ख की स्थापना करनी चाहिये । देवता के बायें तरफ त्रिकोण मण्डल बनाकर जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के भीतर माया (ह्रीं) को लिखकर ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इस मन्त्र से पूजा करे । उसके बाद मूलमन्त्र के साथ फट् लगाकर त्रिपद आधार का प्रक्षालन करके त्रिकोण के मध्य स्थापित करके 'ॐ मं वह्नि मण्डलाय दशकलात्मने अमुक पात्रासनाय नमः' से आधार की पूजा करके आधार पर पूर्वादि क्रम से अग्नि की दशकलाओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ यं धूम्रार्चिषै नमः १ ॐ रं ऊष्मायै नमः २ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ३ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ४ ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ५ ॐ षं सुश्रियै नमः ६ ॐ सं सुरूपायै नमः ७ ॐ हं कपिलायै नमः ८ ॐ लं हव्यवाहायै नमः ९ ॐ क्षं काव्यवाहायै नमः १० ।

इति पूजयेत् । तत. ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्च-जन्याय नमः । इति मन्त्रेण क्षालितं शङ्खमाधारोपरि संस्थाप्य ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने अमुकपात्राय नमः इति शङ्खं सम्पूज्य पात्रे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत् तथा च :

इस प्रकार पूजा करने के बाद 'ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्चजन्याय नमः' इस मन्त्र से प्रक्षालित शङ्ख को आधार पर स्थापित करके 'ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने अमुक पात्राय नमः' इस मन्त्र से शङ्ख की पूजा करके अपने आगे प्रदक्षिणा क्रम से द्वादश सूर्यकलाओं का इस प्रकार पूजन करे :

ॐ कंभं तपिन्यै नमः १ ॐ खंबं तापिन्यै नमः २ ॐ गंफं धूम्रायै नमः ३ ॐ घंपं मरीच्यै नमः ४ ॐ ङंनं ज्वालिन्यै नमः ५ ॐ चंधं रुच्यै नमः ६ ॐ छंदं सुषुम्नायै नमः ७ ॐ जंखं भोगदायै नमः ८ ॐ झंतं विश्वायै नमः ९ ॐ ञंणं बोधिन्यै नमः १० ॐ टंढं धारिण्यै नमः ११ ॐ ठंडं क्षमायै नमः १२ इस प्रकार पूजा करके :

ॐ क्षंलंहंषंशंसंवंलंरंयंमंभंबंफंपंनंधंदंथंतंणंढंडंठंटंञंझंजंछंचंङंघंगंखंकं अः अंऔंओंऐंएंॡंऌंॠंऋंऊंउंईंइंआंअं इत्येकाधिकपञ्चाशद्विलोममातृकामुच्चार्य मूलेन नमः इति मन्त्रेण शङ्खे जलमापूर्य ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने अमुकपात्रामृताय नमः इति गन्धादिभिः सम्पूज्य जले षोडश चन्द्रकलाः पूजयेत् तथा च।

'ॐ क्षं लं हं षं·······आं अ' इन ५१ विलोम मातृकाओं का उच्चारण करके 'मूलेन नमः' लगाकर इस मन्त्र से शङ्ख में जल भरके 'ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने अमुक पात्रामृताय नमः' इससे गन्धादि का पूजन करके जल में षोडश चन्द्रकलाओं का इस प्रकार पूजन करे :

ॐ अं अमृतायै नमः १ ॐ आं मानदायै नमः २ ॐ इं पूषायै नमः ३ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ४ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ५ ॐ ऊं वृत्यै नमः ६ ॐ ऋं धृत्यै नमः ७ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ८ ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः ९ ॐ ॡं कान्त्यै नमः १० ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ११ ॐ ऐं श्रियै नमः १२ ॐ ओं प्रीत्यै नमः १३ ॐ औं अङ्गदायै नमः १४ ॐ अं पूर्णायै नमः १५ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः १६।

इस प्रकार पूजन करके इन मन्त्रों से प्रार्थना करे :

ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती॥ १॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत्॥ २॥ इत्यभिमन्त्र्य प्रार्थयेत्। तथा च ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते॥ १॥

इस प्रकार प्रार्थना करके :

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्।

इस शङ्ख गायत्री का आठ बार जप करके शङ्ख मुद्रा प्रदर्शित करे। इति शङ्ख स्थापन।

ततो देवस्याग्रे आर्घ्यं देवदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रं च एवमेव विधिना संस्थापयेत्। (शिवसूर्यार्चने शङ्खस्थाने ताम्रादिपात्रं स्थापयेत्)।

इसके बाद देवता के आगे अर्घ्यपात्र और देवता के दाहिने प्रोक्षणीपात्र की इसी विधि से स्थापना करे। (शिव और सूर्य के अर्चन में शङ्खस्थान पर ताम्रादि के पात्र की स्थापना करे।) इति त्रियस्थापन।

ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रम् १ गुरुपात्रम् २ देवपात्रम् ३ शक्तिपात्रम् ४ योगिनीपात्रम् ५ भोगपात्रम् ६ वीरपात्रम् ७ आत्मपात्रम्

८ बलिपात्रम् ९ एतानि नवपात्राणि पूर्ववत् संस्थाप्य दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्का इति चत्वारि पात्राणिपूर्ववत् संस्थापयेत्। अशक्तश्चेद् गुरुवीरात्मबलिभोगा इति पञ्च पात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत्। तत्राप्यशक्तश्चेत्तदैकमेव शङ्खं संस्थापयेत्।

फिर विशेषार्घ के बायें १. श्रीपात्र, २. गुरुपात्र, ३. देवपात्र, ४. शक्तिपात्र, ५. योगिनीपात्र, ६. भोगपात्र, ७. वीरपात्र, ८. आत्मपात्र, ९. बलिपात्र इन नव पात्रों को पूर्ववत् स्थापित करके दक्षिण में पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय और मधुपर्क के चार पात्रों की पूर्ववत् स्थापना करे। इनमें शअक्त होने पर गुरु, वीर, आत्म, बलि और भोग इन पांच पात्रों की ओर पाद्यादि के उपचारार्थ केवल एक पात्र की स्थापना करे। इन सब में भी अशक्त होने पर एकमात्र शङ्ख की ही स्थापना करे।

अथ घण्टास्थापनम्। देवदक्षिणतः घण्टां संस्थाप्य नान्दं कृत्वा पूजयेत् तद्यथा।

घण्टास्थापन : देवता के दक्षिण में घण्टा स्थापित करके उसे बजाकर इस प्रकार पूजन करे। (देवों के आगमार्थ और राक्षसों के गमनार्थ पहले घण्टानाद करना और फिर घण्टा का पूजन करना चाहिये)।

ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि इत्यावाह्य 'जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा।'

इस मन्त्र से घण्टा में स्थित गरुड और घण्टा की पूजा करके गरुडमुद्रा प्रदर्शित करे। इति घण्टास्थापन।

ततः गन्धाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे स्थापयेत्।

फिर पूजा के उपकरणार्थ गन्ध, अक्षत, पुष्पादि अपने दाहिने बगल में रखकर मूल मन्त्र में नमः लगाकर जल से प्रोक्षण करके जल के लिये एक बृहत्पात्र, व्यञ्जन, छत्र और चमर आदि बायें ओर रक्खे।

अथाखण्डदीपस्थापनम्। देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं च स्थापयेत्। तत्र क्रमः।

अखण्डदीपस्थापन : देवता के दाहिने घी का दीप तथा बायें तेल का दीप स्थापित करे। (घृतयुक्त दीप दाहिने और तैलयुक्त दीप बाँये रखना चाहिये। दाहिने सफेद बत्ती और बाँये लाल बत्ती डालना चाहिये)। इसमें क्रम यह है :

दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाऽऽपूर्य मन्त्रवर्णतन्तुभिर्वर्ति निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शन मन्त्रेण घृतदीपं पूजयेत् । तत्र मन्त्रः :

दीपपात्र में गाय का घी या तेल भर कर मन्त्र के वर्णों की संख्या के अनुरूप धागों की बत्ती बनाकर दीपक में डालकर प्रणव से उसे प्रज्वलित करके सुदर्शन मन्त्र से घृत दीप की पूजा करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ रांरींरूंरैंरौंरः ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा" ।

इस मन्त्र से गन्ध, पुष्पादि से पूजन करे।

तैलदीपं पाशुपतास्त्र मन्त्रेण पूजयेत् । तत्र मन्त्रः :

तेल के दीप की पशुपतास्त्र मन्त्र से पूजा करे। मन्त्र यह है :

'ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा' ।

इस मन्त्र से गन्ध, पुष्पादि से पूजन करे।

इति सम्पूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मन्त्रं पठेत् तथा च :

इस प्रकार पूजा करके दोनों हाथ से दीपशिखा का स्पर्श करके यह मन्त्र पढ़े :

ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा।

इति मन्त्रं पठित्वा पश्चात्तत्तेज आत्मने समर्प्य ततो वाक्कायचित्त-शोधनं कुर्यात् ।

इस मन्त्र को पढ़ने के पश्चात् उस तेज को अपने में समर्पण करके वाक्, काया तथा चित्त का इस प्रकार शोधन करे :

ॐ हुं फट् स्वाहेति मुखे । ॐ रक्षरक्ष हुं फट स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय आम् इति मन्त्रेण चन्दनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय ।

'ॐ हुं स्वाहा' से मुख का तथा 'ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा' इससे हृदय पर हाथ रखकर आत्मरक्षा का विधान करके 'आं' इस मन्त्र से चन्दन और पुष्प को हाथ से मसल कर पुष्प और अक्षत लेकर :

ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥ १ ॥

इति मन्त्रेणैशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचमेत् । ततः कूर्ममुखे स्वनामाक्षरस्थितकोष्ठे वा दीपं संस्थाप्य पूजनं कुर्यात् ।

इस मन्त्र से ईशान दिशा में दूर पुष्प फेंक कर हाथ धो कर आचमन करे। फिर कूर्म के मुख में या स्वनामाक्षर वाले कोष्ठ में दीप की स्थापना

करके पूजन करे।

अथ पूजाप्रकारः । तत्रादावग्न्युत्तारणं प्रयोगः ।

पूजा प्रकार : पहले अग्न्युत्तारण प्रयोग :

आचम्य प्राणानायम्य :

आचमन तथा प्राणायाम करके इस प्रकार संकल्प करे :

देशकलौ संकीर्त्य अमुकदेवतानूतनयन्त्रमूर्तीनां टङ्कघनादिदोष-परिहारार्थमग्न्युत्तारणं करिष्ये :

इति संकल्प्य[1] स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चाधोलिखितमन्त्रैः कुर्यात् ।

इस प्रकार संकल्प करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर उसपर घी का मर्दन करके उसपर दूध तथा जल की धारा निम्नलिखित मन्त्रों से देवे :

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाऽग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्यंᳬ शिवो भव ॥१॥ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि । पावकोऽअऽअस्मभ्यᳬ शिवो भव ॥ २ ॥ उपजभ्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा । अग्न्ये पित्तमपामसि । मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णᳬ शिवं कृधि ॥ ३ ॥ अपामिदन्थयनᳬ समुद्रस्य निवेशनम् । अन्यांस्तेऽस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यᳬ शिवो भव ॥४॥ अग्न्ये पावक रोचिषा मन्द्रया देवजिह्वया । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाऽइहावह । उप यज्ञᳬ हविश्च नः ॥ ६ ॥ पावकया यश्चितयन्त्या कृपाक्षामन्रुरुचऽउषसो न भानुना । तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणोऽअजरः ॥७॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिचषे । अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यᳬ शिवो भव ॥८॥ नृषदे वेट् अप्सुषदेवेट बर्हिषदे वेट् । बनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥ ९ ॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाᳬ संवत्सरीणमुप भागमासते । अहुतादों हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥ ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ये

[1] लिङ्गस्थां पूजयद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च । मण्डलस्थां महामायां यन्त्रस्थां प्रतिमासु च । सौवर्णे राजते ताम्रे पट्टे भूर्जेथ वा भुवि । विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति । अन्यत्रापि : यन्त्रमित्याहुरेतस्मिन्देवः प्रीणाति पूजितः । विना यन्त्रेण पूजायां देवता न प्रसीदति । यन्त्रं मन्त्रमयं प्रोक्तं मन्त्रात्मा देवतेति च । देहात्मनोर्यथा भेदो मन्त्रदेवतयोस्तथा ।

ब्रह्मणः पुरएतारोऽस्य। येभ्यो नऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥११॥ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यव्यठं शिवो भव ॥१२॥

इत्यग्न्युत्तारणं कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य मूलमन्त्रोक्तासनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात्।

इस प्रकार अग्न्युत्तारण करके स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर मूलमन्त्रोक्त आसन मन्त्र से पुष्पादि आसन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः। देशकालौ संकीर्त्य ममामुकदेवतानूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति :

यह संकल्प करके प्राणप्रतिष्ठा करे :

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि। क्रियामयवपुः प्राणाख्य देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रां कीलकम्। अस्मिन्नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर फिर :

करेणाच्छाद्य ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्याऽमुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः। पुनः ॐ आं ह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसं हंसः सोहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः। पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठ करके :

यः प्राणतोनिमिषतो महित्वे विधेम इति सन्निति त्रिवारं पठेत्। मनोजूतिर्जूषताम·······प्रतिष्ठ इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन अमुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि इति वदेत्। ततः :

'यः प्राणतोनिमिषतो महित्वे विधेम' इसको तीन बार पढ़े फिर 'मनोजूतिर्जूषता·······प्रतिष्ठ' यह कहकर संस्कार की सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव की आवृत्ति करके 'अनेन अमुकदेवतासपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान्सम्पादयमि' यह कहे। इसके बाद :

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

इससे एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके मूलदेवता का ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन करे।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

पाद्यादिपूजन : अक्षत लेकर :

देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित। यावत्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ भगवन्[१] देव स्थाने चात्र स्थितो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ २ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥

इससे अक्षतों को फेंक कर आवाहनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इत्यावाहन।१

तवेयं महिमामूर्त्तिस्तस्यां त्वं सर्वग प्रभो। भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुकदेव इहतिष्ठ ॥ २ ॥

इससे अक्षतों को फेंक कर स्थापनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति स्थापन।२।

अनन्या तव देवेश मूर्त्तिशक्तिरियं प्रभो। सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्त्यानुग्रहतत्परः ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवते इह सन्निधेहि।

इससे अक्षतों को फेंक कर सन्निधापनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सन्निधापन ॥ ३ ॥

आज्ञया तव देवेश कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे। आत्मानन्दैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इह सन्निरुध्य :

इससे अक्षतों को फेंक कर सन्निरोधनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सन्निरोधन ॥ ४ ॥

---

१ यहाँ अपने इष्टदेवता के नाम का उच्चारण करे। एक देवता का आवाहन करके किसी अन्य देवता की अर्चना करनेवाला चञ्चलमानस साधक दोनों का शाप प्राप्त करता है।

अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च । यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवता इह सम्मुखो भव ।

इससे अक्षतों को फेंक कर सम्मुखीकरण मुद्रा प्रदर्शित करे । इति सम्मुखीकरण ॥ ५ ॥

अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते । स्वतेजः पञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव अवगुण्ठितो भव ।

इससे अक्षतों को फेंककर अवगुण्ठिनी मुद्रा प्रदर्शित करे । इत्यवगुण्ठन।६

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये । तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च मे ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐभूर्भुवः स्वः अमुकदेवते सुस्वागतं समर्पयामि।इति सुस्वागतम्।७।

इससे सुस्वागत करे। इति सुस्वागत ॥ ७ ॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते । आसनं दिव्यमीशानाद्दास्येहं परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आसनं समर्पयामि ॥ ८ ॥

इससे आसन देकर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करे :

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः । प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ ८ ॥

इससे प्रार्थना करके पाद्यादि उपचारों से इस प्रकार पूजा करे ।

यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्दविग्रह । तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पाद्यं समर्पयामि ।

इससे सामान्य अर्घोदक से या शङ्ख से पाद्य देवे । इति पाद्य ॥ ९ ॥

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् । तापत्रय विनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि ॥ १० ॥

इससे अर्घोदक से अर्घ्यं देवे । इत्यर्घ्यम् ॥ १० ॥

सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने । मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि इति मधुपर्कम् ॥ ११ ॥

वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने । आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनम् ॥ १२ ॥

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय । सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः इति सुगन्धतैलं समर्पयामि । इति सुगन्धतैलम् ॥ १३ ॥

ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदा जलैः । स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः जलस्नानं समर्पयामि । इति जलस्नानम् ॥ १४ ॥

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि । इति पयः स्नानं ॥ १५ ॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि । इति दधिस्नानम् ॥१६॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि । इति घृतस्नानम् ॥ १७ ॥

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि । इति मधुस्नानम् ॥ १८ ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः शर्करोदकस्नानं समर्पयामि । इति शर्करोदकस्नानम् ॥ १९ ॥

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । इति पञ्चामृतस्नानम् ॥ २० ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् । चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । इति गन्धोदकस्नानम् ॥ २१ ॥

इति स्नापयित्वा पूर्वोक्तशुद्धोदकस्नानं कारयेत् । एवं स्नानं समर्प्य शिवसूर्यातिरिक्तदेवेषु शङ्खेन तत्तन्मूलमन्त्रेण यथाशक्त्याभिषेकं कृत्वा ॐ अनेन अभिषेककर्मणाऽमुकदेवता प्रीयताम् इति समर्प्य आचमनं दद्यात् । ततः :

इस प्रकार स्नान कराकर पूर्वोक्त शुद्ध जल से स्नान कराये । इस प्रकार स्नान समर्पित करके शिव तथा सूर्य से अतिरिक्त देवताओं का तत्तत् मूलमन्त्र

से शङ्ख द्वारा यथाशक्ति अभिषेक करके 'ॐ अनेन अभिषेक कर्मणाऽमुकदेवता प्रीयताम्' इससे समर्पण कर आचमन देवे । फिर :

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि । इति वस्त्रम्[1] ॥ २२ ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । इति यज्ञोपवीतम् ॥ २३ ॥

इससे यज्ञोपवीत देवे (स्त्रीपूजन में इसे न दे) । इति यज्ञोपवीत ॥२३॥

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रित शिव । भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चित ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

अमुकदेवाय नमः आभूषणं समर्पयामि इत्युक्त्वा दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकाग्रिमकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् । इत्याभूषणम् ॥ २४ ॥

'अमुकदेवाय नमः आभूषणं समर्पयामि' यह कह कर दाहिने हाथ के अँगूठे में अनामिका को लगाकर इस मुद्रा से भूषणादि देवे । इत्याभूषण ॥२४॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

अंगुष्ठकनिष्ठामूललग्ना गन्धमुद्रा: । इति गन्धम् ॥ २५ ॥

अँगूठे को कनिष्ठा मूल में लगाकर गन्ध मुद्रा से गन्ध देवे । (शक्ति को रक्त चन्दन देवे) । इति गन्ध ॥ २५ ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।

---

१ पीतं विष्णौ सितं शम्भौ रक्तं विघ्नार्कशक्तिषु । सच्छिद्रमलिनं जीर्णा त्यजत्तैलादिदूषितम् ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः अक्षतान्समर्पयामि ।

इससे सभी उँगलियों से अक्षत देवे ॥ २६ ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पुष्पं समर्पयामि :

तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा ॥ २७ ॥ इति पुष्पम् ।

तर्जनी को अँगुष्ठ मूल में लगाकर पुष्प मुद्रा से पुष्प देवे । इति पुष्प ॥ २७ ॥ (पत्र, पुष्प, फल आदि अधोमुख कभी न दे । पुष्पांजलि में इनके ऊपर-नीचे होने पर दोष नहीं होता) ।

एवं पुष्पान्तं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तामावरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः :

इस प्रकार पुष्पदान पर्यन्त पूजा करके देवता की आज्ञा से प्रयोगोक्त आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है :

पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय च ॥ १ ॥

यह पढ़कर देवता पर पुष्पांजलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे ।

इत्याज्ञां गृहीत्वा पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राचीः तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण प्रयोगोक्तावरणपूजां कुर्यात् तत्र क्रमशः । श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुद्धरेत् । पूजयामि नमः पश्चात् पूजयेदङ्गदेवताः । इत्युच्चरन् आवरणदेवताः पूजयेत् । तत्सर्वं तत्तत्प्रयोगे ज्ञेयम् ।

इस प्रकार आज्ञा लेकर पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है : पहले श्रीपद (अङ्गदेवता का नाम) रख कर फिर 'पादुकां' पद रख कर 'पूजयामि तर्पयामि नमः' यह पद कहे । इस प्रकार कहते हुये आवरण देवताओं की पूजा करे । यह सब तत्तत् प्रयोगों में जानना चाहिये ।

अथ धूपादिपूजनम् । फडिति धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशाङ्गं दत्वा घण्टां वादयन् ।

धूपादिपूजन : 'फट्' से धूपपात्र का प्रोक्षण करके 'नमः' से गन्ध और पुष्पों की पूजा करके सामने रखकर 'रं' इस अग्निबीज से अग्नि की स्थापना करके उसके ऊपर मूलमन्त्र से दशाङ्ग देकर घण्टा बजाते हुए :

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः धूपं समर्पयामि ।

इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति धूपम् ॥ २८ ॥

इसे पढ़कर देवता के वामभाग में धूप पात्र रख कर तर्जनी मूल में अँगूठे का योग करके धूप मुद्रा दिखावे । (धूप दाहिने हाथ से देवता के नाभि देश में दिखाना चाहिये) । इति धूप ॥ २८ ॥

ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मन्त्राक्षरतन्तुभिर्वर्त्तीनिःक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयन् ।

इसके बाद गाय का घी दीप में भरकर मन्त्रवर्णसंख्यक तन्तुओं से बत्ती बनाकर उसमें रक्खे तथा प्रणव से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से पैर पर्यन्त दीप दिखाते हुये :

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः । सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः दीपं समर्पयामि ।

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शङ्खजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति दीपम् ॥ २९ ॥

यह पढ़कर देवता के दक्षिण भाग में दीप को रखकर शङ्ख का जल गिराकर मध्यमा अँगुली को अँगूठे में लगाकर दीप मुद्रा दिखाये ।

इति दीप ॥ २९ ॥

ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इति मन्त्रेण अर्घ्यजलेन सम्प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य

(ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्ने वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले (ॐ वं) इत्यमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिण-करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा ।

इसके बाद देवता के आगे या देवता के दक्षिण जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर स्वर्णादि से निर्मित भोजनपात्र रखकर उसके बीच में षड्रसों से युक्त विविध प्रकार के भोजन या नैवेद्य रखकर 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र से अर्घ्य जल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से देखकर अधोमुख दाहिने हाथ पर उसी प्रकार बाँये हाथ को रखकर नैवेद्य को ढँक कर 'ॐ यं' इस वायु बीज से सोलह बार जप करके वायु से उसमें प्राप्त दोषों का संशोषण करे। दाहिने करतल तथा उसके पृष्ठ भाग में लगे वामकरतल को करके नैवेद्य दिखाकर 'ॐ रं' इस अग्नि बीज से सोलह बार जप करके उसमें उत्पन्न उसके दोषों को अग्नि से दग्ध करके बाँये करतल में 'ॐ वं' इस अमृत बीज से उसका चिन्तन करके उसके पृष्ठभाग में दाहिने हाथ को लगाकर नैवेद्य दिखाकर 'ॐ वं' इस सुधा बीज को सोलह बार जप कर उससे उत्थित अमृतधारा से प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा दिखाकर मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके गन्ध-पुष्प से पूजा करके देवता से उद्गत तेज को स्मरण करके बाँये अँगूठे से नैवेद्यपात्र का स्पर्श करके दाहिने हाथ से जल लेकर :

ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेनैकभक्षणम् । निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि ।

इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरं-गुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्त विभाव्य जलं दद्यात् । इति नैवेद्यम् ॥ ३० ॥

इससे भूतल पर देवता के दाहिने जल छिड़क कर बाँये हाथ से अनामिका के मूल से अंगूष्ठ का योग करके ग्रासमुद्रा उन्हें दिखाकर 'देवता खा चुके हैं' ऐसी भावना करके जल देवे । इति नैवेद्य ॥ ३० ॥

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं वरम् । परमानन्दपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः जलं समर्पयामि ।

इति मन्त्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं दद्यात् ॥ ३१ ॥

इस मन्त्र से स्वर्णादि पात्र में स्थित जल देकर 'देवता ने उस जल का पान कर लिया है' ऐसी भावना करके अन्तःपट देवे ॥ ३१ ॥

अथ अन्तःपटम् । ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्या शिञ्जद्वलयकरया सादरं वीज्यमानः । नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्ति भोक्तृन् हसन्स भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् देवदेवः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपमूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं पूरिकाद्यं सुखाद्यम् । आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैला-मरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥

इति अन्तःपटं दत्वाचमनं दद्यात् । तत्र मन्त्रः ॥ ३१ ॥

इससे अन्तःपट देकर आचमन देवे । इसमें मन्त्र यह है ॥ ३१ ॥

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥ ३२ ॥

इत्याचमनं दत्वा मूलेन गण्डूषार्थं जलं दद्यात् ।

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि । इति ताम्बूलम् ॥ ३३ ॥

इससे ताम्बूल देवे । इति ताम्बूल ॥ ३३ ॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः फलं समर्पयामि। इति फलम् ॥ ३४ ॥

इससे फल देवे। इतिफल ॥ ३४ ॥

बुद्धिः सवासनाक्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च। मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥ १ ॥ ध्यानं संगीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः। छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः। अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥३॥ इन्द्रियाणि च रूपाणि शब्दादिरथवर्त्मना। मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः ॥ ४ ॥ सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना।

एवंसार्द्धचतुः श्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत्। इति छत्राद्यर्पणम् ॥ ३५ ॥

इन साढ़े तीन श्लोकों को पढ़कर इससे छत्रादि देवे। इति छत्रादि अर्पण ॥ ३५ ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थहेमबीजं विभावसोः। अनन्त पुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

इति हिरण्यादिदक्षिणां दद्यात् ॥ ३६ ॥

इससे हिरण्यादि (सोने आदि) की दक्षिणा देवे। इति हिरण्यादि दक्षिणा ॥ ३६ ॥

शालिगोधूमपिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगोक्तं वा अमुकसंख्यापरिमितदीपं निर्माय सुवर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्त्तीं निक्षिप्य (ह्रीं) इति मायाबीजेन प्रज्वाल्य मूलेनार्तिक्यं सम्पूज्य मूलं पठित्वा देवोपरि नेत्रादिपादपर्यन्तं नववारं त्रिर्वारं वा भ्रामयेद्घण्टां च नादयेत्। तत्र मन्त्रः।

चावल या गेहूं को पीस कर उससे त्रिकोणाकार या प्रयोगोक्त अमुक संख्या परिमित (देवता विशेष के पूजन में जितने दीपों का विधान हो) दीप बना कर सुवर्ण आदि की थाली में रख कर उन्हें घी से भरकर कपूर

आदि की बत्ती डाल कर 'ह्रीं' इस माया बीज से उन्हें जला कर मूलमन्त्र से आरती की पूजा करके मूलमन्त्र पढ़कर देवता के ऊपर नेत्र से लेकर पैर पर्यन्त नौ बार अथवा तीन बार घुमाये और घण्टा बजाये। इसमें यह मन्त्र है :

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्य निरन्तरम्। त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः नीराजनं समर्पयामि।

इत्युच्चरन् देवदक्षिणतः निधाय शङ्खजलमुत्सृजेत्। इति नीराजनम् ॥ ३७ ॥

यह कहता हुआ देवता के दक्षिण ओर रखकर शङ्ख का जल गिराये। इति नीराजन ॥ ३७ ॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि। इति कर्पूरार्तिक्यम् ॥ ३८ ॥

इससे कपूर की आरती दिखलाये। इति कर्पूरार्तिक्य ॥ ३८ ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

इत्युच्चरन् विष्णौ चतस्रः ४ शिवे तिस्रः ३ दुर्गाया एका १ गणेशे तिस्रः ३ रवौसप्त ७ प्रदक्षिणाः कार्याः। इति प्रदक्षिणा ॥ ३९ ॥

यह उच्चारण करते हुये विष्णु की चार, शिव की तीन, दुर्गा की एक, गणेश की तीन तथा सूर्य की सात प्रदक्षिणा करनी चाहिये। इति प्रदक्षिणा ॥ ३९ ॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।

इति वदन् साष्टाङ्गं प्रणमेत्। इति साष्टाङ्गप्रणामः ॥ ४० ॥

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे। इति साष्टाङ्ग प्रणाम ॥ ४० ॥

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण पमेश्वर।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। इति पुष्पाञ्जलिः॥ ४१॥

इससे पुष्पाञ्जलि देवे। इति पुष्पाञ्जलि॥ ४१॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवं स्तुत्वा बद्धाञ्जलि-पूर्वकं प्रार्थयेत्। तद्यथा:

इस प्रकार पुष्पांजलि देकर स्तुतिपाठ द्वारा देवता की स्तुति करके हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करे:

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥ २॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना॥ ३॥ भूमौ स्खलित-पादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव॥ ४॥

इति बद्धाञ्जलिपूर्वकं सम्प्रार्थ्य ततः

इससे बद्धाञ्जलिपूर्वक इस प्रकार प्रार्थना करे:

यदुक्तं यद्य भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकम्पय।

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा मालायाः संस्कारान् कुर्यात्।

इसके बाद यह पढ़कर देवता के दाहिने हाथ में पूजार्पण जल देकर माला के संस्कार करे।

अथ मालायाः संस्काराः।[1]

तत्रादौ कुशोदकसहितैः पञ्चगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रनव-करचिते कमले स्थापयित्वा:

माला संस्कार: प्रारम्भ में कुशोदक सहित पञ्चगव्य से माला का

---

१ अप्रतिष्ठितमालाभिर्मन्त्रं जपति यो नरः। सर्वं तद्विफलं विद्यात् क्रुद्धा भवति देवता। (अप्रतिष्ठित माला से जो व्यक्ति जप करता है उसका वह सब जप विफल हो जाता है और देवता भी क्रुद्ध हो जाते हैं)।

प्रक्षालन करके अश्वत्थ के नये पत्रों से बने दोनों में उसे रखकर:

ॐ ह्लीं अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः कंखंगंघंङंचंछंजंझंञं टंठंडंढंणंतंथंदंधंनंपंफंबंभंमंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंः:

इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमन्त्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य:

इन मातृकाक्षरों का तथा मूलमन्त्र का माला में विन्यास करके पुनः पञ्चगव्य से प्रोक्षण करके:

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः। भवेभवे नातिभवेभवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ १॥

इन मन्त्रों से शीतल जल से धोये॥ १॥ पुनः

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः:

इस मन्त्र से चन्दन, अगर, कपूर आदि सुगन्ध द्रव्यों से माला का घर्षण करे॥ २॥

अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।

इस मन्त्र से माला को धूपित करे॥ ३॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

इस मन्त्र से माला में चन्दन का लेप लगाये॥ ४॥

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्म-णोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

इस मन्त्र से मेरुसहित माला के प्रत्येक मणि को एक बार या अनेक बार अभिमन्त्रित करे॥ ५॥

ततः अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य पूर्ववत् प्राणप्रतिष्ठा-मन्त्रप्रयोगेण मालायाः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत्।

इसके बाद इस माला में 'इति' शब्द को जोड़कर पूर्ववत् प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से माला में प्राणप्रतिष्ठा करके इस प्रकार ध्यान करे:

ॐ ह्रीं मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयिन्य-स्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ १॥

इससे माला की प्रार्थना करके:

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् प्रातःकालमारभ्य मध्यं दिनं यावत् यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेत्। नित्यमेव समानो जपः कार्यो न तु न्यूनाधिकः ततो जपान्ते :

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में धारण करते हुये अपने इष्टदेव का स्मरण करके उसे मध्यमा अँगुली के मध्य पर्व पर रखकर अँगूठे के अग्रभाग से घुमाकर एकाग्र चित्त होकर मन्त्र के अर्थ को स्मरण करते हुये प्रातःकाल से लेकर मध्याह्न तक यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करे। नित्य ही समान संख्या में जप करना चाहिये। कम या अधिक नहीं करना चाहिये। इसके बाद जप के अन्त में :

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम। शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोस्तु ते ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः।

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्यं दद्यात् अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवत् गुप्तं कुर्य्यात्। ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः सम्पूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपदेवार्पणं[१] कुर्य्यात्। तथा च अर्घोदकेन चुलुकमादाय।

इससे माला को शिर पर रख कर गोमुखी के भीतर रख देवे। इस माला को अपवित्र अवस्था में स्पर्श न करे। किसी अन्य को इसे न देवे। अपवित्र स्थान में इसे न रक्खे। अपनी योनि के समान इसकी रक्षा करे। इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करके पुनः मूलमन्त्रोक्त ऋष्यादिन्यास तथा हृदयादि षडङ्गन्यास करके पञ्चोपचारों से पूजा करके पुष्पांजलि देकर जप को देवता के अर्पण करे। फिर चुल्लू में अर्घोदक लेकर :

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः॥ १॥ ॐ इतः पूर्वं प्राण बुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्म्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु

१ यथाशक्ति जपित्वा तं मन्त्रेण विनिवेदयेत्। क्षिपन्नर्घस्य पानीयं देवतादक्षिणे करे।

स्वाहा। मां मदीयं च सकलममुकदेवाय समर्पयामि नमः॥ ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु।

इससे देवता के दाहिने हाथ में जल समर्पण करके कृताञ्जलिपूर्वक समापन स्तोत्र का पाठ करे :

अथ क्षमापनम्।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्॥ पूजाभागं न जानामि त्वं गतिःपरमेश्वर॥ १॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥ २॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ ३॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम॥ अन्तश्चरसि भूतानामि इष्टस्त्वं परमेश्वर॥ ४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरण मम॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर॥ ५॥ मातृयोनिसहस्रेषु सहस्रषु व्रजाम्यहम्॥ तेषु चेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि॥ ६॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्॥ ७॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्। देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि॥ ८॥ क्षमस्व देव देवेश क्षम्यते भुवनेश्वर। तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥ ९॥

इस प्रकार कृताञ्जलिपूर्वक प्रार्थना करके शङ्ख उठाकर देवता पर घुमाकर :

साधु वासाधु वा कर्म्मं यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम॥ १॥

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शङ्खं यथास्थाने निवेश्य ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किञ्चिदुधृत्य तत्तदुच्छिष्टभोजिने विनिवेदयेत्। तद्यथा विष्णोरुच्छिष्टं विष्वक्सेनाय १ शिवस्योच्छिष्टं चण्डेश्वराय २ सूर्यस्योच्छिष्टं चण्डांशवे ३ गणेशोच्छिष्टं वक्रतुण्डाय ४ शक्तेरुच्छिष्टमुच्छिष्टचाण्डाल्यै इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्। तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्य्यात्। तथा च।

यह कहते हुये देवता के दाहिने हाथ में थोड़ा जल देकर पूर्ववत् देवता के शिर पर अर्घ्य देकर शङ्ख को यथास्थान रखकर तदनन्तर नैवेद्य को साररहित जानकर देवता के उच्छिष्ट में कुछ निकाल कर उनके उच्छिष्ट

भोजी को देवे। जैसे १. विष्णु का उच्छिष्ट विश्वक्सेन को; २. शिव का उच्छिष्ट चण्डेश्वर को; ३. सूर्य का उच्छिष्ट चण्डांशु को; ४. गुणेश का उच्छिष्ट वक्रतुण्ड को; ५. शक्ति का उच्छिष्ट उच्छिष्ट चाण्डाली को, ईशानादि दिशा में तत्तदुच्छिष्टाधिकारियों के नाम से देवे। उससे बचा नैवेद्य अपने शिर से स्पर्श कराकर देवभक्तों में बाँट कर स्वयं खाकर इस प्रकार विसर्जन करे :

गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च।

इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत्। तथा च।

इससे अक्षतों को छिड़क कर विसर्जन करके देवता को इस प्रकार अपने हृदय में स्थापित करे :

तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवा सर्वे तिष्ठंति मे हृदि॥ १॥

इति हृदयकमले हस्तं दत्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्। एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तत्तद्दशांशतो नित्यहोमं वा कुर्यात्।

इससे हृदय कमल में हाथ लगाकर देवता को संस्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आपकी देवरूप में भावना करते हुये यथासुख विहार करे। अथवा इसी विधि से जप समाप्त करके तत्तद्दशांश नित्य होम करे।

अथ मखोत्सवप्रारम्भः।

यागभूमिं संशोध्य षोडशस्तम्भसहितं मण्डपं सवितानं चतुर्द्वारे तोरणवेष्टितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तम्भविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं मण्डपं विधाय तन्मध्ये होमानुसारतः कुण्डं चतुरस्रं प्रयोगोक्तं वा मेखलात्रययुतं योनिसहितं यथोक्तं कुर्यात्। अथवा स्थण्डिलं कुर्यात्। कुण्डं ऐशान्यां चण्डिकापीठं पूर्वे ग्रहपीठं आग्नेयां मातृकापीठं नैर्ऋत्ये वास्तुपीठं कुण्डात्पश्चिमे स्वस्तिवाचनवेदिकां च हस्तोच्चमानं सर्वं कुर्यात्। ततो यजमानः सुस्नातः कलत्र पुत्रादियुतः शुचिः स्त्रियः वस्त्राभरणगन्धपुष्पैरलंकृत्य गलितस्वादुजलेन कलशं सम्पूर्य तन्मुखे महाफलं प्रतिष्ठाप्य पाणिभ्यां गृहीत्वा मन्त्रवाद्यघोषणकर्ताऽभीष्टदेवतां ध्यात्वा यागभूमिमागत्य पश्चिमद्वारमण्डपं प्रविशेत्।

मखोत्सव : याग भूमि का संशोधन करके सोलह स्तम्भ[१] सहित सवितान मण्डप और तोरणयुक्त चार द्वार बनाकर उत्तम वस्त्रों, रेशमी कपड़ों आदि से देवतागार को श्रीगिरि बनाकर कदली स्तम्भों से सुमनोहर तथा पुष्प-मालाओं से शोभित मण्डप बनाकर उसके बीच होम के अनुसार चतुरस्र या प्रयोगोक्त तथा तीन मेखलाओं से युक्त योनि सहित कुण्ड अथवा स्थण्डिल बनावे। कुण्ड के ईशान कोण में चण्डिकापीठ, पूर्व में ग्रहपीठ, आग्नेय में मातृकापीठ, नैर्ऋत्य में वास्तुपीठ, और कुण्ड के पश्चिम में स्वस्तिवाचन वेदिका सर्वत्र एक हाथ ऊँची बनावे। इसके बाद अच्छी तरह स्नान करके पवित्र हुआ यजमान बालबच्चों और सुन्दर वस्त्राभूषण, सुगन्ध तथा पुष्पों से सुअलंकृत स्त्रियों सहित, कलश को ठण्डे मीठे जल से भर कर और उसके मुख पर नारियल रख कर उसे हाथों से उठाकर मन्त्र तथा विविध वाद्यों के घोष के साथ इष्टदेवता का ध्यान करता हुआ यज्ञभूमि में आकर मण्डप के पश्चिम द्वार से प्रवेश करे।

---

१. ईशानादि चार दिशाओं में चार; उसके बाहर पुनः ईशानादि चार दिशाओं में चार; ईशान और प्राची के अन्तराल में एक, प्राची और आग्नेयान्तराल में एक, आग्नेय और दक्षिण के अन्तराल में एक, दक्षिण और नैर्ऋत्य के अन्तराल में एक, नैर्ऋत्य पश्चिम के अन्तराल में एक, पश्चिम और वायव्य के अन्तराल में एक, वायव्य और उत्तर दिशा के अन्तराल में एक, उत्तर और और ईशान के अन्तराल में एक, इस प्रकार सोलह कदली स्तम्भों की स्थापना करे। फिर पूर्व में न्यग्रोध के पत्ते का, दक्षिण में उदुम्बर के पत्ते का, पश्चिम में अश्वत्थ के पत्ते का और उत्तर में प्लक्ष के पत्ते का तोरण बाँधे। पूर्व द्वार पर दक्षिण-वाम शाखा के अनुसार धनुषाकार पताका और रक्त वर्ण ध्वज लगाये। अग्निकोण में भी ऐसा ही करे। दक्षिण द्वार पर धूम्रवर्ण पताका और कृष्ण वर्ण ध्वज, नैर्ऋत्य कोण में कृष्ण वर्ण पताका और नीला ध्वज, पश्चिम द्वार पर श्वेत पताका और पीला ध्वज, वायव्य कोण में भी ऐसा ही, उत्तर में श्वेत वर्ण पताका और पाद्मभव-ध्वज, ईशान कोण में श्वेत वर्ण की पताका और ध्वज, ईशान पूर्व के मध्य में सर्ववर्ण ध्वज और पताका पश्चिम-नैर्ऋत्य के मध्य में पञ्चवर्ण पताका और ध्वज, तथा मण्डप के मध्य में चित्ररत्नाकार पताका और ध्वज की स्थापना करे।

अथ शान्तिकलशस्थापनम् ।

कलशं कुण्डात्पश्चिमे तंदुलाष्टदलोपरि संस्थाप्य गन्धादिभिः शान्तिकलशं सम्पूज्य तत्र देवता विन्यसेत् ।

शान्तिकलशस्थापन : कुण्ड के पश्चिम तन्दुल से बने अष्टदल के ऊपर कलश को स्थापित करके, गन्ध आदि से उस शान्तिकलश की पूजा करके उसमें देवताओं का इस प्रकार विन्यास करे :

ॐ गं गणपतये नमः १ ॐ ढूं दुर्गायै नमः २ ॐ सं सरस्वत्यै नमः ३ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ ॐ वां वास्तुपुरुषाय नमः ५ ।

एवं पञ्चदेवताः सम्पूज्य स्थिरासनं संभाव्य गणपतिपूजनादिकं कुर्यात् । तद्यथा :

इस प्रकार पञ्चदेवताओं की पूजा कर उनको स्थिरासन जानकर इस प्रकार गणपति पूजा आदि करे ।

पूर्वोक्तासने कूर्मभूमावुपविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादीन् नमस्कृत्य

पूर्वोक्त आसन पर कर्मशोधित भूमि में बैठकर पूर्वोक्त प्रकार से गणेशादि को नमस्कार करके :

ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः १ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा २ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ३ ।

इति तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणानायम्य :

इन तीन तत्त्व मन्त्रों से आचमन करके मूलमन्त्र से प्राणायाम् करके :

देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् पुण्याहे अमुकदेवताप्रीतये मया अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतजपदशांशेन क्रियमाणामुकदेवतायागसिद्धये होममहं करिष्ये । इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य तदङ्गभूतमादौ गणेशपूजनं भूमिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं ब्राह्मणप्रार्थनापूर्वकं करिष्ये ।

यह संकल्प करके ब्राह्मण से प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः । देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद क्रम से गणेशपूजनादि करे । इसके बाद :

देशकालौ संकीर्त्य प्रारीप्सितकर्मणोंगभूतं मण्डपशुद्धि कुण्डशुद्धि च करिष्ये ।

इति संकल्प्य । ततः स्थापितकलशोदकमन्यपात्रे गृहीत्वा औदुम्बरशमीदूर्वासहितजलेन भूमि त्रिवारं प्रोक्ष्य तेनोदकेन मण्डपं प्रोक्ष्य ।

यह संकल्प करके स्थापित कलश के जल को अन्य पात्र में लेकर गूलर, शमी, और दूर्वा सहित जल से भूमि का तीन बार प्रोक्षण करके उस जल से मण्डप का भी प्रोक्षण करे । फिर

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

इति मन्त्रेण गौरसर्षपान्ः सर्वतो मण्डपान्तः विकिरेत् । 'ॐ मूलेनास्त्राय फट्' इत्यस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं कृत्वा पञ्चगव्येन मण्डपं प्रोक्ष्य कुण्डं प्रार्थयेत् । तत्र मन्त्रः ।

इस मन्त्र से पीली सरसों मण्डप के चारों ओर बिखेर दे । 'ॐ मूलेनास्त्राय फट्' इस अस्त्र मन्त्र से तीन चुटकी बजाकर दिग्बन्धन करके पञ्चगव्य से मण्डप का प्रोक्षण करके कुण्ड की प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

हे कुण्ड तव निर्माणं यथामति मया कृतम् । कृपया भव सम्पूर्णं कुरु सिद्धि नमोस्तुते ॥ १ ॥

इति बद्धांजलिपूर्वकं सम्प्रार्थ्य ततः कृताञ्जलिः स्वस्तिन इति मन्त्रं पठेत् । ततः कुण्डं गन्धादिना सम्पूज्य कुण्डमेखलास्विष्ट देवतांसञ्चिन्त्य सम्भाव्य कुंकुमाक्षतसिन्दूरैः सम्पूज्य मण्डपदेवताः पूजयेत् । मण्डपेषु ।

इससे हाथ जोड़कर प्रार्थना करके हाथ जोड़कर 'स्वस्तिनः' मन्त्र का पाठ करे, फिर गन्ध आदि से कुण्ड की पूजा करके कुण्डमेखलाओं में अपने इष्टदेवता का चिन्तन करके कुंकुम, अक्षत, सिन्दूर से पूजा करके मण्डपदेवताओं की पूजा करे । मण्डप में :

ॐ रत्नमण्डपाय नमः ॥ १ ॥ दक्षिणशाखायाम् ॐ द्वारश्रियै नमः ॥२॥ वामशाखायाम । ॐ गं गणपतये नमः ॥ ३ ॥ मण्डपोपरि ॐ तत्त्वमण्डपाय नमः ॥ ४ ॥ देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ५ ॥ मण्डपान्तः ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ६ ॥

इति सम्पूज्य दध्योदनमाषभक्तसहितदीपपात्राण्यादाय गन्धादिपात्रं जलपात्रं च गृहीत्वा मण्डपाद्बहिर्बलिदानं[1] कुर्यात् । तत्र मन्त्रः ।

---

१. मण्डपस्य चतुर्दिक्षु दद्याद्भूतबलिं बहिः । बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा । मारुतश्चाश्विनौ देवाः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः । द्वौद्वौ प्रागादि सम्पूज्य मम यज्ञसुखावहाः । याम्योत्तरविभागेषु चतुर्द्वारैः पृथक्-पृथक् ।

इस प्रकार पूजा करके दही, भात और उड़द सहित दीपपात्रों को लेकर गन्धादिपात्र तथा जलपात्र को ग्रहण कर मण्डप के बाहर बलिदान करे। उसमें मन्त्र यह है :

हे रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रि ताः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन पूर्वादिचतुर्दिक्षु तत्र भूमौ कुशानास्तीर्य भूतबलि दद्यात्। ततः प्राग्द्वारे।

इन दो मन्त्रों से पूर्वादि चारों दिशाओं में कुशा बिछाकर भूतबलि देवे। इसके बाद पूर्वद्वार पर :

दक्षिणशाखायां ॐ देवेभ्यो नमः गन्धाद्युपचारसहितदीपदध्योदन **एष माषभक्तबलिर्नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥**

वामशाखायाम् ॐ आदित्येभ्यो नमः गन्धाद्यु० ॥ २ ॥

फिर दक्षिण द्वार पर :

दक्षिणशाखायाम् ॐ वसुभ्यो नमः गन्धाद्यु० ॥ ३ ॥

वामशाखायाम् ॐ मरुद्भ्यो नमः गन्धाद्यु० ॥ ४ ॥

फिर पश्चिम द्वार पर :

दक्षिणशाखायाम् ॐ अश्विभ्यां देवाभ्यां नमः गन्धाद्यु० ॥ ५ ॥

वामशाखायाम् ॐ सुपर्णेभ्यो नमः गन्धाद्युपचा० ॥ ६ ॥

फिर उत्तर द्वार पर :

दक्षिणशाखायाम् ॐ पन्नगेभ्यो नमः गन्धाद्यु० ॥ ७ ॥

वामशाखायाम् ॐ ग्रहेभ्यो नमः गन्धाद्यु० ॥ ८ ॥

इति क्षेत्रबलिं दत्त्वा पूर्ववद्दिग्देवीनां बलिदानं ग्रहाणां लोकपालानां दिक्पालानां च यथाक्रमेण एवमेव विधिना बलिं दद्यात्। तत आचम्य प्राणानायम्य वास्तुपीठसमीपे गत्वा वास्तुमण्डले वास्तुमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्य तत्र यथोक्तबलिदानं कृत्वानन्तरं साचार्यब्रह्मऋत्विक सपवित्रकरो यजमानः सपत्नीकः ब्रह्मादीनां प्रार्थनां कुर्यात्। तत्र मन्त्रः।

इस प्रकार क्षेत्रबलि देकर पूर्ववत् दिग्देवियों, ग्रहों, लोकपालों और दिक्पालों को यथाक्रम इसी विधि से बलि देवे। फिर आचमन, प्राणायाम करके वास्तुपीठ के समीप जाकर वास्तुमण्डल में वस्तुमूर्ति की प्रतिष्ठा और

पूजा करके वहाँ यथोक्त बलिदान करने के बाद आचार्य, ब्रह्मन्, ऋत्विक, और पत्नीसहित हाथ में पवित्री के साथ ब्रह्मा आदि की प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ उत्तिष्ठन्तु महाभागा अर्चिताः प्रार्थिता मया। ऋद्ध्यर्थं कर्मणस्त्वस्य कुरुध्वं मण्डपं शुभम्।

इस प्रकार प्रार्थना करके कुश, अक्षत तथा जल लेकर :

देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थममुकदेवतामहोत्सवसिद्ध्यर्थं षोडशस्तम्भप्रतिष्ठां तोरणप्रतिष्ठां ध्वजपताकाप्रतिष्ठां च कृत्वा चतुर्दिक्षु द्वारपालसहितकलशसुप्रतिष्ठां कृत्वा प्रतिष्ठितदेवतानां पूजनं बलिदानं च करिष्ये।

यह संकल्प करके मण्डपप्रष्ठिा प्रारम्भ करे।

तत्रादौ षोडशस्तम्भप्रतिष्ठाप्रयोगः।

षोडश स्तम्भ प्रतिष्ठा प्रयोग : सबसे पहले षोडश स्तम्भों की प्रतिष्ठा का प्रयोग :

ऐशान्यस्तम्भसमीपे गत्वा तत्र।

ऐशान्य स्तम्भ के समीप जाकर वहाँ :

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रथमस्तम्भे ब्रह्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे ब्रह्मा का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे।

ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। ॐ ब्राह्म्यै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर :

ब्रह्मणस्पते त्वमस्येति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः। ब्रह्मा देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ ब्रह्मणे नमः' इससे ब्रह्मा की पूजा करके :

ॐ ब्रह्मणे वेदाधिपतये पद्महस्ताय हंसासनसमारूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे कुशा फैलाकर बलि देवे ॥ १ ॥

आग्नेयस्तम्भसमीपे गत्वा तत्र।

आग्नेयस्तम्भ के समीप जाकर वहाँ :

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयस्तम्भे विष्णो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे विष्णु का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ आदित्यनन्दायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे : फिर :

इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। विष्णुर्देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ विष्णवे नम' इससे विष्णु की पूजा करके :

ॐ विष्णवे यज्ञाधिपतये चक्रहस्ताय गरुडासनसमारूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। विष्णुः प्रीयताम् विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ २ ॥

नैर्ऋत्यस्तम्भसमीपे गत्वा तत्र।

नैर्ऋत्य स्तम्भ के समीप जाकर वहाँ :

ॐ भूर्भुवः स्वः तृतीयस्तम्भे रुद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे रुद्र का आवाहन वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ गौर्यै नमः। ॐ शोभनायै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर :

परिणो रुद्रस्येति गृत्समद ऋषिः। त्रिष्टुपछन्दः। रुद्रो देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ रुद्राय नमः' इससे रुद्र की पूजा करके :

ॐ रुद्राय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषस्कन्धसमाधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः रुद्रः प्रीयतां रुद्रः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ ३ ॥

वायव्यस्तम्भसमीपे गत्वा।

वायव्य स्तम्भ के समीप जाकर वहाँ :

ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्थस्तम्भे इन्द्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे इन्द्र का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर :

इन्द्रआसांनेति अप्रतिरथ ऋषिः। त्रिष्टुप्छन्दः। इन्द्रो देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ रुद्राय नमः' इससे इन्द्र की पूजा करके :

ॐ इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय ऐरावतसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः इन्द्रः प्रीयतामिन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ ४ ॥

पुनस्तद्बहिरीशानकोणस्तम्भसमीपे गत्वा।

पुनः बाहर ईशान कोण के स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चमस्तम्भे सूर्य इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे सूर्य का आवाहन कर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ सौर्यै नमः। ॐ भूत्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मंगलायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर

चित्रं देवानामिति कुत्सांगिरस ऋषिः। त्रिष्टुप्छन्दः। सूर्यो देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ भास्कराय नमः' इससे सूर्य की पूजा करके :

ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये पद्महस्ताय अश्वगृष्ठिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। सूर्यः प्रीयतां सूर्यः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ ५ ॥

ऐशान्यप्राच्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा।

ऐशान्य-प्राच्यान्तराल के स्तम्भ के समीप जाकर वहाँ :

ॐ भूर्भुव. स्वः षष्ठस्तम्भे गणपते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे गणपति का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर

गणानां त्वेति गृत्समद ऋषिः। गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ गणपतये नमः' इससे गणपति की पूजा करके :

ॐ गणपतये अंकुशहस्ताय चतुर्दशविद्याप्रदायकाय विघ्नहराय मूषकसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। गणपतिः प्रीयतां गणपतिः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ६ ॥

ततः पूर्वाग्नेयान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा।

फिर पूर्वाग्नेयान्तराल के स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तमस्तम्भे धर्मराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे धर्मराज का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ धर्मराज्ञै नमः। ॐ प्राक्संध्यायै नमः। ॐ अञ्जनायै नमः। ॐ क्रूरायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे। फिर :

यमाय त्वेति प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। यमो देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ यमाय नमः' इससे पूजा करके :

ॐ धर्मराज प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय महिषस्कन्धसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः धर्मराजः प्रीयतां धर्मराजः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ ७ ॥

आग्नेयकोणस्तम्भसमीपे गत्वा।

फिर आग्नेय कोण के स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टमस्तम्भे नागराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे नागराज का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ मध्यमसंध्यायै नमः। ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ महापद्मिन्यै नमः। ॐ अंगनायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करके :

नमोस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। नागराजो देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ नागराजेभ्यो नमः' इससे नागराज की पूजा करके :

ॐ नागाधिपतये नागकन्यासमन्विताय धरापृष्ठिसमाधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः नागराजः प्रीयतां नागराजः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ८ ॥

ततः आग्नेययाम्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा।

फिर आग्नेय-दक्षिण दिशा के अन्तराल में स्थित स्तम्भ के समीप जाकर वहां :

ॐ भूर्भुवः स्वः नवमस्तम्भे स्कन्द इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे स्कन्द का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ स्कन्दप्रियायै नमः। ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे : फिर :

यदक्रन्देति भार्गव ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः। स्कन्दो देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ स्कन्दाय नमः' इससे स्कन्द की पूजा करके :

ॐ स्कन्दाय सेनाधिपतये शक्तिहस्ताय मयूरसेनासमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। स्कन्दः प्रीयतां स्कन्दः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ ९ ॥

ततो याम्यनैर्ऋत्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा।

फिर दक्षिण-नैर्ऋत्य के अन्तराल में स्थित स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः दशमस्तम्भे वायो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव।

इससे वायु का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजन करे :

ॐ वायुप्रियायै वायव्यै नमः । ॐ कौमार्यै नमः ।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे । फिर

वायोयेते इति गृत्समद ऋषिः । गायत्रीछन्दः वायुर्देवता । पूजने विनियोगः ।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ वायवे नम.' इससे वायु पूजा करके :

ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय मृगपृष्ठिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्त-बलिर्नमः । वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे ॥ १० ॥

नैर्ऋत्यकोणस्तम्भसमीपे गत्वा ।

फिर नैर्ऋत्य कोण के स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशस्तम्भे सोम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ।

इससे सोम का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ सोम प्रियायै सौम्यै नमः । ॐ अमृतकलायै नमः । ॐ विजयायै नमः ।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करके ।

वयःसोमेति बन्धुर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । सोमो देवता पूजने विनियोगः ।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ सोमाय नमः' इससे सोम की पूजा करके :

ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय मृगवाहनाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। सोमः प्रीयतां सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे ॥ ११ ॥

ततो निर्ऋतिवरुणान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा :

फिर नैर्ऋत्य-वारुण (पश्चिम) दिशा के बीच स्थित स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशस्तम्भे वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भवः

इससे वरुण का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ वरुणप्रियायै वारुण्यै नमः । ॐ बृहस्पतये नमः ।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे । फिर :

तत्वायामीति शुनःशेष ऋषिः । त्रिष्टुप्छन्दः । वरुणो देवता । पूजने विनियोगः ।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ वरुणाय नमः' इससे पूजा करके :

ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनसमधिरूढाय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदन-माषभक्तबलिर्नमः । वरुणः प्रीयतां वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे ॥ १२ ॥

ततः पश्चिमवायव्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा :

फिर पश्चिम-वायव्य के अन्तराल में स्थित स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रयोदशस्तम्भे वसव इहागच्छत प्रतिष्ठिता भवत :

इससे वसुओं का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ सिध्यमृतायै नमः । विततायै नमः । विभूत्यै नमः ।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे : फिर

निवेशन इत्यग्निर्ऋषिः । त्रिष्टुप्छन्दः वसवो देवताः पूजने विनियोगः ।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ वसुभ्यो नमः' इससे पूजा करे :

ॐ वसुभ्यः उत्कृष्टपराक्रमेभ्यः अष्टसिद्ध्यधिपतिभ्यः शरहस्तेभ्यः साङ्गेभ्यः साभरणेभ्यः सशक्तिभ्यः एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदन-युक्तमाषभक्तबलिर्नमः । वसवः प्रीयन्तां वसवः सुप्रीता वरदा भवन्तु ।

इससे बलि देवे ॥ १३ ॥

ततो वायुकोणस्तम्भसमीपे गत्वा :

फिर वायव्य कोण के स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्दशस्तम्भे बलदेव इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव :

इससे बलदेव का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ तत्प्रियायै नमः । ॐ अदित्यै नमः । ॐ लघिमण्यै नमः । ॐ सिनीवाल्यै नमः ।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करके :

वणमहानिति जमदग्निर्ऋषिः। बृहती छन्दः। बलदेवो देवता। पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ बलदेवाय नमः' इससे बलदेव की पूजा करके :

ॐ बलदेवाय रेवत्यधिपतये लाङ्गलहस्ताय रत्नाङ्कितरथयुक्ताश्वसमधिरूढाय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः। बलदेवः पीयतां बलदेवः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलिदेवे ॥ १४ ॥

ततः वायव्योदीच्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा।

फिर वायव्य-उत्तर दिशा के अन्तराल में स्थित स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चदशस्तम्भे बृहस्पते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव :

इससे बृहस्पति का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः।

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे :

बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिः। त्रिष्टुप्छन्दः। बृहस्पतिर्देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ बृहस्पतये नमः' इससे बृहस्पित की पूजा करके :

ॐ बृहस्पतये सर्वदेवेन्द्राधिपतये पुस्तकस्रुक्स्रुवहस्ताय हंसपृष्ठिसमधिरूढाय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः बृहस्पतिः प्रीयतां बृहस्पतिः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे ॥ १५ ॥

अथोदीच्यैशान्यान्तरालस्तम्भसमीपे गत्वा :

अन्त में उत्तर-ऐशान्य दिशाओं के अन्तराल में स्थित स्तम्भ के समीप जाकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशस्तम्भे विश्वकर्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव :

इससे विश्वकर्मा का आवाहन करके वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ वास्तव्यै नमः। इति :

इससे पूजा करके स्तम्भ के शिर में 'ॐ नागमात्रे नमः' इससे पूजा करे :

विश्वकर्मन्हविषेति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः। विश्वकर्मा देवता पूजने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर 'ॐ विश्वकर्मणे नमः' इससे विश्वकर्मा की पूजा करके :

ॐ विश्वकर्मणे विश्वाधिपतये दण्डहस्ताय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः विश्वकर्मा प्रीयतां विश्वकर्मा सुप्रीतो वरदो भवतु :

इससे बलि देवे ॥ १६ ॥

इति षोडशस्तम्भप्रतिष्ठाप्रयोगः।

अथ तोरण ध्वजापताकाप्रतिष्ठापूजनम्।

तोरण-ध्वजा-पताका प्रतिष्ठा पूजन : पूर्व द्वार पर जाकर :

'सुदृढं तोरणं पूर्वे न्यग्रोधं काञ्चनप्रभम्। रक्षार्थं चैव बध्नीयाद्देवपूजाख्यकर्मणि।'

इससे न्यग्रोध के पत्तों का तोरण बाँध कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वद्वारे सुदृढप्रीयते इमं न्यग्रोधतोरणं प्रीयतां सुदृढः चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः सुदृढः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देकर वहाँ :

दक्षिणवामशाखयोर्ध्वजापताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः।

इससे ध्वजा और पताका की स्थापना करके वहाँ :

'धनुःप्रभापताकां च सिन्दूरारुणभं ध्वजम्। स्थापयामि महेन्द्राय शक्तियुक्ताय वज्रिणे' ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजपताकयोर्महेन्द्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव :

इससे महेन्द्र का आवाहन करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः महेन्द्राय ऐरावतसहिताय इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। महेन्द्रः प्रीयता महेन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं का इस प्रकार पूजन करे :

पूर्वद्वारपार्श्वे ॐ कादम्बरि गजारूढे वज्रहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ

गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देकर वहाँ द्वार के दक्षिण में :

'दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रमथाभयाम्। बिभ्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीबालां च कृष्णभाम्।'

इससे ब्राह्मी का ध्यान करके :

ह्रीं ऐं ब्राह्मि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देवे। वहाँ द्वार के बायें बगल में :

ह्रीं ऐं महेश्वरि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारे दक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। इति सम्पूज्य

इससे बलि देवे। वहाँ द्वार पर दक्षिण और वामशाख के दो कलश स्थापित करके उनमें रत्न डालकर द्वार स्थित दोनों कलशों में 'ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः' इससे पूजा करे।

पूर्व द्वार पर :

शान्तिसूक्तजपार्थं सर्वघ्निनिवारणार्थं च त्वामहं वृणे।

इससे यज्ञसूत्र बाँधकर :

भो कलश एह्येहि गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सित कुरुकुरु स्वाहा :

इससे बलि देवे। वही पुनः दक्षिण ओर :

'आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो। इहागत्य बलिं गृह्ण यज्ञविघ्नं निवारय' :

इससे आवाहन करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः धात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देवे। वहीं उत्तर की ओर :

'विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो। स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय।'

इससे ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः विधात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा :

इससे बलि देवे। वहीं पुनः द्वार के दक्षिण भाग में :

'वेदीमध्ये ललितकमले कर्णिकायान्तरस्थः सप्ताश्वोऽर्कोऽरुणरुचिरवपुः सप्तरज्जुर्द्विबाहुः। गोत्रेमेऽस्मिन्बहुविधगुणः काश्यपाख्ये प्रसूतः कालिङ्गाख्याविषयजनितः प्राङ्मुखः पद्महस्तः।'

इससे सूर्य का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं स्वाहा।

इससे बलि देवे। वहीं द्वार के वामभाग में

'प्राच्यां भृगुर्भोजकटे प्रजातः स भार्गवः पूर्वमुखः सिताभः। स पश्चकोणे स रथाधिरूढो दण्डाक्षमालावरदाङ्कपत्रः।'

इससे शुक्र का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र अधिप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देवे। वहीं द्वार के दक्षिण भाग में :

'पानपात्रं च खड्गं च अक्षमालां कमण्डलुम्। त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम्।'

इससे दिगम्बर का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः दिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा :

इससे बलि देवे। दूर उत्तर भाग में :

ॐ 'ब्रह्माणीशक्तिसंयुक्तं हंसवाहनभूषितम्। श्वेतवर्णमहं वन्दे असिताङ्गं च भैरवम्।'

इससे असिताङ्ग भैरव का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इति बलिं दत्वा चिरच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा।

इससे बलि देकर चिच्छक्ति आदि देवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शङ्खनिधये नमः । द्वारपुरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ।

इति सम्पूज्य प्रणमेत् । इति पूर्वद्वारे तोरणध्वजपताकादिप्रतिष्ठापूजनम् ॥ १ ॥

इससे पूजा करके प्रणाम करे । पूर्व द्वार पर तोरण-ध्वज-पताका आदि की प्रतिष्ठा और पूजन समाप्त ॥ १ ॥

आग्नेयकोणे गत्वा प्राणानायम्य :

आग्नेय कोण में जाकर प्राणायाम करके ।

ॐ उं उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर :

'पताकामग्नये रक्तां ध्वजं चैवाग्निसन्निभम् । स्वाहायुक्ताय देवाय स्थापयामि हविर्भुजे ।' अग्निप्रीत्यर्थं रक्तध्वजपताकां च स्थापयामि ।

इति पताकां रक्तं ध्वजं च पञ्चहस्तदण्डे उच्छ्रयेत् तत्रैव :

इससे पताका तथा लाल ध्वज को पाँच हाथ ऊँचे डण्डे में फहराये । वहीं पर :

ॐ अग्नये नमः इत्यग्निं सम्पूज्य ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये पुण्डरीकदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः अग्निः प्रीयतां अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु :

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

प्राङ्मुख चतुरस्रपीठे 'अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयो हि यः । धूमकेतू रणाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।'

इससे सोम का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः प्राङ्मुखचतुरस्रपीठे यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र सोम अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितं क्षरीन्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा :

इससे बलि देवे । वहीं पर :

'ॐ परश्वायुधधर्तारं खङ्गपात्रधरं तथा । त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च गिदम्बरम् ।'

इससे दिगम्बर का ध्यान करके :

कुमार दिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः कुमारदिगम्बरः प्रीयताम् । कुमार दिगम्बरः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे । फिर :

'माहेशी शक्तिसंयुक्तं वृषवाहनभूषितम् । शुद्धस्फटिकसङ्काशं वन्देहं रुरुभैरवम् ।'

इससे रुरुभैरव का ध्यान करके :

ॐ रुरुभैरवाय अयं गन्धाद्युपचारसहित क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इत्यग्निकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ २ ॥

इसके बाद दक्षिण द्वार पर जाकर :

'औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् । रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ।'

इससे उदुम्बर (गूलर) के पत्तों का तोरण बाँध कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणद्वारे विकटप्रीतये अयमौदुम्बरतोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । विकटः प्रीयतां सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहाँ :

दक्षिणवामशाखयोः ध्वजपताके उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः ।

इससे ध्वजा और पताका की स्थापना करके वहाँ :

'धुम्रवर्णपताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा । यमाय स्थापयामीतिनिहन्त्रे कर्मसाक्षिणे ।' ध्वजपताकयोर्यम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ।

इससे यम का आवाहन करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय वामनदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । यमः प्रीयतां यमः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

दक्षिणद्वारपार्श्वे ॐ कङ्कालि महिषारूढे हण्डहस्ते एह्येहि इमं गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहाँ द्वार के दक्षिण :

ॐ अंकुशं दण्डखट्वाङ्गौ पाशं च दधतीं करैः । ध्येयां बन्धूकसंकाशां कौमरीं कामदायिनीम् ।

इससे कौमारी का ध्यान करके :

ॐ ह्रीं क्लीं कौमारि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर द्वार के बाँये :

ॐ ह्रीं श्रीं वैष्णवि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहाँ द्वार पर दक्षिण और वामशाखाओं में दो कलश स्थापित करके उनमें रत्न डालकर द्वार पर स्थित दोनों कलशों में :

ॐ गोदायै नमः । ॐ कृष्णायै नमः ।

इससे पूजन करके दक्षिण द्वार पर :

शान्तिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे ।

इससे यज्ञसूत्र बाँध कर :

भो कलश एह्येहि गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहीं पुनः दक्षिण ओर :

'आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो । इहागत्य गृह्ण बलिं यज्ञविघ्नं निवारय ।'

इससे आवाहन करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः धात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा :

इससे बलि देवे । फिर उसके उत्तर ओर :

'विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो । स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय ।'

इससे ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः विधात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । वहाँ पुनः द्वार के दक्षिण भाग में वेदी के बीच में तीन अंगुल के मण्डल में :

'याम्ये गदाशक्तिगदांश्च शूरो वरप्रदो याम्यमुखोतिरक्त । कुजोऽस्त्यवन्तीविषये त्रिकोणे तस्मिन्भरद्वाजकुले प्रसूतः ।'

इससे दक्षिण मुख मङ्गल का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तीसमुद्भव भारद्वाजगोत्र दक्षिणमुख भौम अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । इसके बाद द्वार के दक्षिण भाग में :

'धनुर्बाणधरं देवं खड्गपात्रधरं तथा । त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ।'

इससे दिगम्बर का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर द्वार के उत्तर भाग में ।

ॐ कौमारीशक्तिसंयुक्तं शिखिवाहनभूषितम् । गौरवर्णधरं देवं वन्दे श्रीचण्डभैरवम् ।'

इससे चण्डभैरव का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर चित्शक्ति आदि देवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्ये नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शङ्खनिधये नमः । द्वारपुरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधः देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ।

इससे पूजा करके प्रणाम करे । इति दक्षिण द्वार प्रतिष्ठा पूजन ॥ ३ ॥

इसके बाद नैर्ऋती दिशा में आकर प्राणायाम करके :

ॐ रक्ताक्षि प्रेतारूढे खड्गहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुकु स्वाहा ।

इससे बलि देकर :

'पताकां निर्ऋतीशाय कृष्णनीलमयं ध्वजम् । स्थापयामि सदा रक्षोगणाधीशाय चैव हि ।' निर्ऋतिप्रीत्यर्थं कृष्णनीलध्वजपताकाः स्थापयामि ।

इससे काली ध्वज और नीली पताका को पाँच हाथ के डण्डे में फहरा

कर वहीं पर 'ॐ निर्ऋतये नमः' से निर्ऋति की पूजा करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये कुमुददिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । निर्ऋतिः प्रीयतां निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

द्वार के दक्षिण वेदी के मध्य में शूर्पाकार मण्डल में :

'पैठीनसो बर्बरदेशजातः शूर्पासनः सिंहगमः सुधूम्रः । याम्याननो रक्षगणस्तु मह्यं वरप्रदः शूलसचर्मखड्गः ।'

इससे राहु का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यमुख राठिनापुरोद्भव पैठीनसगोत्र राहो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शूर्पाकारपीठे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहीं :

शङ्खचक्रधरं देवं पानपात्रं गदाधरम् । त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ।'

इससे दिगम्बर का ध्यान करके :

कुमार दिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः । कुमारदिगम्बरः प्रीयतां कुमारदिगम्बरः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहीं :

वैष्णवीशक्तिसंयुक्तं गरुडासनभूषितम् । नीलवर्णधरं देवं वन्दे श्रीक्रोधभैरवम् ।'

इससे क्रोधभैरव का ध्यान करके :

ॐ क्रोधभैरव अयं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे ।

इति निर्ऋति कोण प्रतिष्ठा पूजन ॥ ४ ॥

फिर पश्चिम द्वार पर जाकर :

'अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसन्निभम् । रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ।'

इससे अश्वत्थ पत्तों का तोरण बाँध कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमद्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भीमः प्रीयतां भीमः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहीं :

दक्षिणवामशाखयोः ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः ।

इससे ध्वजा और पताका स्थापित करके वहीं :

'श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा । वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे ।' ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजपताकयोर्वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव :

इससे वरुण का आवाहन करके ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अयं गन्धाद्युपचारक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः । वरुणः प्रीयतां वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहाँ इस प्रकार अधिदेवताओं की पूजा करे :

पश्चिमद्वारे वामांसे ॐ कौवेरि श्वेताश्वरुढे पाशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहाँ द्वार के दक्षिण भाग में :

ॐ मुसलं करवालं च खेटकं दधती हलम् । करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः ।

इससे वाराही का ध्यान करके :

ह्रीं ह्लूं वाराहि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । वहीं द्वार के दाहिने और बाँये दो कलश स्थापित करके उनमें रत्न डालकर द्वार पर स्थित उन दोनों कलशों में :

ॐ रेवायै नमः । ॐ ताप्यै नमः ।

इससे पूजा करके :

पश्चिमद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे ।

इससे यज्ञसूत्र बाँधकर :

भो कलश एह्येहि गन्धाद्युपचारसहितं इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर पुनः वहीं दाहिने ओर :

'सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जाग्रतः शक्रदैवतः। भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव।'

इससे ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्र एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देकर उत्तर की ओर :

'वरुणो धवलो विष्णुः पुरुषो निर्मलाननः। पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमोनमः।'

इससे वरुण का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देवे। पुनः वहाँ द्वार के दाहिने भाग में वेदी के बीच चापाकार मण्डल में :

'चापासनो गृध्रमयः सुनीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यपः प्रतीच्याम्। समूलचापेषुवरप्रदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरिः।

इससे शनैश्चर का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्रशनैश्चर अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देकर वहीं द्वार के दक्षिण भाग में :

'खट्वाङ्गं मुशलं चैव करवालं च पात्रकम्। त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगम्बरम्।'

इससे दिगम्बर का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार दिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देकर उत्तर भाग में :

'हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम्। वाराहीशक्तिसंयुक्तं वन्दे उन्मत्तभैरवम्।'

इससे उन्मत्त भैरव का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे चित् शक्ति आदि देवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। द्वारपार्श्वे ॐ शङ्खनिधये नमः। द्वारपुरतः ॐ पद्मनिधये नमः। ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः। अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।

इससे पूजा करके प्रणाम करे। इति पश्चिमद्वार प्रतिष्ठापूजन ॥ २ ॥

फिर वायव्य कोण में जाकर प्राणायाम करके :

ॐ हं हरितमृगवाहिनि अंकुशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देकर :

'पताकां वायवे श्वेतां ध्वजं पीतं भयं तथा। स्थापयाम्यनु च क्षुद्रप्राणादायं सदैव हि।' वायुप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां पीतध्वजं च स्थापयामि।

इससे श्वेत पताका और पीली ध्वजा पाँच हाथ के डण्डे में फहराकर वहाँ :

'वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगसद्गतिम्। आवाहयामि यज्ञेस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम्।'

इससे वायु का आवाहन करके 'ॐ वायवे नमः' इससे वायु का पूजन करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे अयं गन्धाद्युपचारसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः। वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देकर वहाँ इस प्रकार अधिदेवताओं का पूजन करे : वायुमुख ध्वजाकार मण्डल में :

'ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोन्तर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः याम्यैर्वृतो वायुदिगीशखड्गचर्मासुराचामशतोह्यनेकः।'

इससे केतु का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितंघृतक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः। केतुः प्रीयतां केतुः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देकर वहीं :

ॐ कुमार दिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहित एषमाषभक्तबलिर्नमः कुमारदिगम्बरः प्रीयतां कुमारदिगम्बरः सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देकर वहीं :

कपालभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहित एष माषभक्त बलिर्नमः कपालभैरवः प्रीयतां कपालभैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देवे । इति वायुकोण प्रतिष्ठापूजन ॥ ६ ॥

फिर उत्तर द्वार के समीप जाकर आचमन-प्राणायाम करके :

'सुप्रभं तोरणं प्लक्षमुत्तरे च शशिप्रभम् । रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ।'

इससे प्लक्ष (पलाश) के पत्तों का तोरण बांध कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तरद्वारे सुप्रभतोरणाय सुप्रभप्रीतये अयं प्लक्षतोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । सुप्रभः प्रीयतां सुप्रभः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर :

दक्षिणवामशाखयोः ध्वजपताकामुच्छ्रायमि स्थापयामि नमः ।

इससे ध्वजा-पताका स्थापित करके :

श्वेतवर्णपताकां च पद्माभवध्वजं तथा । सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्धये ।'

इससे कुबेर के प्रीत्यर्थं हरित ध्वजा और हरित पताका स्थापित करके 'कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ' इससे कुबेर का आवाहन करके ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेराय सार्वभौमदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः । कुबेरः प्रीयतां कुबेरः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे : उत्तर द्वार के पार्श्व में :

ॐ यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहीं द्वार के दक्षिण भाग में :

'अक्षस्रजं बीजपरं कपालं पंकजं करैः । वहन्तीं हेमसंकाशां महालक्ष्मीं समीसमाम् ।

इससे नारसिंही का ध्यान करके :

ॐ ह्रीं क्ष्म्रौं नारसिंहि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षतपुष्पधूपदोपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहीं बाँये ओर :

ॐ ह्रीं च्चे चामुण्डे एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । फिर वहीं द्वार पर दक्षिण ओर वाम शाखा में दो कलशों की स्थापना करके उनमें रत्न डालकर द्वार पर स्थित उन दोनों कलशों में 'ॐ वाण्यै नमः । ॐ वेण्यै नमः' इससे पूजन करके :

कर्मनिष्ठौ तपोयुक्तौ ब्राह्मणौ वेदपारगौ । सरस्वतीसूक्तपाठार्थं द्वारे भवत ऋत्विजौ । अथर्ववेदऋत्विजौ उत्तरद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थत्वेनाऽहं वृणे ।

इससे यज्ञसूत्र बांध कर :

भो कलश एह्येहि गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर पुनः दक्षिण ओर :

'बृहन्नेत्रोथर्ववेदोनुष्टुभो रुद्रदैवतः । वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव । ॐ भूर्भुवः स्वः वैशम्पायन एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा

इससे बलि देवे । फिर वहीं उत्तर ओर :

'विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो । स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय ।'

इससे ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः विधात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । फिर वहीं पुनः द्वार के दक्षिण ओर वेदी के बीच चतुरस्र पीठ पर :

'सौम्येतिदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेंगिराः सौम्यमुखः सुप्रीतः । दण्डाक्षमालाम्बुजपात्रहस्तः सिन्ध्वाख्यदेशो वरदः सुजीवः ।'

इससे वृहस्पति का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र बृहस्पते अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचार सहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । वहीं द्वार के दक्षिण ओर :

'शूलायुधं चण्डमतं शक्ति चैव च पात्रकम् । त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ।'

इससे शान्तकुमार दिगम्बर का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः शान्तकुमारदिगम्बर एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षत-पुष्पधूपदीपसहित क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे । द्वार के उत्तर भाग में :

'चामुण्डाशक्तिसंयुक्तं प्रेतवाहनभूषितम् । रक्तवर्णधरं देवं वन्दे भीषणभैरवम् ।'

इससे भैरव का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचार-सहितमाषभक्तबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर चित्शक्ति आदि देवताओं की इस प्रकार पूजा करे :

भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शङ्खनिधये नमः । द्वारपरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः । अधो देहल्याम् । ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ।

इससे पूजा करके प्रणाम करे । इत्युत्तरद्वार प्रतिष्ठा-पूजन ॥ ७ ॥

फिर ईशान कोण में जाकर प्रणाम करके :

कंकालि वृषभारूढे शूलहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचार सहितक्षीरान्नराबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर :

'ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा । स्थापयामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ।'

ईशानप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां च स्थापयामि इति श्वेतपताकां ध्वजं च पंचहस्तदण्डे उच्छ्रयेत् तत्र ईशानाय नमः इति सम्पूज्य ।

'ईशान प्रीत्यर्थं श्वेतपताकां च स्थापयामि' इससे श्वेतपताका और ध्वजा को पाँच हाथ के डण्डे में फहराये । फिर वहीं 'ईशानाय नमः' इससे पूजा करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय वृषारूढाय अयं गन्धाद्युपचारसहित क्षीरान्न-माषभक्तबलिर्नमः । ईशानाः प्रीयताः ईशानः सुप्रीतो वरदो भवन्तु ।

इससे बलि देकर वहाँ अधिदेवताओं की इस प्रकार पूजा करे : उदङ्मुख शरमण्डल में :

'उदङ्मुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रः शरमण्डलस्थः । सखड्ग-चर्मोपिगदाधरोज्ञः स्वीशानभागे वरदः सुप्रीतः ।'

इससे बुध ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः मागधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहीं :

'शूलं डमरुकं चैव शंखचक्रगदाधरम् । खड्गपात्रं च खट्वाङ्गपा-शांकुशधरं तथा ।'

इससे ईशान का ध्यान करके :

ईशान एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देकर वहाँ :

दिगम्बरं कुमारं च सिंहवाहनभूषितम् । दंष्ट्राकरालवदनं ऐश्वर्य-सुखप्रदम् ।'

इससे दिगम्बर कुमार का ध्यान करके :

दिगम्बरकुमार एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देने के बाद :

'धारयन्तं मदोन्मत्तं वाडवानलभैरवम् । चण्डिकाशक्तिसंयुक्तं वन्दे संहार भैरवम् ।'

इससे संहार भैरव का ध्यान करके :

ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयताम् भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु ।

इति ईशानकोण प्रतिष्ठा पूजन ॥ ८ ॥

फिर ईशान और पूर्व के मध्यप्रदेश में जाकर :

ईशानपूर्वमध्ये संसर्पराज चक्रहस्त एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युप-चारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।

इससे बलि देवे ।

स्थापयाम्यन्तरिक्षाय पताकां सर्ववर्णिकाम् । कनकाकाररूपाय निराकाराय च ध्वजम् ।' ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च स्थापयामि ।

इससे सर्ववर्णिका पताका तथा कनकरूप ध्वज पाँच हाथ के डण्डे में स्थापित करे । फिर उसी स्थान पर :

ॐ ब्रह्मन्निहागच्छागच्छ एष गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्न बलिर्नमः। ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु।

इससे बलि देवे। इतीशानपूर्वमध्यदेश प्रतिष्ठापूजन ॥ ९ ॥

फिर पश्चिम और नैर्ऋत्य के मध्यदेश में जाकर :

'भूमे त्वं सर्वलोकानामधारः षड्रसप्रदे। पञ्चवर्णपताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा।' भूमिप्रीत्यर्थं पञ्चवर्णपताकां ध्वजं च स्थापयामि।

इससे पञ्चवर्ण पताका और ध्वजा को पाँच हाथ के डण्डे में फहरा कर। वहीं :

विष्णुप्रिये गजहंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलुहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा।

इससे बलि देवे। इति पश्चिम-नैर्ऋत्य मध्यदेश प्रतिष्ठापूजन ॥ १० ॥

इसके बाद मण्डप के मध्यदेश में जाकर :

'आदित्या वसवो रुद्रा वषट्कारः प्रजापतिः। ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः।' आदित्यादि देवताप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि।

इससे ध्वजा तथा चित्रपताका को सबसे ऊँचे डण्डे पर फहराकर वहीं :

आदित्यादिदेवताः इहागच्छ अयं गन्धाद्युपचारसहितक्षीरान्न बलिर्नमः। आदित्यादिदेवताः प्रीयन्ताम् आदित्याद्या देवताः सुप्रीता वरदा भवन्तु।

इससे बलि देकर प्रार्थना करे :

'यज्ञभागभुजो देवाः सर्वकर्मफलप्रदाः। यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो ममाद्य वै।'

इस प्रकार प्रार्थना करे। डामर तन्त्रादि तन्त्रों के अनुसार देवता-महोत्सव के अन्तगर्ग षोडशस्तम्भ प्रतिष्ठा तथा तोरण, ध्वज और पताका प्रतिष्ठा पूजन समाप्त ॥ ११ ॥

अथाग्निस्थापनप्रयोगः। तत्रादौ कुण्डेऽष्टसंस्काराः।

कुण्डं सव्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुण्डस्य पश्चिमभागे उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य मूलेन षडङ्गं कृत्वा कुण्डे स्थण्डिले वा अष्टौ संस्कारान् कुर्यात्। तद्यथा।

अग्निस्थापन प्रयोग : (उसमें पहले कुण्ड में अष्टसंस्कार) : कुण्ड के बाँये से प्रदक्षिणा करके कुण्ड के पश्चिम भाग में बैठ कर आचमन करके

मूलमन्त्र से प्राणायाम करके मूलमन्त्र से ही षडङ्ग करके कुण्ड या स्थण्डिल पर आठ संस्कार इस प्रकार करे :

देशकाली संकीर्त्य मया सह ब्रह्माणे कृतानां कारितानां चामुकदेवताजपानां सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेनोक्तहविर्द्रव्यैर्होममहं करिष्ये। तदंगभूतमादावस्मिन्कृतस्य विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये।

इति संकल्प्य। तत आचार्यो मूलमन्त्रेण कुण्डं वीक्ष्य १ तेनैव कुशत्रयेण संताड्य २ ॐ मूलेन अस्त्रायफडित्यस्त्रमन्त्रेण गोमयोदकं सम्प्रोक्ष्य तेनैव संलिप्य ३ मूलेन हुं इति वर्म्मण मुष्टिनासिच्य ४ ॐ मूलेन हृदयाय नमः इति हृदयमन्त्रेण स्रुवेण कुशमूलेन वा प्रागग्रा उत्तरोत्तरक्रमेण तिस्रो रेखाः कुण्डे स्थण्डिलपरिमाणाः प्रादेशमात्रा वा कृत्वा तदुपरिगा उदगग्राः प्राक्प्राक्क्रमेण तिस्रो रेखाः कुर्यात्। ततस्तासु प्रागग्रासु क्रमेण।

इससे संकल्प करे। इसके बाद मूलमन्त्र से कुण्ड को देखकर आचार्य (१) तीन कुशाओं से उनका ताडन करके, (२) 'ॐ मूलेन अस्त्राय फट्' इस अस्त्रमन्त्र से गोबर और पानी से प्रोक्षण करके उसीसे लीप कर, (३) मूलमन्त्र के साथ हुं इस वर्म बीज द्वारा मुष्टिसिञ्चन करके (४) 'ॐ मूलेन हृदयाय नमः' इस हृदय मन्त्र से स्रुवा या कुश मूल से प्राग्ग्रा या उत्तरोत्तर क्रम से तीन रेखायें कुण्ड या स्थण्डिल के बराबर या प्रदेशमात्र के बराबर खींचकर (५) उसके ऊपर जानेवाली उदगग्राःप्राकप्राक क्रम से तीन रेखायें बनाये। इसके बाद प्रागग्रा क्रम से :

ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ पुरंदराय नमः।

इससे गन्धादि से पूजा करके :

उदगग्रासु ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ इन्दवे नमः।

इससे पूजा करे।

एवं पञ्च भूसंस्काराः ५ ततः माया (ह्रीं) इति बीजेन कुण्डं गन्धादिना सम्पूज्य इति षष्ठः ६ तत आवाहनादि सप्तमुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ७ अस्त्रेणागुण्ठ्य इति कुण्डेऽष्ट संस्काराः।

इस प्रकार भूमि के पाँच संस्कार करके, (६) मायाबीज 'ह्रीं' से कुण्ड की गन्धादि से पूजा करके, (७) आवाहनादि सप्त मुद्रायें प्रदर्शित करे। फिर (८) अस्त्र से अवगुण्ठन करे। ये कुण्ड के आठ संस्कार हुये।

कुण्डे स्थण्डिले वा तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्त साष्टपत्रचतुरस्रयन्त्रं लिखित्वा तत्र त्रिकोणे ॐ ह्रीं इति मन्त्रं लिखेत् । तत्र देशे

इसके बाद कुण्ड या स्थण्डिल के बीच में त्रिकोण, षटकोणयुक्त वृत्त और अष्टपद्म सहित चतुरस्र यन्त्र लिखकर वहाँ त्रिकोण में 'ॐ ह्रीं ॐ' यह मन्त्र लिख कर वहीं :

ॐ मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। ॐ तत्तन्नाम्नं नवपीठशक्तिभ्यो नमः।

इति सम्पूज्य तदुपरि सुवर्णस्य कलशं निधाय।

इससे पूजा करके उसपर सोने का कलश रख कर :

ॐ ह्रीं वागीशीवागीश्वरयोगपीठात्मने नमः।

इत्यासनं दत्वा मूलेन हुं इति वर्मणा अभ्युक्ष्य ॐ आग्नेययोगपीठाय नमः। इति पीठं सम्पूज्य।

इससे आसन देकर मूलमन्त्र के साथ 'हुं' इस वर्मबीज से अभ्युक्षण करके 'ॐ आग्नेययोगपीठ नमः'। इससे पीठ की पूजा करके :

'शयागताम् ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारणीम्। देवेन भुज्यमानां तु स्मरेत्तद्योनिमण्डले।'

इससे वागीश्वरी का ध्यान करके 'ॐ कुण्डाय नमः' इससे गन्धाधि द्वारा कुण्ड की पूजा करे। इस प्रकार कुण्ड का संकार करके उसमें अग्नि की प्रतिष्ठा करे।

अथाग्निस्थापनम्।

सूर्यकान्तमणेः सकाशात् वा अरणितः श्रोत्रियागारतो वा कांस्यपात्रेण पिहितमग्निं मूलेन फट् इत्यस्त्रमन्त्रेणादाय कुण्डबाह्य आग्नेयां निधाय मूलेन हुं इति वर्मणा उद्घाट्य ज्वलितकुशेन मूलेन फट् इत्यस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादांशं परित्यजेत्। ततो मूलमन्त्रेणाग्निं पुरतो धृत्वा तेनैव वीक्ष्य अस्त्रेणाल्पं प्रोक्ष्य तेनैव कुशत्रयेण संताड्य ॐ हुं इति वर्म्मणा संसिच्य ॐ रं इति वाह्निबीजेन चैतन्यं संयोज्य ॐ इति तारेणाभिमन्त्र्य धेनुमुद्रया ॐ वं इति सुधाबीजेन अमृतीकृत्य ॐ फट् इत्यस्त्रेण संरक्ष्य अवगुण्ठन्या मुद्रया ॐ हुं इति कवचेनावगुण्ठ्य ततो बाहुभ्यां वह्निपात्रं समुद्धृत्य ॐ इति प्रणवेन कुण्डोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा :

अग्निस्थापन : सूर्यकान्तमणि से या अरणी से या किसी क्षत्रिय ब्राह्मण के घर से काँसे के बर्तन में ढंक कर अग्नि को मूलमन्त्र में फट् लगाकर

इस अस्त्रमन्त्र से लाकर कुण्ड के बाहर आग्नेयी दिशा में रख कर मूलमन्त्र में हुं लगाकर इस कवचबीज से उद्घाटित करके जलते कुशा से मूलमन्त्र में फट् इस अस्त्रमन्त्र से नैर्ऋत्य कोण में क्रव्याद का भाग फेंक दे। इसके बाद मूलमन्त्र से अग्नि को सामने रख कर उसीसे देखकर अस्त्र से अल्प प्रोक्षण करके उन्हीं तीन कुशाओं से ताडन करके 'ॐ हुं' इस कवचबीज से सिञ्चन करके 'ॐ रं' इस अग्निबीज से चैतन्य करके प्रणव (ॐ) से अभिमन्त्रित करके धेनु मुद्रा से 'ॐ वं' सुधाबीज से अमृतीकरण करके 'ॐ फट्' इस अस्त्रमन्त्र से संरक्षित करे। फिर अवगुण्ठनी मुद्रा से 'ॐ हुं' इस कवचमन्त्र से अवगुण्ठन करने के बाद हाथों से अग्नि को निकाल कर 'ॐ' इस प्रणव से कुण्ड पर तीन बार घुमा कर :

'शयागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम्। देवेन भुज्यमानां तां स्मरेत्तद्योनिमण्डले।'

इति ध्यात्वा जानुस्पृष्टधरातलो मूलमन्त्रेण योनौ। शिवरेतोधिया आत्मसम्मुखं वह्निं धृत्वा ॐ हूँ वह्निचैतन्याय नमः।

इससे ध्यान करके घुटनों के बल बैठ कर मूलमन्त्र से योनिमण्डल में शिव के वीर्य की भावना से अपने सामने अग्नि को रख करके : ॐ हुं वह्निचैतन्याय नमः। इस मन्त्र से कुण्ठ के मध्य में स्थापित करने के बाद :

ॐ वागीशीवागीश्वराभ्यां नमः।

इससे आचमन देकर :

ॐ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा।

इस मन्त्र से अग्नि को प्रज्वलित करे। इसके बाद ज्वालिनी मुद्रा दिखा कर उठ कर :

'ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।

इससे प्रार्थना करे। इसके बाद :

अग्नेऽमुकनामासि इति नाम कृत्वा वैश्वानरेति मन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निर्देवता। रं बीजम्। स्वाहा शक्तिः हवने प्रार्थनायां च विनियोगः। ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।'

इस मन्त्र से पाद्यादि से अग्नि की पूजा करके इस प्रकार न्यास करे :

अग्निजिह्वा न्यास : ॐ स्य्रूं हिरण्यायै नमः लिंगे १ ॐ व्य्रूं गगनायै नमः गुदे २ ॐ श्र्य्रूं रक्तायै नमो मूर्ध्नि ३ ॐ व्य्रूं कृष्णायै नमः वक्त्रे ४ ॐ ल्य्रूं

ाप्रभायै नमो नासिकायाम् ५ ॐ य्र्यूं बहुरूपायै नमः नेत्रे ६ ॐ य्र्यूं अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गे ७ इत्यग्निजिह्वान्यासः ।

अग्निजिह्वा देवता न्यास : ॐ देवताभ्यो नमो लिङ्गे १ ॐ पितृभ्यो नमो गदे २ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमो मूर्धिन ३ ॐ यक्षेभ्यो नमो वक्त्रे ४ ॐ नागेभ्यो नमो नासिकायाम् ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः नेत्रे ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः सर्वाङ्गे ७ इत्यग्निजिह्वदेवतान्यासः ।

षडङ्गन्यास : ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा १ ॐ स्वतिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुं स्वाहा ४ ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ ॐ धनुर्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा ६ इति विन्यसेत् ।

ॐ अग्नये जातवेदसे नमो मूर्धिन १ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमो वामांसे २ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमो वाम पार्श्वे ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमो वामकट्याम् ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमो लिङ्गे ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमो दक्षिण कठ्याम् ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमो दक्षिणपार्श्वे ७ ॐ अग्नये देवमुखाय नमो दक्षांसे ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् । 'इष्टं शक्ति स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम् । हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥ १ ॥'

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य शुद्धोदकेन कुण्डं स्थण्डिलं वा परिषिच्य प्राचीवर्जदक्षिणे प्रागग्रैः पश्चिमे उदग्रैः उत्तरे प्रागग्रैश्च दर्भैरगर्भमेध्यस्थमेखलायां परिस्तीर्य्य त्रीन् परिधीन् क्रमान्निक्षिपेत् । ततस्तेषूपरि मेखलाक्रमेण ।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके शुद्ध जल से कुण्ड या स्थण्डिल का परिसिञ्चन करके पूर्व दिशा को छोड़कर दक्षिण में प्रागग्र, पश्चिम में उदगग्र और उत्तर में प्रागग्र दर्भों को गर्भस्थ मेखला में फैलाकर तीनों परिधियों में क्रम से छोड़े । इसके बाद उनके ऊपर मेखला क्रम से : ॐ ब्रह्मणे नमः १ ॐ विष्णवे नमः २ ॐ शिवाय नमः ३ ।

इति गन्धादिभिः सम्पूज्य योन्यां ॐ गौर्यै नमः । इति गौरीं सम्पूजयेत् । ततः ।

इससे गन्धादि से पूजा करके योनि में 'ॐ गौर्यै नमः' इससे गौरी की पूजा करे । इसके बाद :

'ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधक स्वाहा ।'

इति वह्नि मध्ये गन्धादिभिः सम्पूज्य कुण्डयोनिं वस्त्रेणाच्छाद्य कुण्डं नवसूत्रेण संवेष्ट्य कुशकण्डिकां कुर्यात् । इत्यग्निस्थापनम् ।

इससे अग्नि के बीच गन्धादि से पूजा करके कुण्ड की योनि को वस्त्र से ढँक कर कुण्ड को नौ सूत्रों से बाँध कर कुशकण्डिका करे । इत्यग्निस्थापन ।

अथ कुशकण्डिकाप्रकारः ।

स्ववामे कुशानास्तीर्य्य तत्र क्रमेण प्रणीतां १ प्रोक्षणीं २ आज्यस्थालीं ३ स्रुवं ४ स्रुचं ५ अन्यदप्युपयोगि यत् तन्निधाय पवित्रे कृत्वा मूलमन्त्रेण शुद्धाम्भसा तानि प्रोक्ष्य उत्तानानि विधाय प्रणीतां जलेन पूरयेत् । तत्र 'ॐ गङ्गे च यमुने०' इति मन्त्रेण अंकुश मुद्रया तीर्थान्यावाह्य पवित्रे अक्षतांश्च तत्र निःक्षिप्य उत्पवनं चरेत् । तत उदीच्यां प्रणीतां निधाय प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिप्त्वा पवित्राभ्यां जलमानीय हवनीयं द्रव्यजातं प्रोक्षयेत् । ततो मूलमन्त्रेण मूलगायत्र्या वा दक्षिणे पीठमासाद्य । तत्र ॐ अणिमादिपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठशक्तिः सम्पूज्य ॐ ब्रह्मणे नमः १ इति ब्रह्माणं षोडशोपचारैः पूजयेत् । ततो हस्ताभ्यां स्रुक्स्रुवौ धृत्वाधोमुखौ वह्नौ त्रिवारं तापयित्वा वामहस्तेन तौ धृत्वा दक्षिणहस्तेन दर्भैर्यथाक्रमं तदग्रमूलमध्यानि शोधयित्वा प्रोक्षणीजलेन सम्प्रोक्ष्य पूर्ववत् पुनः प्रताप्य दर्भानग्नौ निक्षिप्य शक्तित्रयं न्यसेत् ।

कुशकण्डिका प्रकार : अपने बाँये ओर कुश बिछाकर वहाँ क्रम से १. प्रणीता, २. प्रोक्षणी, ३. आज्यस्थाली, ४. स्रुवा, ५. स्रुची और अन्य उपयोगी वस्तुओं को अधोमुख रखकर पवित्र करके मूलमन्त्र से शुद्ध जल से उनका प्रोक्षण करके सीधा कर उन्हें जल से भर देवे । फिर वहाँ 'ॐ गङ्गे च यमुने०' इस मन्त्र मे अंकुश मुद्रा से तीर्थों का आवाहन करके पवित्र कर उनपर अक्षत छिड़क कर प्रोक्षण करे । इसके बाद उत्तर दिशा में प्रणीता रख कर प्रोक्षणी में उस जल को डालकर उस पवित्र जल से हवनीय द्रव्यों का प्रोक्षण करे । इसके बाद मूलमन्त्र से या मूल गायत्री से दक्षिण की ओर पीठ बनाकर वहाँ 'ॐ अणिमादि पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठशक्तियों की पूजा कर 'ॐ ब्रमणे नमः' इससे ब्रह्मा की षोडशोपचार से पूजा करे । फिर हाथों में स्रुवा और स्रुची को पकड़ कर उनको अधोमुख कर अग्नि पर

तीन बार तपा कर बांये हाथ से उन्हें पकड़ कर दाहिने हाथ से दर्भों से यथाक्रम उनके अग्रभाग, मूल और मध्य का शोधन कर प्रोक्षणी जल से उनका प्रोक्षण करके पूर्ववत् पुनः ताप करके दर्भो को अग्नि में डालकर तीन शक्तियों का न्यास करे :

मूले ॐ ह्रां इच्छाशक्त्यै नमः १ मध्ये ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः २ अन्ते ॐ ह्रूं क्रियाशक्त्यै नमः ३ फिर ॐ स्रुवे नमः १ शक्त्यै नमः २ शंभवे नमः ३।

इति विन्यस्य तौ सूत्र त्रयेण संवेष्ट्य कुंकुमपुष्पादिभिः सम्पूज्य आत्मदक्षिणभागे कुशोपरि स्थापयेत् । इति कुशकण्डिका ॥

इस प्रकार न्यास करके उन्हें (स्रुवा और स्रुची को) तीन सूत्रों से लपेट कर कुंकुम और पुष्पादि से पूजा कर अपने दाहिने ओर कुशा पर स्थापित करे। इति कुशकण्डिका ।

अथ घृतसंस्काराः ।

आज्यस्थालीमानीय ॐ फट् इति वारिणा प्रोक्ष्य तस्यामाज्यं निक्षिप्य मूलमन्त्रेण गोमुद्रयाऽमृतीकृत्य षट्संस्कारांश्चरेत् । तद्यथा । कुण्डोद्धृते वायुकोणे स्थितेंगारे ॐ नमः। इति मन्त्रेणाज्यस्थालीं निधाय तापनं कृत्वा दर्भयुगलं संदीप्य ॐ नमः । इत्याज्ये विनिक्षिपेत् । पुनर्दर्भयुग्मं प्रदीप्य ॐ हुं इति वर्म्मणा आज्योपरि भ्रामयित्वा दर्भयुग्ममग्नौ विसर्जयेत् । ततः ॐ फडिति मन्त्रेण घृते प्रज्वलितं दर्भत्रयं प्रदर्श्य तानग्नौ न्यस्य घृतस्थालीं गृहीत्वा तदङ्गारान् वह्नौ संयोज्य जलं संस्पृशेत् । ततः अंगुष्ठानामिकाभ्यां प्रादेशसम्मितौ दर्भौ गृहीत्वा ॐ फट् । इत्यस्त्रेण घृतमुत्पूय ॐ नमः। इति मन्त्रेणात्मसम्मुखं कृत्वा घृतसंप्लवनं कुर्य्यात् । इति घृतस्य षट् संस्काराः। ततः प्रादेशमान मात्रं संग्रंथिदर्भयुग्मं घृतमध्ये निक्षिप्य आज्यस्य द्वौ भागौ कृत्वा कृष्णशुक्लौ पक्षौ स्मरेत् । ततो वामे इडां नाडीं दक्षिणे पिंगलां मध्ये सुषुम्णां ध्यात्वा होमं कुर्य्यात् ।

घृतसंस्कार : आज्यस्थाली को लाकर 'ॐ फट्' मन्त्र से जल से उसका प्रोक्षण करके उसमें घी डालकर मूलमन्त्र से गोमुद्रा से अमृतीकरण करके इस प्रकार षट् संस्कार करे : कुण्ड से लेकर वायुकोण में स्थित अङ्गार पर 'ॐ नमः' मन्त्र से आज्यस्थाली रख कर घी को गरम कर दो दर्भों को जलाकर 'ॐ नमः' से घी में उन्हें डाले । पुनः दो दर्भों को प्रदीप्त कर 'ॐ हुं' कवच मन्त्र से घी के ऊपर घुमाकर उन दोनों दर्भों को अग्नि में विसर्जित कर देवे । फिर 'ॐ फट्' मन्त्र से घृत में तीन प्रज्वलित दर्भों को

दिखाकर उनका अग्नि में न्यास करके घृतस्थाली लेकर उन अङ्गारों को लेकर अग्नि से संयोजित करके जल का स्पर्श करे। इसके बाद अँगूठे और अनामिका से दो कुशाओं को पकड़ कर 'ॐ फट्' अस्त्रमन्त्र से घृत का हवन करके 'ॐ नमः' मन्त्र से अपने सम्मुख घृत का संप्लवन करे। ये घृत के षट्संस्कार हैं । इसके बाद प्रदेशमान के बराबर दो संग्रथित दर्भों को लेकर घी के बीच डालकर घृत के दो भाग करके कृष्ण तथा शुक्ल पक्षों का स्मरण करे। फिर बाँये इडा, दाहिने पिङ्गला और मध्य में सुषुम्ना नाडियों का ध्यान करके होम करे ।

अथ होमप्रकारः । ॐ नमः । इति मन्त्रेण स्रुवेण दक्षिणभागादाज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्दक्षिणे लोचने) ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये १ पुनः तद्वद्वामभागादाज्यमादाय (अग्नेर्वामलोचने) ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय २ पुनः तन्मध्याज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्भाललोचने) ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ३ इति जुहुयात् । ततः ॐ नमः इति स्रुवेणाज्यं दक्षिणभागादादाय वह्निमुखे ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति हुत्वा व्याहृतिहोमं कुर्य्यात् । तद्यथा ।

होमप्रकार : 'ॐ नमः' मन्त्र से स्रुवा से दाहिने भाग से घृत लेकर (१) 'ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये' से अग्नि के दक्षिण नेत्र में होम करे। फिर 'ॐ नमः' मन्त्र से स्रुवा से बाँये भाग से घृत लेकर (२) 'ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय' से अग्नि के वामलोचन में होम करे। पुनः 'ॐ नमः' मन्त्र से स्रुवा से मध्य भाग से घृत लेकर (३) 'ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा' से अग्नि के भाललोचन में होम करे। फिर 'ॐ नमः' मन्त्र से स्रुवा से दाहिने ओर से घी लेकर 'ॐ अग्नये विस्ष्टकृते स्वाहा' से अग्नि के मुख में होम करके इस प्रकार व्याहृति होम करना चाहिये :

ॐ भूः स्वाहा १ ॐ भुवः स्वाहा २ ॐ स्वः स्वाहा ३ इति व्याहृतिहोमं कृत्वा ततो ।

(१) ॐ भूः स्वाहा; (२) ॐ भुवः स्वाहा; (३) ॐ स्वः स्वाहा। इन मन्त्रों से व्याहृति होम करके :

वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा ।

इति । मन्त्रेण त्रिवारं हुनेत् । ततः प्रणवेन घृताहुतिभिरेकैकवारमग्नेर्गर्भाधानादिषोडशसंस्कारान् कुर्यात् । शुभे कर्मणि गर्भाधानादिविवाहान्तं क्रूरकर्मणि गर्भाधानादिमरणांतं संस्कारान् कुर्य्यात् । तत्र क्रमः ।

इन मन्त्रों से तीन बार होम करे। इसके बाद प्रणव से घृत की एक-एक आहुतियों से अग्नि के गर्भाधान आदि षोडश संस्कार करे। शुभ कर्मों में गर्भाधान से विवाह पर्यन्त तथा क्रूर कर्मों में गर्भाधान आदि से लेकर मरणान्त संस्कारों को करना चाहिये। उसमें क्रम यह है :

ॐ अस्याग्नेर्गर्भाधानसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अग्नेसर्पुंवनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्नेः सीमन्तोन्नयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ अग्नेर्जातकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेर-मुकनामकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ अग्नेर्निष्क्रामणं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ अग्नेः कर्णवन्धं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ अग्नेरन्नप्राशनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ अग्नेश्चौलसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ अग्नेरुपनयन संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ अग्नेर्वेदारम्भं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ अग्नेर्महानाम्नि महाघृतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अग्नेरुपनिषद्व्रतं संस्कार करोमि स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ अग्नेर्व्रतविसर्गं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ अग्नेः केशान्तगोदानं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ अग्नेर्विवाह-संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥ (क्रूरकर्मणि ॐ अग्नेर्मृतिसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥

एवं संस्कारान् संपाद्य वह्नेः पितरौ ॐ पार्वतीपरमेश्वराभ्यां नमः। इति मन्त्रेणसम्पूज्य आत्मनि योजयित्वा मूलाग्रघृतसंप्लुताः पञ्च समिधो मनसा ध्यात्वा जुहुयात्। ततः अग्नेः सप्तजिह्वादिभूतिभ्य-स्तत्तन्मन्त्रैणैकैकामाज्याहुतिं जुहुयात्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार संस्कारों का सम्पादन करके अग्नि के पिता-माता की 'ॐ पार्वतीपरमेश्वराभ्यां नमः' मन्त्र से पूजा करके अपने से संयोजित करके अग्रभाग में घृत लगी पांच समिधाओं का मन से ध्यान करके होम करे। इसके बाद अग्नि की सप्तजिह्वा आदि विभूतियों को तत्तत्मन्त्रों से एक-एक बार घृत की आहुति देवे। उसमें क्रम यह है:

अग्निजिह्वा होम : ॐ रुय्रूं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा इदं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै न मम १ ॐ व्य्रूं गगनायै अग्निजिह्वायै नमः। स्वाहा। इदं गगनायै अग्निजिह्वायै न मम २ ॐ श्य्रूं रक्तायै अग्निजिह्वायै नमः। स्वाहा इदं रक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ३ ॐ व्य्रूं कृष्णायै अग्नि-जिह्वायै नमः स्वाहा। इदं कृष्णायै अग्निजिह्वायै न मम ४ ॐ ल्य्रूं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं सुप्राभायै अग्निजिह्वायै न मम ५ ॐ ग्य्रूं

बहुरूपायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै न मम ६ ॐ ग्य्रूं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै नमः। स्वाहा। इदं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ७। इत्यग्निजिह्वा होमः।

अग्निजिह्वा देवता होम : ॐ अमर्त्याय नमः। स्वाहा इदममर्त्याय न मम १ ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा इदं पितृभ्यो न मम २ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः स्वाहा इदं गन्धर्वेभ्यो न मम ३ ॐ यक्षेभ्यो नमः स्वाहा इदं यक्षेभ्यो न मम ४ ॐ नागेभ्यो नमः स्वाहा इदं नागेभ्यो न मम ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः स्वाहा। इदं पिशाचेभ्यो न मम ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः स्वाहा इदं राक्षसेभ्यो न मम ७। इत्यग्निजिह्वादिदेवताहोमः।

अग्नि के अङ्गदेवताओं का होम : केसरों में और अग्न्यादि कोणों के मध्य दिशाओं में :

अग्न्यङ्ग देवता होम : ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा १ ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूम्रव्यापिने कवचाय हुं स्वाहा ४ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् स्वाहा ६ इत्यग्न्यङ्गदेवताहोमः।

अग्न्यष्टमूर्ति होम : फिर पूर्वादिदलों में ॐ अग्नये जातवेदसे नमः स्वाहा १ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः स्वाहा २ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः स्वाहा ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमः स्वाहा ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः स्वाहा ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमः स्वाहा ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः स्वाहा ७ ॐ अग्नये देवमुखाय नमः स्वाहा ८ इत्यग्न्यष्टमूर्त्तिहोमः।

सायुध दिक्पाल होम : ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय नमः स्वाहा १ ॐ रं वह्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय शक्तिहस्ताय नमः स्वाहा २ ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय नमः स्वाहा ३ ॐ क्षं नैर्ऋतये रक्षोधिपतये खड्गहस्ताय नमः स्वाहा ४ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय नमः स्वाहा ५ ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय नमः स्वाहा ६ ॐ सों सोमाय क्षेत्राधिपतये गदाहस्ताय नमः स्वाहा ७ ॐ हं ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय नमः स्वाहा ८ ॐ आं ब्रह्मणे त्रैलोक्या-धिपतये पद्महस्ताय नमः स्वाहा ९ ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये चक्रहस्ताय नमः स्वाहा १०। इति सायुधदिक्पालहोमः।

एवं सायुधदिक्पालहोमं कृत्वा ततः स्रुवेण चतुर्वारमाज्यमादाय स्रुचि निधाय स्रुवेण तां पिधाय उत्तिष्ठन्।

इस प्रकार सायुध दिक्पाल होम करके स्रुवा से चार बार घी लेकर स्रुची में डालकर स्रुवा से स्रुची को ढँक कर उठते हुये :

'ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा वौषट्'।

इत्यनेन जुहुयात् । ततो विघ्नेश्वरमन्त्रेण दशाहुतीर्जुहुयात् । तत्र क्रमः।

इससे होम करे। इसके बाद विघ्नेश्वर मन्त्र से दश आहुतियाँ देनी चाहिये । उसमें क्रम यह है :

ॐ स्वाहा १ ॐ श्रीं स्वाहा २ ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा ३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा ५ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं स्वाहा ६ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये स्वाहा ७ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद स्वाहा ८ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा ९ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा १० ।

एवं दशाहुतीर्हुत्वा पुनः समस्तमन्त्रैश्चतुवारं जुहुयात् । एवं गणपति होमं कृत्वा देवतायाः पीठं पूजयेत् । ततो हुताशने इष्टदेवतामावाह्य अवाहनादिकां मुद्रां प्रदर्श्य वह्निरूपां तां देवतां सम्पूज्य ततो वह्निरूपां देवतां भावयन् देवस्य मुखे मूलमन्त्रेण पञ्चविंशतिसंख्यया घृताहुतीर्हुत्वा वह्निदैवतयोरात्मना सहैक्यं विभाव्य मूलमन्त्रेण नाडीसन्धानार्थमेकादशाहुतीराज्येन जुहुयात् । तत इष्टदेवताया आवरणदेवताभ्य एकैका घृताहुतीर्हुत्वा पुनर्मूलमन्त्रेण दशधा घृतं जुहुयात् । इत्याज्यहोमं कृत्वा कल्पोक्तद्रव्येण जपदशांशं प्रयोगोक्तसंख्यं वा मूलमन्त्रेण हुत्वा होमं समाप्य पूर्णाहुतिं दद्यात् । तत्र क्रमः ।

इस प्रकार दश आहुतियाँ देकर पुनः समस्त मन्त्र से घी की चार आहुतियाँ देनी चाहिये । इस प्रकार गणपति होम करके देवता के पीठ की पूजा करे । इसके बाद अग्नि में इष्टदेवता का आवाहन करके आवाहनादि मुद्रा प्रदर्शित करके वह्नि रूप उस देवता की पूजा करने के बाद वह्नि रूप इष्टदेवता की भावना करते हुये मूलमन्त्र से देवता के मुख में पच्चीस आहुतियाँ देनी चाहिये। इससे अग्नि और देवता की एकता की भावना करके मूलमन्त्र से नाडीसन्धानार्थ घी की ग्यारह आहुतियाँ देवे । इससे इष्टदेवता तथा आवरण देवता को एक-एक घी की आहुति देकर पुनः मूलमन्त्र से घी की दश आहुतियाँ देवे । इस प्रकार घी का होम करके कल्पोक्त द्रव्य से

जप का दशांश अथवा प्रयोगोक्त संख्यक आहुतियाँ मूलमन्त्र से देकर होम का समापन करके पूर्णाहुति दे । उसमें क्रम इस प्रकार है :

होमावशिष्टेनाज्येन स्रुचं पूरयित्वा तदग्रे पुष्पं फलं निधाय तां स्रुवेणाच्छाद्य उत्थाय तयोर्मूलं नाभौ कृत्वा मूलमन्त्रं वौषडंतं पठित्वा ।

होम से बचे हुये घी से स्रुची को भर कर उसके अग्रभाग में पुष्प और फल रखकर उसे स्रुवा से ढँक कर खड़े होकर उसके (स्रुची के) मूलभाग को नाभि के निकट करके मूलमन्त्र के अन्त में 'वौषट्' लगाकर उसे पढ़कर :

ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं स्वाहा 'मां मदीयं च सकलं हरये ते समर्पये ।'

यह कहकर 'ॐ तत्सत्' मन्त्र से पूर्णाहुति देवे ।

एवं पूर्णाहुतिं दत्त्वा संहारमुद्रया देवतां स्वात्मनि उद्वास्य पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा अग्नेर्जिह्वादीनां पूर्ववत् एकैकाहुतिं दत्त्वा मेखलोपरि अद्भिः परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा ।

इस प्रकार पूर्णाहुति देकर संहार मुद्रा से देवता को अपनी आत्मा में उद्वासित करके पुनः व्याहृतियों से आहुति देकर अग्निजिह्वाओं आदि के लिये पूर्ववत् एक-एक आहुति देकर मेखला पर जल से सिञ्चन करके अपने को पावक से योजित कर :

भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक । कर्मान्तरेपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥ १ ॥

इत्यग्निं सम्प्रार्थ्य विसृजेत् । इति होमं कृत्वा दक्षिणां[1] च दत्त्वा वह्नौ पवित्रे निक्षिप्य प्रणीताम्बु भुवि क्षिप्त्वा सकुशान्परिधीनग्नौ क्षिपेत् । इति होमविधानम् ॥

इससे अग्नि की प्रार्थना करके उसका विसर्जन करे। इस प्रकार होम करके दक्षिणा देकर दोनों पवित्रों को अग्नि में डाल कर प्रणीता का जल भूमि पर गिराकर परिधि की कुशाओं को भी अग्नि में डाल देना चाहिये ।

इति होम विधान ।

---

१. सुवर्णमयुते दद्याल्लक्षे दशसुवर्णकम् । दक्षिणा तु प्रदातव्या यथा होम तथा जापे ।

अथ तर्पणादिविधानम् ।

एवं होमं समाप्य होमदशांशतो दुग्धमिश्रितजलेन[1] मूलमन्त्रान्ते ॐ अमुकदेवतां[2] तर्पयामि । इति तर्पणं कृत्वा तर्पणदशांशेन मूलमन्त्रान्ते सिञ्चामीत्यभिषेकं कुर्यात् । ततो नानाविधैरन्नैर्द्विजसत्तमान्भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा न्यूनसम्पूर्णतां वाचयेत् । इति पञ्चाङ्गकृत्येन मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे तु मन्त्रे मन्त्री प्रयोगोक्तकार्याणि साधयेत् । इति शारदातिलकमन्त्रमहोदधिप्रोक्त तान्त्रिकहवनादिविधानम् ।

तर्पण विधान : इस प्रकार होम समाप्त करके मूलमन्त्र के अन्त में 'ॐ अमुक देवतां तर्पयामि' इस मन्त्र से दुग्धमिश्रित जल से होम का दशांश तर्पण करना चाहिये । (मूलमन्त्र के बाद द्वितीयान्त देवनाम और अन्त में 'तर्पयामि नमः' लगाकर तर्पण करना चाहिये) । इस प्रकार तर्पण करके मूलमन्त्र के अन्त में 'सिञ्चामि' यह जोड़कर तर्पण से दशांश अभिषेक करे (अभिषेक में मूलमन्त्र के द्वितीयान्त देवनाम तथा अन्त में 'अभिसिञ्चामि' लगाकर तर्पण करना चाहिये) । इस प्रकार अभिषेकादि करके विविध व्यञ्जनों से श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये । भोजन कराने के बाद उन्हें दक्षिणा देकर न्यूनसम्पूर्णता का वाचन कराये । (ब्राह्मणों की आराधान से अनुष्ठान की न्यूनता दूर हो जाती है, देवता प्रसन्न होते हैं और अपने मनोरथों की सिद्धि होती है) । इस प्रकार पञ्चाङ्ग कृत्य से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगोक्त कार्यों को सिद्ध करे ।

इति शारदातिलक-मन्त्रमहोदधि प्रोक्त तान्त्रिक हवनादि विधान ।

अथ कुमारीपूजाप्रयोगः[3] ।

---

१. तत्रांतरेपि-तीर्थतोयेन दुग्धेन सर्पिषा मधुनापि वा । गंधोदकेन वा कुर्यात्सर्वत्र साधकोत्तमः ।

२. मूलांते नाम चोच्चार्य्य तर्पयामि ततः परम् । स्वाहांते तर्पयेमन्त्री यथासंख्य विधानतः । तर्पणं च प्रकुर्वीत द्वितीयांतमथोच्चरन् ।

३. ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् । लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् । दारुणे चान्त्यजातीनां पूजयेद्विधिना नरः । वजयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुद्भवाम् । (रुद्रयामले विशेषः) नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम् । रजकस्यापि कन्या च तथा नापितकन्यकाम् । गोपालकन्यकां चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम् । शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् । चाण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् । सुहृद्व-

(रुद्रयामले) एकवर्षा भवेत्सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती । त्रिवर्षा च त्रिधा मूर्तिश्चतुर्वर्षा तु कालिका ॥ १ ॥ शुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च ह्युमा भवेत् । सप्तभिर्मालिनी प्रोक्ता ह्यष्टवर्षा च कुब्जिका ॥ २ ॥ नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापराजित ॥ एकादशा तु रुद्राणी द्वादशाब्दा तु भैरवी ॥ ३ ॥ त्रयोदशा महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका ॥ क्षेत्रज्ञा पञ्चदशभिः षोडशे चाम्बिका भवेत् ॥ ४ ॥ एवं क्रमेण सम्पूज्य यावत्पुष्पं न विद्यते । प्रतिपदादिपूर्णान्त वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥ ५ ॥ महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके । महानवम्यां देवेशि कुमारीश्च प्रपूजयेत् ॥ ६ ॥

कुमारीपूजा प्रयोग : रुद्रयामल में कहा गया है कि एकवर्षा बालिका सन्ध्या, द्विवर्षा बालिका सरस्वती, त्रिवर्षा बालिका त्रिधामूर्ति, चतुर्वर्षा बालिका कालिका, पञ्चवर्षा बालिका शुभगा, षड्वर्षा बालिका उमा सप्त,वर्षा बालिका मालिनी, अष्टवर्षा बालिका कुब्जिका, नववर्षा बालिका सन्दर्भा, दशवर्षा बालिका अपराजिता, एकादश वर्षा बालिका रुद्राणी, द्वादश वर्षा बालिका भैरवी, त्रयोदश वर्षा बालिका महालक्ष्मी, चतुर्दश वर्षा बालिका पीठनायिका, पञ्चदश वर्षा बालिका क्षेत्रज्ञा, और षोडशवर्षा बालिका अम्बिका होती है । इस क्रम से जब तक पुष्पदर्शन न हो, पूजा करे । प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त पूजा वृद्धिभेद से करे । सभी महापर्वों पर यह पूजा विशेष

र्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः । (योगिनीतंत्रे) यदि भाग्यवशाद्देवि वैश्य कुलसमुद्भवा । कुमारी लभ्यते कांते सर्वस्वेनापि साधकः । यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णरौप्यादिभिर्मुदा । तदा तस्य महासिद्धिर्जायते नात्र संशयः । तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम् । जातिभेदो न कर्त्तव्यः कुमारी पूजनेशिवे । जातिभेदान्महेशानि नरकान्न निवर्त्तते । विचिकित्सापरो मन्त्री ध्रुवं स पातकी भवेत् । एषा प्रशस्ता, कुमारी तु सर्वजातीयैव पूज्या । (कुब्जिकातंत्रे) पंचवर्षात्समारभ्य यावद्वा दशवार्षिकी । कुमारी सा भवेद्देवि निजरूपप्रकाशिनी । षड्वर्षाच्च समारभ्य यावच्च नववार्षिकी । तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये । अष्टवर्षात्समारभ्य यावत्त्रयोदशाब्दिकी । कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समारचरेत् । दशवर्षात्समारभ्य यावत्षोडशवार्षिकी । युवतीं तां विजानीयाद्देवतां तां विचिन्तयेत् । (विश्वसारतन्त्रे) अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने । नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका । अत ऊर्ध्वं महामाया भवेत्सैव रजस्वला ।

रूप से पवित्र मानी गयी है। हे देवेशि! महानवमी पर कुमारियों का अवश्य पूजन करना चाहिये।

अथ पूजाप्रयोगः॥

पूजादिनात्पूर्वदिने गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थयेति' निमन्त्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गन्धतैलेन शरीरं संस्कार्यकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरं नयनयोः कज्जलं सर्वांगे चन्दनं वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहे चानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखं संशोध्य।

पूजाप्रयोग : पूजा के पूर्व दिन गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि से मूलमन्त्र के द्वारा 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थय' इस मन्त्र से निमन्त्रित कुमारी को प्रातःकाल बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उबटन आदि लगाकर स्नान कराकर, गन्ध तथा तेल से उसके शरीर का संस्कार करके, बालों का परिष्कार करके, ललाट में सिन्दूर, आँखों में काजल, सारे शरीर में चन्दन लगाकर वस्त्रों और आभूषणों से भूषित करके पूजा घर में लाकर पैर धोकर अष्टदल पीठ पर बैठाकर पान से उसके मुख को शुद्ध करके :

देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्ध्यर्थममुककर्मणि अमुकदेवताप्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके न्यास करे।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ क्लां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्लीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुँ ४ ॐ क्लौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ क्लः कुमारिके अस्त्राय फट ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः।

एवमेव करन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इसी प्रकार न्यास करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्-बालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम्। नानालंकारनम्राङ्गीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम्॥ १॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम्। शङ्खकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम्॥ २॥

एवं ध्यात्वात्मशिरसि पुष्पं दत्त्वावाहयेत्॥

इससे ध्यान करके अपने सिर पर फूल डालकर उसका आवाहन करे।

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्॥ १॥

इस मन्त्र से आवाहन करके :

ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यमेवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति पूजयित्वा षडङ्गानि पूजयेत्।

इससे पूजा करके षडङ्ग की पूजा करे।

ॐ क्लां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्लीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुं ४ ॐ क्लौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ क्लः कुमारिके अस्त्राय फट् ६

इससे गन्ध आदि द्वारा पूजा करके :

ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिके श्रीपादुकां पूजयामि।

इससे तीन पुष्पांजलि देकर नव नामों से इस प्रकार पूजा करे।

ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः १ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २ ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४ ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ६ ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः ७ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८ ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ९।

इस प्रकार पूजा करके मूलमन्त्र से तीन पुष्पांजलियाँ देकर प्रदक्षिणा करके प्रणाम करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तु ते॥ १॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्। त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥ २॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥ ३॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्: शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥ ४॥ कलाधरां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्। कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥ ५॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्ड विनाशिनीम्। प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥ ६॥ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिका देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम्॥ ७॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्। पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गं नमाम्यहम्॥ ८॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्। सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥ ९॥

इति सम्प्रार्थ्य साष्टाङ्गं प्रणम्य दक्षिणां च दत्त्वा तत्राङ्गे स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा तन्नामभिः पूजयेत् ।

इससे प्रार्थना करके साष्टाङ्ग प्रणाम करके दक्षिणा देकर अपने इष्टदेवता का ध्यान करके उनके नामों से पूजा करे।

अस्य फलादेशः-पूजोपकरणानीह कुमार्यै यो ददाति हि। सन्तुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वेसानुकल्प्यते ॥ १ ॥

फलादेश : जो मनुष्य कुमारी के लिये पूजा के उपकरण देता है, उससे सभी देवता सन्तुष्ट रहते हैं। उससे सन्तुष्ट होकर देवता पुत्र रूप में उत्पन्न होकर उसे अनुगृहीत करते हैं।

योगिनी तन्त्रे। कुमारीपूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुन्दरि। जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ २ ॥ कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः। महापुण्यतमो भूयात् समन्तात्क्रोशपञ्चकम् ॥ ३ ॥

योगिनी तन्त्र में कहा गया है : हे सुन्दरि ! करोड़ों जिह्वाओं और करोड़ों मुखों से भी मैं कुमारीपूजन के फल को कहने में समर्थ नहीं हो रहा हूं। जहाँ कुमारी का पूजन होता है वह स्थान भू-मण्डल को पवित्र करने वाला है। जहाँ कुमारीपूजन होता है उसके चारों ओर पाँच कोस की भूमि पुण्यतम हो जाती है।

रुद्रयामले। महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालंकारभोजनैः। पूजनान्मन्दभाग्योऽपि लभते जयमङ्गलम् ॥ ४ ॥ पूजया लभते पुत्रान् पूजया लभते श्रियम्। पूजया धनमाप्नोति पूजया लभते महीम् ॥५॥ पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महौजसम्। महाविद्याः प्रसीदन्ति सर्वे देवा न संशयः ॥ ६ ॥ कालभैरवब्रह्मेन्द्रब्राह्मणा ब्रह्मवेदिनः। रुद्रश्च देववर्गाश्च वैष्णवा ब्रह्मरूपिणः ॥७॥ अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिताः। अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा ॥ ८ ॥ नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः। उपसर्गस्थिता येये तेते तुष्टा न संशयः ॥ ९ ॥ कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता। असुरा दुष्टनागाश्च येये दुष्टग्रहा अपि ॥ १० ॥ भूतवेतालगन्धर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः। याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः ॥ ११ ॥ पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डे सचराचरम्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ १२ ॥ सन्तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत्। अद्याहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा। कुमारीपूजनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ १३ ॥ महाकान्तिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदम् ॥ १४ ॥

रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है : अलङ्कार तथा भोजन से महापूजा आदि करके मन्दभाग्य मनुष्य भी जय और मङ्गल को प्राप्त करता है। मनुष्य पूजा से पुत्र तथा लक्ष्मी प्राप्त करता है। पूजा से धन प्राप्त करता है। पूजा से भूमि प्राप्त करता है। मनुष्य पूजा से लक्ष्मी तथा महाविद्या को प्राप्त करता है। जो पूजा करता है उससे निःसन्देह सभी महाविद्यायें तथा सभी देव प्रसन्न होते हैं। कालभैरव, ब्रह्मा, इन्द्र तथा ब्रह्मविद् ब्राह्मण, रुद्र, ब्रह्मरूपी वैष्णव देव वर्ग, दो हाथोंवाले मन्त्रों से सुशोभित वैष्णव अवतार, अन्य दिक्पाल देव, चराचर के गुरु, नानाप्रकार की विद्याओं के आश्रित कूट विद्यावाले दानव, उपसर्ग में स्थित जो-जो देवता हैं, वे सभी सन्तुष्ट हो जाते हैं इसमें कोई संशय नहीं। जो कुमारीपूजन करता है उससे कुमारी, योगिनी, परमदेवता साक्षात् कुमारी, असुर, दुष्ट नाग, सभी दुष्ट ग्रह, भूत, बेताल तथा गन्धर्व, अन्य सभी देवता और भूः, भुवः स्वः, भैरव, पृथिवी आदि सभी ग्रह, इस ब्रह्माण्ड में समस्त जड़-चेतन, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव, सभी उससे सन्तुष्ट और सर्वतुष्ट होते हैं। आज मैं भी शुद्ध रूप हूं अन्य लोक की क्या कथा ? कुमारी का पूजन करके तीनों लोको को मनुष्य वश में कर सकता है। शीघ्र ही वह महातेजस्वी हो जाता है। यह पूजा समस्त पुण्य फलों को देने वाली है।

नीलतन्त्रे। महाभयातिदुर्भिक्षाद्युत्पातानि कुलेश्वरि। दुःस्वप्नमपमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥१५॥ कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवन्ति हि। नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ १६ ॥ घ्नन्ति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान्। ग्रहा रोगाः क्षयं यान्ति भूतवेतालपन्नगाः ॥ १७ ॥ तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुन्दरमोहिनीम्। दिव्यभावस्थितं साक्षात्तन्त्रमन्त्रफलं लभेत् ॥ १८ ॥ महाविद्या महामन्त्रं सिद्धिमन्त्रं न संशयः। विधियुक्तां कुमारीं तु भोजयेच्चैव भैरव ॥ १९ ॥ पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चन्दनं शुभम्। भक्तिभावेन सम्पूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥ २० ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे सर्वदेवोपयोगि-

पद्धतिचतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥

नील तन्त्र में कहा गया है : हे कुलेश्वरि, महाभय, दुर्भिक्ष, उत्पात दुःस्वप्न, अपमृत्यु तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न होनेवाली बाधायें कुमारीपूजा से कभी नहीं होतीं।

हे देवेशि ! क्रम से नित्य विधिपूर्वक कुमारीपूजन करना चाहिये। पूजित कुमारियाँ विघ्नों को, भय को और महान मदोत्कट शत्रुओं को नष्ट कर देती हैं। ग्रह, रोग, भूत, वेताल तथा नाग आदि सभी इससे नष्ट हो जाते हैं। उक्त जपों को सम्पन्न करके सुन्दर और मोहिनी कन्या की पूजा करके दिव्य भावों में स्थित साधक साक्षात् तन्त्र-मन्त्र के फलों को, महाविद्या और महामन्त्र को तथा सिद्धिप्रद मन्त्र को प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे भैरव ! विधियुक्त कुमारी को भोजन कराये। पाद्य, अर्घ्य, धूप, केसर तथा शुभ चन्दन से भक्तिपूर्वक पूजा करके कुमारियों को देवे।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे सर्वदेवोपयोगि
पद्धति चतुर्थं तरङ्गः ॥ ४ ॥

गणेश

पञ्चम तरंग

गणेश तन्त्र

अथ गणेशतन्त्रप्रारम्भः ।

आदि पटल : षडक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र प्रयोग ।

(मन्त्रो यथा-मन्त्रमहोदधी) 'वक्रतुण्डाय हूँ' **इति षडक्षरो मन्त्रः ।**

मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है : 'वक्रतुण्डाय हुं' यह छः अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानम् । प्रातः कृतक्रियश्चन्द्रताराादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं विधाय जपस्थानमागत्य कूर्मशोधिते स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य मूलेनाचम्य प्राणानायम्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठामन्तर्मातृकाबहिर्मातृका न्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा पूर्ववत् गणेशकलामातृका-न्यासं विधाय प्रयोगोक्त न्यासादिकं कुर्यात् तत्र क्रमः ।

इसका विधान : प्रातःकाल अपना कृत्य करके चन्द्रमा और तारों के बल से युक्त शुभ मुहूर्त में एकान्त देश में जपस्थान निश्चित करके गणपति की पूजा से लेकर नान्दी श्राद्ध तक करके जपस्थान पर आकर कूर्मशोधित अपने आसन पर पूर्वमुख या उत्तरमुख बैठकर मूलमन्त्र से आचमन तथा प्राणायाम करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, न्यास सर्वदेवोपयोगि-पद्धति से करके पूर्ववत् गणेशकलामातृका न्यास करके प्रयोगोक्त न्यास आदि करना चाहिये । उसमें क्रम यह है :

विनियोग : **ॐ अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम्, यं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।**

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनि-योगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ वं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्रं नमः तर्ज-

नीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ तुं नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ डां नमः अनामिकाभ्यां नमः । ॥ ४ ॥ ॐ यं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ हुं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ वं नमः हृदयाय नमः । १ ॥ ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ तुं नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ डां नमः कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हुं नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

वर्णन्यास : ॐ वं नमः भ्रूमध्ये ॥ १ ॥ ॐ क्रं नमः कण्ठे ॥ २ ॥ ॐ तुं नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ डां नमः नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ यं नमः लिंगे ॥ ५ ॥ ॐ हुं नमः पादयो ॥ ६ ॥ इति वर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ध्यानम् : उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् । रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥

इति ध्यायेत् ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठ देवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा ।

इससे ध्यान करने के बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में या गणेशमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पद्धतिमार्ग से स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नन्दायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् ।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य-तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादि-पुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः ।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर

घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दूध की और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके, पद्धतिमार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है :

पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पांजलि गणेश के ऊपर देकर 'पूजितास्तर्पितोऽस्तु' यह कहे । इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोणकेसरों षडङ्गों की इस प्रकार पूजा करे :

आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ वं नमः हृदयाय नमः[१] हृदये श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा[२] शिरसि श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तं नमः शिखायै वषट्[३] शिखायां श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ डां नमः कवचाय[४] हुं कवचं श्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्[५] नेत्रत्रये श्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ हुं नमः अस्त्राय फट्[६] अस्त्रे श्रीपा० ॥ ६ ॥

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ्य से जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु :

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध, अक्षत, पुष्प लेकर प्राची क्रम से आठों दिशाओं में (वक्रतुण्ड गणेश यन्त्र देखिये चित्र १) :

ॐ विघ्नायै नमः[१] विघ्नाश्रीपा० १ । ॐ विधात्र्यै नमः[२] विधात्री श्रीपा० २ । ॐ भोगदायै नमः[३] भोगदाश्रीपा० ३ । ॐ विघ्नघातिन्यै

नमः[१०] विघ्नघातिनी श्रीपा० ४। ॐ निधीप्रदीपायै नमः[११] निधिप्रदीप श्रीपा० ५। ॐ पापघ्न्यै नमः[१२] पापघ्नीश्रीपा० ६। ॐ पुण्यायै नमः[१३] पुण्यश्रीपा० ७। ॐ शशिप्रभायै नमः[१४] शशिप्रभश्रीपा० ८।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।' यह पढ़कर और पुष्पांजलि देकर विशेषार्घ्य से जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

फिर दलाग्रों में :

ॐ वक्रतुण्डाय नमः[१५] वक्रतुण्ड श्रीपा० १। ॐ एकदंष्ट्राय नमः[१६] एकदंष्ट्र श्रीपा० २। ॐ महोदराय नमः[१७] महोदर श्रीपा० ३। ॐ हस्तिमुखाय नमः[१८] हस्तिमुख श्रीपा० ४। ॐ लम्बोदराय नमः[१९] लम्बोदर श्रीपा० ५। ॐ विकटाय नमः[२०] विकटश्रीपा० ६। ॐ विघ्नराजाय नमः[२१] विघ्नराजश्रीपा० ७। ॐ धूम्रवर्णाय नमः[२२] धूम्रवर्ण श्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।' यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ्य से जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

फिर भूपुर में पूर्वादिक्रमेण : ॐ लं इन्द्राय नमः[२३] १। ॐ रं अग्नये नमः[२४] २। ॐ मं यमाय नमः[२५] ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[२६] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[२७] ५। ॐ यं वायवे नमः[२८] ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[२९] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[३०] ८। पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३१] ९। वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३२] १०।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

फिर इन्द्रादि के समीप ॐ वं वज्राय नमः[३३] १। ॐ शं शक्तये नमः[३४] २। ॐ दं दण्डाय नमः[३५] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[३६] ४। ॐ पां पाशाय नमः[३७] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[३८] ६। ॐ गं गदायै नमः[३९] ७। ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः[४०] ८। ॐ पं पद्माय नमः[४१]। ॐ चं चक्राय नमः[४२] १०।

इससे वज्रादि अस्त्रों की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कारान्त पूजन करने के बाद जप करे।

अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः अष्टद्रव्यैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन

तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कारयेत्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च 'ऋतुलक्षं जपेन्मन्त्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः। जुहुयान्मन्त्रसंसिद्ध्यै वाडवान्भोजयेच्छुचीन् ॥ १ ॥ ततः सिद्धे मनौ काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान्।

इसका पुरश्चरण छः लाख जप है। अष्टद्रव्यों से जप का दशांशहोम करना चाहिये (इक्षु, सत्तू, केला, चिउड़ा, तिल, मोदक, नारियल और धान का लावा इन्हें द्रव्याष्टक कहते हैं : 'इक्षवः सक्तवो रम्भाफलानि चिपिटास्तिलाः। मोदका नारिकेलानि लाजा द्रव्याष्टकं स्मृतम्।') फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक को अपने काम्य प्रयोग सिद्ध करने चाहिये।

ब्रह्मचर्यरतो मन्त्री जपेद्द्विसहस्रकम्। षण्मासमध्याद्दारिद्र्यं नाशयत्येव निश्चितम्।

ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये साधक १२ हजार मन्त्रों का जप करे तो ६ महीने के भीतर निश्चित रूप से दरिद्रय का नाश होता है।

चतुर्थ्यादिचतुर्थ्यन्तं जपेद्दशसहस्रकम् ॥ ३ ॥ प्रत्यहं जुहुयादष्टोत्तरं शतमतन्द्रितः। पूर्वोक्तं फलमाप्नोति षण्मासाद्भक्तितत्परः ॥ ४ ॥ आज्याक्तान्नस्य होमेन भवेद्धनसमृद्धिमान्। पृथुकैर्नारिकेलैर्वा मरिचैर्वा सहस्रकम् ॥ ५ ॥ प्रत्यहं जुह्वतो मासाज्जायते धनसञ्चयः। जीरसिन्धुमरीचाक्तैरष्टद्रव्यैः सहस्रकम् ॥ ६ ॥ जुहुयात्प्रतिदिनं पक्षात्स्यात्कुबेर इवार्थवान्।

चतुर्थी से चतुर्थी पर्यन्त प्रतिदिन १० हजार जप करे और एकाग्रचित से प्रतिदिन १०८ आहुतियाँ दे। इस प्रकार भक्तिपूर्वक करने से ६ मास के भीतर पूर्वोक्त फल मिलता है (दरिद्रता दूर होती है)। घी मिलाकर अन्न की आहुतियाँ देने से मनुष्य धन एवं समृद्धि प्राप्त करता है। प्रतिदिन नारियल या मरिच आदि की १ हजार आहुतियाँ देने से एक मास के भीतर धनराशि मिलती है। जीर सिन्धु, मरिच मिलाकर अष्टद्रव्य से प्रतिदिन १ हजार आहुतियाँ देने से व्यक्ति एक पक्ष में कुबेर के समान धनवान हो जाता है।

चतुःशतं ४४४ चतुश्चत्वारिंशदाढ्यं दिने दिने। तर्पयेन्मूलमन्त्रेण मण्डलादिष्टमाप्नुयात् ॥ ७ ॥ इति वक्रतुण्डषडक्षरमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

प्रतिदिन मूलमन्त्र से ४४४ तर्पण करने से मनोवाञ्छित फल मिलता है। इति वक्रतुण्ड षडक्षर मन्त्रप्रयोग ॥ १ ॥

अथ मन्त्रभेदः (मन्त्रमहोदधौ) मन्त्रो यथा । मेधोल्काय स्वाहा । इति षडक्षरो मन्त्रः । अस्य विधानं सर्वं पूर्ववज्ज्ञेयम् । तथा च । 'षडक्षरो यमादिष्टो भजतामिष्टदो मनुः । पूर्ववत्सर्वमेतस्य समाराधनमीरितम् १ ।' इति द्वितीयषडक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्रभेद : मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है : मेधोल्काय स्वाहा । यह षडक्षर मन्त्र है । इस मन्त्र के सभी विधान पूर्वोक्त मन्त्र के समान जानना चाहिये । कहा भी है कि षडक्षर मन्त्र उपासना करनेवालों के लिये इष्ट फलदायक है । इसकी उपासना पूर्ववत् ही कही गई है । इति द्वितीय षडक्षर मन्त्र ॥ २ ॥

अथैकत्रिंशदक्षरवक्रतुण्डमन्त्रप्रयोगः । (मन्त्रमहोदधौ) मन्त्रो यथा । 'रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान् । रक्षोहणोबलगहनोवक्रतुण्डाय हुं ।' इत्येकत्रिंशदक्षरमन्त्रः ।

इकतीस अक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है : रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान् । रक्षोहणोबलगहनोवक्रतुण्डाय हुं । यह ३१ अक्षर का मन्त्र है ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य श्रीवक्रतुण्डगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिरनुष्टुप् छन्दः । विघ्नेशो देवता । वं बीजम् । यं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : भार्गवर्षये नमः शिरसि नमः ॥ १ ॥ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ रायस्पोषस्य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ददिता तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ निधिदोरत्नधातुमान् मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रक्षोहणो अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ बलवाहनो कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ वक्रतुण्डाय हुं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

इस प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करे । इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् । रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ।

इसके अन्य सब विधान षडक्षर मन्त्र के समान हैं । इत्येकत्रिंशदक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र प्रयोग ॥ ३ ॥

अथोच्छिष्टगणपति नवार्णमन्त्रप्रयोगः ।

(मन्त्रमहोदधौ) मन्त्रो यथा । हस्तिपिशाचिलिखेस्वाहा । इति नवार्णमन्त्रः ।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा । यह नवार्ण मन्त्र है ।

अस्य विधानम् : **विनियोग** : ॐ अस्यश्युच्छिष्टगणेशनवार्णमन्त्रस्य कंकोल ऋषिः विराट्छन्दः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । अखिलाप्तये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : कंकोलर्षये नमः शिरसि १ । ॐ विराट्छन्दसे नमः मुखे २ ॥ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ हस्ति अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ पिशाचि तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ लिखे मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ४ ॥ ॐ हस्तिपिशाचिलिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादि पञ्चाङ्ग न्यास : ॐ हस्ति हृदयाय नमः १ ॥ ॐ पिशाचि शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ लिखे शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ स्वाहा कवचाय हुं ४ ॥ ॐहस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा अस्त्राय फट् ५ ॥ इति हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशौ मोदकपात्रदंतौ करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्मत्तमुच्छिष्टगणेशमीडे १ । इति ध्यायेत् ।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरत्वान्तपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा ।

इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेशमण्डल में पद्धतिमार्ग से मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजन करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ । ॐ चालिन्यै नमः २ । ॐ नन्दायै नमः

३। ॐ भोगदायै नमः ४। ॐ कामरूपिण्यै नमः ५। ॐ उग्रायै नमः ६। ॐ तेजोवत्यै नमः ७। ॐ सत्यायै नमः ८। मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९। इति पूजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य। ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके पद्धतिमार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजन कर देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परोदेवपरामृतरप्रिय। अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि गणेश के ऊपर देकर 'पूजितास्तर्पितोऽस्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण में षडङ्गों की इस प्रकार पूजा करे :

अग्निकोणे[१] ॐ हस्ति हृदयाय नमः[१] १। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र पठेत्। नैर्ऋत्ये। ॐ गीं पिशाचि शिरसे स्वाहा[२] शिरसि श्रीपा० २। वायव्ये। ॐ गूं लिखे शिखायै वषट्[३] शिखा श्रीपा० ३। ऐशान्ये०। ॐ गैं स्वाहा कवचाय[४] हुं कवचं श्रीपादुकां पूजयामि त० ४। मध्ये ॐ गौं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्[५] नेत्रत्रये श्रीपा० ५। दिक्षु ॐ गः हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा। अस्त्राय फट्[६] अस्त्रे श्रीपादुकां पू० त० नमः ६ ॥ इति पूजयेत्।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥'

---

१. तन्त्रांतरे तु हस्तिपिशाचिनि खे स्वाहेति नवार्णमन्त्रः। हस्तिपिशाचि-लिखे स्वाहा गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नवार्णभेदेन दशाक्षरीमन्त्रः ॥

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घं विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राच्यादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु।

फिर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध, पुष्प, अक्षत लेकर प्राच्यादि क्रम से आठों दिशाओं में (उच्छिष्ट गणपति नवार्ण यन्त्र देखिये चित्र २) :

प्राच्याम् ॐ ब्राह्म्यै नमः[७] ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। आग्नेय्याम्। ॐ माहेश्वर्यै नमः[८]। माहेश्वरीश्रीपा० २। दक्षिणे ॐ कौमार्यै नमः[९] कौमारीश्रीपा० ३। नैर्ऋत्ये ॐ वैष्णव्यै नमः[१०]। वैष्णवीश्रीपा० ४। पश्चिमे ॐ वाराह्यै नमः[११]। वाराहीश्रीपादुकां पू० त० ५। वायव्ये ॐ इन्द्राण्यै नमः[१२]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। उत्तरे ॐ चामुण्डायै नमः[१३]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ऐशान्ये ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१४]। लक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र पढ़कर 'अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।' यह कहकर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घं से बिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

फिर अष्टदलों के बाहर : चतुरस्र के भीतर प्राच्याम् ॐ वक्रतुण्डाय नमः[१५] वक्रतुण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि १। आग्नेयाम् ॐ एकदंष्ट्राय नमः[१६]। एकदंष्ट्रश्रीपा० २। दक्षिणे ॐ लम्बोदराय नमः[१७]। लम्बोदर श्रीपा० ३। नैर्ऋत्ये ॐ विकटाय नमः[१८]। विकट श्रीपा०। ४। पश्चिमे ॐ धूम्रवर्णाय नमः[१९]। धूम्रवर्णश्रीपा० ५। वायव्ये ॐ विघ्नराजाय नमः[२०] विघ्नराजश्रीपा० ६। उत्तरे ॐ गजाननाय नमः[२१]। गजाननश्रीपा० ७। एशान्ये ॐ विनायकाय नमः[२२]। विनायकश्रीपा० ८। प्राच्येशानयोर्मध्ये ॐ गणपतये नमः[२३]। गणपतिश्रीपा० ९। पश्चिमनिर्ऋतयोर्मध्ये हस्तदन्ताय नमः[२४]। हस्तदन्तश्रीपा० १०। इति पूजयेत।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र पढ़कर 'अभिष्टसिद्धि में देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।' यह कहकर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पुजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

भूपुर के बाहर : पूर्वादिक्रमेण पूर्वे ॐ लं इन्द्राय नमः[२५]। इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम् ॐ रं अग्नये नमः[२६] अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ दक्षिणे ॐ यमाय नमः[२७]। यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[२८]। निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॐ वं वरुणाय नमः। वरुणश्रीपा० ५। वायवे ॐ यं वायव्ये नमः[३०]। वायुश्रीपा० ६। उत्तरे ॐ कुं कुबेराय नमः[३१]। कुबेरश्रीपा० ७। ऐशान्ये ॐ हं ईशानाय नमः[३२]। ईशानश्रीपा० ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३३]। ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३४] अनन्तश्रीपा० १०।

इस प्रकार दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।' यह कहकर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

फिर पूर्वादिक्रम से तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः[३५] ॥ १ ॥ ॐ श शक्तये नमः[३६] ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः[३७] ॥ ३ ॥ ॐ ख खड्गाय नमः[३८] ॥ ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः[३९] ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः[४०] ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः[४१] ॥ ७ ॥ ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः[४२] ॥ ८ ॥ ॐ प पद्माय नमः[४३] ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः[४४] ॥ १० ॥

इस प्रकार अस्त्रों की पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।' यह कहकर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पिशितं वा फलं मोदकं वा गुडपायसं वा बलिं दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

ॐ गंहंक्लौंग्लौं उच्छिष्टगणेशाय महायक्षाय यं बलि.।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कारान्त पूजन करके मांस, फल या मोदक गुड़ की खीर की बलि देवे। उसमें मन्त्र यह है :

इति मन्त्रेण निवेदयेत्। ततः देवतानिवेदितमोदकं ताम्बूलं वा स्वयं भुक्त्वा उच्छिष्टमुखेन जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तद्दशांशतस्तिलहोमः। तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतत्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं जहुयात्तिलैः। एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ १ ॥

इस मन्त्र से बलि निवेदित करने के बाद देवता को निवेदित मोदक या पान स्वयं खाकर उच्छिष्ट मुख से जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तद्दशांश तिल का होम, और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : इस मन्त्र का एक लाख जप और तिलों से दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक काम्य प्रयोगों को सिद्ध करे।

स्वांगुष्ठप्रतिमां कृत्वा कपिना सितभानुना। गणेशप्रतिमां रम्या-मुक्तलक्षणलक्षिताम् ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाप्य विधानेन मधुना स्नापयेच्चताम्।

लाल चन्दन या श्वेत अर्क से अपने अँगूठे के बराबर की ध्यान में बतलाई आकृति जैसी सुन्दर गणेशजी की प्रतिमा बनाकर विधिवत प्राणप्रतिष्ठा कर उसे मधु से स्नान कराये।

आरम्भ कृष्णभूतादि यावच्छुक्लाचतुर्दशी ॥ ३ ॥ सगुडं पायसं तस्मै निवेद्य प्रजपेन्मनुम्। सहस्रं प्रत्यहं तावज्जुहुयात्यघृतैस्तिलैः ॥४॥ गणेशोहमितिध्यायन्नुच्छिष्टेनावृतो रहः। पक्षाद्राज्यमवाप्नोति नृपजोन्योपि वा नरः ॥ ५ ॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से शुक्लपक्ष की चतुर्दशी तक प्रतिदिन गुड़ एवं खीर निवेदित कर एकान्त में उच्छिष्ट मुख और वस्त्ररहित होकर 'मैं स्वयं गणेश हूं' इस भावना के साथ घी एवं तिल से १ हजार आहुतियां देनी चाहिये। इस प्रयोग के प्रभाव से राजकुल में उत्पन्न या कोई भी अन्य व्यक्ति १५ दिन के भीतर राज्य प्राप्त कर लेता है।

कुलालमृत्स्नाप्रतिमा पूजितैवं सुराज्यदा। वल्मीकमृत्कृता लाभ-मेवमिष्टान्प्रयच्छति ॥ ६ ॥ गौडी सौभाग्यदा सैवं लावणी क्षोभयेदरीन्। निम्बजा नाशयेच्छत्रून्प्रतिमैवं समर्चिता ॥ ७ ॥

इसी प्रकार कुम्हार की मिट्टी की प्रतिमा का पूजन करना राज्यदायक है। बांबी की मिट्टी से बनी प्रतिमा का पूजन करना मनोवाञ्छित लाभ देता है। गौड़ी प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करना सौभाग्यदायक तथा लावणी प्रतिमा का पूजन शत्रुओं को क्षुभित करता है नीम की प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है।

मध्वाक्तैर्होमतो लाजैर्वशयेदखिलं जगत्। सुप्तोधिशय्यमुच्छिष्टो जपञ्छत्रून् वशं नयेत् ॥ ८ ॥ कटुतैलान्वितै राजीपुष्पैर्विद्वेषयेदरीन्।

घी, शहद एवं शक्कर को लाजा (लावा) में मिलाकर हवन करने से समस्त जगत वश में हो जाता है। उच्छिष्ट मुख से शय्या में सोते हुये जप करने से शत्रुओं को वश में किया जाता है। राजी पुष्पों में सरसों का तेल मिलाकर हवन करने से शत्रुओं का विद्वेषण होता है।

द्यूते विवादे समरे जप्तोयं जयमावहेत् ॥९॥ कुबेरोस्य मनोर्जापान्निधीनां स्वामितामयात् । लेभाते राज्यमनरिवानरेशविभीषणौ ॥ १० ॥

द्यूत विवाद और लड़ाई में इस मन्त्र का जप करने से विजय होती है। इस मन्त्र के जप के प्रभाव से कुबेर निधियों का स्वामी बन गया और सुग्रीव तथा विभीषण ने निष्कण्टक राज्य प्राप्त कर लिया।

रक्तवस्त्राङ्गगाराढ्यताम्बूलं निश्यदञ्जपेत् । यद्वा निवेदितं तस्मै मोदकं भक्षयञ्जपेत् । पिशितं वा फलं वापि तेनतेन बलिं हरेत् ।

लाल कपड़ा पहन कर या लाल अङ्गराग लगाकर रात में पान खाते हुये जप करना चाहिये। अथवा गणेशजी को निवेदित मोदक खाते हुये जप करना चाहिये। या मांस, फल या पान आदि किसी वस्तु से बलि देनी चाहिये।

रुद्रयामलतन्त्रे प्रयोगविशेषः : कृष्णां चतुर्थीमारभ्य यावच्छुक्ला चतुर्थिका । सहस्रं प्रजपेन्नित्यं योषिन्नियमपूर्वकम् । स्नापयेन्मधुना नित्यं नैवेद्यं गुडपयासं भुक्तोच्छिष्टो जपेन्नित्यं गणेशोयं सदा प्रियः ॥ १२ ॥ श्वेतार्केनाकृतिं कृत्वा रक्तचन्दनकेन वा । अंगुष्ठमात्रां प्रतिष्ठाप्य द्विजाग्निगुरुसन्निधौ ॥ १३ ॥ जप्त्वा षोडशसाहस्रं सिद्धमन्त्रो भवद्ध्रुवम । सदोच्छिष्टोगणेशानो यक्षराजेन् धीमता ॥ १४ ॥ आराधितः सोपहारैः सम्यगिष्टफलप्रदः । एवं कृत्वा व्यवस्थातुं तद्धनेश्वरतां गत ॥ १५ ॥ अपामार्गसमिद्धोमैः सौभाग्यं लभते ध्रुवम् । अष्टोत्तरशतैर्मन्त्री एतान्मन्त्राभिमन्त्रितान् ॥ १६ ॥

रुद्रयामल तन्त्र में प्रयोग विशेष : कृष्ण चतुर्थी से शुक्ल चतुर्थी पर्यन्त प्रतिदिन स्त्री को नियमपूर्वक एक हजार जप करना चाहिये। तिल और मधु से स्नान कराये तथा गुड़ की खीर का नैवेद्य देवे। भोजन के बाद उच्छिष्ट मुख से नित्य जप करे। इससे यह गणेश सदा प्रसन्न रहते हैं। सफेद मदार या लाल चन्दन से अँगूठे के बराबर आकृति बनाकर ब्राह्मण, अग्नि और गुरु के सामने स्थापित करके सोलह हजार जप कर मनुष्य अवश्य मन्त्र को सिद्ध कर लेता है। धीमान् यक्षराज कुबेर ने कहा है कि इस प्रकार सदा उच्छिष्ट गणेश का मन्त्र सिद्ध हो जाता है। उपहारों सहित आराधित

उच्छिष्ट गणपति सम्यक् इष्टफल प्रदान करते हैं। इस प्रकार की साधना से साधक उनके समान धनेश्वरता प्राप्त करता है। इस मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित अपमार्ग की समिधाओं से होम करने से मनुष्य निश्चय ही सौभाग्य प्राप्त करता है।

कीशाश्वास्थिसमुद्भूतं कीलं मन्त्राभिमन्त्रितम् । निखनेन्मन्दिरे यस्य भवेदुच्चाटनं परम् ॥ १७ ॥ मनुष्यास्थिसमुद्भूतं कीलं मन्त्राभिमन्त्रितम् । निखनेन्मन्दिरे यस्य मरणं तस्य निश्चितम् ॥ ८ ॥ उद्धृते तु भवेत्स्वस्थमिति सर्वस्य निश्चितम् । यद्यन्नाम्ना जपेन्मन्त्रं सहस्रं स वशीभवेत् ॥ १९ ॥ पञ्चसाहस्रहोमेन उद्धरेच्च वरां स्त्रियं । सहस्रदशहोमेन राजा सद्यो वशी भवेत् ॥ २० ॥ लक्षजाप्येन राजानौ द्विलक्षं राजपंक्तयः । दशलक्षेण तद्दिष्टं वश्यं तस्य च सर्वथा ॥ २१ ॥ अणिमादिमहासिद्धिः कोटिजाप्यान्न संशयः । खेचरत्वं भवेन्नित्यं सर्वज्ञत्वं च जायते ॥ २२ ॥

बन्दर तथा घोड़े की अस्थि कील को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दे, उसका परम उच्चाटन हो जाता है। मनुष्य की अस्थि से बनी कील को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दे उसका मरण निश्चित है। उस कील को उखाड़ देने पर वह मनुष्य स्वस्थ हो सकता है, यह सर्वस्य निश्चित है। जिसके नाम से साधक मन्त्र का एक हजार जप करे वह व्यक्ति साधक के वश में हो जाता है। पाँच हजार मन्त्र से होम करने से साधक श्रेष्ठ स्त्री प्राप्त करता है। दश हजार मन्त्र का जप करने से राजा सद्यः वश में हो जाता है। एक लाख जप से दो राजे और दो लाख जप करने से राजाओं का समूह वश में हो जाता है। दश लाख जप से साधक का जो इष्ट हो वह सर्वथा वश में हो जाता है। अणिमा, महिमा आदि महासिद्धियाँ एक करोड़ जप से प्राप्त हो जाती है। आकाश में उड़ना, सर्वज्ञता, आदि सिद्धियाँ भी एक करोड़ जप से प्राप्त होती हैं इसमें कोई संशय नहीं है।

मन्त्रं लिखित्वा शिरसि कण्ठे वा धारयेद्धृदि । सौभाग्यं सर्वरक्षा च भवेत्तत्र सुनिश्चितम् ॥ २३ ॥ सारभूतमिदं मन्त्रं न देयं यस्य कस्यचित् । गुह्यं सर्वागमेष्वेवं हितबुद्ध्याप्रकाशितम् ॥ २४ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते । यथेष्टं चिन्तयेन्मन्त्रं सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥

। इत्युच्छिष्टगणपतिनवार्णमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

यदि मन्त्र को लिखकर मनुष्य शिर में या कण्ठ में धारण करे तो उसे

सौभाग्य और सर्वरक्षा निश्चित रूप से प्राप्त होती है। यह मन्त्र सबका सारभूत है। इसे ऐरे-गैरे को नहीं देना चाहिये। यह सभी आगमों में गोपनीय है। यहाँ हितबुद्धि से इसे प्रकाशित किया गया है। इसके लिये तिथि, नक्षत्र आदि के विचार की आवश्यकता नहीं है। इसमें उपवास आदि करने की भी आवश्यकता नहीं है। बस केवल इच्छानुसार मन्त्र का चिन्तन ही सर्वकामनाओं का फल प्रदान करनेवाला है। इति उच्छिष्ट गणपति-नवार्णमन्त्र प्रयोग।

अथद्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्रप्रयोगः :

(मन्त्र महोदधौ) मन्त्रो यथा। ॐ ह्रीं गं हस्तिपिशाचिलिखे-स्वाहा।

द्वादशाक्षर उच्छिष्ट गणेशमन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ ह्रीं ग हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्रस्य मनुर्ऋषिः विराट् छन्दः। उच्छिष्टगणपतिर्देवता। गं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ह्रीं कीलकम्। ह्रीं अखिलाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मनुऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ विराट्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ गं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ गं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ हस्ति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ पिशाचि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ लिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्या : ॐ ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ गं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हस्ति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ पिशाचि कवचाय हु ॥ ४ ॥ ॐ लिखे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

एवं न्यासं कुर्यात्। अन्यत् सर्वं पूर्ववत्। इति द्वादशाक्षरोच्छिष्ट-गणेशमन्त्रप्रयोगः ॥ २ ॥

इस प्रकार न्यास करे। अन्य सभी विधान पूर्ववत् हैं। इति द्वादशाक्षर उच्छिष्टगणेशमन्त्रप्रयोग।

अथैकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्रप्रयोगः।

(मन्त्रमहोदधौ) मन्त्रो यथा : ॐ नमः उच्छिष्टगणेशायहस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

उन्नीस अक्षर उच्छिष्ट गणेशमन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमः उच्छिष्ट गणेशाय हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा। यह उन्नीस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमन्त्रस्य कङ्कोल ऋषिः। विराट् छन्दः। उच्छिष्टगणपतिर्देवता। अखिलाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कङ्कोलऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नमः ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ उच्छिष्टगणेशाय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ हस्ति मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ पिशाचि अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ लिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमः हृदयाय नमः १। ॐ उच्छिष्टगणेशाय शिरसे स्वाहा २। ॐ हस्ति शिखायै वषट् ३। ॐ पिशाचि कवचाय हुं ४। ॐ लिखे नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादि-षडङ्गन्यासः।

एवं न्यासं कुर्यात्। अन्यत् सर्वं पूर्ववत्। इत्येकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्ट-गणेशमन्त्रप्रयोगः ३।

इस प्रकार न्यास करे। अन्य सभी विधान पूर्ववत् हैं। इति उन्नीस अक्षर उच्छिष्ट गणेशमन्त्र प्रयोग।

अथ सप्तत्रिंशदक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्रप्रयोगः। मन्त्रो यथा महोदधौ ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आंक्रोंह्रींगंघेघे स्वाहा। इति सप्तत्रिंशदक्षरोमन्त्रः।

सैंतीस अक्षर उच्छिष्ट गणेशमन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे स्वाहा। यह ३७ अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशमन्त्रस्य गणक ऋषिः।

गायत्री छन्दः। उच्छिष्टगणपतिर्देवता। गं बीजं। ह्रीं शक्तिः। आं क्रों कीलकं। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : गणकर्षये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३। गं बीजाय नमो गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। आं क्रों कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः १। हस्तिमुखाय तर्जनीभ्यां नमः २। लम्बोदराय मध्यमाभ्यां नमः ३। उच्छिष्टमहात्मने अनामिकाभ्यां नमः ४। आंक्रोंह्रींगं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। घेघे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः १। हस्तिमुखाय शिरसे स्वाहा २। लम्बोदराय शिखायै वषट् ३। उच्छिष्टमहात्मने कवचाय हुं ४। आंक्रोंह्रींगं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। घेघेस्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ॐ शरान्धनुः पाशसृणी स्वहस्तैर्दधानमारक्तसरोरुहस्थम्। विवस्त्रपत्न्यां सुरतप्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बासुतमाश्रयेऽहम्॥ १॥

एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय पूर्वोक्तावरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तद्दशांशतो घृत होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्वोक्त पीठपूजा और पूर्वोक्त आवरणपूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। उसका दशांश घी का होम करना चाहिये। तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को इस प्रकार सिद्ध करे :

लक्षं जपेदघृतैर्हुत्वा तद्दशांशं प्रपूजयेत्। पूर्वोक्तपीठे स्वाभीष्टसिद्धये पूर्ववद्विभुम्॥ १॥

अभीष्ट फल की सिद्धि के लिये पूर्वोक्त पीठ पर उक्त रीति से पूजन कर उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर घी की आहुतियों से दशांश हवन करना चाहिये।

कृष्णाष्टम्यादि भूतान्तं यावत्तावज्जपेन्मनुम्। प्रत्यहं साष्टसाहस्रं

जुहुयात्तद्दशांशतः॥ २॥ तर्पयेदपि मन्त्रोयं सिद्धिमेवं प्रयच्छति। धनं धान्यं सुतान्पौत्रान्सौभाग्यमतुलं यशः॥ ३॥

कृष्णपक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी पर्यन्त प्रतिदिन ८५०० जप, इसके दशांश (८५०) का होम तथा तर्पण आदि करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र सिद्धि देता है। धन, धान्य, पुत्र, पौत्र, सौभाग्य एवं सुयश मिलता है।

मूर्ति कुर्याद्गणेशस्य शुभाहे निम्बदारुणा। प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाथ तदग्रे मन्त्रमाजपेत्॥ ४॥ यं ध्यात्वा दासवत्सोपि वश्ये भवति निश्चितम्।

शुभदिन नीम की लकड़ी से गणेशजी की मूर्ति बनानी चाहिये तथा उसकी प्राणप्रतिष्ठा कर उसके समक्ष जिस किसी का ध्यान कर जप किया जाता है, वह सेवक की तरह वश में हो जाता है।

नदीजलं समादाय सप्तविंशतिसंख्यया॥ ५॥ मन्त्रयित्वा मुखं तेन प्रक्षाल्येशसभां वजेत्। पश्येद्यं दृश्यते येन स वश्यो जायते क्षणात्॥६॥

नदी का जल लेकर उसे २७ मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उस जल से मुख धोकर राजसभा में जाना चाहिये। (इसके प्रभाव से साधक) जिसे देखता है या जो उसे देखता है वह तत्काल वश में हो जाता है।

चतुःसहस्रं धत्तूरपुष्पाणि मनुनार्पयेत्। गणेशाय नृपादीनां जाननां वश्यताकृते॥ ७॥

राजा आदि को अपने वश में करने के लिए उक्त मन्त्र से ४ हजार धतूरे के पुष्प गणेशजी को समर्पित करना चाहिये।

सुन्दरीवाम पादस्य रेणुमादाय तत्र तु। संस्थाप्य गणनाथस्य प्रतिमां प्रजपेन्मनुम्॥ ८॥ तां ध्यात्वा रविसाहस्रं सा समायाति दूरतः।

सुन्दरी स्त्री के बाँये पैर की धूल लगाकर उसमें गणेशजीकी प्रतिमा स्थापित कर उस स्त्री का ध्यान कर इस मन्त्र का १२ हजार जप करने से वह स्त्री दूर से आ जाती है।

श्वेतार्केणाथ निम्बेन कृत्वा मूर्ति घृतासुकाम्॥ ९॥ चतुर्थ्यां पूजयेद्रात्रौ रक्तैः कुसुमचन्दनैः। जप्त्वा सहस्रं तां मूर्ति क्षिपेद्रात्रौ सरित्तटे॥ १०॥ स्वेष्टं कार्यं समाचष्टे स्वप्ने तस्य गणाधिपः।

सफेद आक या नीम की लकड़ी की मूर्ति बनाकर चतुर्थी की रात्रि में लाल पुष्प एवं चन्दन से पूजा करे तथा १ हजार जप करके रात्रि में उस

प्रतिमा को नदी के किनारे पर डाल दे। ऐसा करने से भगवान् गणपति साधक के अभीष्ट कार्य को स्वप्न में बतला देते हैं।

सहस्रं निम्बकाष्ठानां होमादुच्चाटयेदरीन् ॥ ११ ॥ वज्रिणासमिधा होमाद्रिपुर्यमपुरं व्रजेत् । वानरस्यास्थि संजप्तं क्षिप्तमुच्चाटयेद्गृहे ॥१२॥ जप्तं नरास्थि कन्याया गृहे क्षिप्तं तदाप्तिकृत् ।

नीम की लकड़ियों की १ हजार आहुतियों से शत्रुओं का उच्चाटन होता है। वज्री समिधा के होम से शत्रु मर जाता है। वानर की हड्डी पर जप कर उसे फेंकने से उच्चाटन होता है। मनुष्य की हड्डी पर जप करके उसे कन्या के घर में फेंकने से वह मिल जाती है।

कुलालस्य मृदा स्त्रीणां वामपादस्य रेणुना । कृत्वा पुत्तलिकां तस्या हृदि स्त्रीनाम संलिखेत् । निखनेन्मन्त्रसंजप्तैर्निम्बकाष्ठैः क्षिताविमाम् । सोन्मत्ता भवति क्षिप्रमुद्धृतायां सुखं भवेत् ।

कुम्हार की मिट्टी तथा स्त्री के बाँये पैर की मिट्टी से पुतला बनाकर उसके हृदय पर स्त्री का नाम लिखना चाहिये। फिर मन्त्र का जप करते हुये उस पुतले को नीम की लकड़ी के साथ भूमि गाड़ देना चाहिये। ऐसा करने से वह स्त्री तत्काल उन्मत्त हो जाती है तथा उस पुतले को जमीन से निकालने पर ठीक हो जाती है।

शत्रोरेवं कृता सा तु लशुनेन समाचिता ॥ १५ ॥ शरावान्तर्गता सम्यक् पूजिता द्वारि विद्विषः । निखाता पक्षमात्रेण शत्रूच्चाटन कृत्स्मृता ॥ १६ ॥

इस प्रकार शत्रु का पुतला बनाकर उक्त प्रयोग करने से वह अपने सहयोगियों के साथ पागल हो जाता है। मिट्टी के बर्तन में उसे रखकर विधिवत पूजा करने से या शत्रुओं के पुतले को गाड़ने से १५ दिन के भीतर शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

विषमे समनुप्राप्ते सितार्कारिष्टदारुजम् । गणपं पूजितं सम्यक् कुसुमै रक्तचन्दनैः ॥ १७ ॥ मद्यभाण्डस्थितं हस्तमात्रे तं निखनेत्स्थले । तत्रोपविश्य प्रजपेन्मन्त्री नक्तं दिवा मनुम् । ॥ १८ ॥ सप्ताहमध्ये नश्यन्ति सर्वे घोरा उपद्रवाः । शत्रवो वश्यतां यांति वर्द्धते धनसम्पदः ॥ १९ ॥

विषम परिस्थिति आने पर सफेद आक या नीम की लकड़ी की प्रतिमा बनाकर, लाल चन्दन एवं लाल फूलों से विधिवत् पूजन कर उसे मद्यपात्र में रखकर, जमीन में १ हाथ नीचे गाड़कर उसके ऊपर बैठकर दिन रात

इस मन्त्र का जप करने से १ सप्ताह के भीतर सभी घोर उपद्रव नष्ट हो जाते हैं, शत्रु वश में आ जाते हैं तथा धनसम्पत्ति की वृद्धि होती है।

दुष्टस्त्रीवामपादस्य रजसा निजदेहजैः । मलैर्मूत्रपुरीषाद्यैः कुम्भकारस्य मृदापि च ॥ २० ॥ एतैः कृत्वा गणेशस्य प्रतिमां मद्यभाण्डगाम् । सम्पूज्य निखनेद्भूमौ हस्तार्द्धे पूरिते पुनः ॥ २१ ॥ संस्थाप्य बह्नि जुहुयात् कुसुमैर्हयमारजैः । सहस्रं सा भवेद्दासी तन्वा च मनसा धनैः ॥ २२ ॥ एवमादिप्रयोगांस्तु नवार्णेनापि साधयेत् ।

दुष्ट स्त्री के बाँये पैर की धूल, अपने शरीर का मल-मूत्रादि तथा कुम्हार की मिट्टी, इन सबसे गणेशजी की प्रतिमा बनाकर मद्यपात्र में रखकर विधिवत् पूजन कर जमीन में आधा हाथ नीचे गाड़ कर, गड्ढे को भर कर उसके ऊपर अग्निस्थापन कर कनेर के फूलों की १ हजार आहुति देने से वह स्त्री दासी के समान हो जाती है।

परीक्षिताय शिष्याय प्रदेया निजसूनवे ॥ २३ ॥ इति सप्तत्रिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

यह मन्त्र परीक्षित शिष्य अथवा अपने पुत्र को ही देना चाहिये। इति सप्तत्रिंशदक्षर मन्त्र प्रयोग।

(प्रकारान्तरेणैकाधिकचत्वारिंशदक्षरमन्त्रभेदो रुद्रयामलतन्त्रे) मन्त्रो यथा । ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आं क्रों ह्रीं गं घेघे उच्छिष्टाय स्वाहा । इति मन्त्रः ।

प्रकारान्तर से ४१ अक्षर मन्त्रभेद : रुद्रयामल तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टमहागणपतिमन्त्रस्य मतंगभगवान् ऋषिः । गायत्री छन्दः । उच्छिष्टमहागणपतिर्देवता । गं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ह्रीं कीलकम् । ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

इस प्रकार विनियोग करे। शेष सब पूर्ववत् है।

(मन्त्रमहोदधौ) द्वात्रिंशदक्षरमन्त्रभेदः । मन्त्रो यथा । ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आंक्रोंह्रींक्लींह्रींहुंघेघे उच्छिष्टाय स्वाहा ।

३२ अक्षर मन्त्रभेद : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ हस्ति-

मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रीं हुं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणपति मन्त्रस्य गणक ऋषिः। गायत्री छन्दः। उच्छिष्टगणपतिर्देवता। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ गणकऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्री-छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ॥३॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥४॥ इति ऋष्यादिन्यास।

करन्यास : ॐ हस्तिमुखाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१ लंबोदराय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ उच्छिष्टमहात्मने मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ आंक्रोंह्रींक्लींह्रींहुं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ घे घे उच्छिष्टाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं च कुर्यात्। अन्यत् सर्वं पूर्ववत् तथा च। द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो यजनं पूर्ववत्स्मृतम्। उच्छिष्टगजवक्त्रस्य मन्त्रेष्वेषु न शोधयेत् ॥ १ ॥ सिद्धादि चक्रमासादेः प्राप्तास्तेसिद्धिदा गुरोः। मनवोमी सदा गोप्या न प्रकाश्या यतः कुतः। परीक्षिताय शिष्याय प्रदेया निजसूनवे ॥ २ ॥ इति।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करे। अन्य सब पूर्ववत् है। ३२ अक्षर मन्त्र का यजन पूर्ववत् ही जानना चाहिये। उच्छिष्ट गजवक्त्र के इन मन्त्रों में सिद्धादि का शोधन न करे। गुरु से साक्षात्प्राप्त होते ही ये मन्त्र सिद्धि देनेवाले होते हैं। इन मन्त्रों को सदा गुप्त रखना चाहिये। जहाँ-तहाँ इनको प्रकाशित नहीं करना चाहिये। परीक्षित शिष्य तथा अपने पुत्र को ही ये मन्त्र देना चाहिये।

अथ प्रकृतग्रन्थैकत्रिंशदक्षरमन्त्रभेदः। मन्त्रो यथा। ॐ नमो हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घेघे उच्छिष्टाय स्वाहा।

प्राकृत ग्रन्थ का ३१ अक्षर मन्त्रभेद : मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमो हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घेघे उच्छिष्टाय स्वाहा।

अस्य विधानम्। कटुनिम्बमूलस्य पर्वमानां गणेशप्रतिमां कृत्वा कृष्णाष्टमीमारभ्यामावस्यापर्यन्तं पञ्चशतसंख्याकं जपं प्रतिदिनं कुर्यात्। स्वयमुच्छिष्टमुखो भूत्वा गणेशाग्रे स्थाल्यां रक्तचन्दनाक्षतपुष्पाणि धृत्वा समभ्यर्च्य स्वोच्छिष्टमुखेन जपः कर्तव्यः। एवं दिनसप्तकं कृत्वाष्टमे

दिवसे स्वयमुच्छिष्टमुखो भूत्वैव पञ्चखाद्येन पञ्चशतं जुहुयात्। ततो-भिलषितं ददाति महिमा भवति ॥ १ ॥ अभिलषितबालाचित्रोपरि गणेशं संस्थाप्य प्रत्यहमष्टोत्तरशतं जपेत् दिनत्रयादाकर्षयति ॥ २ ॥ तं गणेशं तत्कपाले संस्थाप्य सा पुनर्गच्छति पुनरानयनाष्टोत्तरशतं जपेत् यदि सा पुनर्नायाति तर्हि तं गणेशमुच्छिष्टमुखाग्रे निधायाष्टो-त्तरशतं जपेत् राजा वशी भवति ॥ ३ ॥ तं गणेशं नद्यां नीत्वा प्रक्षाल्य स्वमुखाद्वारचतुष्टयं प्रक्षाल्य तस्मात् पतितं किञ्चिदुदकं भाण्डे निःक्षिपेत् तदुदकं ये पिबन्ति ते सर्वे वश्या भवन्ति ॥ ४ ॥ तं गणेशं द्वारे तरुवर-शाखायां निक्षिप्य सम्पूज्याष्टोत्तरशतं जपेत् गृहे ह्यखण्डितमन्त्रं भवति ॥ ५ ॥ तं गणेशं ताम्रे रौप्ये वा निक्षिप्य कटिबन्धनात् स्त्रियो वश्या भवन्ति शत्रुगणः स्तंभो भवति ॥ ६ ॥ तं गणेशं करतले धृत्वा कनक-पुष्पैरर्चयेत् पश्चात् करेण करवाले धृते सति संग्रामे जयो भवति दशशतं जयति ॥ ७ ॥ तं गणेशमन्त्रोपरि संस्थाप्याष्टोत्तरशतं जपेत् उदरपूर्णार्थं-मन्नप्राप्तिर्भवति ॥ ८ ॥ तं गणेशं पाणौ प्रक्षाल्य तदुदकपानाच्छत्रुनाम-ग्रहणाद्रिपुनाशः स्यात् ॥ ९ ॥ इत्येकाधिकत्रिंशदक्षरोच्छिष्टगणेशमन्त्र-प्रयोगः।

इसका विधान : कड़वी नीम की मूल से पर्वमान गणेश की मूर्ति बना-कर कृष्णाष्टमी से आरम्भ कर अमावस्या पर्यन्त प्रतिदिन पाँच सौ जप करे। स्वयं उच्छिष्टमुख होकर गणेश के आगे थाली में रक्तचन्दन, अक्षत, और पुष्प रख कर अच्छी तरह पूजा करके अपने उच्छिष्टमुख से जप करे। इस प्रकार सात दिन तक करके आठवें दिन स्वयं उच्छिष्ट होकर ही पाँच प्रकार के खाद्यपदार्थों से पाँच सौ होम करे। इससे मन्त्र अभिलषित फल देता है और महिमा बढ़ती है। अभिलषित बाला के चित्र पर गणेश को स्थापित करके प्रतिदिन १०८ मन्त्र का जप करने से तीन दिन में उसे आकर्षित करता है। उस गणेश को उस बाला के कपाल पर स्थापित करने से वह फिर चली जाती है। उसे पुनः बुलाने के लिये १०८ मन्त्र का जप करे। यदि वह पुनः नही आती तो उस गणेश को उच्छिष्टमुख से आगे रख कर १०८ बार जप करने से राजा तक वश में हो जाता है। उस गणेश को नदी में धोकर अपने मुख को चार बार धोकर उससे गिरे जल के कुछ भाग को घड़े में डाल देवे। उस जल को जो पीवेंगे वे सब वश में हो जायेंगे। उस गणेश को द्वार पर बृक्ष की शाखा में छिपा कर पूजा कर १०८ बार मन्त्र का जप करने से

घर नित्य अन्न से परिपूर्ण रहता है। उस गणेश को ताम्र या रौप्य पात्र में रख कर कमर में बांधने से स्त्रियाँ वश में हो जाती हैं और शत्रुगण स्तम्भित हो जाते हैं। उस गणेश को हाथ में रखकर धतूरे के फूल से पूजा करने के बाद उस हाथ से तलवार पकड़ने पर संग्राम में विजय होती है और साधक एक हजार शत्रुओं को जीत लेता है। उस गणेश को अन्न के ऊपर स्थापित करके १०८ बार मन्त्र का जप करते ही उदरपूर्ति के लिये अन्न प्राप्त होता है। उस गणेश को हाथ से धोकर उस जल का पान करने से शत्रु का नाम लेने मात्र से शत्रु का नाश हो जाता है। इति ३१ अक्षर उच्छिष्ट गणेश मन्त्र प्रयोग।

अथ शक्तिविनायकचतुरक्षरमन्त्रप्रयोगः। मन्त्रमहोदधौः ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं। इति चतुरक्षरो मन्त्रः।

शक्तिविनायक चतुक्षर मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं। यह चतुक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य शक्तिगणाधिपमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः। विराट् छन्दः। शक्तिगणाधिपो देवता। ग्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवर्षये नमः शिरशि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। शक्तिगणाधिपदेवतायै नमः हृदि ३। ग्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ग्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ग्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ग्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ग्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ग्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ग्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ग्रां हृदयाय नमः १। ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ग्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ग्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ग्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ग्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : विषाणांकुशावक्षसूत्रं च पाशं दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण। स्वपत्न्या युतं हेमभूषाभराढ्यं गणेशं समुद्यद्दिनेशाभमीडे॥१॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा पद्धतिमार्गेण मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरितत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा।

इस प्रकार ध्यान करे। फिर पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेशमण्डल में पद्धतिमार्ग से मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १। ॐ चालिन्यै नमः २। ॐ नन्दायै नमः ३। ॐ भोगदायै नमः ४। ॐ कामरूपिण्यै नमः ५। ॐ उग्रायै नमः ६। ॐ तेजोवत्यै नमः ७। ॐ सत्यायै नमः ८। मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९।

इति पूजयेत् ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय धृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च :

इस प्रकार पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके पद्धतिमार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। (शक्तिविनायक यन्त्र देखिये चित्र ३)।

पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परोदेवपरामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे॥ १॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पितोऽस्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में :

ॐ ग्रां हृदयाय नमः[१] ॥ १॥ ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा[२] ॥ २॥ ॐ ग्रूं

शिखायै वषट्[३] ॥३॥ ॐ ग्रैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ग्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ॥ ५ ॥ ॐ ग्रः अस्त्राय फट्[६] ॥ ६ ॥

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

फिर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध, पुष्प और अक्षत लेकर प्राची क्रम से आठ दिशाओं में :

ॐ वक्रतुण्डाय नमः[१]। वक्रतुण्डश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ इति सर्वत्र। एकदंष्ट्राय नमः[२] एकदंष्ट्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ महोदराय नमः[३]। महोदरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ हस्तिमुखाय नमः[४]। हस्तिमुखश्रीपादुकां० ॥ ४ ॥ ॐ लम्बोदराय नमः[५] लम्बोदरश्रीपादुकां० ॥ ५ ॥ ॐ विकटाय नमः[६]। विकटश्रीपा० ॥६॥ ॐ विघ्नराजाय नमः[७]। विघ्नराजश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ धूम्रवर्णाय नमः[८]। धूम्रवर्णश्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर दलाग्रों में प्राची क्रमसे ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥१॥ ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः २। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः ३। कौमारीश्रीपा०। ॐ वैष्णव्यै नमः ४। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः ५। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः ६। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः ७। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८। महालक्ष्मीपाश्री० ८।

इत्यष्टौ पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा भूपुरेपूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरण पूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। अपूपैर्दशांशतो होमः। मध्वक्तैर्दशांशतरतर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे एतन्मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च 'एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः। अपूपैर्जुयाद्वह्नौ मध्वक्तैस्तर्पयेच्च तम् ॥ १ ॥

इस प्रकार आठों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि देकर भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों और वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार तक पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। मधुयुक्त अपूप से (पूजा से) दशांश होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : इस प्रकार ध्यान करके चार लाख जप करना चाहिये तथा मधुयुक्त अपूप से दशांश हवन करके हवन का दशांश तर्पण करना चाहिये।

घृताक्तमन्नं जुहुयादावर्षादन्नवान्भवेत्। परमान्नैर्हुता लक्ष्मीरिक्षुदण्डैर्नृपश्रियः ॥ २ ॥ रम्भाफलैर्नारिकेलैः पृथुकैर्वश्यता भवेत्। घृतेन धनमाप्नोति लवणैर्मधुसंयुतैः ॥ ३ ॥ वामनेत्रां वशी कुर्यादपूपैः पृथिवीपतिम्।' इति शक्तिविनायकचतुक्षरमन्त्र प्रयोगः।

घृत सहित अन्न की आहुतियाँ देने से एक वर्ष के भीतर साधक अन्नवान हो जाता है। पायस के होम से लक्ष्मी तथा गन्ने के होम से राज्यलक्ष्मी प्राप्त होती है। केला एवं नारियल के हवन से लोगों को वश में करने की शक्ति आ जाती है। घी के हवन से धन मिलता है। मधु के साथ लवण के हवन से स्त्री वश में हो जाती है तथा अपूप के हवन से राजा वश में होता है।

इति शक्तिविनायक चतुरक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ लक्ष्मीविनायकमन्त्रप्रयोगः। (मन्त्रमहोदधौ) मन्त्रो यथा। ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरमन्त्रः।

लक्ष्मीविनायक मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। यह २८ अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य लक्ष्मीविनायकमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः। गायत्री छन्दः। लक्ष्मीविनायको देवता। श्रीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अन्तर्यामिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ लक्ष्मीविनायकदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ श्रीं बीजाय

नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रां गां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं गीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रूं गूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं गैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां गां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ श्रैं गैं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यास ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् : दन्ताभये चक्रवरौ दधानं कराग्रगं स्वर्णघटं त्रिनेत्रम् । धृताब्जयालिङ्गितमब्धिपुत्र्या लक्ष्मीगणेशं कनकाभमीडे ॥१॥

इति ध्यायेत् : ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा ।

इस प्रकार ध्यान करने के बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेशमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पद्धतिमार्ग से स्थापना करके 'ॐ मं कण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पूजन करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ तीव्रायै नमः ॥ १ ॥ ॐ चालिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ नन्दायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ भोगदायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कामरूपिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ उग्रायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ तेजोवत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ॥ ९ ॥

इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण शोध्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तथा च ।

इस प्रकार पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को

ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोछकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति-कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच उसे स्थापित करके और पद्धतिमार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके 'पाद्यादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से अच्छी तरह पूजन करके देवता की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (लक्ष्मीविनायक यन्त्र देखिये चित्र ४) ।

पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परेशः त्वं परामृतरस प्रिय । अनुज्ञां देहि गणप परि-वारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजिता-स्तर्पितोऽस्तु' यह कहे । इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्यदिशा में :

ॐ श्रां गां हृदयाय नमः[१] ॥१॥ ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा[२] ॥२॥ ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट्[३] ॥३॥ ॐ श्रैं गैं कवचाय हुं[४] ॥ ४ ॥ ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ॥ ५ ॥ ॐ श्रः गः अस्त्राय फट्[६] ॥ ६ ॥

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करने के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजिता-स्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

देवदक्षिणपार्श्वे ॐ शङ्खाय नमः[७] शंखश्रीपा० १ । देवतावामे० । ॐ पद्मनिधये नमः[८] पद्मनिधिश्रीपा० २ ।

इस प्रकार पूजा करने के बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध, अक्षत और पुष्प लेकर प्राची क्रम से आठों दिशाओं में :

ॐ बलायै नमः[९] । बलाः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ विमलायै नमः[१०] । विमलाश्रीपा० २ । ॐ कमलायै नमः[११] । कमलाश्रीपा० ३ । ॐ वनमालिकायै नमः[१२] । वनमालिकाश्रीपा० ४ । ॐ विभीषिकायै नमः[१३] । विभीषकाश्रीपा० ५ । ॐ मालिकायै नमः[१४] ।

मालिकाश्रीपा० ६। ॐ शांकर्यै नमः१५। शांकरीश्रीपादुकां पू० ७। ॐ वसुवालिकायै नमः१६। वसुवालिकाश्रीपा० ८।

इस प्रकार आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं दितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

फिर भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त अच्छी तरह पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। बिल्वसमिद्भिर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे चैतन्मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'चतुर्लक्षं जपेन्मन्त्रं समिद्भिर्बिल्वशाखिनः। दशांशं जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते तं प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति।

इसका पुरश्चरण ४ लाख जप है। बेल के वृक्ष की लकड़ी में दशांश होम करना चाहिये और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : ४ लाख जप करना तथा बेल के वृक्ष की लकड़ी से दशांश होम करना चाहिये। पूर्वोक्त पीठ पर लक्ष्मी विनायक का पूजन करना चाहिये। इस प्रकार पुरश्चरण से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर मान्त्रिक काम्य प्रयोग कर सकता है।

उरोमात्रे जले स्थित्वा मन्त्री ध्यात्वार्कमण्डले ॥ २ ॥ एवं त्रिलक्षजपतो धनवृद्धिः प्रजायते। बिल्वमूलं समास्थाय तावज्जप्ते फलं हि तत् ॥ ३ ॥ अशोककाष्ठैर्ज्वलिते वह्नावाज्याक्ततण्डुलैः। होमतो वशयेद्विश्वमर्ककाष्ठस्रुचावपि ॥ ४ ॥ खदिराग्नौ नरपतिं लक्ष्मीं पायसहोमतः। इति लक्ष्मीविनायकमन्त्रप्रयोगः।

हृदयपर्यन्त जल में खड़ा होकर सूर्यमण्डल में इष्टदेव का ध्यान कर ३ लाख जप करने से धन की वृद्धि होती है। बेल वृक्ष के मूल में बैठकर ३ लाख जप करने से भी वही फल मिलता है। अशोक की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में घृताक्त चावलों के होम से विश्व वश में हो जाता है। खादिर

(खैर) की लकड़ी से प्रज्वलित निर्मल अग्नि में आक की समिधा के होम से राजा वश में हो जाता है तथा खीर के होम से लक्ष्मी प्रसन्न हो जाती है।

अथ त्रैलोक्यमोहनकरणगणेशमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधौ। मन्त्रो यथा। वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगं गणपते वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। इति त्र्यस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

त्रैलोक्यमोहनकर गणेश मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। यह ३३ अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहनकरणगणेशमन्त्रस्य गणक ऋषिः गायत्री छन्दः। त्रैलोक्यमोहनकरो गणेशो देवताममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ गणकऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। त्रैलोक्यमोहनकरगणेशदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ गणपते तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ वर वरद मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सर्वजनम् अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ मे वशमानय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगं हृदयाय नमः १। ॐ गणपते शिरसे स्वाहा २। ॐ वर वरद शिखायै वषट् ३। ॐ सर्वजने कवचाय हुं ४। ॐ मे वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। गदाबीजपूरे धनुः शूलचक्रे सरोजोत्पले पाशधान्याग्रदन्तान्। करैः संदधानं स्वशुंडाग्रराजन्मणीकुम्भमङ्काधिरूढं स्वपत्न्या १। सरोजन्मनाभूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्ततन्व्या समालिङ्गिताङ्गम्। करीन्द्राननं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्तकान्ति भजेत्तम् २।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं

मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा।

इस प्रकार ध्यान करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेशमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को पद्धतिमार्ग से स्थापित करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पूजन करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नन्दायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये। ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९।

इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य। ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांजल्यन्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च

इस प्रकार पूजा करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दूध की और जल की धरा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोछकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

पुष्पाञ्जलिमादाय। संविन्मयः परेश त्वं परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे॥ १॥' इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्षु दिक्षु च।

पुष्पाञ्जलि लेकर 'संविन्मयः परेश त्वं परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे।' यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पितोऽस्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में और आग्नेयादि चारों दिशाओं में।

दिक्षु ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लींह्रींश्रींगं हृदयाय नमः[१] १। ॐ गणपते शिरसे स्वाहा[२] २। ॐ वर वरद शिखायै वषट्[३]। ॐ सर्वजनं कवचाय हुं[४] ४। ॐ मे वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्[६] ६

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य। 'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् १।' इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके : 'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्' यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से बिन्दु डाल कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध-अक्षत-पुष्प लेकर प्राची क्रम से (त्रैलोक्यमोहनकर गणेश यन्त्र देखिये चित्र ५) :

अष्टसु दिक्षु ॐ वामायै नमः[७]। वामाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ ज्येष्ठायै नमः[८]। ज्येष्ठाश्रीपा० २। ॐ रौद्र्यै नमः[९]। रौद्रीश्रीपा० ३। ॐ काल्यै नमः[१०]। कालीश्रीपा० ४। ॐ कलपदादिकायै नमः[११]। कलपदादिकाश्रीपा० ५। ॐ विकरिण्यै नमः[१२]। विकरिणीश्रीपा० ६। ॐ बलायै नमः[१३]। बलाश्रीपा० ७। ॐ प्रमथिन्यै नमः[१४]। प्रमथिनी श्रीपा० ८।

देवस्याग्रे। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः[२३]। सर्वभूतमदनीश्रीपा० १। ॐ मनोन्मन्यै नमः[२४]। मनोन्मनीश्रीपा० २।

चारों दिशाओं में। ॐ प्रमोदाय नमः[२५]। प्रमोदश्रीपा० १। ॐ सुमुखाय नमः[२६]। सुमुखश्रीपा० २। ॐ दुर्मुखाय नमः[२७]। दुर्मुखश्रीपा० ३। ॐ विघ्ननाशाय नमः[२८]। विघ्ननाशश्रीपा० ४।

इस प्रकार पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् २।'

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से बिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति द्वितीयावरण॥ २॥

ततोऽष्टदलाग्रेषु। ॐ आं ब्राह्म्यै नमः[१५]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः[१६]। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ ऊं कौमार्यै नमः[१७]। कुमारी-

श्रीपा० ३ । ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः[१८] । वैष्णवीश्रीपा० । ॐ लृं वाराह्यै नमः[१९] । वाराही श्रीपा० ५ । ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः[२०] । इन्द्राणीश्रीपा ६ । ॐ औं चामुण्डायै नमः[२१] । चामुण्डाश्रीपा० ७ । ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः[२२] । महालक्ष्मी श्रीपा० ८ ।

इससे पूजा करे । फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से विन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु यह कहे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । अष्टद्रव्यैर्दशांशतो होमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । 'वेदलक्षं जपेन्मन्त्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः । हुत्वा पूर्वोदित पीठे पूजयेद्गणनायकम् ॥१॥ एवं सिद्धे मनौ कुर्यात्प्रयोगानिष्टसिद्धये ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कारान्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण चार लाख जप है । अष्टद्रव्यों से दशांश होम करना चाहिये । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है : चार लाख जप तथा अष्टद्रव्यों से दशांश होम करके पूर्वोक्त पीठ पर गणेशजी की पूजा करे । इस रीति से पुरश्चरण करने से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर अभीष्टसिद्धि के लिए प्रयोग करने चाहिये ।

वशयेत्कमलैर्भूपान्मन्त्रिणः कुमुदैर्हुतैः ॥ २ ॥ समिद्भिरश्वत्थदलसमुद्भूतैर्द्विजासुरान् । उदुम्बरोत्थैर्नृपतीन्प्लक्षैर्वटैर्विशोन्तिमान् ॥३॥ कनकप्राप्तिर्गोप्राप्तिः पयसा गवाम् । ऋद्धिर्दध्नोदनैरन्नं घृतैः श्रीर्वेतसैर्जलम् ॥४॥' इति श्रीत्रैलोक्यमोहनकरणगणेशमन्त्रप्रयोगः ।

कमलों के होम से राजा को तथा कुमुद के पुष्पों के हवन से मन्त्री को वश में किया जाता है । पीपल की समिधाओं के हवन से ब्राह्मणों को, उदुम्बर की समिधा के हवन से राजा (क्षत्रियों) को, प्लक्ष की समिधा के हवन से वैश्यों को तथा बटवृक्ष की समिधा के हवन से शूद्रों को वश में

किया जाता है । क्षौद्र के हवन से सोने की प्राप्ति तथा गोदुग्ध के हवन से गायें मिलती हैं । दही मिश्रित चरु के हवन से ऋद्धि प्राप्त होती है । घी की आहुतियों से अन्न एवं लक्ष्मी की वृद्धि होती है, तथा वेतस की आहुतियों से वृष्टि एवं सुकाल होता है । इति त्रैलोक्यमोहनकर गणेशमन्त्र प्रयोग ।

अथ हरिद्रागणेशमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्रमहोदधौ मन्त्रो यथा । ॐ हुंगंग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा । इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

हरिद्रागणेश मन्त्रप्रयोग : मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है : 'ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा । यह ३२ अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य हरिद्रागणनायकमन्त्रस्य मदन ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । हरिद्रागणनायको देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मदनऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । हरिद्रागणनायकदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ हुंगंग्लौं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । हरिद्रागणपतये तर्जनीभ्यां नमः २ । वर वरद मध्यमाभ्यां नमः ३ । सर्वजनहृदयम् अनामिकाभ्यां नमः ४ । स्तम्भय स्तम्भय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : हुंगंग्लौं हृदयाय नमः १ । हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा २ । वर वरद शिखायै वषट् ३ । सर्वजनहृदयं कवचाय हुं । स्तम्भय स्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : पाशांकुशौमोदकमेकदन्तं करैर्दधानंकनकासनस्थम् । हारिद्रखण्डप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकं रात्रिगणेशमीडे ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा ।

इस प्रकार ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेश-मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पद्धतिमार्ग से स्थापना करके 'ॐ म मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नन्दायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ ।

इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छ-वस्त्रेणाशोष्य । ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः । पुष्पाञ्जलि-मादाय ।

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा डाल कर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोछ कर 'ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है : पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परेश त्वं परामृतरसप्रिय । अनुज्ञां देहि गणप परि-वारार्चनाय ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पितोऽस्तु' यह कहे । इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोणकेसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में (हरिद्रागणेशयन्त्र देखिये चित्र ६)

ॐ हुं गं ग्लौं आं हृदयाय नमः हृदये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र १ । ॐ हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० । ॐ वर वरद शिखायै वषट् शिखायां श्रीपा० ३ । ॐ सर्वजनहृदयं कवचाय हुं ४ । ॐ स्तम्भयस्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहा अस्त्राय फट् ।

इससे षडङ्गोंकी पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्रका उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे से गन्ध-अक्षत-पुष्प लेकर प्राची क्रम से आठों दिशाओं में :

ॐ वामायै नमः वामाश्रीपा० १ । ॐ ज्येष्ठायै नमः ज्येष्ठाश्रीपा० २ । ॐ रौद्र्यै नमः रौद्रीश्रीपा० ३ । ॐ काल्यै नमः कालीश्रीपा० ४ । ॐ कलपदादिकायै नमः कलपदादिकाश्रीपा० ५ । ॐ विकरिण्यै नमः विकरिणी-श्रीपा० ६ । ॐ बलायै नमः बलाश्रीपा० ७ । ॐ प्रमथिन्यै नमः प्रमथिनी-श्रीपा० ८ ।

इससे आठों की पूजा करके देवता के आगे :

ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः सर्वभूतदमनीश्रीपा० १ । ॐ मनोन्मन्यै नमः मनोन्मनीश्रीपा० २ ।

इस प्रकार पूजा करके चारों दिशाओं में प्राची क्रम से :

ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदश्रीपा० १ । ॐ सुमुखाय नमः सुमुखश्रीपा० २ । ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखश्रीपा० ३ । ॐ विघ्ननाशाय नमः विघ्ननाश-श्रीपा० ४ ।

इससे पूजा करके पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

यह पढ़कर और पुष्पांजलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

फिर अष्टदलाग्रों में । ॐ आं ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ ऊं कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ ॡं वाराह्यै नमः वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ औं चामुण्डायै नमः चामुण्डा-श्रीपा० ७ । ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ।

इससे आठों की पूजा करे । फिर पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पांजलि देकर विशेषार्घ से जल विन्दु डाल कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। हरिद्राचूर्णमिश्रिताज्यतण्डुलैश्च दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजन च कुर्यात्। एवंकृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च: वेदलक्षं जपित्वान्ते हरिद्राचूर्णमिश्रितैः। दशांशं तण्डुलैर्हुत्वा ब्राह्मणानपि भोजयेत् ॥ १ ॥ एवमाराधितो मन्त्रस्सिद्धो यच्छेन्मनोरथान्।

इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। हल्दी मिश्रित घृत और चावल से दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराये। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है: चार लाख जप पूरा होने पर हल्दी के चूर्ण से मिश्रित चावलों से दशांश हवन करना चाहिये और फिर क्रमशः तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन करने से पुरश्चरण पूरा तथा मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधकों को मनोरथ सिद्ध करना चाहिये।

शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तु कन्यापिष्टहरिद्रया ॥ २ ॥ विलिप्याङ्गं जले स्नात्वा पूजयेद्गणनायकम्। तर्पयित्वा पुरस्तस्य सहस्रं साष्टकं जपेत् ॥ ३ ॥ शतं हुत्वाज्यपूपैर्भोजयेद्ब्रह्मचारिणः। कुमारीरपि सन्तोष्य गुरुं प्राप्नोति वाञ्छितम् ॥ ४ ॥

शुक्लपक्ष की चतुर्थी को कन्या के द्वारा पीसी हल्दी का शरीर में लेप कर (तीर्थादि के) जल से स्नान कर गणेशजी का पूजन करना चाहिये। फिर तर्पण कर उनके सम्मुख १००८ जप करना चाहिये। घी एवं मालपुआ से १०० आहुतियाँ देकर ब्रह्मचारियों को भोजन कराना चाहिये। कुमारियों एवं अपने गुरु को सन्तुष्ट कर साधक मनोवाञ्छित फल प्राप्त करता है।

लाजैः कन्यामवाप्नोति कन्यापि लभते वरम्। वन्ध्या नारी रजःस्नाता पूजयित्वा गणाधिपम् ॥ ५ ॥ पलप्रमाणगोमूत्रे पिष्ट्वा सिन्धुवचानिशाः। सहस्रं मन्त्रयेत्कन्या वटून्सम्भोज्य मोदकैः ॥ ६ ॥ पीत्वा तदौषधं पुत्रं लभते गुणसागरम्। वाणीस्तम्भं रिपुस्तम्भं कुर्यान्मनुरुपासितः ॥ ७ ॥ जलाग्निचौरसिंहास्त्रप्रमुखानपि रोधयेत्।

लाजाओं के होम से वधू प्राप्त होती है तथा कन्या को भी अनुरूप वर मिलता है। वन्ध्या स्त्री ऋतुस्नान करके गणेशजी का पूजन कर १ पल (४ तोला) गोमूत्र में दुधवच एवं हल्दी पीस कर १००० मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे। फिर कन्या एवं बटुकों को मोदक खिलाकर उस औषधि को पीकर गुणवान पुत्र प्राप्त करती है। इस मन्त्र की उपासना से वाणी-स्तम्भन एवं शत्रु स्तम्भन होता है। जल, अग्नि, चौर, सिंह एवं अस्त्र आदि के प्रकोप को भी इससे रोका जा सकता है।

शार्ङ्गीमांसस्थितः सेन्दुर्बीजमुक्तं गणेशितुः। हरिद्राख्यस्ययजनं पूर्ववत्प्रोदितं मनोः ॥ ८ ॥

शार्ङ्गी (ग) एवं मांसस्थित (ल) में अनुस्वार लगाने से हरिद्रागणपति का बीजमन्त्र (ग्लं) बतलाया गया है। इस मन्त्र का पुरश्चरण पूर्वोक्त रीति से करना चाहिये।

प्रोक्ता ये ते गणेशस्य मन्त्रा इष्टमभीप्सिताः। गोपनीया न दुष्टेभ्यो वदनीयाः कथञ्चन ॥ ९ ॥ इति श्रीहरिद्रागणेशमन्त्रप्रयोगः।

टिप्पणी: विनियोग: ॐ अस्य श्री हरिद्रा गणपति मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, गायत्री छन्दः हरिद्रगणपतिर्देवता, गं बीज लं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास: ॐ गां हृदयाय नमः १, ॐ गीं शिरसे स्वाहा २, ॐ गूं शिखायै वषट् ३, ॐ गैं कवचायहुम् ४, ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५, ॐ गः अस्त्राय फट् ६।

ध्यान: हरिद्राभं चतुर्बाहुं हरिद्रवसनं विभुम्। पाशांकुशधर देवं मोदकं दन्तमेव च।

पुरश्चरणविधि: इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन कर विधिवत् शङ्खस्थापन, पीठपूजा, तीव्रादि शक्तियों का पूजन, अङ्गपूजा एवं आवरण पूजा आदि समस्त कार्य पूर्वोक्त रीति के अनुसार करने चाहिये। इस प्रकार ४ लाख जप करने के बाद घी, मधु, शर्करा एवं हरिद्रामिश्रित चावलों से दशांश होम करना चाहिये। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन करने से पुरश्चरण पूर्ण होता है।

इस प्रकार मनोभीष्ट फल देनेवाले ये गणेशजी के मन्त्र बताये गये हैं। दुर्जनों से ये मन्त्र गुप्त रखने चाहिये तथा उन्हें कभी भी नहीं बतलाना चाहिये।

अथ ऋणहर्तृगणेशमन्त्रविधानम् ।

कृष्णयामलतन्त्रे : तत्रादौ ऋणहर्तृगणेशस्तोत्रप्रारम्भः ।

ऋणहर्तृगणेश मन्त्र विधान : कृष्णयामल तन्त्र में ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्र इस प्रकार है :

'कैलासेपर्वते रम्ये शम्भुं चन्द्रार्द्धशेखरम् । षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका ॥ १ ॥

रम्य कैलास पर्वत पर चन्द्रार्धशेखर और षडाम्नायों से युक्त शम्भु से पार्वतीजी ने पूछा ।

पार्वत्युवाच । देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग । उपायमृणनाशस्य कृपया वद साम्प्रतम् ॥ २ ॥

पार्वतीजी बोलीं : हे देवेश, परेशान, सर्वशास्त्रापारग ! इस समय आप ऋणनाश का उपाय मुझे बतायें ।

शिव उवाच । सम्यक्पृष्टे त्वया भद्रे लोकानां हितकाम्यया । तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ ३ ॥

शिवजी बोले : हे भद्रे ! तूने संसार के हित की कामना से ठीक ही पूछा है । वह सब मैं बतलाऊँगा । सावधान होकर सुनो :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्तृगणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः । श्रीऋणहर्तृगणपतिर्देवता ग्लौं बीजम् । गः शक्तिः । गों कीलकम् । मम सकलर्णनाशने जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सदाशिवर्षये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । श्रीऋणहर्तृगणेशदेवतायै नमः हृदि ३ । ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये ४ । गः शक्तये नमः पादयोः ५ । गों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ६ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऋणं छिन्धि तर्जनीभ्यां नमः २ । वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः ३ । हुं अनामिकाभ्यां नमः ४ । नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ गणेश हृदयाय नमः १ । ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा २ । वरेण्यं शिखायै वषट् ३ । हुं कवचाय हुं ४ । नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । फट् अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम् । ॐ सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् । ब्रह्मादिदेवैः । परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ॥४॥ सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये । सदैव पार्वतीपुत्रः ऋण-

नाशं करोतु मे ॥ ५ ॥ त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः । सदैव० ॥ ६ ॥ हिरण्यकश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः । सदैव० ॥७॥ महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः । सदैव० ॥ ८ ॥ तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः । सदैव० ॥ ९ ॥ भास्करेण गणेशो हि पूजितच्छविसिद्धये । सदैव० ॥ १० ॥ तच्छनि० । शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः । सदैव० ॥ ११ ॥ पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः । सदैव० ॥ १२ ॥

इदंत्वृणहरस्तोत्रं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् । एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः । ॥ १३ ॥ दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां ब्रजेत् ।

यह ऋणहरस्तोत्र तीव्रदारिद्र्य का नाश करने वाला है । एकाग्रचित्त होकर एक वर्ष तक नित्य एक बार इसका पाठ करने से दारुण दारिद्र्य से मुक्त होकर साधक कुबेर के समान हो जाता है ।

फडन्तोयं महामन्त्रसार्द्धपञ्चदशाक्षरः ॥ १४ ॥ मन्त्रो यथा 'ॐ गणेशऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्' इति सार्द्धपञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

फट् अन्तवाला यह साढ़े पाँच अक्षरों का महामन्त्र इस प्रकार है : 'ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् ।'

इमं मन्त्रं पठेदन्ते ततश्च शुचिभावनः । एकविंशतिसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ॥ १५ ॥ सहस्रावर्तनात्सम्यक् षण्मासं प्रियतां व्रजेत् । बृहस्पतिसमोज्ञाने धने धनपतिर्भवेत् ॥ १६ ॥ अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् । लक्षमावर्तनात्सम्यग् वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥१७॥ भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः ॥ १८ ॥ इति श्रीकृष्णयामल तन्त्रे उमामहेश्वर सम्वादे ऋणहरणकर्तृगणेशस्तोत्रं समाप्तं ।

इस मन्त्र को पवित्र भाव से पढ़ना चाहिये । २१ संख्या से इसका पुरश्चरण कहा गया है । एक हजार पाठ से छः मास में मनुष्य देवता का प्रिय, ज्ञान में बृहस्पति के समान तथा धन का स्वामी हो जाता है । इसी का दश हजार संख्यक पुरश्चरण भी कहा गया है । सम्यक् १ लाख जप से मनुष्य वाञ्छित फल प्राप्त करता है । स्मरण मात्र से भूत, प्रेत तथा पिशाच आदि का यह नाश कर देता है । कृष्णयामल तन्त्र में उमा-महेश्वर सम्वाद में ऋणहरणकर्तृ गणेशस्तोत्र समाप्त ।

अथ सिद्धविनायकमन्त्रप्रयोगः ।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमोसिद्धविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रेसर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराज्य-वश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।

अस्य विधानम्। अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् कार्यं सिद्धं भवति। यात्रासमये जपित्वा मार्गभयं नाशयति सर्वकार्याणि सिध्यन्ति।

विधान : इसका प्रतिदिन १०८ बार जप करना चाहिये। इससे सब कार्य सिद्ध और यात्रा के समय मार्गभय का नाश होता है।

दूसरा मन्त्र :

ॐ ह्रीं क्लीं वीरवरगणपतये वःव : इदं विश्व मम वशमानय ॐ ह्रीं फट्।'

अस्य विधानम्। रक्तवस्त्रं परिधाय रक्तचन्दनेन त्रिपुण्ड्रं कृत्वा गणपतिं ध्यात्वा द्वादशसहस्रं जपेत्। ततः प्रत्यक्षो भूत्वा वरं ददाति। पुनः प्रतिदिनं पञ्चामृतेन स्नात्वा अष्टोत्तरशतं जपेत्। तावत् होमयेत् यावदष्टसिद्धिप्राप्तिर्भवेत्।

विधान : लाल वस्त्र पहन कर लाल चन्दन से त्रिपुण्ड्र लगाकर गणपति का ध्यान करके १२ हजार जप करे। इससे प्रसन्न होकर देवता वर देते हैं। पुनः प्रतिदिन पञ्चामृत से स्नान करके १०८ जप करे। उतना होम करे जितने में इष्टसिद्धि हो।

दूसरा मन्त्र :

ॐ गीं गूं गणपतये नमः स्वाहा।

अस्य विधानम्। भूशय्याब्रह्मचर्येण लक्षं जपेत्। पञ्चखाद्येन दशांशतो होमः ऋद्धिसिद्धिप्राप्तिर्भवन्ति विघ्नान्नाशयति।

विधान : भूशय्या पर सोये और ब्रह्मचर्यपूर्वक एक लाख जप करे। पञ्चखाद्य पदार्थों से दशांश होम करे। इससे ऋद्धि तथा सिद्धि की प्राप्ति होती है और विघ्नों का नाश होता है।

दूसरा मन्त्र वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में इस प्रकार है :

वीरभद्रोड्डीशतन्त्रे : 'ॐ गं गणपतये नमः'

अस्य विधानम्। कुम्भकारस्य मृदमानीय गणेशप्रतिमां कृत्वा-पञ्चोपचारैः सम्पूज्य तदग्रे प्रतिदिनं सहस्रं जपेत्। तदा सप्तदिनान्तरे सिद्धो भवति। पुनः प्रतिदिनं जपित्वा बुद्धिं वर्द्धयति मासैकेन स्त्री-लाभो भवति षट्मासान्तरे धनं प्राप्नोति। तथा च 'सन्ध्यायां जपमानस्य सहस्रैकं स्वशक्तितः। शताधिकसहस्रेण इच्छासिद्धिं ददाति

च॥ १॥ अपराह्णे च देवेशि शुभां मतिं लभेन्नरः। मासेनैकेन देवेशि श्रियं च लभते ध्रुवम्। षण्मासेन वरारोहे महाधनपतिर्भवेत्।'

विधान : कुम्हार के यहाँ से मिट्टी लाकर उससे गणेशजी की प्रतिमा बनाकर पञ्चोपचार से पूजा करके उसके आगे प्रतिदिन एक हजार जप करने से सात दिन में मन्त्र सिद्ध होता है। पुनः प्रतिदिन जप करने से वृद्धि होती है। एक मास में स्त्री का लाभ होता है। छः मास में धन प्राप्त होता है। कहा भी है : अपनी शक्ति के अनुसार सायंकाल १ हजार जप करे। ग्यारह सौ जप करने से यह इच्छाशक्ति प्रदान करता है। अपराह्ण में जप करने से, हे देवेशि ! मनुष्य शुभ गति प्राप्त करता है। हे वरारोहे ! छः मास में साधक धनपति हो जाता है।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र का दूसरा मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ गं गणपतये सर्वविघ्नहराय सर्वाय सर्वगुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः।'

अस्य विधानम्। पुष्यार्के श्वेतार्कमयं लम्बोदरं निर्माय चतुर्भुजं कृत्वार्चयेत्। स्वगृहे स्थापयेत्। श्वेतपदार्थैरर्चयेत्। अष्टोत्तरशतं जपेत्। क्षीरमध्ये स्थापयेत्। स्वयं पूजयेत्। तद्विधानात्सन्ध्यायामष्टोत्तरशतं जप्त्वा संग्रामकाले एकान्ते महती पूजा कार्या सहस्रैकं जपेत् शिरसा धारयेत्। संग्रामे अस्त्रं निवारयाति रक्षां करोति लम्बोदरः। मूलनक्षत्रे सूर्यप्रभेन अंगुलमात्रं लम्बोदरं निर्माय पूजयेत्। सिन्दूरभाजेन संस्थाप्य तद्दिने प्रतिष्ठापयेत्। त्रिसन्ध्यं सहस्रंसहस्रं जपं कार्यं वस्त्रं च स्थापयेत्। यत्प्रार्थयति तं प्राप्नोति प्रत्यहं शतमष्टोतरं जप्त्वा मासेन मनोभीष्टं ददाति। इति सिद्धिविनायकनानामन्त्रप्रयोगः।

इति श्रीगणेशपटलं समाप्तम्।

विधान : पुष्य नक्षत्र में सूर्य के स्थित होने पर श्वेत मदार के काठ की चतुर्भुज लम्बोदर की मूर्ति बनाकर पूजा करे। अपने घर में उसकी स्थापना करे। श्वेत पदार्थों से उनका पूजा करे। १०८ जप करे। दूध के बीच उसकी स्थापना करे। स्वयं पूजा करे। उसके विधान से सायंकाल १०८ बार जप करे। संग्राम के समय महती पूजा करके १ हजार जप करे और उसे शिर में धारण करे तो वह लम्बोदर अस्त्रों का निवारण करता है और रक्षा करता है। मूल नक्षत्र में श्वेत मदार की लकड़ी से एक अँगुल प्रमाण के गणेश (लम्बोदर) का निर्माण करके पूजा करे और सिन्दूर के पात्र में रखकर उस दिन उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे। तीनों सन्ध्याओं में जप करके वस्त्र स्थापित

करना चाहिये। इसके बाद साधक जो प्रार्थना करता है उसे वह प्राप्त करता है। एक मास तक प्रतिदिन १०८ जप करने से यह मन्त्र अभीष्ट सिद्धि देता है। सिद्धिविनायक के नाना मन्त्र प्रयोग समाप्त।

श्री गणेश पटल समाप्त।

अथ गणेशपद्धतिप्रारम्भः।

तत्रादौ पूर्वकृत्यम्। पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्ताङ्गभूतविष्णुपूजां विष्णुतर्पणंविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्माशक्तस्ततः प्रायश्चित्ताङ्गभूतपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः।

उसमें पहले पूर्वकृत्य : पुरश्चरण से पहले तृतीय दिन क्षौर आदि करा कर प्रायश्चित्ताङ्गभूत विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध, होम और चान्द्रायणादि व्रत करे। व्रत में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करे। यदि इन सभी कर्मों में अशक्त हो तो प्रायश्चित्ताङ्गभूत पञ्चगव्य का पान करे। उसमें मन्त्र यह है :

'यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥'

इति पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत्। तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेनैकभक्तव्रतं कृत्वा ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा।

यह पढ़कर प्रणव से पञ्चगव्य पान करे। उस दिन उपवास करे। यदि इसमें अशक्त हो तो दूध का पान करे। एक समय हविष्यान्न का भोजन करे। इसके बाद पुरश्चरण से एक दिन पहले अपने शरीर की शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे :

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञात पापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकगणेशपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रेण सिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये।

यह संकल्प करके दश हजार गायत्री का जप करे। इसके बाद :

गायत्र्या आचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि १ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि २ सवितारं देवतां तर्पयामि ३ :

इति तर्पणं कृत्वा ततोस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं

विचारयेत्। तद्यथा स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः :

इससे तर्पण करके उस रात में देवता की उपासना करके शुभाशुभ स्वप्न का इस प्रकार विचार करे : स्नानादि करके विष्णु के चरणकमल का ध्यान करके कुशासन आदि की शय्या पर सुखपूर्वक बैठ कर वृषभध्वज (शिव) से प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ भगवन्देव देवेश शूलभृद् वृषवाहन। इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥'

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्। ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्। अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्। इति पूर्वकृत्यम्।

इस मन्त्र से १०८ बार शिव से प्रार्थना करके सो जाय। इसके बाद रात में देखे गये स्वप्न को गुरु के सामने रक्खे अथवा स्वयं उस स्वप्न का विचार करे।[1] यह पूर्वकृत्य हुआ।

ततश्चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कुर्या।

इसके बाद चन्द्रमा और नक्षत्रों के बल से युक्त शुभमुहूर्त में एकान्त देश में जपस्थान प्रकल्पित करके पुरश्चरण के दिन ब्राह्म मुहूर्त में उठ कर इस प्रकार प्रातःस्मरण करे।

अथ गणेशप्रातःस्मरणम्।

'ॐ प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूर्णपरिशोभितगण्डयुग्मम्। उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम्। तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥ २ ॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोकदावानलं गणविभुंवरकुञ्जरास्यम्। अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहमुत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥ ३ ॥'

---

१. शुभाशुभ स्वप्नों के विचार के लिये देखिये : स्वप्न कमलाकर (मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)। प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी।

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् । प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ४ ।

सुबह उठ कर जो मनुष्य प्रेमपूर्वक इन तीन श्लोकों का पाठ करता है उसे ये तीनों श्लोक पुण्यस्वरूप तथा साम्राज्य देनेवाले होते हैं ।

इस प्रकार गणेशजी का स्मरण करके भूमि की प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

'समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥'

इससे भूमि की प्रार्थना करके श्वास के अनुसार भूमि पर पैर रख कर बाहर जाये । इति प्रातःकृत्य ।

ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन च यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषं कृत्वा दन्तधावनं च कुर्यात् । तद्यथा :

इसके बाद बिना जूता पहने, सिर पर कपड़ा बाँधे, ग्राम से बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त स्थान पर उत्तराभिमुख होकर मलमोचन करके मिट्टी तथा जल से संस्कारानुसार सफाई करके हाथ-पैर धोकर कुल्ला करे और इस प्रकार दन्त धावन करे :

आम, चम्पा, अपामार्ग आदि में से किसी एक की बारह अंगुल दातुन लेकर प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

'आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च । श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥'

इति सम्प्रार्थ्य ॐ ह्लीं तडित् स्वाहा इति मन्त्रेण काष्ठं छित्वा ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः इत्यनेन दन्तान् संशोध्य ऐं इति बीजेन जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्ये शुद्धदेशे निक्षिपेत् । मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् । इति शौचक्रिया ।

इससे प्रार्थना करके 'ॐ ह्लीं तडित् स्वाहा' मन्त्र से काष्ठ को काट कर 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' मन्त्र से दातुन का शोधन करके 'ऐं' बीज से जिह्वा को साफ करके दातुन को धोकर नैर्ऋत्य दिशा में स्वच्छ स्थान पर फेंक दे । फिर मूलमन्त्र से मुख का प्रक्षालन करके आचमन और स्नान करे । इति शौच क्रिया ।

ततः तीर्थस्नानं मङ्गलस्नानं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गृहस्नानं कुर्यात् ।

इसके बाद सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से तीर्थस्थान और मङ्गलस्नान करके गृहस्नान करे ।

अथ गृहस्नानप्रयोगः ।

तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मन्त्रः ।

गृहस्नान प्रयोग : तत्काल कूएँ से निकाले गये जल से या कुछ गर्म जल से स्नान करे, बासी जल से नहीं । उसमें मन्त्र यह है :

'गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ २ ॥ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे । तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ ३ ॥'

इति तीर्थान्यावाह्य । ऋतं च सत्यमिति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य स्नानं कुर्यात् । एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभ्रं रक्तं वा कार्पासं वस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् । तत्र मन्त्रः ।

इससे तीर्थों का आवाहन करके 'ऋत च सत्यं च' मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके स्नान करे । इस प्रकार स्नान करके सूखा सफेद या लाल वस्त्र पहन कर सूर्य को अर्घ्य देवे । उसमें मन्त्र यह है :

'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ।'

इत्यर्घ्यं दत्वा स्नायी वस्त्रं परिपीड्य आचम्य पञ्चत्रिपुण्ड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां धारयेत् । ततो जपस्थाने गत्वा । नित्यनैमित्तिकं समाप्य अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षानामन्यतमान् वितस्तिमात्रान् दश कीलान् । ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितान् ।

इससे अर्घ्य देकर स्नान से भीगे वस्त्रों को निचोड़ कर आचमन करके पञ्चत्रिपुण्ड् लगाकर रुद्राक्ष की माला धारण करे । उसके बाद जपस्थान पर जाकर नित्य और नैमित्तिक कर्म समाप्त करके अश्वत्थ, उदुम्बर प्लक्ष (पीपल, गूलर, पलाश) में से किसी एक की लकड़ी की एक-एक बित्ते के बराबर दश कीलें बनाकर 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' मन्त्र से उन्हें १०८ बार अभिमन्त्रित करके :

'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत्। ततस्तेषु। ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्। इति मन्त्रेण प्रत्येककीलान् सम्पूज्य तद्वाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में दश कील गाड़ दे। इसके बाद उनमें 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' मन्त्र से प्रत्येक कील की पूजा करके उसके बाहर भूतबलि देवे। उसमें मन्त्र यह है :

'ये रौद्र रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥१॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात्। इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाध्याचामेत् ततः :

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में उड़द और भात की बलि देवे। इस प्रकार भूतों को बलि देकर हाथ-पैर धोकर आचमन करे। उसके बाद :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात्। यत्र बहवः जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत्। एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र।

इस मन्त्र से मण्डप के अन्दर प्रोक्षण करके वहाँ पर बैठने की जगह कूर्मशोधन करे। जहाँ जपकर्ता एक ही हो वहाँ कूर्म के मुखपर बैठ कर जप करे तथा वहीं दीपस्थान भी करे। जहाँ बहुत से जपकर्ता हों वहां कूर्ममुख पर केवल दीपक ही रक्खे। इस प्रकार कूर्मशोधन करके वहाँ आसन के नीचे जलादि से त्रिकोण बनाकर वहाँ :

ॐ कूर्माय नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः।

इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण :

इन मन्त्रों से गन्ध, अक्षत तथा पुष्पों से पूजा करके उसपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म और उसपर कम्बल आदि बिछाकर स्थापित तीनों आसनों पर क्रम से :

ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥

इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात्। एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनशोधनं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः।

इस मन्त्रों से तीन-तीन दर्भ प्रत्येक में रक्खे। इस प्रकार आसन बिछा कर पूर्वमुख या उत्तरमुख बैठ कर आसन शोधन करे। उसमें मन्त्र यह है :

विनियोग : पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः कूर्मो देवता। सुतलञ्छन्दः। आसने विनियोगः।

'ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।'

इन मन्त्रों से आसन का प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से शिखा को बाँध कर आचमन तथा प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्य श्री अमुकगणपतिदेवताप्रीतये अमुकमन्त्रसिद्धये अमुकसंख्याजपं तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठामन्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टि-स्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गणेश-कलामातृकान्यास च कुर्यात्।

इससे संकल्प करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति, संहार और मातृकान्यास सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से करके गणेश कलामातृका न्यास करे। उसमें क्रम यह है :

विनियोग : ॐ अस्य विघ्नेशादिकलामातृकान्यासस्य गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। विनायको देवता। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयः। सर्वेष्टसिद्धये न्यासे विनियोगः।

षडङ्गन्यास : ॐ गां हृदयाय नमः १। ॐ गीं शिरसे स्वाहा २। ॐ गूं शिखायै वषट् ३। ॐ गैं कवचाय हुं ४। ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ गः अस्त्राय फट् ६।

इस प्रकार षडङ्गन्यास करके गजानन का ध्यान करे :

अथ ध्यानं। 'गुणांकुशवराभीतिपाणिरक्ताब्जहस्तया। प्रियया-लिङ्गितं रक्तं त्रिनेत्रं गणपं भजे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके न्यास करे। उसमें क्रम यह है :

सर्वगणेशमन्त्राङ्गभूत विघ्नेशादिकलामातृकान्यास : ॐ अं विघ्नेशह्रीभ्यां नमः ललाटे १। ॐ आं विघ्नराजश्रीभ्यां नमः मुखवृत्ते २। ॐ इं विनायकपुष्टिभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे ३। ॐ ईं शिवोत्तमशान्तिभ्यां नमः वामनेत्रे ४। ॐ उं विघ्नकृत्स्वस्तिभ्यां नमः दक्षिणकर्णे ५। ॐ ऊं विघ्नहर्तृसरस्वतीभ्यां नमः वामकर्णे ६। ॐ ऋं गणस्वाहाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे ७। ॐ ॠं एकदन्तसुमेधाभ्यां नमः वामनासापुटे ८। ॐ लृं द्विदन्तकान्तिभ्यां नमः दक्षिणगण्डे ९। ॐ ॡं गजवक्त्रकामिनीभ्यां नमः वामगण्डे १०। ॐएं निरंजनमोहिनीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११। ॐ ऐं कपर्दिनटीभ्यां नमः अधरोष्ठे १२। ॐ ओं दीर्घजिह्वपार्वतीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३। ॐ औं शंकुकर्णज्वालिनीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ १४ ॐ अं वृषभध्वजनन्दाभ्यां नमः शिरसि १५ ॐ अः गणेशसुरेशीभ्यां नमः मुखे १६। ॐ कं गजेन्द्रकामरूपिणीभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले १७। ॐ खं शूर्पकर्णोमाभ्यां नमः दक्षिणकूर्परे १८। ॐ गं तिलोचनतेजोवतीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे १९। ॐ घं लम्बोदरसत्याभ्यां नमः दक्षांगुलिमूले २०। ॐ ङं महानन्दविघ्नेशीभ्यां नमः दक्षांगुल्यग्रे २१। ॐ चं चर्तुमूर्तिस्वरूपिणीभ्यां नमः वामबाहुमूले २२ ॐ छं सदाशिवकामदाभ्यां नमः वामकूर्परे २३। ॐ जं आमोदमदजिह्वाभ्यां नमः वाममणिबन्धे २४। ॐ झं दुर्मुखभूतिभ्यां नमः वामांगुलिमूले २५। ॐ ञं सुमुखभौतिकाभ्यां नमः वामांगुल्यग्रे २६। ॐ टं प्रमोदसिताभ्यां नमः दक्षपादमूले २७। ॐ ठं एकपादरमाभ्यां नमः दक्षिणजानुनि २८। ॐ डं द्विजिह्वमहिषीभ्यां नमः दक्षिणगुल्फे २९। ॐ ढं शूरभंजनीभ्यां नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३०। ॐ णं वीरविकरणाभ्यां नमः दक्षिणापादांगुल्यग्रे ३१। ॐ तं षण्मुखभृकुटीभ्यां नमः वामपादमूले ३२। ॐ थ वरदलज्जाभ्यां नमः वामजानुनि ३३। ॐ दं वामदेवदीर्घघोणाभ्यां नमः वामगुल्फे ३४। ॐ धं वक्रतुण्डधनुर्धराभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले ३५। ॐ नं द्विरदयामिनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६। ॐ पं सेनानीरात्रिभ्यां नमः दक्षिणपार्श्वे ३७। ॐ फं कामान्धग्रामणीभ्यां नमः वामपार्श्वे ३८। ॐ बं मत्तशशिप्रभाभ्यां नमः पृष्ठे ३९। ॐ भं विमत्तलोललोचनाभ्यां नमः नाभौ ४०। ॐ मं मत्तवाहनचञ्चलाभ्यां नमः जठरे ४१। ॐ यं त्वगात्मभ्यां जटिदीप्तिभ्यां नमः हृदि ४२। ॐ रं असृगात्मभ्यां

मुण्डिसुभगाभ्यां नमः दक्षांसे ४३ ॐ लं मांसात्मभ्यां खंडिदुर्भगाभ्यां नमः ककुदि ४४। ॐ वं मेदआत्मभ्यां वरेण्यशिवाभ्यां नमः वामांसे ४५। ॐ शं अस्थ्यात्मभ्यां वृषकेतनभगाभ्यां नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६। ॐ षं मज्जात्मभ्यां भक्तिप्रियभगिनीभ्यां नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७। ॐ सं शुक्रात्मभ्यां गणेशभोगिनीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ४८। ॐ हं प्राणात्मभ्यां मेघनादसुभगाभ्यां नमः हृदयादिवामपादान्तम् ४९। ॐ लं शक्त्यात्मभ्यां व्याप्तिकालरात्रिभ्यां नमः जठरे ५०। ॐ क्षं परमात्मभ्यां गणेश्वरकालिकाभ्यां नमः मुखे ५१। इति सर्वगणेशमन्त्राङ्गभूतविघ्नेशादिकलामतृकान्यासः।

एवं कलान्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले गणेशमण्डले वा मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः स्थापयेत्। तथा च।

इस प्रकार सर्वगणेश मन्त्रों का अङ्गभूत विघ्नेशादि कला मातृकान्यास करके प्रयोगोक्त न्यासादि करे। इसके बाद पीठ पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या गणेशमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की इस प्रकार स्थापना करे : पुष्प-अक्षत लेकर :

स्ववामभागे श्रीगुरूभ्यो नमः १। दक्षिणे गणपतये नमः २। मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ३। इससे प्रणाम करके पीठमध्ये ॐ मं मण्डूकाय नमः ४। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ५। ॐ आं आधारशक्तये नमः ६। कूं कूर्माय नमः ७। ॐ अं अनन्ताय नमः ८। ॐ पृं पृथिव्यै नमः ९। ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः १०। ॐ रं रत्नदीपाय नमः ११। ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः १२। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १३। रं रत्नवेदिकायै नमः १४। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १५। इत्युपर्युपरिसम्पूज्य। आग्नेयाम् ॐ धं धर्माय नमः १६। नैर्ऋत्यां ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १७। वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः १८। ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः १९। पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः २०। दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः २१। पश्चिमे। ॐ अं अवैराग्याय नमः २२। उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः २३। इति पूजयेत्। ततः पुनः पीठमध्ये। ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः २४। ॐ सं संविन्नालाय नमः २५। ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः २६। ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २७। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २८। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २९। ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ३०। ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ३१। ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ३२। ॐ सं

सत्त्वाय नमः ३३। ॐ रं रजसे नमः ३४। ॐ तं तमसे नमः ३५। ॐ आं आत्मने नमः ३६। ॐ पं परमात्मने नमः ३७। ॐ अं अन्तरात्मने नमः ३८। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३९। ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ४०। ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ४१। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ४२। ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४३।

इस प्रकार पीठदेवताओं का पूजन करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वे ॐ तीव्रायै नमः १। अग्नये ॐ चालिन्यै नमः २। दक्षिणे ॐ नन्दायै नमः ३। नैर्ऋत्ये ॐ भोगदायै नमः ४। पश्चिमे ॐ कामरूपिण्यै नमः ५। वायव्ये ॐ उग्रायै नमः ६। उत्तरे ॐ तेजोवत्यै नमः ७। ऐशान्ये ॐ सत्यायै नमः ८। पीठमध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करके पात्रासादन करे।

अथ पात्रासादनप्रयोगः।

तत्र पात्रासादनं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण सविस्तरं कृत्वा अशक्तश्चेत्साधारणं कुर्यात्। तत्र क्रमः। तत्रादौ गन्धाक्षतादिपूजोकरणानि स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि वामपार्श्वे स्थापयित्वा कलशस्थापनं कुर्यात्।

पात्रासादन : वहाँ पात्रासादन सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से सविस्तार करे। अशक्त होने पर साधारण रूप से करे। उसमें क्रम यह है : प्रारम्भ में गन्ध-अक्षतादि पूजोपकरण अपने दाहिनी ओर रखकर जल के लिये बड़ा बर्तन, पङ्खा, छाता, दर्पण और चँवर बाईं ओर रखकर कलशस्थापन करे।

अथ कलशस्थापन प्रयोगः।

स्ववामभागे त्रिकोणमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां विलिख्य। ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति सम्पूज्य ततो मूलेन नमः इति त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य तत्र सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण कलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिनाभूषयित्वा मूलेन नमः इति जलेनापूर्य। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ। इति वरुणमावाह्य स्वेष्टदेवं ध्यात्वा गन्धपुष्पैः सम्पूजयेत् इति कलशस्थापनम्।

कलशस्थापन प्रयोग : अपनी बाईं ओर त्रिकोण मण्डल बनाकर जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के भीतर मायाबीज ह्रीं लिखकर 'ॐ ह्रीं आधार

शक्त्यै नमः' से पूजा करके मूलमन्त्र के साथ 'नमः' लगाकर त्रिपदाधार का प्रक्षालन करके त्रिकोण के बीच रखकर वहाँ 'सुदर्शनायास्त्राय फट्' मन्त्र से कलश को धोकर आधार के ऊपर दोनों हाथों से रखकर लालवस्त्र तथा माला आदि से भूषित करके मूलमन्त्र के साथ 'नमः' लगाकर जल से भर कर 'ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ' इस मन्त्र से वरुण का आवाहन करके अपने इष्टदेव का ध्यान करके गन्ध-पुष्प से अच्छी तरह पूजा करे। इति कलशस्थापन।

अथ शङ्खस्थापनप्रयोगः।

स्वदक्षिणे कलशोक्तविध्यनुसारेणाधारं संस्थाप्य ॐ सुदर्शनायाअस्त्राय फट्। इति शङ्खं प्रक्षाल्य आधारोपरि संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेनापूर्य। प्रणवेन गन्धादिभिः सम्पूज्याभिमन्त्रयेत्।

शङ्खस्थापन प्रयोग : अपनी दाहिनी ओर कलशोक्त विधि के अनुसार आधार स्थापित करके 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' मन्त्र से शङ्ख को धोकर आधार के ऊपर रखकर मूलमन्त्र के साथ 'नमः' लगाकर जल से भर कर प्रणव (ॐ) से गन्ध आदि द्रव्यों से पूजा करके अभिमन्त्रित करे :

'ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।'

इससे अभिमन्त्रित करके प्रार्थना करे :

'ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥ २ ॥ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्।'

इस प्रकार प्रार्थना करके शङ्ख मुद्रा प्रदर्शित करे। इति शङ्ख स्थापन।

अथ घण्टास्थापनप्रयोगः।

घण्टास्थापन प्रयोग : अपने वामभाग में घण्टा की स्थापना करके :

'आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥ १ ॥' ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः। आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

इससे आवाहन करके :

ॐ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा। इति मन्त्रेण घण्टास्थितगरुडं

घण्टां च सम्पूज्य । प्रणम्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् । इति घण्टास्थापनम् ।

'ॐ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा' इस मन्त्र से घण्टा में स्थित गरुड तथा घण्टा का पूजन करके प्रणाम करके गरुड मुद्रा प्रदर्शित करे। इति घण्टास्थापन ।

ततः शङ्खात्पूर्वादिप्रादक्षिण्येन पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्कस्नानार्थं पञ्चपात्राणि अशक्तश्चेत्तर्हि एकमेव पात्रं संस्थाप्य सामान्यविधिना पूजयेत् । एवं पूजापात्राणि सम्पाद्य प्रयोगोक्ते यन्त्रे मूर्तौ वा अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणान् प्रतिष्ठापयेत् ।

इसके बाद शङ्ख से पूर्व प्रदक्षिणा क्रम से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय मधुपर्क तथा स्नान के लिये पांच पात्र रक्खे। अशक्त हो तो एक ही पात्र रखकर सामान्य विधि से पूजा करे। इस प्रकार पूजा-पात्रों को व्यवस्थित करके प्रयोगोक्त मन्त्र में या मूर्ति में अग्न्युत्तारणपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करे।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

प्राणप्रतिष्ठा प्रयोग : आचमन करके :

देशकालौ संकीर्त्यममामुकगणपतिदेवतानूतनयन्त्रे (मूर्तौ वा) प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

इससे संकल्प करे।

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुः । सामानि च्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्यां नूतनमन्त्रे (मूर्तौ वा) प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

इससे जल छिड़के। हाथ को ढँककर :

'ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुकगणपतेः सपरिवारयन्त्रस्य (प्रतिमाया वा) प्राणा इह प्राणाः ।

पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुकगणपतेः सपरिवार यन्त्रस्य (मूर्तेर्वा) जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुक गणपतेः सपरिवारयन्त्रस्य (मूर्तेर्वा) सर्वेन्द्रियाणीह स्थितानि ॥ ३ ॥ ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्यामुक गणपतेः सपरिवार यन्त्रस्य (मूर्तेर्वा) वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥

इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा

अनेनामुकगणपतेः सपरिवारयन्त्रस्य (मूर्तेर्वा) गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि इति वदेत् । एवं प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

इससे प्राणों की प्रतिष्ठा करके संस्कार सिद्धि के लिये प्रणव की पन्द्रह आवृत्ति करके 'अनेनामुकगणपतेः सपरिवारयन्त्रस्य (मूर्तेर्वा) गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान्सम्पादयामि' यह कहे। यह प्राणप्रतिष्ठा प्रयोग है।

अथावाहनम् ।

आवाहन : अक्षत लेकर :

'देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्रस्थितोभव । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ २ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवतामावाहयामि । इत्यावाहनम् ॥१॥

तवेयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वं सर्वगः प्रभो । भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐभूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव इह तिष्ठ । इति स्थापनम् ॥ २ ॥

'अनन्या तव देवेश मूर्तिशक्तिरियं प्रभो । सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्पर ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवते इह सन्निधेहि । इति सन्निधापनम् ॥ ३ ॥

'आज्ञया तव देवेश कृपाम्भोधे गुणांबुधे । आत्मानन्दैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ।'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेवते इह सन्निरुध्य । इति सन्निरोधनम् ॥ ४ ॥

'अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वावैकल्यात्साधनस्य च । यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव इह सम्मुखो भव । इति सम्मुखीकरणम् ॥ ५ ॥

'अभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रदूरातिगद्युते। स्वतेजःञ्जपरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतिदेव अवगुण्ठितो भव। इत्यवगुण्ठनम् ।६।

'यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये। तस्मै ते परमेशाय स्वागतंस्वागतं च ते ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः सुस्वागतं समर्पयामि। इति सुस्वागतम् ॥ ७ ॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशानदास्येऽहं परमेश्वर। अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः आसनं समर्पयामि ॥ ८ ॥

इससे आसन देकर प्रार्थना करे। इसमें मन्त्र यह है :

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वं च दृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि। ॥ ९-१० ॥

यह प्रार्थना करे।

अथ पाद्यादिपूजाप्रयोगः।

'यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्द सम्भवः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः पाद्यं समर्पयामि । इति पाद्यम् ॥ ११ ॥

'तापत्रय हरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि। इत्यर्घः ॥ १२ ॥

'वेदानामपि देवाय वेदानां देवतात्मने। आचमनं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे।'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि। इत्याचमनम् ॥ १३ ॥

इत्याचमनं दत्त्वा मधुपर्कपञ्चामृतस्नानादि च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात्। अशक्तश्चेज्जलस्नानं मधुस्नानं शुद्धोदकस्नानं च कुर्यात्। तद्यथा :

इस प्रकार आचमन देकर सर्वदेवपयोगि पद्धति मार्ग से मधुपर्क पञ्चामृत स्नानादि करे। यदि असमर्थ हो तो इस प्रकार जलस्नान, मधुस्नान, शुद्धोदक स्नान करे।

'गङ्गासरस्तोरेवापयोष्णी नर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः जलस्नानं समर्पयामि। इति जलस्नानम् ॥ १४ ॥

'तरुपुष्पसमुद्‌भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः मधुस्नानं समर्पयामि। इति मधुस्नानम् ॥ १५ ॥

'गङ्गासरस्वतोरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। इति शुद्धोदकस्नानम् ॥ १६ ॥

इस प्रकार स्नान समर्पित करके आचमन देवे। इसके बाद :

'सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः रक्तवस्त्रं समर्पयामि। इति रक्तवस्त्रम् ॥ १७ ॥

'नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । इति यज्ञोपवीतम् ॥ १८ ॥

'श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः गन्धं समर्पयामि । अंगुष्ठौ कनिष्ठामूललग्नौ गन्धमुद्रा । इति गन्धम् ॥ १९ ॥

'अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः अक्षतान्सयर्पयामि ॥ २० ॥

इससे सभी उँगलियों से अक्षत देवे ॥ २० ॥

'माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः रक्तपुष्पं समर्पयामि ।

तर्जनी को अँगूठे के मूल में लगाकर पुष्प मुद्रा प्रदर्शित करे । इति पुष्पम् ॥ २१ ॥

इस प्रकार पुष्पान्त पूजन करके प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपादि से पूजन करे ।

अथ धूपादिपूजाप्रयोगः ।

फडिति धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य नम इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय रं इति वह्निबीजेन उपरि अग्नि संस्थाप्य तदुपरि दशाङ्गं दत्त्वा घण्टा च नादयन् ।

धूपादि पूजाप्रयोग : फट् से धूपपात्र का प्रोक्षण करके नमः से गन्ध और पुष्पों से पूजा करके सामने रखकर 'रं' इस अग्निबीज से ऊपर अग्नि स्थापित करके दशाङ्ग देकर घण्टा बजाते हुये :

'ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः समर्पयामि ।

इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति धूपम् ॥ २२ ॥

यह पढ़कर देवता के वामभाग में धूपपात्र स्थापित करके तर्जनीमूल के साथ अँगूठे को जोड़कर धूपमुद्रा दिखावे । इति धूप ॥ २२ ॥

ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य वर्णाक्षरतन्तुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् मन्त्रं पठेत् ।

इसके बाद दीपपात्र को गाय के घी से भरकर मन्त्र के वर्णों की संख्या के बराबर तन्तुओं की बत्ती डालकर प्रणव से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये यह मन्त्र पढ़े :

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः । स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ।'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः दीपं समर्पयामि ।

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय मध्यमे अंगुष्ठलग्ने दीपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति दीपम् ॥ २३ ॥

यह पढ़कर देव के दाहिने भाग में उसे रखकर मध्यमा और अँगूठे को जोड़कर दीपमुद्रा उसे दिखाये । इति दीप ॥ २३ ॥

अथ नैवेद्यम् ।

देवस्याग्रे जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये मोदक गुडमिश्रितपायसं वा निधाय ॐ यं इति वायुबीजेन द्वादशवाराभिमन्त्रिताऽर्घजलेन सम्प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं नैवेद्येनाच्छाद्य ॐ यं इति वायुबीजं षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले ॐ रं इत्यग्नि बीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॐ रं इति वह्निबीजेन षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले ॐ वं इति अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य । पुनः ॐ वं इति सुधाबीजं षोडशवारं जपित्वा तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलमन्त्रेण प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य । वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा :

नैवेद्य : देवता के आगे जल से चतुरस्र मण्डल करके स्वर्णादि-निर्मित भोजनपात्र रखकर उसके बीच मोदक या गुडमिश्रित खीर रखकर 'ॐ यं' इस वायुबीज से बारह बार अभिमन्त्रित अर्घ जल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से अच्छी तरह देखकर अधोमुख दाहिने हाथ पर उसी तरह बाँये से नैवेद्य को ढँक कर 'ॐ य' इस वायुबीज को सोलह बार जप कर वायु से उसके दोषों को सुखा कर दाहिने करतल में 'ॐ रं' इस अग्नि बीज का चिन्तन करके उसके पीछे बाँये करतल को लगाकर नैवेद्य दिखा कर 'ॐ रं' इस वह्नि बीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि द्वारा उसके दोषों को दग्ध करके बाँये करतल में 'ॐ वं' इस अमृत बीज का चिन्तन करके उसके पीछे दाहिना करतल करके नैवेद्य दिखा कर, पुनः 'ॐ वं' इस सुधा-बीज का सोलह बार जप करके उससे निकली अमृतधारा से उसे प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से प्रोक्षण करके धनुमुद्रा दिखा कर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके, गन्ध-पुष्प से पूजा करके बाँये अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर दाहिने हाथ से जल लेकर :

'सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् । निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवारायामुकगणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि ।

इससे जल छोड़कर अनामिकामूल और अँगूठे के योग से नैवेद्य मुद्रा प्रदर्शित करे । इति नैवेद्य ॥ २४ ॥

अथान्तः पटम् ।

'ब्रह्मेशाद्यैः सरससभितः सोपविष्टः समन्तात्सिजद्वाळव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः । नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन्हसन्वै भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसाऽश्रीगणेशः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं द्वारिकाद्यं सुखाद्यम् । आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥२॥' इत्यन्तः परम् ॥२५॥

यह पढ़कर पट गिरावे । इत्यन्तःपट

'नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् । अखण्डानन्दसम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ।'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः जलं समर्पयामि इति जलम् ।२६।

इससे जल देवे ।

पुनर्गण्डूषार्थं जलं दत्वा मूलेन शुद्धाचमनं च दद्यात् ।

पुनः कुल्ला करने के लिये जल देकर मूलमन्त्र से शुद्ध आचमन देवे ।

अथ ताम्बूलम् ।

'पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलाचूर्णादिभिर्युक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि । इति ताम्बूलम् ॥ २ ॥

अथ फलम् ।

'इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः फलं समर्पयामि ॥ २८ ॥

इति फलं समर्प्य शक्तश्चेत् क्षेत्रादिदक्षिणापर्यन्तं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण दत्वा आरात्रिकं कुर्यात् ।

इससे फल देकर यदि समर्थ हो तो सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से क्षेत्रादि दक्षिणापर्यन्त देकर आरती करे ।

अथ कर्पूरारात्रिकम् ।

'कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् । आरात्रिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥'

इति पठित्वा मूलेन देवोपरि नेत्रादिपादपर्यन्तं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयेत् घण्टां नादयेत् । इति कर्पूरारात्रिकम् ॥ २९ ॥

यह पढ़कर मूलमन्त्र से देवता के ऊपर नेत्र से लेकर पैर-पर्यन्त नव बार या तीन बार आरती को घुमाकर घण्टा बजाये । इति कर्पूरारातिकम् ॥२९॥

अथ प्रदक्षिणा ।

'यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥'

इस मन्त्र से तीन प्रदक्षिणा करे । फिर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ ३० ॥
अथ पुष्पाञ्जलिः ।

'नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकगणपतये नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । इति पुष्पाञ्जलिः ॥ ३१ ॥

अथ साष्टाङ्गप्रणामम् ।

'प्रसन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ।'

यह कहकर साष्टाङ्ग प्रणाम निवेदन करे। फिर स्तुतिपाठ से देवता की स्तुति करके बद्धाञ्जलिपूर्वक क्षमाप्रार्थना करे :

'ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियतेऽशिवम् । मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे । कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥'

इससे बद्धाञ्जलिपूर्वक क्षमाप्रार्थना करके :

'यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण त्वनुकम्पया ॥ १ ॥'

इति प्रार्थ्य देवस्य दक्षिणकरे किञ्चिज्जलं दत्वा पश्चात्सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कुर्यात् । अशक्तश्चेत्साधारणसंस्कारं कुर्यात् । तथा च जपमालामानीय क्वचित्पात्रे वामहस्तेनाच्छाद्य मूलेनार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य :

यह प्रार्थना करके दाहिने हाथ में कुछ जल देने के पश्चात् सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से माला का संस्कार करे। असमर्थ होने पर इस प्रकार साधारण संस्कार करे। जपमाला को लाकर किसी पात्र में बाँये हाथ से ढँक कर मूलमन्त्र के द्वारा अर्घ्योदक से उसका अभ्युक्षण करके :

'ॐ मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात्त्वं सिद्धिदा भव ॥ १ ॥'

इत्यनेन गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ततो देवतानिवेदितमोदकं ताम्बूलं वा स्वयं भुक्त्वा पुनः :

इस मन्त्र से गन्ध-पुष्पों से पूजा करके देवतानिवेदित मोदक या ताम्बूल स्वयं खाकर पुन :

'अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ।'

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेत् । जपान्ते :

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में धारण करते हुये अपने इष्टदेवता का ध्यान करके उसे मध्यमा उँगली के मध्य पर्व पर स्थापित करके अँगूठे के अग्रभाग से घुमाकर एकाग्रचित्त होकर मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करे। जप के अन्त में :

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च देहि मे ॥ १ ॥' ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः ।

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यं दद्यात् अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् । ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुन मूलमन्त्रस्य ऋष्यादि न्यासं करन्यासं च हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । ततः अर्घोदकेन चुलुकमादाय :

इस मन्त्र से माला को शिर पर रखकर गोमुखी में रख देवे। अशुद्ध हाथों से स्वयं भी उसका स्पर्श न करे और न अन्य किसी को दे। अशुद्ध स्थान पर उसे न रक्खे और अपनी योनि के समान गुप्त रक्खे। इसके बाद कवच, स्तोत्र और सहस्रनाम आदि का पाठ कर पुनः मूलमन्त्र के ऋषि आदि का न्यास, करन्यास और हृदयादि षडङ्गन्यास करके पञ्चोपचार से पूजन करके पुष्पांजलि देवे। इसके बाद अर्घोदक से चुल्लू भर पानी लेकर :

'ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥' ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मां मदीयं च सकलं श्रीमदमुकगणपतिदेवतायै समर्पयामि नमः । ॐ तत्सदिद ब्रह्मार्पणं भवतु ।

इससे देवता के दाहिने हाथ में जप समर्पण जल देकर कृताञ्जलिपूर्वक समापन करे :

अथ क्षमापनम् ।

'आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम् । अन्तश्चरसि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ २ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ ३ ॥ शतयोनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् । तेषु चेष्टाचला भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि ॥ ४ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च । आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ५ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ६ ॥ यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् । देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेशक्षम्यते भुवनेश्वर । तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़ कर प्रार्थना करके शङ्ख उठाकर देवता के ऊपर घुमाकर :

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देव-शिरसि दत्त्वा शङ्खं यथास्थाने निवेश्य मूलेन देवोच्छिष्टनैवेद्यादिकं शिरसि धृत्वा देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा बलीत्यादिकं गतसार-नैवेद्यं च तदुच्छिष्टभोजिने इति निवेदयेत् ।

यह उच्चारण करके देवता के दाहिने हाथ में कुछ जल देकर पूर्ववत् अर्घ्य देवता के शिर पर देकर शङ्ख को यथास्थान रखकर मूलमन्त्र से देवो-च्छिष्ट नैवेद्य आदि शिरपर धर कर देवभक्तों में बाँट कर स्वयं खाकर बलि का भाग तथा गतसार नैवेद्य देवोच्छिष्ट भोजी को दे देवे ।

अथ विसर्जनम् ।

गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर । यं हि ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् ॥ १ ॥

इससे अक्षत को फेंककर देवता को इस प्रकार अपने हृदय में स्थापित करे :

'तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवा सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥

इति देवं हृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् ।

इति गणेशपूजापद्धतिः समाप्ताः ।

इस प्रकार देव को अपने हृदय में स्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आपको देवरूप में भावना करते हुये सुखपूर्वक विचरण करे ।

इति गणेशपूजा पद्धति ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ वक्रतुण्डगणेशकवचप्रारम्भः ।

'मौलिं महेशपुत्रोऽव्याद्भालं पातु विनायकः । त्रिनेत्रः पातु मे नेत्रे शूर्पकर्णोऽवतु श्रुती ॥ १ ॥ हेरम्बो रक्षतु घ्राणं मुखं पातु गजाननः । जिह्वां पातु गणेशो मे कण्ठं श्रीकण्ठवल्लभः ॥ २ ॥ स्कन्धौ महाबलः पातुविघ्नहा पातु मे भुजौ । करौ परशुभृत्पातु हृदयं स्कन्दपूर्वजः ॥ ३ ॥ मध्यं लम्बोदरः पातु नाभिं सिन्दूरभूषितः । जघनं पार्वतीपुत्रः सक्थिनी पातु पाशभृत् ॥ ४ ॥ जानुनी जगतां नाथो जङ्घे मूषकवाहनः । पादौ पद्मासनः पातु पादाधो दैत्यदर्पहा ॥ ५ ॥ एकदन्तोग्रतः पातु पृष्ठे पातु गणाधिपः । पार्श्वयोर्मोदकाहारो दिग्विदिक्षु च सिद्धिदः ॥ ६ ॥ व्रज-तस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽश्नतः । चतुर्थीवल्लभो देवः पातु मे भुक्तिमुक्तिदः ॥ ७ ॥

इदं पवित्रं स्तोत्रं च चतुर्थ्यां नियतः पठेत् । सिन्दूररक्तः कुसुमैर्दूर्वयापूज्यविघ्नपम् ॥ ८ ॥ राजा राजसुतो राजपत्नी मन्त्री कुलं चलम् । तस्यावश्यं भवेद्वश्यं विघ्नराजप्रसादतः ॥ ९ ॥ समन्त्रयन्त्रं यः स्तोत्रं करे संलिख्य धारयेत् । धनधान्यसमृद्धिः स्यात्तस्य नास्त्यत्र संशयः ॥ १० ॥ अस्य मन्त्रः । ऐं क्लीं ह्रीं वक्रतुण्डाय हुं । 'रसलक्षं सदैकाग्न्यः षडङ्गन्यासपूर्वकम् । हुत्वा तदन्ते विधिवदष्टद्रव्यं पयो-घृतम् ॥ ११ ॥ यंयं काममभिध्यायन् कुरुते कर्म किञ्चन । तंतं सर्वम-वाप्नोति वक्रतुण्डप्रसादतः ॥ १२ ॥ भृगुप्रणीतं यः स्तोत्रं पठते भुवि मानवः । भवेदव्याहतैश्वर्यः स गणेशप्रसादतः ॥ १३ ॥ इति गणेश-रक्षाकरं स्तोत्रं समाप्तम् ।

इस पवित्र स्तोत्र को चतुर्थी तिथि को नियम से पढ़ना चाहिये । सिन्दूर के समान लाल पुष्पों तथा दूब से गणेशजी की पूजा करने से गणेशजी के प्रसाद से राजा, राजपुत्र, राजपत्नी, मन्त्री आदि सभी साधक के वश में

अवश्य हो जाते हैं। जो साधक मन्त्र-यन्त्र सहित स्तोत्र को लिख कर हाथ में धारण करता है वह धन-धान्य से समृद्ध रहता है। इसमें संशय नहीं है। इसके मन्त्र 'ऐं क्लीं ह्रीं वक्रतुण्डाय हुं।' को जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर षडङ्गन्यास पूर्वक ६ लाख जप करके अन्त में दूध तथा घी से युक्त अष्टद्रव्यों से होम करता है वह जिस-जिस कामना को लेकर जो-जो कर्म करता है वह उन सब को गणेशजी के प्रसाद से प्राप्त करता है। भृगु प्रणीत इस स्तोत्र को इस पृथिवी पर जो भी मनुष्य पढ़ता है वह गणेशजी की कृपा से अनन्त ऐश्वर्यवान हो जाता है। इति गणेशरक्षाकर स्तोत्र।

अथ वक्रतुण्डगणेशस्तवराजप्रारम्भः।

अस्य गायत्रीमन्त्रः। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।

ॐ कारमाद्यं प्रवदन्ति सन्तो वाचः श्रुतीनामपि यं गृणन्ति। गजाननं देवगणानतांघ्रिं भजेहमर्द्धेन्दुकृतावतंसम् ॥ १ ॥ पादारविन्दार्च्चनतत्पराणां संसारदावानलभङ्गदक्षम्। निरन्तरं निर्गतदानतोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमम्बुदाभम् ॥ २ ॥ कृताङ्गरागं नवकुंकुमेन मत्तालिजालं मदपङ्कमग्नम्। निवारयन्तं निजकर्णतालैः को विस्मरेत्पुत्रमनङ्गशत्रोः ॥ ३ ॥ शम्भोर्जटाजूटनिवासिगङ्गाजलं समानीय कराम्बुजेन। लीलाभिराराच्छिवमर्चयन्तं गजाननं भक्तियुता भजन्ति ॥ ४ ॥ कुमारमुक्तौ पुनरात्महेतोः पयोधरौ पर्वतराजपुत्र्याः। प्रक्षालयन्तं करशीकरेण मौग्ध्येन तं नागमुखं भजामि ॥ ५ ॥ तया समुद्भूतगजास्यहस्ताद्ये शीकराः पुष्कररन्ध्रमुक्ताः। व्योमाङ्गणे ते विचरन्ति ताराः कालात्मना मौक्तिकतुल्यभासः ॥ ६ ॥ क्रीडारते वारिनिधौ गजास्ये वेलामतिक्रामति वारिपूरे। कल्पावसानं परिचिन्त्य देवाः कैलाशनाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति ॥ ७ ॥ नागानने नागकृतोत्तरीये क्रीडारते देवकुमारसंघैः। त्वयि क्षणं कालगतिं विहाय तौ प्रापतुः कन्दुकतामिनेन्दू ॥ ८ ॥ मदोल्लसत्पञ्चमुखैरजस्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थम्। देवानृषीन्भक्तजनैकमित्रं हेरम्बमर्क्कारुणमाश्रयामि ॥ ९ ॥ पादाम्बुजाभ्यामतिवामनाभ्यां कृतार्थयन्त्रं कृपया धरित्रीम्। अकारणं कारणमाप्तवाचां तन्नागवक्त्रं न जहातिचेतः ॥ १० ॥ येनार्पितं सत्यवतीसुताय पुराणमालिख्य विषाणकोट्या। तं चन्द्रमौलेस्तनयंतपोभिराराध्यमानन्दघनं भजामि ॥ ११ ॥ पदं श्रुतीनाम पदं स्तुतीनां लीलावतारं परमात्ममूर्तेः। नागात्मकं वा पुरुषात्मकं त्रा त्वभेदमाद्यं भज विघ्नराजम् ॥ १२ ॥ पाशांकुशौ भग्नरदं त्वभीष्टं

करैर्दधानं कररन्ध्रमुक्तैः। मुक्ताफलाभैः पृथुशीकरौघैः सिञ्चंतमङ्गं शिवयोर्भजामि ॥ १३ ॥ अनेकमेकं गजमेकदन्तं चैतन्यरूपं जगदादिबीजम्। ब्रह्मेति यं वेदविदो वदन्ति तं शम्भुसूनुं सततं भजामि ॥ १४ ॥ स्वाङ्कस्थिताया निजवल्लभाया मुखाम्बुजालोकनलोलनेत्रम्। स्मेराननाब्जं मदवैभवेन रुद्धं भजे विश्वविमोहनं तम् ॥ १५ ॥ ये पूर्वमाराध्य गजाननं त्वां सर्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम्। त्वत्तो न चान्यत्प्रतिपाद्यमेतैस्तदास्ति चेत्सर्वमसत्यकल्पम् ॥ १६ ॥ हिरण्यवर्णं जगदीशितारं कविं पुराणं रविमण्डलस्थम्। गजाननं यं प्रविशन्ति सन्तस्तत्कालयोगैस्तमहं प्रपद्ये ॥ १७ ॥ वेदान्तगीतं पुरुषं भजेहमात्मानमानन्दघनं हृदिस्थम्। गजाननं यन्महसा जनानां विघ्नान्धकारो विलयं प्रयाति ॥ १८ ॥ शम्भोः समालोक्य जटाकलापे शशाङ्कखण्डं निजपुष्करेण। स्वभग्नदन्तं प्रविचिन्त्य मौग्ध्यादाक्रष्टुकामः श्रियमातनोतु ॥ १९ ॥ विघ्नार्गलानां विनिपातनार्थं यं नारिकेलैः कदलीफलाद्यैः। प्रसादयन्ते मदवारणास्यं प्रभुं सदाभीष्टमहं भजेयम् ॥ २० ॥

यज्ञैरनेकैर्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं गजराजवक्त्रम् स्तुत्यानया ये विधिवत्स्तुवन्ति ते सर्वलक्ष्मीनिलया भवन्ति ॥ २१ ॥ इति गणेशस्तवराजः समाप्तः।

अनेक यज्ञों तथा बहुत से तपस्वियों द्वारा आराध्य आदि देव गणेश की स्तुति जो इस स्तोत्र से करते हैं वे सभी सम्पत्तियों के निलय बन जाते हैं इति गणेश स्तवराज।

अथ वक्रतुण्डगणेशसहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः।

व्यास उवाच। कथं नाम्नां सहस्रं स्वङ्गणेश उपदिष्टवान्। शिवाय तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर ॥ १ ॥

वक्रतुण्डगणेश सहस्रनाम स्तोत्र प्रारम्भ। व्यासजी बोले : गणेशजी ने अपने सहस्रनाम स्तोत्र का शिवजी को किस प्रकार उपदेश किया, हे लोकानुग्रहतत्पर ! आप हमें बतायें।

ब्रह्मोवाच। देवदेवः पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे। अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल ॥ २ ॥ मनसा स विनिर्धार्य ततस्तद्विघ्नकारणम्। महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि ॥ ३ ॥ विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपराजितः। सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम् ॥ ४ ॥ सर्वविघ्नैकहरणं सर्वकामफलप्रदम्। ततस्तस्मै स्वकं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत् ॥ ५ ॥

ब्रह्मा बोले : एक बार देवाधिदेव शिव त्रिपुर जीतने के लिये जब चले तब गणेश का पूजन न करने के कारण विघ्नों से व्याकुल हो गये। मन से विचार कर तब उन्होंने विघ्न के कारण का पता लगाया और यथाविधि भक्तिपूर्वक गणेश का पूजन करके उनसे विघ्नों के प्रशमन का उपाय पूछा। शिवजी की पूजा से प्रसन्न गणेशजी ने स्वयं समस्त विघ्नों का हरण करनेवाले और सभी कामनाओं को प्रदान करने वाले अपने इस सहस्रनाम स्तोत्र का उपदेश किया :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमहागणपतिसहस्रनाममालामन्त्रस्य गणेश ऋषिः। नानाविधानि छन्दांसि। महागणपतिर्देवता। गमिति बीजम्। तुण्डमितिशक्तिः स्वाहेति कीलकम्। सकलविघ्ननाशनद्वारा महागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ गणेशऋषये नमः शिरसि १। नानाविधच्छन्दसे नमः मुखे २। महागणपतिदेवतायै नमः हृदि ३। गं बीजाय नमः गुह्ये ४। तुण्डशक्तये नमः पादयोः ५। स्वाहाकीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

महागणपतिरुवाच। ॐ गणेश्वर गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः। एकदंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ॥ ६ ॥ लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननायकः। सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः ॥ ७ ॥ भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः। हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः ॥ ८ ॥ नन्दनो लम्पटोऽभीरुर्मेघनादो गणञ्जयः। विनायको विरूपाक्षो धीरः शूरो वरप्रदः ॥ ९ ॥ महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः। रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः ॥ १० ॥ कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः। सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः ॥ ११ ॥ अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः। कटङ्कटो राजपुत्रः शालकः सम्मितो मितः ॥ १२ ॥ कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयोजयः। भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानाम्पतिरव्ययः ॥ १३ ॥ विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणिः। कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः ॥ १४ ॥ ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः। हिरण्मयपुरान्तस्थस्सूर्यमण्डलमध्यगः ॥ १५ ॥ कराहतिध्वस्तसिन्धु सलिलः पूषदन्तहृत्। उमाङ्ककेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपालनः ॥ १६ ॥ किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः। वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतजितक्षितिः ॥१७॥ सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्। दुस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणिनादप्रतिष्ठितः ॥ १८ ॥ सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः। पीताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥ १९ ॥ चित्राङ्कः श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः। योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ २० ॥ गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिर्ध्वजी। देवदेवः स्मरप्राणो दीपको वायुकीलकः ॥ २१ ॥ विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नबलाहकः। वाराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥२२॥ इच्छाशक्तिधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः। शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥ २३ ॥ शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः। उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः ॥२४॥ यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः। सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्द्धा ककुप्श्रुतिः ॥ २५ ॥ ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्यशिरोरुहः। जगज्जन्मलयोन्मेषनिमिषोऽग्न्यर्कसोमदृक् ॥२६॥ गिरीन्द्रैकरदो धर्मो धर्मिष्ठः सामबृंहितः। ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ॥ २७ ॥ भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः। कलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः ॥ २८ ॥ नदीनदभुजः सर्पांगुलीकस्तारकानखः। व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः ॥ २९ ॥ कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः किन्नरमानुषः। पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः ॥ ३० ॥ पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः। ज्योतिर्मण्डललांगूलो हृदयालाननिश्चलः ॥ ३१ ॥ हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः। सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः ॥ ३२ ॥ प्रतापी कश्यपसुतो गणपो विष्टपी बली। यशस्वी धार्मिकः स्वोजाः प्रथमः प्रमथेश्वरः ॥ ३३ ॥ चिन्तामणिद्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः। रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः। ॥ ३४ ॥ तीव्राशिरोधृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः। नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः ॥ ३५ ॥ सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः। तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥ ३६ ॥ सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः। लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयाश्रयः ॥ ३७ ॥ उन्नतप्रपदागूढगुल्फसंवृतपार्ष्णिकः। पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः ॥ ३८ ॥ निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः। पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥ ३९ ॥ भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः। ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥ ४० ॥ स्तबकाकारकुम्भाग्रो

रत्नमौलिनिरंकुशः । सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥ ४१ ॥ सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकागदः । सर्पकक्ष्योदराबन्धः सर्पराजोत्तरीयक ॥ ४२ ॥ रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमाल्यविभूषणः । रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपल्लवः ॥ ४३ ॥ श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः । श्वेतपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥ ४४ ॥ सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः । सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः ॥ ४५ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम् । सर्वदैककरश्शार्ङ्गी पूजपूरी गदाधरः ॥ ४६ ॥ इक्षुचापधरश्शूली चक्रपाणिस्सरोजभृत् । पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत् ॥ ४७ ॥ कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी । अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान्मुदगरायुधः ॥ ४८ ॥ पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृतालिसमूहकः । मातुलुङ्गधरश्चूतकलिकाभृत्कुठारवान् ॥ ४९ ॥ पुस्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः । भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः ॥ ५० ॥ महालक्ष्मीप्रियतमस्सिद्धलक्ष्मीमनोरमः । रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ५१ ॥ महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः । आमोदमोदजननः । सप्रमादप्रमोदनः ॥ ५२ ॥ सामैधिता समिद्धश्रीर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकः । दत्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः ॥ ५३ ॥ मदनावत्याश्रितांघ्रिः कृतदौमुख्यदुर्मुखः । विघ्नसम्पल्लवोपघ्नः सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥ ५४ ॥ विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः । तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५५ ॥ मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डितः । कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५६ ॥ वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्खनिधिः प्रभुः । नमद्वसुमतीमौलिर्महापद्मनिधिप्रभुः ॥ ५७ ॥ सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः । ईशानमूर्द्धा देवन्द्रशिखः पवननन्दनः ॥ ५८ ॥ अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणाम्प्रयोगवित् । ऐरावतादिसर्वाशावारणावरणप्रियः ॥ ५९ ॥ वज्राद्यस्त्रपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः । जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥ ६० ॥ अजिताजितपादाब्जो नित्यानित्यावतं सितः । विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डिसौन्दर्यमण्डितः ॥ ६१ ॥ अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः । इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेवितः ॥ ६२ ॥ सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः । कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः ॥ ६३ ॥ सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः । गुरुगुप्तपदो वाचा सिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥ ६४ ॥ नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः । रौद्रीमुद्रितपादाब्जो हूबीजस्तुङ्गशक्तिकः ॥ ६५ ॥ विश्वादिजननत्राणः

स्वाहाशक्तिः सकीलकः । अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः ॥ ६६ ॥ उच्छिष्टगण उच्छिष्टगणेशो गणनायकः । सर्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यशैवो दिगम्बरः ॥ ६७ ॥ अनपायोनन्तदृष्टिरप्रमेयोजरामरः । अनाविलोप्रतिरथो ह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥ ६८ ॥ अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः । अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरोऽप्रमिताननः ॥ ६९ ॥ अनाकारोऽधिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः । आधारपीठ आधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ७० ॥ आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः । इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः ॥ ७१ ॥ इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः । इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः ॥ ७२ ॥ इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः । इध्मप्रिय इडाभाग इडाधामेन्दिराप्रियः ॥ ७३ ॥ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः । ईशानमौलिरीशान ईशानसुत ईतिहा ॥ ७४ ॥ ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः । उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुण्डेरकबलिप्रिय ॥ ७५ ॥ उन्नताननउत्तुङ्ग उदारत्रिदशाग्रणीः । ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥ ७६ ॥ ऋग्यजुःसामसम्भूतिर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकः । ऋजुचित्तंक सुलभ ऋणत्रयविमोचकः ॥ ७७ ॥ लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् । लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥ ७८ ॥ एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः । एजिताखिलदैत्यश्रीरेजिताखिलसंश्रयः ॥ ७९ ॥ एश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः । ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतनिभाननः ॥ ८० ॥ ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः । औदर्यनिधिरौद्धत्यधुर्यं औन्नत्यनिःस्वनः ॥ ८१ ॥ अंकुशः सुरनागानामंकुशः सुरविद्विषाम् । असमस्तविसर्गाणां पदेषु परिकीर्तितः ॥ ८२ ॥ कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः । कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ८३ ॥ कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः । कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥ ८४ ॥ खर्वःखड्गप्रियः खड्गखातान्तस्थःखनिर्मलः । खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खदुरासदः ॥ ८५ ॥ गुणाढ्योगहनो गस्थो गद्यपद्यसुधार्णवः । गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ॥ ८६ ॥ गुह्याचाररतो गुह्योगुह्यागमनिरूपितः । गुहाशयो गुहाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरोर्गुरुः ॥ ८७ ॥ घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः । चण्डश्चण्डेश्वरसुहृच्चण्डेशश्चण्डविक्रम. ॥ ८८ ॥ चराचरपतिश्चिन्तामणिश्चर्वणलालसः । छन्दश्छन्दो वपुश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥ ८९ ॥ जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जग-

न्मयः । जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥ ९० ॥ झलज्झल्लोल्लसद्दानझङ्कारिभ्रमराकुलः । टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारिमणिनूपुरः ॥९१॥ ठद्वयी पल्लवान्तस्थः सर्वमन्त्रैकसिद्धिदः । डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः ॥ ९२ ॥ ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को ढुण्ढिविनायकः । तत्त्वानां परमं तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः ॥९३॥ तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः । स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरञ्जङ्गमञ्जगत् ॥ ९४ ॥ दक्षयज्ञप्रमथनो दातादानवमोहनः । दयावान् दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः ॥ ९५ ॥ दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः । दन्ष्ट्रलग्नद्विपघटो देवार्थनृगजाकृतिः ॥ ९६ ॥ धनधान्यपतिर्धन्यो धनदो धरणीधरः । ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ॥ ९७ ॥ नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः । निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥९८॥ परं व्योम परं धाम परमात्मा परम्पदम् । परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचकः ॥ ९९ ॥ पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः । पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञानमोचनः ॥ १०० ॥ प्रणामप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः । फलहस्तः फणिपतिः फेत्कारः फाणितप्रियः ॥ १०१ ॥ बाणार्चिताङ्घ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली । ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥ १०२ ॥ बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः । बृहन्नादग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डवालिमेखलः ॥ १०३ ॥ भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः । भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥ १०४ ॥ भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रमध्यगोचरः । मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तो मनोरमः ॥ १०४ ॥ मेखलावान्मन्दगतिर्मतिमान्कमलेक्षणः । महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः ॥ १०६॥ यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः । यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १०७ ॥ रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः । रक्षो रक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः ॥ १०८ ॥ लक्ष्यालक्षप्रदो लक्ष्यो लयस्थो लड्डुकप्रियः । लानप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥ १०९ ॥ वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः । विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥ ११० ॥ वामदेवा विश्वनेता वज्री वज्रनिवारणः । विश्ववन्धनविष्कम्भाधारो विश्वेश्वरः प्रभुः ॥ १११ ॥ शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः । शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥११२॥ षड्तुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः । संसारवैद्यः

सर्वज्ञसर्वभेषजभेषजम् ॥ ११३ ॥ सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदनः । सिन्दूरितमहाकुम्भस्सदसद्व्यक्तिदायकः ॥ ११४ ॥ साक्षी समुद्रमथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः । स्वतन्त्रः सत्यसंकल्पस्सामगानरतस्सुखी ॥११५॥ हंसोहस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक् । हव्यं हुतप्रियो हर्षो हृल्लेखा मन्त्रमध्यगः ॥११६॥ क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापरपरायणः । क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः ॥ ११७ ॥ धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्द्धनः । विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥ ११८ ॥ आभिरूप्यकरो वीरः श्रीप्रदो विजयप्रदः । सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥ ११९ ॥ मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः । श्रीशोकहारी दौर्भाग्यनाशनसर्वशक्तिभृत् ॥१२०॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो हृष्टचित्तप्रसादनः । पराभिचारशमनो दुःखभञ्जनकारकः ॥ १२१ ॥ लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः । घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम् ॥ १२२ ॥ पक्षो मासोऽयनं वर्षं युगङ्कल्पो महालयः । राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः कारणमंशकम् ॥ १२३ ॥ लग्नं होरा कालचक्रं मेरुस्सप्तर्षयो ध्रुवः । राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमश्शशी रविः ॥ १२४ । कालसृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमञ्च यत् । भूरापोऽग्निर्मरुद्व्योमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ॥ १२५ ॥ ब्रह्मा विष्णुशिवो रुद्र ईशशक्तिसदाशिवः । त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षरक्षांसि किन्नराः ॥१२६॥ साध्या विद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः । समुद्रास्सरितश्शैला भूतभव्यम्भवोद्भवः ॥ १२७ ॥ सांख्यम्पातञ्जलं योगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः । वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः ॥ १२८ ॥ आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वङ्काव्यनाटकम् । वैखानसं भागवतं सात्वताम्पाञ्चरात्रकम् ॥ १२९ ॥ शैवम्पाशुपतङ्कालमुखं भैरवशासनम् । शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता ॥ १३० ॥ सदसव्द्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम् । बन्धो मोक्षः सुखम्भोगोऽयोगस्सत्यमणुर्महान् ॥१३१॥ स्वस्ति हुं फट् स्वधा स्वाहा श्रोषट् वौषड्वषण्नमः । ज्ञानविज्ञानमानन्दो बोधसंविच्छमो यमः ॥ १३२ ॥ एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः । एकाग्रधीरेकवीर एकानेकस्वरूपधृक् ॥ १३३ ॥ द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः । द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वातीतो द्वयातिगः ॥ १३४ ॥ त्रिधामात्रिकरस्त्रेता त्रिवर्गफलदायकः । त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः ॥ १३५ ॥ चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः । चतुर्विधापायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥ १३६ ॥ चतुर्विधवचो-

वृत्तिपरिवर्तप्रवर्तकः । चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भव. ॥ १३ ॥ पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्यकृत् । पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ॥ १३८ ॥ पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः । पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चवारणवारितः ॥ १३९ ॥ पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः । षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः ॥ १४० ॥ षडध्वध्वान्तविध्वंसी षडंगुलमहाह्लदः । षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्ति परिवारितः ॥ १४१ ॥ षड्वैरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः । षट्तर्क-दूरः षट्कर्मनिरतः षड्रसाश्रयः ॥ १४२ ॥ सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरु-मण्डलः । सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ॥ १४३ ॥ सप्ताङ्गराज्य-सुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः । सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ॥ १४४ ॥ सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः । सप्तच्छन्दोमोदमद-सप्तच्छन्दो मखप्रभुः ॥ १४५ ॥ अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् । अष्टाङ्गयोगफलभूरष्टपत्राम्बुजासनः ॥ १४६ ॥ अष्टशक्तिसमृद्धश्रीरष्टैश्वर्य-प्रदायकः । अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ॥ १४७ ॥ अष्टभैरवसेव्योष्ट-वसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् । अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः ॥ १४८ ॥ नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासिता । नवद्वारपुराधारो नवद्वार-निकेतनः ॥ १४९ ॥ नवनारायणस्तुत्यो नवदुर्गानिषेवितः । नवनाथ-महानाथो नवनागविभूषणः ॥ १५० ॥ नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्ति-शिरोधृतः । दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ॥ १५१ ॥ दशा-ध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः । दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्याधि-विग्रहः ॥ १५२ ॥ एकादशादिभी रुद्रैः स्तुत एकादशाक्षरः । द्वादशो-द्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्तनिकेतनः ॥ १५३ ॥ त्रयोदशभिदा भिन्नविश्वे-देवाधिदैवतम् । चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ॥ १५४ ॥ चतुर्दशादि-विद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्प्रभुः । सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः ॥ १५५ ॥ षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः । षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ॥ १५६ ॥ कलासप्तदशीसप्तदशः सप्तदशाक्षरः । अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ॥ १५७ ॥ अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टा-दशविधिःस्मृतः । अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः ॥ १५८ ॥ एकविंशः पुमानेकविंशत्यंगुलिपल्लवः । चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशा-ख्यपूरुषः ॥ १५९ ॥ सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत् । द्वात्रिंशद्भै-रवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्लदः ॥ १६० ॥ षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्क-लातनुः । नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥ १६१ ॥ पञ्चाशदक्षर-

श्रेणीः पञ्चाशद्रुद्रविग्रहः । पञ्चाशद्विष्णु शक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः ॥ १६२ ॥ द्विपञ्चाशद्वपुश्श्रेणीस्त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः । चतुष्षष्ट्यर्णनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः ॥ १६३ ॥ चतुःषष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दितः । अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरवभावनः ॥१६४॥ चतुर्णवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्य-धिकः प्रभुः । शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणाः ॥१६५॥ शतानीकः शतमुखश्शतधारवरायुधः । सहस्रपत्रनिलयस्सहस्रफलभूषणः ॥ १६६ ॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात् । सहस्रनामसन्तुत्यः सहस्राक्ष-बलापहः ॥ १६७ ॥ दशसाहस्रफणिभृत् फणिराजकृतासनः । अष्टाशीति-सहस्रौघमहर्षिस्तोत्रयन्त्रितः ॥ १६८ ॥ लक्षाधीशप्रियाधारो लक्षाधीश-मनोमयः । चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः ॥ १६९ ॥ चतुराशीति-लक्षाणाञ्जावाना देहसंस्थितः । कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ॥ १७० ॥ शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायकधुरन्धरः । सप्तकोटिमहामन्त्र-मन्त्रितावयवद्युतिः ॥ १७१ ॥ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः अनन्तदेवतासेव्योह्यनन्तमुनिसंस्तुतः ॥१७२॥ अनन्तनामानन्तश्रीरनन्ता-नन्तसौख्यदः ।

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम् ॥ १७३ ॥ इदं ब्राह्मे मुहूर्ते वै यः पठेत्प्रत्यहं नरः । करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम् ॥ १७४ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं धर्मः शौर्यं बलं यशः । मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिस्सौभाग्यमतिरूपता ॥ १७५ ॥ सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता । जगत्संयमनं विश्व सम्वादो वादपाटवम् ॥ १७६ ॥ सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्च्चसम् । औन्नत्यं च कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता ॥ १७७ ॥ ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं धैर्यं विश्वाति-शायिता । धनधान्याभिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत् ॥ १७८ ॥ वश्यं चतुर्विधं नृणां जपादस्य प्रजायते । राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः ॥ १७९ ॥ जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते । धर्मा-र्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम् ॥ १८० ॥ शाकिनीडाकिनीरक्षो-यक्षोरगभयापहम् । साम्राज्यसुखदं चैव समस्तरिपुमर्दनम् ॥ १८१ ॥ समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम् । दुःस्वप्नशमनं क्रुद्धस्वामिचित्त-प्रसादनम् ॥ १८२ ॥ षट्कर्माष्टमहासिद्धि त्रिकालज्ञानसाधनम् । परकृत्योपशमनं परचक्रविमर्दनम् ॥ १८३ ॥ संग्रामरङ्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम् । एवं वन्ध्यात्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम् ॥ १८४ ॥ पठ्यते

प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्। देशे तत्र न दुर्भिक्षर्भातयो दुरितानि च ॥ १८५ ॥

यह गणेश (विनायक) जी का सहस्रनाम स्तोत्र कहा गया है। जो ब्राह्म मुहूर्त में प्रतिदिन इसका पाठ करता है उसके हाथ में समस्त इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख आ जाते हैं। आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धर्म, शौर्य, बल, यश, मेधा, प्रज्ञा, धृति, कान्ति, सौभाग्य, सुरूपता, सत्य, दया क्षमा, शान्ति, दाक्षिण्य, धर्मशीलता, जगत-संयमन, विश्वसंवाद, वादपटुता, सभापाण्डित्य, औदार्य, गाम्भीर्य, ब्रह्मवर्चस्, औन्नत्य, कुल, शील, प्रताप, वीर्य, आर्यता ज्ञान, विज्ञान, आस्तिक्य, धैर्य, विश्वातिशायिता तथा धनधान्य की वृद्धि एक साथ ही इसके जप से प्राप्त हो जाती है। इसके जप से मनुष्यों का चतुर्विध वशीकरण होता है: १. राजा का वशीकरण, २. राजा की पत्नी का वशीकरण, ३. राजा के पुत्र का वशीकरण, और ४. राजा के मन्त्री का वशीकरण। जिसको वश में करने के लिये जप किया जाता है, वह साधक का दास हो जाता है। यह जप धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का सरल साधन है। यह जप शाकिनी, डाकिनी, राक्षस, यक्ष और उरगादि के भय को दूर करनेवाला है। यह साम्राज्य का सुख देनेवाला तथा समस्त शत्रुओं का दमन करनेवाला है। यह समस्त झगड़ों को शान्त करनेवाला है। नष्ट हुये बीजों को भी उगानेवाला, दुःस्वप्नों का शमन करनेवाला, और क्रुद्ध स्वामी के चित्त को प्रसन्न करनेवाला है। यह षट्कर्मों, अष्टमहासिद्धियों और त्रिकालज्ञान का साधन है। शत्रु की कृत्या का भी यह उपशामक है। शत्रु के आक्रमण को नष्ट करनेवाला तथा युद्धस्थल में सभी के लिए एकमात्र जय देनेवाला है। इसी प्रकार, यह बन्ध्यत्व दोष का अवरोधक और गर्भरक्षा का एक कारण है। जहाँ पर गणपति का यह स्तोत्र प्रतिदिन पढ़ा जाता है वहाँ पर दुर्भिक्ष का भय तथा अन्य कष्ट नहीं होता।

न तद्गेहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः। क्षयकुष्ठप्रमेहार्शोभगन्दरविषूचिकाः ॥ १८६ ॥ गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्। कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोकादिसम्भवम् ॥ १८७ ॥ शिरोरोगं वमि हिक्का गण्डमालामरोचकम्। वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ॥ १८८ ॥ आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्। इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगं दोषादिसम्भवम् ॥ १८९ ॥ सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपात्। सकृत् पाठेन संसिद्धिः स्त्रीशूद्रपतितैरपि ॥ १९० ॥ सहस्रनाममन्त्रोयं जपतव्यस्तु शुभाप्तये। महागणपतेः स्तोत्रं सकामः

प्रजपन्निदम् ॥ १९१ ॥ इच्छया सकलान्भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्। मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ॥ १९२ ॥ चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मरुद्रादिसद्मसु। कामरूपः कामगतिः कामतो विचरन्निह ॥ १९३ ॥ भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टैस्सह बन्धुभिः। गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ॥१९४॥ नन्दीश्वरादिसानन्दी नन्दितः सकलैर्गणैः। शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ॥ १९५ ॥ शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः। जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोभिजायते ॥ १९६ ॥ निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः। योगसिद्धि परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंस्थितः ॥ १९७ ॥ निरन्तरोदितानन्दे परमानन्दसंविदि। विश्वोत्तीर्णे परे पारे पुनरावृत्तिवर्जिते ॥ १९८ ॥ लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृतः।

जिस घर में इस स्तोत्र का जप किया जाता है वहाँ से श्री अन्यत्र नहीं जातीं। वहाँ से क्षय, कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, भगन्दर तथा विशूचिका भाग जाते हैं। गुल्म, प्लीहा, आध्मान, अतिसार, जलोदर, खाँसी, श्वास, उदावर्त, शूल, शोक आदि से होनेवाला शिरोरोग, वमन, हिचकी, गण्डमाला, अरुचि, वात, पित्त, कफ तथा इनके द्वन्द्वज और त्रिदोषज ज्वर, आगन्तुक ज्वर, विषय ज्वर एवं ऐकाहिक ज्वर इत्यादि तथा उक्त या अनुक्त दोषों से उत्पन्न रोग भी भाग जाते हैं। इस स्तोत्र का एकबार जप करने से सभी रोग शान्त हो जाते हैं। एक बार के पाठ से सिद्धि हो जाती है। स्त्री, शूद्र तथा पतित लोगों को भी एक बार के पाठ से सिद्धि प्राप्त हो जाती है। कल्याण के लिए इस सहस्रनाम स्तोत्र का जप करना चाहिये। सकाम साधक महागणपति के इस स्तोत्र का जप करता हुआ इच्छा से समस्त राजकीय भोगों को प्राप्त करता है तथा मनोरथ सिद्धि के फलस्वरूप वह दिव्य और मनोरम व्योम यानों से चन्द्रलोक, सूर्यलोक, उपेन्द्रलोक, ब्रह्मलोक, तथा रुद्रलोक आदि देवनिवासों में इच्छानुसार रूप धारण कर, इच्छानुसार गति से विचरण करता है और अभीष्ट भोगों को भोग कर अपने इष्ट-मित्रों, बन्धु-बान्धवों के साथ गणेश का सेवक होकर महागणपति का प्रिय बन जाता है। नन्दीश्वर तथा नन्दी आदि शिव के सभी गणों से, शिवजी तथा पार्वती द्वारा कृपापूर्वक पुत्र से भी अधिक लालित और पालित होता है। वह शिवभक्त एवं पूर्णकाम होकर गणपति की कृपा से पूर्व जन्मों का स्मरण करनेवाला, धर्मपरक और सार्वभौम होता है: गणेश की भक्ति में तत्पर होकर जो निष्काम जप करता है वह परम योग की सिद्धि प्राप्त करके ज्ञान और वैराग्य में स्थित संसार-

प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्। देशे तत्र न दुर्भिक्षर्भातयो दुरितानि च ॥ १८५ ॥

यह गणेश (विनायक) जी का सहस्रनाम स्तोत्र कहा गया है। जो ब्राह्म मुहूर्त में प्रतिदिन इसका पाठ करता है उसके हाथ में समस्त इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख आ जाते हैं। आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धर्म, शौर्य, बल, यश, मेधा, प्रज्ञा, धृति, कान्ति, सौभाग्य, सुरूपता, सत्य, दया क्षमा, शान्ति, दाक्षिण्य, धर्मशीलता, जगत-संयमन, विश्वसंवाद, वादपटुता, सभापाण्डित्य, औदार्य, गाम्भीर्य, ब्रह्मवर्चस्, औन्नत्य, कुल, शील, प्रताप, वीर्य, आर्यता ज्ञान, विज्ञान, आस्तिक्य, धैर्य, विश्वातिशायिता तथा धनधान्य की वृद्धि एक साथ ही इसके जप से प्राप्त हो जाती है। इसके जप से मनुष्यों का चतुर्विध वशीकरण होता है: १. राजा का वशीकरण, २. राजा की पत्नी का वशीकरण, ३. राजा के पुत्र का वशीकरण, और ४. राजा के मन्त्री का वशीकरण। जिसको वश में करने के लिये जप किया जाता है, वह साधक का दास हो जाता है। यह जप धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का सरल साधन है। यह जप शाकिनी, डाकिनी, राक्षस, यक्ष और उरगादि के भय को दूर करनेवाला है। यह साम्राज्य का सुख देनेवाला तथा समस्त शत्रुओं का दमन करनेवाला है। यह समस्त झगड़ों को शान्त करनेवाला है। नष्ट हुये बीजों को भी उगानेवाला, दुःस्वप्नों का शमन करनेवाला, और क्रुद्ध स्वामी के चित्त को प्रसन्न करनेवाला है। यह षट्कर्मों, अष्टमहासिद्धियों और त्रिकालज्ञान का साधन है। शत्रु की कृत्या का भी यह उपशामक है। शत्रु के आक्रमण को नष्ट करनेवाला तथा युद्धस्थल में सभी के लिए एकमात्र जय देनेवाला है। इसी प्रकार, यह बन्ध्यत्व दोष का अवरोधक और गर्भरक्षा का एक कारण है। जहाँ पर गणपति का यह स्तोत्र प्रतिदिन पढ़ा जाता है वहाँ पर दुर्भिक्ष का भय तथा अन्य कष्ट नहीं होता।

न तद्गेहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः। क्षयकुष्ठप्रमेहार्शोभगन्दरविषूचिकाः ॥ १८६ ॥ गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्। कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोकादिसम्भवम् ॥ १८७ ॥ शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम्। वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ॥ १८८ ॥ आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्। इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगं दोषादिसम्भवम् ॥ १८९ ॥ सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपात्। सकृत् पाठेन संसिद्धिः स्त्रीशूद्रपतितैरपि ॥ १९० ॥ सहस्रनाममन्त्रोयं जप्तव्यस्तु शुभाप्तये। महागणपतेः स्तोत्रं सकामः

प्रजपन्निदम् ॥ १९१ ॥ इच्छया सकलान्भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्। मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ॥ १९२ ॥ चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मरुद्रादिसद्मसु। कामरूपः कामगतिः कामतो विचरन्निह ॥ १९३ ॥ भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टैस्सह बन्धुभिः। गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ॥१९४॥ नन्दीश्वरादिसानन्दी नन्दितः सकलैर्गणैः। शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ॥ १९५ ॥ शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः। जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोभिजायते ॥ १९६ ॥ निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः। योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंस्थितः ॥ १९७ ॥ निरन्तरोदितानन्दे परमानन्दसंविदि। विश्वोत्तीर्णे परे पारे पुनरावृत्तिवर्जिते ॥ १९८ ॥ लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृतः।

जिस घर में इस स्तोत्र का जप किया जाता है वहाँ से श्री अन्यत्र नहीं जातीं। वहाँ से क्षय, कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, भगन्दर तथा विशूचिका भाग जाते हैं। गुल्म, प्लीहा, आध्मान, अतिसार, जलोदर, खाँसी, श्वास, उदावर्त, शूल, शोक आदि से होनेवाला शिरोरोग, वमन, हिचकी, गण्डमाला, अरुचि, वात, पित्त, कफ तथा इनके द्वन्द्वज और त्रिदोषज ज्वर, आगन्तुक ज्वर, विषय ज्वर एवं ऐकाहिक ज्वर इत्यादि तथा उक्त या अनुक्त दोषों से उत्पन्न रोग भी भाग जाते हैं। इस स्तोत्र का एकबार जप करने से सभी रोग शान्त हो जाते हैं। एक बार के पाठ से सिद्धि हो जाती है। स्त्री, शूद्र तथा पतित लोगों को भी एक बार के पाठ से सिद्धि प्राप्त हो जाती है। कल्याण के लिए इस सहस्रनाम स्तोत्र का जप करना चाहिये। सकाम साधक महागणपति के इस स्तोत्र का जप करता हुआ इच्छा से समस्त राजकीय भोगों को प्राप्त करता है तथा मनोरथ सिद्धि के फलस्वरूप वह दिव्य और मनोरम व्योम यानों से चन्द्रलोक, सूर्यलोक, उपेन्द्रलोक, ब्रह्मलोक, तथा रुद्रलोक आदि देवनिवासों में इच्छानुसार रूप धारण कर, इच्छानुसार गति से विचरण करता है और अभीष्ट भोगों को भोग कर अपने इष्ट-मित्रों, बन्धु-बान्धवों के साथ गणेश का सेवक होकर महागणपति का प्रिय बन जाता है। नन्दीश्वर तथा नन्दी आदि शिव के सभी गणों से, शिवजी तथा पार्वती द्वारा कृपापूर्वक पुत्र से भी अधिक लालित और पालित होता है। वह शिवभक्त एवं पूर्णकाम होकर गणपति की कृपा से पूर्व जन्मों का स्मरण करनेवाला, धर्मपरक और सार्वभौम होता है: गणेश की भक्ति में तत्पर होकर जो निष्काम जप करता है वह परम योग की सिद्धि प्राप्त करके ज्ञान और वैराग्य में स्थित संसार-

सागर से पार होकर जन्म-मरण के आवागमन से रहित प्रकाशमान, ज्ञानमय तथा आनन्दमय गणेश के धाम में रमण करता है।

यो नामभिर्हुनेदेतैरर्च्चयेत्पूजयेन्नरः ॥ १९९ ॥ राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्। मन्त्रा सिध्यन्ति सर्वेपि सुलभास्तस्यसिद्धयः ॥ २२० ॥

जो मनुष्य इन सहस्रनामों से यज्ञ, पूजा और अर्चना करता है उसके वश में राजा भी हो जाता है। शत्रु उसके दास हो जाते हैं। उसके सभी मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। सभी सिद्धियाँ उसे सुलभ हो जाती हैं।

मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतरं मम। नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि ॥ २०१ ॥ दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत्। अष्टद्रव्यैर्विशेषेण जुहुयाद्भक्तिसंयुतः ॥ २०२ ॥ तस्येप्सितानि सर्वाणि सिद्धयंत्यत्र न संशयः।

मेरा यह मन्त्र मूलमन्त्र से भी अधिक मुझे प्रिय है। भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी को मेरे जन्मदिन में दूर्वादलों द्वारा मेरे नामों से पूजा तथा विधिवत तर्पण करना चाहिये। भक्तिपूर्वक अष्टद्रव्यों से विशेष रूप से हवन करना चाहिये। जो ऐसा करता है उसके मनोरथ सिद्ध होते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

इदं प्रजप्तं पठितं पाठितं श्रावितं श्रुतम् ॥ २०३ ॥ व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिनन्दितम्। इहामुत्र च सर्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ २०४ ॥ स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः। संरक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्युष्टकोटिभिः ॥ २०५ ॥ पुस्तके लिखितं स्तोत्रं मन्त्रभूतं प्रपूजयेत्। तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम् ॥ २०६ ॥ दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च तीर्थैरशेषैस्सकलैर्मखैश्च। न तत्फलं विन्दति यद्गणेशसहस्रनाम्नां स्मरणेन सद्यः ॥ २०७ ॥

यह सहस्रनाम स्तोत्र जप करने, पढ़ने-पढ़ाने सुनने-सुनाने, व्याख्यान करने, चर्चा करने, ध्यान करने, विचार करने तथा अभिनन्दन करने से इस लोक में तथा परलोक में सभी के लिये समस्त ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला है। स्वच्छन्दचारी व्यक्ति भी यदि इस स्तोत्र को धारण करे तो शिव के करोड़ों उद्धतगण उसकी रक्षा करते हैं। पुस्तक में लिखे स्तोत्र की मन्त्र के समान पूजा करनी चाहिये। उसमें सर्वोत्तम लक्ष्मी निरन्तर सन्निहित है। समस्त दानों, समस्त व्रतों, समस्त तीर्थों तथा समस्त यज्ञों से भी मनुष्य को वह

फल नहीं मिलता जो फल गणेशजी के इस सहस्रनाम स्तोत्र से सद्यःप्राप्त होता है।

एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने सायम्मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः। स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति प्रत्यूहं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्द्धते पुत्रपौत्रः ॥ २०८ ॥

जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातः उठकर इस सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है या मध्याह्न और सायंकाल इसका पाठ करता है, अथवा तीनों सन्ध्याओं में इसका पाठ करता है, अथवा निरन्तर इसका पाठ करता है वह ऐश्वर्यशालियों में अग्रगण्य होता है। उसके वाणी की कीर्ति सर्वत्र फैल जाती है। उसके समस्त विघ्न नष्ट हो जाते हैं। वह सारे संसार को वश में कर लेता है तथा बहुत काल तक पुत्र-पौत्रों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है।

अकिञ्चनोप्येकचित्तो नियतो नियताशनः। जपेत्तु चतुरो मासान्गणेशार्चनतत्परः ॥२०९॥ दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि। लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ २१० ॥

यदि अकिञ्चन भी एकाग्रचित्त होकर नियत आहार करता हुआ चार मास तक गणेश की पूजा में तत्पर होकर जप करता है तो वह सात जन्म की दरिद्रता को तोड़कर महती लक्ष्मी को प्राप्त करता है ऐसी पार्वतीजी की आज्ञा है।

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्त्तदानाः कीर्तिर्नित्यावदाता भणितिरभिनवा कान्तिरव्याजभव्या। पुत्रास्सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदेतच्च सत्यं नित्यं यः स्तोत्रमेतत्पठति गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम् ॥ २११ ॥

जो मनुष्य गणेशजी के इस स्तोत्र का नित्य पाठ करता है उसके हाथ में आयु, निरोगता, उत्तमकुल, सम्पत्ति, दुखियों को दान देना, उज्ज्वल कीर्ति नूतन वाणी, ऐसी नवीन कान्ति जो बिना आभूषणों के भी सुन्दर हो, तथा सज्जन पुत्र, गुणवती उत्तम स्त्री यह सब उपस्थित हो जाते हैं: यह सत्य है।

ॐ गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः। महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥ २१२ ॥ अमोघ सिद्धिरमितो मन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः। सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः शिवः ॥ २१३ ॥ काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिविनायकः। मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान् ॥ २१४ ॥ यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः। स्तुतो नाम्नां

सहस्रेण तेनाहं नात्र संशय: ॥ २१५ ॥ नमोनमस्सुरवरपूजितांघ्रये नमोनमो निरुपममङ्गलात्मने । नमोनमो विपुलकरैकसिद्धये नमोनम: करिकलभाननाय ते ॥ २१६ ॥ किंकिणिगणरणितस्तवचरण: प्रकटितगुरुमतिचरितविशेष: । मदजललहरीकलितकपोल: शमयतु दुरितं गणपति नामा ॥२१७॥ इति श्रीवक्रतुण्डगणेशसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ वक्रतुण्डशतनामस्तोत्रप्रारम्भ: ।

गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा । विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जय: ॥ १ ॥ स्वरूप: सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रय: । योगाधिपस्तारकस्थ: पुरुषो गजकर्णक: ॥ २ ॥ चित्राङ्ग: श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुज: । शम्भुतेजा यज्ञकाय: सर्वात्मा समावृंहित: ॥ ३ ॥ कुलाचलांसो व्योमनाभि: कल्पद्रुमवनालय: । निम्ननाभि: स्थूलकुक्षि: पीनवक्षा बृहद्भुज: ॥ ४ ॥ पीनस्कन्ध: कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिक: । सर्वावयवसम्पूर्ण: सर्वलक्षणलक्षित: ॥ ५ ॥ इक्षुचापधर: शूली कान्तिकन्दलिताश्रय: । अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावह: ॥ ६ ॥ कामिनीकामन: काममालिनीकेलिलालित: । अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जित: ॥७॥ इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मल: । कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रद: ॥ ८ ॥ कमण्डलुधर: कल्प: कपर्दी कटिसूत्रभृत् । कारुण्यदेह: कपिलो गुह्यागमनिरूपित: ॥ ९ ॥ गुहाशयो गुहाब्धिस्थो घटकुम्भो घटोदर: । पूर्णानन्दपरानन्दो धनदो धरणीधर: ॥ १० ॥ बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रिय: । भव्यो भतालयो भोगदाता चैव महामन: ॥ ११ ॥ वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारण: । विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक् ॥ १२ ॥ स्वतन्त्रस्सत्पसङ्कल्पस्तथा सौभाग्यवर्द्धन: । कीर्तिद: शोकहारी च त्रिवर्गफलदायक: ॥ १३ ॥ चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थीतिथिसम्भव: । सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्षस्सहस्रपात् ॥ १४ ॥ कामरूप: कामगतिर्द्विरदो दीपरक्षक: । क्षेत्राधिप: क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रिय: ॥ १५ ॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादन: । भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रिय: ॥ १६ ॥

इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमत: । शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम् ॥ १७ ॥ सहस्रनाम्नाकृष्य मया प्रोक्तं स्त्रोत्रं मनोहरम् । ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम् । पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराज: प्रसीदति ॥ १८ ॥

देवदेव श्रीमान् गणेश के इस अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र को सारभूत कहा गया है और इसे गणेश सहस्रनाम से निकाल कर मैंने अत्यन्त सुन्दर और मनोहर बताया है। ब्राह्म मुहूर्त में उठकर गणेशजी का स्मरण करके जो गणेशजी के इस स्तोत्र को भक्तिपूर्वक पढ़ता है उससे गणेशजी प्रसन्न होते हैं।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्र उमामहेश्वरसम्वादे श्रीगणेशस्याष्टोत्तरनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ वक्रतुण्डस्तोत्रप्रारम्भ: ।

ॐॐॐकाररूपं हिमकररुचिरं यत्स्वरूपं तुरीयं त्रैगुण्यातीतलीलं कलयति मनसातेजसोदारवृत्ति: । योगीन्द्रा ब्रह्मरन्ध्रे सहजगुणमयं श्रीहरेन्द्रं स्वसंज्ञं गंगंगंगणेशं गजमुखमनिशं व्यापकं चिन्तयन्ति ॥ १ ॥ वंवंवंविघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे पाणिशुण्डं क्रोंक्रोंक्रोंक्रोधमुद्रादलितरिपुकुलं कल्पवृक्षस्य मूले दंदंदंदन्तमेकं दधतमभिमुखं कामधेन्वादिसेव्यं धंधंधंधारयन्तं दधतमतिशयं सिद्धिबुद्धीर्ददन्तम् ॥ २ ॥ तुंतुंतुंतुङ्गरूपं गगनमुपगतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तं क्लींक्लींक्लींकामनाथं गलितमददलं लोलमत्तालिमालम् । ह्रींह्रींह्रींकाररूपं सकलमुनिजनैर्ध्येयमुद्दिक्षुदण्डं श्रींश्रींश्रींसंश्रयन्तं निखिलनिधिकुलं नौमि हेरम्बलम्बलम् ॥३॥ ग्लौंग्लौंग्लौंकारमाद्यं प्रणवमयमहामन्त्रमुक्तावलीनां सिद्धं विघ्नेशबीजं शशिकरसदृशं योगिनां ध्यानगम्यम् । डांडांडांडामरूपं दलितभवभयं सूर्यकोटिप्रकाशं यंयंयंयक्षराजं जपति मुनिजनो गृह्यामभ्यन्तरं च ॥ ४ ॥ हुंहुंहुंहेमवर्णं श्रुतिगणितगुणं शूर्पकर्णं कृपालुं ध्येयं य: सूर्यबिम्बे उरसि च विलसत्सर्पयज्ञोपवीतम् । स्वाहाहुंफट्समेतै: ठठठठसहितै: पल्लवै: सेव्यमानैर्मन्त्राणां सप्तकोटिप्रगुणितमहिमध्यानमीशं प्रपद्ये ॥ ५ ॥ पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपरिरुचिरं षड्दलं सूपपत्रं तस्योद्ध्वं बद्धरेखावसुदलकमलं बाह्यतोधश्च तस्य । मध्ये हुंकारबीजं तदनु भगवतो बीजषट्कं पुरारेरष्टौ शुक्लेशसिन्धौ बहुलगणपतेर्विष्टरे वाष्टकं च ॥ ६ ॥ धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दिशि विदिशि गणा बाह्यतो लोकपालान् मध्ये क्षेत्राधिनाथं मुनिजनतिलक मन्त्रमुद्रापदेशम् ।

एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्पधूपाक्षताद्यैर्नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुतिनटविलसद्गीतवादित्रनादै: ॥ ७ ॥ राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत्सर्वदास्ते लक्ष्मी:सर्वाङ्गयुक्ता त्यजति न सदनं किंकरा: सर्वलोका: । पुत्रा: पौत्रा: प्रपौत्रा रणभुवि विजयो द्यूतवादे प्रवीणो यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्तिभाजां स देव: ॥ ८ ॥

सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः ॥ २१५ ॥ नमोनमस्सुरवरपूजितांघ्रये नमोनमो निरुपममङ्गलात्मने । नमोनमो विपुलकरैकसिद्धये नमोनमः करिकलभाननाय ते ॥ २१६ ॥ किंकिणिगणरणितस्तवचरणः प्रकटितगुरुमतिचरितविशेषः । मदजललहरीकलितकपोलः शमयतु दुरितं गणपति नामा ॥२१७॥ इति श्रीवक्रतुण्डगणेशसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ वक्रतुण्डशतनामस्तोत्रप्रारम्भः ।

गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा । विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः ॥ १ ॥ स्वरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः । योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ २ ॥ चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः । शम्भुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा समाबृंहितः ॥ ३ ॥ कुलाचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः । निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः ॥ ४ ॥ पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः । सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ ५ ॥ इक्षुचापधरः शूली कान्तिकन्दलिताश्रयः । अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावहः ॥ ६ ॥ कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः । अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः ॥७॥ इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः । कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ८ ॥ कमण्डलुधरः कल्पः कपर्द्दी कटिसूत्रभृत् । कारुण्यदेहः कपिलो गुह्यागमनिरूपितः ॥ ९ ॥ गुहाशयो गुहाब्धिस्थो घटकुम्भो घटोदरः । पूर्णानन्दपरानन्दो धनदो धरणीधरः ॥ १० ॥ बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः । भव्यो भतालयो भोगदाता चैष महामनः ॥ ११ ॥ वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः । विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक् ॥ १२ ॥ स्वतन्त्रस्सत्पसङ्कल्पस्तथा सौभाग्यवर्द्धनः । कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफलदायकः ॥ १३ ॥ चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थीतिथिसम्भवः । सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात् ॥ १४ ॥ कामरूपः कामगतिर्द्विरदो दीपरक्षकः । क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रियः ॥ १५ ॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादनः । भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १६ ॥

इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमतः । शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम् ॥ १७ ॥ सहस्रनाम्नाकृष्य मया प्रोक्तं स्त्रोत्रं मनोहरम् । ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम् । पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति ॥ १८ ॥

देवदेव श्रीमान् गणेश के इस अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र को सारभूत कहा गया है और इसे गणेश सहस्रनाम से निकाल कर मैंने अत्यन्त सुन्दर और मनोहर बताया है। ब्राह्म मुहूर्त में उठकर गणेशजी का स्मरण करके जो गणेशजी के इस स्तोत्र को भक्तिपूर्वक पढ़ता है उससे गणेशजी प्रसन्न होते हैं।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्र उमामहेश्वरसम्वादे श्रीगणेशस्याष्टोत्तरनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ वक्रतुण्डस्तोत्रप्रारम्भः ।

ॐॐॐकाररूपं हिमकररुचिरं यत्स्वरूपं तुरीयं त्रैगुण्यातीतलीलं कलयति मनसातेजसोदारवृत्तिः । योगीन्द्रा ब्रह्मरन्ध्रे सहजगुणमयं श्रीहरेन्द्रं स्वसंज्ञं गंगंगंगणेशं गजमुखमनिशं व्यापकं चिन्तयन्ति ॥ १ ॥ वंवंवंविघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे पाणिशुण्डं क्रोंक्रोंक्रोंक्रोधमुद्रादलितरिपुकुलं कल्पवृक्षस्य मूले दंदंदंदन्तमेकं दधतमभिमुखं कामधेन्वादिसेव्यं धंधंधंधारयन्तं दधतमतिशयं सिद्धिबुद्धीर्द्दन्तम् ॥ २ ॥ तुंतुंतुंतुङ्गरूपं गगनमुपगतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तं क्लींक्लींक्लींकामनाथं गलितमददलं लोलमत्तालिमालम् । ह्रींह्रींह्रींकाररूपं सकलमुनिजनैर्ध्येयमुद्दिक्षुदण्डं श्रींश्रींश्रींसंश्रयन्तं निखिलनिधिकुलं नौमि हेरम्बलम्बलम् ॥३॥ ग्लौंग्लौंग्लौंकारमाद्यं प्रणवमयमहामन्त्रमुक्तावलीनां सिद्धं विघ्नेशबीजं शशिकरसदृशं योगिनां ध्यानगम्यम् । डांडांडांडामरूपं दलितभवभयं सूर्यकोटिप्रकाशं यंयंयंयक्षराजं जपति मुनिजनो गुह्यमभ्यन्तरं च ॥ ४ ॥ हुंहुंहुंहेमवर्णं श्रुतिगणितगुणं शूर्पकर्णं कृपालुं ध्येयं यः सूर्यबिम्बे उरसि च विलसत्सर्पयज्ञोपवीतम् । स्वाहाहुंफट्समेतैः ठठठठसहितैः पल्लवैः सेव्यमानैर्मन्त्राणां सप्तकोटिप्रगुणितमहिमध्यानमीशं प्रपद्ये ॥ ५ ॥ पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपरिरुचिरं षड्दलं सूपपत्रं तस्योर्द्ध्वं बद्धरेखावसुदलकमलं बाह्यतोधश्च तस्य । मध्ये हुंकारबीजं तदनु भगवतो बीजषट्कं पुरारेरष्टौ शुक्लेशसन्धौ बहुलगणपतेर्विष्टरे वाष्टकं च ॥ ६ ॥ धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दिशि विदिशि गणा बाह्यतो लोकपालान् मध्ये क्षेत्राधिनाथं मुनिजनतिलक मन्त्रमुद्रापदेशम् ।

एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्पधूपाक्षताद्यैर्नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुतिनटविलसद्गीतवादित्रनादैः ॥ ७ ॥ राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत्सर्वदास्ते लक्ष्मीःसर्वाङ्गयुक्ता त्यजति न सदनं किंकराः सर्वलोकाः । पुत्राः पौत्राः प्रपौत्रा रणभुवि विजयो द्यूतवादे प्रवीणो यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्तिभाजां स देवः ॥ ८ ॥

इस प्रकार जो मनुष्य भक्ति युक्त होकर पुष्प, धूप, अक्षत तथा मोदक के नैवेद्य, स्तुति, नृत्य, गीत, तथा नाना प्रकार के वाद्यों के साथ श्रीगणेशजी की पूजा करता है, उसके सभी राजा दास के समान हो जाते हैं। युवतियाँ सदा दासी के समान हो जाती हैं। सभी अङ्गों से युक्त लक्ष्मी उसके घर का त्याग नहीं करतीं। सभी लोग उसके दास हो जाते हैं। उसको पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र सभी प्राप्त होते हैं। युद्धभूमि में वह विजय प्राप्त करता है। जिसके हृदय में भक्तों के देव विघ्नराज ईश गणेश निवास करते हैं वह द्यूत और बाद में प्रवीण हो जाता हैं।

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं वक्रतुण्डस्तोत्रं समाप्तम्।

अथ उच्छिष्टगणेशकवचप्रारम्भः। –

देव्युवाच। देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थितिलयात्मक। विना ध्यानं विना मन्त्रं विना होमं विना जपम् ॥१॥ येन स्मरणमात्रेण लभ्यते चाशु चिन्तितम्। तदेव श्रोतुमिच्छामि कथयस्व जगत्प्रभो ॥ २ ॥

उच्छिष्ट गणेश कवच : देवी बोली : हे देवदेव, जगन्नाथ, सृष्टि स्थिति तथा प्रलय करनेवाले ! बिना ध्यान, बिना मन्त्र, बिना होम, तथा बिना जप के केवल जिसके स्मरण मात्र से मनोवाञ्छित फल शीघ्र मिलता है वही मैं सुनना चाहती हूं। हे जगत्प्रभो ! आप हमें उसे ही बतायें।

ईश्वर उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् उच्छिष्टगणनाथस्य कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥ ३ ॥ अल्पायासैर्विना कष्टैर्जपमात्रेण सिद्धिदम्। एकान्ते निर्जनेऽरण्ये गह्वरे च रणाङ्गणे ॥ ४ ॥ सिन्धुतीरे च गाङ्गीये कूले वृक्षतले जले। सर्वदेवालये तीर्थे लब्ध्वा सम्यक् जपं चरेत् ॥५॥ स्नानशौचादिकं नास्ति नास्ति निर्बंधनं प्रिये। दारिद्र्यान्तकरं शीघ्रं सर्वतत्त्वं जनप्रिये ॥ ६ ॥ सहस्रशपथं कृत्वा यति स्नेहोस्ति मां प्रति। निन्दकाय कुशिष्याय खलाय कुटिलाय च ॥ ७ ॥ दुष्टाय परशिष्याय घातकाय शठाय च। वञ्चकाय वरघ्नाय ब्राह्मणीगमनाय च ॥ ८ ॥ अशक्ताय च क्रूराय गुरुद्रोहरताय च। न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ॥ ९ ॥ गुरुभक्ताय दातव्यं सच्छिष्याय विशेषतः। तेषां सिध्यन्ति शीघ्रेण ह्यन्यथा न च सिध्यन्ति ॥ १० ॥ गुरुसन्तुष्टिमात्रेण कलौ प्रत्यक्षसिद्धिदम्। देहोच्छिष्टैः प्रजप्तव्यं तथोच्छिष्टैर्महामनुः ॥ ११ ॥ आकाशे च फलं प्राप्तं नान्यथा वचनं मम। एषा राजवती विद्या विना पुण्यं न लभ्यते ॥ १२ ॥ अथ वक्ष्यामि देवेशि कवचं मन्त्रपूर्वकम्। येन विज्ञानमात्रेण राजभोगफलप्रदम् ॥ १३ ॥

शिवजी बोले : हे देवि ! गुह्य से भी गुह्यतर, महान्, उच्छिष्ट गणनाथ का कवच मैं तुम्हें बता रहा हूं जो सर्वसिद्धियों को देनेवाला है। थोड़े श्रम से, बिना कष्ट के यह केवल जपमात्र से सिद्धि देनेवाला है। एकान्त निर्जन स्थान में, जङ्गल में, गुफा में और रणभूमि में, समुद्र तटपर, गङ्गा तटपर, वृक्ष की छाया में, जल में, सभी देवालयों में, तीर्थों में, जहां स्थान मिले वहां अच्छी तरह जप करे। इसमें स्नान, शौच आदि की पवित्रता की आवश्यकता नहीं है। कोई बन्धन नहीं है। हे जनप्रिये ! यह दरिद्रता को शीघ्र समाप्त करनेवाला है। यदि मेरे प्रति तुम्हारा स्नेह है तो हजार बार शपथ लेकर, निन्दक, कुशिष्य, खल, कुटिल, दुष्ट, परशिष्य, घातक, शठ, वञ्चक, वरघ्न, ब्राह्मणीगामी, अशक्त, क्रूर, तथा गुरुद्रोही को इसे कभी न बताना कभी न बताना, कभी न बताना। गुरुभक्त सज्जन शिष्य को विशेष रूप से बताना। जो ऐसे हैं उन्हीं को इस कवच से सिद्धि मिलेगी अन्य को नहीं। गुरु की सन्तुष्टि मात्र से यह कलियुग में प्रत्यक्ष सिद्धिप्रद है। उच्छिष्ट देह से इसका तथा महामन्त्र का जप करना चाहिये। इससे आकाश में भी फल मिलता है। मेरा यह वचन अन्यथा नहीं हो सकता। यह राजवती विद्या है इसलिये पुण्य के बिना प्राप्त नहीं होती। हे देवेशि ! अब मैं मन्त्रपूर्वक कवच बतला रहा हूं जिसका विज्ञान मात्र ही राजभोग का फल देनेवाला है।

ऋषिर्मे गणकः पातु शिरसि च निरन्तरम्। त्राहि मां देवि गायत्री छन्दो ऋषिः सदा मुखे ॥ १४ ॥ हृदये पातु मां नित्यमुच्छिष्टगणदेवता। गुह्येरक्षतु तद्बीजं स्वाहा शक्तिश्च पादयो ॥ १५ ॥ कामकीलकसर्वाङ्गेविनियोगश्च सर्वदा। पार्श्वद्वये सदा पातु स्वशक्ति गणनायकः ॥ १६ ॥ शिखायां पातु तद्बीजं भ्रूमध्ये तारबीजकम्। हस्तिवक्त्रश्च शिरसि लम्बोदरो ललाटके ॥ १७ ॥ उच्छिष्टो नेत्रयोः पातु कर्णौ पातु महात्मने। पाशांकुशमहाबीजं नासिकायां च रक्षतु ॥ १८ ॥ भूतीश्वरः परः पातु आस्यं जिह्वा स्वयंवपुः। तद्बीजं पातु मां नित्यं ग्रीवायां कण्ठदेशके ॥१९॥ गं बीजं च तथा रक्षेत्तथा त्वग्रे च पृष्ठके। सर्वकामश्च हृत् पातु पातु मां च करद्वये ॥ २० ॥ उच्छिष्टाय च हृदये वह्निबीजं तथोदरे। मायाबीजं तथा कट्यां द्वौ ऊरू सिद्धिदायकः ॥ २१ ॥ जङ्घायां गणनाथश्च पादौ पातु विनायकः। शिरसिः पादपर्यन्तमुच्छिष्टगणनायकः ॥ २२ ॥ आपादमस्तकान्तं च उमापुत्रश्च पातु माम्। दिशोष्टौ च तथाकाशे पाताले विदिशाष्टके ॥ २३ ॥ अहर्निशं च मां पातु मदचञ्चललोचनः।

जलेऽनले च संग्रामे दुष्टकारागृहे वने ॥ २४ ॥ राजद्वारे घोरपथे पातु मां गणनायकः । इद तु कवचं गुह्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम ॥ २५ ॥ त्रैलोक्ये सततं पातु द्विभुजश्च चतुर्भुजः । बाह्यमभ्यन्तरं पातु सिद्धिबुद्धिविनायकः ॥ २६ ॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवि कवचमृद्धिसिद्धिदम् । एकान्ते प्रजपेन्मन्त्रं कवचं युक्तिसंयुतम् ॥ २७ ॥ इदं रहस्यं कवचमुच्छिष्टगणनायकम् । सर्ववर्मसु देवेशि इदं कवचनायकम् ॥ २८ ॥ एतत् कवचमाहात्म्यं वर्णितुं नैव शक्यते । धर्मार्थकाममोक्षं च नानाफलप्रदं नृणाम् ॥ २९ ॥ शिवपुत्रः सदा पातु पातु मां सुरार्चित । गजाननः सदा पातु गणराजश्च पातु माम् ॥ ३० ॥ सदा शक्तिरतः पातु पातु मां कामविह्वलः । सर्वाभरणभूषाढ्यः पातु मां सिन्दूरार्चितः ॥ ३१ ॥ पञ्चमोदकरः पातु पातु मां पार्वतीसुतः । पाशांकुशधरः पातु पातु मां च धनेश्वरः ॥ ३२ ॥ गदाधरः सदा पातु पातु मां काममोहितः । नग्ननारीरतः पातु पातु मां च गणेश्वरः ॥ ३३ ॥ अक्षयं वरदः पातु शक्तियुक्तः सदावतु । भालचन्द्रः सदा पातु नानारत्नविभूषितः ॥ ३४ ॥ उच्छिष्टगणनाथश्च मदाघूर्णितलोचनः । नारीयोनिरसास्वादं पातु मां गजकर्णकः ॥ ३५ ॥ प्रसन्नवदनः पातु पातु मां भगवल्लभः । जटाधरः सदा पातु पातु मां च कोरीटिकः ॥ ३६ ॥ पद्मासनस्थितः पातु रक्तवर्णश्च पातु माम् । नग्नसामपदोन्मत्तः पातु मां गणदैवतः ॥ ३७ ॥ वामाङ्गे सुन्दरीयुक्तः पातु मां मन्मथप्रभुः । क्षेत्रपः पिशितं पातु पातु मां श्रुतिपाठकः ॥ ३८ ॥ भूषणाढ्यस्तु मां पातु नानाभोगसमन्वितः । स्मिताननः सदा पातु श्रीगणेशकुलान्वितः ॥ ३९ ॥ श्रीरक्तचन्दनमयः सुलक्षणगणेश्वरः । श्वेतार्कगणनाथश्च हरिद्रागणनायकः ॥४०॥ पारभद्रगणेशश्च पातुसप्तगणेश्वरः । प्रवालकगणाध्यक्षो गजदंता गणेश्वरः ॥४१॥ हरबीजगणेशश्च भद्राक्षगणनायकः । दिव्यौषधिसमुद्भूतो गणेशश्चिन्तितप्रदः ॥ ४२ ॥ लवणस्य गणाध्यक्षो मृत्तिकागणनायक । तण्डुलाक्षगणाध्यक्षो गोमयश्च गणेश्वरः ॥ ४३ ॥ स्फटिकाक्षगणाध्यक्षो रुद्राक्षगणदैवतः । नवरत्नगणेशश्च आदिदेवो गणेश्वरः ॥४४॥ पञ्चाननश्चतुर्वक्त्रः षडानन गणेश्वरः । मयूरवाहनःपातु पातु मां मूषकासनः ॥ ४५ ॥ पातु मां देवदेवेशः पातु मामृषिपूजितः । पातु मां सर्वदा देवो देवदानवपूजितः ॥४६॥ त्रैलोक्यपूजितो देवः पातु मां च विभुः प्रभुः । रङ्गस्थं च सदा पातु सागरस्थं सदाऽवतु ॥४७॥ भूमिस्थं च सदा पातु पातालस्थं च पातु माम् । अन्तरिक्षे सदा पातु आकाशस्थं सदावतु ॥४८॥ चतुष्पथे सदा पातु त्रिपथस्थं च पातु माम् । बिल्वस्थं च वनस्थं

च पातु मां सर्वतस्तनम् ॥ ४९ ॥ राजद्वारस्थितं पातु पातु मां शीघ्रसिद्धिदः । भवानीपूजितः पातु ब्रह्मविष्णुशिवार्चितः ॥ ५० ॥

इदं तु कवचं देवि पठनात्सर्वसिद्धिदम् । उच्छिष्टगणनाथस्य समन्त्रं कवचं परम् ॥ ५१ ॥ स्मरणाद्भूभुजत्वं च लभते साङ्गतां ध्रुवम् । वाचः सिद्धिकरं शीघ्रं परसैन्यविदारणम् ॥ ५२ ॥ प्रातर्मध्याह्नसायाह्ने दिवा रात्रौ पठेन्नरः । चतुर्थ्यां दिवसे रात्रौ पूजने मानदायकम् ॥ ५३ ॥ सर्वसौभाग्यदं शीघ्रं दारिद्र्यार्णवघातकम् । सुदारसुप्रजासौख्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥५४॥ जलेथवानलेरण्ये सिन्धुतीरे सरित्तटे । श्मशाने दूरदेशे च रणे पर्वतगह्वरे ॥ ५५ ॥ राजद्वारे भये घोरे निर्भयो जायते ध्रुवम् । सागरे च महाशीते दुर्भिक्षे दुष्टसङ्कटे ॥ ५६ ॥ भूतप्रेतपिशाचादियक्षराक्षसजे भये । राक्षसीयक्षिणीक्रूराशाकिनीडाकिनीगणाः ॥ ५७ ॥ राजमृत्युहरं देवि कवचं कामधेनुवत् ।

हे देवि ! यह उच्छिष्ट गणनाथ का कवच पठनमात्र से सब सिद्धियों को देनेवाला है । इसके स्मरण से मनुष्य समस्त अङ्गों सहित राज्य प्राप्त करता है । यह शीघ्र वाणी की सिद्धि देनेवाला तथा शत्रुओं की सेना को विदीर्ण करनेवाला है । प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल, दिन में या रात्रि में मनुष्य को इसे पढ़ना चाहिये । चतुर्थी तिथि को रात में पूजन करने से सम्मान की प्राप्ति होती है । यह शीघ्र समस्त सौभाग्यों को देनेवाला तथा दारिद्र्यरूपी समुद्र का घातक है । यह मनुष्यों को उत्तम पत्नी, उत्तम सन्तान, सुख और हर प्रकार की सिद्धि देनेवाला कवच है । इस कवच से मनुष्य जल में, स्थल में, अग्नि में, जङ्गल में, समुद्रतट पर, नदीतट पर, श्मशान में, दूर देश में, रण में, पर्वत की गुफा में, राजद्वार पर, और घोर भय में निश्चित रूप से निर्भय रहता है । महाशीत में, समुद्र में, दुर्भिक्ष में, दुष्ट संकट में, भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष तथा राक्षस से उत्पन्न भय में, राक्षसी, यक्षिणी क्रूर शाकिनियों तथा डाकिनियों के दल में यह कवच राजमृत्यु का हरण करनेवाला है । हे देवि ! यह कवच कामधेनु के समान है ।

अनन्तफलदं देवि सति मोक्षं च पार्वति ॥ ५८ ॥ कवचेन विना मन्त्रं यो जपेद्गणनायकम् । इह जन्मनि पापिष्ठो जन्मान्ते मूषको भवेत् ॥ ५९ ॥ इति परमरहस्यं देवदेवार्चनं च कवचपरमदिव्यं पार्वती पुत्ररूपम् । पठित परमभोगैश्वर्यमोक्षप्रदं च लभति सकलसौख्यं शक्ति-

पुत्रप्रसादात् ॥ ६० ॥ इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे उमामहेश्वर सम्वादे उच्छिष्टगणेशकवचं समाप्तम् । शुभमस्तु ।

हे पार्वति देवि, यह कवच अनन्त फल तथा मोक्ष देनेवाला है । जो मनुष्य कवच के बिना मन्त्र या गणेश का जप करता है वह इस जन्म में पापिष्ठ होता है तथा अन्य जन्म में मूषक होता है । यह परम रहस्य देवों के देव का अर्चन, परम दिव्य पार्वती पुत्र के समान पुत्र रूप, परम सौभाग्य-प्रद, ऐश्वर्य और मोक्ष को देनेवाला है । इस कवच को जो पढ़ता है वह शक्ति के पुत्र गणेशजी के प्रसाद से समस्त सुखों को प्राप्त कर लेता है ।

श्रीरुद्रयामल तन्त्र के उमा-महेश्वर संवाद में उच्छिष्ट गणेश कवच समाप्त ।

अथोच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रम् ।

उक्तं च रुद्रयामलतन्त्रे । श्री भैरव उवाच । शृणु देवि रहस्यं मे यत्पुरा सूचितं मया । तव भक्त्या गणेशस्य वक्ष्ये नामसहस्रकम् ॥ १ ॥

उच्छिष्ट गणेश सहस्रनाम स्तोत्र : रुद्रयामल तन्त्र में लिखा है : भैरव बोले : हे देवि ! मेरे इस रहस्य को सुनो जिसे मैंने पहले तुम्हें बताया था । तुम्हारी भक्ति के कारण मैं तुम्हें उच्छिष्ट गणेश का सहस्रनाम बता रहा हूं ।

देव्युवाच । ॐ भगवन्गणनाथस्य उच्छिष्टस्य महात्मनः श्रोतुं नाम-सहस्रं मे हृदयञ्चोत्सुकायते ॥ २ ॥

देवी बोली : हे भगवन्, गणनाथ ! उच्छिष्ट महात्मा गणेश के सहस्र नाम को सुनने के लिये मेरा मन अत्यन्त उत्सुक हो रहा है ।

भैरव उवाच । प्राङ्मुखे त्रिपुरानाथे जातविघ्नाकुलेशिवे । मोहने मुच्यते चेतस्ते सर्वे बलदर्पिताः ॥ ३ ॥ तदा प्रभुं गणाध्यक्षं स्तुत्वा नामसहस्रम् । विघ्ना दूरात्पलायन्ते कालरुद्रादिव प्रजाः ॥ ४ ॥ तस्यानु-ग्रहतो देवि जातोहं त्रिपुरान्तकः । तमद्यापि गणेशानं स्तोत्रं नामसहस्रकैः ॥ ५ ॥ तमेव तव भक्त्याहं साधकानां हिताय च । महागणपतेर्वक्ष्ये दिव्यं नामसहस्रकम् ॥ ६ ॥

भैरव बोले : हे पार्वती ! जब राक्षसराज त्रिपुराधिपति ने पूर्वाभिमुख हो मुझे विघ्नों से व्याकुल कर दिया और मोहन के कारण मेरा मन टूट गया और उधर वे सब राक्षस बल के घमण्ड में चूर हो गये तब मैंने प्रभु गणेश के सहस्रनाम का स्मरण किया जिससे सभी विघ्न उसी प्रकार दूर भाग गये जैसे कालरुद्र के भय से प्रजाजन भाग जाते हैं । उन्हीं की कृपा से, हे देवि ! मैं त्रिपुरान्तक हुआ हूं । अब मैं गणेश के दिव्य सहस्रनाम को तुम्हें तुम्हारी भक्ति के कारण और साधकों के हितार्थ बता रहा हूं ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्री भैरव ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीमहागणपतिर्देवता । गं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । कुरुकुरु कीलकम् । मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीगणाध्यक्षो ग्लौं गं गणपतिर्गुणी । गुणाढ्यो निर्गुणो गोप्ता गजवक्त्रो विभावसुः ॥ ७ ॥ विश्वेश्वरो विभादीप्तो दीपनो धीवरो धनी । सदा शान्तो जगत्त्राताविश्वावर्तो विभाकरः ॥ ८ ॥ विश्वम्भी विजयो वैद्यो वारान्निधिरनुत्तमः । अणिमाविभवः श्रेष्ठो ज्येष्ठो गाथा-प्रियो गुरुः ॥ ९ ॥ सृष्टिकर्ता जगद्धर्ता विश्वभर्ता जगन्निधिः । पतिः पीतविभूषाङ्गो रक्तास्यो लोहिताम्बरः ॥ १० ॥ द्विपाक्षोच्चविमानस्थो विनयः सदयः सुखी । सुरूपः सात्त्विकः सत्यः शुद्धशङ्करनन्दनः ॥ ११ ॥ नन्दीश्वरो जयानन्दी बन्धस्तुत्यो विचक्षणः । दैत्यमर्द्दी सदाक्षीबो मदिरारुणलोचनः ॥ १२ ॥ सारात्मा विश्वसारश्च विश्वसारो विलेपनः । परं ब्रह्म परं ज्योतिः साक्षी त्र्यक्षो विकस्थितः ॥ १३ ॥ विश्वेश्वरो वीरहर्ता सौभाग्यो भाग्यवर्द्धनः । भृङ्गीरिटी भृङ्गमाली भृङ्गकूजित-नादितः ॥ १४ ॥ बिवर्तको विनीतोपि नयनानन्दनार्चितः । गङ्गाजल-पानप्रियो गङ्गातीरविहारिणः ॥ १५ ॥ गङ्गाप्रियो गङ्गजश्च वाहनानि पुरः सदा । गन्धमादनसंवासो गन्धमादनकेलिकृत् ॥ १६ ॥ गन्धानु-लिप्तपूर्वाङ्गः सर्वदेवस्मरः सदा । गणगन्धर्वं राजेशो गणगन्धर्व-सेवितः ॥ १७ ॥ गन्धर्वपूजितो नित्यं सर्वरोगविनाशकः गन्धर्वगण-संसेव्यो गन्धर्ववरदायकः ॥१८॥ गन्धर्वो गन्धमातङ्गो गन्धर्वकुलदैवतः । गन्धर्वगर्वसंवेगो गन्धर्ववरदायकः ॥ १९ ॥ गन्धर्व प्रबलासर्वं गन्धर्वगण-संयुतः । गन्धर्वादिगुणानन्दो नन्दोनन्तगुणात्मकः ॥२०॥ विश्वमूर्तिविश्व-धाता विनतास्यो विनर्तकः । करालः कामदः कान्तः कामनीयः कला-निधिः ॥२१॥ कारुण्यरूपः कुटिलः कुलाचारीः कुलेश्वरः । विकरालो रणः श्रेष्ठः संहारो हारभूषणः ॥२२॥ ऊरूरम्यमुखो रक्तो देवतादयितो रसः । महाकालो महादंष्ट्रो महोरगभयानकः ॥ २३ ॥ ॥ उन्मत्तरूपः कालाग्नि-रग्निसूर्येन्दुलोचनः । सितास्यश्चासितात्मा भैरवसौभाग्यवान्भगः ॥ २४ ॥ भर्गात्मजो भगावासो भगदो भगवर्द्धनः । शुभङ्करः शुचिः शान्तः श्रेष्ठः श्रव्यः शचीपतिः ॥ २५ ॥ वेदाद्यो वेदकर्ता च वेदवेद्यः सनातनः । विद्याप्रदो वेदरसो वैदिका वेदपारगः ॥ २६ ॥ वेदध्वनिरतो वीरो वेदवेदाङ्गस्वर्थवित् । तत्त्वज्ञः सर्वगः साधुः सदयः सदसन्मयः ॥ २७ ॥ शिवङ्करः शिवसुतः शिवानन्दविवर्द्धनः । सैन्यः श्वेतः शतमुखो मुग्धो

मोदकभञ्जनः ॥ २८ ॥ देवदेवो दिनकरो धृतिमान्द्युतिमान्धनः । शुद्धात्मा शुद्धमतिमाञ् शुद्धदीप्तिः शुचिव्रतः ॥ २९ ॥ शरण्यः शौनकः शूरः शब्ददम्भीजटोरुकः । दारकः शिखिवाहेष्टः सितः शङ्करवल्लभः ॥ ३० ॥ शङ्करो निर्भयो नित्यो लयकृल्लास्यतत्परः । लूतो लीलारसोल्लासी विलासी विभ्रमो भ्रमः ॥ ३१ ॥ भ्रमणः शशिभृत्सूर्यं शनिर्धरणिनन्दनः । बुधो विबुधसेव्यश्च बुधराजो बलन्धरः ॥ ३२ ॥ जीवो जीवप्रदो जेता स्तुत्यो नित्यो रतिप्रियः । बुधो विबुधसेव्यश्च जनरक्षणतत्परः ॥ ३३ ॥ जनानन्द प्रदाता च जनकाह्लादकारकः । गच्छो गणपतिर्गच्छनायको गच्छगर्वहा ॥३४॥ गच्छराजोथ गच्छेशो गच्छराजनमस्कृतः । गच्छप्रियो गच्छगुरुर्गच्छत्राकृधमातुरः ॥ ३५ ॥ गच्छप्रभुर्गच्छचरो गच्छप्रियकृतोद्यमः । गच्छगीतगुणो गर्तो मर्यादाप्रतिपालकः ॥ ३६ ॥ गीर्वाणागमसारस्य नभो गीर्वाणदेवता । सम्पत्तिसदनाकारः सम्पत्तिसुखदायक ॥ ३७ ॥ सम्पत्तिसुखकर्ता च सम्पत्तिसुभगाननः । सम्पत्तिशुभदो नित्यं सम्पत्तिश्चतपोधनः ॥ ३८ ॥ रुचको मेचकस्तुष्टः प्रभुस्तोमरघातकः । दण्डी चण्डांशुरव्यक्तः कमण्डलुधरोऽनघः ॥ ३९ ॥ कामी कर्मरतः कालकोलः क्रन्दितदिक्तटः । भ्रामको जातिपूज्यश्च जाड्यहा जडसूदनः ॥ ४० ॥ जालन्धरो जगद्वासी हासकृद्गहनो गुहः । हविष्मान्हव्यवाहाक्षो हाटको हाटकाङ्गदः ॥ ४१ ॥ सुमेरुर्हिमवान्होता हरपुत्रो हलाङ्कपः । हालाप्रियो हृदा शान्तः कान्ताहृदयपोषणः ॥ ४२ ॥ शोषणः क्लेशहा क्रूरः कुबेरः कविताकृतिः । कुबेरो धीमयो धीता ध्येयो धीमान्दयानिधिः ॥ ४३ ॥ दविष्ठो दमनो हृष्टो दाता त्राता सिता समः । निर्गतो नैगमो गम्यो निर्जयो जटिलोऽजरः ॥ ४४ ॥ जनजीवो जितारातिर्जगद्व्यापी जगन्मयः । चामीकरनिभो नाभ्यो नलिनायतलोचनः ॥ ४५ ॥ रोचनामोचका मन्त्री मन्त्रकोटिसमाश्रितः । पञ्चभूतात्मकः पञ्चसायकः पञ्चवक्त्रकः ॥ ४६ ॥ पञ्चमः पश्चिमः पूर्वः पूर्णः कीर्णालकः कुणिः । कठोरहृदयग्रीवोलंकृतो ललिताशयः ॥ ४७ ॥ लोलचित्तो वृहन्नासो मासपक्षर्तुरूपवान् । ध्रुवो द्रुतगतिर्बन्धो धर्मवान्किप्रियोनलः ॥ ४८ ॥ अगस्त्यग्रस्तभुवनो भुवनैकमलापहः । सासरः स्वर्गतिः स्वक्षः सानन्दः साधुपूजितः ॥ ४९ ॥ सतीपतिः समरसः सनकः सरलः सरः । सुरप्रियो वसुमतिर्वासवो वसुपूजितः ॥ ५० ॥ वित्तदो वित्तनाथश्च धनिनां धनदायकः । राजीवनयनः स्मार्तास्मृतिहा कृत्तिकाम्बरः ॥ ५१ ॥ अश्विनोश्विमुखः शुभ्रो भरणो भरणीप्रियः । कृत्तिकासनकः कोलो रोहिणी रोहिणोपमः ॥ ५२ ॥ ऋतवोष्टोरिमन्दी च रोहिणीमोहिनीभृतः । मृगराजोः मृगशिरो माधवो मधुरध्वनिः ॥५३॥ आर्द्रानलोमहाबुद्धिर्महोरगविभूषणः । भ्रूक्षेपदन्तविभवो भ्रूकरालः पुनर्मयः ॥ ५४ ॥ पुनर्देवः पुनर्जेता पुनर्जीवः पुनर्वसुः । तिमिरस्तिमिकेतुश्च तिमिवासरघातनः ॥ ५५ ॥ तिष्यस्तुलाधरो जृम्भो विश्लेषाश्लेषदानराट । मानवी माधवो माधो वाचालो मघवोयमः ॥ ५६ ॥ मघो माघप्रिये मेघो महाशुण्डो महाभुजः । पूर्वाफाल्गुणिकः प्रीतः फल्गुरुत्तरफाल्गुनः ॥ ५७ ॥ फेनिलो ब्रह्मदो ब्रह्मा सप्ततन्तुसमाश्रयः । घोणाहस्तश्चतुर्हस्तो हस्तिवक्त्रो हलायुधः ॥ ५८ ॥ चित्राम्बरोर्चितपदः स्वस्तिदः स्वस्तिविग्रहः । विशाखाशिखिसेव्यश्च शिखिध्वजसहोदरः ॥ ५९ ॥ अणूरेणूकरस्कारो रूरूरेणू सुतीनरः । अनुराधाप्रियो राध श्रीमाञ्छुक्लः शुचिस्मितः ॥ ६० ॥ ज्येष्ठः श्रेष्ठार्चितपदो मूलं त्रिजगतो गुरुः । शुचिः पूर्वोत्तराषाढश्चोत्तराषाढ ईश्वरः ॥ ६१ ॥ श्रव्योभिजिदनन्तात्मा श्रवोश्चेपितदानवः । श्रावणः श्रावणः श्रोता धनी धान्यो धनिसृकः ॥ ६२ ॥ धनेशुकः सदा तीव्रः शोतकुम्भः शरद्द्युतिः । पूर्वाभाद्रपदाभद्रश्चोत्तराभाद्रपादितः ॥ ६३ ॥ रेणुकस्तनयो रामो रेवती रमणी रमी । अश्वयुक्कार्तिकेयेष्टो मार्गशीर्षो मृगोत्तमः ॥ ६४ ॥ पौषैश्वर्यः फाल्गुनात्मा वसन्तश्चित्रको मधुः । राज्यदोभिजिदात्मीयस्तारेशस्तारकद्युतिः ॥ ६५ ॥ प्रतीतः प्रोजितः प्रीतः परमः परमो हितः । परहा पञ्चभूः पञ्चवायुपूज्यः परो महः ॥ ६६ ॥ पुराणागमविद्योगी महिषो रासभोग्रगः । ग्रहो मेषो वृषो मन्दो मन्मथो मिथुनाकृतिः ॥ ६७ ॥ कल्पभूत्कण्टकटको दीपो मर्कटशप्रभुः । कर्कटो घृणिकुक्कटो वनजो हंसयोहसः ॥ ६८ ॥ सिंहसिंहासनो भूष्यो मुहुर्मूषकवाहनः । कन्याकलावतीपुत्रो कन्याप्रीतः कुलोद्वहः ॥ ६९ ॥ अतुल्यरूपोबलदस्तुल्यभृत्तुल्यसाक्षिकः । अलिश्चापधरो धन्वी कच्छगो मकरो मणिः ॥ ७० ॥ कुम्भभृत्कलशः कुब्जी मीन मांससुतर्पितः । राशितारामग्रहमयस्तिथिरूपो जगद्विभुः ॥ ७१ ॥ प्रतापी प्रतिपत्प्रेयो द्वितीयाद्वैतनिश्चितः । त्रिरूपश्च तृतीयाग्निस्त्रयीरूपस्त्रयीतनुः ॥ ७२ ॥ चतुर्थीवल्लभो देवो परागः पञ्चमीश्वरः । षड्रसास्वादको जातः षष्ठी षष्ठाकवत्सलः ॥७३॥ सप्तार्णव गतिः सारः सत्यमीश्वररोहितः । अष्टमानन्दनोनन्तो नवमीभक्ति-

भावित: ॥ ७४ ॥ दशदिक्पतिपूज्यश्च दशमीद्रुहिणो द्रुत: । एकादशात्म-
गणपो द्वादशीयुगर्चर्चित: ॥ ७५ ॥ त्रयोदशमणिस्तुत्यश्चतुर्दशस्वरप्रिय: ।
चतुर्दशेन्द्रसंस्तुल्य: पूर्णिमानन्दविग्रह: ॥ ७६ ॥ दर्शादर्शो दर्शगश्च
वानप्रस्थो महेश्वर: । मौर्वी मधुरवाग् मूलं मूर्तिमान्मेघवाहन: ॥ ७७ ॥
महागजो जितक्रोधो जितशत्रुर्जयाश्रय: । रौद्री रुद्रप्रियो रुद्रो रुद्रपुत्रो-
घनाशन: ॥ ७८ ॥ भवप्रियो भवानीष्टो भारभृद्भूतभावन: । गन्धर्व-
कुशल: कुण्ठो वैकुण्ठोऽविष्टसेवित: ॥ ७९ ॥ वृत्रहा विघ्नहा सीर:
समस्तदु:खतापह: । मञ्जुरो मार्जरो मत्तो दुर्गापुत्रो दुरालस: ॥ ८० ॥
अनन्तचित्सुधाधारो वीरवीर्यैकसाधक: । भास्वन्मुकुटमाणिक्य: कूजत्कि-
ङ्किणिजालक: ॥ ८१ ॥ शुण्डाधारी तुण्डचल: कुण्डली मुण्डमालक: ।
पद्माक्ष: पद्महस्तश्च पद्मनाभसमर्चित: ॥८२॥ उदितानरदन्तास्यो माला-
भूषणभूषित: । नारदो वारणो लोलश्रवण: शूर्पकर्णक: ॥ ८३ ॥ बृह-
दुल्लासनासाढ्यो व्याप्त त्रैलोक्यमण्डल: । रत्नमण्डलआसीन:कृशानुरूप-
शीलक: ॥ ८४ ॥ बृहत्कर्णाञ्चलोद्भूतवायुवीजितदिक्पट: । बृहदास्यरवा-
क्रान्तो: भीमब्रह्माण्ड भाण्डक: ॥ ८५ ॥ बृहत्पादसमाक्रान्त: सप्तपाताल-
दीपित: । बृहद्दन्तकृतात्युग्ररणानन्दरसालस: ॥ ८६ ॥ बृहद्धस्तधृताशेषा-
युधनिर्जितदानव: । स्फुरत्सिन्दूरवदन: स्फुरत्तेजोग्निलोचन: ॥ ८७ ॥
उद्दीपितमणिस्फूर्जन्नूपुरध्वनिनादित: । चलतोयप्रवाहाढ्यो नदीजल-
कणाकर: ॥ ८८ ॥ भ्रमत्कुञ्जरसंघातवन्दितांघ्रिशिरोरुह: । ब्रह्माच्युत-
महारुद्रपुर:सरसुरार्चित: ॥ ८९ ॥ अशेषशेषप्रभृतिव्यालजालोपसेवित: ।
गर्जत्पञ्चाननारावप्रसादितधरातल: ॥ ९० ॥ हाहाहूहूगतात्युग्रस्वर-
विभ्रान्तमानस: । पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यो मन्त्री मन्त्रितविग्रह: ॥ ९१ ॥
वेदान्तशास्त्रपीयूषधाराप्लावितभूतल: । शङ्खध्वनिसमाक्रान्तपाता-
लादिनभस्तल: ॥ ९२ ॥ चिन्तामणिर्महामल्लो बल्लहस्तो बलि: कवि: ।
कृतत्रेतायुगोल्लासभासमानजगत्त्रय: ॥ ९३ ॥ द्वापर: परलोकैक: कर्म-
ध्वान्तसुधाकर: । सुधासिक्तवपुर्व्यासो ब्रह्माण्डादिकबाहुक: ॥ ९४ ॥
अकारादिक्षकारान्तवर्णपंक्तिसमुज्ज्वल: । अकाराकारमोद्गीततताननाद-
निनादित: ॥ ९५ ॥ इकारे कारमन्त्राढ्यो मालाभरणलालस: । उकारो-
कारमोहारिर्घोरनागोपवीतक: ॥ ९६ ॥ ऋवर्णाङ्कित ऋङ्काद्वपद्मरयस-
मुज्ज्वल: । लृकारयुतलृकारशङ्खपूर्णदिगन्तर: ॥ ९७ ॥ एकारैकार-
गिरिजास्तनपानविचक्षण: । ओ कारौकारविश्वादिकृतसृष्टिक्रमालस:
॥९८॥अंओ वर्णावलीव्याप्तपादादिशीर्षमण्डल: । कर्णतालकृतात्युच्चैर्वायु-

वीजितनिर्जर: ॥९९॥ खगेशध्वजरत्नाङ्क: किरीटारुणपादक: । गर्विता-
शेषगन्धर्व्वगीततत्परश्रोत्रक: ॥ १०० ॥ घनवाहनवागीशपुर:सरसुरा-
र्चिता: । ङवर्णामृतधाराढ्यसोममानैकदन्तक: ॥ १०१ ॥ चन्द्रकुंकुम-
जम्बाललिप्तसिन्दूरविग्रह: । छत्रचामररत्नाढ्यमुकुटालंकृतानन: ॥ १०२ ॥
जटाबद्धमहानर्घमणिपंक्तिविराजित: । झङ्कारिमधुपव्रातगाननादविना-
दित: ॥१०३॥ जवर्णकृतसंहारदैत्यासृक्पर्णमुद्गर: । टकारश्च फलास्वादी
वेपिताशेषमूर्धज: ॥ १०४ ॥ ताम्रसिन्दूरपूजाढ्यो ललाटफलकच्छवि: ।
थकारधनपंक्त्याढ्य: सन्तोषितद्विजव्रज: ॥ १०५ ॥ दयामृतहृदम्भोज-
धृतत्रैलोक्यमण्डल: । धनदादिमहायक्षसंसेवितपदाम्बुज: ॥ १०६ ॥
नमिताशेषदेवौघकिरीटमणिरञ्जित: । परवर्गापवर्गादिभोगच्छेदनदक्षक:
॥ १०७ ॥ फणिचक्रसमाक्रान्तमल्लमण्डलमण्डित: । बद्धभ्रूयुगभीमोग्र-
सन्तर्जितसुरासुर: ॥१०८॥ भवानीहृदयानन्दवर्द्धनैकनिशाकर: । मदिरा
कलशप्रीत: करालैककराम्बुज: ॥१०९॥ यज्ञान्तरायसंघातसज्जीकृतवरा-
युध: । रत्नाकरसुताक्रान्तकान्तिकीर्तिविवर्धन: ॥ ११० ॥ लम्बोदरमहा-
भीमवपुर्दीप्तकृतासुर: । वरुणादिदिगीशानामर्चितार्चनर्चित: ॥ १११ ॥
शङ्करैकप्रिय: प्रेमनयनानन्दवर्द्धन: । षोडशस्वरतालापगीतगानविचक्षण:
॥ ११२ ॥ समदुर्गसरिन्नाथस्तारणार्कोडुपोहर: । ब्रह्मवैकुण्ठब्रह्मज्ञसंरक्षित-
तनूचर: ॥ ११३ ॥ ताराङ्कमन्त्रवर्णैकविग्रहोज्ज्वलविग्रह: । अकारादिक्ष-
कारान्तविद्याभूषितविग्रह: ॥११४॥ ॐ श्रीविनायको ॐ ह्रीं विघ्नाध्यक्षो
गणाधिप: । हेरम्बो मोदकाहारो वक्रतुण्डो विधि: स्मृत: ॥ ११५ ॥
वेदान्तगीतो विद्यार्थिसिद्धमन्त्र: षडक्षर: । गणेशो वरदो देवो द्वादशाक्षर
मन्त्रित: ॥ ११६ ॥ सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रिताशेषविग्रह: । गाङ्गेयो
गणसेव्यश्च ॐ श्रीद्वैमातुर: शिव: ॥ ११७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं
देवो महागणपति: प्रभु: ।

इदं नामसहस्रं ते महागणपते: स्मृतम् ॥ ११८ ॥ गुह्यं गोप्यतमं
सिद्धं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् । सर्वमन्त्रमयं दिव्यं सर्वमन्त्रविनायकम्
॥ ११९ ॥ ग्रहतारामयं राशिवर्णपंक्तिसमन्वितम् । सर्वविद्यामयं ब्रह्म-
साधनं साधकप्रियम् ॥ १२० ॥ गणेशस्य च सर्वस्वं रहस्यं त्रिदिवौ-
कसाम् । यथेष्टफलदं लोके मनोरथप्रपूरणम् ॥ १२१ ॥ अष्टसिद्धिमयं
श्रेष्ठं साधकानां जयप्रदम् । विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना
जपम् ॥ १२२ ॥ अणिमाद्यष्टसिद्धीनां साधनं स्मृतिमात्रत: । चतुर्थ्यामर्ध-
रात्रे तु पठेन्मन्त्री चतुष्पथे ॥ १२३ ॥ लिखेद् भूर्जे महादेवि पुण्यं नाम-

सहस्रकम् । धारयेत्तं चतुर्दश्यां मध्याह्ने मूर्ध्नि वा भुजे ॥ १२४ ॥ योषिद्वामकरे चैव पुरुषो दक्षिणे भुजे । स्तम्भयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शङ्करम् ॥१२५॥ वशयेदपि त्रैलोक्यं मारयेदखिलान्रिपून् । उच्चाटयेच्च गीर्वाणं शमयेच्च धनञ्जयम् ॥ १२६ ॥ वन्ध्या पुत्रं लभेच्छीघ्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् । त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ गणेशस्य पुरः शिवे ॥ १२७ ॥ नक्तं शक्तियुतो देवि भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् । प्रत्यक्षवरदं पश्येद्गणेशं साधकोत्तमः ॥ १२८ ॥ पराह्णे पठ्यते नाम्नां सहस्रं भक्तिपूर्वकम् । तस्य वित्तादिविभवो दारायुःसम्पदः सदा ॥ १२९ ॥ रणे राजभये द्यूते पठेन्नामसहस्रकम् । सर्वत्र जयमाप्नोति गणेशस्य प्रसादतः ॥ १३० ॥ इतीदं पुण्यसर्वस्वं मन्त्रनामसहस्रकम् । महागणपतेः पुण्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे उच्छिष्टगणेशसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

यह गणेशजी का सहस्रनाम स्तोत्र कहा गया है। यह गुह्य से भी गुह्यतम है और सभी तन्त्रों में गुप्त रक्खा गया है। सर्वमन्त्रमय, दिव्य और सर्वमन्त्र विनायक है। यह ग्रहतारामय, राशि, वर्ण तथा पंक्ति से समन्वित है। यह सर्वविद्यामय ब्रह्मसाधन, साधकों को प्रिय, गणेश का सर्वस्व, देवताओं के लिये रहस्य, यथेष्ट फल देनेवाला और लोक में मनोवाञ्छित फल देनेवाला है। यह स्तोत्र अष्टसिद्धिमय, श्रेष्ठ तथा साधकों को जयप्रद है। बिना पूजा, अर्चना, बिना होम, बिना न्यास और जप, यह स्मृतिमात्र से अणिमादि अष्टसिद्धियों को देनेवाला साधन है। चतुर्थी तिथि को, हे देवि, मध्य रात्रि में साधक चौराहे पर इसे पढ़े, भोजपत्र पर इस पुण्य सहस्रनाम को लिखे और उसे चतुर्दशी को मध्याह्न में सर पर या हाथ में धारण करे। स्त्री बांये हाथ में, पुरुष दाहिने हाथ में इसे धारण करे तो यह ब्रह्मा को भी स्तम्भित और शङ्कर को भी मोहित कर देता है। साधक तीनों लोकों को भी वश में कर लेता है, समस्त शत्रुओं को मार डालता है और देवताओं का भी उच्चाटन कर देता है। इससे वन्ध्या स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है और निर्धन धनवान हो जाता है। हे शिवे ! जो उत्तम साधक रात्रि में गणेश के सामने तीन बार इसका पाठ करता है वह रात को शक्ति युक्त होकर यथेष्ट भोगों को भोग कर हे देवि ! वर देनेवाले गणेश को प्रत्यक्ष देखता है। अपराह्न में जो मनुष्य भक्तिपूर्वक सहस्रनाम का पाठ करता है उसको धन-सम्पत्ति आदि वैभव, पत्नी तथा आयु सदा प्राप्त होती है। युद्धस्थल में, राजभय में, द्यूत में, इस सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करने से गणेशजी के प्रसाद से सर्वत्र जय प्राप्त

होती है। यह महागणपति का सर्वस्व पुण्यप्रद सहस्रनाम मन्त्र है। इसे अपनी योनि के समान गुप्त रखना चाहिये।

श्रीरुद्रयामल तन्त्रोक्त उच्छिष्ट गणेश सहस्रनाम स्तोत्र समाप्त ।

अथोच्छिष्टगणेशस्तवराजप्रारम्भः ।

उक्तं च रुद्रयामले । देव्युवाच । पूजान्ते ह्यनया स्तुत्या स्तुवीत गणनायकम् ।

उच्छिष्ट गणेश स्तवराज : रुद्रयामल में कहा गया है : देवी बोली : पूजा के बाद इस स्तुति से गणेशजी का स्तवन करना चाहिये ।

नमामि देवं सकलार्थदं तं सुवर्णवर्णं भुजगोपवीतम् । गजाननं भास्करमेकदन्तं लम्बोदरं वारिभवासनं च ॥ १ ॥ केयूरिणं हारकिरीटजुष्टं चतुर्भुजं पाशवराभयानि । सृणिं च हस्तं गणपं त्रिनेत्रं सचामरस्त्रीयुगलेन युक्तम् ॥ २ ॥ षडक्षरात्मानमनल्पभूषं मुनीश्वरैर्भार्गवपूर्वकैश्च । संसेवितं देवमनाथकल्पं रूपं मनोज्ञं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥ वेदान्तवेद्यं जगतामधीशं देवादिवन्द्यं सुकृतैकगम्यम् । स्तम्बेरमास्यं न च चन्द्रचूडं विनायकं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥ भवाख्यदावानलदह्यमानं भक्तं स्वकीयं परिषिञ्चते यः । गण्डस्रुताम्भोभिरनन्यतुल्यं वन्दे गणेशं च तमोरिनेत्रम् ॥ ५ ॥ शिवस्य मौलाववलोक्य चन्द्रं सुशुण्डया मुग्धतया स्वकीयम् । भग्नं विषाणं परिभाव्य चित्ते आकृष्टचन्द्रो गणपोऽवतां नः ॥ ६ ॥ पितुर्जटाजूटतटे सदैव भागीरथी तत्र कुतूहलेन । विहर्तुकामः स महीध्रपुत्र्या निवारितः पातु सदा गजास्यः ॥ ७ ॥ लम्बोदरो देवकुमारसंघैः क्रीडन्कुमारं जितवान्निजेन । करेण चोत्तोल्य ननर्त रम्यं दन्तावलास्यो भयतः स पायात् ॥ ८ ॥ आगत्य योच्चैर्हरिनाभिपद्मं ददर्श तत्राशु करेण तच्च । उद्धर्तुमिच्छन्विधिवादवाक्यं मुमोच भूत्वा चतुरो गणेशः ॥ ९ ॥ निरन्तरं संस्कृतदानपट्टे लग्नान्तुगुञ्जद्भ्रमरावलीं वै । तं श्रोत्रतालैरपसारयन्तं स्मरेद्गजास्यं निजहृत्सरोजे ॥ १० ॥ विश्वेशमौलिस्थितजह्नुकन्या जलं गृहीत्वा निजपुष्करेण । हरं सलीलं पितरं स्वकीयं प्रपूजयन्हस्तिमुखः स पायात् ॥ ११ ॥ स्तम्बेरमास्यं घुसृणाङ्गरागं सिन्दूरपूरारुणकान्तकुम्भम् । कुचन्दनाश्लिष्टकरं गणेशं ध्यायेत्स्वचित्ते सकलेष्टदं तम् ॥ १२ ॥ स भीष्ममातुर्निजपुष्करेण जलं समादाय कुचौ स्वमातुः । प्रक्षालयामास षडास्यपीतौ स्वार्थं मुदेऽसौ कलभाननोऽस्तु ॥ १३ ॥ सिञ्चाम नागं शिशुभावमासं केनापि सत्कार-

णतो धरित्र्याम् । वक्तारमाद्यं नियमादिकानां लोकैकवन्द्यं प्रणमामि विघ्नम् ॥ १४ ॥ आलिङ्गितं चारुरुचा मृगाक्ष्या सम्भोगलोलं मदविह्वलाङ्गम् । विघ्नौघविध्वंसनसक्तमेकं नमामि कान्तं द्विरदाननं तम् ॥ १५ ॥ हेरम्ब उद्यद्रविकोटिकान्तः पञ्चाननेनापि विचुन्तास्यः । मुनीन्सुरान्भक्तजनांश्च सर्वान्स पातु रथ्यासु सदा गजास्यः ॥ १६ ॥ द्वैपायनोक्तानि स निश्चयेन स्वदन्तकोट्या निखिलं लिखित्वा । दन्तं पुराणं शुभमिन्दुमौलिस्तपोभिरुग्रं मनसा स्मरामि ॥ १७ ॥ क्रीडातटान्ते जलधाविभास्ये वेलाञ्जले लम्बपतिः प्रभीतः । विचिन्त्य कस्येति सुरास्तदातं विश्वेश्वरं वाग्भिरभिष्टुवन्ति ॥ १८ ॥ वाचां निमित्तं स निमित्तमाद्यं पदं त्रिलोक्यामददत्स्तुतीनाम् । सर्वैश्च वन्द्यं न च तस्य वन्द्यः स्थाणोः परं रूपममौ स पायात् ॥ १९ ॥ इमां स्तुतिं यः पठतीह भक्त्या समाहितप्रीतिरतीव शुद्धः । संसेव्यते चेन्दिरया नितान्तं दारिद्र्यसङ्घं सविदारयेन्नः ॥ २० ॥

इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे हरगौरीसंवादे उच्छिष्टगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीरुद्रयामल तन्त्र के हरगौरी संवाद में उच्छिष्ट गणेश स्तोत्र समाप्त।

अथ हरिद्रागणेशकवच प्रारम्भः । ईश्वर उवाच । शृणु वक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिकरं प्रिये । पठित्वा पाठयित्वा च मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि गणेशस्य मनुं जपेत् । सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ २ ॥

हरिद्रा गणेश कवच : ईश्वर बोले : हे प्रिये ! समस्त सिद्धियों को देनेवाला कवच मैं तुम्हें बता रहा हूं तुम उसे सुनो। इसे पढ़कर और पढ़ाकर मनुष्य सभी संकटों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य गणेश के कवच को बिना जाने उनके मन्त्र का जप करता है उसे करोड़ों कल्पों तक भी सिद्धि नहीं प्राप्त होती।

ॐ आमोदश्च शिरः पातु प्रमोदश्च शिखोपरि । सम्मोदो भ्रयुगे पातु भ्रूमध्ये च गणाधिपः ॥ ३ ॥ गणाक्रीडो नेत्रयुगं नासायां गणनायकः । गणक्रीडान्वितः पातु वदने सर्वसिद्धये ॥ ४ ॥ जिह्वायां सुमुखः पातु ग्रीवायां दुर्मुखः सदा । विघ्नेशो हृदये पातु विघ्ननाथश्च वक्षसि ॥ ५ ॥ गणानां नायकः पातु बाहुयुग्मं सदा मम । विघ्नकर्ता च ह्युदरे विघ्नहर्ता च लिङ्गके ॥ ६ ॥ गजवक्त्रः कटीदेशे एकदन्तो नितम्बके । लम्बोदरः सदा पातु गुह्यदेशे ममारुणः ॥ ७ ॥ व्यालयज्ञोपवीती मां पातु पादयुगे

सदा । जापकः सर्वदा पातु जानुजङ्घे गणाधिपः ॥ ८ ॥ हरिद्रः सर्वदा पातु सर्वाङ्गे गणनायकः ।

य इदं प्रपठेन्नित्यं गणेशस्य महेश्वरि ॥ ९ ॥ कवचं सर्वसिद्धाख्यं सर्वविघ्नविनाशनम् । सर्वसिद्धिकरं साक्षात्सर्वपापविमोचनम् ॥ १० ॥ सर्वसम्पत्प्रदं साक्षात्सर्वं पापविमोक्षणम् । सर्वसम्पत्प्रदं साक्षात्सर्वशत्रुक्षयं करम् ॥ ११ ॥ ग्रहपीडा ज्वरा रोगा ये चान्ये गुह्यकादयः । पठनाद्धारणादेव नाशमायान्ति तत्क्षणात् ॥ १२ ॥ धनधान्यकरं देवि कवचं सुरपूजितम् । समं नास्ति महेशानि त्रैलोक्ये कवचस्य च ॥ १३ ॥ हारिद्रस्य महेशानि कवचस्य च भूतले । किमन्यैरसदालापैर्यत्रायुर्व्ययतामियात ॥ १४ ॥

इति विश्वसारतन्त्रे हरिद्रागणेशकवचं समाप्तम् ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे गणेशतन्त्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥ ५ ॥

हे महेश्वरि ! जो मनुष्य सब विघ्नों के नाशक इस सर्वसिद्धि नामक, सर्वसिद्धियों को देनेवाले, साक्षात् पाप से छुड़ानेवाले, सर्वसम्पत्तियों को देनेवाले, समस्त शत्रुओं के साक्षात् विनाशक इस स्तोत्र को पढ़ता है उसकी ग्रहपीड़ायें, ज्वरादि रोग, या जो गुह्यकादि बाधक होते हैं वे सब तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं। हे देवि ! यह कवच धन-धान्य को देनेवाला और देवताओं द्वारा पूजित है। हे महेशानि ! इस कवच के समान तीनों लोकों में अन्य कोई नहीं है। हे महेशानि ! इस भूतल पर हरिद्रागणेश के अतिरिक्त अन्य अनेक असत्य कथनों से क्या लाभ ? क्योंकि उससे व्यर्थ आयु का क्षय होता है।

विश्वसार तन्त्रोक्त हरिद्रागणेश कवच समाप्त।

मन्त्र महार्णव के देवताखण्ड में गणेश तन्त्र रूपी

पञ्चम तरङ्ग समाप्त ॥ ५ ॥

षष्ठ तरंग

शिव तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः । अथ वक्ष्ये महेशस्य मन्त्रान्सर्वार्थसिद्धिदान् ।
यैः पूर्वर्षिवाक्यैश्च शिवसायुज्यमञ्जसा ॥ ३ ॥

आदि पटल प्रारम्भ : अब मैं समस्त अर्थों की सिद्धि प्रदान करनेवाले महेश के मन्त्रों को कहूंगा जिससे पूर्व ऋषियों के कथनानुसार शिव सायुज्य प्राप्त होता है ।

अथ शिवपञ्चाक्षरीमन्त्रप्रयोगः । मन्त्रो यथा (शारदातिलके[1]) 'ॐ नमश्शिवाय' ।

शिव पञ्चाक्षरी मन्त्र प्रयोग : शारदातिलक के अनुसार मन्त्र इस प्रकार है : 'ॐ नमः शिवाय ।'

इसका विधान :

ध्यान : अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूलकपालकाः । शक्तयो रुद्रपीठ-स्थाः सिन्दूरारुणविग्रहाः । रक्तोत्पलकपालाभ्यामलंकृतकराम्बुजाः ॥१॥

दूसरे तन्त्र में ध्यान इस प्रकार बताया गया है : 'बन्धूक सन्निभ देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् । त्रिशूलधारिणं देव चारुहासं सुनिर्मलम् । कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् । उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वर सदा ।

इससे ध्यान और तीन प्राणायाम करके इस प्रकार मन्त्र-न्यासादि करे :

विनियोग : अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः । पङ्क्तिश्छन्दः । ईशानो देवता । ॐ बीजाय नमः शक्तिः । शिवायेति कीलकम् । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि १ पंक्तिच्छन्दस नमः मुखे २ ईशानदेवतायै नमः हृदये ३ ॐ बीजाय नमः गुह्ये ४ नमः शक्तये नमः

---

१ तन्त्रान्तरे : नमस्कारं समुद्धृत्य वान्तं नेत्रसमन्वितम् । वरुणं मुख-वृत्तं च वायुं ललाटसंयुतम् । अमुं पञ्चाक्षरं मन्त्रं पञ्चकामफलप्रदम् । प्रणवादिर्यदा देवि तदा मन्त्रः षडक्षरः ।

शिव
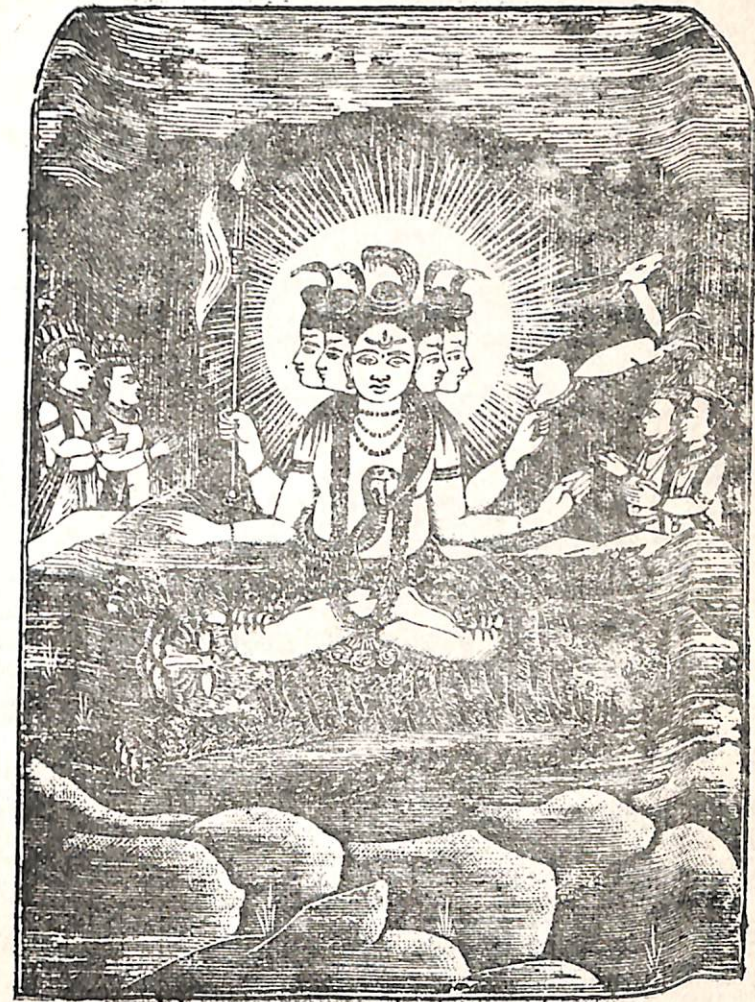
पादयोः ५ शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ ६ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १ ॐ नं शिरसे स्वाहा २ ॐ मं शिखायै वषट् ३ ॐ शिं कवचाय हुं ४ ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ यं अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

पञ्चमूर्ति न्यास : ॐ नं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्यां १ ॐ मं अघोराय नमः मध्यमायाम् २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकायाम् ३ ॐ वां वामदेवाय नमः अनामिकायाम् ४ ॐ यं ईशानाय नमः इत्यंगुष्ठयोः ५ ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मुखे ६ ॐ मं अघोराय नमः हृदये ७ ॐ शिं सद्योजाताय नमः पादयोः ८ ॐ वां वामदेवाय नमः गुह्ये ९ ॐ यं ईशानाय नमः मूर्ध्नि १० इति पञ्चमूर्तिन्यासः।

वक्त्र न्यास : ॐ नं तत्पुरुषाय नमः पूर्ववक्त्रे १ ॐ मं अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रे २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः पश्चिमवक्त्रे ३ ॐ वां वामदेवाय नमः उत्तरवक्त्रे ४ ॐ यं ईशानाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रे ५ इति वक्त्रन्यासः।

प्रथम गोलकन्यास : ॐ नमः हृदये १ ॐ नं नमः वक्त्रे २ ॐ मं नमः दक्षांसे ३ ॐ शिं नमः वामांसे ४ ॐ वां नमः दक्षिणोरौ ५ ॐ यं नमः वामोरौ ६ इति गोलकन्यासे प्रथमः ॥ १ ॥

द्वितीय गोलक न्यास : ॐ नमः कण्ठे १ ॐ नं नमः नाभौ २ ॐ मं नमः दक्षिणपार्श्वे ३ ॐ शिं नमः वामपार्श्वे ४ ॐ वां नमः पृष्ठे ५ ॐ यं नमः हृदये ६। इतिगोलकन्यासे द्वितीयः।

तृतीय गोलक न्यास : ॐ नमः मूर्ध्नि १ ॐ नं नमः मुखे २ ॐ मं नमः दक्षनेत्रे ३ ॐ शिं नमः वामनेत्रे ४ ॐ वां नमः दक्षिणनासापुटे ५ ॐ यं नमः वामनासापुटे ६ इति गोलकन्यासे तृतीयः ॥ ३ ॥

चतुर्थ गोलक न्यास : ॐ नं नमः हस्तांगुल्यग्रेषु १ ॐ मं नमः हस्तांगुलिमूलेषु २ ॐ शिं नमः मणिबन्धयोः ३ ॐ वां नमः कूर्परयोः ४ ॐ यं नमः बाहुमूलयोः ५ इति गोलकन्यासे चतुर्थः ॥ ४ ॥

पञ्चम गोलकन्यास : ॐ नं नमः पादांगुल्यग्रेषु १ ॐ मं नमः पादां-

गुलीमूलेषु २ ॐ शिं नमः गुल्फयोः ३ ॐ वां नमः जानुनोः ४ ॐ यं नमः जङ्घयोः ५ इति गोलकन्यासे पञ्चमः ॥ ५ ॥

षष्ठ गोलकन्यास : ॐ नमः शिरसि १ ॐ नं नमः गुह्ये २ ॐ मं नमः हृदये ३ ॐ शिं नमः कुक्षिद्वये ४ ॐ वां नमः ऊरुद्वये ५ ॐ यं नमः पादद्वये ६ इति गोलकन्यासे षष्ठः ॥ ६ ॥

सप्तम गोलक न्यास : ॐ नमः हृदये १ ॐ नं नमः वक्त्राम्बुजे २ ॐ मं नमः टङ्के ३ ॐ शिं नमः मृगे ४ ॐ वां नमः अभये ५ ॐ यं नमः वरे ६ इति गोलकन्यासे सप्तमः ॥ ७ ॥

अष्टम गोलकन्यास : ॐ नमः वक्त्रे १ ॐ नं नमः अंसयोः २ ॐ मं नमः हृदये ३ ॐ शिं नमः पादद्वये ४ ॐ वां नमः ऊरुद्वये ५ ॐ यं नमः जठरे ६ इति गोलकन्यासेऽष्टमः ॥ ८ ॥

नवम गोलकन्यास : ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मूर्ध्नि १ ॐ मं अघोराय नमः भाले २ ॐ शिं सद्योजाताय नमः उदरे ३ ॐ वां वामदेवाय नमः अंसयोः ४ ॐ यं ईशानाय नमः हृदये ५ इति गोलकन्यासे नवमः समाप्तः ॥ ९ ॥

व्यापक न्यास : ॐ नमोस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिर्लिंगामृतात्मने। चतुर्मूर्तिवपुःस्थाय भसिताङ्गाय शम्भवे ॥ १ ॥

इससे व्यापक न्यास करे।

इस प्रकार दश न्यास करके पार्वतीपति शिव का ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभय-हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके इस प्रकार पीठपूजा करे : पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतोभद्रमण्डल में 'मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके अपने आगे प्रदक्षिणा क्रम से इस प्रकार नवपीठ शक्तियों की पूजा करे :

ॐ वामायै नमः १ ॐ ज्येष्ठायै नमः २ ॐ रौद्रयै नमः ३ ॐ काल्यै नमः ४ ॐ कलविकरिण्यै नमः ५ ॐ बलविकरिण्यै नमः ६ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ७। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ८ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९ इति पूजयेत्।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि-पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे।

इससे आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (शिव पञ्चाक्षरी मन्त्र प्रयोग-यन्त्र देखिये चित्र ७) :

षट्कोणे ऐशान्याम ॐ ईशानाय नमः[1] ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति १ सर्वत्र पूर्वे ॐ तत्पुरुषाय नमः[2] तत्पुरुषश्री० २ दक्षिणे ॐ अघोराय नमः[3] अघोरश्रीपा० ३ पश्चिमे ॐ वामदेवाय नमः[4] वामदेव-श्रीपा० ४ उत्तरे ॐ सद्योजाताय नमः[5] सद्योजातश्रीपा० ५।

इससे पञ्चमूर्ति की पूजा करे। उसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पिता सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद षट्कोणाग्रों में :

ऐशान्याम् ॐ निवृत्यै नमः[6]। निवृत्तिश्रीपा० १ पूर्वे ॐ प्रतिष्ठायै नमः[7]। प्रतिष्ठाश्रीपा० २ दक्षिणे ॐ विद्यायै नमः[8]। विद्याश्रीपा० ३ पश्चिमे ॐ शान्त्यै नमः[9]। शान्तिश्रीपा० ४ उत्तरे शान्त्यतीतायै नमः[10]। शान्त्यतीता श्रीपा० ५।

इससे कलाओं की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से :

ॐ अनन्ताय नमः[11]। अनन्तश्रीपा० १ ॐ सूक्ष्माय नमः[12]। सूक्ष्म-श्रीपा० २ ॐ शिवोत्तमाय नमः[13]। शिवोत्तमश्रीपा० ३ ॐ एकनेत्राय नमः[14]। ऐकनेत्रश्रीपा० ४ ॐ एकरुद्राय नमः [15]। एकरुद्रश्रीपा० ५ ॐ

त्रिमूर्तये नमः[१६]। त्रिमूर्तिश्रीपा० ६ ॐ श्रीकण्ठाय नमः[१७]। श्रीकण्ठश्रीपा० ७ ॐ शिखण्डिने नमः[१८]। शिखण्डिश्रीपा० ८ :

इससे विघ्नेशों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में उत्तर आदि क्रम से :

ॐ उमायै नमः[१९]। उमाश्रीपा० १ ॐ चण्डेश्वराय नमः[२०]। चण्डेश्वरश्रीपा० २ ॐ नन्दिने नमः[२१]। नन्दिश्रीपा० ३ ॐ महाकालाय नमः[२२]। महाकालश्रीपा० ४ ॐ गणेशाय नमः[२३], गणेशश्रीपा० ५ ॐ वृषभाय नमः[२४]। वृषभश्रीपा० ६ ॐ भृङ्गिरिटये नमः[२५]। भृङ्गिरिटिश्रीपा० ७ ॐ स्कन्दाय नमः[२६]। स्कन्दश्रीपा० ८।

इससे गणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[२७] १। ॐ रं अग्नये नमः[२८] २। ॐ मं यमाय नमः[२९] ३। ॐ क्ष निर्ऋतये नमः[३०] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[३१] ५। ॐ यं वायवे नमः[३२] ६। ॐ कं कुबेराय नमः[३३] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[३४] ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३५] ९। वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३६] १०।

इससे इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इसके बाद इन्द्रादि के समीप पूर्वादि क्रम से :

ॐ वं वज्राय नमः[३७] १। ॐ शं शक्तये नमः[३८] २। ॐ दं दण्डाय नमः[३९] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[४०] ४। ॐ पां पाशाय नमः[४१] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[४२] ६। ॐ ग गदायै नमः[४३]। ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः[४४] ८। ॐ पं पद्माय नमः[४५] ९। ॐ चं चक्राय नमः[४६] १०।

इससे अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति षष्ठावरण ॥६॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षात्मकं जपः। जपान्ते दशांशेन वा चतुर्विंशतिसहस्रमन्त्रैः पायसं त्रिमधुपलाशेन होमयेत्। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जने कृत्वा शुद्धान् विप्रांश्च पायसादिना भोजयेत्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च :

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कारान्त पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण चौबीस लाख जप है। जप के बाद दशांश या ४

हजार मन्त्रों से घी, मधु और शकर के साथ खीर का पलाश की समिधाओं से होम करे। फिर तत्तद्दशांश तर्पण और मार्जन करके शुद्ध ब्राह्मणों को खीर आदि से भोजन कराये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को इस प्रकार सिद्ध करे :

तत्त्वलक्षं जपेन्मन्त्रं दीक्षितः शैववर्त्मना। तावत्संख्यासहस्राणि जुहुयात्पायसैः शुभैः ॥ १ ॥ ततः सिद्धो भवेन्मन्त्रः साधकाभीष्टसिद्धिदः। इत्थं सम्पूजयेद्देवं सह नित्यशो जपेत् ॥ २ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाद्वाञ्छितां श्रियम्। द्विसहस्रं जपेद्रोगान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ३ ॥ त्रिसहस्रं जपेन्मन्त्रं दीर्घमायुरवाप्नुयात्। सहस्रवृद्ध्या प्रजपेत्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ आज्यान्वितैस्तिलैः शुद्धैर्जुयाल्लक्षमादरात्। उत्पातजनितान्क्लेशान्नाशयेन्नात्र संशयः। शतलक्षं जपेत्साक्षाच्छिवो भवति मानवः ॥ ५ ॥ इति शारदातिलकोक्तशिवपञ्चाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

शैव मार्ग से दीक्षित होकर साधक चौबीस लाख जप करे तथा २४ हजार खीर की आहुति देवे। इससे मन्त्र सिद्ध होकर साधक को अभीष्टसिद्धि देनेवाला होता है। इस प्रकार देव की पूजा करनी चाहिये तथा नित्य देव के मन्त्र का जप करना चाहिये। ऐसा करने से साधक सभी पापों से मुक्त होकर सब कामनाओं को प्राप्त करता है। दो हजार जप करने से निःसंशय रोगों से मुक्ति मिलती है। ३ हज़ार जप करने से दीर्घ आयु प्राप्त होती है। इससे एक हजार और अधिक जप करने से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। घी मिश्रित तिलों से आदरपूर्वक एक लाख होम करने से यह उत्पातजनित क्लेशों को नष्ट कर देता है, इसमें संशय नहीं है। एक करोड़ जप करने से मनुष्य साक्षात् शिव हो जाता है। इति शारदातिलकोक्त शिव पञ्चाक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ अष्टाक्षरीशिवमन्त्रप्रयोगः।

(शारदातिलके)। मन्त्रो यथा : ह्रीं ॐ नमश्शिवाय ह्रीं इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अष्टाक्षरी शिव मन्त्र प्रयोग : शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है : ह्रीं ॐ नमश्शिवाय ह्रीं।' यह अष्टाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीशिवाष्टाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। पंक्तिच्छन्द। उमापतिर्देवता सर्वेष्टसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि १ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे २ उमापतिदेवतायै नमः हृदि ३ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ह्रीं ॐ हृदयाय नमः १ ॐ नं शिरसे स्वाहा २ ॐ मं शिखायै वषट् ३ ॐ शिं कवचाय हुं ४ ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ यं अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

बन्धूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्। त्रिशूलधारिणं वन्दे चारुहासं सुनिर्मलम् ॥ १ ॥ कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम्। उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥ २ ॥ इति ध्यायेत्।

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में या लिङ्गतोभद्रमण्डल में पूर्वोक्त शिव पीठ पर वामादि नवशक्तियों की पूजा करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इससे पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि-पुष्पान्त उपचारों से पूजन कर देवता की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय च।

इससे आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (अष्टाक्षर शिवमन्त्र प्रयोग का यन्त्र देखिये चित्र ८) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ नं हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ मं शिरसे स्वाहा[२] शिरःश्रीपा० २ ॐ शिं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३ ॐ वां कवचाय हुं कवच श्रीपा० ४ ॐ यं अस्त्राय फट् ५ अस्त्रश्रीपा० ५।

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

उसके बाहर ॐ हृल्लेखायै नमः[६]। हृल्लेखाश्रीपा० १ ॐ गगनायै नमः[७]। गगनाश्रीपा० २ ॐ रक्तायै नमः[८]। रक्तश्रीपा० ३ ॐ कालिकायै नमः[९] कालिकाश्रीपा० ४ ॐ महोच्छुष्मायै नमः[१०]। महोच्छुष्माश्रीपा०।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

प्राचीक्रमेण ॐ वृषभाय नमः[११]। वृषभश्रीपा० १ ॐ क्षेत्रपालाय नमः[१२]। क्षेत्रपालश्रीपा० २ ॐ दुर्गायै नमः[१३]। दुर्गाश्रीपा० ३ ॐ कार्तिकेयाय नमः[१४]। कार्तिकेयश्रीपा० ४ ॐ नन्दिने नमः[१५]। नन्दिश्रीपा० ५ ॐ विघ्नेशाय नमः[१६]। विघ्नेशश्रीपा० ६ ॐ श्यामाय नमः[१७]। श्यामाश्रीपा० ७ ॐ सेनाय नमः[१८]। सेनश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

उसके बाहर प्राच्यादि क्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[१९]। ब्राह्मीश्रीपा० १ ॐ माहेश्वर्यै नमः[२०]। माहेश्वरीश्रीपा० २ ॐ कौमार्यै नमः[२१]। कौमारीश्रीपा० ३ ॐ वैष्णव्यै नमः[२२]। वैष्णवीश्रीपा० ४ ॐ वाराह्यै नमः[२३]। वाराहीश्रीपा० ५ ॐ इन्द्राण्यै नमः[२४]। इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॐ चामुण्डायै नमः[२५]। चामुण्डाश्रीपा० ७ ॐ महालक्ष्म्यै नमः[२६]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि-नमस्कारान्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्दशलक्षं जपेत् तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसका पुरश्चरण १४ लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

मनुलक्षं जपेन्मन्त्रं तत्सहस्रं यथाविधि। जुहुयान्मधुरासिक्तैरारग्वधसमिद्वरैः॥ १॥ एवं यो भजते मन्त्री देवेशं तमुमापतिम्। स भवेत्सर्वलोकानां प्रियः सौभाग्यसम्पदाम्॥ २॥ इत्यष्टाक्षरशिवमन्त्रप्रयोगः।

चौदह लाख मन्त्र का यथाविधि जप करे। मधुरसिक्त आरग्वध समिधाओं से होम करे। जो साधक इस प्रकार शिवजी की उपासना करता है वह सब का और सौभाग्य तथा सम्पत्तियों का प्रिय हो जाता है। इति अष्टाक्षर शिव मन्त्र प्रयोग।

अथ त्र्यक्षरमृत्युञ्जयमन्त्रप्रयोगः।

(मन्त्रमहोदधौ शारदायां च) मन्त्रो यथा ॐ ह्रौं जूं सः।

त्र्यक्षर मृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि और शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है : 'ॐ ह्रौं जूं सः।'

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य त्र्यक्षरात्मकमृत्युञ्जय मन्त्रस्य कहोल ऋषिः। गायत्री छन्दः। मृत्युञ्जयो महादेवो देवता। जूं बीजम्। सः शक्तिः। सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कहोलर्षये नमः शिरसि १ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ मृत्युञ्जयमहादेवतायै नमः हृदि ३ जूं बीजाय नमः गुह्ये ४ सःशक्तये नमः पादयोः ५ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ सां हृदयाय नमः १ ॐ सीं शिरसे स्वाहा २ ॐ सूं शिखायै वषट् ३ ॐ सैं कवचाय हुं ४ ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ सः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्।

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलासत्पाणिं हिमांशुप्रभम्। कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्॥ १॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में या लिङ्गतोभद्रमण्डल में पीठपूजा करके पूर्वोक्त शिव पीठ में वामादि नवपीठशक्तियों का इस प्रकार पूजन करे :

पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः १ ॐ ज्येष्ठायै नमः २ ॐ रौद्र्यै नमः ३ ॐ काल्यै नमः ४ ॐ कलविकरिण्यै नमः ५ ॐ बलविकरिण्यै नमः ६ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ७ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ८ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९।

इससे पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोछकर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्रतिष्ठा करे। पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि-पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवार्चनाय मे।

इससे आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में (त्र्यक्षरी मृत्युञ्जय मन्त्र देखिये चित्र ९) :

ॐ सां हृदयाय[१] नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॐ सीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २ ॐ सूं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३ ॐ सैं कवचाय हूं[४]। कवचश्रीपा४ ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५ ॐ सः अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करने के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलविन्दु गिरा कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षत्रयं जपः । पुरश्चरणदशांशेन दुग्धाज्यलोलितैरमृताखण्डैर्होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । (तथा च शारदायाम्) 'गुणलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं विशालधीः । जुहुयादमृताखण्डः शुद्धदुग्धाज्यलोलितैः ॥१॥ जपपूजादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन्मनुना क्रमात् । कुर्यात्प्रयोगान् कल्पोक्तानभीष्टानफलसिद्धये ॥ २ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि-नमस्कारान्त पूजन करके जप करे । इसका पुरश्चरण तीन लाख जप है । पुरश्चरण का दशांश दूध और घी में भिगो कर अमृता (गिलोय) के टुकड़ों से होम और तत्तद्दशांश तर्पण मार्जन और ब्राह्मण भोजन करना चाहिये । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । शारदातिलक में कहा भी गया है कि बुद्धिमान साधक को तीन लाख मन्त्रों का जप और शुद्ध दूध और घी में भिगो कर गिलोय के टुकड़ों से होम करना चाहिये । क्रम से जप पूजा आदि से सिद्ध इस मन्त्र से अभीष्ट सिद्धि के लिये कल्पोक्त प्रयोगों को करे ।

दुग्धयुक्तैः सुधाखण्डैर्मन्त्री मासं सहस्रकम् । आराधितेऽग्नौ जुहुयाद्विधिवद्विजितेन्द्रियः ॥ ३ ॥ सन्तुष्टः शङ्करस्तेन सुधाप्लावितविग्रहः । आयुरारोग्यसम्पत्तियशःपुत्रान्विवर्द्धयेत् ॥ ४ ॥ सुधावटौ तिला दूर्वाः पयः सर्पिः पयोहविः । इत्युक्तैः सप्तभिर्द्रव्यैर्जुहुयात्सप्तवासरम् ॥ ५ ॥ क्रमाद्दशांशतो नित्यमष्टोत्तरमतन्द्रितः । सप्ताधिकान् द्विजान्नित्यं भोजयेन्मधुरान्वितम् ॥ ६ ॥ विकारानुगुणं मन्त्री वर्द्धयेद्धोमवासरान् । होतृभ्यो दक्षिणां दद्यादरुणा गाः पयस्विनीः ॥ ७ ॥ गुरुं सम्प्रीणयेत्पश्चाद्धनाद्यैर्देवताधिया । अनेन विधिना साध्यं कृत्वा द्रोहज्वरादिभिः ॥ ८ ॥ विमुक्तः सुचिरं जीवेच्छरदां शतमञ्जसा । अभिचारे ज्वरे तीव्रे घोरोन्मादे शिरोगदे ॥ ९ ॥ असाध्यरोगक्ष्वेडादौ महादाहे महामये । होमोयं शान्तिदः प्रोक्तः सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥ १० ॥ द्रव्यैरेतैः प्रजुहुयात्त्रिजन्मसु यथाविधि । भोजयेन्मधुरैर्भोज्यैर्ब्राह्मणान्वेदपारगान् ॥११॥ दीर्घमायुरवाप्नोति वाञ्छितां विन्दति श्रियम् । एकादशाहुतीर्नित्यं दूर्वाभिर्जुहुयाद्बुधः ॥ १२ ॥ अपमृत्युजिदेव स्यादायुरारोग्यवर्द्धनः । त्रिजन्मसु सुधावल्लीकाश्मरीबकुलोद्भवैः ॥ १३ ॥ समिद्भिः कृतो होमः सर्वमृत्युगदापहः । सिद्धार्थैर्विहितो होमो महाज्वरविनाशनः । अपामार्ग

समिद्धोमः सर्वाभयनिषूदनः ॥ १४ ॥ इति त्र्यक्षरमृत्युञ्जयमन्त्रप्रयोगः ।

साधक जितेन्द्रिय होकर विधिवत दूध से सिक्त सेहुँड के टुकड़ों से एक मास तक प्रतिदिन पूजित अग्नि में एक हजार आहुतियाँ दे । इससे सन्तुष्ट शङ्कर सुधाप्लावित शरीरवाले होकर आयु, आरोग्य, सम्पत्ति, यश और पुत्रों की वृद्धि करते हैं । सेहुँड़ और बरगद, तिल और दूब, दूध और घी, दूध और हवि इन सात द्रव्यों से सात दिन तक हवन करे तथा क्रम से दशांश एक सौ आठ नित्य होम करे और सात से अधिक ब्राह्मणों को नित्य मधुर भोजन कराये । विकर के अनुसार साधक होम के दिनों को बढ़ाये । होताओं को दूध देनेवाली लाल गायें दक्षिणा में देवे । गुरु को देवबुद्धि से धन आदि से प्रसन्न करे । इस विधि से देवता को सिद्ध करके द्रोह ज्वर आदि से मुक्त होकर साधक सौ वर्ष तक जीवित रहता है । अभिचार में, तीव्र ज्वर में, घोर उन्माद में, शिर के रोग में, असाध्य रोगों और कम्पन आदि में और भयङ्कर रोग में यह होम शान्तिदायक तथा समस्त सम्पत्तिप्रदायक कहा गया है । जो इन द्रव्यों से अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्रों में विधिपूर्वक हवन तथा वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन कराता है वह दीर्घायु तथा सम्पत्ति प्राप्त करता है । बुद्धिमान साधक नित्य ग्यारह दूर्वाओं से होम करे तो वह अपमृत्यु को जीत कर आयु और आरोग्य की वृद्धि करता है । अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्रों में सेहुंड, गिलोय, काश्मरी तथा मौलसरी की उत्तम समिधाओं से किया गया होम भारी ज्वर का भी नाशक होता है । अपामार्ग की समिधाओं से किया गया होम समस्त रोगों को दूर करनेवाला होता है । इति त्र्यक्षर मृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोग ।

अथ त्र्यम्बकमन्त्रप्रयोगः ।

(शारदातिलके) 'अथ त्रैयम्बकं मन्त्रमभिधास्याम्यनुष्टुभम् । यं भजन्तं नरं कालः स्वयं वीक्षितुमक्षमः ॥ १ ॥' मन्त्रो यथा :

त्र्यम्बक मन्त्र प्रयोग : शारदातिलक में कहा गया है : अनुष्टुप् छन्दयुक्त त्र्यम्बक देवता का मन्त्र मैं बता रहा हूं जिसका जप करते हुये व्यक्ति को स्वयं काल भी देखने में असमर्थ होता है । मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य त्र्यम्बकमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः ।

त्र्यम्बकपार्वतीपतिर्देवता। त्र्यं बीजम्। वं शक्तिः। कं कीलकम्। सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वसिष्ठर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ त्र्यम्बकपार्वतीपतिदेवातायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ त्र्यं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ वं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ कं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ त्र्यम्बकम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ उर्वारुकमिव वन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यसः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ यजामहे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ उर्वारुकमिव वन्धनात् कवचाय हुं ॥ ४ ॥ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ मामृतात् अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥ १ ॥ ॐ वं नमः पश्चिममुखे ॥ २ ॥ ॐ कं नमः दक्षिणमुखे ॥ ३ ॥ ॐ यं नमः उत्तरमुखे ॥ ४ ॥ ॐ जां नमः उरसि ॥ ५ ॥ ॐ मं नमः कण्ठे ॥ ६ ॥ ॐ हें नमः मुखे ॥ ७ ॥ ॐ सुं नमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐ गं नमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐ धिं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ पुं नमः कुक्षौ ॥ ११ ॥ ॐ ष्टिं नमः लिङ्गे ॥ १२ ॥ ॐ वं नमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐ र्धं नमः दक्षिणोरुमूले ॥ १४ ॥ ॐ नं नमः वामोरुमूले ॥ १५ ॥ ॐ उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ वां नमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥ १८ ॥ ॐ कं नमः वामजानुनि ॥ १९ ॥ ॐ मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥ २० ॥ ॐ वं नमः वामजानुवृत्ते ॥ २१ ॥ ॐ वं नमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ धं नमः वामस्तने ॥ २३ ॥ ॐ वं दक्षिणपार्श्वे ॥ २४ ॥ ॐ मृं नमः वामपार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ नां नमः पादे ॥ २६ ॥ ॐ मुं नमः वामपादे ॥ २७ ॥ ॐ त्यों नमः दक्षिण- ॐ क्षीं नमः दक्षिणकरे ॥२८॥ ॐ यं नमः वामकरे ॥ २९ ॥ ॐ मां नमः दक्षनासायाम् ॥ ३० ॥ ॐ मृं नमः वामनासायाम् ॥ ३१ ॥ ॐ तां नमः मूर्ध्नि ॥ ३२ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः।

पदन्यास : ॐ त्र्यम्बकं शिरसि ॥ १ ॥ यजामहे भ्रुवोः ॥ २ ॥ सुगन्धि पुष्टिनेत्रयोः ॥ ३ ॥ वर्धनं मुखे ॥ ४ ॥ उर्वारुकं गण्डयोः ॥ ५ ॥ इव हृदये ॥ ६ ॥ बन्धनात् जठरे ॥ ७ ॥ मृत्योः लिङ्गे ॥ ८ ॥ मुक्षीय हृदये ॥ ९ ॥ मा जान्वोः ॥ १० ॥ मृतात् पादयोः ॥ ११ ॥ इति पदन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्। अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यायेत्।

इससे ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नवपीठशक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्रयै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर उसपर दूध की धारा और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोछ कर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके वहाँ वृषभध्वज शिव की पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवाज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करे : पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर देवता की आज्ञा की भावना करके इस प्रकार आवरण पूजा करे (त्र्यम्बक पूजन यन्त्र देखिये चित्र १०):

षट्कोण केसरों में, आग्नेयादि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः[१]। हृदये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ यजामहे शिरसे स्वाहा[२] शिरःश्रीपा० २ सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्[३]। शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३ उर्वारुकमिव बन्धनात्[४] कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४

मृत्योर्मुक्षीय । नेत्रत्रयाय वौषट्[5] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । मामृतात् अस्त्राय फट्[6] । अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करे । फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ अर्कमूर्तये नमः[7] । अर्कमूर्तिश्रीपा० १ ॐ इन्दुमूर्तये नमः[8] । इन्दुमूर्तिश्रीपा० २ ॐ वसुधामूर्तये नमः[9] । वसुधामूर्तिश्रीपा० ३ ॐ तयोमूर्तये नमः[10] । तयोमूर्तिश्रीपा० ४ ॐ वह्निमूर्तये नमः[11] । वह्निमूर्तिश्रीपा० ५ ॐ वायुमूर्तये नमः[12] । वायुमूर्तिश्रीपा० ६ ॐ आकाशमूर्तये नमः[13] । आकाशमूर्तिश्रीपा० ७ ॐ यजमानमूर्तये नमः[14] । यजमानमूर्तिश्रीपा० ८ ।

इससे अष्टमूर्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण।२।

फिर उसके बाहर अष्टदलों में प्राची क्रम से :

ॐ रमायै नमः[15] । रमाश्रीपा० १ ॐ राकायै नमः[16] । राकाश्रीपा० २ ॐ प्रभायै नमः[17] । प्रभाश्रीपा० ३ ॐ ज्योत्स्नायै नमः[18] । ज्योत्स्नाश्रीपा० ४ ॐ पूर्णायै नमः[19] । पूर्णाश्रीपा० ५ ॐ ऊषायै नमः[20] । ऊषाश्रीपा० ६ ॐ पूरण्यै नमः[21] । पूरणीश्रीपा० ७ ॐ सुधायै नमः[22] । सुधाश्रीपादुकां पूजयामि ८ ।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ।३।

फिर उसके बाहर प्राचीक्रम से : ॐ विश्वायै नमः[23] । विश्वाश्रीपा० १ ॐ विद्यायै नमः[24] । विद्याश्रीपा० २ ॐ सितायै नमः[25] । सिताश्रीपा० ३ ॐ प्रह्वायै नमः[26] । प्रह्वाश्रीपा० ४ ॐ सारायै नमः[27] । साराश्रीपा० ५ ॐ सन्ध्यायै नमः[28] । सन्ध्याश्रीपा० ६ ॐ शिवायै नमः[29] । शिवाश्रीपा० ७ ॐ निशायै नमः[30] । निशाश्रीपा० ८ ।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति चतुर्थावरण।४।

उसके बाहर अष्टदलों में प्राचीक्रम से : ॐ आर्यायै नमः[31] । आर्याश्रीपा० १ ॐ प्रज्ञायै नमः[32] । प्रज्ञाश्रीपा० २ ॐ प्रभायै नमः[33] । प्रभाश्रीपा० ३ ॐ

मेधायै नमः[34] । मेधाश्रीपा० ४ ॐ शान्त्यै नमः[35] । शान्तिश्रीपा० ५ ॐ कान्त्यै नमः[36] । कान्तिश्रीपा० ६ ॐ धृत्यै नमः[37] । धृतिश्रीपा० ७ ॐ मत्यै नमः[38] । मतिश्रीपा० ८ ।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति पञ्चमावरण ।५।

उसके बाहर अष्टदलों में प्राची क्रम से : ॐ धारायै नमः[39] । धाराश्रीपा० । १ ॐ मायायै नमः[40] । मायाश्रीपा० २ ॐ अवन्यै नमः[41] । अवनिश्रीपा० ३ ॐ पद्मायै नमः[42] । पद्माश्रीपा० ४ ॐ शान्तायै नमः[43] । शान्तश्रीपा० ५ ॐ मोघायै नमः[44] । मोघाश्रीपा० ६ ॐ जयायै नमः[45] । जयाश्रीपा० ७ ॐ अमलायै नमः[46] । अमलाश्रीपा० ८ ।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति षष्ठावरण ।६।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कारान्त पूजन करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । दशद्रव्यैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च 'जपेन्मन्त्रमिमं लक्षमेवं ध्यायञ्जितेन्द्रियः । जुहुयाद्दशभिर्द्रव्यैरयुतं घृतसंप्लुतैः ॥ १ ॥ बिल्वं पलाशं खदिरं परं च तिलसर्षपौ । दुग्धं दधि पुनर्दूर्वा होमे तानि विदुर्बुधाः ॥ २ ॥ एवंकृते प्रयोगार्हो जायतेऽस्य महामनुः । अयुतं जुहुयाद्बिल्वसमिद्भिः सम्पदे सुधीः ॥ ३ ॥ जुहुयाद्ब्रह्मवृक्षस्य सामिद्भिर्ब्रह्मतेजसे । खादिरैरयुतं हुत्वा कान्तिं पुष्टिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ वट वृक्षस्य समिधो जुहुयादयुतावधि । धनधान्यसमृद्धः स्यादचिरेणैव साधकः ॥ ५ ॥ तिलैस्तत्संख्यया हुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । सिद्धार्थैरयुतं हुत्वा शत्रून्विजयते नृपः ॥ ६ ॥ अनेनैव विधानेन नश्येन्मृत्युरकालजः । पायसेन कृतो होमो रक्षाश्रीकीर्ति कान्तिदः ॥ ७ ॥ गोदुग्धेन च शुद्धान्नं हुत्वा कृत्यां विनाशयेत् । अयमेव मतो होमः शान्तिश्रीसम्पदावहः ॥ ८ ॥ दधिहोमेन सम्वादं कुर्याद्विद्वेषिणोर्मिथः । प्रत्यहं जुहुयान्मन्त्री दूर्वाअष्टोत्तरं शतम् ॥ ९ ॥ आमयान्निखिलाञ्जित्वा दीर्घमायुरवाप्नुयात् । जुहुयाज्जम्बुकाष्ठेनपायसान्नैर्घृतान्वितैः ॥ १० ॥ इच्छन्ननिन्दितां लक्ष्मीमारोग्यमतुलं यशः गव्यदुग्धधृताक्ताभिर्दूर्वाभिर्जुहुयाद्वशी ॥ ११ ॥ स विंशतिशतं सम्यक स्वजन्मदिवसे सुधीः । आमयैः सकलैर्मुक्तो जीवे-

द्वर्षशतं सुधीः ॥ १२ ॥ काश्मरीसमिधस्तिस्रः पयोन्नं त्रिशतं पृथक् । जुहुयाद्ब्राह्मणनन्ते भोजयेन्मधुरान्वितम् ॥ १३ ॥ प्रीणयेद्धनधान्याद्यै-रात्मनो गुरुमादरात् । अनामयमवाप्नोति दीर्घमायुः श्रिया सह ॥१४॥ सघृतेन पयोन्नेन हुत्वा पर्वाणि मन्त्रिणे । राजश्रियमवाप्नोति षण्मासान्नात्र संशयः ॥ १५ ॥ लाजैर्विशुद्धैर्जुहुयात्कन्या सैषा वराप्तये । क्षीरद्रुमसमिद्धो-माद्ब्राह्मणादीन्वशं नयेत् ॥ १६ ॥ स्नात्वा सहस्रं प्रजपेदादित्याभिमुखो मनुम् । आधिव्याधिविनिर्मुक्तो दीर्घमायुरवाप्नुयात् । अनेने मनुना सर्वं साधयेदिष्टमात्मनः । इति त्र्यम्बकमन्त्रप्रयोगः ।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। दश द्रव्यों से दशांश होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'जितेन्द्रिय साधक ध्यान करता हुआ इस मन्त्र का एक लाख जप करे। घी से सिक्त दश द्रव्यों से दश हजार आहुतियाँ दे (बेल फल, तिल, खीर, घी, दूध, दही, दूर्वा, वट की समिधा, पलाश की समिधा एवं खैर की समिधा इन्हें दश द्रव्य कहा गया है : मन्त्र महोदधि १६. २१)। बेल, पलाश, खैर, तिल, सरसों, दूध, दही तथा दूब इन सब को होम के लिये कहा गया है। ऐसा करने पर यह महामन्त्र प्रयोग के योग्य हो जाता है। सुधी साधक सम्पत्ति के लिये बेल की समिधा से दश हजार आहुतियाँ देवे। ब्रह्मतेज के लिये पलाश की समिधाओं से होम करे। खैर की समिधाओं से होम करने पर कान्ति तथा पुष्टि प्राप्त होती है। वटवृक्ष की समिधाओं से दश हजार आहुतियाँ देने पर साधक शीघ्र ही धन धान्य से समृद्ध हो जाता है। तिल की दश हजार आहुतियाँ देने से साधक सभी पापों से छूट जाता है। पीली सरसों से दश हजार होम करने से राजा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेता है। इसी विधान से साधक अकालमृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। खीर से किया गया होम रक्षा, श्री, कीर्ति तथा कान्ति देनेवाला होता है। गाय के दूध से शुद्ध अन्न का होम करके साधक कृत्या का नाश कर देता है। यही होम शान्ति, श्री तथा सम्पत्ति का देनेवाला भी माना गया है। दही का होम करने से दो द्वेषियों के बीच बातचीत करा सकता है। यदि साधक प्रतिदिन १०८ दूबों का होम करे तो वह समस्त बीमारियों को जीतकर दीर्घायु प्राप्त करता है। यदि घी मिश्रित अन्न का दूध के साथ जामुन की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में होम करता है तो उसे अनिन्दित लक्ष्मी, आरोग्य और विपुल यश प्राप्त होता है। यदि साधक जितेन्द्रिय होकर अपने जन्म दिन में गाय

के घी तथा दूध से सिक्त दूब के द्वारा दो हजार हवन करता है तो वह समस्त रोगों से मुक्त होकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है। गम्भारी की तीन समिधाओं, दूध और अन्न से पृथक्-पृथक् तीन सौ आहुतियां देकर अन्त में ब्राह्मणों को मधुर भोजन कराया जाय और आदरपूर्वक गुरु को धन-धान्य से प्रसन्न किया जाय तो साधक नैरोग्य प्राप्त करके लक्ष्मी के साथ दीर्घायु प्राप्त करता है। घी और दूध के साथ अन्न से पर्व पर होम करने से ६ मास में साधक राजलक्ष्मी को प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं है। जो कन्या वर प्राप्ति के लिये विशुद्ध लावा से तथा क्षीरी वृक्षों की समिधाओं से हवन करती है वह ब्राह्मणों आदि को वश में कर लेती है। जो स्नान करके सूर्याभिमुख होकर एक हजार मन्त्र का जप करता है वह शारीरिक तथा मानसिक रोगों से विमुक्त होकर दीर्घायु प्राप्त कर लेता है। इस मन्त्र से अपनी सभी इष्ट कामनाओं की सिद्धि करनी चाहिये। इति त्र्यम्बक मन्त्र प्रयोग।

अथ महामृत्युञ्जय मन्त्रप्रयोगः ।

(मन्त्रमहोदधौ) महामृत्युञ्जय वक्ष्ये दुरितापन्निवारणम् । यं प्राप्य भार्गवः शम्भोर्मृतान् दैत्यानजीवयन् ॥ १ ॥ मन्त्रो यथा :

महामृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोग : मन्त्र महोदधि में कहा गया है : पाप एवं विपत्ति को दूर करनेवाले महामृत्युञ्जय मन्त्र को बतलाता हूं जिसे भगवान् शङ्कर से प्राप्त करके शुक्राचार्य ने मरे हुये दैत्यों को जीवित किया था। मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ' इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

देशकालौ संकीर्त्य मम शरोरे ज्वराद्यमुकरोगनिरासद्वारा सद्यः आरोग्यार्थममुककामनासिद्ध्यर्थं वा श्रीमहामृत्युञ्जयदेवताप्रीत्यर्थममुक-संख्यापरिमितश्रीमहामृत्युञ्जयजपं करिष्ये ।

इति संकल्प्य । ॐ गुरुवे नमः ॥ १ ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ ॐ स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा न्यासादिकं कुर्यात् ।

इस प्रकार संकल्प करके ॐ गुरुवे नमः ॥ १ ॥ ॐ गणपतये नमः ॥२॥ ॐ स्वेष्टदेवतायै नमः ॥३॥ इस प्रकार नमन करके न्यास आदि करे।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः । पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छन्दांसि । सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रा

देवता: । श्रीं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । महामृत्युञ्जयप्रीयते जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ३ ॥ श्रींबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगंधि पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव वन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हांहीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तते मां जीवय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं कवचाय हुं ॥४॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिममुखे ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुव स्व मं नमः कण्ठे ॥ ६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः हें

नमः मुखे ॥ ७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ ॥ ११ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिङ्गे ॥ १२ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः धँ नमः दक्षिणोरुमूले ॥ १४ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले ॥ १५ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः र्वां नमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥ १८ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि ॥ १९ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मि नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥ २० ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामजानुवृत्ते ॥ २१ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः घं नमः वामहस्तने २३॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नान्नमः दक्षिणपार्श्वे ॥२४॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वाम्पार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्योर्नमः दक्षिणपादे ॥ २६ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मुं नमः वामपादे ॥ २७ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षकरे ॥ २८ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे ॥ २९ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षनासायाम् ॥ ३० ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम् ॥ ३१ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः तान्नमः मूर्ध्नि ॥ ३२ ॥ इति मन्त्र वर्णन्यासः ।

पदन्यास : ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे भ्रुवोः ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्धनं मुखे ॥४॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकं गण्डयोः ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः इव हृदये ॥ ६ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः बन्धनात् जठरे ॥ ७ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योः लिङ्गे ॥८॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवं स्वः मुक्षीय ऊर्वोः ॥ ९ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मां जान्वोः ॥ १० ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः अमृतात् पादयोः ॥ ११ ॥ इति पदन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् ।

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिञ्चन्तं करयोः

र्यंगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ। अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थ-चन्द्रस्रवत्पीयूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।'

इससे ध्यान करने के बाद पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पीठ देवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यैः नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इस प्रकार पूजा करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा से आवरण पूजा करे।

पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे।

इससे आज्ञा लेकर पुष्पाञ्जलि देकर निम्नलिखित प्रकार से आवरण पूजा करे। महामृत्युञ्जय पूजा यन्त्र देखिये चित्र ११) :

पञ्चकोणे ईशान्याम् 'ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमे अस्तु सदाशिवोम्।' ॐ ईशानाय नमः[१]। ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ पूर्वे ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्' ॐ तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषश्रीपा० ॥ २ ॥ दक्षिणे 'ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। 'ॐ अघोराय नमः[३]। अघोरश्रीपा० ॥ ३ ॥ पश्चिमे : 'ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्व भूतदमनाय नमो नमोन्मनाय

नमः।' ॐ वामदेवाय नमः। वामदेवश्रीपा० ॥ ४ ॥ उत्तरे ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः ५। सद्योजातश्रीपा० ॥ ५ ॥

इससे पञ्चमूर्तियों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेषार्घ से बिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पञ्चकोणाग्रों में ऐशान्यदि क्रम से :

ॐ निवृत्यै नमः[६]। निवृत्तिश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ प्रतिष्ठायै नमः[७]। प्रतिष्ठाश्रीपा० ॥२॥ ॐ विद्यायै नमः[८]। विद्याश्रीपा० ॥३॥ ॐ शान्त्यै नमः[९]। शान्तिश्रीपा० ॥४॥ ॐ शान्त्यतीतायै नमः[१०]। शान्त्यतीताश्रीपा० ॥ ५ ॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पांजलि देवे इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के बीच प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ सूर्यमूर्तये नमः[११]। सूर्यमूर्तिश्रीपा० १ ॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः[१२]। इन्दुमूर्तिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ क्षितिमूर्तये नमः[१३]। क्षितिमूर्तिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ तोयमूर्तये नमः[१४]। तोयमूर्तिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः[१५]। अग्निमूर्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पवनमूर्तये नमः[१६]। पवनमूर्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ आकाशमूर्तये नमः[१७]। आकाशमूर्तिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ यज्ञमूर्तये नमः[१८]। यज्ञमूर्तिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार अष्टमूर्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

उसके बाहर अष्टदलों में प्राचीक्रम से :

ॐ रमायै नमः[१९]। रमाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ राकायै नमः[२०]। राकाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रभायै नमः[२१]। प्रभाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः[२२]। ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पूर्णायै नमः[२३]। पूर्णाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ पूषायै नमः[२४]। पूषाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ पूर्ण्यै नमः[२५]। पूर्णीश्रीपा० ॥७॥ ॐ सुधायै नमः[२६]। सुधाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार पूजन करके पुष्पांजलि दे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

उसके बाहर अष्टदलों में प्राची क्रम से :

ॐ विश्वायै नमः[२७]। विश्वाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वन्ध्यायै नमः[२८]। वन्ध्याश्रीपा० ॥२॥ ॐ सितायै नमः[२९]। सिताश्रीपा० ॥३॥ ॐ प्रह्लायै नमः[३०]। प्रह्लाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ सारायै नमः[३१]। साराश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ सन्ध्यायै नमः[३२]। सन्ध्याश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शिवायै नमः[३३]। शिवाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ निशायै नमः[३४]। निशाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पांजलि दे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इसके बाद अष्टदल में प्राची क्रम से :

ॐ आर्यायै नमः[३५]। आर्याश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः[३६]। प्रज्ञाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रभायै नमः[३७]। प्रभाश्रीपा० ॥३॥ ॐ मेधायै नमः[३८]। मेधाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शान्त्यै नमः[३९]। शान्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ कान्त्यै नमः[४०]। कान्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ धृत्यै नमः[४१]। धृतिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ मत्यै नमः[४२]। मतिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति षष्ठावरण ॥६॥

इसके बाद अष्टदलों में प्राची क्रम से :

ॐ धरायै नमः[४३]। धराश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ उमायै नमः[४४]। उमाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ पावन्यै नमः[४५]। पावनीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ पद्मायै नमः[४६]। पद्माश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शान्तायै नमः[४७]। शान्ताश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अमोघायै नमः[४८]। अमोघाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ जयायै नमः[४९]। जयाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अमलायै नमः[५०] अमलाश्रीपा०॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति सप्तमावरण ॥७॥

उसके बाहर अष्टदलों में प्राची क्रम से :

ॐ अनन्ताय नमः[५१]। अनन्तश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्मसंज्ञाय नमः[५२]। सूक्ष्मसंज्ञश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिवोत्तमाय नमः[५३]। शिवोत्तमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ एकनेत्राय नमः[५४]। एकनेत्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ एकरुद्राय नमः[५५]। एकरुद्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः[५६]। त्रिमूर्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः[५७]। श्रीकण्ठश्रीपा० ॥७॥ ॐ शिखण्डिने नमः[५८]। शिखण्डिश्रीपा० ॥८॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इत्यष्टमावरण ॥ ८ ॥

उसके बाहर अष्टदलों में उत्तर से आरम्भ करके :

ॐ उमायै नमः[५९]। उमाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ चण्डेश्वराय नमः[६०]। चण्डेश्वरश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नन्दिने नमः[६१]। नन्दिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ महाकालाय नमः[६२]। महाकालश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ गणेशाय नमः[६३]। गणेशश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वृषभाय नमः[६४]। वृषभश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ भृंगिरिटये नमः[६५]। भृंगिरिटिश्रीपा० ॥७॥ ॐ स्कन्दाय नमः[६६]। स्कन्दश्रीपा० ॥८॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति नवमावरण ॥ ९ ॥

उसके बाहर अष्टदलों में प्राचीक्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[६७]। ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[६८]। माहेश्वरीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः[६९]। कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[७०]। वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः[७१]। वाराहीश्रीपा० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः[७२]। इन्द्राश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चामुण्डायै नमः[७३]। चामुण्डाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः[७४]। महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति दशमावरण ॥१०॥

उसके बाहर भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करे :

ॐ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥ १ ॥ तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृडा। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युञ्जयं परम् ॥ २ ॥

इससे प्रार्थना करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। जपान्ते दशांशतो दशद्रव्यैर्होमः। होमदशांशेन मन्त्रान्ते ॐ मृत्युञ्जयं तर्पयामीत्युक्त्वा दुग्धमिश्रित जलेन तर्पयेत्। ततस्तर्पणदशांशेन मन्त्रान्ते आत्मानमभिषिञ्चामि नमः। इति यजमानमूर्द्धन्यभिषेकः होमतर्पणाभिषेकाशक्तौ तत्स्थाने तत्तद्विगुणो जपः कार्यः। ततोभिषेकदशांशतोऽष्टोत्तरशतसंख्यातो वा ब्राह्मणभोजनं कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। जपेन्मन्त्रमिमं लक्षमेवं ध्यायञ्जितेन्द्रियः। दशद्रव्यैः प्रजुहुयात्तानि बिल्वफलं तिलाः ॥ १ ॥ पायसं सर्षपादुग्धं दधि दूर्वा च सप्तमी। वटात्पलाशखदिरात्समिधो मधुरप्लुताः ॥ २ ॥ एवंकृते प्रयोगार्हो जायतेयं महामनुः।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप के अन्त में दश द्रव्यों से दशांश होम करे। होम के अन्त में 'ॐ मृत्युञ्जयं तर्पयामि' यह कहकर होम

का दशांश दुग्धमिश्रित जल से तर्पण करे। तर्पण का दशांश मन्त्र के अन्त में 'आत्मानमभिषिञ्चामि नमः' लगाकर यजमान के सिर पर अभिषेक करे। होम तर्पण और अभिषेक में अशक्त होने पर इनके स्थान पर तत्तत् द्विगुणित जप करे। इसके बाद अभिषेक से दशांश या १०८ ब्राह्मणों को भोजन कराये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि साधक जितेन्द्रिय होकर इस मन्त्र का जप करे। फिर दश द्रव्यों से दशांश होम करना चाहिये। ये द्रव्य इस प्रकार हैं: १. बेलफल, २. तिल, ३. खीर, ४. घी, ५. दूध, ६. दही, ७. दूर्वा, ८. वट की समिधा, ९. पलाश की समिधा एवं १०. खैर की समिधा। इन तीनों समिधाओं को घी, शहद और शक्कर में डुबोकर होम करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र प्रयोग के योग्य हो जाता है।

जन्मभेदशमे तस्मात्पुनश्चैकोनविंशके ॥ ३ ॥ जुहुयाद्यः सुधावल्याः समिधश्चतुरंगुलाः। स रोगान् सकलाञ्शत्रून् पराभूय श्रिया युतः ॥ ४ ॥ मोदते पुत्रपौत्राद्यैः शतवर्षाणि साधकः। समिद्भिः श्रीफलोत्थाभिर्होमः सम्पत्तिसिद्धये ॥ ५ ॥ पलाशतरुजाभिस्तु ब्रह्मवर्चससिद्धये। वटोत्थाभिर्धनप्राप्त्यै खादिरीभिस्तु कान्तये ॥ ६ ॥

जो व्यक्ति अपने जन्मनक्षत्र से १० वें या १२ वें नक्षत्र में गुडूची (गिलोय) की चार अंगुल लम्बी समिधाओं से हवन करता है वह रोग और अपने शत्रुओं को नष्ट कर सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा पुत्र-पौत्रों के साथ आमोद प्रमोदपूर्वक सौ वर्ष तक जीवित रहता है। सम्पत्ति प्राप्त करने के लिये श्रीफल (बेल) की समिधाओं से हवन करना चाहिये। ब्रह्मवर्चस-वृद्धि के लिये पलाश (ढाक) की समिधाओं से हवन करना चाहिये। धन प्राप्ति के लिये वट (बरगद) की समिधाओं से तथा कान्तिवृद्धि के लिये खादिर (खैर) की समिधाओं से होम करना चाहिये।

तिलैरधर्मनाशाय सर्षपैः शत्रुनष्टये। पायसेन कृतो होमः कान्ति-श्रीकीर्तिदायकः ॥ ७ ॥ कृत्वा मृत्युञ्जयरोग्युं दध्ना सम्वादसिद्धिदः। होमसंख्या तु सर्वत्रायुतमानेन कीर्तिता ॥ ८ ॥

अधर्म का नाश करने के लिये तिलों से तथा शत्रुओं का नाश करने के लिये सरसों से होम करना चाहिये। खीर का होम करने से कान्ति, लक्ष्मी तथा कीर्ति मिलती है। दही का होम परकृत्य एवं अपमृत्यु को नष्ट करता है तथा विवाद में सफलता प्रदान करता है। सभी होमों से आहुतियों की संख्या १० हजार बतलाई गई है।

अष्टोत्तरशतं दूर्वात्रिकहोमाद्रुजां क्षयः।

३-३ दूर्वाओं का १०८ बार होम करने से रोग नष्ट हो जाते हैं।

स्वजन्मदिवसे यस्तु पायसैर्मधुरान्वितैः ॥ ९ ॥ जुहोति तस्य वर्द्धते कुलमारोग्यकीर्तयः।

जो व्यक्ति अपनी वर्षगाँठ के दिन त्रिमधुर (घी, शहद, और शक्कर) के साथ खीर से होम करता है उसके जीवन में लक्ष्मी, आरोग्यता एवं कीर्ति बढ़ती है।

गुडूचीबकुलोत्थाभिः समिद्भिर्हवनं नृणाम् ॥ १० ॥ जन्मतापत्रयं रोगान् मृत्युं चापि विनाशयेत्।

जन्म नक्षत्र से ११ वें या २१ वें नक्षत्र में गुडूची एवं बकुल (मौलश्री) की समिधाओं से होम करने से मनुष्यों के रोग एवं अपमृत्यु दूर हो जाते हैं।

प्रत्यहं जुहुयाद्दूर्वा अपमृत्युविनष्टये ॥ ११ ॥

अपमृत्यु को नष्ट करने के लिये प्रतिदिन दूर्वाओं का हवन करना चाहिये।

किं बहूक्तेन सर्वेष्टं प्रयच्छति शिवो नृणाम्।

विशेष क्या कहें, भगवान् शिव मनुष्यों के सब मनोरथों को पूर्ण करते हैं।

अपामार्गसमिद्भिश्च सिद्धात्रैर्ज्वरनष्टये। दुग्धाक्तैरमृताखण्डैर्मासं होमोखिलाप्तये। इति महामृत्युञ्जयमन्त्रप्रयोगः।

ज्वर को नष्ट करने के लिये अपामार्ग (औंधा) की समिधाओं से हवन करना चाहिये और सब इच्छाओं की पूर्ति के लिये दूध में डुबोकर अमृता (गिलोय) के टुकड़ों से एक मास तक होम करना चाहिये। इति महा-मृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोग।

अथ दशाक्षररुद्रमन्त्रविधानम्।

मन्त्रो यथा (मन्त्रमहोदधौ): ॐ नमो भगवते रुद्राय इति दशाक्षरो मन्त्रः।

दशाक्षर रुद्रमन्त्र विधान: मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है: ॐ नमो भगवते रुद्राय। यह दशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग: अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य बौधायन ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ बौधायनर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ रुद्रदेवताय नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

प्रथमन्यास : ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वा शंतमयागिरिशंताभिचाकशीहि । इति शिखायाम् ।।१।।ॐअस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवा अधि । तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । इति शिरसि ।।२।। ॐ सहस्राणि सहस्रशोवाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि । इति ललाटे ।। ३ ।। ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऋतजाअद्रिजाऋतंबृहत् । इति भ्रुवोर्मध्ये ।। ४ ।। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । इति नेत्रयोः ।। ५ ।। ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशंताय च । इति कर्णयोः ।। ६ ।। ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो अश्वेषुरीरिषुः । मानोवीरान् रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे । इति नासिकयोः ।।७।। ॐ अवतत्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्यशल्यानांमुखांशिवोनः सुमनाभव । इति मुखे ।।८।। ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । इति कण्ठे ।। ९ ।। ॐ नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवꣳरुद्रा उपश्रिताः । तेषाꣳसहस्रयोजनेबधन्वानितन्मसि । इत्युपकण्ठे ।। १० ।। ॐ नमस्त आयुधायानाततायधृष्णवे । उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यांतवधन्वने । इति स्कन्धयोः ।। ११ ।। यातेहेतिर्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज । इति बाह्वोः ।। १२ ।। येतीर्थानिप्रचरंतिसृकाहस्तानिषङ्गिणः । तेषाꣳस० इति हस्तयोः ।। १३ ।। ॐसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः । भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवाय नमः । इत्यंगुष्ठयोः ।। १४ ।। वामदेवाय नमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमोरुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणायनमोबलविकरणाय नमः बलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः । इति तर्जन्योः ।। १५ ।। अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः । मध्यमयोः ।।१६।। ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् । इत्यनामिकयोः ।। १७ ।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोअस्तुसदाशिवोम् । इति कनिष्ठिकयोः ।। १८ ।। नमो वः करिकेभ्योदेवानाꣳहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्योनमो विक्षिणत्केभ्यो नमः आनिर्हतेभ्यः । इति हृदये।।१९।।नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यःश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमो विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवो नमः । इतिपृष्ठे ।। २० ।। नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशाञ्चपतये-

नमोनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमोनमः सष्पिञ्जरायत्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतये नमोनमोबभ्लुशाय । इति पार्श्वद्वये ।। २१ ।। ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनोविशल्योबाणवांऽउत । अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधि इति जठरे ।। २२ ।। ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्यजातः परिरेकआसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाविधेम । इति नाभौ ।। २३ ।। मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभवपरमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिव्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि । इति कट्याम् ।। २४ ।। येभूतानामधिपतयोविशखासः कपर्दिनः । तेषांꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि इति गुह्ये ।।२५।। जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः । सनः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः इति गुदे ।। २६ ।। मानोमहान्तमुत्तमानोअर्भकंमानउक्षन्तमुतमानउक्षितम् । मनोऽवधीः पितरम्मोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः । इति ऊर्वोः ।। २७ ।। एषतेरुद्रभागस्तंजुषस्वतेनावसेनपरोमूजवतोतीहि । अवततधन्वापिनाकहस्तः कृत्तिवासाः इति जानुनोः ।। २८ ।। येपथाम्पथिरक्षयऐलबृदाआयुर्युधः । तेषांꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्वासि । इति पादयोः ।।२९।। अध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषकअहीश्चसर्वाञ्जम्भयत्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव । इति कवचम ।।३०।। नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमोवर्मिणेच-व्वरूथिनेचनमः । श्रुतायचश्रुतसेनायचनमोदुन्दुभ्यायचा-हनन्यायचनमोधृष्णवे । इत्युप[1] कवचम् । ३१ ।। नमोस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे । अथोयेअस्यसत्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः । इति तृतीयनेत्रे ।।३२।। प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् । याश्चतेहस्तऽइषवः पराताभगवोव्वपः । इत्यस्त्रम् ।।३३।। इति प्रथमो न्यासः ।

दिग्बन्ध : यऽएतावन्तश्चभूयाꣳसश्चदिशोरुद्रावितस्थिरे । तेषांꣳसहस्रयोजनेवधन्वातिन्मसि । इति दिग्बन्धः ।। १ ।।

द्वितीयन्यास : ॐ ॐनमः शिरसि ।।१।। ॐ नं नमः नासिकायाम् ।।२।। ॐ मों नमः ललाटे ।। ३ ।। ॐ मं नमः मुखे ।। ४ ।। ॐ गं नमः कण्ठे ।। ५ ।। ॐ वं नमः हृदि ।। ६ ।। ॐ तें नमः दक्षस्तने ।। ७ ।। ॐ रुं नमः वामस्तने ।। ८ ।। ॐ द्रां नमः नाभौ ।। ९ ।। ॐ यं नमः पादयोः ।। १० ।। इति दशाङ्गन्यासोद्वितीयः ।। २ ।।

तृतीयान्यास : ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः । भवेभवेनातिभवेभवस्वमाम्भवोद्भवायनमः । इति पादयोर्न्यस्य ॐ हंसोहंसेतिब्रूयात्

---

१ कवचाद्विपरीतक्रममुपकवचम् ।

॥ १ ॥ ॐ वामदेवायनमोजेष्ठाय० । इति ऊर्वोर्न्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात् ॥२॥ ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्यो० इति हृदि विन्यस्य हंसोहंसेतिब्रूयात् ॥ ३ ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्महे० इति मुखे विन्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात् ॥ ४ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्याना० इति मूर्ध्नि विन्यस्य हंसोहंसेति ब्रूयात् ॥ ५ ॥ इति तृतीय-न्यासः ॥ ३ ॥

इस प्रकार तीनों न्यास करने के बाद सम्पुटीकरण करना चाहिये (दिशाओं में दिक्पालों का न्यास करना सम्पुट कहलाता है)। उसमें क्रम यह है :

सम्पुटीकरण : ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वतिनोमघवाधात्विन्द्रः । इति मन्त्रेण प्राच्यामिन्द्रं नमस्कुर्यात् ॥ १ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवह्नितमःशोशुचानोविश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् । इत्याग्नेयामग्निं प्रणमेत् ॥ २ ॥ ॐ सुगन्नः पन्थाम्प्रदिशन्नऽएहियोतिष्मध्ये-ह्यजरन्नआयुः । अपैतुमृत्युरमृतम्मऽआगाद्वैवस्वतोनोऽअभयंकृणोतु । इति दक्षिणस्यां यमं प्रणमेत् ॥ ३ ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु । इति नैर्ऋतिं प्रणमेत् ॥ ४ ॥ ॐ तत्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेय-जमानोहविर्भिः । अहेडमानोवरुणेहवोध्यु रुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः । इति पश्चिमायां वरुणं प्रणमेत् ॥ ५ ॥ ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् । वयोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिः सदानः । इति वायव्यां वायुं प्रणमेत् ॥ ६ ॥ ॐ व्वयꣳसोम व्रतेतवमनस्त-नूपुबिभ्रतः । प्रजावन्तःसचेमहि । इत्युदीच्यां कुबेरं प्रणमेत् ॥७॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्नवमवसेहूमहेव्वयम् । पूषानोयथावेदसामसद्-वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये । इत्यैशान्यां ईश्वरं प्रणमेत् ॥८॥ ॐ अस्मेरुद्रा-मेहनापर्वतासोवृत्र हत्येभरहूतौसजोषाः । यः शꣳस सतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्र-ज्ज्येष्ठाऽअस्म्माꣳऽअवन्तुदेवाः इत्यूर्ध्वं ब्रह्माणं प्रणमेत् ॥९॥ ॐ स्योनापृथिवि-नोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः इत्यधः पृथ्वीं प्रणमेत् ॥१०॥

एवं यं सम्पुटं कुर्यात्स स्यात्किल्बिषवर्जितः । तं दीप्यमानमीक्षन्ते प्रेतचौराद्युपद्रवाः । न पराभवितुं शक्ताः पलायन्ते विदूरतः ।

इस प्रकार जो साधक सम्पुट करता है वह पापरहित हो जाता है। उसके तेज को देखकर प्रेत एवं चोर आदि उपद्रवीजन उसे परास्त करने में स्वयं को असमर्थ पाकर दूर से ही भाग जाते हैं।

इस प्रकार सम्पुट करने के बाद चतुर्थ रक्षा न्यास करना चाहिये :

चतुर्थन्यास : ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्ठं यज्ञꣳ-समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ । इति गुह्ये ॥१॥ ॐ अबोध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वाऽइवप्रवया-मुज्जिहानाःप्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छ । इति जठरानले ॥ २ ॥ ॐ मूर्द्धा-नन्दिवोऽअरतिंपृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् । कविꣳ-सम्राजमतिथिञ्ज-नानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः । इति हृदये ॥ ३ ॥ ॐ मर्म्माणितेवर्म्मणा-छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्त-न्त्वानुदेवामदन्तु । इति मुखे ॥ ४ ॥ ॐ जातवेदायदिवापावकोसिविश्वतश्च-क्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्पात् संव्बाहुभ्यांधमतिसम्पतत्रैर्द्यावा-भूमीजनयन्देवऽएकः । इति शिरसि ॥५॥ इति चतुर्थो न्यासः ॥ ४ ॥

पञ्चमन्यास : ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैतिदैवं तदुसुप्तस्यतथैवैति । दूरङ्ग-मज्जोतिषञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु । इति हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः । यदपूर्वंयक्षमन्तः प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु । इति शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ यत्प्रज्ञान-मुतचेतो धृतिश्चयज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु । यस्मान्न ऋतेकिञ्चनकर्म्मक्रियते-तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु । इति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्वम् । येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसङ्कल्प-मस्तु । इति कवचायहुं ॥ ४ ॥ यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषियस्मिन्प्रतिष्ठितार-थनाभाविवाराः यस्मिंश्चित्तꣳ सर्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु । इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ सुषारथिरस्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वा-जिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु । इत्यस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति पञ्चमो न्यासः ॥ ५ ॥

इस प्रकार पाँचो न्यास करके पुनः षडङ्गन्यास करे :

षडङ्गन्यास : ॐ यज्जाग्रत इत्यादिशिवसङ्कल्पान्ते ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिपुरुषसूक्तान्ते शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अद्भ्यः सम्भृत इत्याद्युत्तरनारायणान्ते शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ आशुः शिशानइत्यप्रतिरथान्ते कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ विभ्राड्बृहदित्यादिसूक्तान्ते नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ नमस्तेरुद्रायमन्यव इत्यादिशतरुद्रियान्ते अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधियाँ करके साष्टाङ्ग प्रणाम करके इन आठ मन्त्रों से नमस्कार करे :

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत्। सदाधार-पृथिवींद्यामुतेमाङ्कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ यः प्राणतो० ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ३ ॥ ॐ महीद्यौः पृथिवीचन इमंयज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृताम्नोभरीमभिः ॥ ४ ॥ उपश्वाय० ५। अग्ने-नय० ६। आतेअग्ने० ७। इमंयमा० ८।

इन आठों ऋचाओं (ये सभी रुद्राष्टाध्यायी से ली गई हैं) को पढ़कर अपनी आत्मा में रुद्ररूप का ध्यान करना चाहिये।

अथ ध्यानम्। कैलासाचलसन्निभं त्रिनयनं पञ्चास्यमम्बायुतं नील-ग्रीवमहीशभूषणधरं व्याघ्रत्वचा प्रावृतम्। अक्षस्रग्वरकुण्डिकाभयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं गङ्गाम्भोविलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परम् ॥१॥

इति ध्यात्वा लिङ्गतोभद्रमण्डले सर्वतोभद्रमण्डले वा स्वेस्वे स्थाने मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवता आवाह्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त-पीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके लिङ्गतोभद्रमण्डल या सर्वतोभद्रमण्डल में अपने-अपने स्थानों पर मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं का आवाहन करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः।' इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठ शक्तियों की पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

पूर्वादिषु ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥३॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बल-विकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ पीठमध्ये। ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इस प्रकार नव पीठ शक्तियों की पूजा करे। उसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र (देखिये चित्र १२) में अरण्युत्तारणपूर्वक 'ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मक शक्तियुक्तायाऽनन्ताय योगपीठात्मने नमः' मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर उसे पीठ के बीच स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों द्वारा पद्धति मार्ग से पूजन करके देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां रुद्र मे देहि परिवार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर आवरण पूजा आरम्भ करे। उसमें क्रम इस प्रकार है :

पश्चिमादिचतुर्दिक्षु क्रमेण। ॐ सद्योजाताय नमः[१]। सद्योजातश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र। ॐ वामदेवाय नमः[२]। वामदेवश्रीपा० ॥२॥ ॐ अघोराय नमः[३]। अघोरश्रीपा० ॥ ३॥ ॐ तत्पुरुषाय नमः[४]। तत्पुरुषश्रीपा० ॥ ४ ॥ मध्ये ॐ ईशानाय नमः[५]। ईशानश्री० ॥५॥

इससे पञ्चमूर्तियों की पूजा करे, फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

फिर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ नन्दिने नमः[६]। नन्दिश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ महाकालाय नमः[७]। महाकालश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गणेश्वराय नमः[८]। गणेश्वरश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वृषभाय नमः[९]। वृषभश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भृङ्गिरिटये नमः[१०]। भृङ्गिरिटि-श्रीपा० ॥५॥ ॐ स्कन्दाय नमः[११]। स्कन्दश्रीपा० ॥६॥ ॐ उमायै नमः[१२]। उमाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चण्डेश्वराय नमः[१३]। चण्डेश्वरश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

फिर षोडशदलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ अनन्ताय नमः[१४]। अनन्तश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्माय नमः[१५]। सूक्ष्मश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिवाय नमः[१६]। शिवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ एकपादाय नमः[१७]। एकपादश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ एकरुद्राय नमः[१८]। एकरुद्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः[१९]। त्रिमूर्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः[२०]। श्रीकण्ठश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वामदेवाय नमः[२१]। वामदेवश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ ज्येष्ठाय नमः[२२]। ज्येष्ठश्री० ॥ ९ ॥ ॐ श्रेष्ठाय नमः[२३]। श्रेष्ठश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ रुद्राय नमः[२४]। रुद्रश्री० ॥ ११ ॥ ॐ कालाय नमः[२५]। कालश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ कलविकरणाय नमः[२६]। कलविकरणश्रीपा० ॥१३॥ ॐ बलाय नमः[२७]। बलश्रीपा० ॥१४॥ ॐ बलविकरणाय नमः[२८]। बलविकरणश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ बलप्रमथनाय नमः[२९]। बलप्रमथनश्रीपा० ॥ १६ ॥

इससे षोडश देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद चतुर्विंशद्दलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ अणिमायै नमः[३०]। अणिमाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ महिमायै नमः[३१]। महिमाश्री० ॥ २ ॥ ॐ लघिमायै नमः[३२]। लघिमाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गरिमायै नमः[३३]। गरिमाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ प्राप्त्यै नमः[३४]। प्राप्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रकाम्यायै नमः[३५]। प्रकाम्याश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ईशितायै नमः[३६]। ईशिताश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वशितायै नमः[३७]। वशिताश्री० ॥ ८ ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः[३८]। ब्राह्मीश्रीपा० ॥९॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[३९]। माहेश्वरीश्रीपा० ॥१०॥ ॐ कौमार्यै नमः[४०]। कौमारीश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[४१]। वैष्णवीश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ वाराह्यै नमः[४२]। वाराहीश्री० ॥ १३ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः[४३]। इन्द्राणीश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ चामुण्डायै नमः[४४]। चामुण्डाश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ चण्डिकायै नमः[४५]। चण्डिकाश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः[४६]। असिताङ्गभैरवश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः[४७]। रुरुभैरवश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः[४८]। चण्डभैरवश्रीपा० ॥१९॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः[४९]। क्रोधभैरवश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः[५०]। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ कालभैरवाय नमः[५१]। कालभैरवश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः[५२]। भीषणभैरवश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ संहारभैरवाय नमः[५३]। संहारभैरवश्रीपा० ॥ २४ ॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

फिर द्वात्रिंशद्दलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ भवाय नमः[५४]। भवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ शर्वाय नमः[५५]। शर्वश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ईशानाय नमः[५६]। ईशानश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ पशुपतये नमः[५७]। पशुपतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रुद्राय नमः[५८]। रुद्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ उग्राय नमः[५९]। उग्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ भीमाय नमः[६०]। भीमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महादेवाय नमः[६१]। महादेवश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ अनन्ताय नमः[६२]। अनन्तश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ वासुकये नमः[६३]। वासुकिश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ तक्षकाय नमः[६४]। तक्षकश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ कुलीरकाय नमः[६५]। कुलीकरश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः[६६]। कर्कोटकश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ शङ्खपालाय नमः[६७]। शङ्खपालश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ कम्बलाय नमः[६८]। कम्बलश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ अश्वतराय नमः[६९]। अश्वतरश्रीपा०[१] ॥ १६ ॥ ॐ वैन्याय

१ इति नागाष्टकम्।

नमः[७०]। वैन्यश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ पृथवे नमः[७१]। पृथुश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ हैहयाय नमः[७२]। हैहयश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ अर्जुनाय नमः[७३]। अर्जुनश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ शाकुन्तलेयाय नमः[७४]। शाकुन्तलेयश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ भरताय नमः[७५]। भरतश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ नलाय नमः[७६]। नलश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ रामाय नमः[७७]। रामश्रीपा०[१] ॥ २४ ॥ ॐ हिमवते नमः[७८]। हिमवच्छ्रीश्रीपा० ॥ २५ ॥ ॐ निषधाय नमः[७९]। निषधश्रीपा० ॥ २६ ॥ ॐ विन्ध्याय नमः[८०]। विन्ध्यश्रीपा० ॥ २७ ॥ ॐ माल्यवते नमः[८१]। माल्यवच्छ्रीपा० ॥ २८ ॥ ॐ पारियात्राय नमः[८२]। पारियात्रश्रीपा० ॥ २९ ॥ ॐ मलयाय नमः[८३]। मलयश्रीपा० ॥ ३० ॥ ॐ हेमकूटाय नमः[८४]। हेमकूटश्रीपा० ॥३१॥ ॐ गन्धमादनाय नमः[८५]। गन्धमादनश्रीपा०[२] ॥३२॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ८५ ॥

फिर चालीस दलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ इन्द्राय नमः[८६]। इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अग्नये नमः[८७]। अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ यमाय नमः[८८]। यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ निर्ऋतये नमः[८९]। निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः[९०]। वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वायवे नमः[९१]। वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुबेराय नमः[९२]। कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः[९३]। ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ शच्यै नमः[९४]। शचीश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ स्वाहायै नमः[९५]। स्वाहाश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ वाराह्यै नमः[९६]। वाराहीश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ खड्गिन्यै नमः[९७]। खड्गिनीश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ वारुण्यै नमः[९८]। वारुणीश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ वायव्यै नमः[९९]। वायवीश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ कौबेर्यै नमः[१००]। कौबेरीश्रीपा० ॥१५॥ ॐ ईशान्यै नमः[१०१]। ईशानीश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ वज्राय नमः[१०२]। वज्रश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ शक्तये नमः[१०३]। शक्तिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ दण्डाय नमः[१०४]। दण्डश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ खड्गाय नमः[१०५]। खड्गश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ पाशाय नमः[१०६]। पाशश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ अंकुशाय नमः[१०७]। अंकुशश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ गदायै नमः[१०८]। गदाश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः[१०९]। त्रिशूलश्रीपा० ॥ २४ ॥ ॐ ऐरावताय नमः[११०]। ऐरावतश्रीपा० ॥ २५ ॥ ॐ मेषाय नमः[१११]। मेषश्रीपा० ॥ २६ ॥ ॐ महिषाय नमः[११२]। महिषश्रीपा० ॥ २७ ॥ ॐ प्रेताय नमः[११३]। प्रेतश्रीपा० ॥ २८ ॥ ॐ मकराय नमः[११४]। मकरश्रीपा० ॥ २९ ॥ ॐ हिरणाय नमः[११५]। हरिणश्रीपा०

१ इति नृपाष्टकम्। २ इति गिर्यष्टकम्।

॥ ३० ॥ ॐ नराय नमः[११६]। नरश्रीपा० ॥ ३१ ॥ ॐ वृषभाय नमः[११७]। वृषभश्रीपा० ॥ ३२ ॥ ॐ ऐरावताय नमः[११८]। ऐरावतश्रीपा० ॥ ३३ ॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः[११९]। पुण्डरीकश्रीपा० ॥ ३४ ॥ ॐ वामनाय नमः[१२०]। वामनश्रीपा० ॥ ३५ ॥ ॐ कुमुदाय नमः[१२१] कुमुदश्रीपा० ॥ ३६ ॥ ॐ अञ्जनाय नमः[१२२]। अञ्जनश्रीपा० ॥ ३७ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः[१२३]। पुष्पदन्तश्रीपा० ॥ ३८ ॥ ॐ सार्वभौमाय नमः[१२४]। सार्वभौमश्रीपा० ॥३९॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः[१२५]। सुप्रतीकश्रीपा० ॥ ४० ॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

फिर भूपुर में पूर्वादि क्रम से पुनः इन्द्रादि दश दिक्पालों (१२६-१३५) और वज्रादि उनके आयुधों (१३६-१४५) की पूजा करे। फिर भूपुर के भीतर :

आग्नेयाम् ॐ विरूपाक्षाय नमः[१४६]। विरूपाक्षश्रीपा० ॥ १ ॥ नैर्ऋते ॐ विरूपाय नमः[१४७]। विरूपश्रीपा० ॥२॥ वायव्याम् ॐ पशुपतये नमः[१४८]। पशुपतिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ऐशान्याम् ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः[१४९]। ऊर्ध्वलिङ्ग-श्रीपा० ॥ ४ ॥

इससे पूजा करे। फिर भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से :

ॐ विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्रफणमण्डिताय शेषाय नमः[१५०]। शेष-श्रीपा० ॥१॥ ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चाशत्फणायोत्तुङ्गकायाय तक्षकाय नमः[१५१]। तक्षकश्रीपा० ॥२॥ ॐ विप्रवर्णाय कुंकुमरूपाय सहस्रफणमण्डिताय अनन्ताय नमः[१५२]। अनन्तश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणमण्डितायोत्तुङ्गकाय वासुकये नमः[१५३]। वासुकिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणमण्डिताय शङ्खपालाय नमः[१५४]। शङ्खपालश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ वैश्यवर्णाय कृष्णरूपाय पञ्चशतफणमण्डितायोत्तुङ्गकायाय महापद्माय नमः[१५५]। महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शूद्रवर्णाय कृष्णरूपाय त्रिशत्फणमण्डिताय कम्बलाय नमः[१५६]। कम्बलश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ शूद्रवर्णाय श्वेतरूपाय त्रिशत्फणयुक्ताय कर्कोटकाय नमः[१५७]। कर्कोटक-श्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार सप्तमावरण की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति सप्तमावरण ॥ ७ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से नीराजन (आरती) पर्यन्त पूजा करके हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे :

'ॐ नमो विरञ्चिविष्णवीशभेदन परमात्मने। सर्गसंस्थितिसंहार-व्यापृतव्यक्तमूर्तये ॥ १ ॥ नमश्चतुर्धाप्रोद्भूतभूतभीतात्मनो भुवः। भूरि-भारार्तिसंहर्त्रे भूतनाथाय शूलिने ॥ २ ॥ विश्वग्रासाय विकसत्कालकूट-विषाशिने । तत्कालाङ्काङ्कितग्रीवनीलकण्ठाय ते नमः ॥ ३ ॥ नमो ललाटनयनप्रोल्लसत्कृष्णवर्त्मने । ध्वस्तस्मरनिरस्ताधियोगिध्याताय शम्भवे ॥ ४ ॥ नमो देहार्द्धकान्ताय दग्धदक्षाध्वराय च । चतुर्वर्गेष्ट सिद्ध्यर्थदायिने मायिनेऽर्णव ॥ ५ ॥ स्थूलाय मूलभूताय शूलवारित-विद्विषे । कालहन्त्रे नमश्चन्द्रखण्डमण्डितमौलये ॥ ६ ॥ दिग्वाससे कपर्दान्तभ्रान्ताहिशरदिन्दवे। देवदैत्योरगेन्द्राद्रिमौलिघृष्टांघ्रये नमः ॥७॥ भस्मासक्ताय भक्ताय भुक्तिमुक्तिप्रदायिने। सकृद्व्यक्तस्वरूपाय शङ्कराय नमोनमः ॥ ८ ॥ नमोन्धकान्तकरिपवेऽसुरद्विषे नमोस्तु ते द्विरदवराव-भेदिने। विषोल्लसत्फणिकुलबद्धमूर्तये नम सदा वृषवरवाहनाय ते ॥ ९ ॥ वियन्मरुद्धुतवहवायुकुम्भिनीमखेशरव्यमृतमयूखमूर्तये। नमः सदा नर-कायावभेदिने भवेह नो भव भयभङ्ग कृद्विभो ॥ १० ॥'

इति रुद्र स्तवेन स्तुत्वा साष्टाङ्ग प्रणम्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। अयुतहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत। 'प्रयोगान् पूर्वमन्त्रोक्तान्। कुर्वीतात्र दशाक्षरे। दशाक्षरं भजन् विप्रो रुद्रजापी भवेत्सदा ॥ १ ॥ एवमर्चन्महादेवं पञ्चाङ्गन्यास-पूर्वकम्। दशाक्षरजपासक्तो न सीदेत्स्वेष्टसाधने ॥ २ ॥ मनोहराणि गेहानि सुन्दर्यो वामलोचनाः। धनमिच्छापूरणान्तं लभते शिवसेवनात् ॥ ३ ॥' इति मन्त्र महोदधिशान्तिसारादिप्रोक्तं दशाक्षररुद्रमन्त्रविधानम्।

इस रुद्र स्तव से स्तुति करके साष्टाङ्ग प्रणाम करके जप करे। इसका पुरश्चरण दश लाख जप है। दश हजार होम और तत्तद्दांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : इस दशाक्षर मन्त्र से भी पूर्वोक्त महामृत्युञ्जय मन्त्र द्वारा बताये गये काम्य प्रयोग करने चाहिये। इस दशाक्षर मन्त्र का भजन करता हुआ विप्र सदैव रुद्रजापी हो जाता है। इस प्रकार पञ्चाङ्ग न्यास करके महादेवजी का पूजन करते हुये दशाक्षर मन्त्र का जप करनेवाला साधक अपने अभीष्ट की सिद्धि में कष्ट नही पाता। वह भगवान् शिव की आराधना से सुन्दर मकान, लावण्य-

वती स्त्री तथा यथेच्छ धन प्राप्त करता है। इति मन्त्र महोदधि-शान्ति सारादि प्रोक्त दशाक्षर रुद्र मन्त्र विधान।

अथ त्वरितरुद्रमन्त्रपुरश्चरण प्रयोगः।

हेमाद्रि शान्तिरत्न में मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ यो रुद्रोग्नौयोऽप्सुयऔषधीषुयोरुद्रोविश्वाभुवनाविवेश तस्मै-रुद्रायनमोस्तु' इत्येकत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य त्वरितरुद्रमन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। त्वरितरुद्रसंज्ञको देवता। नमः इति बीजम्। अस्तु इति शक्तिः। त्वरितरुद्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ आथर्वणर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ त्वरितरुद्रसंज्ञक देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ नमः इति बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ अस्तु इति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ योरुद्रः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नौ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ योऽप्सु मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ य औषधीषु अनामि-काभ्यां नमः ॥४॥ ॐ यो रुद्रोविश्वाभुवनाविवेश कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ तस्मैरुद्रायनमोस्तु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ यो रुद्रो हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ अग्नौ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ योऽप्सु शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ य औषधीषु कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ यो रुद्रो विश्वाभुवनाविवेश नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ तस्मै रुद्राय नमोस्तु अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

पदन्यास : ॐ यः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ रुद्रः जङ्घयोः ॥ २ ॥ ॐ अग्नौ जानुनोः ॥ ३ ॥ ॐ यः ऊर्वोः ॥ ४ ॥ अप्सु गुल्फयोः ॥ ५ ॥ ॐ यः मेढ्रे ॥ ६ ॥ ॐ औषधीषु नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ यः उदरे ॥ ८ ॥ ॐ रुद्रः हृदये ॥ ९ ॥ ॐ विश्वा कण्ठे ॥ १० ॥ ॐ भुवना मुखे ॥ ११ ॥ ॐ विवेश नासिकायाम् ॥ १२ ॥ ॐ तस्मै नेत्रयोः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राय भ्रुवोः ॥ १४ ॥ ॐ नमः ललाटे ॥ १५ ॥ ॐ अस्तु शिरसि ॥ १६ ॥ इति पदन्यासः।

वर्णन्यास : ॐ यः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ रुद्रः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ अग्नौ नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ यः कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ अप्सु नासिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ यः मुखे ॥ ६ ॥ ॐ औषधीषु बाह्वोः ॥ ७ ॥ ॐ यः हृदये ॥ ८ ॥ ॐ रुद्रः नाभौ ॥ ९ ॥ ॐ विश्वा गुह्ये ॥ १० ॥ ॐ भुवना अपाने ॥ ११ ॥ ॐ विवेश ऊर्वोः ॥ १२ ॥ ॐ तस्मै जानुनोः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राय जङ्घयोः ॥ १४ ॥ ॐ नमः गुल्फयोः ॥ १५ ॥ ॐ अस्तु चरणयोः ॥ १६ ॥ इति वर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके :

ॐ एषतेरुद्रभागःसहस्स्वस्राम्बिकयातंजुषस्व स्वाहा।

इत्यादि मन्त्र द्वारा शुभदा मुद्रा (अयं गुल्यग्राणि मूले तु कृत्वांगुष्ठेन पीडयेत। सा मुद्रा शुभदा प्रोक्ता सैव शान्तिप्रदायिनी। इति शुभदा मुद्रा) प्रदर्शित करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्।

ॐ रुद्रं चतुर्भुजं देवं त्रिनेत्रं वरदाभयम्। दधानमूर्ध्वं हस्ताभ्यां शूलं डमरुमेव च ॥ १ ॥ अङ्कसंस्थामुमां पद्मे दधानं च करद्वये। आद्ये करद्वये कुम्भं मातुलुङ्गं च बिभ्रतम् ॥ २ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य भेदपक्षे शिवे पीठे गन्धादि-पूजनं कृत्वा अधःशाय्येकभक्ताशो जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरण विंशति-सहस्रजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। अधःशाय्येकभक्ताशी ब्रह्मचारी हविष्यभुक्। अयुते द्वे जपेत्सर्वं प्रत्यहं पूजयेच्छिवम् ॥ १ ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन तद्दशांशेन तर्पणम्। मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजयेत् ॥ २ ॥ एवं कृते तु सिद्धिः स्यात्फलार्थं तु ततो जपेत्। पुरश्चरणमेवं तु कृत्वा सम्पूज्य शङ्करम् ॥ ३ ॥ जपेत्त्वरितरुद्रं तु सर्वकामसमृद्धये। श्रीकामः शान्तिकामो वा जपेल्लक्ष मतन्द्रितः ॥ ४ ॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। फिर भेदपक्ष में शिव पीठ में गन्धादि से पूजन करके भूमि पर सोते और एक समय भोजन करते हुये साधक जप करे। इसका पुरश्चरण २० हजार जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि भूमिशायी, एक-कालभोजी, ब्रह्मचारी, हविष्यभुक् साधक को चाहिये कि वह २० हजार मन्त्र जप करके प्रतिदिन शिव की पूजा करे। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने पर फलसिद्धि

होती है। इसीलिये फलार्थ जप करे। इस प्रकार शिव की पूजा करके पुरश्चरण करे। आलस्यरहित होकर सब मनोरथों की सिद्धि के लिये श्रीकाम या शान्तिकाम साधक त्वरित रुद्र का एक लाख जप करे।

बिल्वसमिद्भिः श्रीकामः शान्तिकामः शमीमयैः। जुहुयादाज्यसम्मिश्रैस्तर्पणं मार्जनं ततः ॥ ५ ॥ जप्त्वा लक्षं सुपुत्रार्थी पायसं जुहुयात्ततः। वित्तार्थी श्रीफलैर्होममायुष्कामस्तु दूर्वया ॥ ६ ॥ तिलैराज्येन सम्मिश्रैस्तेजस्कामो घृतेन वै। व्रीहिभिः पशुकामस्तु राष्ट्रकामस्तु वै यवैः ॥ ७ ॥ पायसं सर्वकामेन होतव्यं शर्करान्वितम्। मध्वक्तान्याम्रपत्राणि तीव्रज्वर विनाशिना ॥ ८ ॥ हिमभूतज्वरार्थं तु गुडूचीभिर्हुनेद् ध्रुवम्। सर्वरोगविनाशाय सूर्यस्याभिमुखो जपेत् ॥ ९ ॥ अयुते द्वे जपाहोमः कार्योर्कसमिधा शुभः। औदुम्बरैरन्नकामस्तेजस्कामस्तु बादरैः ॥ १० ॥ अपामार्गसमिद्धोमाद् भूतबाधा विनश्यति। ग्रहबाधाविनाशाय जपेदश्वत्थसन्निधौ ॥११॥ लवणान्वितदध्याक्तास्तीक्ष्णाग्राश्वत्थसम्भवाः। हूयन्ते समिधः शुष्काः स्वाहान्तं मन्त्रमुच्चरेत् ॥ १२ ॥ दशपञ्चाहुतीर्हुत्वा गच्छगच्छेत्युदीरयेत्। यावद्धोमो बलिर्देयः पुरुषाहारसम्मितः ॥ १३ ॥ एवं कृते प्रमुच्येत पुमान् स्त्री वा महाग्रहात्। जुहुयाच्छतपत्त्राणि संहृष्टो जयमाप्नुयात् ॥ १४ ॥ लाजाहोमेन कन्यार्थी कन्या प्राप्नोति रूपिणीम्। लाजाश्च मधुसम्मिश्राः श्वेतपुष्पाणि वा पुनः ॥ १५ ॥ हूयन्ते हरिते देशे तस्य विश्वं वशे भवेत्। वामाङ्गमुत्तमं कार्यं स्त्रीवशित्वे विचक्षणैः ॥ १६ ॥ हस्तश्वामात्यशान्त्यर्थं तिलैश्चाज्येन संयुतैः। होमस्थाने तु संस्थाप्य कुम्भमेकं जलान्वितम् ॥ १७ ॥ मन्त्रं जप्त्वा सहस्रं तु कुम्भं स्पृश्य प्रयत्नतः। अभिषेकं तु तेषां वै शालां प्रोक्ष्य प्रदक्षिणम् ॥ १८ ॥ ग्रहग्रामादिशान्तिस्तु सर्वैः कार्या तु पूर्ववत्। वास्तुपूजा प्रकर्तव्या प्राच्यां दिशि पदे शुभे ॥ १९ ॥ ईशानाय बलिः कार्यः पशूनां पतये तथा। एवं कृते पशूनां तु प्रजानां शान्तिमाप्नुयात् ॥ २० ॥ अद्भुतेषु च सर्वेषु पशूनां ग्रामबाह्यतः। उपविश्य जपेद्रुद्रं त्वरितं बहुभिः सह ॥ २१ ॥ होमः पलाशसमिधाः कर्त्तव्यो घृतसंयुजाः। ईशानाय बलिः कार्यो यस्यां दिशि तद्भुतम् ॥ २२ ॥ तदाशापतये चैव पशूनां पतये तथा।

श्रीकाम साधक घी से सिक्त बेल की समिधाओं से तथा शान्तिकाम साधक घी से सिक्त शमी की समिधाओं से होम करे तथा तर्पण और मार्जन करके सुपुत्रार्थ एक लाख जप करके खीर का होम करे। धनार्थी बेल से, आयुष्कामी दूब से, राज्य चाहनेवाला तिल से, तेज चाहने वाला घी मिश्रित धानों से, पशु चाहनेवाला तथा राष्ट्रकामी जब से और सर्वकामार्थी खीर में शक्कर मिलाकर होम करे। तीव्र ज्वर का विनाश चाहनेवाले को मधुसिक्त आम के पत्तों का होम करना चाहिये। शीतज्वर के नाश के लिये निश्चित रुप से गिलोय से होम करना चाहिये। सर्व रोगों के विनाश के लिये सूर्य के सम्मुख जप करे। मदार की समिधाओं के साथ जपा बीस हजार होम शुभ होता है। अन्न चाहने वाले को गूलर की समिधाओं से तथा तेज चाहने वाले को बेर की समिधाओं से होम करना चाहिये। अपामार्ग की समिधाओं से होम करने से भूतबाधा का विनाश होता है। ग्रहबाधा के विनाश के लिये पीपल के नीचे जप करना चाहिये। नमक युक्त दही से सिक्त और तीक्ष्ण अग्रभागवाली अश्वत्थ (पीपल) की समिधाओं की स्वाहान्त मन्त्र से आहुती दी जानी चाहिये। पन्द्रह आहुतियाँ देकर 'गच्छ गच्छ' यह बोलना चाहिये। पुरुष के आहार के बराबर होम या बलि देना चाहिये। ऐसा करने से पुरुष हों या स्त्री सभी भारी ग्रहबाधा से मुक्त हो जाते हैं। जो प्रसनचित्त से गुलाब के फूल का होम करता है वह जय प्राप्त करता है। कन्या की इच्छा से लावा से होम करने वाला सुन्दरी कन्या को प्राप्त करता है। मधुमिश्रित लावा और श्वेत पुष्प का हरित देश में होम करनेवाले के वश में सारा संसार हो जाता है। बुद्धिमानों को चाहिये कि स्त्री वशीकरण में वामाङ्ग को उत्तम बनायें। हाथी, घोड़े और मन्त्रियों की शान्ति के लिये घी से युक्त तिलों द्वारा होम करना चाहिये। होम स्थान पर जल से पूर्ण एक कुम्भ स्थापित करके प्रयत्नपूर्वक कुम्भ का स्पर्श करते हुये एक हजार मन्त्र के जप द्वारा उनका अभिषेक करना चाहिये और कुम्भशाला का प्रोक्षण करके प्रदक्षिणा करनी चाहिये। ग्रह और ग्रामादि की शान्ति के सभी कार्य पूर्ववत् हैं। शुभ समय में पूर्व दिशा में वास्तु पूजा करनी चाहिये। ईशान के लिये और पशुपति के लिए बलि देनी चाहिये। ऐसा करने से पशुओं को और प्रजाओं को शान्ति प्राप्त होती है। पशुओं की सभी अद्भुत दैवी विपत्ति में गाँव के बाहर बहुत लोगों के साथ बैठकर त्वरित रुद्र का जप और घी से लिप्त पलाश की समिधाओं से होम करना तथा ईशान में बलि देना चाहिये। जिस दिशा में वह अद्भुत दृष्य दिखाई दिया हो उस दिशा के स्वामी तथा पशुपति को भी बलि देनी चाहिये।

वृष्टिकामो जपेल्लक्षं तिलैर्होमो घृतान्वितैः ॥ २३ ॥ बलिपूजा प्रकर्तव्या शिवस्य वरुणस्य च। सर्वस्मिन्नपि चैवार्थे त्वरितस्य जपो

भवेत् ॥ २४ ॥ अयुतद्वयजाप्यैस्तु यावल्लक्षं ततोधिकम् । एवं कृते तु सिद्धिः स्यान्निष्कामः प्राप्नुयाच्छिवम् ॥ २५ ॥ ऐहिकामुष्मिकान्भोगान्भुक्त्वा सायुज्यमाप्नुयात् । इत्येकत्रिंशदक्षरत्वरितरुद्रमन्त्र पुरश्चरणम् ।

वृष्टि चाहने वाले को एक लाख जप तथा घी से युक्त तिलों का होम करना, तथा शिव और वरुण की पूजा करनी और उन्हें बलि देनी चाहिये । प्रत्येक कार्य में त्वरित रुद्र का जप करना चाहिये । बीस हजार जप करने वालों को एक लाख या इससे अधिक जप करने से विशेष सिद्धि प्राप्त होती है और साधक निष्काम होकर शिव को प्राप्त होता है । वह इस लोक और परलोक में भोगों को भोगकर देवता का सायुज्य प्राप्त कर लेता है । इति एकत्रिंशदक्षर त्वरितरुद्रमन्त्र पुरश्चरण ।

अथ दक्षिणामूर्तिमन्त्रप्रयोगः ।

अथ वक्ष्ये मन्त्ररत्नं समस्तपुरुषार्थदम् । अवाप्ुर्ये जप्तेन दिव्यं ज्ञानं मुनीश्वराः ॥ १ ॥ तत्रादौ षट्‌त्रिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः (शारदातिलके) मन्त्रो यथा ।

दक्षिणामूर्ति मन्त्र प्रयोग : अब मैं समस्त पुरुषार्थों के फल को देने वाले उस मन्त्र रत्न को कहूंगा जिसके जप से मुनीश्वरों ने दिव्य ज्ञान प्राप्त किया था । आरम्भ में ३६ अक्षरों के मन्त्र का प्रयोग बताया जा रहा है । शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने । ध्यानैकनिरताङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे ह्रीं ॐ' इति षट्‌त्रिंशदक्षरमन्त्रः ।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य दक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य शुकऋषिः । अनुष्टुप छन्दः । दक्षिणामूर्तिशम्भुदेवता चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ शुकऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दक्षिणामूर्तिशम्भुदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरताङ्गाय ह्रीं ॐ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं शम्भवे ह्रीं ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये ह्रीं ॐ हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरताङ्गाय ह्रीं ॐ कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं शम्भवे ह्रीं ॐ अस्त्राय फट् । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः भाले ॥ २ ॥ ॐ दं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ क्षि नमः वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ णां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ मूं नमः वामकर्णे ॥ ६ ॥ ॐ तं नमः दक्षिणगण्डे ॥ ७ ॥ ॐ यें नमः वामगण्डे ॥ ८ ॥ ॐ तुं नमः नासिकयोः ॥ ९ ॥ ॐ नमः भ्यं मुखे ॥ १० ॥ ॐ वं नमः दक्षिणहस्तमूले ॥ ११ ॥ ॐ टं नमः दक्षकूर्परे ॥ १२ ॥ ॐ मूं नमः दक्षिणमणिबन्धे ॥ १३ ॥ ॐ लं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ १४ ॥ ॐ नि नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ १५ ॥ ॐ वां नमः वामहस्तमूले ॥ १६ ॥ ॐ सिं नमः वामकूर्परे ॥ १७ ॥ ॐ नें नमः वाममणिबन्धे ॥ १८ ॥ ॐ ध्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ १९ ॥ ॐ नैं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २० ॥ ॐ कं नमः गले ॥ २१ ॥ ॐ नि नमः स्तनयोः ॥ २२ ॥ ॐ रं नमः हृदि ॥ २३ ॥ ॐ तां नमः नाभौ ॥ २४ ॥ ॐ गां नमः कट्याम् ॥ २५ ॥ ॐ यं नमः गुह्ये ॥ २६ ॥ ॐ नं नमः दक्षिणपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ मों नमः दक्षिणजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ रुं नमः दक्षिणगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ द्रां नमः दक्षिणापादमूले ॥ ३० ॥ ॐ यं नमः दक्षिणपादःगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ शं नमः वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ भ नमः वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ वें नमः वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ ॐ नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ३६ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने । ध्यानैकनिरताङ्गाय नमो रुद्राय शम्भवे ह्रीं ॐ :

इस मन्त्र से मूर्द्धा से पाद पर्यन्त व्यापक न्यास करे ।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

ॐ हिमाचलतटे रम्ये सिद्धिकिन्नरसेविते । विविधद्रुमशाखाभिः सर्वतो वारितातपे ॥ १ ॥ सुपुष्पितैर्लताजालैराश्लिष्टकुसुमद्रुमैः । शिलाविवरनिर्गच्छन्निर्झरानिलसेविते ॥ २ ॥ गायद्भृङ्गाङ्गनासंघे नृत्यद्बर्हिकदम्बके । कूजत्कोकिलसङ्घेन मुखराकृतदिङ्मखे ॥ ३ ॥ परस्परविनि-

मुक्तमात्सर्यमृगसेविते। आद्यैः शुकाद्यैर्मुनिभिरजस्रं समधिष्ठिते ॥ ४ ॥
पुरन्दरमुखैर्देवैः सेवायातैर्विलोकितम्। वटवृक्षं महोच्छायं पद्मरागफलो-
ज्ज्वलम् ॥ ५ ॥ गारुत्मतमयैः पत्रैर्निबिडैरुपशोभितम्। नवरत्नमया-
कल्पैर्लम्बमानैरलंकृतम् ॥ ६ ॥ सजलैः स्थलजैः पुष्पैरामोदिभिरलंकृतम्।
शृण्वद्भिर्वेदशास्त्राणि शुकवृन्दैर्निषेवितम् ॥ ७ ॥ संसारतापविच्छेद-
कुशलच्छायमद्भुतम्। विचिन्त्य तस्य मूलस्थे रत्नसिंहासने शुभे ॥ ८ ॥
आसीनममिताकल्पं शरच्चन्द्रनिभाननम्। स्तूयमानं मुनिगणैर्दिव्य
ज्ञानाभिलाषिभिः ॥ ९ ॥ संस्मरेज्जगतामाद्यं दक्षिणामूर्तिमव्ययम् ॥ १० ॥
कैलासाद्रिनिभं शशाङ्कशकलस्फूर्जज्जटामण्डितं नासालोकनतत्परं त्रिन-
यनं वीरासनाध्यासितम्। मुद्राटङ्ककुरङ्गजानुविलसत्पाणिं प्रसन्नाननं
कक्षाबद्धभुजङ्गमं मुनिवृतं वन्दे महेशं परम् ॥ ११ ॥

इति ध्यात्वा शिवपञ्चाक्षरोदिते पीठे पीठपूजां विधाय तामेव आवरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात्।

इससे ध्यान करके शिव पञ्चाक्षरोक्त पीठ पर पूजा करके उसी पर आवरण पूजा करने के बाद जप करे।

अस्य पुरश्चरणमयुतद्वयाधिकं त्रिलक्षं जपः। तथा च। अयुतद्वय-
संयुक्तं गुणलक्षं जपेन्मनुम्। दशांशं तिलैः शुद्धैर्जुहुयात्क्षीरसंयुतैः ॥ १ ॥
पञ्चाक्षरोदिते पीठे विधानेन प्रपूजयेत्। उपचारैः समुत्पन्नैः पाद्याद्यैः
परमेश्वरम् ॥ २ ॥ एवं कृतपुरश्चर्यः सिद्धमन्त्रो भवेत्सुधीः भिक्षाहारो
जपेन्मासं मनुमेनं जितेन्द्रियः ॥ ३ ॥ नित्यं सहस्रमष्टार्द्धं परं विन्दति
वाङ्मयम्। त्रिवारं जप्तमेतेन मनुना सलिलं पिबेत् ॥ ४ ॥ नित्यशो-
दक्षिणामूर्तिं ध्यायन्साधकसत्तमः। शास्त्रव्याख्यानसामर्थ्यं लभते
वत्सरान्तरे ॥ ५ ॥

इसका पुरश्चरण तीन लाख बीस हजार जप है। कहा भी गया है कि तीन लाख बीस हजार मन्त्र का जप करना चाहिये। उसका दशांश दूध से युक्त शुद्ध तिलों का होम करना चाहिये। पञ्चाक्षरोक्त पीठ पर विधानपूर्वक पाद्यादि उपलब्ध उपचारों से परमेश्वर की पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार पुरश्चरण करने से सुधी साधक का मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जितेन्द्रिय होकर साधक भिक्षा का आहार करता हुआ एक मास तक निरन्तर साढ़े आठ हजार जप करे तो वाङ्मय को प्राप्त करता है। इस मन्त्र से तीन बार जप करके अभिमन्त्रित जल को पीना चाहिये प्रतिदिन दक्षिणामूर्ति का ध्यान करता हुआ साधक सालभर में शास्त्र तथा व्याख्यान का सामर्थ्य प्राप्त करता है।

ब्राह्मीसैन्धवसिद्धार्थवचाकोष्ठकणोत्पलैः। सुगन्धिसंयुतैः कल्कैः शृतं
ब्राह्मीरसे घृतम् ॥ ६ ॥ मनुनानेन सञ्जप्तमयुतं साधु साधितम्। निपीतं
कविताकान्तिरक्षायुःश्रीधृतिप्रदम् ॥ ७ ॥ इति षट्त्रिंशदक्षरदक्षिणा-
मूर्तिमन्त्रप्रयोगः।

ब्राह्मी, सेंधानमक, पीली सरसो, मीनबच, कूठ, पीपल, मोथा, दालचीनी तेजपात, छोटी इलायची तथा नागकेसर : इन द्रव्यों के कल्क के साथ ब्राह्मी बूटी के रस में पकाये गये घी को इस मन्त्र के दस हजार जप से अभिमन्त्रित करके पीने से मनुष्य कविता करने की क्षमता, कान्तिपूर्ण शरीर, आयु, लक्ष्मी तथा धैर्य धारण करने की शक्ति प्राप्त करता है। इति षट्त्रिंशदक्षर दक्षिणामूर्ति मन्त्र प्रयोग।

अथ द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणामूर्तिमन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में २२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा।' इति-
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

विनियोग : अस्य दक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य चतुर्मुख ऋषिः। गायत्री छन्दः। वेदव्याख्यानतत्परदक्षिणामूर्तिर्देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ चतुर्मुखर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दक्षिणामूर्तये देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ आं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ई ॐ तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ऊं ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ॐ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ औं ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ अः ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ आं ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ईं ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऊं ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ॐ कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ औं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ अः ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इति न्यासविधिं कृत्वा पूर्ववत् वटमूलस्थं मन्त्रदैवतं सञ्चित्यध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास विधि करके पूर्ववत् बरगद के मूल में स्थित मन्त्र देवता का चिन्तन करके ध्यान करे :

स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकीमक्षमालाममृतकलशविद्याज्ञानमुद्राः कराग्रैः । दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं विधृतविविधभूषं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके शिव पञ्चाक्षरोक्त पीठ पर पूजा करके आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है (दक्षिणामूर्ति पूजन यन्त्र देखिये चित्र १३)

षट्कोणकेसरो में : अग्निकोणे ॐ आं ॐ हृदयाय नमः[१] ॥ १ ॥ नैर्ऋते ॐ ईं ॐ शिरसे स्वाहा[२] ॥ २ ॥ वायव्ये ॐ ऊं ॐ शिखायै वषट्[३] ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ ऐं ॐ कवचाय[४] हुं ॥ ४ ॥ देवतापूर्वे ॐ औं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ॥ ५ ॥ देवपश्चिमे ॐ अः ॐ अस्त्राय फट्[६] ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची दिशा की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ सरस्वत्यै नमः[७] ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः[८] ॥ २ ॥ ॐ सनकाय नमः[९] ॥ ३ ॥ ॐ सनन्दनाय नमः[१०] ॥ ४ ॥ ॐ सनत्कुमाराय नमः[११] ॥ ५ ॥ ॐ शुकाय नमः[१२] ॥६॥ ॐ व्यासाय नमः[१३] ॥७॥ ॐ गणेशाय नमः[१४] ॥१४॥

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में :

ॐ सिद्धाय नमः[१५] ॥ १ ॥ ॐ गन्धर्वाये नमः[१६] ॥ २ ॥ ॐ योगीन्द्राय नमः[१७] ॥ ३ ॥ ॐ विद्याधराय नमः[१८] ॥ ४ ॥

इससे पूजा करे । फिर भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा उसके बाहर वज्रादि आयुधों की पूजा करे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् अस्य पुरश्चरणं लक्षात्मको जपः । तथा च । लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं ब्रह्मचारि व्रते स्थित. । जुहुयात्सघृतैः पद्मैर्दशांशं संस्कृतेऽनले ॥ १ ॥ इत्थं पूजादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन्साधकोत्तमः । वल्लभो जायते वाचां वाचस्पतिरिवापरः ॥२॥ मन्त्रेणानेन सञ्जप्तविशुद्धैः सलिलैः सुधीः । अभिषिञ्चेत्स्वशिरसि श्रियमारोग्यमाप्नुयात् ॥ ३ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजन करके जप करे । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । कहा भी गया है कि ब्रह्मचारी और व्रत में स्थित रहकर एक लाख मन्त्र का जप करे । तदनन्तर संस्कृत अग्नि में जप का दशांश घी से लिप्त कमलों का होम करे । इस प्रकार पूजा आदि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर श्रेष्ठ साधक वाग्देवी का प्रिय पात्र होकर दूसरा वाचस्पति हो जाता है । यदि इस मन्त्र के जप से

अभिमन्त्रित विशुद्ध जल से साधक अपने शिर पर अभिषिञ्चन करे तो वह लक्ष्मी तथा आरोग्य प्राप्त करता है ।

कण्ठमात्रे जले स्थित्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकम् । प्रत्यहं मण्डलादर्वाक्कवीनामग्रणीर्भवेत् ॥ ४॥ गौर्या पार्श्वस्थया सार्द्धं श्रीकामी चिन्तयन्विभुम् । अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं भूयसीं श्रियमाप्नुयात् ॥ ५ ॥ भुञ्जानः प्रयतो मन्त्री गोमूत्रे श्रृतमोदनम् । भिक्षान्नमथ वा मन्त्रमयुतद्वितयं जपेत् ॥ ६ ॥ अश्रुतान्वे दशास्त्रादीन् व्याचष्टे नात्र संशयः । सिद्धगन्धर्वमुनिभिर्योगीन्द्रैरपि सेविते ॥ ७ ॥ ज्ञानवागर्थिनां प्रीत्यै कथितौ मन्त्रनायकौ । इति द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणामूर्ति मन्त्र प्रयोगः ।

जो कण्ठ पर्यन्त जल में स्थित होकर प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व एक हजार मन्त्र का जप करता है वह कवियों में अग्रणी होता है । श्रीकामी जो व्यक्ति पार्वती के साथ स्थित शिव का ध्यान करता हुआ दश हजार मन्त्र का जप करता है वह प्रचुर लक्ष्मी प्राप्त करता है । जो जितेन्द्रिय रहते हुये गोमूत्र में पकाये भात अथवा भिक्षान्न को खाता हुआ बीस हजार मन्त्र का जप करता है वह बिना पढ़े वेदशास्त्रादि को सुनाने लगता है, इसमें कोई संशय नहीं है । सिद्ध, गन्धर्व, मुनि तथा योगीन्दों द्वारा सेवित ज्ञान और वाणी की प्राप्ति के लिये उत्सुक साधक के लाभार्थ ही ये दोनों मन्त्र कहे गये हैं । इति द्वात्रिंशदक्षर दक्षिणामूर्ति मन्त्र प्रयोग ।

अथ पार्थिवलिङ्गविधानम् ।

(मन्त्रमहोदधौ) अथ प्रातःकृत्य-क्रिया । नद्यादौ स्नात्वा स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वोपविश्य आचम्य प्राणानायम्य ।

मन्त्र महोदधि में कहा गया है कि प्रातःकृत्य करने के बाद नदी आदि में स्नान करके पूर्वमुख या उत्तरमुख बैठकर आचमन तथा प्राणायाम करके यह संकल्प करे :

देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीमहादेवप्रसन्नार्थममुककामनार्थं वा अमुकसंख्यापरिमितपार्थिवलिङ्गपूजनं करिष्ये ।

इससे संकल्प करके इस प्रकार न्यास आदि करे :

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्लां पृथिव्यै नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

एवमेव करन्यासं कुर्यात् । ततो मृदमानीय शर्करा बहिष्कृत्य शुद्ध-पात्रे निधाय 'वं' इति सुधाबीजेन मृदमासिच्य पिण्डं कृत्वाग्रे संस्थाप्य तस्मादल्पमृदं गृहीत्वा 'ॐ ह्रीं गं ग्लौं गणपतये ग्लौं गं ह्रीं' इति मन्त्रेण बालगणेश्वरं कृत्वा पीठे संस्थाप्य लिङ्गं कुर्यात् । तद्यथा ।

इसी प्रकार करन्यास भी करे । उसके बाद शुद्ध स्थान से मिट्टी लाकर उसमें से कङ्कड़-पत्थर निकाल कर शुद्ध पात्र में रखकर 'वं' इस सुधाबीज से मिट्टी को भिगाकर पिण्ड बनाकर आगे रक्खे । फिर उसमें से थोड़ी मिट्टी लेकर 'ॐ ह्रीं गं ग्लौं गणपतये ग्लौं गं ह्रीं' इस मन्त्र से बाल गणेश्वर बना कर पीठ पर स्थापित करके इस प्रकार लिङ्ग बनावे :

'ॐ नमो हराय' इति मन्त्रेण बिभीतकफलमात्रमृदं गृहीत्वा 'ॐ नमो महेश्वराय' इति मन्त्रेण अंगुष्ठमानादधिकं वितस्तिमात्रावधि यथेष्टं लिङ्गं कृत्वा 'ॐ नमः शूलपाणये' इति मन्त्रेण पीठे लिङ्गं स्थापयेत् । एवं यथासंख्यं लिङ्गं कृत्वा अवशिष्टमृदा 'ॐ ऐंहुंक्षुंक्लीं कुमाराय नमः' इति मन्त्रेण कुमारं कृत्वा लिङ्गपंक्त्यन्ते संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कुर्यात् । ततः ॐ नमः पिनाकिने इहागच्छ इह तिष्ठ इति लिङ्गे शिवमावाह्य ध्यायेत् ।

'ॐ नमो हराय' इस हरमन्त्र से बहेड़े के फल के बराबर मिट्टी लेकर 'ॐ नमो महेश्वराय' इस महेश्वर मन्त्र से अँगूठे के मान से अधिक तथा एक वितस्ति (बित्ता) मात्र तक यथेष्ट लिङ्ग बनाकर 'ॐ नमः शूलपाणि' इस मन्त्र से पीठ पर लिङ्ग को स्थापित करे । इस प्रकार यथासंख्या (संकल्पोक्त संख्या में) लिङ्गों को बनाकर अवशिष्ट मिट्टी से 'ॐ ऐं हुं क्षुं क्लीं कुमाराय नमः' इस मन्त्र से कुमार को बनाकर लिङ्ग की पंक्ति के अन्त में स्थापित करके प्रतिष्ठा करे । इसके बाद 'ॐ नमः' पिनाकिने इहागच्छ इह तिष्ठ' इस मन्त्र से लिङ्ग में शिव का आवाहन करके इस प्रकार ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । दक्षाङ्कस्थं गजपतिमुखं प्रामृशन्दक्षदोष्णा वामोरुस्थं नगपतनयाङ्के गुहं चापरेण । इष्टाभीती परकरयुगे धारयन्निन्दुकान्ति-मव्यादस्मांस्त्रिभुवननतो नीलकण्ठस्त्रिनेत्रः ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात् । तद्यथा । 'ॐ नमः पशुपतये' इति मन्त्रेण स्नापयित्वा शतरुद्रियमन्त्रेण अभिषेकं कुर्यात् । ततः 'ॐ नमः शिवाय' इति मन्त्रेण गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यान्य-र्पयेत । इति पूजां कृत्वावरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा । पूर्वादिवामावर्तेन ।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करके इस प्रकार पाद्यादि

पूजन करे । 'ॐ नमः पशुपतये' इस मन्त्र से स्नान करा कर शतरुद्रिय मन्त्रों से अभिषेक करे । इसके बाद 'ॐ नमः शिवाय' इस मन्त्र से गन्धपुष्प-धूपदीप और नैवेद्य अर्पित करे । इस प्रकार पूजा करके आवरण पूजा करे । पूर्वादि से वामावर्त क्रम से :

पूर्वे ॐ सर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥ ऐशान्ये ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ॥ २ ॥ उत्तरे ॐ रुद्राय तेजोमूर्तये नमः ॥ ३ ॥ वायव्ये ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥ ४ ॥ पश्चिमे ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥ ६ ॥ दक्षिणे ॐ महादेवाय चन्द्रमूर्तये नमः ॥ ७ ॥ आग्नेये ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥ ८ ॥

इत्यष्टौ मूर्तीः सम्पूज्य पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्या-युधानि च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य तिस्रः प्रदक्षिणाः कृत्वा स्तुतिपाठेन स्तुत्वा 'ॐ नमश्शिवाय' इति षडक्षरं यथाशक्ति जपित्वा ॐ नमो महादेवेति मन्त्रेण विसृजेत् । ततो गणेशगुहौ स्वस्वमन्त्राभ्यामेवाखिलोपचारैः सम्पूज्य विसृजेत् । तथा च । पूजयेत्कार्यवशतो लक्षावधि सहस्रतः । लक्षपार्थिवलिङ्गानां पूज-नाद्भुवि मुक्तिभाक् ॥ १ ॥ लक्षं तु गुडलिङ्गानां पूजनात्पार्थिवो भवेत् । या नारी गुडलिङ्गानि सहस्रं पूजयेत्सती ॥ २ ॥ भर्तुः सुखमखण्डं सा प्राप्नोति पार्वती भवेत् । नवनीतस्य लिङ्गानि सम्पूज्येष्टमवाप्नुयात् ॥३॥ भस्मनो गोमयस्यापि वालुकायास्तथा फलम् । क्रीडन्ति पृथुका भूमौ कृत्वा लिङ्गं रजोमयम् ॥४॥ पूजयन्ति विनोदेन तेपि तस्युः क्षितिनायकाः ।

इस प्रकार अष्टमूर्तियों की पूजा करके पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करे । इस प्रकार आवरण पूजा करने के बाद धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके तीन प्रदक्षिणा करे और उसके बाद स्तुतिपाठ से स्तुति करके 'ॐ नमशिवाय' इस षडक्षर मन्त्र को यथाशक्ति जप करके 'ॐ नमो महादेवाय' इस मन्त्र से विसर्जन करे । इसके बाद गणेश और गुह की उनके अपने-अपने मन्त्रों से सभी उपचारों से पूजा करके उनका विसर्जन करे । कहा भी गया है कि कार्यवश एक हजार से लाख तक पूजा करनी चाहिये । एक लाख पार्थिव लिङ्गों के पूजन से मनुष्य इसी लोक में मुक्ति का भागी हो जाता है । गुड़ के एक लाख शिवलिङ्गों की पूजा से मनुष्य राजा हो जाता है । जो सती स्त्री गुड़ के एक हजार लिङ्गों की पूजा करती है वह अपने पति के अखण्ड सुख को प्राप्त कर अन्त में पार्वती हो जाती है । मक्खन के लिङ्गों की पूजा

करके मनुष्य यथेष्ट फल प्राप्त करता है। इसी प्रकार राख, गोबर तथा बालू के शिवलिङ्गों के पूजन का भी फल मिलता है। पृथुक आदि भूमि में धूल से लिङ्ग बना कर खेलते तथा विनोद में ही उसका पूजन करते थे और उसी के प्रभाव से राजा बन गये।

प्रातर्गोमयलिङ्गानि नित्यं यस्त्रीणि पूजयेत् ॥ ५ ॥ बृहतीबिल्वयोः पत्रैर्नैवेद्यं गुडमर्पयेत् । एवं मासत्रयं कुर्वन्ननल्पं लभते धनम् ॥ ६ ॥

जो स्त्री प्रातःकाल गोबर के लिङ्गों का भटकटैया और बेल पत्रों से पूजन करती है तथा नैवेद्य में गुड़ चढ़ाती है वह इस प्रकार तीन मास तक पूजन करने पर प्रचुर धन प्राप्त करती है।

एकादशैव लिङ्गानि गोमयोत्थानि यो यजेत् । प्रातर्मध्याह्नयोः सायं निशीथे प्रतिवासरम् ॥ ७ ॥ स सर्वाः सम्पदो यायात् षण्मासादेवमाचरन् ।

जो मनुष्य प्रदिदिन प्रातः मध्याह्न, साय एवं अर्धरात्रि—इन चारों समयों में ११-११ गोबर के लिङ्गों का पूजन करता है वह ६ मास तक इस प्रकार पूजन करने से समस्त सम्पत्तियाँ प्राप्त कर लेता है।

एकादश यजेन्नित्यं शालिपिष्ट मयानि सः ॥८॥ लिङ्गानि मासमात्रेण स कल्मषचयं दहेत् ।

चावल के आटे से ११ लिङ्ग बनाकर जो व्यक्ति प्रतिदिन पूजन करता है वह एक मास तक इस प्रकार पूजन करने से पापराशि को जल देता है।

स्फाटिकं पूजितं लिङ्गमेनोनिकरनाशनः ॥ ९ ॥ सर्वकामप्रदं पुंसामुदुम्बरसमुद्भवम् । रेवाश्मजं सर्वसिद्धिप्रदं दुःखविनाशनम् ॥ १० ॥ यथाकथञ्चिल्लिङ्गस्य पूजा नित्यकृतेष्टदा । यो यजेत्पिचुमन्दोत्थैः पत्रैर्गोमयजं शिवम् ॥ ११ ॥ क्रुद्धं महेश्वरं ध्यायेत्स पराजयते रिपून् । यो लिङ्गं पूजयेन्नित्यं शिवभक्तिपरायणः ॥१२॥ मेरुतुल्योपि तस्याशु पापराशिर्लयं व्रजेत् । दोग्ध्रीणां तु गवां लक्षं यो दद्याद्वेदपाठिने ॥ १३ ॥ पार्थिवं योर्चयेल्लिङ्गं तयोर्लिङ्गार्चको वरः । चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां पौर्णमास्यां विधुक्षये ॥ १४ ॥ पयसा स्नापयेल्लिङ्गं धरादानफल व्रजेत् । लिङ्गपूजां विधायाग्रे स्तोत्रं वा शतरुद्रियम् ॥ १५ ॥ प्रजपेत्तन्मना भूत्वा शिवे स्वं विनिवेदयेत् । यत्संख्याकं यजेल्लिङ्गं तन्मितं होममाचरेत् ॥ १६ ॥ आज्यान्वितैस्तिलैरग्नौ घृतैर्वा पायसेन वा । शिवमन्त्रेण तस्यान्ते ब्राह्मणान् भोजयेच्छतम् ॥ १७ ॥ एवं कृते समस्तेष्टसिद्धिर्भवति निश्चितम् ॥१८॥ इति पार्थिवलिङ्गपूजनविधानम् । इति शिबपटलः समाप्तः ।

स्फटिक के लिङ्ग की पूजा करने से सभी पापसमूह नष्ट हो जाते हैं। उदुम्बर से बने लिङ्ग की पूजा से सर्वकामनायें पूर्ण होती हैं। नर्मदेश्वर सर्वसिद्धिप्रद तथा दुःखविनाशक है। जिस किसी भी प्रकार के लिङ्ग की प्रतिदिन पूजा करना अभीष्ट फलदायक माना गया है। जो मनुष्य गोबर का लिङ्ग बनाकर क्रुद्ध महेश्वर का ध्यान कर नीम के पत्तों से पूजन करता है वह शत्रुओं को परास्त कर देता है। जो व्यक्ति भगवान् शिव की भक्ति में तत्पर होकर प्रतिदिन लिङ्ग का पूजन करता है उसके सुमेर तुल्य बड़े से बड़े पापों के समुदाय भी नष्ट हो जाते हैं। जो वेद पाठी ब्राह्मणों को दूध देनेवाली एक लाख गायों का दान करते हैं तथा जो अन्य पार्थिव लिङ्गों का पूजन करते हैं ऐसे व्यक्ति लिङ्ग का पूजन न करनेवालों से श्रेष्ठ होते हैं। चतुर्दशी को, अष्टमी को, पूर्णमासी को तथा अमावस्या को जो लिङ्ग को दूध से स्नान कराता है वह भूमिदान का फल प्राप्त करता है। लिङ्ग पूजा करके उसके आगे शिव में चित्त लगाकर शतरुद्रिय स्तोत्र का जप करते हुये अपने को शिव को निवेदित करना चाहिये। जितनी संख्या में लिङ्ग की पूजा की जाय उतनी ही संख्या में होम करना चाहिये। घी से युक्त तिलों से गाय के घी से अथवा खीर से अग्नि में शिव मन्त्र (ॐ नमः शिवाय) से होम करना चाहिये। उसके बाद सौ ब्राह्मणों को भोजन करना चाहिये। ऐसा करने से हर प्रकार की सिद्धि होती है यह निश्चित है। इति पार्थिव लिङ्ग पूजन विधान। शिव पटल समाप्त।

अथ शिवपूजापद्धतिप्रारम्भः ।

तत्रादौ मन्त्रानुष्ठानोपयोगि पूर्वकृत्यम् । चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसम्प्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं सम्पाद्य जप स्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् । ततः पुरश्चरणात्प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्ताङ्गभूतविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्मणामशक्तो ततः प्रायश्चित्ताङ्गभूतपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात । तत्र मन्त्रः ।

शिव पूजा पद्धति : प्रारम्भ में मन्त्रानुष्ठानोपयोगी पूर्वकृत्य करना चाहिये। जिस दिन चन्द्रमा और नक्षत्र बलवान हों उस शुभ दिन उत्तम

मुहूर्त्त में तीर्थ, पुण्यक्षेत्र, निर्जन स्थान आदि में अनुष्ठान के योग्य भूमि को प्राप्त कर वहाँ मार्जन, दहन, खनन एवं सम्प्लावन आदि स्मृति कथित शोधन उपायों से शुद्धि करके जपस्थान के चारों दिशाओं में कोस या दो कोस के चौकोर क्षेत्र को आहार-विहार के लिये परिकल्पित करके जप के स्थान की भूमि में कूर्म शोधन करना चाहिये। इसके बाद पुरश्चरण के तीन दिन पहले क्षौर आदि करा कर प्रायश्चित्ताङ्गभूत विष्णुपूजा, विष्णुतर्पण, विष्णुश्राद्ध, होम तथा चान्द्रायण व्रत करे। व्रत में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करे। यदि इन सभी कर्मों में असमर्थ हो तो प्रायश्चित्ताङ्गभूत पञ्चगव्य का प्राशन करे। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत्। तद्दिने उपवासः कर्त्तव्यः। अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेनैकभक्तव्रतं वा कुर्यात्। पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुत गायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा।

यह कहकर मूलमन्त्र को पढ़कर प्रणव से पञ्चगव्य का पान करे। उस दिन उपवास करना चाहिये। अगर असमर्थ हो तो दुग्धपान या एक समय हविष्यान्न का भोजन करे। पुरश्चरण से पूर्व दिन स्वदेह शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे :

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणशिवपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्यायुतजपमहं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य गायत्र्यायुतं जपेत्। ततो।

इससे सङ्कल्प करके दश हजार गायत्री का जप करे। उसके बाद :

गायत्र्याचार्यर्षिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥

इति तर्पणं कृत्वा ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं च विचारयेत्। तद्यथा। स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः।

इससे तर्पण करके उस दिन रात में देवता की उपासना करके इस प्रकार शुभाशुभ स्वप्नों का विचार करे : स्नानादि करके विष्णु के चरण कमलों का

स्मरण करके कुशादि की शय्या पर यथासुख स्थित होकर शिव की प्रार्थना करे उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥२॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्। ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्। अथ वा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्। इति पूर्वकृत्यम्।

इस मन्त्र से एक सौ आठ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय। उसके बाद रात में देखे गये स्वप्न को प्रातःकाल गुरु को बतलावे अथवा स्वयं विचार करे। इति पूर्वकृत्य।

अथ प्रातःकृत्यम् पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य शिरसि सहस्रदलपङ्कजे कोटीन्दुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत्।

प्रातः कृत्य : पुरश्चरण के दिन श्रेष्ठ साधक प्रातःकाल से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शयन गृह से बाहर निकल कर हाथ-पैर धोकर आचमन करके रात के वस्त्रों का परित्याग कर अन्य वस्त्रों को धारण करके शुद्ध आसन पर बैठकर सहस्रदल कमल में करोड़ों चन्द्रमा के प्रकाश से पूर्ण पीठ पर आसीन श्रीगुरु का ध्यान करे :

'आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपंनिजबोधरूपम्। योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥'

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके :

'प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरन्ततः। यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥'

इत्यनेन मन्त्रेण सर्वं गुरवे विनिवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा शिवप्रातःस्मरणं कुर्यात्। शिवप्रातःस्मरणं यथा।

इस मन्त्र से सब कुछ गुरु को निवेदित करके उनकी आज्ञा लेकर शिवजी का इस प्रकार प्रातः स्मरण करे :

प्रातःस्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।

खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥१॥
प्रातर्भजामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तकाद्यं वेदान्तवेद्यमखिलं पुरुषं महान्तम् ।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ३ ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति । ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥

प्रातःकाल उठकर शिवजी का ध्यान करके जो इन तीनों श्लोकों को प्रतिदिन पढ़ते हैं वे अनेक जन्मों के सञ्चित दुखों से मुक्त होकर शिवजी के धाम को चले जाते हैं ।

इति प्रातःस्मरणं कृत्वा गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरुं समर्पयेम् । अथाजपाजपकसङ्कल्पः संक्षेपतः ।

इस प्रकार प्रातः स्मरण करके गुरु, मन्त्र, देवता तथा अपने आप में एकता की भावना करके अजपाजप गुरु को समर्पित करे । अजपाजप सङ्कल्प संक्षेप में इस प्रकार है :

'आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के । वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥१॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः । षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः । सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च ह्येतानि विनियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः । हंसोपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शम्भुः ॥ ४ ॥'

इति पठित्वा अहोरात्रोच्चरित षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकमजपा गायत्रीमन्त्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि । इत्युक्त्वाऽष्टोत्तरशतावृत्ति हंसगायत्रीं जपेत् । हंसगायत्रीमन्त्रो यथा ।

यह पढ़कर 'रात-दिन में उच्चरित इक्कीस हजार छः सौ श्वास और निश्वासात्मक अजपा गायत्री जप को श्रीगणेश, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जीवात्मा परमात्मा तथा श्रीगुरु को यथासंख्या समर्पित करता हूं' यह कहकर एक सौ-आठ हंस गायत्री का जप करे । हंस गायत्री मन्त्र इस प्रकार है :

हरिः 'ॐ हंसोहंसस्यविद्महेहंसोहंसस्यधीमहि । हंसोहंस प्रचोदयात् ।'
यह जप करके :

'ॐ त्रैलोक्यचैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव । प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ।'

इस प्रकार प्रार्थना करके भूमि की प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥'

इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पदं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् । इति प्रातःकृत्यम् ।

इससे प्रार्थना करके श्वास के अनुसार भूमि पर पैर रखकर (अर्थात् बायाँ या दाहिना जो श्वास चलता हो उसी के अनुसार पहले बायाँ या दाहिना पाँव भूमि पर रखकर) बाहर जाय । इति प्रातःकृत्य ।

ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते देशे उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरःप्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषं च कृत्वा दन्तधावनं कुर्यात् । तद्यथा ।

उसके बाद ग्राम के बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त स्थान में उत्तराभिमुख और बिना जूता आदि पहने और शिर को वस्त्र से ढंक कर मलविमोचन करके मिट्टी तथा जल से यथासंख्या शौच करके हाथ-पैर धोकर कुल्ला करके इस प्रकार दातुन करे :

आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमस्य द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ।

आम, चम्पा, अपामार्ग आदि में से किसी एक की बारह अंगुल दातुन लेकर यह प्रार्थना करे :

ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥

इति सम्प्रार्थ्य ॐ 'ह्रीं तडिति स्वाहा' इति मन्त्रेण काष्ठं छित्वा ॐ 'क्लींकामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इत्येनेन दन्तान् संशोध्य 'ऐं' मन्त्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे नि क्षिपेत् । ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् । तद्यथा ।

इस प्रकार प्रार्थना करके 'ॐ ह्रीं तडिति स्वाहा' इस मन्त्र से दातुन को काटकर 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इस मन्त्र से दाँतो को साफ करके 'ॐ ऐं' इस मन्त्र से जिह्वा को छीलकर दातुन धोकर नैर्ऋत्य कोण में शुद्ध स्थान पर फेंक दे। इसके बाद मूलमन्त्र से मुख का प्रक्षालन करके आचमन करे और इस प्रकार स्नान करे :

गङ्गायमुनाद्यभावे नदीतडागादिकं गत्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धति-मार्गेण तीर्थस्नानं मङ्गलस्नानं च कुर्यात्। अशक्तश्चेद्गृहस्नानं कुर्यात्। तत्र प्रयोगः।

गङ्गा या यमुना आदि के अभाव में किसी नदी या तालाब पर जाकर सर्वदेवोपयोगि पद्धति मार्ग से तीर्थस्नान और मङ्गलस्नान करे। अशक्त हो तो घर पर ही स्नान करे उसमें प्रयोग यह है :

तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषित-शीतोदकेन। तद्यथा। ताम्रादिवृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मन्त्रः।

बासी जल से नहीं बल्कि कुएँ से तत्काल निकाले जल से या किञ्चित गरम जल से इस प्रकार स्नान करे : ताम्रादि के बड़े पात्र में जल रखकर तीर्थों का आवाहन करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥ १॥ ॐ गङ्गे न यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ २॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि। एहि गङ्गे नमस्तुभ्यंसर्वतीर्थ समन्विते॥३॥'

इति मन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य 'ॐ ऋतं च सत्यम्' इति मन्त्रेणाभि-मन्त्र्य स्नायात्। एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पन्नवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

इन मन्त्रों से तीर्थों का आवाहन करके 'ॐ ऋत च सत्य' इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके स्नान करे। इस प्रकार स्नान करके सूखे कपास के बने वस्त्र को धारण करके सूर्य को अर्घ्य देवे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते॥ १॥

इति मन्त्रेणार्घ्यं दत्वा स्नायी वस्त्रं परिपीड्याचम्य शैवं पञ्चत्रिपु-पुण्ड्रं वैष्णवं द्वादशोर्ध्वपुण्ड्रं च तिलकं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात्। इति तिलकं कृत्वा नित्यनैमित्तिकं समाप्य द्वारपूजनं कुर्यात्।

इस मन्त्र से अर्घ्य देकर स्नान किया हुआ साधक भीगे वस्त्र को निचोड़ कर आचमन करके यदि शैव हो तो पञ्च त्रिपुण्ड्र और वैष्णव हो तो द्वादश ऊर्ध्व त्रिपुण्ड्र तथा तिलक सर्वदेवोपयोगी पद्धति के अनुसार करे। इस प्रकार तिलक करने के बाद नित्य और नैमित्तिक कार्य समाप्त करके द्वारपूजा करे :

अथ द्वारपूजनम्। गृहद्वारमागत्य मूलेन फडिति द्वारं सम्प्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम्। ॐ गं गणपतये नमः॥ १॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः॥ २॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः।॥ ३॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः॥४॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः॥ ५॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्॥ ६॥ इति पूजयेत्।

द्वारपूजा : घर के द्वार पर आकर मूलमन्त्र में फट् जोड़ कर इससे द्वार का प्रोक्षण करके वहाँ दक्षिण शाखा में ॐ गं गणपतये नमः॥ १॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः॥ २॥ बामशाखा में 'ॐ वं बटुकाय नमः॥ ३॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः॥ ४॥ और द्वार के ऊपर 'ॐ सं सरस्वत्यै नमः॥ ५॥ तथा देहली पर 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्'॥ ६॥ इन मन्त्रों से पूजा करे।

इति द्वारपूजनं कृत्वा क्षेत्रं कीलयेत्। तथा च जपस्थाने गत्वा 'ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये। मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धि-मेति च॥ १॥' इति मन्त्रेणभूमिं संग्राह्य अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यत-मस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्। इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितान्।

क्षेत्र कीलन : इस प्रकार द्वारपूजन करके क्षेत्र कीलन करे। जपस्थान पर जाकर 'ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरण सिद्धये। मयेयं गृह्यते भूमि-र्मन्त्रोयं सिद्धिमेति च' इस मन्त्र से भूमि का संग्रहण करके पीपल, गूलर तथा पलाश में से किसी एक के काष्ठ को लेकर वितस्ति (बित्ता) परिमाण की दश कीलक बनाकर उनको 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके :

'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥ २॥'

इति मन्त्रेण दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत्। ततस्तेषु 'ॐ सुदर्श-नायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलान् सम्पूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य जपस्थानमध्ये गणेश-

कूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालांश्च सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषाभक्तबलिं दत्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् । तत्र मन्त्रः ।

इस मन्त्र से दशों दिशाओं में एक एक कील को गाड़े । इसके बाद उनमें 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक कील की पूजा करके वहीं पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों का आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजा करके जपस्थान के बीच गणेश, कूर्म, अनन्त, वसुधा तथा क्षेत्रपाल की पूजा करके दिक्पालों क्षेत्रपालों तथा गणपतियों को उड़द तथा भात की बलि देकर उसके बाहर भूत बलि देवे । उसमें मन्त्र यह है :

'ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः । मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः । ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥'

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् । ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा :

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में बाहर उड़द तथा भात की बलि देवे । फिर बाँये हाथ की अँगुलियों से अर्घ्यजल को छिड़क कर पुष्पाञ्जलि लेकर:

'ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् । सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु नान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥'

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा हस्तपादौ प्रक्षाल्याचमेत् । इति क्षेत्रकीलनम् ।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर हाथ-पैर धोकर आचमन करे । इति क्षेत्र कीलन ।

अथ प्रयोगविधानम् ।

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्यं तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् । यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीपस्थापनं च कुर्यात् । यत्र बहवः जापकास्त्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मन्त्रत्रयेण त्रीन्

दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत् । तद्यथा ।

प्रयोग विधान :

इस मन्त्र से मण्डप के अन्दर प्रोक्षण करके वहाँ पर आसनभूमि पर कूर्मशोधन करना चाहिये । जहाँ पर जपकर्ता एक ही हो वहाँ कूर्ममुख पर बैठकर जप करे तथा वहीं दीपस्थान भी करे । जहाँ पर जपकर्त्ता बहुत हों वहाँ कूर्ममुख पर दीपक को रखना चाहिये । इस प्रकार कूर्मशोधन करके वहाँ आसन के नीचे जल आदि से त्रिकोण बना कर वहाँ 'ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इन मन्त्रों से गन्ध, अक्षत तथा पुष्पों से पूजन करके उसके ऊपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म तथा उसके भी ऊपर कम्बल आदि का आसन बिछाकर स्थापित तीनों आसनों के ऊपर क्रम से 'ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इन तीन मन्त्रों से क्रमशः तीन-तीन दर्भों को प्रत्येक आसन पर रक्खे । इस प्रकार आसन की स्थापना करके उस पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर आसन का इस प्रकार शोधन करे :

विनियोग : ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलञ्छन्दः । आसने विनियोगः ।

'ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेणासनं प्रोक्षयेत् । ततः मूलेन शिखां बद्ध्वा ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य प्राणानायम्य ।

इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करे । इसके बाद मूलमन्त्र से शिखा को बांध कर 'ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इन मन्त्रों से तीन आचमन और प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुक देवशर्माहं स्वमहादेवामुकमन्त्रसिद्धिप्रतिबन्धकाऽशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमन्त्रसिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालपर्यन्तममुकमन्त्रस्य इयत्संख्याजपतद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशमार्जनतद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मण भोजनरूपपुरश्चरण (केवलजपरूपपुरश्चरणं वा) महं करिष्ये ।

इति सङ्कल्प्य । 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं कुर्यात् । ततो भूतशुद्धिस्वप्राणप्रतिष्ठामन्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासान् कुर्यात् ।

इससे सङ्कल्प करके 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से तीन बार ताली बजाकर दिग्बन्धन करे । उसके बाद भूतशुद्धि, स्वप्राणप्रतिष्ठा, अन्त मातृका बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति तथा संहार मातृका न्यास सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करके प्रयोगोक्त न्यास करे ।

अथ पीठ पूजनम् । पीठाद्रौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिङ्गतोभद्रमण्डले वा स्ववामे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पीठमध्ये ।

पीठपूजन : पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में या लिङ्गतोभद्र मण्डल में अपने बायें ओर श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिण में ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्य में स्वेष्ट देवतायै नमः ॥ ३ ॥ इन मन्त्रों से नमन करके पीठ के बीच में :

ॐ मं मण्डुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ इति पूजयेत । आग्नेयाम् ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्याम् ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्याम् ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं सविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ वि विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥२९॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥

ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥

इति मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः सम्पूज्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् । तद्यथा ।

इस प्रकार मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की पूजा करके प्रयोगोक्त नव पीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा देवे । फिर उसे स्वच्छ वस्त्र से पोछ कर आसन मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके उसमें इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करे :

देशकालौ संकीर्त्य मम महादेवनूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

यह सङ्कल्प करके इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करे :

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानिच्छन्दांसि । क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवताः । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

इससे जल छिड़कने के बाद हाथों से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्य महादेवसपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः ।

पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्य महादेवसपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः ।

पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्य महादेवसपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।

पुनः ॐ आंह्रींक्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं अस्य महादेवसपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु नमः स्वाहा ।

इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य यः प्राणतो निमिषतोमहित्वेविधेमइति-

मन्त्रिति त्रिवारं पठेत्। मनोजूतिर्जुषता सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा। इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन महादेवसरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि इति वदेत्। ततः।

इससे प्राणप्रतिष्ठा करके 'यःप्राणतोनिमिषतोमहित्वे विधेम' इस मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा' यह कहकर संस्कार-सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव की आवृत्ति करके' इससे सपरिवार महादेव यन्त्र का गर्भाधान से लेकर पन्द्रह संस्कार मैं करता हूं' यह कहे। इसके बाद:

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

इत्यष्टोत्तरशतकृत्वोऽभिमन्त्र्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात्।

इससे १०८ बार अभिमन्त्रित करके पाद्यादि से पूजन करे।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

आयाहि भगवञ्शम्भो सर्व त्वं गिरिजापते। प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शङ्कर।

इससे आवाहन करे॥ १॥

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिय। आसनं दिव्यमीशान दास्येहं तुभ्यमीश्वर।

इससे आसन देवे॥ २॥

ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय।

इससे सुस्वागत करे॥ ३॥

ॐ महादेव महेशान महादेव परात्पर। पाद्यं गृहाण मद्दत्त पार्वती-सहितेश्वर।

इससे पाद्य देवे॥ ४॥

त्र्यम्बकेश सदाचार जगदादिविधायक। अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्वार्थदायक।

इससे अर्घ्य देवे॥ ५॥

ॐ त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाशिञ्छ्रीकण्ठ शाश्वत। गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदककल्पितम्।

इससे आचमनीय देवे॥ ६॥

ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे।

इससे जल स्नान कराये॥ ७॥

ॐ मधुरं गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरस्कृतम्। स्नानार्थं देवदेवेश गृहाण परमेश्वर।

इससे दूध से स्नान कराये॥ ८॥

दुर्लभं दिवि सुस्वादु दधि सर्वप्रियं परम्। पुष्टिदं पार्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम्।

इससे दधि से स्नान कराये॥ ९॥

ॐ घृतं गव्यं शुचि स्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिमिच्छताम्। गृहाण गिरिजा-नाथ स्नानाय चन्द्रशेखर।

इससे घृतस्नान कराये॥ १०॥

ॐ मधुरं मृदु मोहघ्नं स्वरभङ्ग विनाशनम्। महादेवेदमुत्सृष्टं तव स्नानाय शङ्कर।

इससे मधुस्नान कराये॥ ११॥

ॐ तापशान्तिकरी शीता मधुरा स्वादुसंयुता। स्नानार्थं देवदेवेश शर्करेयं प्रदीयते।

इससे शर्करोदक स्नान कराये॥ १२॥

ॐ गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा। सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

इससे शुद्धोदक स्नान कराये॥ १३॥

इस प्रकार स्नान कराकर शतरुद्रिय द्वारा अभिषेक करे।

ॐ वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च। मयानीतानि देवेश प्रसन्नो भव शङ्कर।

इससे वस्त्र देवे॥ १४॥

ॐ सौवर्णं राजतं ताम्रं कर्पासस्य तथैव च। उपवीतं मया दत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।

इससे उपवीत देवे॥ १५॥

ॐ सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासनसमास्थित। गन्धं गृहाण देवेश चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।

अंगुष्ठः कनिष्ठामूललग्नो गन्धमुद्रा। इति गन्धम्॥ १६॥

इससे अँगूठे को कनिष्ठा मूल में लगा करके गन्धमुद्रा दिखाकर गन्ध देवे। इति गन्धम्॥ १६॥

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ शुभ्रा धौताश्च निर्मलाः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।

इससे सभी अँगुलियों से अक्षत देवे ॥ १७ ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।

तर्जनी को अँगूठे के मूल में लगाकर पुष्पमुद्रा दिखाये। इति पुष्पम् ॥१८॥

ॐ बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च। मयार्पितं महादेव बिल्वपत्रं गृहाण मे।

इससे बिल्व पत्र देवे ॥ १९ ॥

इति पुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य विशेषफलकांक्षी सहस्रनामभिः प्रत्येकनाम्ना पुष्पबिल्वपत्रद्वारा शिवं पूजयेत्। ततः प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार पुष्पान्त उपचारों से पूजा करे। विशेष फलाकांक्षी सहस्रनामों में से प्रत्येक नाम के साथ पुष्प तथा बेलपत्रों से शिवजी की पूजा करे। इसके बाद प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपदान आदि से पूजन करे।

अथ धूपादिपूजनम्। फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नम इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय 'रं' इति वह्निबीजेन उपरि अग्नि संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशाङ्गं दत्त्वा घण्टां वादयन्।

धूपादि पूजन : 'फट्' से धूपपात्र का संप्रोक्षण करके 'नमः' मन्त्र से गन्ध-पुष्पों से पूजा करके सामने रखकर 'रं' इस अग्निबीज से ऊपर अग्नि-स्थापित करके उसके ऊपर मूलमन्त्र से दशांग देकर घण्टा बजाते हुये :

ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्। साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय धूपं समर्पयामि।

इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत्। इति धूपम् ॥ २० ॥

यह पढ़कर देवता के वामभाग में धूपपात्र रखकर तर्जनी मूल के साथ अंगूठे को लगाकर धूपमुद्रा दिखावे। इति धूपदान ॥ २० ॥

ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मन्त्राक्षरतन्तुभिर्वर्ती निक्षिप्य 'ॐ' इति प्रणवेन प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयेत्। तत्र मन्त्रः :

दीप : इसके बाद दीपपात्र को गाय के घी से भरकर मन्त्र के अक्षरों की संख्या के बराबर तन्तुओं से बत्ती बनाकर उसमें रखकर 'ॐ' इस प्रणव

बीज से जलाकर घण्टा बजाते हुए नेत्र से लेकर पैर-पर्यन्त दीप को प्रदर्शित करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ आज्याक्तवर्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितं तु यत्। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्। साङ्गाय सपरिवाराय महादेवाय दीपं समर्पयामि।

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शङ्खजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति दीपम् ॥ २१ ॥

यह पढ़कर देव के दाहिने भाग में उसे रखकर शङ्ख का जल छिड़क कर मध्यमा और अँगूठे को मिलाकर दीपमुद्रा दिखावे। इति दीपम् ॥ २१ ॥

ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रमण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्येषड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय 'ॐ ह्रीं नमः' इति मन्त्रेणार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति साधुबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा :

इसके बाद देवता के आगे या उनके दाहिने ओर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर स्वर्णादि से निर्मित भोजनपात्रों को स्थापित करके उनके बीच षड्रसों से युक्त विविध प्रकार के नैवेद्य रखकर 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र से अर्घ्यजल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से उसे देखकर अधोमुख दाहिने हाथ पर उसी प्रकार बाँये हाथ को रखकर नैवेद्य को ढँककर 'ॐ यं' इस वायुबीज को १६ बार जप कर वायु से उसके दोषों को सुखाकर दाहिने करतल के पृष्ठभाग में बाँये करतल को करके नैवेद्य को दिखाकर 'ॐ रं' इस अग्निबीज को १६ बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोषों को दग्ध करके बाँये करतल में अमृत बीज का चिन्तन करके उसके पृष्ठभाग में दाहिने करतल को करके नैवेद्य को प्रदर्शित करके 'ॐ वं' इस सुधाबीज को १६ बार जप कर उससे निकली अमृतधारा से उसे प्लावित होने की भावना करके

मूलमन्त्र से प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा दिखाकर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध-पुष्प से पूजा करके देवता के उद्‌गत तेज का स्मरण करके बांये अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करके दाहिने हाथ से जल लेकर :

'ॐ अपूपानि च पक्वानि मण्डका वटकानि च। पायसं सूपमन्नं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।' साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि।

इति भूतले देवदक्षिणकरे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्तं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ २२॥ तद्यथा।

इससे देवता के दाहिने हाथ में भूमि पर जल डाल कर बांये हाथ से अनामिका मूल और अँगूठे के योग से ग्रासमुद्रा प्रदर्शित करके 'देवता खा चुके हैं' ऐसी भावना करके इस प्रकार जल देवे :

ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं वरम्। परमानन्दपूर्णं त्वं गृहाण जलमुत्तमम्। ॐ साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमहादेवाय नमः। जलं समर्पयामि।

इति मन्त्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं दत्त्वा देवकीर्तनं कुर्यात् ॥२३॥

इस मन्त्र से स्वर्णादि पात्र में कपूर आदि से सुवासित जल देकर 'देवता ने उस जल को पी लिया है' ऐसी भावना करते हुये अन्तःपट गिरा कर देवकीर्तन करे ॥ २३ ॥

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्।

इससे आचमन देवे ॥ २४ ॥

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे।

ॐ कर्पूरादीनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वर। गृहाण जगतां नाथ करोद्वर्तनहेतवे।

इससे करोद्वर्तन कराये (हाथ धोने के लिए पात्र देवे)॥ २५ ॥

ॐ कूष्माण्डं मातुलुगं च नारिकेलफलानि च। गृहाण पार्वतीकान्त सोमशेखर शङ्कर।

इससे फल देवे ॥ २६ ॥

ॐ पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। गृहाण देवदेवेश द्राक्षादीनि सुरेश्वर।

इससे ताम्बूल देवे ॥ २७ ॥

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजसमन्वितम्। पञ्चरत्नं मया दत्तं गृह्यतां वृषभध्वज।

इससे द्रव्य देवे ॥ २८ ॥

ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।'

इससे कपूर की आरती करे ॥ २९ ॥

ॐ हरविश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय। पुष्पाञ्जलिं गृहाणेश सोमेश्वर नमोस्तुते।

इससे पुष्पाञ्जलि देवे ॥ ३० ॥

'ॐ यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे।

इसे पढ़कर तीन प्रदक्षिणा करे ॥ ३१ ॥

'ॐ हेतवे जगतामेव संसारार्णवसेतवे। प्रभवे सर्वविद्यानां शम्भवे गुरुवे नमः ॥ ३२ ॥'

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे ॥ ३१ ॥

इति साष्टाङ्गं प्रणम्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा स्तुतिपाठेन स्तुत्वा बद्धाञ्जलिः प्रार्थयेत्। तद्यथा।

इस प्रकार साष्टाङ्ग प्रणाम करके और पुष्पाञ्जलि देकर स्तुतिपाठ से स्तुति करके हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करे :

'ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ न मया क्रियते शिव। मम कृत्यमिदं सर्वमेतदेव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥'

इससे प्रार्थना करके :

'यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाणाथानुकम्पय ॥ ५ ॥'

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कुर्यात्। अशक्तश्चेत्साधारणं कुर्यात्। तद्यथा। मूलेन मालां सम्प्रोक्ष्य गन्धादिभिस्सम्पूज्य ध्यायेत्।

यह पढ़कर देवता के दाहिने हाथ में पूजार्पण जल देकर सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से माला का संकार करे। अशक्त हो तो इस प्रकार साधारण संस्कार करे : मूलमन्त्र से माला का संप्रोक्षण करके गन्ध आदि से पूजन करके इस प्रकार ध्यान करे :

ॐ ह्रीं मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥

इससे प्रार्थना करके :

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमन्त्रं जपेत्। नित्यशः समाना जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकम्। ततो जपान्ते :

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला को लेकर हृदय में धारण करते हुये अपने इष्टदेवता का ध्यान करके उसे मध्यमा के मध्य पर्व पर स्थापित करके अँगूठे के अग्रभाग से घुमाकर एकाग्रचित्त होकर मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति प्रातःकाल से आरम्भ करके मध्याह्न तक मूलमन्त्र का जप करे। प्रतिदिन समान सख्या में जप करना चाहिये—कम या अधिक नहीं। जप के अन्त में :

'ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम। शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते। ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः।'

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत्। नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्यस्मै दद्यात्। अशुचिस्थाने न निधापयेत्। स्वयोनिवद्-गुप्तां कुर्यात्।

इससे माला को शिर पर रखकर फिर गोमुखी को एकान्त स्थान पर रख देवे। अपवित्र अवस्था में उसका स्पर्श न करे और अन्य को न देवे, अशुद्ध स्थान पर न रक्खे और उसे स्वयोनिवत गुप्त रक्खे।

इति जपं कृत्वा कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा जपदेवार्पणं कुर्यात्। तद्यथा। अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय :

इस प्रकार जप करके कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि पढ़कर पुनः मूल-मन्त्रोक्त ऋष्यादि न्यास और हृदयादि षडङ्गन्यास करके पञ्चोपचारों से पूजन करके पुष्पांञ्जलि देकर जप को इस प्रकार देवता को अर्पित करे : अर्घ्योदक से चुल्लू भर जल लेकर :

'ॐगुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥' ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मदीयं च सकलं श्रीमहादेवाय समर्पयामि नमः। ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु।

इससे देवता के दाहिने हाथ में जल समर्पित करके हाथ जोड़कर इस प्रकार क्षमापन का पाठ करे :

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥१॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम। अन्तश्चरश्च भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम्। तेषु चेष्टाचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्या च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्। देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर। तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥

इससे प्रार्थना करके शङ्ख का जल देवता के ऊपर घुमाकर :

'साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम।'

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते जलं दत्त्वा शङ्खं यथास्थाने निवेशयेत्। तता गतसारं नैवेद्यं देवेस्योच्छिष्टं किञ्चिदुद्धृत्य 'ॐ चण्डेश्वराय नमः' इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्। तच्छेषं नैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्। तथा च।

यह कहते हुये देवता के दाहिने हाथ में जल देकर शङ्ख को यथास्थान रख दे। फिर गतसार नैवेद्य से देवता के उच्छिष्ट को थोड़ा-सा निकालकर 'ॐ चण्डेश्वराय नमः' इससे उच्छिष्टाधिकारी को ईशान दिशा में देवे। उससे बचे नैवेद्य को सिर पर रखकर देवभक्तों में बाँटकर स्वयं खाकर इस प्रकार विसर्जन करे :

'ॐगच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च।'

इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत्। तद्यथा :

इससे अक्षतों को फेंककर विसर्जन करके देवता को अपने हृदय में इस प्रकार स्थापित करे :

'ॐ तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥'

इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्। एवमेव विधिना जपं समाप्य संस्कृते वह्नौ जपदशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन-ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एतत्सर्वं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात्। इति शिवपूजापद्धतिः समाप्ता।

इससे अपने हृदयकमल पर हाथ रखकर देवता की स्थापना करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आप की देवरूप में भावना करते हुये यथासुख विचरण करे। इस विधि से जप समाप्त करके संस्कृत अग्नि में जप का दशांश होम करे। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। यह सब सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करना चाहिये। शिव पूजा पद्धति समाप्त।

अथ सदाशिवकवचप्रारम्भः।

श्रीदेव्युवाच। भगवन्देवदेवेश सर्वाम्नायप्रपूजित। सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ॥ १ ॥ प्रासादाख्यस्य मन्त्रस्य कवचं मे प्रकाशय। सर्वरक्षाकरं देव यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति।

सदाशिवकवच : श्रीदेवी बोली : हे भगवान् देवदेवेश, समस्त आम्नायों से पूजित ! आपने मुझे सब कुछ तो बता दिया परन्तु कवच नहीं बताया। यदि आपका मुझपर स्नेह है तो आप प्रासादाख्य मन्त्र के सर्वरक्षाकर कवच को मुझे बतायें।

श्री भगवान् बोले :

विनियोग : प्रासादमन्त्रकवचस्य वामदेवऋषिः। पंक्तिच्छन्दः। सदाशिवो देवता। साधकाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः। षडक्षरस्वरूपो मे वदनं तु महेश्वरः ॥ ३ ॥ पञ्चाक्षरात्मा भगवान्भुजौ मे परिरक्षतु। मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा आस्यं रक्षतु मे सदा ॥ ४ ॥ वटमूलं समासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः। सदा मां सर्वदं पातु षट्त्रिंशार्णस्वरूपधृक् ॥ ५ ॥ द्वाविंशार्णात्मको रुद्रो दक्षिणः परिरक्षतु। त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ॥ ६ ॥ चिन्तामणिर्बीजरूपो ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः। सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥ ७ ॥ एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटव्यापी महेश्वरः। मार्तण्डभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ॥ ८ ॥ तुम्बुराख्यो महाबोजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः। सदा मां रणभूमौ च रक्षतु त्रिदशाधिपः ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा। दक्षिणास्यं तु तत्पुरुषो-ऽव्यान्मे गिरिनायकः ॥ १० ॥ अघोराख्यो महादेवः पूर्वास्यं परिरक्षतु। वामदेवः पश्चिमास्यं सदा मे परिरक्षतु ॥ ११ ॥ उत्तरास्यं सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक्।

इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ॥ १२ ॥ प्रातःकाले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टं फलमाप्नुयात्। पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः ॥ १३ ॥ कीर्तिश्रीकान्तिमेधायुः सहितो भवति ध्रुवम्। कण्ठे यो धारये-देतत्कवचं मत्स्वरूपकम् ॥ १४ ॥ युद्धे च जयमाप्नोति द्यूते वादे च साधकः। कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥ १५ ॥ देवा मनुष्य-गन्धर्वा वश्यास्तस्य न संशयः। कवचं शिरसा यस्तु धारयेद्यतमानसः ॥ १६ ॥ करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः। भूर्जपत्रे त्विमा विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ॥ १७ ॥ रजतोदरसंविष्टां कृत्वा वा धार-येत्सुधाः। सम्प्राप्य महतीं लक्ष्मीमन्ते मद्देहरूपभाक ॥ १८ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन। शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाश येत् ॥ १९ ॥ अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्यमेतन्मनोरमे। तवस्नेहान्महा-देवि कथितं कवचं शुभम् ॥ २० ॥ न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम्। योऽर्चयेद्गन्धपुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम्। तेनार्चिता महा-देवि सर्वे देवा न संशयः।' इति भैरवतन्त्रे सदाशिवकवचं समाप्तम्।

हे देवि ! यह देवदुर्लभ रक्षाकर कवच है। जो प्रातःकाल इसका पाठ करता है वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है। जो श्रेष्ठ साधक पूजाकाल में इसका पाठ करता है वह निश्चित रूप से कीर्ति, श्री, कान्ति मेधा तथा आयु प्राप्त करता है। जो मेरे स्वरुप के तुल्य इस कवच को कण्ठ में धारण करता है वह युद्ध में, द्यूत में, तथा वाद-विवाद में जय प्राप्त करता है। जो साधक दाहिने हाथ में इसे धारण करता है उसके वश में देवता, गन्धर्व तथा मनुष्य सभी हो जाते हैं। जो मन को एकाग्र करके कवच को शिर में धारण करता है उसको हे देवेशि ! अणिमा आदि आठों सिद्धियाँ हस्तगत हो जाती हैं। जो भोजपत्र पर इस विद्या को लिखकर सफेद कपड़े में बाँधकर चाँदी की ताबीज में रखकर धारण करता है वह बहुत बड़ी समृद्धि को प्राप्त कर अन्त में मेरे देहरुप का भागी बन जाता है। इसे जिस किसी को नहीं देना चाहिये। जो शिष्य भक्तियुक्त और साधक हो उसे बताना चाहिये अन्यथा सिद्धिहानि होती है। हे मनोरमे, यह सत्य है। तुम्हारे स्नेहवश ही हे महादेवि, मैंने इस शुभ कवच को तुम्हें बताया है। हे भद्रे, यदि अपना हित चाहे तो इसे किसी को न देवे। जो मनुष्य मेरे द्वारा कथित इस कवच की गन्ध और पुष्पादि से पूजा करता है उसने, हे महादेवि, सभी देवताओं की पूजा कर ली है, इसमें कोई संशय नहीं है। इति भैरवतन्त्रोक्त सदाशिव कवच समाप्त।

अथ सदाशिवस्तोत्रप्रारम्भः।

धरापोग्निमरुद्व्योममखेशेन्द्वर्कमूर्तये। सर्वभूतान्तरस्थाय शङ्कराय नमो नमः॥ १॥ श्रुत्यन्तकृतवासाय श्रुतये श्रुतिजन्मने। आतीन्द्रियाय महसे शाश्वताय नमोनमः॥ २॥ स्थूलसूक्ष्मविभागाभ्याम निर्देश्याय शम्भवे। भवाय भवसम्भूतदुःखहन्त्रे नमोस्तु ते॥ ३॥ तर्कमार्गातिदूराय तपसां फलदायिने। चतुर्वर्गवदान्याय सर्वज्ञाय नमोनमः॥ ४॥ आदिमध्यान्तशून्याय निरस्ताशेषभीतये। योगिध्येयाय महते निर्गुणाय नमोनमः॥ ५॥ विश्वात्मनेऽविचिन्त्याय विलसच्चन्द्रमौलये। कन्दर्पदर्पकालाय कालहन्त्रे नमोनमः॥ ६॥ विषाशनाय विहरद्वृषस्कन्धमुपेयुषे। सरिद्दामसमाबद्धकपर्दाय नमोनमः॥ ७॥ शुद्धाय शुद्धभावाय शुद्धानामन्तरात्मने। पुरान्तकाय पूर्णाय पुण्यनाम्ने नमोनमः॥ ८॥ भक्ताय निजभक्तानां भुक्तिमुक्तिप्रदायिने। विवाससे विवासाय विश्वेषां ते नमोनमः॥ ९॥ त्रिमूर्तिमूलभूताय त्रिनेत्राय नमोनमः। त्रिधाम्ना धामरूपाय जन्मघ्नाय नमोनमः॥ १०॥ देवासुरशिरोरत्नकिरणारुणितांघ्रये। कान्ताय निजकान्तायै दत्तार्द्धाय नमोनमः॥ ११॥ स्तोत्रे-

णानेन पूजायां प्रीणयेज्जगतः पतिम्। भक्तिमुक्तिप्रदं भक्त्या सर्वज्ञं परमेश्वरम्॥ १२॥ इति सदाशिवस्तोत्रं समाप्तम्।

अथ शतनामस्तोत्रप्रारम्भः।

'ॐ शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः। वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः॥१॥ शङ्करः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः। शिपिविष्टोम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः॥ २॥ भव सर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियाः। उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुरसूदनः॥ ३॥ गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः। भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः॥ ४॥ कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः। वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः॥५॥ सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः। सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः॥ ६॥ हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः। विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः॥ ७॥ हिरण्यरेता दुर्द्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः। भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियाः॥ ८॥ कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान्प्रमथाधिपः। मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः॥ ९॥ व्योमकेशो महासेनो जनकश्चारुविक्रमः। रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः॥ १०॥ अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः। शाश्वतः खण्डपरशुरजः पाशविमोचकः॥ ११॥ मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः। पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वर हरो हरः॥ १२॥ भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात्। अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः॥ १३॥

इमानि दिव्यनामानि जप्यन्ते सर्वदा मया। नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्टप्रदायिनी॥ १४॥ नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः॥ १५॥ एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः। जप्यन्ते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम्॥ १६॥ वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहराणि च। सन्त्यनन्तानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि॥ १७॥ तेभ्यो नामानि संगृह्य कुमाराय महेश्वरः। अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नामुपदिशत्पुरा॥ १८॥ इति शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

हे सुभगे, ये दिव्य नाम है और इनका मैं सदा जप करता हूं। ये नाम कल्पलता हैं और मेरे समस्त अभीष्ट फलों को देनेवाले हैं। हे सुभगे, ये नाम कल्याण देनेवाले हैं, इसमें कोई संशय नहीं है। वस्तुतः ये नाम वेद के सर्वस्व-

भूत हैं। इसलिये ये जितने नाम हैं वे सभी समस्त अर्थों के देनेवाले हैं। मैं नियमपूर्वक सदा इनका जप करता हूं। हे सुभगे समस्त वेदो में ये श्रेष्ठ अनन्त शिवनाम समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हैं। उनमें से संग्रह करके महेश्वर ने पहले कुमार को एक हजार आठ नामों का उपदेश किया था। इति शिवाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र सम्पूर्ण।

अथ शिवसहस्रनामस्त्रोत्रप्रारम्भः।

सूत उवाच। श्रूयतामृषयः श्रेष्ठाः कथयामि यथाश्रुतम्। विष्णुना प्रार्थितो येन संतुष्टः परमेश्वरः ॥ १ ॥ तदहं कथयाम्यद्य पुण्यं नामसहस्रकम्।

सूतने कहा : हे श्रेष्ठ ऋषियों, आप सुने। जैसा मैने सुना है वैसा कह रहा हू। विष्णु द्वारा प्रार्थना करने पर जिससे परमेश्वर सन्तुष्ट हुये थे उसी पुण्य सहस्रनाम स्तोत्र को आज मैं कह रहा हूं।

श्रीविष्णुरुवाच। शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः ॥ २ ॥ अर्थिगम्यः सदाचारः शर्व शम्भुर्महेश्वरः। चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वादिश्चामरेश्वरः ॥ ३ ॥ वेदान्तसारसन्दोहः कपाली नीललोहितः। ध्यानाधारापरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः ॥ ४ ॥ अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गः स्वर्गसाधनः। ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ॥ ५ ॥ वामदेवो महादेवः पटुः परिवृढो दृढः। विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिमत्तरः ॥ ६ ॥ शर्वः प्रमाणसंवादीवृषाङ्को वृषवाहनः। ईशः पिनाकी खट्वाङ्गी चित्रवेषश्चिरन्तनः ॥ ७ ॥ तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्माण्डहृज्जटी। कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणतात्मकः ॥ ८ ॥ त्रिपुण्ड्रधारी चाक्षुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः। दिव्यायुधः स्कन्दगुरुः परमेष्ठी परात्परः ॥ ९ ॥ अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिबान्धवः। कुबेरबन्धुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः ॥ १० ॥ समाधिवेद्यः कोदण्डी नीलकण्ठः परश्वधी। विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः ॥ ११ ॥ धर्मधामा क्षमाक्षेत्रं भगवान् भगनेत्रभित्। उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्त प्रियंवदः ॥१२॥ दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः। श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः ॥ १३ ॥ लोककर्ता मृगपतिर्महाकर्ता महौषधिः। उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ॥ १४ ॥ नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमरतः सुखी। सोमपोऽमृतपः सौम्यो महाज्योतिर्महाद्युतिः ॥ १५ ॥ तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः। अजातशत्रुरालोकसम्भाव्यो हव्यवाहनः ॥ १६ ॥ लोककरो वेदकरः सूत्रकारः

सनातनः। महर्षिः कपिलाचार्यो। विश्वदीप्तिर्विलोचनः ॥ १७ ॥ पिनाकपाणिर्भूदेवस्वस्तिदः स्वस्तिकृत्सुधीः। धातृधामा धामकरः सर्वदः सर्वगोचरः ॥ १८ ॥ ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्वः कर्णिकारकप्रियः कविः। शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः ॥ १९ ॥ गङ्गाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः। विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः ॥ २० ॥ सगणो गणवर्यश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः। कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ २१ ॥ भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः। समावर्तो निवृतात्मा धर्मपुञ्जः सदाशिवः ॥ २२ ॥ अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दुरावासो दुरासदः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः ॥ २३ ॥ आध्यात्मयोगनिलयः सुतन्तुस्तन्तुवर्द्धनः। शुभाङ्गों लोकसारङ्गो जगदीशो जनार्दनः ॥ २४ ॥ भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः। असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक ॥ २५ ॥ हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरोऽचलः। महाह्रदो महागर्तः सिद्धवृन्दारकेडितः ॥ २६ ॥ व्याघ्र चर्माम्बरो व्याली महाभूतो महानिधिः। अमृतानुभवः श्रीमान् पांचजन्यः प्रभञ्जनः ॥ २७ ॥ पञ्चविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परात्परः। सुलभः सुव्रतः शूरोवाङ्मयी कनिधिर्निधिः ॥ २८ ॥ वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः। आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः ॥ २९ ॥ प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः। धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणः शशिगुणाकरः ॥ ३० ॥ सत्यः सत्यपरो दीनो धर्माङ्गो धर्मसाधनः। अनन्तदृष्टिरानन्दो दण्डो दमयिता दमः ॥ ३१ ॥ अभिचार्यो महामायो विश्वकर्मा विशारदः। वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतवाहनः ॥ ३२ ॥ उन्मत्तवेषः प्रसन्नो जितकामोर्चितप्रियः। कल्पान्तः प्रकृतिः कल्पः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ ३३ ॥ तरस्वी तारको धीमान् प्रधानः प्रभुरव्ययः। लोकपालोंतर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः ॥ ३४ ॥ वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो नियमो नियमाश्रयः। चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्विरागो विद्रुमच्छविः ॥ ३५ ॥ भक्तिवश्यः परब्रह्म मृगबाणार्पणो नयः। अद्रिरद्र्यालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ॥ ३६ ॥ सर्वकामालयस्तुष्टो माङ्गल्यो मङ्गलावृतः। महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो द्रुमः ॥ ३७ ॥ अहः संवत्सरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः। संवत्सरकरो मन्त्रः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ ३८ ॥ अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः। योगी योग्यो महातेजाः सिद्धः सर्वादिविग्रहः ॥ ३९ ॥ वसुर्वसुमनाः

सत्यः सर्वपापहरो हरः । सुकीर्तिः शोभितः श्रावी ह्यवाङ्मनसगोचरः ॥ ४० ॥ अमृतः शाश्वतः शान्तो द्रोणहस्तः प्रतापवान् । कमण्डलुधरो धन्वी वेदाङ्गों वेदविन्मुनिः ॥ ४१ ॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुरावरः । अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः ॥ ४२ ॥ कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरन्दरः ॥ ४३ ॥ निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः । अनिर्देश्य वपुः श्रीमान् सर्वाचार्यमनोगतिः ॥ ४४ ॥ बहुश्रुतो महामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः । तेजस्तेजोद्युतिधरो नरकः सर्वशासकः ॥ ४५ ॥ नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः । स्पष्टः क्रूरो बुधो मन्त्रः समानः सारसंप्लवः ॥ ४६ ॥ युगादिकृतद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः । इष्टो विशिष्टः विष्टेष्टः शरभः शरभो धनुः ॥ ४७ ॥ तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थादृश्यः सुतीर्थदः । अपान्निधिरधिष्ठानं विजयो जयकालवित् ॥ ४८ ॥ प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः । विमोचनः सुरगणो विद्येशो बिन्दुसंश्रयः ॥ ४९ ॥ बालरूपो बलोन्मत्तो विकर्ता गहनो गुहः । करणं कारणं कर्ता सर्वबन्धविमोचनः ॥ ५० ॥ व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः । गुरुदो ललितो भेदो निवासात्मनि संस्थितः ॥ ५१ ॥ वीरेश्वरो वीरभद्रो विश्वरूपो विधिविराट् । वीरचन्द्रो मणिर्द्धता तीव्रानन्दो नदीश्वरः ॥ ५२ ॥ अग्न्याधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः । बलखिल्यो महावीर्यस्तिग्मांशुर्वधिरः खगः ॥ ५३ ॥ अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधानिधिः । मघवा कौशिको गोमान् विरामः सर्वसाधनः ॥ ५४ ॥ ललाटजो विश्वदेहः सारसंसारचक्रभृत् । अमोघो दण्डमध्यस्थो हरिणो ब्रह्मवर्चसः ॥ ५५ ॥ परमायः परमथः शम्बरो व्याघ्रकोऽनलः । रुचिर्वररुचिर्वन्द्यो वाचस्पतिरहर्पतिः ॥ ५६ ॥ रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्ता वैवस्वतोऽमरः । युक्तिकृन्मत्तकीर्तिश्च सानुगश्च परञ्जयः ॥ ५७ ॥ कैलासाधिपतिः कान्तः सविता रविलोचनः । विश्वोत्तमो वीतभयो विश्वभर्ता निवारितः ॥ ५८ ॥ नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः । दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःख प्रणाशनः ॥ ५९ ॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुःसहो भवः । अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः किरीटी त्रिदशाधिपः ॥ ६० ॥ विश्वगोप्ता विश्वकर्ता सुवीरो रुचिराङ्गदः जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः ॥ ६१ ॥ वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः । प्रणवः सत्पथाचारो महाकाशो महाधनः ॥ ६२ ॥ जन्माधिपो महादेवः

सकलागमपारगः । तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा विभर्विष्णुविभूषणः ॥ ६३ ॥ ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्यो जन्ममृत्युजरातिगः । पञ्चयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वशो विमलोदयः ॥ ६४ ॥ अनाद्यन्त आत्मयोनिर्वत्सलो भक्तलोकधृक् । गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्ववासः प्रभाकरः ॥६५॥ शिशुर्गिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा । अनेमिरिष्टनेमिश्च मुक्तिदो विगतज्वरः ॥ ६६ ॥ स्वयंज्योतिस्तपज्ज्योतिरतिज्योतिरचञ्चलः । पिङ्गलः कपिलः श्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः ॥ ६७ ॥ ज्ञानस्कन्दो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः । भोगी विवस्वतस्तत्त्वो योगपारो दिवस्पतिः ॥ ६८ ॥ कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः । उदारकीर्तिरुद्योगी महन्मान्यश्च सत्त्वपः ॥ ६९ ॥ रूक्षो मलिनकेशश्च स्वाधिष्ठानपदाश्रयः । पवित्रः पापनाशश्च मणिपूरो नभोगतिः ॥ ७० ॥ हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रः शान्तो वृषाकपिः । कृष्णो ग्रहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः ॥ ७१ ॥ अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः । ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ॥ ७२ ॥ जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः । हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ॥ ७३ ॥ आरोग्यो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः ब्रह्मज्योतिर्वसुर्धामा महाज्योतिरनुत्तमः ॥ ७४ ॥ मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक् । पुलस्त्यःपुलहोगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ॥७५॥ निरावरणनिर्वारो वैरंच्यो विष्टारश्रवाः आत्मभूरनिरुद्धोत्रिर्ज्ञानमूर्तिमहायशाः ॥ ७६ ॥ लोकवीराग्रणीर्वीरश्चन्द्रः सत्यपराक्रमः । व्यालकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ॥ ७७ ॥ अलङ्करिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोम्बरः । आशुः शब्दपतिर्वङ्गी पवनः शिखिसारथिः ॥ ७८ ॥ असंसृत्तिपतिः शक्रप्रमादः पादपासनः । वसुश्रवाः कव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ॥७९॥ जप्यो जरारिः शमनो लोहिताश्वस्तनूनपात् । नभोयोनिः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ॥ ८० ॥ वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभःस्थो बीजवाहनः । अङ्गिरा गुरुरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः ॥ ८१ ॥ पावनः पुरुजिच्छक्रस्त्रैविद्यो नरवारणः । मनोबुद्धिरहङ्कारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ॥ ८२ ॥ जमदग्निर्जलनिधिर्विगोलो विश्वगोलकः । अघोरानुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसालयः ॥ ८३ ॥ शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिररिन्दमः । चामुण्डाजीवकश्चार्गनिःशल्यो लोककल्पधृक् ॥ ८४ ॥ चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः । आम्नायोथ समाम्नायस्तीर्थवेदशिवालयः ॥ ८५ ॥ बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः । नयनिर्मापको न्यायो न्यायगम्यो निरञ्जनः ॥ ८६ ॥ सहस्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशास्त्रप्रभञ्जनः । मुण्डो विरूपो

त्रिकान्तो दण्डीताण्डगुणोतमः ॥ ८७ ॥ पिङ्गलाक्षो हयग्रीवो नीलग्रीवो निरामयः । सहस्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक् ॥ ८८ ॥ पद्मासनः परंज्योतिः परंपारं परंफलम् । पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ॥ ८९ ॥ चराचरज्ञो वरदो वरेशस्तु महास्वनः । देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः ॥ ९० ॥ देवासुरमहामित्रो देवासुरमहाश्रमः । देवादिदेवो देवाग्निर्देवासुरवरप्रदः ॥ ९१ ॥ देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहेश्वरः । देवदेवो महाचिन्त्यो देवतात्मात्मसम्भवः ॥ ९२ ॥ सद्योनष्टासुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः । विबुधाग्रचरः श्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ ९३ ॥ शिवज्ञानप्रदः श्रीमान् शिखी श्रीपर्वतप्रियः । वज्रहस्तः सिद्धखड्गी नरसिंहनिपातनः ॥ ९४ ॥ ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः । नन्दी नन्दीश्वरो नन्दो लग्नवृत्तिधरः शुचिः ॥ ९५ ॥ लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः । स्वर्द्धामा स्वर्गतः स्वामी स्वरः स्वरतमस्वनः ॥ ९६ ॥ बोधाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः । दम्भो लोभोथ वै शम्भुसर्वभूतमहेश्वरः ॥ ९७ ॥ श्मशाननिलयस्त्र्यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः । लोकोत्तरः स्फुटालोकस्त्र्यम्बको नागभूषणः ॥ ९८ ॥ अन्धकारिर्मखद्वेषी विष्णोः स्कन्धरतात्मकः । हितदश्च क्षयगुणो दक्षारिः पूषदन्तभित् ॥ ९९ ॥ पूर्जनिः खण्डपरशुः सकलो निष्कलो मुनिः । अकालः सकलाधारः पाण्डुरोगो मृगोनगः ॥ १०० ॥ पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः । सङ्गो गोपप्रियाक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ १०१ ॥ मनोजवस्तीर्थकरो जटिलोजीवितेश्वरः । जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ॥ १०२ ॥ सुजातिः सत्कृतिः सिद्धिः सजातिः कालकण्टकः । कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः ॥ १०३ ॥ लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः । तेजोमयो द्युतिधरोलोकमानाग्रणीरणुः ॥ १० ॥ शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा अजेयो दुरितक्रम । ज्योतिर्मयोनीरुजाङ्गोगङ्गाप्रेष्ठोजलेश्वरः ॥ १०५ ॥ तुम्बवीणोमहाकायोविशोकः शोकनाशनः । त्रिलोकपात्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः ॥ १०६ ॥ अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्तोऽव्यक्तोविशांपतिः । परः शिवोवसुर्नासा सारोमानन्दनोमयः ॥ १०७ ॥ ब्रह्माविष्णु प्रजापालोहंसोहंसगतिर्वयः । वेधाविधातास्रष्टा च संहर्ता च चतुर्मुखः ॥ १०८ ॥ कैलासशिखरावासीसर्वावासीसदागतिः । हिरण्यगर्भोद्रुहिणोभूतनाथोऽथभूपतिः ॥ १०९ ॥ सद्योगीयोगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः । देवप्रियो देवनाथो देवको देवचिन्तकः ॥ ११० ॥ विषमाक्षो विरूपाक्षो वृषभो वृषवर्धनः । निर्ममो

निरहङ्कारो निर्मोह निरुपद्रवः ॥ १११ ॥ दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वार्थपरिवर्तकः । सहस्रजित्सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः ॥ ११२ ॥ भूतभव्यभवोनाथः प्रभवोऽभूतिनाशन । अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः ॥ ११३ ॥ निष्कण्टकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः । सत्त्ववान् सात्यकिः सत्यः कीर्तिस्नेहः कृतागतः ॥ ११४ ॥ अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत् । सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः ॥ ११५ ॥ नन्दिस्कन्धधरो धुर्य. प्रकटः प्रीतवर्द्धनः । अपराजितः सर्वसत्त्वो गोविन्दः सत्त्ववाहनः ॥ ११६ ॥ अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः । वाराहशृङ्गधृक् शूरो बलवानेकनाथकः ॥११७॥ श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत् । श्रीवत्सलः शिवारम्भः शान्ताभद्रः समो यशः ॥ ११८ ॥ भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद्भूतिभावनः । अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा निष्कलेश्वरः ॥ ११९ ॥ सत्यव्रतो महात्यागो नित्यशान्तिः परायणः । परार्थवृत्तिर्वरदो विक्षुस्तुव विशारदः ॥ १२० ॥ शुभदः शुभकर्ता च शुभनामा शुभः स्वयम् । अनर्थितो गुणग्राही ह्यकर्ता कनकप्रभः ॥ १२१ ॥ स्वभावभद्रो मध्यस्थ. शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः । शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डो च कुण्डली ॥ १२२ ॥ अमृत्युः सर्वदृक सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः । असंख्येयोप्रमेयात्मा वीर्यवान् वीर्यकोविदः ॥ १२३ ॥ वैद्यश्चैव वियोगी च सप्तवीरो मुनीश्वरः । अनुक्रमो दुराधर्षो मधुरः प्रियदर्शनः ॥ १२४ ॥ सुरेशस्तारणः सर्वशब्द प्रतपताङ्गतिः । कालक्षयः कालकारी सुकृतिः कृतवासुकिः ॥ १२५ ॥ महेष्वासो महीभर्ता निष्कलङ्को विशृङ्खलः । द्युमणिस्तरणिर्द्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ १२६ ॥ विवृत्तः संवृतस्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः । सर्वयोनिर्निरातङ्को नरनारायणप्रियः ॥ १२७ ॥ निर्लेपो निःप्रसङ्गात्मा निर्व्यङ्गो व्यङ्गनाशनः । स्तव्य स्तवप्रियः स्तोता व्याप्तमूर्तिनिराकुलः ॥ १२८ ॥ निरवद्यपदोपायो विद्याराशिरसत्कृतः । प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः सम्प्रहा नित्यसुन्दरः ॥ १२९ ॥ पापहा धर्मधात्रीशः साकल्यः शर्वरीपतिः । परमार्थगुरुर्दृष्टिः सुरैराश्रितवत्सलः ॥ १३० ॥ सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्त्वावलम्बनः ।

एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टाव वृषभध्वजम् ॥ १३१ ॥ प्रार्थयामास शम्भुं वै पूजयामास शङ्करम् । परीक्षार्थं हरेरीशः कमलेषु महेश्वरः ॥ १३२ ॥ गोपयामास कमलं तदेकं भुवनेश्वरः । हृदि विचारितं तेन कुतो वै कमलं गतम् ॥ १३३ ॥ यातुया तु सुखेनैव नेत्रं किं कमलन्न

हि। तदेवकमलं कृत्वा यजामि चन्द्रशेखरम् ॥ १३४ ॥ इत्येवं हृदयं ज्ञात्वा विष्णोरमिततेजसः। मामेति व्याहरन्नेव प्रादुरासीज्जगद्गुरुः ॥ १३५ ॥ यत्रैव च कृता पूजा कृष्णेन परमात्मना। तस्मादवततराशु मण्डलात्पार्थिवस्य सः ॥ १३६ ॥ यथोक्तरूपिणं शम्भुं तेजोराशिसमुत्थितम्। नमस्कृत्य पुरः स्थित्वा स्तुतिं कृत्वा विशेषतः ॥ १३७ ॥ प्रसन्नवदनो भूत्वा शम्भोश्च सम्मुखे स्थितः। इत्थं भूतं हरिर्दृष्ट्वा कोटिभास्करभूषितम् ॥ १३८ ॥ प्रणमामीश्वरं शम्भुं देवदेव जनार्दनः। तदा प्राह महादेवः प्रहसन्निव शङ्करः ॥ १३९ ॥ संप्रेक्षमाणो विष्णुन्तु कृताञ्जलिपुटस्थितम् ॥ १४० ॥ शङ्कर उवाच। ज्ञातं मयेदं सकलं देवकार्यं जनार्दन्। सुदर्शनाख्यं चक्रं च ददामि तव शोभनम् ॥ १४१ ॥ यद्रूपं भवता दृष्टं सर्वलोकसुखावहम्। हिताय सर्वदेवेश कृतं भावय सुव्रत् ॥ १४२ ॥ रणादावपि संस्मृत्य देवानां दुःखनाशनम्। इदं रूपमिदं चक्रमिदं नामसहस्रकम् ॥ १४३ ॥ ये शृण्वन्ति सदाभक्त्यासिद्धिः स्यादनपायिनी। एवमुक्त्वाददौचक्रंसूर्यायुतसमप्रभम् ॥ १४४ ॥ विष्णुरपि च संस्नाय जग्राहोदङ्मुखस्तदा।

श्रीविष्णु भगवान् द्वारा इस प्रकार सहस्रनाम स्तोत्र पाठ से वृषभध्वज शिव प्रसन्न हो गये। श्रीविष्णु भगवान् ने शम्भु की पूजा और प्रार्थना की। श्रीविष्णु की परीक्षा के लिये महेश्वर ने विष्णु के कमलों में से एक कमल को छिपा दिया। तब विष्णु भगवान् सोचने लगे कि यह एक कमल कहाँ गया? फिर उन्होंने विचार किया कि कमल गया तो जाय, मेरा नेत्ररूपी कमल तो है ही, उसी से पूजा करूँगा। इस प्रकार इधर विष्णु यह विचार कर रहे थे उधर इन अमित तेजस्वी के हृदय की भावना को जानकर 'ऐसा मत करो, ऐसा मत करो' कहते हुये जहाँ विष्णु ने पूजा की थी वहीं मिट्टी से बने लिङ्ग में ही शिव स्थूल शरीर धारण कर प्रकट हो गये। यथोक्त रूपवाले, तेजोराशि के रूप में प्रादुर्भूत शम्भु के सामने स्थित होकर नमस्कार करके विष्णु ने विशेष स्तुति की और फिर प्रसन्नमुख होकर शम्भु के सामने बैठ गये। इस प्रकार विष्णु भगवान् करोड़ों सूर्यों के तेज से विभूषित शिव को देखकर बोले: 'हे देवदेव मैं शिव को प्राणाम करता हूं।' तब महादेव शङ्कर सामने हाथ जोड़कर स्थित विष्णु को देखकर हँसते हुये बोले: हे जनार्दन, मैंने तुम्हारे समस्त देवकार्यों को जान लिया है। मैं तुम्हें सुदर्शन नामक सुन्दर चक्र दे रहा हूं। सारे संसारे को सुख देनेवाले मेरे जिस रूप का तुमने दर्शन किया है वह हे सुव्रत, सर्वदेवेश, सब के लिये है, ऐसी भावना

तुम करो। युद्धस्थल में इसका स्मरण करने से देवताओं के दुःखों का नाश होता है। यह रूप, यह चक्र तथा यह सहस्रनाम स्तोत्र है। जो भक्तिपूर्वक सदा इस स्तोत्र को सुनते हैं उनको स्थाई सिद्धि प्राप्त होती है। यह कहकर उन्होंने सूर्य के समान अमित प्रभावाले चक्र को प्रदान किया। विष्णु भगवान् ने भी स्नान करके उत्तराभिमुख होकर उस चक्र को ग्रहण किया।

नमस्कृत्यतदा देवं पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ १४५ ॥ शृण देव मया ध्येयं पठनीयं च किं प्रभो। लोकानां दुःखनाशार्थं वदत्वं लोकशङ्कर ॥१४६॥

पुनः शिवजी को नमस्कार करके विष्णुजी बोले: हे देवदेव, संसार के दुःख नाशार्थ मुझे किसका ध्यान करना चाहिये और क्या पढ़ना चाहिये? हे लोकशङ्कर आप मुझे यह बतायें।

इति पृष्टस्तदा तेन सन्तुष्टस्तु शिवोऽब्रवीत्। रूपं ध्येयं मदीयं वै सर्वानर्थविनाशनम् ॥ १४७ ॥ अनेकदुःखनाशार्थं पाठ्यं नामसहस्रकम्। धार्यं चक्रं सदामेद्य सर्वानर्थप्रशान्तये ॥१४८॥ अन्ये च ये पठिष्यन्ति पठिष्यन्ति नित्यशः। तेषां दुःखं न स्वप्नेपिजायते नात्र संशयः ॥१४९॥ राज्ञां च सङ्कटे प्राप्ते शतवारं पठेद्यदि। साङ्गं च विधियुक्तं च कल्याण लभते नरः ॥ १५० ॥ रोगनाशकरं चैतद्विद्यानायकमुत्तमम्। यमुद्दिश्य फलं श्रेष्ठं पठिष्यन्ति नरास्त्विह ॥ १५१ ॥ लप्स्यन्ते नात्र संदेहः फलं सत्यमनुत्तमम्। मम प्रातः समुत्थाय पूजां कृत्वा मदीयकम् ॥ १५२ ॥ पठते मत्समक्षं वै नित्यं सिद्धिर्न दूरतः। ऐहिकां सिद्धिमासाद्य परलोकसमुद्भवाम् ॥ १५३ ॥ प्राप्नोति पाठको नित्यं मत्प्रसादात्सुरेश्वर। सायुज्यां मुक्तिमायाति नात्र कार्या विचारणा ॥ १५४ ॥

इस प्रकार उनके द्वारा पूछे गये सन्तुष्ट शिवजी ने कहा: रूप मेरा ध्यान करने योग्य और समस्त अनर्थों का नाशक है। अनेक प्रकार के दुःखों के नाश के लिये मेरे सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। समस्त अनर्थों की शान्ति के लिये तुम्हें भी इस चक्र को, जिसे मैंने तुम्हें आज दिया है, सदा धारण करना चाहिये। दूसरे लोग जो नित्य इस सहस्रनाम को पढ़ें या पढ़ायेंगे उन्हें स्वप्न में भी दुःख नहीं होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। राजाओं के समक्ष सङ्कट उत्पन्न होने पर यदि इसका साङ्ग और सविधि सौ बार पाठ किया जाय तो कल्याण प्राप्त होगा। यह रोगनाशक और विद्यादायक उत्तम स्तोत्र है। संसार में लोग जिस श्रेष्ठ फल को लक्ष्य करके इसका पाठ करेंगे वह उत्तम फल उन्हें अवश्य मिलेगा। जो प्रातःकाल उठकर मेरी पूजा करके मेरे समक्ष मेरे स्तोत्र का पाठ करेंगे उनसे सिद्धि

दूर नहीं रह सकेगी। हे सुरेश्वर! इस स्तोत्र का पाठक इहलोक की सिद्धि को प्राप्त करके परलोक की सिद्धि भी प्राप्त कर लेता है और उसके बाद सायुज्य मुक्ति को पाता है—इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

एवमुक्त्वा तदा विष्णुं शङ्करः प्रीतमानसः। उपस्पृश्य कराभ्यां हि उवाच शङ्करः पुनः॥ १५५॥ वरदोस्मि सुरश्रेष्ठ वरान् वृणुयथेप्सितान्। भक्त्या वशीकृतो नूनं स्तवेनानेन ते तदा॥ १५६॥ इत्युक्तो देवदेवेन देवदेवं प्रणम्यतम्। यथेदानीं कृपा देव क्रियते चाप्यतः परम्॥ १५७॥ कार्या चैव विशेषेण कृपालुत्वात्त्वया प्रभो। त्वयि भक्तिर्महादेव प्रसीदवरमुक्तमम् ॥ १५८॥ नान्यदिच्छामिभक्तानामार्तिर्नैव भवेत्प्रभो।

इस प्रकार कहकर प्रसन्न मनवाले शिवजी विष्णु भगवान् को दोनों हाथों से छूकर पुनः बोले: 'हे सुरश्रेष्ठ! मैं तुम्हें वर देना चाहता हूं। तुम यथेप्सित वर माँगो। तुमने स्तुति से मुझे वश में कर लिया है।' इस प्रकार देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी द्वारा कहे जाने पर विष्णु भगवान् ने शिवजी को नमस्कार करके कहा: 'हे प्रभु! हे देव! आपने जैसी कृपा इस समय की है वैसी ही कृपा भविष्य में भी दया करके करते रहें। हे प्रभो, हे महादेव! मैं उत्तम वर यही माँगता हूं कि मेरी भक्ति आप में सदा बनी रहे और मेरे भक्तों को कोई क्लेश न हो। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं चाहता।'

तच्छ्रुत्वावचनं तस्यदयावान् सुतरां भवः॥ १५९॥ स्पर्शं च तदा-तस्मै श्रद्धां शीतासुलक्षणः। प्राहत्वैनंमहादेवः परमानन्दमच्युतम्॥ १६०॥ मयिभक्तिश्चवन्द्यश्च पूज्यश्चैव सुरैरपि। विश्वम्भरस्त्वदीयं वै नाम पापहरं परम्॥ १६१॥ भविष्यति न सदेहोमत्प्रसादात्सुरोत्तम। इत्युक्त्वान्तर्दधे रुद्रो भगवान्नीललोहितः॥ १६२॥

विष्णु के इस वचन को सुनकर शिवजी अच्छी तरह दयालु हो गये। उन्होंने उनके लिये शीतल श्रद्धा का स्पर्श किया। उन महादेव ने इन अच्युत परमान्द से कहा: 'मुझसे तुम्हारी भक्ति बनी रहेगी तथा तुम देवताओं द्वारा पूज्य होगे। हे विश्वम्भर, हे सुरोत्तम, मेरे प्रसाद से तुम्हारा नाम पाप का हरण करनेवाला होगा।' यह कहकर भगवान् नीललोहित शिवजी अन्तर्धान हो गये।

जनार्द्दनोपि भगवान् वचनाच्छङ्करस्य च। प्राप्य चक्रं शुभं ध्यानं स्तोत्रमेतन्निरन्तरम्॥ १६३॥ पपाठाध्यापयामास भक्तैस्तदुपपादितम्। अन्येऽपि ये पठिष्यन्ति ते विन्दन्तु तथा फलम्॥ १६४॥ इति पृष्ठं

समायातं शृण्वतां पापहारकम्। अतः परं च किं श्रेष्ठाः कथयामि वचः पुनः॥ १६५॥ इति श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

जनार्दन विष्णु भगवान् ने भी शङ्कर के वचन से शुभ चक्र को तथा ध्यान के स्तोत्र को पाकर उसे निरन्तर पढ़ा और पढ़ाया। भक्तों ने भी वैसा ही किया। अन्य लोग भी जो इसे पढ़ेंगे वे वैसा ही फल पावेंगे। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त यह स्तोत्र सुननेवालों के पापों का हरण करनेवाला है। इससे आगे और श्रेष्ठ वाणी मैं क्या कहूं? इति श्रीशिवसहस्रनाम स्तोत्र सम्पूर्ण।

अथ मृत्युञ्जयकवचप्रारम्भः।

भैरव उवाच। शृणुष्वपरमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्। महामृत्युञ्जयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम्॥ १॥ यं धृत्वा य पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम्। त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि॥२॥ तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्यावरानने। तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥ ३॥

भैरव बोले: हे परमेश्वरि! मेरे मुख से कहे गये महामृत्युञ्जय के कवच को सुनो। यह परम अद्भुत कवच है। इसे किसी को न देना। हे महेश्वरि! जिस उत्तम कवच को धारण कर, पढ़कर तथा सुनकर मैं तीनों लोकों का स्वामी होकर सुखी हो रहा हूं, वरानने, उसी कवच का वर्णन मैं तुम्हारी प्रसन्नता के लिये करूँगा। तथापि इस परम तत्त्व को किसी दुराचारी को नहीं देना चाहिये।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य श्रीभैरवऋषि। गायत्रीछन्दः। श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता। ॐ बीजम्। जूं शक्तिः। सः कीलकम्। हौं इति तत्त्वम्। चतुर्वर्गफलसाधने पाठे विनियोगः।

ॐ चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते। तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्नोपि जीवति॥ ४॥ ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम। श्रीशिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः॥ ५॥ नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्द्दी मेऽवताच्छ्रुती। त्रिलोचनोऽवतां गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः॥ ६॥ मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः। हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुकभैरवः॥ ७॥ कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु। स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु॥ ८॥ नखान्मे गिरिजानाथः पायांदंगुलिसंयुतान्। स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम्॥ ९॥ कुक्षिं कुबेरवदनः पार्श्वौ मे मारशासनः। शर्वं पातु

तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममाऽवतु ॥ १० ॥ शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः। कटिं कालान्तकः पायादूरू मेंधकघातक ॥ ११ ॥ जागरूकोऽवताज्जानू जंघे मे कालभैरवः। गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥ १२ ॥ पादादिमूर्द्धपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु। रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ॥ १३ ॥ पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः। पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मः ॥ १४ ॥ ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेयामग्निलोचनः। नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ॥ १५ ॥ ऊर्ध्वं बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः। दशदिक्षु दास पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ॥ १६ ॥ रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये। पायादोजूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ॥ १७ ॥ प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु। सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥ १८ ॥ अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः। सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ॥ १९ ॥

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ २० ॥ पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवादिदैवतम्। य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥ २१ ॥ तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः। रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रुञ्जयं लभेत् ॥ २२ ॥ जपं कृत्वा गहे देवि सम्प्राप्स्यति सुखं पुनः। महाभये महारोगे महामारीभये तथा। दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात् ॥ २३ ॥

इति श्रीमहामृत्युञ्जयकवचं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे शिवतन्त्रे षष्ठस्तरङ्गः ॥ ६ ॥

यह पुण्य कवच तीनों लोकों में दुर्लभ है। सर्वमन्त्रमय और सब तन्त्रों में गुह्य है। यह पुण्य, पुण्यप्रद, दिव्य, देवताओं का भी देवता, देवता है। जो इस कवच को पढ़ता या पढ़ाता है उसके हाथ में, हे महेशानि, शिवजी की आठों सिद्धियाँ उपस्थित हो जाती हैं। जो इसे धारण करके युद्धस्थल में युद्ध करता है वह शत्रु को मार कर विजय प्राप्त करता है। हे देवि, ग्रहबाधा में, व्यक्ति इसका जप करने से पुनः सुख पाता है। महाभय में, महारोग में महामारी में, दुर्भिक्ष में तथा शत्रुसंहार में इस कवच को आदर से पढ़ना चाहिये।

इति श्रीमहामृत्युञ्जय कवच समाप्त।

श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्ड में शिवतन्त्ररूपी षष्ठ तरङ्ग समाप्त।

विष्णु

सप्तम तरंग

विष्णु तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः । अथ वक्ष्ये महामन्त्रान्विष्णोः सर्वार्थसाधकान् । येषां संस्मरणात्सन्तो भवाब्धेः पारमाश्रिता ॥ १ ॥

आदि पटल प्रारम्भ : अब मैं विष्णु के महामन्त्रों को कहूंगा जो सभी मनोरथों को सिद्ध करनेवाले हैं और जिनके स्मरण मात्र से सज्जन संसार-रूपी सागर से पार हो जाते हैं ।

अथाष्टाक्षरविष्णुमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्रो यथा । 'ॐ नमो नारायणाय' इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः ।

अष्टाक्षर विष्णु मन्त्र प्रयोग : (शारदा तिलक में) मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमो नारायणाय । यह अष्टाक्षर मन्त्र है ।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य साध्यनारायणऋषिः । देवीगायत्री छन्दः । विष्णुर्देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : साध्यनारायणर्षये नमः शिरसि १ । देवीगायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ । विष्णुदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ क्रुद्धोल्काय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ महोल्काय तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ वीरोल्काय मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ द्युल्काय अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ सहस्रोल्काय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । इति करन्यासः ।

हृदयादिन्यास : ॐ क्रुद्धोल्काय हृदयाय नमः १ । महोल्काय शिरसे स्वाहा २ । ॐ वीरोल्काय शिखायै वषट् ३ । ॐ द्युल्काय कवचाय हुं ४ । ॐ सहस्रोल्कायास्त्राय फट् ५ । इति हृदयादिन्यासः ।

षडङ्गन्यास : ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः १ । ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा २ । ॐ मों नमः शिखायै वषट् ३ । ॐ नां नमः कवचाय हुं ४ । ॐ रां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ यं नमः अस्त्राय फट् ६ । ॐ णां नमः कुक्ष्योः ७ । ॐ यं नमः पृष्ठे ८ । इति मन्त्रवर्णैः षडङ्गन्यासः ।

अथ मन्त्रवर्णैरष्टाङ्गन्यासः ।

प्रथमन्यास : ॐ ॐ नमः आधारे १ । ॐ नं नमः हृदि २ । ॐ मों नमः वक्त्रे ३ । ॐ नां नमः दक्षिणभुजे ४ । ॐ रां नमः वामभुजे ५ । ॐ यं नमः दक्षिणपादे ६ । ॐ णां नमः वामपादे ७ । ॐ यं नमः नमौ ८ । इति प्रथमन्यासः ॥ १ ॥

द्वितीयन्यास : ॐ ॐ नमः कण्ठे १ । ॐ नं नमः नाभौ २ । ॐ मों नमः हृदि ३ । ॐ नां नमः दक्षिणस्तने ४ । ॐ रां नमः वामस्तने ५ । ॐ यं नमः दक्षिणपार्श्वे ६ । ॐ णां नमः वामपार्श्वे ७ । ॐ यं नमः पृष्ठे ८ । इति द्वितीयान्यासः ॥ २ ॥

तृतीयन्यास : ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ । ॐ नं नमः मुखे २ । ॐ मों नमः दक्षिणनेत्रे ३ । ॐ नां नमः वामनेत्रे ४ । ॐ रां नमः दक्षिणकर्णे ५ । ॐ यं नमः वामकर्णे ६ । ॐ णां नमः दक्षिणनासपुटे ७ । ॐ य नमः वामनासापुटे ८ । इति तृतीयन्यासः ॥ ३ ॥

चतुर्थन्यास : ॐ ॐ नमः दक्षबाहुमूले १ । ॐ नं नमः दक्षकूर्परे २ । ॐ मों नमः दक्षमणिबन्धे ३ । ॐ नां नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ४ । ॐ रां नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ५ । ॐ यं नमः वामबाहुमूले ६ । ॐ णां नमः वामकूर्परे ७ । ॐ यं नमः वाममणिबन्धे ८ । इति चतुर्थन्यासः ॥ ४ ॥

पञ्चमन्यास : ॐ ॐ नमः वामहस्तांगुलिमूले १ । ॐ नं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २ । ॐ मों नमः दक्षिणपादमूले ३ । ॐ नां नमः दक्षिणजानुनि ४ । ॐ रां नमः दक्षिणांगुलौ ५ । ॐ यं नमः दक्षपादांगुलिमूले ६ । ॐ णां नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ७ । ॐ यं नमः वामपादमूले ८ । इति पञ्चमन्यासः ॥५॥

षष्ठन्यास : ॐ ॐ नमः वामजानुनि १ । ॐ नं नमः वामगुल्फे २ । ॐ मों नमः वामपादांगुलिमूले ३ । ॐ नां नमः वामपादांगुल्यग्रे ४ । हृदय पर हाथ रखकर ॐ रां नमः त्वचि ५ । ॐ य नमः रक्ते ६ । ॐ णां नमः मांसे ७ । ॐ यं नमः मेदसि ८ । इति षष्ठन्यासः ॥ ६ ॥

सप्तमन्यास : ॐ ॐ नमः अस्थिन १ । ॐ नं नमः मज्जायाम् २ । ॐ मों नमः शुक्र ३ । ॐ नां नमः प्राणे ४ । ॐ रां नमः हृदि ५ । ॐ यं नमः दक्षिणगले ६ । ॐ णां नमः वामगले ७ । ॐ य नमः हृदि ८ । इति सप्तमन्यासः ॥ ७ ॥

अष्टमन्यास : ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ । ॐ न नमः नेत्रयोः २ । ॐ मों नमः मुखे ३ । ॐ नां नमः हृदि ४ । ॐ रां नमः कुक्षौ ५ । ॐ यं नमः ऊर्वोः ६ । ॐ णां नमः जङ्घयोः ७ । ॐ यं नमः पादयोः ८ । इत्यष्टमोन्यासः ॥ ८ ॥ इति मन्त्रवर्णाष्टन्यासाः ।

ॐ चक्राय नमः दक्षिणगण्डे १ । ॐ शङ्खाय नमः वामगण्डे २ । ॐ गदायै नमः दक्षिणांसे ३ । ॐ पद्माय नमः वामांसे ४ ।

इस प्रकार विन्यास करके मूर्तिपञ्जरन्यास करे । उसमें क्रम यह है :

द्वादशमूर्तिपञ्जरन्यास : ॐ ॐ अं केशवायधात्रे नमः ललाटे १ । ॐ नं आं नारायाणायार्यम्णे नमः कुक्षौ २ । ॐ मों इं माधवाय मित्राय नमः हृदि ३ । ॐ भं ईं गोविन्दाय वरुणाय नमः कण्ठे ४ । ॐ गं उं विष्णवेंऽशवे नमः दक्षपार्श्वे ५ । ॐ वं ऊं मधुसूदनाय भगाय नमः दक्षिणांशे ६ । ॐ तें एं त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः गलदक्षिणभागे ७ । ॐ वां ऐं वामनायेन्द्राय नमः वामपार्श्वे ८ । ॐ सुं ओं श्रीधराय पूष्णे नमः वामांसे ९ । ॐ दें औं हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः गलवामभागे १० । ॐ वां अं पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः पृष्ठे ११ । ॐ य अः दामोदराय विष्णवे नमः ककुदि १२ । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः मूर्ध्नि १३ । इति द्वादशमूर्तिपञ्जरन्यासः

किरीट मन्त्र न्यास : 'ॐ किरीटकेयूरहारमकरकुण्डलधरशङ्खचक्रगदाम्भोजपीताम्बरधरश्रीवत्साङ्कितवक्षःस्थल श्रीभूमिसहितात्मज्योतिर्द्वयदीप्तकराय सहस्रादित्यतेजसे नमः' इस मन्त्र से शिर आदि से लेकर पादपर्यन्त व्यापक न्यास करे । इति किरीटमन्त्रन्यास ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजं चक्रं बिभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम् । कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभोद्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पीठशक्तियों की पूजा करे । उसमें क्रम यह है :

पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्व्यै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ।

इससे नवपीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक :

ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग पद्मपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे। उसमें क्रम यह है (अष्टाक्षर विष्णुपूजन यन्त्र देखिये चित्र १४) : पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां विष्णो मे देहि परिवारार्चनाय मे।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण-पूजा आरम्भ करे :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ क्रुधोल्काय हृदयाय नमः[१] १। नैर्ऋत्ये ॐ महोल्कायशिरसे स्वाहा[२] २। वायव्ये ॐ वीरोल्काय शिखायै वषट्[३] ३। ऐशान्ये ॐ द्युल्काय कवचाय हुं ४। देवपश्चिमे सहस्रोल्कायास्त्राय फट्[४] ४।

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के बीच प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से :

ॐ ॐ नमः[६] १। ॐ नं नमः[७] २। ॐ मों नमः[८] ३। ॐ नां नमः[९] ४। ॐ रां नमः[१०] ५। ॐ यं नमः[११] ६। ॐ णां नमः[१२] ७। ॐ यं नमः[१३] ८।

इससे मन्त्रवर्णों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण।२।

फिर अष्टदलों के मध्य में : पूर्वे ॐ वासुदेवाय नमः[१४]। वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। दक्षिणे ॐ सङ्कर्षणाय नमः[१५] सङ्कर्षणश्रीपा० २। पश्चिमे ॐ प्रद्युम्नाय नमः[१६] प्रद्युम्नश्रीपा० ३। उत्तरे ॐ अनिरुद्धाय नमः[१७] अनिरुद्धश्रीपा० ४। अग्निकोणे ॐ शान्त्यै नमः[१८] शान्तिश्रीपा० ५। नैर्ऋते ॐ श्रियै नमः[१९] श्रीश्रीपा० ६। वायव्ये ॐ सरस्वत्यै नमः[२०] सरस्वतीश्रीपा० ७। ऐशान्ये ॐ रत्यै नमः[२१] रति श्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

फिर अष्टदलाग्रों में : पूर्वे ॐ चक्राय नमः[२२] १। दक्षिणे ॐ शङ्खाय नमः[२३] २। पश्चिमे ॐ गदायै नमः[२४] ३। उत्तरे ॐ पद्माय नमः[२५] ४। अग्निकोणे ॐ कौस्तुभाय नमः[२६] ५। नैर्ऋते ॐ मुसलाय नमः[२७] ६। वायव्ये ॐ खड्गाय नमः[२८] ७। ऐशान्ये ॐ वनमालायै नमः[२९] ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

भूपुर के भीतर पूर्वे ॐ गरुडाय नमः[३०] १। दक्षिणे ॐ शङ्खनिधये नमः[३१] २। पश्चिमे ॐ ध्वजाय नमः[३२] ३। उत्तरे ॐ पद्मनिधये नमः[३३] ४। अग्निकोणे ॐ विघ्नाय नमः[३४] ५। नैर्ऋते ॐ आर्यायै नमः[३५] ६। वायव्ये ॐ दुर्गायै नमः[३६]। ऐशान्ये ॐ सेनान्यै नमः[३७] ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

फिर भूपुर में पूर्वादिक्रमेण। ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा० १। ॐ रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० २। ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा० ५। ॐ यं वायवे नमः वायुश्रीपा० ६। ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा० ७। ॐ हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपा० १०।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति षष्ठावरण ॥६॥ उसके बाहर पूर्वादिक्रमेण। ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दण्डाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पं पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रि त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १०।

इससे अस्त्रों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति सप्तमाणरण ॥ ७ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं षोडशलक्षजपः। तथा च। विकारलक्षं प्रजपेन्मनुमेनं समाहितः। तद्दशांशं सरसिजैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः ॥ १ ॥ धर्मार्थकामाल्लब्ध्वा वै विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात्। इत्यष्टाक्षरविष्णुमन्त्रप्रयोगः।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नीराजनान्त (आरती तक) पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण सोलह लाख जप है। कहा भी गया है कि एकाग्रचित्त से विकार लक्ष अर्थात् १६ लाख मन्त्र का जप और उसका दशांश मधु और शक्कर से लिप्त कमलों का होम करना चाहिये। इससे साधक धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त करके विष्णु का सायुज्य प्राप्त करता है। इत्यष्टाक्षर विष्णुमन्त्र प्रयोग।

अथ द्वादशाक्षरीविष्णुमन्त्रप्रयोगः (शारदायाम्) मन्त्रो यथा ।

द्वादशाक्षर विष्णुमन्त्र प्रयोग : शारदातिलक में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । वासुदेवपरमात्मा देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ । वासुदेवपरमात्मदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । नमो तर्जनीभ्यां नमः २ । भगवते मध्यमाभ्यां नमः ३ । वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । इति करन्यासः ।

पञ्चाङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १ । नमो शिरसे स्वाहा २ । भगवते शिखायै वषट् ३ । वासुदेवाय कवचाय हुं ४ । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् ५ । इति पञ्चाङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि १ । ॐ नं नमः भाले २ । ॐ मों नमः नेत्रयोः ३ । ॐ भं नमः मुखे ४ । ॐ गं नमः गले ५ । ॐ वं नमः बाह्वोः ६ । ॐ तें नमः हृदये ७ । ॐ वां नमः कुक्षौ ८ । ॐ सुं नमः नाभौ ९ । ॐ दें नमः लिङ्गे १० । ॐ वां नमः जान्वोः ११ । ॐ यं नमः पादयोः १२ । इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधि सम्पन्न करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

विष्णुं शारदचन्द्रकोटिसदृशं शङ्खं रथाङ्गं गदामम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कान्त्या जगन्मोहनम् । आबद्धाङ्गदहारकुण्डलमहामौलिं स्फुरत्कङ्कणं श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुतम् ।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नवपीठ-शक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्व्यै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ।

इससे नवपीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक :

ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्म-पीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवता की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । उसमें क्रम यह है : पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देव परामृत रसप्रिय । अनुज्ञां विष्णो मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर आवरण पूजा आरम्भ करे (द्वादशाक्षर विष्णुमन्त्र पूजनयन्त्र देखिये चित्र १५) :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ हृदयाय नमः[1] १ । नैर्ऋते ॐ नमो शिरसे स्वाहा[2] २ । वायव्ये भगवते शिखायै वषट्[3] ३ । इशान्ये वासुदेवाय कवचाय हुं[4] ४ । देवतापश्चिमे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्[5] ५ ।

इससे पाँचों अङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के बीच में प्राची दिशा की कल्पना करके अष्टदलों में :

पूर्वे ॐ वासुदेवाय नमः[6] वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । दक्षिणे ॐ सङ्कर्षणाय नमः[7] सङ्कर्षणश्रीपा० २ । पश्चिमे ॐ प्रद्युम्नाय नमः[8] प्रद्युम्नश्रीपा० ३ । उत्तरे ॐ अनिरुद्धाय नमः[9] अनिरुद्ध-श्रीपा० ४ । अग्निकोणे ॐ शान्त्यै नमः[10] शान्तिश्रीपा० ५ । नैर्ऋते ॐ श्रियै नमः[11] श्रीश्रीपा० ६ । वायव्ये ॐ सरस्वत्यै नमः[12] सरस्वतीश्रीपा० ७ । ऐशान्ये ॐ रत्यै नमः[13] रतिश्रीपा० ८ ।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद द्वादशदलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ केशवाय नमः[१४] केशवश्रीपा० १ । ॐ न नारायणाय नमः[१५] नारायणश्रीपा० २ । ॐ मों माधवाय नमः[१६] माधवश्रीपा० ३ । ॐ भं गोविन्दाय नमः[१७] गोविन्दश्रीपा० ४ । ॐ गं विष्णवे नमः[१८] विष्णुश्रीपा० ५ । ॐ वं मधुसूदनाय नमः[१९] मधुसूदनश्रीपा० ६ । ॐ तें त्रिविक्रमाय नमः[२०] त्रिविक्रमश्रीपा० ७ । ॐ वां वामनाय नमः[२१] वामनश्रीपा० ८ । ॐ सुं श्रीधराय नमः[२२] श्रीधरश्रीपा० ९ । ॐ दें हृषीकेशाय नमः[२३] हृषीकेशश्रीपा० १० । ॐ वां पद्मनाभाय नमः[२४] पद्मनाभश्रीपा० ११ । ॐ यं दामोदराय नमः[२५] दामोदर श्रीपा० १२ ।

इससे द्वादशमूर्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति तृतीयावरण ।३।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । द्वादशसहस्रहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पण-मार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः । तत्सहस्रं प्रजुहुयात्तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ १ ॥ एवं सम्पूजितो विष्णुः प्रदद्याद्दिष्टमात्मनः । पायसेन घृताक्तेन मन्त्रवर्ण-सहस्रकम् ॥ २ ॥ जुहुयान्मानवः सिद्ध्यै समिद्भिः क्षीरभूरुहाम् । तत्संख्यया पयोक्ताभिः सर्वपापविमुक्तये ॥ ३ ॥ इति द्वादशाक्षरीविष्णु-मन्त्रप्रयोगः ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण १२ लाख जप है । १२ हजार होम है और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करे । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि जितेन्द्रिय और दीक्षित होकर साधक मन्त्रवर्णों की जितनी संख्या (बारह है उतने लाख जप करे और घी से परिप्लुत तिलों से उतने ही हजार आहुतियाँ दे । इस प्रकार पूजित विष्णु अपनी इच्छानुसार इष्ट फल देता है । घृत से सिक्त खीर से तथा दूध से सिक्त क्षीरी वृक्षों की समिधाओं से पाप से विमुक्त तथा सिद्धि के लिये बारह हजार आहुतियाँ देनी चाहिये । इति द्वादशाक्षर विष्णुमन्त्र प्रयोग ।

अथ राममन्त्रप्रयोगः ।

षडक्षर मन्त्र इस प्रकार है : **रां रामाय नमः । इति षडक्षरमन्त्रः ।**

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीरामो देवता । रां बीजम् । नमः शक्तिः । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २ । श्रीरामदेवतायै नमः हृदि ३ । रां बीजाय नमः गुह्ये ४ । नमः शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ रौं कनिष्ठिका-भ्यां नमः ५ । ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ रां हृदयाय नमः[१] १ । ॐ रीं शिरसे स्वाहा[२] २ । ॐ रूं शिखायै वषट्[३] ३ । ॐ रैं कवचाय हुं[४] ४ । ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ५ । ॐ रः अस्त्राय फट्[६] ६ । इति हृदयादि षडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ रां नमः ब्रह्मरन्ध्रे १ । ॐ रां नमः भ्रुवोर्मध्ये २ । ॐ मां नमः हृदि ३ । ॐ यं नमः नाभौ ४ । ॐ नं नमः लिङ्गे ५ । ॐ मं नमः पादयोः ६ । इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासिनं मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि । सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं पश्यन्तीं मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्व्यै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ।

इससे पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को अग्न्युत्तारण पूर्वक :

ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग-पद्मपीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम इस प्रकार है (श्रीराम षडक्षर मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र १६) : पुष्पांजलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि मे राम परिवारार्चनाय मे।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

देववामपार्श्वे श्रीसीतायै नमः[7]। सीताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। अग्निकोणे। ॐ शार्ङ्गाय नमः शार्ङ्गश्रीपा० २। दक्षिणपार्श्वे ॐ शराय नमः[9] ३। वामपार्श्वे ॐ चापाय नमः[10] ४।

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताःसन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥ इसके बाद :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ रां हृदयाय नमः १। निर्ऋत्ये ॐ रीं शिरसे स्वाहा २। वायव्ये ॐ रूं शिखायै वषट् ३। ऐशान्ये ॐ रैं कवचाय हुं ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देवपश्चिमे ॐ रः अस्त्राय फट् ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

उसके बाहर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची दिशा की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ हनुमते नमः[11]। हनुमच्छ्रीपा० १। ॐ सुग्रीवाय नमः[12]। सुग्रीवश्रीपा० २। ॐ भरताय नमः[13]। भरतश्रीपा० ३। बिभीषणाय नमः[14]। बिभीषणश्रीपा० ४। ॐ लक्ष्मणाय नमः[15]। लक्ष्मणश्रीपा० ५। ॐ अङ्गदाय नमः[16]। अङ्गदश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शत्रुघ्नाय नमः[17]। शत्रुघ्नश्रीपा० ७। ॐ जाम्बवते नमः[18]। जाम्बवच्छ्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥ फिर अष्टदलाग्रों में :

ॐ सृष्टाय नमः[19]। सृष्टश्रीपा० १। ॐ जयन्ताय नमः[20]। जयन्तश्रीपा० २। ॐ विजयाय नमः[21]। विजयश्रीपा० ३। ॐ सुराष्ट्राय नमः[22]। सुराष्ट्रश्रीपा० ४। ॐ राष्ट्रवर्धनाय नमः[23]। राष्ट्रवर्धनश्रीपा० ५। ॐ अकोपाय नमः[24]। अकोपश्रीपा० ६। ॐ धर्मपालनाय नमः[25]। धर्मपालश्रीपा० ७। ॐ सुमन्ताय नमः[26]। सुमन्तश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च (शारदातिलके) वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं सरोरुहैः। जुहुयादर्चिते वह्नौ ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥ १ ॥ एवं पूजादिभिः सिद्धे मन्त्रौ कर्माणि साधयेत्। जातीप्रसूनैर्जुहुयाच्चन्दनाम्भः समुक्षितैः ॥ २ ॥ राजवश्याय कमलैर्धनधान्यादिसम्पदे। नीलोत्पलानां होमेन वशयेदखिलं जगत् ॥ ३ ॥ बिल्वप्रसूनैर्जुहुयादिन्दिरावाप्तये नरः। दूर्वाहोमेन दीर्घायुर्भवेन्मन्त्री निरामयः ॥ ४ ॥ रक्तोत्पलहुतान्मन्त्री धनमाप्नोति वांछितम्। मेधाकामेन होतव्यं पालाशकुसुमैर्नवैः ॥ ५ ॥ तज्जप्तमम्भः प्रपिबेत्कविर्भवति वत्सरात्। तन्मन्त्रितान्नं भुञ्जीत महदारोग्यमाप्नुयात् ॥ ६ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण ६ लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन, और ब्राह्मणभोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। शारदातिलक में कहा गया है कि मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख मन्त्र का जप करना चाहिये। फिर अर्चित अग्नि में उसका दशांश कमलों से होम करे। तदुपरान्त ब्राह्मण भोजनादि कराना चाहिये। इस प्रकार पूजा आदि करने से सिद्ध हुये मन्त्र से प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिये। राजा को वश में करने के लिये चन्दन के जल से सिक्त चमेली के फूलों से होम करना चाहिये। धन-धान्यादि की प्राप्ति के लिये कमलों से होम करना चाहिये। नीले कमलों से होम करने से साधक सारे संसार को वश में कर लेता है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये बेल के फूलों से होम करना चाहिये। दूर्वा से होम करने से साधक रोगरहित होकर दीर्घायु

प्राप्त करता है। लाल कमल के होम से मनुष्य वाञ्छित धन प्राप्त करता है। मेधा प्राप्ति की इच्छा से पलाश के नये फूलों से होम करना चाहिये। मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित जल पीने से एक वर्ष में कवि हो जाता है और उससे अभिमन्त्रित भोजन करने से महान आरोग्य प्राप्त करता है।

अयं मन्त्रः षडविधः। तथा च-स्वकामशक्तिवाग्लक्ष्मीताराद्यः पञ्चवर्णकः। षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १ ॥ ब्रह्मा सम्मोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरव्ययः। अगस्तिः श्रीशिवः प्रोक्तो मुनयोत्र क्रमादिमे ॥ २ ॥ अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मनोः। छन्दो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामश्चैव देवता ॥ ३ ॥ ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कार्यम्। इति षडविधमन्त्रस्वरूपम्।

यह मन्त्र छः प्रकार से बनता है। कहा भी गया है कि आरम्भ में स्व (रां), काम(क्लीं), शक्ति(ह्रीं), वाक्(ऐं), लक्ष्मी(श्रीं) तथा तार (ॐ) इन बीजों को पञ्चवर्ण (रामाय नमः) के आदि में लगाने से यह षड्विध षडक्षर मन्त्र बनता है जो चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को देने वाला है। मन्त्रों के क्रमशः ब्रह्मा, सम्मोहन, शक्ति, दक्षिणामूर्ति अव्यय, अगस्ति, और श्रीशिव ऋषि कहे गये हैं। अथवा कामबीजयुक्त मन्त्र के ऋषि विश्वामित्र भी कहे गये हैं। इन मन्त्रों का छन्द गायत्री और श्रीराम देवता हैं। ध्यान, पूजादि सब पूर्ववत् करना चाहिये। इति षड्विध मन्त्रस्वरूप। देखिये नीचे षड्विध मन्त्र-स्वरूप चक्र।

षड्विधमन्त्रस्वरूपम्	ऋषिः	छन्दः	देवता
१ रां रामाय नमः	ब्रह्मा	गायत्री	श्रीरामः
२ क्लीं रामाय नमः	सम्मोहन-विश्वामित्रः	गायत्री	श्रीरामः
३ ह्रीं रामाय नमः	शक्तिः	गायत्री	श्रीरामः
४ ऐं रामाय नमः	दक्षिणामूर्तिः	गायत्री	श्रीरामः
५ श्रीं रामाय नमः	अगस्तिः	गायत्री	श्रीरामः
६ ॐ रामाय नमः	शिवः	गायत्री	श्रीरामः

अथ दशाक्षररामामन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'हुं जानकीवल्लभाय स्वाहा' इति दशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः। विराट् छन्दः। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामो देवता। हुं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामदेवतायै नमः हृदि ३। हुं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐक्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करे।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ हुं नमः शिरसि १। ॐ जां नमः ललाटे २। ॐ नं नमः भ्रूमध्ये ३। ॐ कीं नमः तालुनि ४। ॐ वं नमः कण्ठे ५। ॐ ल्लं नमः हृदि ६। ॐ भां नमः बाह्वोः ७। ॐ यं नमः नाभौ ८। ॐ स्वां नमः जान्वोः ९। ॐ हां नमः पादयोः १०। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नसौन्दर्यमण्डपे। मन्दारपुष्पैरवद्धवितानतोरणाङ्किते ॥ १ ॥ सिंहासनसमारूढं पुष्पकोपरि राघवम्। रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्ययानगतैः शुभैः ॥ २ ॥ संस्तूयमानं मुनिभिः सर्वतः परिसेवितम्। सीतालंकृतवामाङ्गं लक्ष्मणेनोपशोभितम् ॥ ३ ॥ श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम्।

एवं ध्यात्वा मन्त्रं जपेत्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति दशाक्षर राममन्त्रप्रयोगः।

इससे ध्यान करके मन्त्र का जप करे। इसका पुरश्चरण १० लाख जप है। अन्य सब कुछ पूर्ववत् है। इति दशाक्षर राममन्त्रप्रयोग।

राममन्त्रषट्स्वरूपम्।

वह्निर्नारायणाढ्यो यो जठरः केवलस्तथा। द्व्यक्षरो मन्त्रराजोऽ

सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ १ ॥ श्री मायामन्मथैकैकबीजाद्यन्तगतो मनुः । चतुर्वर्णः स एव स्यात् षड्वर्णो वाञ्छित प्रदः ॥ २ ॥ स्वाहान्तो हुंफडन्तो वा नमोऽन्तो वा भवेन्मनुः । तारो मायारमानंगवाक्स्वबीजैस्तु षड्विधः ॥ ३ ॥ त्र्यक्षरो मन्त्रराजः स्यात्सर्वाभीष्टफलप्रदः । द्वयक्षरश्चन्द्रभद्रान्तो मन्त्रोयं चतुरक्षरः ॥ ४ ॥ रामाय हृन्मनुः प्रोक्तो मन्त्रः पञ्चाक्षरोऽपरः । पञ्चाशन्मातृकावर्णप्रत्येकपूर्वको मनुः ॥ ५ ॥ लक्ष्मीवाग्मन्मथादिश्च तारादि स्यादनेकधा । वह्निस्थं शयनं विष्णोरूर्ध्वचन्द्रविभूषितम् ॥ ६ ॥ एकाक्षरो मनुः प्रोक्तो मन्त्रराजः सुरद्रुमः । ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छन्दो रामस्तु देवता ॥ ७ ॥ एकाक्षरेतु द्वादशलक्ष जपः । अन्येषां षड्लक्ष जपः इति राममन्त्रप्रयोगः ।

राममन्त्र का षट् स्वरूप : 'राम' यह द्वयक्षर मन्त्रराज समस्त अभीष्ट फलों का दाता है । राम का षडक्षर मन्त्र छः प्रकार का होता है : १. रां रामाय नमः । २. ह्रीं रामाय नमः । ३. क्लीं रामाय नमः । ४. ऐं रामाय नमः । ५. श्रीं रामाय नमः । ६. ॐ रामाय नमः । उक्त द्वयक्षर राममन्त्र के आदि और अन्त में एक एक बीजमन्त्र जोड़ देने पर चार अक्षरवाले मन्त्र बन जाते हैं । यथा, श्रीं राम श्रीं । ह्रीं राम ह्रीं । क्लीं राम क्लीं । किन्तु छः वर्णोवाले मन्त्र अभीष्ट फल देनेवाले हैं । चतुरक्षर मन्त्र के अन्त में स्वाहा हुम्, फट्, या नमः लगाने से षडक्षर मन्त्र बनता हैं । यथा, श्रीं राम श्रीं स्वाहा । श्रीं राम श्रीं हुं फट्, श्रीं राम श्रीं नमः । उक्त द्वयक्षर मन्त्र के आदि में ॐ, ह्रीं, श्रीं क्लीं, ऐं या रां बीजों में से किसी को अलग-अलग लगाने से छः प्रकार के त्र्यक्षर मन्त्र बनते हैं । यथा ॐ राम, ह्रीं राम, श्रीं राम, क्लीं राम, ऐं राम, रां राम–ये त्र्यक्षर मन्त्रराज साधक के सभी अभीष्ट फलों को प्रदान करते हैं । राम के आगे द्वयक्षर 'चन्द्र' या 'भद्र' शब्द लगाने से रामचन्द्र, रामभद्र ये चार अक्षरवाले दो मन्त्र बनते हैं । 'रामाय नमः' एक दूसरा पञ्चाक्षर मन्त्र बनता है । श्रीं रामाय नमः, ऐं रामाय नमः, क्लीं रामाय नमः, ॐ रामाय नमः–ये चार प्रकार के षडक्षर मन्त्र हैं । अं रामाय नमः । आं रामाय नमः इत्यादि प्रकार से मातृका वर्णों से एक-एक वर्ण नाम के आगे लगाने से श्रीराम के पचास प्रकार के मन्त्र बनते हैं । इन सभी मन्त्रों का ध्यान, पूजा आदि पूर्ववत् षडक्षर मन्त्र के समान ही जानना चाहिये । 'रां' यह एकाक्षर मन्त्र सब मन्त्रो में प्रधान और कल्पवृक्ष के समान है । इस एकाक्षर मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा हैं, छन्द गायत्री है और देवता राम हैं । एकाक्षर मन्त्र के पुरश्चरण में बारह लाख तथा अन्य मन्त्रों के

पुरश्चरण में छः लाख जप करना चाहिये । इति राममन्त्र प्रयोग ।

अथ रामनामलेखनविधिः (श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकाण्डे) शृणुष्व विष्णुदास त्वं यत्तेऽहं प्रवदामि च । तुष्ट्यर्थं रामचन्द्रस्य नित्यं पत्रे तु मानवैः । लेखनीयं रामनाम शतानि नव प्रत्यहम् । अथवाष्टोत्तरशतं पूजनीयं सविस्तरम् ॥ २ ॥ एवं कोटिमितं लेख्यं लक्षं वास्तु ततः परम् । हवनं हि दशांशेन कर्तव्यं विधिपूर्वकम् ॥ ३ ॥ इदं विष्णुरिति ऋचा तिलाज्यैः पायसेन वा । नवान्नेनाऽथ वा कार्यं राघवं परिपूज्य च ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरस्तु तच्छ्रुत्वा करिष्यति यथाविधि । मासत्रयेण तस्यैव राजप्राप्तिर्भविष्यति ॥ ५ ॥ अन्ते च परमं स्थानं गमिष्यति मनोर्बलात् । इति रामनामलेखनविधिः ।

रामनाम लेखन विधि : श्रीमदानन्द रामायण के मनोहर काण्ड में कहा गया है कि : हे विष्णुदास ! मै तुम्हें जो बता रहा हूं उसे सुनो । रामचन्द्र की प्रीति की इच्छा रखनेवाले मनुष्यों को चाहिये कि कागज पर प्रतिदिन नौ सौ या एक सौ आठ बार रामनाम लिखकर विस्तारपूर्वक उनका पूजन करे । इस प्रकार एक करोड़ अथवा एक लाख नाम लिखने के बाद उसका दशांश हवन करना चाहिये । 'इदं विष्णुः' इस मन्त्र से घी तथा तिल अथवा खीर से या नवीन अन्न से राम की पूजा करके होम करना चाहिये । (श्रीरामदास कहते हैं कि श्रीकृष्णजी द्वारा बताई हुई) इस विधि को सुनकर युधिष्ठिर यदि यथाविधि पूजन करेंगे तो तीन मास में अपना राज्य फिर से प्राप्त कर लेंगे और अन्त में इसी मन्त्र के बल से परमधाम को प्रस्थान करेंगे । इति रामनाम लेखन विधि ।

अथ कृष्णमन्त्रप्रयोगः ।

शारदातिलक में अष्टादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्रीकृष्णो देवता । क्लीं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ नारदऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीकृष्णदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ क्लीं बीजाय

नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : क्लीं कृष्णाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । गोविन्दायतर्जनीभ्यां नमः २ । गोपीजन मध्यमाभ्यां नमः ३ । वल्लभाय अनामिकाभ्यां नमः ४ । स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । इति करन्यासः ।

हृदयादिपञ्चाङ्गन्यास : क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः १ । गोविन्दाय शिरसे स्वाहा २ । गोपीजन शिखायै वषट् ३ । वल्लभाय कवचाय हुम् ४ । स्वाहा अस्त्राय फट् ५ । इति हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । स्मरेद्वृक्षवने रम्ये मोहयन्तमनारतम् । गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं गोपकन्याः सहस्रशः ॥ १ ॥ आत्मनो वदनाम्भोजप्रेषिताक्षिमधुव्रताः । पीडिताः कामबाणेन विरमाश्लेषणोत्सुकाः ॥ २ ॥ मुक्ताहारलसत्पीनतुङ्गस्तनभरानताः । स्रस्तधम्मिल्लवसना मदस्खलितभाषणाः ॥ ३ ॥ दन्तपंक्तिप्रभद्भासिस्पन्दमानाधराञ्चिताः । बिलोभयन्तीविविधैर्विभ्रमैर्भावगर्भितैः ॥ ४ ॥ फुल्लेन्दीवरकान्तमिन्दुवदनं बर्हावतसं प्रियं श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् । गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥ ५ ॥

इससे ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे । इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र या मन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दूध की धारा और जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखा कर :

ॐ नमो भगवते श्रीकृष्णाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगप्रपीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठके बीच स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे ।

फिर ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्प दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे(अष्टाचारी कृष्णमन्त्र पूजनयन्त्र देखिये चित्र १७)पुष्पाञ्जलि लेकर:

ॐ संविन्मयः परादेवेः परामृतरसप्रिय । अनुज्ञां कृष्ण मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे:

पञ्चकोणे आग्नेयादिक्रमेण । क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः[1] । हृदयश्रीपादुकां पूज्यामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ गोविन्दाय शिरसे स्वाहा[2] । शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ गोपीजनशिखायै वषट्[3] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ वल्लभाय कवचाय[4] हुं । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट्[5] । अस्त्र श्रीपा० ॥ ५ ॥

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ कालिन्द्यै नमः[6] । कालिन्दीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नाग्नजित्यै नमः[7] । नाग्नजिती श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मित्रविन्दायै नमः[8] । मित्रविन्दाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ चारुहासिन्यै नमः[9] । चारुहासिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रोहिण्यै नमः[10] । रोहिणीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ जाम्बवत्यै नमः[11] । जाम्बवतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः[12] । रुक्मिणीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सत्यभामायै नमः[13] । सत्यभामाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों पटरानियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ ऐरावताय नमः[14] ॥ १ ॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः[15] ॥ २ ॥ ॐ वामनाय नमः[16] ॥ ३ ॥ ॐ कुमुदाय नमः[17] ॥ ४ ॥ ॐ अञ्जनाय नमः[18] ॥ ५ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः[19] ॥ ६ ॥ ॐ सार्वभौमाय नमः [20] ॥ ७ ॥ ॐ सुप्रतिकाय नमः[21] ॥ ८ ॥

इससे आठों गजराजों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण।

इसके बाद भूपुर में प्राची क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमयुतद्वयात्मको जपः। तत्तद्दशांशेन होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एवं सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। मन्त्रमेनं यथान्यायामयुतद्वितयं जपेत्। जुहुयादारुणाम्भोजैर्दशांशं सुसमाहितः ॥ १ ॥ इति सम्पूजयेद्देवं गोविन्दं जगतां पतिम्। कुर्वीत कल्पनिर्दिष्टान्प्रयोगान्निजवांछितान् ॥२॥ लक्ष्मीं प्रसूनैर्जुहुयाच्छ्रियमिच्छन्ननिन्दिताम्। साज्येनान्नेन जुहुयादाज्यान्नस्य समृद्धये ॥ ३ ॥ अरुणैः कुसुमैर्विप्राञ्जातीभिः पृथिवीपतीन्। प्रसूनैरसितैर्वैश्याञ्छूद्रान्नीलोत्पलैर्नवैः ॥ ४ ॥ वशयेल्लवणैः सर्वान् पङ्कजैर्वनिताजनम्। गोशालासु कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा ॥ ५ ॥ गवां शान्तिकरोत्याशु गोविन्दो गोकुलप्रियः। शिशुवेषधरं देवं किंकिणीदामशोभितम् ॥ ६ ॥ स्मृत्वा प्रतर्पयेन्मन्त्री दुग्धबुद्ध्या शुभैर्जलैः। धनधान्यांशुकादीनि प्रीतस्तस्मै ददाति सः ॥७॥ इति कृष्णमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण बीस हजार जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि इस मन्त्र का बीस हजार जप करे तथा शान्तचित्त होकर लाल कमलों से दशांश होम करे। इस प्रकार जगत्पति गोविन्द की पूजा करे तथा कल्पनिर्दिष्ट अभीष्ट प्रयोगों को सिद्ध करे। अनिन्दित श्री और लक्ष्मी को चाहता हुआ साधक फूलों से हवन करे। घी और अन्न की समृद्धि के लिये घी और अन्न से होम करे। लाल फूलों से होम करने से साधक ब्राह्मणों को वश में कर सकता है। चमेली के फूलों से होम करने से राजाओं को, श्वेत फूलों से वैश्यों को और नीले कमलों के हवन से शूद्रों को वश में कर सकता है। नमक से होम करने से सभी को और कमलों से होम करने से स्त्रियों को वश में कर सकता है। गोशाला में घी तथा खीर से किया गया होम गायों के लिये शीघ्र ही शान्ति प्रदान करता है क्योंकि गोविन्द गो-कुल के लिये अत्यन्त प्रिय हैं। शिशु का वेश धारण किये हुये घुंघरू लगी करधनी से सुशोभित गोविन्द का स्मरण करके साधक दूध की बुद्धि से शुद्ध जल द्वारा

तर्पण करने से गोविन्द प्रसन्न होकर धन-धान्य तथा वस्त्रादि उसे देते हैं। इति कृष्णमन्त्र प्रयोग।

नवविधकृष्णमन्त्रस्वरूपचक्रम

क्लीं कृष्णाय स्वाहा।	इति षडक्षरो मन्त्रः।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।	इति दशाक्षरो मन्त्रः।
क्लीं हृषीकेशाय नमः।	इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।
श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा।	इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।
श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा।	इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।
ॐ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा।	इति षोडशाक्षरो मन्त्रः।
ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सौं।	इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।
ॐ क्लीं नमो भगवते नन्दपुत्राय बालादिवपुषे श्यामलाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।	इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।
ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।	इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः

टिप्पणी : इन सभी मन्त्रों के पूजन आदि सब पूर्ववत् हैं।

अथ लक्ष्मीनारायणमन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में चतुर्दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। वासुदेवो देवता। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ वासुदेवदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मी मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिपञ्चाङ्गन्यास : ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कव-

चाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ नमः अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । ॐ विद्युच्चन्द्रनिभं वपुः कमलजा वैकुण्ठयोरेकतां प्राप्तं स्नेहवशेन रत्नविलसद्भूषाभरालंकृतम् । विद्यापङ्कजदर्पणान्मणिमयं कुम्भं सरोजं गदां शङ्खं चक्रममूनि बिभ्रदमितां दिश्याच्छ्रियं वः सदा ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यों नमः' इस मन्त्र से पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे । इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते लक्ष्मीनारायणाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (लक्ष्मीनारायण मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र १८) : पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

पञ्चकोणकेसरेषु आग्नेयादिक्रमेण । ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः[१] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ श्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा[२] । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ लक्ष्मीं शिखायै वषट्[३] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नमः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ॥ ५ ॥

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि चारो दिशाओं में :

ॐ वासुदेवाय नमः[६] । बासुदेवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सङ्कर्षणाय नमः[७] । सङ्कर्षणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रद्युम्ना नमः[८] । प्रद्युम्नश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः[९] । अनिरुद्धश्रीपा० ॥ ४ ॥

आग्नेयादि चारों कोणों में ॐ शान्त्यै नमः[१०] । शान्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ श्रियै नमः[११] । श्रीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः[१२] । सरस्वतीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ रत्यै नमः[१३] । रतिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २॥

इसके बाद द्वादश दलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ केशवाय नमः[१४] । केशवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः[१५] । नारायणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः [१६] । माधवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गोविन्दाय नमः[१७] । गोविन्दश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णवे नमः[१८] विष्णुश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः[१९] । मधुसूदनश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः[२०] । त्रिविक्रमश्रीपा० ॥ ७॥ ॐ वामनाय नमः[२१] । वामनश्रीपा० ॥८॥ ॐ श्रीधराय नमः[२२] । श्रीधरश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ हृषीकेशाय नमः[२३] । हृषीकेशश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः[२४] । पद्मनाभश्रीपा० ॥ ११॥ ॐ दामोदरा नमः[२५] दामोदरश्रीपा० ॥ १२ ॥

इससे द्वादश मूर्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति तृतीयावरण ।३।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों और वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्दशलक्षजपः । तत्सहस्रेण होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धे

च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। वर्णलक्षं जपेदेनं तत्सहस्रं सरोरुहैः। होमं कुर्याद्विकसितैर्मधुरत्रयसंयुतैः ॥ १ ॥ पायसेन कृतो होमो लक्ष्मीवश्यप्रदायकः। मधुराक्तैस्तिलैर्हुत्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ २ ॥ इति चतुर्दशाक्षर लक्ष्मीनारायणमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण चौदह लाख जप है। इतना ही (अर्थात् चौदह) हजार होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन, और ब्राह्मणभोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि मन्त्र में जितने अक्षर हैं (यह १४ अक्षरों का मन्त्र है) उतने लाख जप करे और उतने ही हजार फूले हुये कमलों को मधु, घी तथा शक्कर में लिप्त करके होम करे। खीर से किया गया होम लक्ष्मी को वश में कर लेता है। घी, मधु तथा शक्कर के साथ मिले तिलों से होम करने से साधक सब कार्य सिद्ध कर सकता है। इति चतुर्दशाक्षर लक्ष्मीनारायण मन्त्र प्रयोग।

अथ दधिवामनाख्यचमत्कारिमन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में अष्टादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार :

'ॐ नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय स्वाहा' इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य इन्दुर्ऋषिर्विराट्छन्दो दधिवामनो देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ इन्दु ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ विराट्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दधिवामनदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ नमो तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ विष्णवे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ सुरपतये अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ महाबलाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ विष्णवे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ सुरपतये कवचाय हुं ॥ ४ ॥ महाबलाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ नं नमः भाले ॥ २ ॥

ॐ मों नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ विं नमः कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ ष्णं नमः नासिकयोः ॥ ५ ॥ ॐ वें नमः ओष्ठयोः ॥ ६ ॥ ॐ सुं नमः तालुके ॥ ७ ॥ ॐ रं नमः कण्ठे ॥ ८ ॥ ॐ पं नमः बाहुद्वये ॥ ९ ॥ ॐ तं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ यें नमः हृदये ॥ ११ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ १२ ॥ ॐ हां नमः नाभौ ॥ १३ ॥ ॐ बं नमः गुह्ये ॥ १४ ॥ ॐ लां नमः ऊरुद्वये ॥ १५ ॥ ॐ यं नमः जानुद्वये ॥ १६ ॥ ॐ स्वां नमः जङ्घयोः ॥ १७ ॥ ॐ हां नमः पादयोः ॥ १८ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ॐ मुक्तागौरं नवमणिलसद्भूषणं चन्द्रसंस्थं भृङ्गाकारैरलकनिकरैः शोभिवक्त्रारविन्दम्। हस्ताब्जाभ्यां कनककलशं शुद्धतोयाभिपूर्णं दध्यन्नाढ्यं कनकचषकं धारयन्तं भजामः ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि चन्द्रमण्डलान्तं पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण। ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा और जल की धारा डाल कर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखा कर :

ॐ नमो भगवते दधिवामनाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित कर और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा से आवरण पूजा करे। (दधिवामन मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र १९)। पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ॥ १ ॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारो दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ हृदयाय नमः[1] हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ नमः शिरसे स्वाहा[2]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विष्णवे शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ सुरपतये कवचाय[4] हुं। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ महाबलाय नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रश्रीपा० ॥५॥ स्वाहा अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि चारों दिशाओं में :

ॐ वासुदेवाय नमः[7]। वासुदेवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सङ्कर्षणाय नमः[8]। सङ्कर्षणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रद्युम्नाय नमः[9]। प्रद्युम्नश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः[10]। अनिरुद्धश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेयादि चारों कोणों में ॐ शान्त्यै नमः[11]। शान्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ श्रियै नमः[12]। श्रीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः[13]। सरस्वतीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ रत्यै नमः[14]। रतिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राच्यादि चारों दिशाओं में :

ॐ ध्वजाय नमः[15] ॥ १ ॥ ॐ वैनतेयाय नमः[16] ॥ २ ॥ ॐ कौस्तुभाय नमः[17] ॥ ३ ॥ ॐ वनमालिकायै नमः[18] ॥ ४ ॥ आग्नेयादि चारों कोणों में ॐ शङ्खाय नमः[19] ॥ ५ ॥ ॐ चक्राय नमः[20] ॥ ६ ॥ ॐ गदायै नमः[21] ॥ ७ ॥ ॐ शार्ङ्गाय नमः[22] ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद द्वादशदलों में प्राची क्रम से :

ॐ केशवाय नमः[23]। केशवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः[24]। नारायणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः[25]। माधवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गोविन्दाय नमः[26]। गोविन्दश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विष्णवे नमः[27]। विष्णुश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मधुसूदनाय नमः[28]। मधुसूदनश्रीपा० ॥६॥ ॐ त्रिविक्र-

माय नमः[29]। त्रिविक्रमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ वामनाय नमः[30]। वामनश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ श्रीधराय नमः[31]। श्रीधरश्रीपा० ॥९॥ ॐ हृषीकेशाय नमः[32]। हृषीकेशश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः[33]। पद्मनाभश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ दामोदराय नमः[34]। दामोदरश्रीपा० ॥ १२ ॥

इससे द्वादश मूर्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। गुणलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं घृतप्लुतैः। पायसान्नैः प्रजुहुयाद्दध्यन्नैर्वा यथाविधि ॥ १ ॥ विधानमेतद्देवस्य कीर्तितं सुरपूजितम्। पायसाज्येन जुहुयात्सहस्रं श्रियमाप्नुयात् ॥ २ ॥ धान्यहोमेन धान्याप्तिः शतपुष्पासमुद्भवैः। बीजैः सहस्रसंख्यातैर्होमो भयविनाशनः ॥ ३ ॥ दध्योदनेन शुद्धेन हुत्वा मुच्येत् दुर्गतेः। स्मृत्वा त्रैविक्रमं रूपं जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ॥ ४ ॥ मुक्तो बन्धाद्भवेत्सद्यो नात्र कार्या विचारणा। परे संपाद्य देवेशं भित्तौ वा पूजयेत्सुधीः। सुगन्धिकुसुमैर्नित्यं महतीं श्रियमश्नुते ॥ ५ ॥ इत्यष्टादशाक्षरदधिवामनाख्यमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण तीन लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि गुण लक्ष (तीन लाख) मन्त्र का जप करे और उसका दशांश घृतप्लुत खीर से या दही तथा अन्न से यथाविधि होम करे। यह देवताओं द्वारा पूजित इस देवता का विधान कहा गया है। घी और खीर से एक हजार होम करने से साधक लक्ष्मी को प्राप्त करता है। अन्नों के होम से अन्नप्राप्ति होती है। सौंफ के बीजों से एक हजार होम करने से भय का विनाश होता है। शुद्ध दही तथा भात से होम करने से मनुष्य दुर्गति से छूट जाता है। एकाग्रचित्त होकर विष्णु के त्रिविक्रम रूप का स्मरण करके मन्त्र का जप करने से साधक बन्धनों से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है। इसमें विचार नहीं करना चाहिये। दीवाल पर

परम देव का चित्र बनाकर सुधी साधक यदि सुगन्धित पुष्पों से नित्य पूजा करे तो वह महती लक्ष्मी को प्राप्त करता है। इति अष्टादशाक्षर दधिवामन मन्त्र प्रयोग।

अथ हयग्रीवविष्णुमन्त्रप्रयोगः।

तन्त्रसार में बयालीस अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

हंसः सोहं विश्वातीर्णस्वरूपाय चिन्मयानन्दरूपिणे। तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय विष्णवे स्वाहा हंसः सोहम्। इति द्विचत्वारिंशदक्षरो हयग्रीवमन्त्रः।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। हयग्रीवो देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि ।। १ ।। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।। २ ।। हयग्रीवाय देवतायै नमः हृदि ।। ३ ।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।। ४।। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : हंसः सोहम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ।। १ ।। विश्वातीर्णस्वरूपाय तर्जनीभ्यां नमः ।। २ ।। चिन्मयानन्दरूपिणे मध्यमाभ्यां नमः ।। ३ ।। तुभ्यं नमो हयग्रीव अनामिकाभ्यां नमः ।। ४ ।। विद्याराजाय विष्णवे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।। ५ ।। स्वाहा हंसः सोहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।। ६ ।। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : हंसः सोहं हृदयाय नमः[१] ।। १ ।। विश्वातीर्णस्वरूपाय शिरसे स्वाहा[२] ।। २।। चिन्मयानन्दरूपिणे शिखायै वषट्[३] ।। ३ ।। तुभ्यं नमो हयग्रीय कवचाय[४] हुं ।। ४ ।। विद्याराजाय विष्णवे नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ।। ५ ।। स्वाहा हंसः सोहम् अस्त्राय फट्[६] ।। ६ ।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् :

शरच्छशाङ्कप्रभमश्ववक्त्रं मुक्तामयैराभरणैरुपेतम्। रथाङ्गशङ्खाञ्चितबाहुयुग्मं जानुद्वयन्यस्तकरं भजामः ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ विमलायै नमः ।। १ ।। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ।। २ ।। ॐ ज्ञानायै नमः ।।३।। ॐ क्रियायै नमः ।।४।। ॐ योगायै नमः ।।५।। ॐ प्रह्व्यै नमः ।।६।। ॐ सत्यायै नमः ।।७।। ॐ ईशानायै नमः ।।८।। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ।।९।।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दूध की धारा और जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखा कर :

ॐ नमो भगवते हयग्रीवाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके ह्सूं इस बीज मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (हयग्रीव पूजन यन्त्र देखिये चित्र २०)। पुष्पांजलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय मे।

यह पढ़कर और पुष्पांजलि देकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि क्रम से और मध्य दिशा में षडङ्गों की पूजा करे। इति प्रथमावरण ।। १ ।।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके :

पूर्वे ॐ ऋग्वेदाय नमः[७] ।। १ ।। दक्षिणे ॐ यजुर्वेदाय नमः[८] ।। २ ।। पश्चिमे ॐ सामवेदाय नमः[९] ।। ३ ।। उत्तरे ॐ अथर्ववेदाय नमः[१०] ।। ४ ।। अग्निकोणे ॐ सर्वस्मृत्यै नमः[११] ।।५।। निर्ऋते ॐ सर्वन्यायशास्त्रेभ्यो नमः[१२] ।। ६ ।। वायव्ये ॐ सर्वधर्मशास्त्रेभ्यो नमः[१३] ।। ७ ।। ऐशान्ये ॐ सर्वपुराणशास्त्रेभ्यो नमः[१४] ।। ८ ।।

इस प्रकार पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पांजलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति द्वितीयावरण ।। २ ।।

अन्यावरणं सर्वं पूर्ववत् सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वाचत्वारिंशल्लक्षं जपः। तथा च। वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं कुन्दपुष्पैर्मधुप्लुतैः।

दशांशं वैष्णवे वह्नौ जुहुयान्मन्त्रसिद्धये ॥ १ ॥ एवं यो भजते देवं साक्षाद्वागीश्वरो भवेत् । बिल्वैः फलैः कृतो होमः श्रीकरः परिगीयते ॥२॥ कुन्दपुष्पाणि जुहुयादिच्छन्वाक्श्रियमव्ययाम् । मनुनानेन सञ्जप्तं घृतं ब्राह्मीरसे शृतम् ॥ ३ ॥ कवितामाहरेत्पुसामनर्गलविजृम्भिताम् । वचामनेन सञ्जप्तां भक्षयेत्प्रातरन्वहम् ॥४॥ सर्ववेदागमादीनां व्याख्याता जायते चिरात् । मनोरस्य समो नास्ति ज्ञानैश्वर्यप्रदोऽपरः ॥ ५ ॥ इति चत्वारिंशदक्षर हयग्रीवमन्त्रप्रयोगः ।

अन्य सब आवरणों की पूर्ववत् पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण बयालीस लाख जप है। कहा भी गया है कि मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख जप करे। मधु से सिक्त कुन्द के पुष्पों से मन्त्र की सिद्धि के लिये वैष्णव अग्नि में होम करे। इस प्रकार जो देव का भजन करता है वह साक्षात् वागीश्वर हो जाता है। बेल के फलों से किये गये होम को श्रीकर, अर्थात् लक्ष्मी देनेवाला कहा गया है। नित्य वाणी और स्थायी श्री की प्राप्ति के लिये कुन्द के पुष्पों से होम करना चाहिये। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित ब्राह्मी रस में पकाया गया घी स्वच्छन्द कविता करने की प्रतिभा प्रदान करता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित मीठे वच को प्रतिदिन प्रातःकाल खाने से मनुष्य शीघ्र सभी वेदों और आगमों का व्याख्याता हो जाता है। ज्ञान और ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला इस मन्त्र के समान दूसरा मन्त्र नहीं है। इति बयालीस अक्षर हयग्रीव मन्त्रप्रयोग।

अथ हयग्रीवस्यैकादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

हयग्रीव का ग्यारह अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ हयग्रीवाय नमः स्वाहा ॐ' इत्येकादशाक्षरो हग्रीवमन्त्रः ।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । हयग्रीवरूपी विष्णुर्देवता । सर्वेसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास करके कराङ्ग न्यास करे।

करन्यास : ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४॥ ह्सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ह्सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करे।

अथ ध्यानम् । धवलनलिननिष्ठं क्षारगौरं कराग्रैर्जपवलयसरोजे पुस्तकाभीष्टदानैः । दधतममलवस्त्राकल्पदानाभिरामं तुरगवदनविष्णुं नौमि विद्याग्रविष्णुम् ॥ १ ॥

एवं ध्यात्वा विष्णुपीठे सम्पूज्य आवरणपूजां कुर्यात् । प्रथमावरणम् । प्रज्ञाहय १ मेधाहय २ स्मृतिहय ३ विद्याहय ४ लक्ष्मीहय ५ वागीशीहय ६ विद्याविशालहय ७ नादविमर्दनहयै ८ रित्यष्टभिः । द्वितीयम् । लक्ष्मीसरस्वतीरतिप्रीतिकीर्तिकान्तितुष्टिपुष्टिभिः तृतीयम् । कुमुदादिभिर्गजैः चतुर्थम् । इन्द्रादिभिः पचमावरणं अन्यत् सर्वं पूर्ववत् । अस्य पुरश्चरणं लक्षचतुष्टयं जपः । तथा चः वेदलक्षं जपेन्मन्त्री दशांशं जुहुयात्ततः । साज्येन दशांशहोमः । इति हयग्रीवस्यैकादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

इससे ध्यान करके विष्णु पीठ पर पूजन करके प्रथम आवरण पूजा करे द्वितीय आवरण पूजा में प्रज्ञाहय १, मेधाहय २, स्मृतिहय ३, विद्याहय ४, लक्ष्मीहय ५, वागीशीहय ६, विद्याविशालहय ७ और नादविमर्दनहय ८, की पूजा करे। तृतीय आवरण में लक्ष्मी, सरस्वती रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि और पुष्टि की पूजा करे। चतुर्थ आवरण में कुमुद आदि गजों की पूजा करे। पञ्चम आवरण में इन्द्रादि का पूजन करे। अन्य सब पूर्ववत् है। इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। कहा भी गया है कि वेद (४) लाख जप करके साधक को घी से दशांश हवन करना चाहिये। इति हयग्रीव एकादशाक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ वाराहरूपविष्णुमन्त्रप्रयोगः ।

शारदातिलक में ३३ अक्षरों वाला मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो भगवते वाराहरूपाय भूर्भुवः स्वः स्यात्पतेभूपतित्वं देह्यते ददापय स्वाहा' इति त्र्यस्त्रिंशदक्षरो वाराहमन्त्रः ।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । आदिवाराहो देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : भार्गव ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आदिवाराहदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ एकदंष्ट्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ व्योमोल्काय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ तेजोधिपतये मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ विश्व-

रूपाय अनामिकाभ्यः नमः ।।४।। ॐ महादंष्ट्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।। ५ ।।
इति करन्यासः ।

हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ॐ एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः ।। १ ।। ॐ व्योमोल्काय शिरसे स्वाहा ।। २ ।। ॐ तेजोधिपतये शिखायै वषट् ।। ३ ।। ॐ विश्वरूपाय कवचाय हुं ।। ४ ।। ॐ महादंष्ट्राय अस्त्राय फट्। इति हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् । आपादं जानुदेशाद्वरकनकनिभं नाभिदेशादधस्तान्मुक्ताभं कण्ठदेशात्तरुणरविनिभं मस्तकान्नीलभासम् । ईडे हस्तैर्दधानं रथचरणदरौ खड्गखेटौ गदाख्यां शक्ति दानाभये च क्षितिधरणलसद्दंष्ट्रमाद्यं वराहम् ॥ १ ॥

एवं ध्यात्वा वैष्णवे पीठे यन्त्रं संस्थाप्य मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां कुर्यात् । ततः षट्कोणकेसरेषु ।

इस प्रकार ध्यान करके वैष्णव पीठ पर मन्त्र की स्थापना करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके आवरण पूजा करे । इसके बाद षट्कोण केसरों में :

अग्निकोणे ॐ एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः ।। १ ।। नैर्ऋते ॐ व्योमोल्काय शिरसे स्वाहा ।। २ ।। वायव्ये ॐ तेजोधिपतये शिखायै वषट् ।। ३ ।। ऐशान्ये ॐ विश्वरूपाय कवचाय हुं ।।४।। देवपश्चिमे ॐ महादंष्ट्रायास्त्राय फट् ।।५।।

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे । इति प्रथमावरण ।। १ ।।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के बीच प्राची की कल्पना करके प्राच्यादि क्रम से :

ॐ चक्राय नमः ।। १ ।। ॐ शङ्खाय नमः ।। २ ।। ॐ खड्गाय नमः ।।३।। ॐ खेटकाय नमः ।। ४ ।। ॐ गदायै नमः ।। ५ ।। ॐ शक्तये नमः ।। ६ ।। ॐ वराय नमः ।। ७ ।। ॐ अभयाय नमः ।। ८ ।।

इससे पूजा करे । इति द्वितीयावरण ।। २ ।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षं जपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं मधुराक्तैः सरोरुहैः ।

जुहुयात्तद्दशांशेन पीठे विष्णोः प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ ध्यानाद्देवो धनं दद्याज्ज पाद्द्याद्वसुन्धराम् । प्रयच्छेज्जपपूजाद्यैर्धनधान्यमहाश्रियः ॥ २ ॥ रवौ सिंहगतेऽष्टम्यां शुक्लपक्षे सितां शिलाम् । पञ्चगव्येषु निःक्षिप्य स्पृष्ट्वा तामयुतं जपेत् ॥३॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा तां शिलां निखनेद्भुवि । शत्रुचौरमहाभूतैः कृतां बाधां प्रणाशयेत् ॥ ४ ॥ भानूदये भौमवारे साध्यक्षेत्रात्समाहरेत् । मृत्तिकां सञ्जपन्मन्त्रं तां पुनर्विभजेत्त्रिधा ॥ ५ ॥ चुल्यामेकांशमालिप्य पाकपात्रे तथापरम् । गोदुग्धे परमालोड्य शोधितांस्तण्डुलान् क्षिपेत् ॥ ६ ॥ संस्कृतेऽग्नौ पचेत्सम्यक् चरुं मन्त्री जपन्मनुं । अवतार्य चरुं पश्चादग्नौ देवं यथाविधि ॥७॥ धूपदीपादिकैरिष्ट्वा पुनराज्यप्लुतं चरुम् । जुहुयादेधिते वह्नौ यावदष्टोत्तरं शतम् ॥ ८ ॥ एवं सप्तारवारेषु जुहुयात्क्षेत्रसिद्धये । प्रातः काले भृगोर्वारे मृदं साध्यमहीतलात् ॥ ९ ॥ आदाय हविरापाद्य पूर्ववज्जुहुयात्सुधीः । विरोधो नश्यति क्षेत्रे सहचौराद्युपद्रवैः ॥ १० ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । तत्तद्दशांश से होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि एक लाख जप करे । घी, मधु और शक्कर से सिक्त कमलों से जप का दशांश होम और पीठ पर विष्णु की पूजा करे । ध्यान करने से देव धन और जप से भूमि देते हैं । जप-पूजादि से वे धन-धान्य तथा अतुल सम्पत्ति देते हैं । सिंह राशि में सूर्य के रहने पर शुक्ल पक्ष की अष्टमी में सफेद पत्थर को पञ्चगव्य में डालकर उसका स्पर्श करके दश हजार जप करे । उत्तराभिमुख होकर उस शिला (पत्थर) को भूमि में खोद कर गाड़ देने से शत्रु, चोर और भयङ्कर भूतों की बाधा नष्ट हो जाती है । सोमवार को सूर्य के उदय होने पर मन्त्र का जप करते हुये साध्य क्षेत्र से मिट्टी ले आकर उसका तीन भाग करे । एक भाग मिट्टी से चूल्हा लीपे, दूसरे भाग का पकानेवाले बर्तन पर लेप करे और तीसरे भाग को गाय के दूध में मिलाकर साफ किये हुये चावल उसमें डाले । फिर मन्त्र का जप करते हुये साधक संस्कृत अग्नि पर उसे पकाये । बाद में उस चरु को अग्नि पर से उतार कर देवता की धूपदान विधियों से पूजा करके घी से सिक्त चरु से अग्नि में एक सौ आठ आहुतियों द्वारा होम करे । इस प्रकार सात रविवार तक क्षेत्रसिद्धि के लिये होम करना चाहिये । शुक्रवार को प्रातःकाल जमीन

के अन्दर से मिट्टी लाकर पूर्ववत् हवि बनाकर सुधी साधक होम करे तो क्षेत्र में विरोध नष्ट और चोर-डाकू आदि से भी भय समाप्त हो जायगा।

राजवृक्षसमुत्थाभिः समिद्भिर्मनुनामुना। त्रिसहस्रं प्रजुहुयात्तस्य स्युः सर्वसम्पदः ॥ ११ ॥ शालिभिर्जुहुयान्मन्त्री नित्यमष्टोत्तरं शतम्। समृद्धैर्धान्यसङ्घातैः शोभते तस्य मन्दिरम् ॥ १२ ॥ तावदाज्येन जुहुयान्मण्डलात्स्वर्णमाप्नुयात्। लाजैः कन्यामवाप्नोति मध्ववर्तैर्निजवाञ्छितम् ॥ १३ ॥ मधुरत्रयसंयुक्तैर्जुहुयादुत्पलैः शुभैः। महतीं श्रियमाप्नोति मण्डलात्पूर्वसंख्यया ॥ १४ ॥ इति वाराहमन्त्रप्रयोगः।

जो अमलतास की समिधाओं से इस मन्त्र के द्वारा तीन हजार आहुतियाँ देता है उसे सभी सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। शालि चावलों से जो नित्य एक सौ आठ आहुतियाँ देता है उसका घर समृद्धि तथा धन-धान्यों से शोभायमान होता है। उतनी ही घी की आहुतियाँ देने से साधक १ मण्डल (अर्थात् ४९ दिन ?) में स्वर्ण लाभ करता है। मधु से सिक्त धान के लावा से उतनी ही आहुती देने से वह मनोवांछित कन्या प्राप्त करता है। घी, मधु, तथा शक्कर से प्लुत शुभ कमल के फूलों से पूर्व संख्यानुसार अर्थात ३ हजार होम करने से साधक एक मण्डल में महती लक्ष्मी को प्राप्त करता। इति वाराह मन्त्र प्रयोग।

अथ नृसिंहमन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में श्लोकरूप मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ १ ॥ इति श्लोकरूपमन्त्रः।

इसका विधान :

विनियोग : अस्य नृसिंहमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। सुरासुरनमस्कृतनृसिंहो देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीनृसिंहदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ उग्रवीरम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ज्वलन्तं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ नृसिंहभीषणं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ भद्रं मृत्युमृत्युं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ नमाम्यहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ नृसिंहभीषणं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ भद्रं मृत्युमृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमाम्यहम् अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ उं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ग्रं नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ वीं नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ रं नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ मं नमः दक्षिणबाहुमूले ॥ ५ ॥ ॐ हां नमः दक्षिणकूर्परे ॥ ६ ॥ ॐ विं नमः दक्षिणमणिबन्धे ॥ ७ ॥ ॐ ष्णुं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ ८ ॥ ॐ ज्वं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ ९ ॥ ॐ लं नमः वामबाहुमूले ॥ १० ॥ ॐ तं नमः वामकूर्परे ॥ ११ ॥ ॐ सं नमः वाममणिबन्धे ॥ १२ ॥ ॐ वं नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ १३ ॥ ॐ तों नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ १४ ॥ ॐ मुं नमः दक्षपादमूले ॥ १५ ॥ ॐ खं नमः दक्षजानुनि ॥ १६ ॥ ॐ नं नमः दक्षगुल्फे ॥ १७ ॥ ॐ सिं नमः दक्षपदांगुलिमूले ॥ १८ ॥ ॐ हं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ १९ ॥ ॐ भीं नमः वामपादमूले ॥ २० ॥ ॐ षं नमः वामजानुनि ॥ २१ ॥ ॐ णं नमः वामगुल्फे ॥ २२ ॥ ॐ भ नमः वामपादांगुलिमूले ॥ २३ ॥ ॐ द्रं नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ २४ ॥ ॐ मृं नमः कट्याम् ॥ २५ ॥ ॐ त्युं नमः कुक्षौ ॥ २६ ॥ ॐ मृं नमः हृदये ॥ २७ ॥ ॐ त्युं नमः गले ॥ २८ ॥ ॐ नं नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ २९ ॥ ॐ मां नमः वामपार्श्वे ॥ ३० ॥ ॐ म्यं नमः लिङ्गे ॥ ३१ ॥ ॐ हं नमः ककुदि ॥ ३२ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरुचा संत्रस्तरक्षोगणं जानुन्यस्तकराम्बुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम्। बाहुभ्यां धृतशङ्खचक्रमनिशं दंष्ट्राग्रवक्त्रोल्लसज्ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं वन्दे नृसिंहं विभुम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करने के बाद सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पीठ देवताओं की पूजा करके पीठ शक्तियों की पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे नव पीठशक्तियों की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र का अग्न्युत्तारणपूर्वक :

'ॐ नमो भगवते नृसिंहाय दैत्यशत्रुसर्वात्मसंयोगपद्मपीठाय नमः'।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्राण-प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (नृसिंह पूजन यन्त्र देखिये चित्र २१)। उसमें क्रम यह है :

षटकोणकेसरों में : अग्निकोणे ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ निर्ऋते ॐ महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वायव्ये ॐ ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ नृसिंहं भीषणं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ पूज्यपूजकयो-र्मध्ये । भद्रं मृत्युमृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे । ॐ नमाम्यहं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद अष्टदल में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची की कल्पना करके प्राची क्रम से :

प्राच्यां ॐ गरुडपक्षिराजाय नमः गरुडश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र । दक्षिणे ॐ शङ्कराय नमः शङ्करश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे ॐ शेषाय नमः शेषश्रीपा० ॥ ३ ॥ उत्तरे ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ॥ ४ ॥ अग्निकोणे ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋते ॐ ह्रियै नमः ह्रीश्रीपा० वायव्ये ॐ धृत्यै नमः धृतिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये ॐ पुष्टयै नमः पुष्टिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा० ॥३॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋति-श्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः वायुश्रीपा० । ६॥ ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ॥९॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पू० ॥१०॥

इससे दश दिक्पालों की पूजा करे। फिर भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से :

ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तयै नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं

अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥

इससे अस्त्रों की पूजा करे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्षजपः। तत्सहस्रहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पण-मार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तत्सहस्रं घृतप्लुतैः। पायसान्नैः प्रजुहुयाद्विधिवत्पूजितेनले ॥ १ ॥ एवं कृते भवेन्मन्त्री सिद्धमन्त्रः प्रतापवान्। इत्थं जपादिभिः सिद्धे मनौ काम्यानि साधयेत् ॥ २ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण बत्तीस लाख जप है। इतने ही हजार होम है। तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन, और ब्राह्मणभोजन करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख (अर्थात् ३ लाख) जप करना चाहिये। घी से प्लुत खीर से विधिवत पूजित अग्नि में हवन करना चाहिये। ऐसा करने पर साधक सिद्ध मन्त्रवाला और प्रतापवान होता है। इस प्रकार जप आदि से मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक काम्य कर्मों को सिद्ध करे।

उद्यत्कोटिरविप्रभं नरहरिं कोटीरहारोज्वलं दंष्ट्राभीममुखं लसन्नख-मुखैर्दीर्घैरनेकैर्भुजैः। निर्भिन्नासुरनाथमग्निशशभृत्सूर्यात्मनेत्रत्रयं विद्युत्पुञ्ज जटाकलाप भयदं वह्निं वमन्तं भजे ॥ ३ ॥

उगते हुये करोड़ों सूर्यों की प्रभा के समान और इन्द्र के हार के समान उज्ज्वल दांतों से भयङ्कर मुखवाले, चमकते हुये नखों से युक्त लम्बे अनेक हाथों से असुरों के स्वामी हिरण्यकशिपु को विदीर्ण करते हुये, अग्नि, चन्द्रमा तथा सूर्य रूप तीन नेत्रोंवाले, विद्युत के समान अयालसमूहों से भयङ्कर रूपवाले तथा मुख से अग्नि की ज्वालायें फेंकते हुये नरसिंहजी का मैं भजन करता हूं।

सौम्ये सौम्यं स्मरेत्कार्ये क्रूरे क्रूरमिमं भजेत्। श्रीपुष्टयै जुहुयान्मन्त्री बिल्वकाष्ठैर्धितेनले ॥ ४ ॥ सहस्रं श्रियमाप्नोति पत्रैर्वा बिल्वसम्भवैः। प्रसूनैर्वा फलैस्तद्वद्दूर्वाहोमोदरोगताम् ॥ ५ ॥

सौम्य कर्म में इनके सौम्य रूप का स्मरण करना चाहिये तथा क्रूर कर्म में इनके क्रूर रूप का। लक्ष्मी और पुष्टि के लिये साधक को बेल की लकड़ियों से प्रज्ज्वलित अग्नि में होम करना चाहिये। अथवा बेल के हजार पत्रों के होम से साधक लक्ष्मी प्राप्त करता है। अथवा बेल के फूलों, फलों और दूर्वादलों के होम से आरोग्यता प्राप्त करता है।

मन्त्रजप्तां वचां श्वेतां भक्षयेत्प्रातरन्वहम्। वाक् सिद्धि लभते मन्त्री वाचस्पतिरिवापरः॥ ६॥ व्याघ्रचोरमृगादिभ्यो महारण्ये भयाकुलान्। रक्षेन्मनुरयं जप्तो भयेष्वन्येषु मन्त्रिणः॥ ७॥ अनेन मन्त्रितं भस्म विषग्रहमहाभयान। नाशयेदचिरादेवं मन्त्रस्यास्य प्रभावतः॥ ८॥ घोराभिचारे सोन्मादे महोत्पाते महाभये। जपेन्मन्त्रं स्मरन्देवं दुःखान्मुक्तो भवेन्नरः॥ ९॥ सिंहरूपं महाभीमं महादंष्ट्रादिभीषणम्। स्मृत्वात्मानं रिपुं पश्चाद्ध्यायेन्मृगशिशुं रिपुम्॥ १०॥ गृहीत्वा गलदेशे तं पुनर्दिक्षु क्षिपेद्द्रुतम्। पुत्रमित्रकलत्राद्यैरुच्चाटो जायते रिपोः॥ ११॥

मन्त्र से अभिमन्त्रित श्वेत वच को प्रतिदिन खाने से साधक वाणी की सिद्धि प्राप्त करता है तथा वह अन्यतम बृहस्पति बन जाता है। इस मन्त्र का जप घोर वनों में बाघ, चोर तथा अन्य जङ्गली जानवरों के भय तथा अन्य प्रकार के भय से व्याकुल मनुष्य की रक्षा करता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म, विष तथा ग्रहों के भारी भयों के प्रभाव को नष्ट कर देता है। घोर अभिचार, उन्माद, भारी उत्पातों तथा भय में इस मन्त्र का जप करना चाहिये। इससे मनुष्य दुःख से मुक्त हो जाता है। विशालकाय भयङ्कर सिंह के समान बड़े दाँतों से भीषण अपने को स्मरण करते हुये और शत्रु को मृगशावक के समान ध्यान करे। फिर उस शत्रु को गले से फाड़ कर दिशाओं में शीघ्र फेंक देवे। इससे पुत्र, मित्र तथा पत्नी आदि के साथ शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

पूर्वमृत्युपदे साध्यनाम कृत्वा स्वयं हरिः निशितैर्नखदंष्ट्राद्यैः खण्डयमानं रिपुं स्मरन्॥ १२॥ नित्यमष्टोत्तरशतं जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः। जायते मण्डलादर्वाक् शत्रुर्वैवस्वतप्रियः॥ १३॥

मन्त्र में प्रयुक्त दो मृत्यु पदों (मृत्यु मृत्युं) में से पूर्व मृत्यु पद के स्थान पर साध्य का नाम लिख कर स्वयं हरि रूप होकर, तीक्ष्ण नख और दाँतों से शत्रु को काटते हुये स्वरूप का स्मरण करते हुये, आलस्यरहित होकर नित्य १०८ मन्त्रों का जप करने से एक मण्डल (लगभग ४९ दिन ?) के

भीतर ही शत्रु यमराज का प्रिय हो जाता है। (अपने परिवर्तित रूप में उक्त मन्त्र का स्वरूप इस काम्य प्रयोग के लिये इस प्रकार होगा : ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं (शत्रु नाम) मृत्युं नमाम्यहम्।

यन्त्रं करोति विधिवच्छत्रुसेनानिवारणे। विभीतकाष्ठैर्ज्वलिते पावके रिपुमर्द्दनम्॥ १४॥ विचिन्त्य देवं नृहरिं सम्पूज्य कुसुमादिभिः। समूलचूलैर्जुहुयाच्छरैर्दशशतं पृथक्॥ १५॥ रिपुं खादन्निव जपेन्निर्भिदन्निव तान्क्षिपेत्। हुत्वा सप्तदिनं सेनामिष्टां मन्त्री महीपतेः॥ १६॥ प्रस्थापयेच्छुभे लग्ने परराष्ट्रजयेच्छया। तस्याः पुरस्तान्नृहरिं निघ्नन्तं रिपुमण्डलम्॥ १७॥ ध्यात्वा प्रयोगं कुर्वीत् यावदायाति सा पुनः। विजित्य निखिलाञ्शत्रून् सह वीर श्रिया सुखम्॥ १८॥ आगत्य विजयी राजा ग्रामक्षेत्रधनादिभिः। प्रीणयेन्मन्त्रिणं सम्यग् विभवैः प्रीतमानसः॥ १९॥ मन्त्री यदि न संतुष्येदनर्थः स्यान्महीपतेः। राजा विजयमाप्नोति युद्धेषु विधिनामुना। इति नृसिंहस्य द्वात्रिंशदक्षरात्मकमन्त्रप्रयोगः॥ १॥ श्रीः। इति विष्णुपटलः समाप्तः।

शत्रु सेना का निवारण करने के लिये विधिवत् यन्त्र बनाया जाता है जो बहेड़े की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में विनाशकारक होता है। नृसिंह देव का स्मरण करके पुष्पादि से उनकी पूजा करके जड़ सहित एक हजार सरकण्डों से पृथक होम करना चाहिये। शत्रुओं को खाते हुये के समान जप करे तथा उन्हें काटते हुये फेंक देने की भावना करे। सात दिन तक होम करके साधक राजा और उसकी इष्ट सेना को शुभ लग्न में दूसरे राष्ट्र को जीतने के लिये भेजे। फिर समस्त शत्रुओं को जीत कर वीरों की लक्ष्मी के साथ सुखपूर्वक लौट कर विजयी राजा प्रसन्नचित्त होकर गाँव, खेत तथा धन आदि विभवों से साधक को अच्छी तरह सन्तुष्ट करे। यदि साधक (राजा के लिये मन्त्रानुष्ठान करनेवाला) प्रसन्न न हो तो राजा का अनर्थ होता है। इस विधि को सम्पन्न करने से राजा युद्धों में विजय प्राप्त करता है। इति नृसिंह द्वात्रिंशदक्षरात्मक मन्त्रप्रयोग। इति विष्णुपटल।

अथ विष्णुपद्धतिप्रारम्भः।

तत्रादौ प्रारम्भात्पूर्वं मन्त्रानुष्ठानोपयोगि कृत्यम्। चन्द्रताराादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते पुण्यतीर्थक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा

क्षेत्रमाहारविहाराद्यर्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात्। ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्ताङ्गं विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्माशक्तस्तर्हिप्रायश्चित्ताङ्गं पञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः।

विष्णु पद्धति : पद्धति के प्रारम्भ के पूर्व मन्त्रानुष्ठानोपयोगी कृत्य करना चाहिये। चन्द्रमा और नक्षत्रों के बल से युक्त उत्तम दिन और उत्तम मुहूर्त में पुण्य तीर्थ, पुण्य क्षेत्र या निर्जन स्थान आदि में अनुष्ठानयोग्य भूमि का परिग्रहण करके वहाँ मार्जन, दहन, खनन तथा संप्लावन आदि स्मृतियों में कथित शुद्धि के उपायों से शुद्धि करके जपस्थान के चारों ओर आहार-विहार के लिये कोस-दो कोस भूमि की कल्पना करके जपस्थान भूमि पर कूर्म शोधन करना चाहिये। इसके बाद पुरश्चरण से तीन दिन पहले क्षौर कर्म करा कर प्रायश्चित्ताङ्ग स्वरूप विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध, होम तथा चान्द्रायणादि व्रत करे। व्रत में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करे। अगर सभी कर्मों में अशक्त हो तो प्रायश्चित्ताङ्ग स्वरूप पञ्चगव्य-प्राशन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत्। तद्दिने चोपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत्। पयःपानं हविष्यान्नभोजनमेकभक्तव्रतं वा कुर्यात्। पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुगायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा।

फिर मूलमन्त्र पढ़कर प्रणव से पञ्चगव्य का पान करे। उस दिन उपवास करे। यदि अशक्त हो तो दुग्धपान करे, हविष्यान्न का भोजन करे अथवा एक समय आहार ग्रहण करे पुरश्चरण से पूर्वदिन अपने देह की शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे :

देशकालौ संकीर्त्य मम ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीविष्णुपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रद्धिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपममुकगोत्रोऽमुकशर्माहं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत्। ततो गायत्र्याचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्री छन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितरं देवं

तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा तस्मिन्रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभ स्वप्नं च विचारयेत्। तद्यथा स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः :

इससे सङ्कल्प करके दश हजार गायत्री का जप करना चाहिये। इसके बाद 'गायत्र्याचार्यमृषि विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्री छन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥' इन मन्त्रों से तर्पण करके उस रात को देवता की उपासना तथा शुभाशुभ स्वप्न का इस प्रकार विचार करे। स्नानादि करके विष्णु भगवान् के चरण कमलों का स्मरण करके कुशादि की शय्या पर सुखपूर्वक स्थित होकर वृषभध्वज (शिव) की प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है।

ॐ 'भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतम् ॥ १ ॥ ॐ नमोजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामी त्वत्प्रसादान्महेश्वरः ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्। ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्। अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् इति पूर्वकृत्यम्।

इस मन्त्र से १०८ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय। इसके बाद रात में देखे गये स्वप्न को प्रातःकाल गुरु से निवेदन करे अथवा स्वयं विचार करे (स्वप्नविचार के लिये देखिये हिन्दी अनुवाद सहित 'स्वप्न कमलाकर' नामक ग्रन्थ) पूर्वकृत्य समाप्त।

अथ प्रातःकृत्यम्। पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कुर्यात्। अथ प्रातःस्मरणे नारायणस्तुतिराचारामयूखे (व्यासः)।

प्रातःकृत्य : पुरश्चरण के दिन श्रेष्ठ साधक को प्रातःकाल के दो दण्ड पूर्व ब्राह्म मुहूर्त में उठकर प्रातःस्मरण करना चाहिये। आचारमयूखोक्त व्यासकृत नारायण[1] स्तुति इस प्रकार है :

---

१. श्रीराममन्त्र के अनुष्ठान में श्रीरामका इस प्रकार स्मरण करना चाहिये : प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दं मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम्। कर्णावलम्बिचलकुण्डल शोभिगण्डं कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम् ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविन्दं रक्षोगणाय भयदं

ॐ प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै नारायणं गरुडवाहन-मब्जनाभम् । ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्र-नेत्रम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना पदारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः । नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायणप्रवणविप्र-परायणस्य ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं प्राक् सर्वजन्मकृत-पापभयापहत्यै । यो ग्राहवक्त्रपतितांघ्रिगजेन्द्रघोरशोकप्रणाशमकरोद्धृत-शङ्खचक्रः ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः । लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥ ४ ॥

जो मनुष्य प्रातःकाल इन तीन पुण्यदायक श्लोकों का पाठ करता है उसे तीनों लोकों के गुरु भगवान् हरि अपना स्थान देते हैं ।

इस प्रकार प्रातःस्मरण करके भूमि की प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥

इससे भूमि की प्रार्थना करके श्वास के अनुसार (अर्थात् बायाँ या दाहिना जो श्वास चलता हो उसके अनुसार) भूमि पर बायाँ या दाहिना पैर रख कर बाहर जाय । इति प्रातःकृत्य ।

ततो ग्रामाद्बहिर्नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जितेदेशे । उत्तराभिमुखः अनु-पानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन च यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषं च कृत्वा दन्तधावनं कुर्यात् । तद्यथा ।

वरदं । निजेभ्यः । यद्राजसंसदि विभज्य महेशचापं सीताकरग्रहणमङ्गल-माप सद्यः ॥ २ ॥ प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं वज्रांकुशादिशुभरेखि सुखावहं मे । योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं शापापहं सपदि गौतम-धर्मपत्न्याः ॥ ३ ॥ प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहन्ति । यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा प्रीत्या सहस्रहरिनामसमं जजाप ॥ ४ ॥ प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्ति-नीलाम्बुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम् । आमुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यां ध्येयां समस्तमुनिभिर्निजमृत्युहत्यै ॥ ५ ॥ यः श्लोकपञ्चकमिदं प्रयतः पठेत नित्यं प्रभातसमये पुरुषः प्रबुद्धः । श्रीरामकिङ्करजनेषु स एव मुख्यो भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्यलभ्यम् । इति रामप्रातःस्मरणम् ।

इसके बाद ग्राम के बाहर नैर्ऋत्य कोण के एकान्त में उत्तराभिमुख, बिना जूता पहने, और शिर को ढँक कर मलमोचन करके मिट्टी तथा जल से यथासंख्या शौच करके हाथ-पैर धोकर कुल्ला करके इस प्रकार दाँतों को साफ करे ।

आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलंदन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ।

आम, चम्पा या अपामार्ग में से किसी एक की बारह अंगुल लम्बी दातुन लेकर यह प्रार्थना करे :

ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च । श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥

इति सम्प्रार्थ्य । 'ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा' इति मन्त्रेण काष्ठं छित्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इत्यनेन दन्तान् संशोध्य 'ऐं' मन्त्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत् ।

इससे प्रार्थना करके 'ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा' इस मन्त्र से दातुन को काट कर 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इस मन्त्र से दाँतो को साफ करके 'ऐं' इस मन्त्र से जिह्वा को छील कर दातुन को धोकर नैर्ऋत्य कोण में शुद्ध स्थान पर फेंक दे ।

ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् । तद्यथा । तत्कालि-कोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कुर्यात् । न तु पर्युषितशीतोदकेन । तद्यथा । ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मन्त्रः ।

इसके बाद मूलमन्त्र से मुख का प्रक्षालन तथा आचमन करके इस प्रकार स्नान करे : तत्काल निकाले गये जल से या किञ्चित गरम जल से स्नान करना चाहिये, बासी या ठण्डे पानी से नहीं । ताम्रादि के बड़े पात्र में जल लेकर तीर्थों का आवाहन करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि । एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ २ ॥

इससे तीर्थों का आवाहन करके 'ॐ ऋतं च सत्यं' इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके वरुण मन्त्र से स्नान करके सूखे सफेद कपास के बने वस्त्र को धारण करके सूर्य को अर्घ्य देवे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥ १ ॥

इससे अर्घ्य देकर स्नान के वस्त्र को निचोड़ कर आचमन करके नित्य-नैमित्तिक कार्यों को समाप्त करके द्वादश ऊर्ध्व त्रिपुण्ड्र लगाये।

अथ द्वारपूजा प्रयोगः। पूजागृहद्वारमागत्य अस्त्राय फडिति द्वारं सम्प्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम् ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्। इति पूजयेत्।

द्वारपूजा प्रयोग : पूजाघर के द्वार पर आकर 'अस्त्राय फट्' से द्वार का प्रोक्षण करके दक्षिण शाखा में ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ और वामशाखा में 'ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वार के ऊपर ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहली में 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस प्रकार पूजा करे।

जपस्थान पर जाकर :

'ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये। मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धिमेत्विति ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेण भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमस्य वितस्तिमात्रान् दश कीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रितान :

इस मन्त्र से भूमि को संग्रहण करके पीपल, गूलर तथा पलाश में से किसी एक वृक्ष की लकड़ी से एक-एक बित्ता लम्बाई की दश कीलों को 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके :

'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥' इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत्। ततस्तेषु 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलं सम्पूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य जपस्थानमध्ये गणेशकूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालांश्च सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपत्यादिभ्यश्च बलिं दत्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तत्र मन्त्रौ।

इन दो मन्त्रों से दशो दिशाओं में दश कीलों को गाड़े। इसके बाद 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक कील की पूजा करके वहाँ

पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों का आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजन करके जपस्थान के बीच में गणेश, कूर्म, अनन्त, वसुधा तथा क्षेत्रपाल की पूजा करके दिक्पालों के लिये तथा क्षेत्रपाल और गणपति के लिये बलि देकर उसके बाहर भूत बलि देवे। उसमें ये मन्त्र हैं :

'ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥'

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दत्वा वामकरांगुलिभिरर्घ्यंजलेनोत्सृज्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा :

इन दोनों मन्त्रों से दश दिशाओं में बाहर उड़द और भात की बलि देकर बाँये हाथ की अँगुलियों से अर्घ्यजल छिड़क कर पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु नान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥

इससे पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करके हाथ-पैर धोकर आचमन करे। इति क्षेत्रकीलन।

अथ प्रयोगविधानम्।

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं सम्प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं दीपस्थापनं च कुर्यात्। यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखे दीपमेव स्थापयेत्।

इस मन्त्र से मण्डप के भीतर प्रोक्षण करके आसन भूमि में कूर्म शोधन करे। जहाँ जपकर्ता एक ही हो वहाँ कूर्ममुख पर बैठकर वहीं दीपस्थान भी करे। जहाँ जपकर्त्ता अनेक हों वहाँ कूर्ममुख पर दीपक को ही स्थापित करना चाहिये।

इति कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा ततः

इस प्रकार कूर्मशोधन करके वहाँ आसन के नीचे जल आदि से त्रिकोण बना कर :

ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥

इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनं १ तदुपरि मृगाजिनं २ तदुपरि कम्बलाद्यासनम् ३ आस्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मन्त्रत्रयेण श्रींस्त्रीन् दर्भान् प्रत्येकमुपरि निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत् । तत्र मन्त्रः ।

इन मन्त्रों से गन्ध-अक्षत-पुष्प से पूजन करके उसके ऊपर कुशासन १, उसके ऊपर मृगचर्म २, और उसके ऊपर कम्बलासन ३, बिछा कर इन स्थापित तीन आसनों पर क्रम से ॐ अनन्तसनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥३॥ इन तीन मन्त्रों से तीन-तीन दर्भों को क्रमशः हर एक आसन के ऊपर रक्खे। इस प्रकार आसन की स्थापना करके पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ कर आसन का शोधन करे। उसमें मन्त्र यह है :

विनियोग : ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलंच्छन्दः । आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥

इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करे । उसके बाद मूलमन्त्र से शिखा को बांध कर :

ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥

इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्यात् । तद्यथा । दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपञ् शनैः शनैः प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकः ॥ १ ॥

इससे तीन बार आचमन करके इस प्रकार प्राणायाम करे : दाहिने हाथ के अंगूठे से दाहिने नासापुट को बन्द कर बांये नासापुट से मूलमन्त्र को सोलह बार जपते हुये शनैः शनैः प्राणवायु को खींच कर शिर के सहस्रार चक्र में धारण करे—यह पूरक हुआ ।

पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैः नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवाराञ्जपन् कुम्भयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैःशनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा :

पुनः दाहिने हाथ की अनामिका, तर्जनी तथा अंगूठे से दोनों नासिका पुटों को बन्द करके मूलमन्त्र को ६४ बार जपते हुये कुम्भक करे । पुनः, दाहिने नासापुट से अंगूठे का निरोध हटा कर मूलमन्त्र का ३२ बार जप करते हुये शनैः शनैः वायु को निकाले, अर्थात् रेचन करे । इस प्रकार तीन प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रश्चामुकदेवशर्माहं श्रीविष्णुदेवताया अमुकमन्त्रसिद्धिप्रतिबन्धकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमन्त्रसिद्धि कामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालममुकमन्त्रस्य इयत्संख्यजपं तद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशाभिषेक तद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं (केवलजपरूपपुरश्चरणं वा) करिष्ये ।

इति सङ्कल्प 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासांश्च सर्वदेवोपयोगीपद्धतिमार्गेण कृत्वा केशवादिकलामातृकान्यासं च कुर्यात् ।

इससे सङ्कल्प करके 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' से तीन चुटकी बजाकर दिग्बन्धन करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति और संहारमातृका न्यासों को सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करके केशवादि कलामातृका न्यास करना चाहिये ।

अथ केशवादिकलामातृकान्यास प्रयोगः ।

विनियोग : अस्य केशवादिकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । अर्धलक्ष्मीहरिर्देवता । नारायणप्रसन्नतार्थे न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ अर्द्धलक्ष्मीहरये देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ श्रीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ श्रीं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ श्रीं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। ॐ उद्यत्प्रद्योतनशतरुचिं तप्तहेमावदातं पार्श्वद्वन्द्वं जलधिसुतया विश्वधात्र्या च पुष्टम्। नानारत्नोल्लसितविविधाकल्पमापीतवस्त्रं विष्णुं वन्दे वरकमलकौमोदकीचक्रपाणिम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके मातृकाओं का न्यास करे :

विष्णुकला मातृकान्यास : ॐ अं केशवकीर्त्यै नमः ललाटे ।। १ ।। ॐ आं नारायणाय कान्त्यै नमः मुखे ।। २ ।। ॐ इं माधवाय पुष्ट्यै नमः दक्षनेत्रे ।। ३ ।। ॐ ईं गोविन्दाय तुष्ट्यै नमः वामनेत्रे ।।४।। ॐ उं विष्णवे धृत्यै नमः दक्षकर्णे ।। ५ ।। ॐ ऊं मधुसूदनाय शान्त्यै नमः वामकर्णे ।। ६ ।। ॐ ऋं त्रिविक्रमाय क्रियायै नमः दक्षनासापुटे ।। ७ ।। ॐ ॠं वामनाय दयायै नमः वामनासापुटे ।। ८ ।। ॐ लृं श्रीधराय मेधायै नमः दक्षगण्डे ।। ९ ।। लॄं हृषीकेशाय दुर्गायै नमः वामगण्डे ।। १० ।। ॐ एं पद्मनाभाय श्रद्धायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।। ११ ।। ॐ ऐं दामोदराय लज्जायै नमः अधरोष्ठे ।। १२ ।। ॐ ओं वासुदेवाय लक्ष्म्यै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।। १३ ।। ॐ औं संकर्षणाय सरस्वत्यै नमः अधोदन्तपंक्तौ ।। १४ ।। ॐ अं प्रद्युम्नाय धृत्यै नमः मस्तके ।। १५ ।। ॐ अः अनिरुद्धाय रत्यै नमः मुखे ।। १६ ।। ॐ कं चक्रिणे जयायै नमः दक्षबाहुमूले ।। १७ ।। ॐ खं गदिने दुर्गायै नमः दक्षिणकूर्परे ।। १८ ।। ॐ गं शार्ङ्गिणे प्रभायै नमः दक्षिणमणिबन्धे ।। १९ ।। ॐ घं खड्गिने सत्यायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ।। २० ।। ॐ ङं शङ्खिने चन्द्रायै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ।। २१ ।। ॐ चं हलिने वाण्यै नमः वामबाहुमूले ।। २२ ।। ॐ छं मुसलिने विलासिन्यै नमः वामकूर्परे ।। २३ ।। ॐ जं शूलिने विजयायै नमः वाममणिबन्धे ।। ४ ।। ॐ झं पाशिने विरजायै नमः वामहस्तांगुलिमूले ।। २५ ।। ॐ ञं अंकुशिने बिम्बायै नमः वामहसांतगुल्यग्रे ।। २६ ।। ॐ टं मुकुन्दाय विनदायै नमः दक्षपादमूले ।।२७।। ॐ ठं नन्दजाय सुनन्दायै नमः दक्षजानुनि ।। २८ ।। ॐ डं नन्दिनेस्मृत्यै नमः दक्षगुल्फे ।। २९ ।। ॐ ढं नराय ऋद्ध्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ।। ३० ।। ॐ णं नरकजिते समृद्ध्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ।। ३१ ।। ॐ तं हरये शुद्ध्यै नमः वामपादमूले ।। ३२ ।। ॐ थं कृष्णाय वृद्ध्यै नमः वामजानुनि ।। ३३ ।। ॐ दं सत्याय भूत्यै नमः वामगुल्फे ।। ३४ ।। ॐ धं सत्त्वताय मत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ।। ३५ ।। ॐ नं सौराष्ट्राय क्षमायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ।। ३६ ।। ॐ पं शूराय रमायै नमः दक्षापार्श्वे ।।३७।। ॐ फं जनार्दनाय उमायै नमः वामपार्श्वे ।।३८।। ॐ बं भूधराय क्लेदिन्यै नमः पृष्ठे ।। ३९ ।। ॐ भं विश्वमूर्तये क्लिन्नायै नमः नाभौ ।। ४० ।। ॐ मं वैकुण्ठाय वसुदायै नमः उदरे ।। ४१ ।। ॐ यं त्वगात्मने पुरुषोत्तमाय वसुधायै नमः हृदि ।। ४२ ।। ॐ रं असृगात्मने बलिने परायै नमः दक्षांसे ।। ४३ ।। ॐ लं मांसात्मने बालानुजाय परायणायै नमः ककुदि ।।४४।। ॐ वं मेदात्मने बलाय सूक्ष्मायै नमः वामांसे ।।४५।। ॐ शं अस्थ्यात्मने वृषघ्नाय संधायै नमः हृदयादिदक्षकरान्तम् ।। ४६ ।। ॐ षं मज्जात्मने वृषाय प्रज्ञायै नमः हृदयादिवामकरान्तम् ।। ४७ ।। ॐ सं शुक्रात्मने हंसाय प्रभायै नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ।। ४८ ।। ॐ हं प्राणात्मने वराहाय निशायै नमः हृदयादिवामपादान्तम् ।। ४९ ।। ॐ लं जीवात्मने विमलाय अमोघायै नमः हृदयादि उदरान्तम् ।। ५० ।। ॐ छं क्रोधात्मने नृसिंहाय विद्युतायै नमः हृदयादिमुखान्तम् ।। ५१ ।।

इस प्रकार विष्णुकला मातृका न्यास करके प्रयोगोक्त न्यास आदि करे।

अथ पीठपूजाप्रयोगः।

पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरितत्त्वान्तपीठदेवताः स्थापयेत्। तद्यथा।

पीठपूजा प्रयोग : पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की इस प्रकार स्थापना करे :

स्ववामभागे श्रीगुरवे नमः ।। १ ।। दक्षिणे गणपतये नमः ।। २ ।। मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ।। ३ ।।

इस प्रकार नमस्कार करके पुष्प और अक्षत लेकर पीठ के मध्य में :

पीठमध्ये ॐ मं मण्डूकाय नमः ।। १ ।। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ।। २ ।। ॐ अं आधारशक्तये नमः ।। ३ ।। ॐ कूं कूर्माय नमः ।। ४ ।। ॐ अं अनन्ताय नमः ।। ५ ।। ॐ पृं पृथिव्यै नमः ।। ६ ।। ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ।। ७ ।। ॐ रं रत्नदीपाय नमः ।। ८ ।। ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ।। ९ ।। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ।। १० ।। ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ।। ११ ।। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ।। १२ ।। आग्नेय्याम् ॐ धं धर्माय नमः ।। १३ ।। नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ।। १४ ।। वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः ।। १५ ।। ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ।। १६ ।। पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ।। १७ ।। दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ।। १८ ।। पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ।। १९ ।। उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ।। २० ।।

पुनः पीठमध्ये। ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ।। २१ ।। ॐ सं सविन्ना-

लाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकालात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥

इससे पीठदेवताओं की स्थापना करके प्रयोगोक्त नवपीठशक्तियों की पूजा करे।

अथ शङ्खस्थापनप्रयोगः। देववामतः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति सम्पूज्य मूलेन त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य :

शङ्खस्थापन प्रयोग : देवता के वामभाग में त्रिकोणमण्डल बनाकर जल से प्रोक्षण करे। फिर त्रिकोण के बीच में माया (ह्रीं) लिखकर 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इस मन्त्र से पुजा करके मूलमन्त्र से त्रिपदाधार को धोकर त्रिकोण के मध्य में स्थापित करके :

ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शङ्खपात्राशनाय नमः।

इससे आधार की पूजा करे। इसके बाद :

ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्चजन्याय नमः

इस मन्त्र से प्रक्षालित शङ्ख को आधार पर स्थापित करके :

ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने शङ्खपात्राय नमः

इससे शङ्ख का पूजन करे। इसके बाद मूलमन्त्र में 'नमः' जोड़कर इससे शङ्ख में जल भर कर :

ॐ सो सोममण्डलाय षोडशकलात्मने शङ्खपात्रामृताय नमः :

इससे गन्धादि से पूजा करके इस प्रकार अभिमन्त्रित करे :

ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥

इससे अभिमन्त्रित करके प्रार्थना करे :

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥ १ ॥

इससे प्रार्थना करके :

'ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्'

इस शङ्ख गायत्री का आठ बार जप करके शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे। इति शङ्खस्थापन।

अथ घण्टास्थापनप्रयोगः। देवदक्षिणतः घण्टां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत्। तद्यथा।

घण्टास्थापन प्रयोग : देव के दाहिनी ओर घण्टा को स्थापित कर उसे बजा कर इस प्रकार पूजा करे :

ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

इससे आवाहन करके :

ॐ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा।

इस मन्त्र से घण्टास्थित गरुड और घण्टा की पूजा करके गरुड़मुद्रा प्रदर्शित करे।

इति घण्टां संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादींश्च पूजपकरणार्थं स्वदक्षिण पार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थे बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थापयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य :

इस प्रकार घण्टास्थापित करके गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि को पूजा करने के लिये अपने दाहिने भाग में रख कर मूलमन्त्र में 'नमः' लगाकर जल से उनका प्रोक्षण करके जल के लिये एक बड़ा पात्र, पङ्खा, छत्र, दर्पण तथा चवर अपने वामभाग में रक्खे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसपर अभ्यङ्ग करके उसपर दुध की धारा और जल की धारा देकर सुखे वस्त्र से उसे सुखाकर आसन मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके :

देशकालौ संकीर्त्य मम विष्णुदेवतानूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।

इससे सङ्कल्प करके इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करे :

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। अस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इति जलं क्षिपेत्। करेणाच्छाद्य :

इससे जल छिड़क कर। फिर हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः।

पुनः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

पुनः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

पुनः आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य विष्णुदेवतासपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम। इतिमन्त्रिति त्रिवारं पठेत्। ॐ मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा। इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा :

इससे प्राणप्रतिष्ठा करके 'यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम' इस मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर 'ॐ मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा' यह कहकर संस्कार सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव की आवृत्ति करके :

अनेन विष्णुदेवतासपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि।

यह कहे। इसके बाद :

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।

इससे १०८ बार अभिमन्त्रित करके मूलदेवता का ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन करे। अक्षत लेकर :

ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित। यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १ ॥

इससे आवाहन करे ॥ १ ॥

ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च। यदि पूर्णं भवेत्कृत्यं तदाप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥ ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः इह सम्मुखो भव। इति सम्मुखीकरणम् ॥ २ ॥

ॐ अस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये। तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः सुस्वागतम् समर्पयामि इति सुस्वागतम् ।३।

ॐ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः आसनं समर्पयामि इत्यासनम् ॥४॥

इससे आसन देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे :

ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ ५ ॥

इससे प्रार्थना करके पाद्यादि से पूजन करे।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः पाद्यं समर्पयामि इति सर्वत्र।

इससे अर्घोदक से पाद्य देवे। इति पाद्यम् ॥ १ ॥

ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने। आचमनं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥ इत्याचमनम् ॥ २ ॥

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥

इससे अर्घोदक से अर्घ्य देवे। इत्यर्घ्यम् ॥ ३ ॥

ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने। मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ इति मधुपर्कम् ॥ ४ ॥

ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ इति पुनराचमनीयम् ॥ ५ ॥

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्द-दामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ इति सुगन्धतैलम् ॥ ६ ॥

ॐ गङ्गा सरस्वती रेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥ इति जलस्नानम् ॥ ७ ॥

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

इससे पञ्चामृत से स्नान कराकर पुनः जलस्नान कराये ॥ ८ ॥

ॐ सर्वभूषादिकैः सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति वस्त्रम् ॥ ९ ॥

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयं। उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ १० ॥

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयाय ते। भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥ १ ॥

दाहिने हाथ के अँगूठे और अनामिका को मिलाकर बनी मुद्रा से आभूषण देवे। इत्याभूषण ॥ ११ ॥

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

अँगूठे को कनिष्ठा मूल में लगाकर गन्धमुद्रा से गन्ध देवे। इति गन्धम् ।१२

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

सभी उँगलियों से अक्षत देवे। इत्यक्षतदान ॥ १३ ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

तर्जनी को अँगूठे के मूल में लगाकर पुष्पमुद्रा से पुष्प देवे। इति पुष्पम् ॥ १४ ॥

एवं पुष्पान्तं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादि-पूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार पुष्पदान पर्यन्त पूजा करके देव की आज्ञा से प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपादि से पूजन करे।

अथ धूपादिपूजनम्।

फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेन अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशाङ्गं दत्त्वा घण्टां वादयन्ः

धूपादिपूजन : 'फट्' मन्त्र से धूपपात्र का सम्प्रोक्षण करके मूलमन्त्र के अन्त में 'नमः' लगाकर गन्ध-पुष्पों से पूजा करके सामने रखकर वह्निबीज 'रं' से अग्नि स्थापित करके उसके ऊपर मूलमन्त्र से दशांङ्ग देकर घण्टा बजाते हुये :

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व-देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर और मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीविष्णवे नमः धूपं समर्पयामि।

यह पढ़कर देवता के वाम भाग में धूपपात्र को रखकर तर्जनी मूल के साथ अँगूठे को मिलाकर उसे धूपमुद्रा दिखावे। इति धूप ॥ १ ॥

इसके बाद दीपपात्र को गाय के घी से भरकर मन्त्र के अक्षरों की जितनी संख्या हो उतने तन्तुओं से बत्ती उसमें डालकर प्रणव (ॐ) से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से पाद पर्यन्त दीप दिखलाते हुये यह कहे :

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीविष्णवे नमः दीपं समर्पयामि।

यह पढ़कर देवता के दाहिने भाग में उसे रखकर शङ्ख के जल को गिराकर मध्यमा में अँगूठे को लगाकर दीपमुद्रा उसे दिखावे। इति दीप ॥२॥

ततः देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविध प्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इत्यर्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधो-मुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्भूतदोषान् संशोष्य ततो

दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन् षोडशवारान् सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

इसके बाद देव के आगे या देव के दाहिने जल से चतुरस्र मण्डल बना कर स्वर्णादि से निर्मित भोजन पात्र स्थापित करके उसके बीच में षड्रसों से युक्त अनेक प्रकार के नैवेद्य रखकर 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र से अर्घ्य जल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से उसे देखकर अधोमुख दाहिने हाथपर वैसे ही बायें हाथ को रखकर नैवेद्य को ढंक कर 'ॐ य' इस वायुबीज को सोलह बार जप कर वायु से उसके दोषों को सुखाकर दाहिने हाथ के पृष्ठ में बायें करतल को लगाकर नैवेद्य दिखाकर 'ॐ रं' इस वह्निबीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि द्वारा उसके (नैवेद्य के) दोषों को दग्ध करे। फिर बाँये करतल में 'ॐ वं' इस अमृत बीज का चिन्तन करके उसके (बाये करतल के) पृष्ठ भाग में दाहिने करतल को रखकर नैवेद्य दिखलाकर 'ॐ वं' इस सुधा बीज का सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अमृतधारा से नैवेद्य के प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से उसका प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर गन्ध और पुष्प से पूजा करके देव से उत्पन्न तेज का स्मरण कर बाँये अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर दाहिने हाथ में जल लेकर :

ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्।'

यह कहकर और मूलमन्त्र को पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीविष्णवे नमः। नैवेद्यं समर्पयामि ॥ १ ॥

इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवन्तं विभाव्य जलं दद्यात्। इति नैवेद्यम् ॥ ३ ॥

इससे देवता के दाहिने जमीन पर जल छिड़क कर बाँये हाथ से अनामिका मूल और अँगूठे का योग कर उसे ग्रासमुद्रा दिखलाकर 'देव ने भोजन कर लिया है' ऐसी भावना करके जल देवे। इति नैवेद्य ॥ ३ ॥

ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरो वरः। परमानन्दपूर्णस्त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीविष्णवे नमः। जलं समर्पयामि।

इस मन्त्र से स्वर्दि पात्र में स्थित कपूरादि से सुवासित जल निवेदित करके 'उस जल का देव ने पान कर लिया है' ऐसी भावना करते हुते अन्तःपट गिरा देवे। इति जलदान ॥ ४ ॥

ॐ ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैःसमन्तात्सिजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः। नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन् हसन्वै भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान्देवदेवः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं चोष्यं सितममृतफलं द्वारिकाद्यं सुखाद्यम्। आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥

इससे अन्तःपट देकर आचमन देवे ॥ ५ ॥

ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥१॥ ॐ भू० श्रीविष्णवे नमः आचमनं समर्पयामि।

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे ॥ ६ ॥

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

इससे ताम्बूल देवे ॥ ७ ॥

ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥

इससे फल देवे ॥ ८ ॥

ॐ बुद्धिः सवासना क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च। मनोवृत्तिर्विचित्रा ते मृत्युरूपेण कल्पिता ॥ १ ॥ ध्यानं च गीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः। अहङ्कारो गजत्वेन वेग. क्लृप्तो रथात्मना ॥ ३ ॥ इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीरथवर्त्मना। मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः

सारथिरूपतः ॥ ४ ॥ सर्वमन्मत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना। एमान् सार्द्धचतुष्टयश्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत्।

इस प्रकार साढ़े चार श्लोक पढ़कर छत्रादि देवे। इति छत्राद्यर्पण ॥९॥

ॐ कदली गर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।

इससे कपूर की आरती करे ॥ १० ॥

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥

इससे चार प्रदक्षिणा करे ॥ ११ ॥

ॐ प्रसन्नं पाहि मामीशभीतं मृत्युग्रहार्णवात्।

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे ॥ १२ ॥

ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

इसे पुष्पाञ्जलि देवे ॥ १३ ॥

इस प्रकार पुष्पाञ्जलि देने के बाद स्तुतिपाठ से स्तुति करके हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे :

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते हरे। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मा मत्वा क्षमस्वर परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलित पादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं हरे ॥ ४ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़कर प्रार्थना करने के बाद :

ॐ यदुक्तं येन भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण त्वनुकम्पय ॥ १ ॥'

यह पढ़कर देवता के दाहिने हाथ में पूजार्पण जल देवे। इसके बाद माला लेकर सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से माला के संस्कार करे। यदि अशक्त हो तो :

ॐ ह्रीं मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥

इससे माला की प्रार्थना करके :

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथा शक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यदिनं यावत् मूलमन्त्रं जपेत्। नित्यमेव समानं जपं कुर्यान्न तु न्यूनाधिकम्। ततो जपान्ते :

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में धारण करते हुये अपने इष्ट देवता का ध्यान करके मध्यमा उँगुली के मध्य पर्व पर स्थापित करके (अँगूठे) के अग्र भाग से घुमाकर एकाग्रचित्त होकर मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति प्रातःकाल से लेकर मध्याह्न तक मूलमन्त्र का जप करे। प्रतिदिन समान संख्या में ही जप करना चाहिये—कम या अधिक नहीं। इसके बाद जप के अन्त में :

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम। शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। तेन सत्येन सिद्धि मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः।

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्य दद्यात्। अशुचिस्थाने न निधापयेत्। स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात्।

इससे माला को शिर पर लगाकर गोमुखी के अन्दर रख देवे। अपवित्र दशा में उसका स्पर्श न करे, अन्य को न दे, अपवित्र स्थान में उसे न रक्खे और अपनी योनि के समान उसे गुप्त रक्खे।

ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रोक्तं ऋष्यादिन्यासं हृदयादि षडङ्गन्यासं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्वा जपार्पणं कुर्यात्। तथा च अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय :

इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करके पुनः मूलमन्त्रोक्त ऋष्यादिन्यास और हृदयादि षडङ्गन्यास करके पञ्चोपचारों से पूजन कर पुष्पांजलि देकर इस प्रकार जप अर्पित करे : चुल्लू में अर्घ्योदक लेकर :

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणस्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां

पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मदीयं च सकलं श्रीविष्णुदेवतायै समर्पयामि नमः। ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु।

इति देवदक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वा कृताञ्जलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत्। तथा च :

इससे देव के दाहिने हाथ में जल समर्पण कर हाथ जोड़कर इस प्रकार क्षमापन का पाठ करे :

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥३॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम। अन्तश्चरसिभूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम्। तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्या च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्। देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यतां भुवनेश्वर। तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़ कर प्रार्थना करके शङ्ख के जल को छिड़क कर देव के ऊपर घुमा कर :

'साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥'

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिण हस्ते किञ्चिज्जलं दत्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्वा शङ्खं यथास्थाने निवेशयेत्। ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किञ्चिदुद्धृत्य ॐ विष्वक्सेनाय नमः। इति विष्वक्सेनं सम्पूज्योच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्। तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्। तथा च।

यह उच्चारण करते हुये देव के दाहिने हाथ में किञ्चित जल देकर पूर्ववत् देव के सिर पर अर्घ्य देकर शङ्ख को यथास्थान रख देवे। इसके बाद गतसार नैवेद्य से देव के उच्छिष्ट में से थोड़ा नैवेद्य लेकर 'ॐ विष्वक्सेनाय नमः' इससे विष्वक्सेन की पूजा करके उच्छिष्टाधिकारी के लिये ऐशानी दिशा में देवे। फिर शेष बचे नैवेद्य को शिर पर धारण करके देवभक्तों में उसे बाँट कर और स्वयं खाकर इस प्रकार विसर्जन करे :

'ॐ गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ १ ॥'

इससे अक्षत छिड़कर कर विसर्जन करके :

'ॐ तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥'

इति हृदयकमले हस्तं दत्वा देवं स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्। एवमेवविधिना जपं सामाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। इति विष्णुपूजापद्धतिः समाप्ता।

इससे हृदय कमल पर हाथ रखकर देव को अपने हृदय में स्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आप को देवरूपमय भावना करते हुये सुखपूर्वक विचरण करे। इस विधि से जप समाप्त करके सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग के तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। इति विष्णु पूजा पद्धति समाप्त।

अथ विष्णुकवचप्रारम्भः।

श्रीनारदा उवाच। 'भगवन्सर्वधर्मज्ञ कवचं यत्प्रकाशितम्। त्रैलोक्य मङ्गलं नाम कृपया कथय प्रभो ॥ १ ॥

विष्णुकवच : श्रीनारदजी बोले : हे भगवन्, सर्वधर्मज्ञ ! आपने जो त्रैलोक्यमङ्गल नामक कवच कहा है उसे हे प्रभो मुझे बतायें।

सनत्कुमार उवाच। शृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम्। नारायणेन कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ॥ ब्रह्मणा कथितं मह्यं परं स्नेहाद्वदामि ते। अति गुह्यतरं तत्त्वं ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् ॥ ३ ॥ यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते ध्रुवम्। यद्धृत्वा पठनात्पाति महालक्ष्मीर्जगत्त्रयम् ॥ ४ ॥ पठनाद्धारणाच्छम्भुः संहर्ता सर्वमन्त्रवित्। त्रैलोक्यजननी दुर्गा महिषादिमहासुरान् ॥ ५ ॥ वरदृप्ताञ्जघानैव पठनाद्धारणाद्यत। एवमिन्द्रादयस्सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ ६ ॥ इदं कवचमत्यन्तं गुप्तं कुत्रापि नो वदेत्। शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥ ७ ॥ शठाय परशिष्याय दत्वा मृत्युमवाप्नुयात्।

(सनत्कुमार बोले : हे विप्रेन्द्र ! परम अद्भुत कवच मैं तुम्हें बतलाऊँगा, उसे सुनो । इसे नारायण ने अतीत में कृपापूर्वक ब्रह्मा से कहा था और ब्रह्मा ने मुझे बताया था । मैं अब स्नेहवश तुम्हें बता रहा हूं । यह मन्त्र अत्यन्त गुह्य और ब्रह्ममन्त्रों का समूह है । इसे धारण और पाठ कर ब्रह्मा निश्चित रूप से सृष्टि का निर्माण करते हैं । इसके धारण और पाठ से महालक्ष्मी तीनों लोकों की रक्षा करती हैं । इसके धारण और पाठ से ही सब मन्त्रों के ज्ञाता शम्भु तीनों लोकों का संहार करते हैं । इसके धारण तथा पाठ से ही तीनों लोकों की जननी दुर्गा ने वर से उन्मत्त महिषादि असुरों का वध किया था । इसी प्रकार इन्द्रादि सभी ने ऐश्वर्य की प्राप्ति की थी । यह कवच अत्यन्त गुप्त है । इसे किसी को भी नहीं बताना चाहिये । जो शिष्य भक्तियुक्त तथा साधक हो उसे ही इसे बताना चाहिये । शठ को और परशिष्य को बताने से मृत्यु प्राप्त होती है ।। २–७½ ।।)

विनियोग : त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥ ८ ॥ ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवो नारायणः स्वयम् । धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥

ॐ प्रणवो मे शिरः पातु: नमो नारायणाय च भालं मे नेत्रयुगलमष्टार्णो भक्तिमुक्तिदः ॥ १० ॥ क्लीं पायाच्छ्रोत्रयुग्मं चैकाक्षरस्सर्वमोहनः । क्लीं कृष्णाय सदा घ्राणं गोविन्दायेति जिह्विकाम् ॥ ११ ॥ गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहाननं मम । अष्टादशाक्षरो मन्त्रः कण्ठं पातु दशाक्षरः ॥ १२ ॥ गोपीजनपदं वल्लभाय स्वाहा भुजद्वयम् । क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः स्कन्धौ दशाक्षरः ॥ १३ ॥ क्लीं कृष्णः क्लीं करौ पायात् क्लीं कृष्णायाङ्गतोवतु । हृदयं भुवनेशानी क्लीं कृष्णाय क्लीं स्तनौ मम ॥ १४ ॥ गोपालायाग्निजायान्तं कुक्षियुग्मं सदावतु । क्लीं कृष्णाय सदा पातु पार्श्वयुग्ममनुत्तमः ॥ १५ ॥ कृष्णगोविन्दको कट्यां स्मराद्यौ ङेयुतो मनुः । अष्टाक्षरः पातु नाभिं कृष्णेति द्वयक्षरोऽवतु ॥ १६ ॥ पृष्ठं क्लीं कृष्णकङ्कालं क्लीं कृष्णाय द्विठान्तकः । सक्थिनी सततं पातु श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णठद्वयम् ॥ १७ ॥ ऊरू सप्ताक्षरः पायात्त्रयोदशाक्षरोऽवतु । श्रीं ह्रीं क्लीं पदतो गोपीजनवल्लभदं ततः ॥ १८ ॥ भाय स्वाहेति पायुं वै क्लीं ह्रीं श्रीं सदशार्णकः । जानुनी च सदा पातु ह्रीं श्रीं क्लीं च दशाक्षरः ॥ १९ ॥ त्रयोदशाक्षरः पातु जंघे चक्राद्युदायुधः । अष्टादशाक्षरो ह्रीं श्रीं पूर्वको विंशदर्णकः ॥ २० ॥ सर्वाङ्गं मे सदा पातु द्वारकानायको बली । नमो भगवते पश्चाद्वासुदेवाय तत्परम् ॥ २१ ॥ ताराद्यो द्वादशार्णोयं प्राच्यां मां सर्वदावतु । श्रीं ह्रीं क्लीं च दशार्णस्तु क्लीं ह्रीं श्रीं षोडशार्णकः ॥ २२ ॥ गदाद्युदायुधो विष्णुर्मामग्नेर्दिशि रक्षतु । ह्रीं श्रीं दशाक्षरो मन्त्रो दक्षिणे मां सदावतु ॥२३॥ तारो नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय च । स्वाहेति षोडशार्णोयं नैर्ऋत्यां दिशि रक्षतु ॥ २४ ॥ क्लीं हृषीकेपदेशाय नमो मां वारुणेऽवतु । अष्टादशार्णः कामान्तो वायव्ये मां सदावतु ॥ २५ ॥ श्रीं मायाकामकृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय द्विठो मनुः । द्वादशार्णात्मको विष्णुरुत्तरे मां सदावतु ॥ २६ ॥ वाग्भवं कामकृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय तत्परम् । श्रीं गोपीजनवल्लभान्ते भाय स्वाहा हसौ स्वतः ॥ २७ ॥ द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रो मामैशान्ये सदावतु । कालियस्य फणामध्ये दिव्यनृत्यं करोति तम् ॥ २८ ॥ नमामि देवकीपुत्रं मृत्यराजानमच्युतम् । द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रोऽप्यधो मां सर्वदावतु ॥ २९ ॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि । तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयादेषा मां पातु चोर्ध्वतः ॥ ३० ॥

इति ते कथितं विप्र ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् । त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं नारायणमुखाच्छ्रुतम् । तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ ३२ ॥

(हे विप्र ! यह त्रैलोक्यमङ्गल नामक कवच ब्रह्ममन्त्रों के समूह का पुञ्जीभूत शरीर और ब्रह्मरूपमय है । इसे नारायण के मुख से सुन कर ब्रह्मा ने मुझ से कहा था । तुम्हारे स्नेहवश मैंने इसे तुम्हें बताया है । तुम इसे किसी को न बताना ।। ३१–३२ ।।)

गुरुं प्रणम्य विधिवत्कवचं प्रपठेत्ततः । सकृद्द्विस्त्रिर्यथाज्ञानं सोऽपि सर्वतपोमयः ॥ ३३ ॥ मन्त्रेष्वसकलेष्वेव देशिको नात्र संशयः । शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ ३४ ॥ हवनादीन्दशांशेन कृत्वा तत्साधयेद्ध्रुवम् । यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुरेव भवेत्स्वयम् ॥ ३५ ॥ मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्याविधानतः । स्पर्द्धामुद्भूय सततं लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥ ३६ ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् । दशवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥

गुरु को प्रणाम करके विधिवत् कवच को एक बार, दो बार, तीन बार अपने ज्ञानानुसार पढ़ना चाहिये । चाहे ये मन्त्र पूरे न हुये हों तो भी यह समस्त तपोमय हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है । १०८ बार जप इसकी पुरश्चरण विधि कही गयी है । उसका दशांश हवन आदि करके इसकी

निश्चित सिद्धि करना चाहिये। यदि साधक का विष्णु कवच सिद्ध हो जाय तो वह स्वयं विष्णु बन जाता है। पुरश्चरण के विधान से उसको मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसके बाद स्पर्धा को त्याग कर लक्ष्मी और वाणी सदा उसके पास निवास करती है। आठ पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र के साथ एक बार इसका पाठ करना चाहिये। इससे साधक दश हजार वर्षों की पूजा का फल प्राप्त करता है ॥ ३३–३७ ॥

भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोपि विष्णुर्न संशयः ॥ ३८ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। महादानानि यान्येव प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥ ३९ ॥ कलां नार्हन्ति तान्येव सकृदुच्चारणात्ततः। कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत्। इदं कवचमज्ञात्वा यजेद्यः पुरुषोत्तमम्। शतलक्षप्रजप्तोपि न मन्त्रस्तस्य सिद्धयति ॥ ४१ ॥' इति विष्णुकवचं समाप्तम्।

यदि भोजपत्र पर इसे लिख कर गुटिका बनाकर स्वर्ण की ताबीज में गले या दाहिने हाथ में धारण करे तो साधक भी विष्णु ही हो जाता है, इसमें संशय नहीं है। हजार अश्वमेध, एक सौ वाजपेय और जितने महादान तथा जितनी पृथिवी की प्रदक्षिणायें हैं वे सब इसके एक बार सकृदुच्चारण की एक कला की भी समानता के योग्य नहीं हैं। मनुष्य कवच के प्रसाद से जीवनमुक्त हो जाता है। वह तीनों लोकों को क्षुभित कर देता है और त्रैलोक्यविजयी भी हो जाता है। इस कवच को जाने बिना जो पुरुषोत्तम का यज्ञ करता है उसका एक करोड़ जप से भी मन्त्र सिद्ध नहीं होता। इति विष्णु कवच समाप्त ॥ ३८–४१ ॥

अथ नारायणहृदयम्।

नारायणहृदय : आचमन और प्राणायाम करके :

देशकालौ स्मृत्वा ममाभीष्टसिद्धयर्थं सकलीकरणरीत्या सम्पुटीकरण रीत्या वा नारायणहृदयस्य सकृदावर्तनं करिष्ये।

इससे संकल्प करे।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। नारायणायेति कीलकम्। श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीनारायणदेवतायै नमो हृदि ॥ ३ ॥

ॐ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ नारायणेति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नारायणः परं ज्योतिरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणः परंब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ नारायणः परो देव इति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ नारायणः परो ध्यातेति अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ नारायणः परो धर्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नारायणः परं ज्योतिरिति हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणः परंब्रह्मेति शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नारायणः परो देव इति शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ नारायणः परो ध्यातेति कवचाच हुं ॥ ४ ॥ ॐ नारायणः परं धामेति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ नारायणः परो धर्म इत्यस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यास।

इस प्रकार न्यास करके :

'ॐ नमः सुदर्शनाय सहस्राय हुं फट् बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा।'

इति मन्त्रेण तालत्रयेण दशदिक्षु दिग्बन्धनं कुर्यात्। इति दिग्बन्धनं कृत्वा ध्यायेत्।

इस मन्त्र से तीन चुटकी बजाकर दशों दिशाओं में दिग्बन्धन करे। इस प्रकार दिग्बन्धन करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। उद्यदादित्यसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्। शङ्खचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके 'ॐ नमो नारायणाय' इस मन्त्र का १०८ बार जप करके पाठ करे :

अथ मूलाष्टकम्। 'ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणः परं ब्रह्म नारायण नमोस्तुते ॥ १ ॥ नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः। नारायणः परो ध्याता नारायण नमोस्तु ते ॥ २ ॥ नारायणः परं धाम ध्यानं नारायणः परः। नारायणः परो धर्मो नारायण नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ नारायणः परो वेद्यो विद्या नारायणः परः। विश्वं नारायणस्साक्षान्नारायण नमोस्तु ते ॥ ४ ॥ नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः। जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोस्तु ते ॥ ५ ॥ रविर्नारायणं तेजश्चान्द्रं नारायणं महः। वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण नमोस्तु ते ॥ ६ ॥ नारायण उपास्य स्याद्गुरुर्नारायणः परः।

नारायणः परो बोधो नारायणः नमोस्तु ते ॥ ७ ॥ नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् । सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायणः नमोस्तु ते ॥ ८ ॥ इति मूलाष्टकम् ।

अथ प्रार्थनादशकम् । ॐ नारायणस्त्वमेवासिदहराख्ये हृदि स्थितः । प्रेरकः प्रेर्यमाणानां त्वया प्रेरितमानसः ॥ १ ॥ त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् । नानोपासनमार्गाणां भावहृद्भाव-बोधकः ॥ २ ॥ भावार्थकृद्भावभूतो भावसौख्यप्रदो भव । त्वन्माया-मोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम् ॥ ३ ॥ त्वदधिष्ठानमात्रेण सैषा सर्वार्थकारिणी । त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान्समर्पय ॥ ४ ॥ न मे त्वदन्यस्त्रातास्ति त्वदन्यन्न हि दैवतम् । त्वदन्यं न हि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥ ५ ॥ यावत्सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः । तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्या सर्वथा सर्वदा विभो ॥ ६ ॥ पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः । दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥ ७ ॥ त्वयाप्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता । आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥ ८ ॥ पापसंघपरिक्रान्तः पापात्मा पापरूपधृक् । त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥ ९ ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १० ॥ इति प्रार्थनादशकम् ।

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमुदाहृतम् । यः पठेच्छृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ १ ॥ नारायणस्य हृदयं सर्वाभीष्टफलप्रदम् । लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं यदि चेत्तद्विना कृतम् ॥ २ ॥ तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुद्धयति सर्वदा । एतत्सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥ ३ ॥ लक्ष्मीहृदयकं चैव तथा नारायणात्मकम् । जपेद्यः सङ्कलीकृत्य सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम् । लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं जपेन्नारायणं पुनः ॥ ५ ॥ पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत् । पुनर्नारायणं जाप्यं सङ्कलीकरणं भवेत् ॥ ६ ॥ एवं मध्ये द्विवारेण जपेत्सङ्कलितं हि तत् । लक्ष्मीहृदयकं स्तोत्रं सर्वकामप्रकाशितम् ॥ ७ ॥ तद्वज्जपादिकं कुर्यादेतत्सङ्कलितं शुभम् । सर्वान्कामानवाप्नोति आधिव्याधिभयं हरेत् ॥ ८ ॥ गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत् । अति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा ॥९॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपयेत्साधयेत्सुधीः । यत्रैतत्पुस्तकं तिष्ठेल्लक्ष्मी नारायणात्मकम् ॥ १० ॥ भूतपैशाचवेताला न स्थिरास्तत्र सर्वदा ।

लक्ष्मीहृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत्सुधीः ॥ ११ ॥ भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत्पुस्तकद्वयम् । सर्वस्वं सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधयेत्सुधीः ॥ १२ ॥ गोपनात्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ॥ १३ ॥ इत्यथर्वणरहस्ये उत्तरभागे श्रीनारायणहृदयं सम्पूर्णम् ।

'मूलाष्टक' और 'प्रार्थनादशक' को बताया गया । जो इसको पढ़ता या सुनता है उसकी लक्ष्मी स्थिर हो जाती है । नारायण का हृदयस्तोत्र सभी अभीष्टों का फल देनेवाला है । यदि लक्ष्मी हृदय के बिना इस नारायण हृदय स्तोत्र का पाठ किया जाय तो वह पूर्णतया निष्फल होता है और लक्ष्मी सदा क्रुद्ध रहती हैं । अतः सङ्कलित जप ही सब कर्मों का फल प्रदान करनेवाला होता है । लक्ष्मी हृदय और नारायण हृदय का जो सकलीकृत जप करता है वह सभी अभीष्ट फल प्राप्त करता है । पहले नारायण हृदय का जप करके लक्ष्मी हृदय स्तोत्र का जप करे और पुनः नारायण हृदय का जप करे । फिर पुनः लक्ष्मी हृदय का जप करे और उसके बाद पुनः नारायण हृदय का जप करे । इस प्रकार नारायण हृदय के जपों के बीच दो बार सङ्कलित लक्ष्मी हृदय स्तोत्र सर्वकामनाओं को पूर्ण करनेवाला कहा गया है । इस प्रकार सब सङ्कलित जप करने से सर्वकामनाओं की प्राप्ति होती है और यह आधियों (मानसिक रोगों) तथा व्याधियों (शारीरिक रोगों) के भय का हरण करता है । इसे सदा गुप्त रखना चाहिये और सर्वत्र प्रकाशित नहीं करना चाहिये । यह अत्यन्त गुह्य शास्त्र है जिसे प्राचीनकाल में ब्रह्मादि ने प्राप्त किया था । इसलिये सभी प्रयत्नों से सुधी साधक इसे गोपनीय रक्खे । जहाँ पर लक्ष्मी नारायण स्तोत्र की पुस्तक रहती है वहाँ भूत पिशाच, वेताल कभी स्थिर नहीं रह सकते । लक्ष्मी हृदय स्तोत्र जो कहा गया है उसे विधिपूर्वक सुधी साधक को सिद्ध करना चाहिये । शुक्रवार को तथा रात्रि में इन दोनों पुस्तकों की पूजा करे । इस सम्पूर्ण सत्य को सदा गुप्त रखना चाहिये तथा सुधी साधक को इसे सिद्ध करना चाहिये । गोपन तथा साधन से संसार में साधक यथार्थ रूप से कृतार्थ होता है । इति अथर्वणरहस्य के उत्तर भाग में कथित श्रीनारायण स्तोत्र सम्पूर्ण ।

अथ विष्णुस्तोत्रम् ।

ॐ आदाय वेदान्सकलान्समुद्रान्निहत्य शङ्खासुरमत्युदग्रम् । दत्ताः पुरा येन पितामहाय विष्णुं तमाद्यं भज मत्स्यरूपम् ॥ १ ॥ दिव्या-

मृतार्थं मथिते महाब्धौ देवासुरैर्वासुकिमन्दराभ्याम् । भूमेर्महावेग-विघूर्णितायास्तं कूर्ममाधारगतं स्मरामि ॥२॥ समुद्रकाञ्ची सरिदुत्तरीया वसुन्धरा मेरुकिरीटभारा । दंष्ट्राग्रतो येन समुद्धृता भूस्तमादिकोलं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥ भक्तार्तिभञ्जक्षमयाधिपायस्तम्भान्तरालादुदितो नृसिंहः । रिपुं सुराणां निशितैर्नखाग्रैर्विदारयन्तं न च विस्मरामि ॥ ४ ॥ चतुस्समुद्राभरणा धरित्री न्यासाय नाल चरणस्य यस्य । एकस्य नान्यस्य पदं सुराणां त्रिविक्रमं सर्वगतं नमामि ॥ ५ ॥ त्रिःसप्तकृत्वो नृपतीन्निहत्य यस्तर्पणं रक्तमयं पितृभ्यः । चकार दोर्दण्डबलेन सम्यक् तमादिशूरं प्रणमामि रामम् ॥ ६ ॥ कुले रघूणां समवाप्य जन्म विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः । लङ्केश्वरं यः शमयाञ्चकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या ॥ ७ ॥ हलेन सर्वानसुरान्निकृष्य चकार चूर्णं मुसलप्रहारैः । यः कृष्णमासाद्य बलं बलीयान् भक्त्या भजे तं बलभद्ररामम् ॥ ८ ॥ पुरा सुराणामसुरान्विजेतुं सम्भावयञ्चीवरचिह्नवेषम् । चकार यः शास्त्रम-मोघकल्पं तं मूलभूतं प्रणतोस्मि बुद्धम् ॥ ९ ॥ कल्पावसाने निखिलैः सुरैः स्वैः संघट्टयामास निमेषमात्रात् । यस्तेजसा स्वेन ददाह भीमो विष्ण्वात्मकं तं तुरङ्गं भजामः ॥ १० ॥ शङ्खं सुचक्रं सुगदां सरोजं दोर्भिर्दधानं गरुडाधिरूढम् । श्रीवत्सचिह्नं जगदादिमूलं तमालनीलं हृदि विष्णुमीडे ॥ ११ ॥ क्षीराम्बुधौ शेषविशेषतल्पे शयानमन्तः स्मितशोभि वक्त्रम् । उत्फुल्लनेत्राम्बुजमम्बुदाभमाद्यं श्रुतीनामसकृत्स्मरामि ॥ १२ ॥

प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम् । धर्मार्थकाममोक्षाणा-माप्तये पुरुषोत्तमम् ॥ १३ ॥ इति श्रीविष्णुस्तोत्रं समाप्तम् ।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिये इस स्तुति से जगन्मय जगन्नाथ पुरुषोत्तम को प्रसन्न करे । इति विष्णु स्तोत्र समाप्त ।

अथ विष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारम्भः ।

'ॐ अष्टोत्तरं शतं नाम्नां विष्णोरतुलतेजसः । यस्य श्रवणमात्रेण नरो नारायणो भवेत् ॥ १ ॥

विष्णु अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र : अमित तेजस्वी विष्णु के १०८ नामों का यह स्तोत्र है जिसके श्रवणमात्र से मनुष्य नारायण हो जाता है :

विष्णुर्जिष्णुर्वषट्कारो देवदेवो वृषाकपिः । दामोदरो दीनबन्धु-रादिदेवो दितेः सुतः ॥ २ ॥ पुण्डरीकः परानन्दः परमात्मा परात्परः ।

परशुधारी विश्वात्मा कृष्णः कलिमलापहः ॥ ३ ॥ कौस्तुभोद्भासितो-रस्को नरो नारायणो हरिः । हरो हरप्रियः स्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः ॥ ४ ॥ हृषीकेशो प्रमेयात्मा वराहो धरणीधरः । वामनो वेदवक्ता च वासुदेवः सनातनः ॥ ५ ॥ रामो विरामो विरजो रावणारी रमापतिः । वैकुण्ठवासी वसुमान् धनदो धरणीधरः ॥ ६ ॥ धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयो धर्मभृतां वरः । सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात् ॥ ७ ॥ सर्वगः सर्ववित्सर्वः शरण्यः साधुवल्लभः । कौसल्यानन्दनश्श्रीमान् रक्षःकुलविनाशकः ॥ ८ ॥ जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जेता जनार्तिहा । जानकीवल्लभो देवो जयरूपो जलेश्वरः ॥ ९ ॥ क्षीराब्धिवासी क्षीराब्धि-तनयावल्लभस्तथा । शेषशायी पन्नगारिवाहनो विष्टरश्रवाः ॥ १० ॥ माधवो मथुरानाथो मोहदो मोहनाशनः । दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो ह्यच्युतो मधुसूदनः ॥ ११ ॥ सोमसूर्याग्नि नयनो नृसिंहो भक्तवत्सलः । नित्यो निरामयश्शुद्धो नरदेवो जगत्प्रभुः ॥ १२ ॥ हयग्रीवो जितरिपुरु-पेन्द्रो रुक्मिणीपतिः । सर्वदेवमयः श्रीशः सर्वाधारः सनातनः ॥ १३ ॥ सौम्यः सौम्यप्रदः स्रष्टा विष्वक्सेनो जनार्दनः । यशोदातनयो योगी योगशास्त्रपरायणः ॥ १४ ॥ रुद्रात्मको रुद्रमूर्ती राघवो मधुसूदनः ।

इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥ सर्वपापहरं पुण्यं विष्णोरमिततेजसः । दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यनाशनं सुखवर्द्धनम् ॥१६॥ सर्व-सम्पत्करं सौम्यं महापातकनाशनम् । प्रातरुत्थाय विप्रेन्द्रः पठेदेकाग्र-मानसः । तस्य नश्यन्ति विपदां राशयः सिद्धिमाप्नुयात् ॥१७॥ इत्यष्टो-त्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इस प्रकार मैंने अमित तेजस्वी विष्णु के दिव्य अष्टोत्तर शतनाम को बताया । यह पुण्य, सर्वपापहर, दुःख-दारिद्र्य और दौर्भाग्यनाशक, सुख का वर्द्धन करनेवाला, सबसम्पत्तियों को देनेवाला, सौम्य और महापातकों का नाश करनेवाला है । हे विप्रेन्द्र ! प्रातःकाल उठकर जो एकाग्र मन से इसका पाठ करता है उसकी विपत्तिराशि नष्ट होकर सिद्धि प्राप्त होती है । इत्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र सम्पूर्ण ।

अथ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः ।

श्रीमहादेवाय उवाच । ब्रह्महत्यासहस्राणां पापं शाम्येत्कथञ्चन । न पुनस्त्वय्यविज्ञाते कल्पकोटिशतैरपि ॥ १ ॥ यस्मान्मया कृता स्पर्द्धा

पवित्रं स्यां कथं हरे । नश्यन्ति सर्वपापानि तन्मां वद सुरेश्वर ॥ २ ॥
तदाह देवो गोविन्दो मम प्रीत्या यथायथम् ॥ ३ ॥

विष्णु सहस्रनाम : श्रीमहादेव बोले : हे भगवन् ! आपको जाने बिना हजारों ब्रह्महत्याओं का पाप करोड़ों कल्पों में भी किसी प्रकार शान्त नहीं हो सकता। हे हरे ! जिस कारण से मैंने इच्छा की है, मैं वैसे पवित्र होऊँ। हे सुरेश्वर ! जिससे सभी पाप नष्ट हो जाते हैं उसे आप मुझे बतायें। देव से यह पूछने पर उन गोविन्द ने मेरे स्नेह से मुझे यथावत् बताया ॥ ३ ॥

श्रीभगवानुवाच। सदा नामसहस्रं मे पावनं मत्पदावहम्। तत्परोऽनुदिनं शम्भो सर्वैश्वर्यं यदीच्छसि ॥ ४ ॥

श्रीभगवान् बोले : हे शम्भो ! यदि तुम सभी ऐश्वर्यों को चाहते हो तो प्रतिदिन मेरे नामों से युक्त सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करते रहो ॥ ४ ॥

श्रीमहादेव उवाच। तमेव तपसा नित्यं भजामि स्तौमि चिन्तये। तेनाद्वितीयमहिमो जगत्पूज्योऽस्मि पार्वति ॥ ५ ॥

श्रीमहादेव बोले : हे पार्वती ! मैं उसी सहस्रनाम स्तोत्र का तत्परता से नित्य भजन करता हूं, उसी की स्तुति करता हूं और उसी का चिन्तन करता हूं। उसी से संसार में अद्वितीय महिमावाला तथा जगत्पूज्य हूं ॥ ५ ॥

श्रीपार्वत्युवाच। तन्मे कथय देवेश यथाहमपि शङ्कर। सर्वेश्वरी निरुपमा तव स्यां सदृक्षी प्रभो ॥ ६ ॥

श्रीपार्वती बोली : हे देवेश, शङ्कर ! आप उस सहस्रनाम को मुझे बतायें जिससे मैं भी सर्वेश्वरी तथा निरुपमा होकर आपके समान बन जाऊँ ॥६॥

श्रीमहादेव उवाच। साधुसाधु त्वया पृष्टो विष्णोर्भगवतश्शिवे। नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि मुख्यं त्रैलोक्यमङ्गलम् ॥ ७ ॥

श्रीमहादेव बोले : हे शिवे ! धन्य, धन्य, तुमने विष्णु भगवान् के जिस सहस्रनाम स्तोत्र को पूछा है उसे मैं तुम्हें बताऊँगा। यह सर्वप्रमुख तथा तीनों लोकों का मङ्गल करनेवाला है ॥ ७ ॥

नारायणाय पुरुषोत्तमाय च नमो महात्मने। विशुद्धसत्त्वाधिष्ठाय महाहंसाय धीमहि ॥ ८ ॥

विनियोग : ॐ अस्यश्रीविष्णोः सहस्रनाममन्त्रस्य महादेव ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। परमात्मा देवता। सूर्यकोटिप्रतीकाश इति बीजम्। गङ्गातीर्थोत्तमा शक्तिः। प्रपन्नाशनिपञ्जर इति कीलकम्। द्विव्यास्त्र इत्यस्त्रं सर्वपापक्षयार्थं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं श्रीविष्णोर्नाम सहस्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ महादेवायऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्

छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ परमात्मदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ सूर्यकोटि प्रतीकाशबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ गङ्गातीर्थोत्तमशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ प्रपन्नाशनिपञ्जरकीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ वासुदेवं परं ब्रह्म इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ मूलप्रकृतिरिति तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ भूमहावराह इति मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ सूर्यवंशध्वजो राम अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ब्रह्मादिकमलादिगदासूर्यकेशवमिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ शेष इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ वासुदेवं परं ब्रह्म इति हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मूलप्रकृतिशिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भूमहावराह इति शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ सूर्यवंशध्वजो रामः कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मादिकमलादिगदासुर्यकेशवः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ दिव्यास्त्र इत्यस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। ॐ विष्णुंभास्वत्किरीटाङ्गदवलयगणाकल्पहारोदराङ्घ्रिश्रोणीभूषं सुवक्षो मणिमकरमहाकुण्डलं मण्डितांसम्। हस्तोद्यच्चक्रशङ्खाम्बुजगदममलं पीतकौशेयवासोविद्युद्भासं समुद्यद्दिनकरसदृशं पद्महस्तं नमामि ॥ ९ ॥

ॐ वासुदेवः परंब्रह्म परमात्मा परात्परम्। परं धाम परंज्योतिः परंतत्त्व परं पदम् ॥ १० ॥ परंशिवं परोध्येयः परंज्ञानं परागतिः। परमार्थः परंश्रेयः परानन्दः परोदयः ॥ ११ ॥ परोव्यक्ता परंव्योम परार्द्धः परमेश्वरः। निरामयो निर्विकारो निर्विकल्पो निराश्रयः ॥ १२ ॥ निरञ्जनो निरालम्बो निर्लेपो निरवग्रहः। निर्गुणो निष्कलोऽनन्तोऽचिंत्योसावचलोऽच्युतः ॥ १३ ॥ अतीन्द्रियोऽमितोऽरोध्योऽनीहोऽनीशोऽव्ययोऽक्षयः। सर्वज्ञः सर्वगः सर्वः सर्वदः सर्वभावनः ॥१४॥ सर्वशम्भुस्सर्वसाक्षीपूज्यस्सर्वस्यसर्वदृक्। सर्वशक्तिः सर्वसारः सर्वात्मा सर्वतोमुखः ॥ १५ ॥ सर्वावासः सर्वरूपः सर्वादिस्सर्वदुःखहा। सर्वार्थः सर्वतोभद्रः सर्वकारणकारणम् ॥१६॥ सर्वातिशायकः सर्वाध्यक्षः सर्वेश्वरेश्वरः। षड्विंशको महाविष्णुर्महागुह्यो महाहरिः ॥ १७ ॥ नित्योदितो नित्ययुक्तोनित्यानन्दः सनातनः। मायापतिर्योगपतिः कैवल्यपतिरात्मभूः

॥ १८ ॥ जन्ममृत्युजरातीतः कालातीतोभवातिगः। पूर्णः सत्यश्शुद्धबुद्ध-
स्वरूपोनित्यचिन्मयः ॥ १९ ॥ योगिप्रियोयोगमयोभवबन्धैकमोचकः।
पुराणः पुरुषः प्रत्यक्चैतन्यपुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ वेदान्तवेद्योदुर्ज्ञेयस्ता-
पत्रयविवर्जितः। ब्रह्मविद्याश्रयोऽलंघ्यः स्वप्रकाशः स्वयंप्रभः ॥२१॥ सर्वो
पेयउदासीनः प्रणवसर्वतस्समः। सर्वानवद्योदुष्प्रापस्तुरीयस्तमसः परः
॥ २२ ॥ कूटस्थः सर्वसंश्लिष्टोवाङ्मनोगोचरातिगः। सङ्कर्षणः सर्व-
हरः कालः सर्वभयङ्करः ॥ २३ ॥ अनुल्लंघ्यः सर्वगतिर्महारुद्रो-
दुरासदः। मूलप्रकृतिरानन्दः प्रज्ञाताविश्वमोहनः ॥ २४ ॥ महा-
मायोविश्वबीजं परशक्तिसुखैकभुक्। सर्वकाम्योनन्तशीलस्सर्वभूतव-
शङ्करः ॥ २५ ॥ अनिरुद्धः सर्वजीवोहृषीकेशो मनःपतिः।
निरुपाधिः प्रियो हंसोक्षरः सर्वनियोजकः ॥ २६ ॥ ब्रह्मा प्राणेश्वरः
सर्वभूतभृद्देहनायकः। क्षेत्रज्ञः प्रकृतिस्वामीपुरुषोविश्वसूत्रधृक् ॥ २७ ॥
अन्तर्यामी त्रिधामान्तः साक्षीत्रिगुण ईश्वरः। योगिमृग्य पद्मनाभः
शेषशायी श्रियःपतिः ॥ २८ ॥ श्रीसत्योपास्यपादाब्जोऽनन्तः श्रीः
श्रीनिकेतनः। नित्यवक्षः स्थलस्थश्रीः श्रीनिधिः श्रीधरो हरिः ॥ २९ ॥
रम्यश्रीनिश्चयश्रीदोविष्णुः क्षीराब्धिमन्दिरः। कौस्तुभोद्भासितोरस्को-
माधवोजगदार्तिहा ॥ ३० ॥ श्रीवत्सवक्षानिःसीमः कल्याणगुणभाजनम्।
पीताम्बरोजगन्नाथोजगद्धाताजगत्पिता ॥ ३१ ॥ जगद्बन्धुर्जगत्स्रष्टाजग-
त्कर्ता जगन्निधिः। जगदेकस्फुरद्वीर्योनाहंवादीजगन्मयः ॥३२॥ सर्वाश्चर्य-
मयस्सर्वसिद्धार्थः सर्ववीरजित्। सर्वामोघोद्यमोब्रह्मरुद्राद्युत्कृष्टचेतनः
॥ ३३ ॥ शम्भोः पितामहोब्रह्मपिताशक्राद्यधीश्वरः। सर्वदेवप्रियः सर्व-
देववृत्तिरनुत्तमः ॥ ३४ ॥ सर्वदेवैकशरणं सर्वदेवैकदैवतम्। यज्ञभुग्यज्ञ-
फलदोयज्ञेशोयज्ञभावनः ॥ ३५ ॥ यज्ञत्रातायज्ञपुमान् वनमालीद्विजप्रियः।
द्विजैकमानदोहिंस्रः कुलदेवोऽसुरान्तकः ॥ ३६ ॥ सर्वदुष्टान्तकृत्सर्वसज्ज-
नानन्दपालकः। सर्वलोकैकजठरः सर्वलोकैकमण्डलः ॥ ३७ ॥ सृष्टि-
स्थित्यन्तकृच्चक्री शार्ङ्गधन्वागदाधरः। शङ्खभृन्नन्दकीपद्मपाणिर्गरुड-
वाहनः ॥ ३८ ॥ अनिर्देश्यवपुः सर्वः सर्वलोकैकपावनः। अनन्तकीर्तिर्निः
श्रीशः पौरुषः सर्वमङ्गलः ॥३९॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशोयमकोटिविनाशनः।
ब्रह्मकोटिजगत्स्रष्टावायुकोटिमहाबलः ॥ ४० ॥ कोटीन्दुजगदानन्दीशम्भु-
कोटिमहेश्वरः। कुबेरकोटिलक्ष्मीवान्शत्रुकोटिविनाशनः ॥ ४१ ॥ कन्दर्प-
कोटिलावण्योदुर्गकोटिविमर्द्दनः। समुद्रकोटिगम्भीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः
॥४२॥ हिमवत्कोटिनिष्कम्पः कोटिब्रह्माण्डविग्रहः। कोट्यश्वमेधपापघ्नो-

यज्ञकोटिसमार्चनः ॥ ४३ ॥ सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुःकामधुक्कोटिकामदः।
ब्रह्मविद्याकोटिरूपःशिपिविष्टःशुचिःश्रवाः ॥ ४४ ॥ विश्वम्भरस्तीर्थपादः
पुण्यश्रवणकीर्तनः। आदिदेवोजगज्जैत्रोमुकुन्दःकालनेमिहा ॥ ४५ ॥
वैकुण्ठोऽनन्तमाहात्म्यो महायोगीश्वरेश्वरः। नित्यतृप्तोनृसद्भावोनिः
शङ्कोनरकान्तकः ॥ ४६ ॥ दीनानाथैकशरणंविश्वैकव्यसनापहा। जग-
त्क्षमाकृतोनित्यःकृपालुः सज्जनाश्रयः ॥ ४७ ॥ योगेश्वरःसदोदीर्णोवृद्धि-
क्षयविवर्जितः। अधोक्षजोविश्वरेताः प्रजापतिसमाधिपः ॥ ४८ ॥ शक्र-
ब्रह्मार्चितपदःशम्भुर्ब्रह्मार्द्धधामगः। सूर्यसोमेक्षणोविश्वभोक्तासर्वस्यपारगः
॥ ४९ ॥ जगत्सेतुर्द्धर्मसेतुर्द्धीरोऽरिष्ठधुरन्धरः। निर्मलोखिललोकेशोनिः-
शङ्कोऽद्भुतभोगवान् ॥५०॥ रम्यमायोविश्वविश्वोविष्वक्सेनोनगोत्तमः।
सर्वःश्रियःपतिर्द्दिव्याः सर्वभूषणभूषितः ॥ ५१ ॥ सर्वलक्षणलक्षण्यःसर्व-
दैत्येन्द्रदर्पहा। समस्तदेवसर्वज्ञः सर्वदैवतनायकः ॥ ५२ ॥ समस्तदेवता-
दुर्गः प्रपन्नाशनिपञ्जरः। समस्तदेवकवचंसर्वदेवशिरोमणिः ॥ ५३ ॥
समस्तभयनिर्भिन्नोभगवान् विष्टरश्रवाः। विभुस्सर्वहितोप्यर्कोहतारिः-
सुरतिप्रदः ॥ ५४ ॥ सर्वदैवतजीवेशोब्रह्मणादिनियोजकः। ब्रह्माशम्भु-
परार्द्धाढ्योब्रह्मजेष्ठ शिशुःस्वराट् ॥ ५५ ॥ विराट्भक्तपराधीनःस्तुत्यः-
सर्वार्थसाधकः। सर्वार्थकर्ताकृत्यज्ञःस्वार्थकृत्यसदोज्झितः ॥ ५६ ॥ सदा-
नवःसदाभद्रः सदाशान्तःसदाशिवः। सदाप्रियः सदातुष्टःसदापुष्टःसदा-
र्चितः ॥५७॥ सदापूतःपावनाग्रोवेदगुह्योवृषाकपिः। सहस्रनामा त्रियुगश्च-
तुर्मूर्तिश्चतुर्भुजः ॥ ५८ ॥ भूतभव्यभवन्नाथोमहापुरुषपूर्वजः। नारायणो-
मुञ्जकेशःसर्वयोगविनिःसृतः ॥ ५९ ॥ वेदसारोयज्ञसारःसामसारस्तपो-
निधिः : साध्यश्रेष्ठःपुराणर्षिर्निष्ठाशान्तिपरायणः ॥ ६० ॥ शिवस्त्रिशूल-
विध्वंसीश्रीकण्ठैकवरप्रदः। नरकृष्णोहरिर्धर्मनन्दनोधर्मजीवनः ॥ ६१ ॥
आदिकर्तासर्वसत्यःसर्वस्त्रीरत्नदर्पहा। त्रिकलोर्जितकन्दर्पउर्वशीदृङ्मुनी-
श्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यःकविर्हयग्रीवःसर्ववागीश्वरेश्वरः। सर्वदेवमयोब्रह्म-
गुरुर्वाग्मीश्वरःपतिः ॥ ६३ ॥ अनन्तविद्याप्रभवोमूलविद्याविनाशकः।
सर्वार्हणो जगज्जाड्यनाशको मधुसूदनः ॥ ६४ ॥ अनन्तमन्त्रकोटीशः
शब्दब्रह्मैकपावकः। आदिविद्वान्वेदकर्तावेदात्माश्रुतिसागरः ॥ ६५ ॥
ब्रह्मार्थवेदाभरणसर्वविज्ञानजन्मभूः। विद्याराजोज्ञानराजोज्ञानसिन्धुर-
खण्डधीः ॥ ६६ ॥ मत्स्यदेवोमहाशृङ्गोजगद्बीजवहित्रधृक्। लीलाव्याप्ता-
निलाम्भोधिश्चतुर्वेदप्रवर्तकः ॥ ६७ ॥ आदिकूर्मोखिलाधारस्तृणीकृत-
जगद्भवः। अमरीकृतदेवौघः पीयूषोत्पत्तिकारणम् ॥ ६८ ॥ आत्मा-

धारोधरा धारोयज्ञाङ्गोधरणीधरः । हिरण्याक्षहरः पृथ्वीपतिःश्राद्धादि-
कल्पकः ॥ ६९ ॥ समस्तपितृभीतिघ्नःसमस्तपितृजीवनम् । हव्यकव्यै-
कभुग्भव्योगुणभव्यैकदायकः ॥ ७० ॥ लोमान्तलीनजलधिःक्षोभिता-
शेषसागरः । महावराहोयज्ञघ्नध्वंसनोयाज्ञिकाश्रयः ॥ ७१ ॥ नरसिंहो
दिव्यसिंहः सर्वारिष्टार्तिदुःखहा । एकवीरोद्भुतबलोयन्त्रमन्त्रैकभञ्जनम्
॥ ७२ ॥ ब्रह्मादिदुःसहज्योतिर्युगान्ताग्न्यतिभीषणः । कोटिवज्राधिक-
नखोगजदुष्प्रेक्षमूर्तिधृक् ॥ ७३ ॥ मातृचक्रप्रथमनोमहामातृगणेश्वरः ।
अचिन्त्योमोघवीर्याढ्यः समस्तासुरघस्मरः ॥ ७४ ॥ हिरण्यकशिपुच्छेदी-
कालःसङ्कर्षणःपतिः । कृतान्तवाहनः सद्यः समस्तभयनाशनः ॥ ७५ ॥
सर्वविघ्नान्तकःसर्वसिद्धिदःसर्वपूरकः । समस्तपातकध्वंसी सिद्धमन्त्राधि-
काह्वयः ॥ ७६ ॥ भैरवेशोहरार्तिघ्नःकालकल्पोदुरासदः । दैत्यगर्भस्रा-
विनामास्फुटब्रह्माण्डवर्जितः ॥ ७७ ॥ स्मृतिमात्राखिलत्राताभूतरूपो-
महाहरिः । ब्रह्मचर्मशिरःपट्टदिक्पालोऽर्द्धाङ्गभूषणः ॥ ७८ ॥ द्वादशार्क
शिरोधामारुद्रशीर्षकनुपूरः । योगिनीग्रस्तगिरिजारतो भैरवतर्जकः
॥ ७९ ॥ वीरचक्रेश्वरोऽत्युग्रो यमारिः कालसंवरः । क्रोधेश्वरोरुद्रचण्डी-
परिवादीसुदुष्टभाक् ॥ ८० ॥ सर्वाक्षः सर्वमृत्युश्चमृत्युर्मृत्युनिवर्तकः ।
असाध्यस्सर्वरोगघ्नः सर्वदुर्ग्रहसौम्यकृत् ॥ ८१ ॥ गणेशकोटिदर्पघ्नोदुः
सहोऽशेषगोत्रहा । देवदानवदुर्द्धर्षोजगद्भक्ष्यप्रदः पिता ॥८२॥ समस्तदुर्ग-
तित्राताजगद्भक्षकभक्षकः । उग्रेशोऽसुरमार्जारः कालमूषकभक्षकः ॥८३॥
अनन्तायुधदोर्दण्डोनृसिंहोवीरभद्रजित् । योगिनीचक्रगुह्येशः शक्रारिः
पशुमांसभुक् ॥ ८४ ॥ रुद्रोनारायणोमेषरूपशङ्करवाहनः । मेषरूपी-
शिवत्रातादुष्टशक्तिसहस्रभुक् ॥ ८५ ॥ तुलसीवल्लभोवीरोऽचिन्त्यमायोऽ-
खिलेष्टदः । महाशिवः शिवोरुद्रोभैरवैककपालभृत् ॥ ८६ ॥ भिल्लश्च-
क्रेश्वरश्चक्रोदिव्यमोहनरूपधृक् । गौरीसौभाग्यदोमायानिधिर्मायाभया-
पहः ॥ ८७ ॥ ब्रह्मतेजोमयोब्रह्मश्रीमयश्चत्रयीमयः । सुब्रह्मण्योबलिध्वंसी-
वामनोऽदितिदुःखहा ॥ ८८ ॥ उपेन्द्रोनृपतिर्विष्णुः कश्यपान्वयमण्डनः ।
बलिस्वाराज्यदः सर्वदेवविप्रान्नदोऽच्युतः ॥ ८९ ॥ उरुक्रमस्तीर्थपादस्त्रि-
दशश्चत्रिविक्रमः । व्योमपादः स्वपादाम्भःपवित्रितजगत्त्रय ॥ ९० ॥ ब्रह्मे-
शाद्यभिवन्द्याङ्घ्रिर्द्रुतकर्माद्रिधारणः । अचिन्त्याद्भुतविस्तारोविश्व-
वृक्षोमहाबलः ॥ ९१ ॥ बटुमूर्द्धापराङ्गच्छिद्भृगुपत्नीशिरोहरः । पाप-
स्तेयःसदापुण्योदैत्येशोनित्यखण्डकः ॥९२॥ पूरिताखिलदेवेशोविश्वार्थैका-
वतारकृत् । अमरोनित्यगुप्तात्मा भक्तचिन्तामणिः सदा ॥ ९३ ॥ वरदः

कार्तवीर्यादिराजराज्यप्रदोऽनघः । विश्वश्लाघ्योऽमिताचारोदत्तात्रेयो-
मुनीश्वरः ॥ ९४ ॥ परशक्तिसमायुक्तोयोगानन्दमदोन्मदः । समस्तेन्द्रा-
रितेजोहृत्परमानन्दपादपः ॥ ९५ ॥ अनसूयागर्भरत्नोभोगमोक्षसुख-
प्रदः । जमदग्निकुलादित्योरेणुकाद्भुतशक्तिहृत् ॥ ९६ ॥ मातृहत्या-
दनिर्लेपः स्कन्दजिद्विप्रराज्यदः । सर्वक्षत्रान्तकृद्वीरदर्पहाकार्तवीर्य-
जित् ॥ ९७ ॥ योगीयोगावतारश्चयोगीशोयोगतत्परः । परमानन्ददाता-
चशिवाचार्ययशःप्रदः ॥ ९८ ॥ भीमः परशुरामश्चशिवाचार्यैकविश्वभूः ।
शिवाखिलज्ञानकोशीभीष्माचार्योऽग्निदैवतः ॥ ९९ ॥ द्रोणाचार्यगुरुर्विश्व-
जैत्रधन्वाकृतान्तकृत् । अद्वितीयतमोमूर्तिर्ब्रह्मचर्यैकदक्षिणः ॥ १०० ॥
मनुश्रेष्ठः सतांसेतुर्महीयान्वृषभोविराट् । आदिराजः क्षितिपितासर्व-
रत्नैकदोहकृत् ॥१०१॥ पृथुजन्माद्येकदक्षो ह्रीः श्रीः कीर्तिः स्वयंधृतिः ।
जगद्वृत्तिप्रदश्चक्रवर्तिश्रेष्ठोदुरस्त्रधृक् ॥ १०२ ॥ सनकादिमुनिप्राप्यभग-
वद्भक्तिवर्द्धनः । वर्णाश्रमादि धर्माणांकर्तावक्ताप्रवर्तकः ॥ १०३ ॥ सूर्य-
वंशध्वजोरामोराघवः सद्गुणार्णवः । ककुत्स्थवीरताधर्मोराजधर्म-
धुरन्धरः ॥ १०४ ॥ नित्यस्वस्थाशयः सर्वभद्रग्राहीशुभैकदृक् । नवरत्नं-
रत्ननिधिः सर्वाध्यक्षोमहानिधिः ॥ १०५ ॥ सर्वश्रेष्ठाश्रयः सर्वशस्त्रास्त्र-
ग्रामवीर्यवान् । जगद्वशीदाशरथिः सर्वरत्नाश्रयोनृपः ॥ १०६ ॥ धर्मः
समस्तधर्मस्थोधर्मद्रष्टाखिलार्तिहृत् । अतीन्द्रोज्ञानविज्ञानपारदश्वाक्ष-
माम्बुधिः ॥ १०७ ॥ सर्वप्रकृष्टः शिष्टेष्टोहर्षशोकाद्यनाकुलः । पित्राज्ञात्य-
क्तसाम्राज्यः सपत्नोदयनिर्भयः ॥ १०८ ॥ गुहादेशार्पितैश्वर्यः शिवस्पर्द्धा
जटाधरः । चित्रकूटाप्तरत्नाद्रिजगदीशोरणेचरः ॥ १०९ ॥ यथेष्टमोघ-
शस्त्रास्त्रोदेवेन्द्रतनयाक्षिहा । ब्रह्मेन्द्रादिनतैषीकोमारीचघ्नोविराधहा
॥ ११० ॥ ब्रह्मशापहताशेषदण्डकारण्यपावनः । चतुर्दशसहस्राख्यर-
क्षोघ्नैकशरैकभृत ॥ १११ ॥ खरारिस्त्रिशिरोहन्तादूषणघ्नोजनार्दनः ।
जटायुषोग्निगतिदः कबन्धस्वर्गदायकः ॥ ११२ ॥ लीलाधनुः कोट्य-
पास्तदुन्दुभ्यस्थिमहाचयः । सप्ततालव्यथाकृष्टध्वजपातालदानवः ॥११३॥
सुग्रीवराज्यदोधीमान्मनसैवाभयप्रदः । हनूमद्रुद्रमुख्येशःसमस्तकपिदेह-
भृत् ॥ ११४ ॥ अग्निदैवत्यबाणैकव्याकुलीकृतसागरः । सम्लेच्छकोटि-
बाणैकशुष्कनिर्दग्धसागरः ॥ ११५ ॥ सनागदैत्यधामैक व्याकुलीकृत-
सागरः । समुद्राद्भूतपूर्वैकबद्धसेतुर्यशोनिधिः ॥ ११६ ॥ असाध्य-
साधकोलङ्कासमूलोत्कर्षदक्षिणः । वरदृप्तजनस्थानपौलस्त्यकुलकृन्तनः
॥ ११७ ॥ रावणघ्नःप्रहस्तच्छित्कुम्भकर्णभिदुग्रहा । रावणैकमुखच्छे-

त्तानिरशङ्कोन्द्रैकराज्यदः ॥ ११८ ॥ स्वर्गास्वर्गत्वविच्छेदीदेवेन्द्रादि-
न्द्रताहरः । रक्षोदेवत्वहृद्धर्माधर्महृर्म्यःपुरुष्टुतः ॥ ११९ ॥ नातिमात्र-
दशास्यारिर्दत्तराज्यविभीषणः । सुधासृष्टिमृताशेषस्वसैन्यजीवनैककृत्
॥ १२० ॥ देवब्राह्मणनामैकधातासर्वामरार्चितः । ब्रह्मसूर्येन्द्ररुद्रादि-
वन्द्योऽर्चितः सतां प्रियः ॥ १२१ ॥ अयोध्याखिलराज्यार्हः सर्वभूत-
मनोहरः । स्वाम्यतुल्यकृपादत्तोहीनोत्कृष्टैकसत्प्रियः ॥१२२॥ स्वपक्षादि-
न्यायदर्शीहीनार्थोऽधिकसाधकः । व्याध व्याजानुचितकृत्तावकोऽखिल-
तुष्टिकृत् ॥ १२३ ॥ पार्वत्यधिकयुक्तात्माप्रियात्यक्तसुरारिजित् ।
साक्षात्कुशलवत्सद्मीन्द्राग्निनातोपराऽजितः ॥ १२४ ॥ कौशलेन्द्रो वीर-
बाहुःसत्यार्थस्त्यक्तसोदरः । यशोदानन्दनोनन्दीधरणीमण्डलोदयः
॥ १२५ ॥ ब्रह्मादिकाम्यसान्निध्यसनाथीकृतदैवतः । ब्रह्मलोकाप्तचाण्डा-
लाद्यशेषप्राणिसार्थपः ॥१२६॥ स्वर्णीतगर्दभाश्वादिचिरायोध्याबलैककृत् ।
रामोद्वितीयः सौमित्रिलक्ष्मणप्रहतेन्द्रजित् ॥ १२७ ॥ विष्णुभक्ताशिवांहः
क्षित्पादुकाराज्यनिर्वृतः । भरतोऽसह्यगन्धर्वकोटिघ्नोलवणान्तकः
॥ १२८ ॥ शत्रुघ्नोवैद्यराडायुर्वेदगर्भौषधीपतिः नित्यानित्यकरोधन्वन्त-
रिर्यज्ञोजगद्धरः ॥ १२९ ॥ सूर्यविघ्नःसुराजीवोदक्षिणेशोद्विजप्रियः ।
छिन्नमूर्द्धोपदेशार्कतनूजकृतमैत्रिकः ॥ १३० ॥ शेषाङ्गस्थापितनरः
कपिलःकर्दमात्मजः । योगात्मकध्यानभङ्गःसगरात्मजभस्मकृत् ॥१३१॥
धर्मोविश्वेन्द्रसुरभीपतिःशुद्धात्मभावितः । शम्भुत्रिपुरदाहैकस्थैर्यविश्व-
रथोद्धतः ॥ १३२ ॥ विश्वात्माशेषरुद्रार्थशिरश्छेदाक्षताकृतिः । वाज-
पेयादिनामाग्निर्वेदधर्मपरायणः ॥ १३३ ॥ श्वेतदीपपतिःसांख्यप्रणेता-
सर्वसिद्धिराट् । विश्वप्रकाशितध्यानयोगोमोहतमिस्रहा ॥ १३४ ॥ भक्त-
शम्भुजितोदैत्यामृतवापीसमस्तपः । महाप्रलयविश्वैकोऽद्वितीयोखिल-
दैत्यराट् ॥ १३५ ॥ शेषदेवः सहस्राक्षः सहस्रांघ्रिशिरोभुजः । फणीफणि-
फणाकारयोजिताम्भ्यम्बुदक्षितिः ॥ १३६ ॥ कालाग्निरुद्रजनकोमुसला-
स्त्रोहलायुधः । नीलाम्बरोवारुणीशोमनोवाक्कायदोषहा ॥ १३७ ॥
स्वसन्तोषतृप्तिमात्रःपातितैकदशाननः । बलिसंय्यमनोघोरो रौहिणेयः
प्रलम्बहा ॥ १३८ ॥ मुष्टिकघ्नोद्विविदहाकालिन्दीभेदनोबलः । रेवती-
रमणः पूर्वभक्तिरेवाच्युताग्रजः ॥ १३९ ॥ देवकीवासुदेवोत्थोदितिकश्यप-
नन्दनः । वार्ष्णेयःसात्वतांश्रेष्ठःशौरिर्यदुकुलोद्वहः ॥ १४० ॥ नराकृतिः
पूर्णब्रह्मसव्यसाचीपरंतपः । ब्रह्मादिकामना नित्यजगत्पर्वतशैशवः

॥ १४१ ॥ पूतनाघ्नःशकटभिद्यमलार्जुनभञ्जनः । वत्सासुरारिःकेशिघ्नो-
धेनुकारिर्गवीश्वरः ॥ १४२ ॥ दामोदरोगोपदेवोयशोदानन्दकारकः ।
कालीयमर्दनःसर्वगोपगोपीजनप्रियः ॥ १४३ ॥ लीलागोवर्द्धनधरो-
गोविन्दोगोकुलोत्सवः । अरिष्टमथन कामोन्मत्तगोपीविमुक्तिदः ॥ १४४ ॥
सद्यःकुवलयापीडघातीचाणूरमर्दनः । कंसारिरुग्रसेनादिराज्यस्थाप्यरि
हाऽमरः ॥ १४५ ॥ सुधर्माङ्कितभूलोकोजरासन्धबलान्तकः । त्यक्तभक्त-
जरासन्धभीमसेनयशःप्रदः ॥ १४६ ॥ सान्दीपनिमृतापत्यदाताकालान्त-
कादिजित् । रुक्मिणीरमणोरुक्मिशासनोनरकान्तकृत् ॥ १४७ ॥ सम-
स्तनरकत्रातासर्वभूपतिकोटिजित् । समस्त सुन्दरीकान्तोसुरारिर्गरुड-
ध्वजः ॥ १४८ ॥ एकाकीजितरुद्रार्कमरुदापोऽखिलेश्वरः । देवेन्द्रदर्पहा-
कल्पद्रुमालंकृतभूतलः ॥ १४९ ॥ बाणबाहुसहस्रच्छित्स्कन्धाद्रिगण-
कोटिजित् । लीलाजितमहादेवोमहादेवैकपूजितः ॥ १५० ॥ इन्द्रार्थार्जुन-
निर्भर्त्सुर्जयदःपाण्डवैकधृक् । काशीराजशिरश्छेत्तारुद्रशक्त्येकमर्दनः
॥ १५१ ॥ विश्वेश्वरप्रसादाढ्यःकाशीराजसुतार्दनः । शम्भुप्रतिज्ञापाता
च स्वयंभूगणपूजकः ॥ १५२ ॥ काशीशगणकोटिघ्नोलोकशिक्षाद्वि-
जार्चकः । शिवतीव्रतपोवश्यःपुराशिववरप्रदः ॥ १५३ ॥ गयासुरप्रतिज्ञा-
धृक्स्वांशशङ्करपूजकः । शिवकन्याव्रतपतिःकृष्णरूपः शिवारिहा ॥१५४॥
महालक्ष्मीवपुर्गौरीत्राणो देवलवातहा । विनिद्रमुचकुन्दैकब्रह्मास्त्रयुव-
नाश्वहृत् ॥ १५५ ॥ अक्रूरोऽक्रूरमुख्यैकभक्तस्वच्छन्दमुक्तिदः । सबालस्त्री-
जलक्रीडामृतवापीकृतार्णवः ॥ १५६ ॥ यमुनापतिरानीलपरिणीतद्वि-
जात्मकः । श्रीदामशंकुभक्तार्थभूम्यानीतेन्द्रभैरवः ॥ १५७ ॥ दुर्वृत्त-
शिशुपालैकमुक्तिकोद्धारकेश्वरः । अचाण्डालादिकंप्राप्यद्वारकानिधि-
कोटिकृत् ॥ १५८ ॥ ब्रह्मास्त्रदग्धगर्भस्थपरीक्षिज्जीवनैककृत् । परिणीत-
द्विजसुतानेतार्जुनमदापहः ॥ १५९ ॥ गूढमुद्राकृतिग्रस्तभीष्माद्यखिल-
गौरवः । पार्थार्थखण्डिताशेषदिव्यास्त्रःपाथमोहभृत् ॥ १६० ॥ ब्रह्मशाप-
च्छलध्वस्तयादवोविभवावहः । अनङ्गोजितगौरीशोरतिकान्तःसदेप्सितः
॥ १६१ ॥ पुष्पेषुर्विश्वविजयोस्मरःकामेश्वरीपतिः । ऊषापतिर्विश्वहेतु-
र्विश्वतृप्तोऽधिपूरुषः ॥ १६२ ॥ चतुरात्माचतुर्वर्णश्चतुर्वेदविधायकः ।
चतुर्विश्वैकविश्वात्मासर्वोत्कृष्टासुकोटिषु ॥ १६३ ॥ आश्रयात्मापुराणर्षि-
र्व्यासःशास्त्रसहस्रकृत् । महाभारतनिर्माताकवीन्द्रोबादरायणः ॥ १६४ ॥
कृष्णद्वैपायनःसर्वपुरुषार्थैकबोधकः । वेदान्तकर्ताब्रह्मैकव्यञ्जकःपुरुवंश-
कृत् ॥ १६५ ॥ बुद्धोध्यानजिताशेषदेवदेवोजगत्प्रियः । निरायुधोजग-

ज्जैत्राश्रीधनोदुष्टमोहनः ॥ १६६ ॥ दैत्यदेवबहिष्कर्तावेदार्थश्रुतिगोपकः । शुद्धोदनिर्नष्टदिष्टः सुखदः सदसत्पतिः ॥ १६७ ॥ यथायोग्याखिलकृपः सर्वशून्योऽखिलेष्टदः । चतुष्कोटिपृथक्तत्त्वप्रज्ञापारमितेश्वरः ॥ १६८ ॥ पाषण्डश्रुतिमार्गेण पाषण्डश्रुतिगोपकः । कल्कीविष्णुयशःपुत्रःकलिकाल-विलोपकः ॥ १६९ ॥ समस्तम्लेच्छहस्तघ्नः सर्वशिष्टद्विजातिकृत् । सत्य-प्रवर्तकोदेवद्विजदीर्घक्षुधापहः ॥ १७० ॥ अश्वएवादिदेवेनपृथ्वीदुर्गति-नाशनः । सद्यःक्ष्मानन्तलक्ष्मीकृन्नष्टनिःशेषधर्मकृत् ॥ १७१ ॥ अनन्त-स्वर्णयागैकहेमपूर्णाखिलद्विजः । असाध्यैकजगच्छास्ता विश्ववन्द्योजय-ध्वजः ॥ १७२ ॥ आत्मातत्त्वाधिप.कर्तृश्रेष्ठोविधिरुमापतिः । भर्तुःश्रेष्ठः प्रजेशाग्र्योमरीचिजनकाग्रणीः ॥ १७३ ॥ कश्यपोदेवराडिन्द्र. । प्रह्लादो-दैत्यराट्शशी । नक्षत्रेशोरविस्तेजः श्रेष्ठः शुक्रः कवीश्वरः ॥ १७४ ॥ महर्षिराड्भृगुर्विष्णुरादित्येशोबलिः स्वराट् । वायुर्वह्निः शुचिः श्रेष्ठः शङ्करोरुद्रराड्गुरुः ॥ १७५ ॥ विद्वत्तमश्चित्ररथोगन्धर्वाग्र्योवसूत्तम. । वर्णादिरग्र्यास्त्रीगौरीशक्त्यग्र्याश्रीश्चनारदः ॥ १७६ ॥ देवर्षिराट्पाण्ड-वाग्र्योऽर्जुनोनारदवादराट् । पवनः पवनेशानोवरुणोयादसाम्पतिः ॥ १७७ ॥ गङ्गातीर्थोत्तमोद्यूतंछत्रकाग्र्यंवरौषधम् । अन्नंसुदर्शनास्त्रा-ग्र्योवज्रप्रहरणोत्तमम् ॥ १७८ ॥ उच्चैःश्रवावाजिराजऐरावत इभेश्वरः । अरुन्धत्येकपत्नीशोह्यश्वत्थोऽशेषवृक्षराट् ॥ १७९ ॥ अध्यात्मविद्याविद्या-त्माप्रणवश्छन्दसांवरः । मेरुर्गिरिपतिर्मार्गोमासाग्र्यः कालसत्तमः ॥१८०॥ दिनाद्यात्मापूर्वसिद्धिः कपिलः सामवेदराट् । तार्क्ष्यः खगेन्द्रऋत्वग्र्यो-वसन्तः कल्पपादपः ॥१८१॥ दातृश्रेष्ठः कामधेनुरार्तिघ्नाग्र्यः पुरुषोत्तमः । चिन्तामणिर्गुरुश्रेष्ठोमाताहिततमः पिता ॥ १८२ ॥ सिंहोमृगेन्द्रोनागेन्द्रो-वासुकिर्भूधरोनृपः । वर्णशोब्राह्मणश्चान्तःकरणाग्र्यन्नमोनमः ॥१८३॥

इत्येतद्वासुदेवस्य विष्णोर्नामसहस्रकम् । सर्वापराधशमनं परं भक्ति-विवर्धनम् ॥ १८४ ॥ अक्षयब्रह्मलोकादिसर्वार्थाप्त्यैकसाधनम् । विष्णु-लोकैकसोपानं सर्वदुःखविनाशनम् ॥ १८५ ॥ समस्तसुखदं सत्यं परं निर्वाणदायकम् । कामक्रोधादिनिःशेषमनोमलविशोधनम् ॥ १८६ ॥ शान्तिदं पावनन्नृणां महापातकिनामपि । सर्वेषां प्राणिनामाशु सर्वा-भीष्टफलप्रदम् ॥१८७॥ सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वारिष्टविनाशनम् । घोरदुःख प्रशमनं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥ १८८ ॥ तापत्रयापहं गुह्यं धनधान्य-यशस्करम् । सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वसिद्धिदं सर्वकालदम् ॥ १८९ ॥ तीर्थयज्ञतपो-दानव्रतकोटिफलप्रदम् । अप्रज्ञजाड्यशमनं सर्वविद्याप्रवर्तकम् ॥ १९० ॥

राज्यदं राज्यकामानां रोगिणां सर्वरोगनुत् । बन्ध्यानां सुतदं चाशु सर्वश्रेष्ठफलप्रदम् ॥ १९१ ॥ अस्त्रग्रामविषध्वंसि ग्रहपीडाविनाशनम् । माङ्गल्यं पुण्यमायुष्यं श्रवणात्पठनाज्जपात् ॥ १९२ ॥ सकृदस्याखिला-वेदाः साङ्गा मन्त्राश्च कोटिशः । पुराणशास्त्रं स्मृतयः पठिताः पाठितास्तथा ॥ १९३ ॥ जप्त्वास्य श्लोकं श्लोकार्द्धं पादं वा पठतः प्रिये । नित्यं सिद्ध्यति सर्वेषामचिरात्किमुतोऽखिलम् ॥ १९४ ॥ प्राणेन सदृशं सद्यः प्रत्यहं सर्वकर्मसु । इदं भद्रं त्वया गोप्यं पाठ्यं स्वार्थैकसिद्धये ॥ १९५ ॥ नावैष्णवाय दातव्यं विकल्पोपहतात्मने । भक्ति-श्रद्धाविहीनाय विष्णुसामान्यदर्शिने ॥ १९६ ॥ देयं पुत्राय शिष्याय शुद्धाय हितकाम्यया । मत्प्रसादाद्दतेनेदं ग्रहोष्यंत्यल्पमेधसः ॥ १९७ ॥ कलौ सद्यः फलं कल्पग्राममेष्यति नारद । लोकानां भाग्यहीनानां येन दुःखं विनश्यति ॥ १९८ ॥ क्षेत्रेषु वैष्णवेष्वेतदार्यावर्ते भविष्यति । नास्ति विष्णोः परं सत्यं नास्ति विष्णोः परं पदम् ॥ १९९ ॥ नास्ति विष्णोः परं ज्ञानं नास्ति मोक्षो ह्यवैष्णवः । नास्ति विष्णोः परो मन्त्रो नास्ति विष्णोः परं तपः ॥ २०० ॥ नास्ति विष्णोः परं ध्यानं नास्ति मन्त्रोह्यवैष्णवः । किं तस्य बहुभिर्मन्त्रैः किं जपैर्बहुविस्तरैः ॥ २०१ ॥ वाजपेयसहस्रैः किं भक्तिर्यस्य जनार्दने । सर्वतार्थमयो विष्णुः सर्वशास्त्र-मयः प्रभुः ॥ २०२ ॥ सर्वक्रतुमयो विष्णुः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् । आब्रह्म-सारसर्वस्वं सर्वमेतन्मयोदितम् ॥ २०३ ॥

ये वासुदेव को विष्णु सहस्रनाम सब अपराधों का शमन करनेवाला और परमभक्ति की वृद्धि करनेवाला है। यह अक्षय ब्रह्मलोक तथा समस्त इच्छाओं की प्राप्ति का एकमात्र साधन है। यह सर्वदुःखों का विनाश करनेवाला तथा विष्णुलोक का एक सोपान है। यह समस्त सुखों को प्रदान करनेवाला, सत्य और परम निर्वाणदायक है। काम, क्रोध तथा सभी मन की वासनाओं को शुद्ध करनेवाला है। यह मनुष्यों को शान्ति प्रदान करता है, महापातकियों को भी पवित्र करता है और प्राणियों की सभी अभीष्ट इच्छाओं को पूर्ण करनेवाला है। यह समस्त विघ्नों और घोर दुःख का शमन करनेवाला तथा सभी अरिष्टों और तीव्र दारिद्रय का नाश करनेवाला है। यह तापत्रय को दूर करता है। इसे गुप्त रखना चाहिये। यह धन-धान्य और यश प्रदान करता है। यह सर्व ऐश्वर्यों को प्रदान करनेवाला, सभी सिद्धियों को देनेवाला और सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला है। यह सब तीर्थों, यज्ञों, तपों और

करोड़ों व्रतों का फल देनेवाला और अज्ञानान्धकार का नाश करके सभी विद्याओं का प्रवर्त्तन करनेवाला है। यह राज्य की कामना करनेवालों को राज्य देनेवाला, रोगियों के रोगों का नाश करनेवाला, बन्ध्या को सुपुत्र प्रदान करनेवाला तथा सद्यः श्रेष्ठ फलप्रद है। यह अस्त्रों, विषों और ग्रहबाधाजन्य समस्त पीड़ाओं को नष्ट करता है। इसका श्रवण, पठन और जप मङ्गलकारी तथा दीर्घ आयु प्रदान करनेवाला है। जिसने इसका एक बार पाठ कर लिया है उसने मानों अङ्गोंसहित समस्त वेदों, करोड़ों मन्त्रों, पुराणों, शास्त्रों और स्मृतियों का पाठ कर लिया है। हे प्रिये, यदि कोई इसके एक श्लोक, श्लोकार्ध या श्लोक के एक पाद का पाठ कर लेता है तो उसे इतने जप से ही समस्त सिद्धियाँ और फल प्राप्त हो जाते हैं। हे भद्रे! तुम्हें इसे सर्वकर्मों में सदा गुप्त रखना चाहिये और अपने प्राणों के समान रक्षा करते हुये इसका केवल अपने हित के लिये पाठ करना चाहिये। जो विष्णु को एक साधारण व्यक्ति समझता है, जो भक्ति और श्रद्धा से विहीन है, जिसके मन में सन्देह है और जिसकी विष्णु में भक्ति नहीं है उसे इसे कदापि नहीं देना चाहिये। यह शुद्धबुद्धि रखनेवाले शिष्य और अपने पुत्र को ही उसके हितकामना की दृष्टि से देना चाहिये। अल्पबुद्धि मेरी इच्छा के बिना इसे ग्रहण नहीं कर सकते। महर्षि नारद कलियुग में कल्पग्राम में इससे सद्यः श्रेष्ठ फल की आशा करेंगे जिससे संसार के भाग्यहीनों का उद्धार होगा। यह आर्यावर्त के वैष्णव क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ फल देनेवाला है। विष्णु से श्रेष्ठ कोई सत्य नहीं है, विष्णु से उच्च कोई पद नहीं है, विष्णु से श्रेष्ठ कोई ज्ञान नहीं है, वैष्णव के अतिरिक्त कोई मुक्ति नहीं प्राप्त करता, विष्णु से श्रेष्ठ कोई मन्त्र नहीं है और विष्णु से श्रेष्ठ कोई तप नहीं है। विष्णु से श्रेष्ठ कोई ध्यान नहीं है और वैष्णव मन्त्र से श्रेष्ठ कोई मन्त्र नहीं है। अन्य मन्त्रों की चर्चा या विस्तृत जप से क्या लाभ है? विष्णु की भक्ति करनेवालों के लिये सहस्रों वाजपेय यज्ञों की क्या आवश्यकता है, क्योंकि प्रभु विष्णु सर्वतीर्थमय और सर्वशास्त्रमय हैं। मैं तुम से सत्य-सत्य कहता हूं कि विष्णु ही सब यज्ञमय हैं। इस प्रकार मैने तुम्हें आब्रह्मसारसर्वस्व बता दिया ॥१८४-२०३॥

श्रीपार्वत्युवाच। धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि कृतार्थास्मि जगद्गुरो। यत्मयेदं श्रुतं स्तोत्रं त्वद्रहस्यं सुदुर्लभम् ॥ २०४ ॥ अहो वत महत्कष्टं समस्तसुखदे हरौ। विद्यमानेऽपि सर्वेशे मूढाः क्लिश्यन्ति संसृतौ ॥२०५॥ यमुद्दिश्य सदा नाथो महेशोपि दिगम्बरः। जटिलो भस्मलिप्ताङ्गस्तपस्वी वीक्षितो जनैः ॥२०६॥ अतोऽधिको न देवोस्ति लक्ष्मीकान्तान्मधुद्विषः। यत्तत्त्वं चिन्त्यते नित्यं त्वया योगीश्वरेणहि ॥ २०७ ॥ अतः परं किमधिकं पदं श्रीपुरुषोत्तमात्। तमविज्ञाय तान् मूढा यजन्ते ज्ञानमानिनः ॥ २०८ ॥ मुषितास्मि त्वया नाथ चिरं यदयमीश्वरः। प्रकाशितो न मे तस्य दत्ताद्या दिव्यशक्तयः ॥ २०९ ॥ अहो सर्वेश्वरो विष्णुः सर्वदेवोत्तमोत्तमः। भवदादि गुरुर्मूढैः सामान्य इव लक्ष्यते ॥ २१० ॥ महीयसां हि माहात्म्यं भजमानान्भजन्ति चेत्। द्विषतोऽपि तथा पापानुपेक्ष्यन्ते क्षमालयाः ॥ २११ ॥ मयापि बाल्ये स्वपितुः प्रजा दृष्टा बुभुक्षिताः। दुःखादशक्ताः स्वंपोष्टुं श्रियानाध्यासिताः पुरा ॥ २१२ ॥ त्वया संवर्द्धिताभिश्च प्रजाभिर्विबुधादयः। विशसद्भिः स्वशक्त्याद्याः ससुहृन्मित्रबान्धवाः ॥ २१३ ॥ त्वया विना क्व देवत्वं क्व धैर्यं क्व परिग्रहः। सर्वे भवन्ति जीवन्तो यातनाः शिरसि स्थिताः ॥ २१४ ॥ तमृते नैव धर्मार्थौ कामो मोक्षोऽपि दुर्लभः। क्षुधितानां दुर्गतानां कुतो योगसमाधयः ॥ २१५ ॥ सा च संसारसारैका सर्वलोकैकपालिका। वश्या सा कमला यस्य त्यक्त्वा त्वामपि शङ्कर ॥ २१६ ॥ श्रिया धर्मेण शौर्येण रूपेणार्जवसम्पदा। सर्वातिशयवीर्येण सम्पूर्णस्य महात्मनः ॥ २१७ ॥ कस्तेन तुल्यतामेति देवदेवेन विष्णुना। यस्यांशांशकभागेन विना सर्वं विलीयते ॥ २१८ ॥ जगदेतत्तथा प्राहुर्दोषायैतद्विमोहिता। नास्य जन्म जरा मृत्युर्नाप्राप्यं वार्थमेव वा ॥ २१९ ॥ तथापि कुरुते धर्मान्पालनाय सतां कृते। विज्ञापय महादेवं प्रणम्यैकमहेश्वरम् ॥ २२० ॥ अवधार्य तथा साहं कान्त कामद शाश्वत। कामाद्यासक्तचित्तत्वात्किं तु सर्वेश्वर प्रभो ॥ २२१ ॥ त्वन्मयत्वात्प्रसादाद्वा शक्नोमि पठितुन्नचेत्। विष्णोः सहस्रनामैतत्प्रत्यहं वृषभध्वज ॥ २२२ ॥ नामैकेन तु येन स्यात्तत्फलं ब्रूहि मे प्रभो।

श्रीपार्वती बोलीं : हे जगद्गुरो! आपको अत्यन्त दुर्लभ रहस्यस्वरूप और पवित्र इस स्तोत्र को आप से सुनकर मैं अत्यन्त धन्य तथा अत्यन्त कृतार्थ हो गई हूं, और आपकी अत्यधिक अनुगृहीत हूं। अहो। यह अत्यन्त दुःख की बात है कि समस्त सुखों के दाता, सबके स्वामी, विष्णु भगवान् के विद्यमान होते हुये भी मूढ़जन इस संसार में क्लेश सहन कर रहे हैं। उन्हें ही (विष्णु को ही) लक्ष्य करके मेरे नाथ महेश भी दिगम्बर, जटिल और शरीर में भस्म लपेटे हुये तपस्वी के रूप में मनुष्यों द्वारा देखे जाते हैं। मधु का वध करनेवाले इन लक्ष्मीकान्त विष्णु से अधिक कोई देव नहीं है। योगीश्वर रूप आप स्वयं जिनके तत्व का चिन्तन कर रहे हैं उन पुरुषोत्तम से उच्च और

अधिक श्रेष्ठ कौन-सा पद हो सकता है ? उनको न जान कर ज्ञान के अहंकारी मूढ़जन अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। हे नाथ ! आज तक जिसे छिपा रक्खा था उस दिव्य शक्ति को मुझे प्रदान करके आपने मुझे अपने वश में कर लिया है। अहो ! सर्वेश्वर, सर्वदेवोत्तमोत्तम, आपके भी आदि गुरु भगवान् विष्णु को मूर्ख लोग सामान्य व्यक्ति समझते हैं तथा महान लोगों के माहात्म्य का भजन करनेवाले द्वेषी पापियों को भी क्षमा करनेवाले इन विष्णु की उपेक्षा कर देते हैं। बाल्यावस्था में मैं भी पितृगृह में ऐसे मूर्खों और दरिद्रों के प्रति दया दिखाती थी जो अपने परिजनों का भरण-पोषण करने में असमर्थ थे। आपने इन्द्र और अन्य प्रजाजनों के प्रति महान दया की है और वे अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के साथ अपनी योग्यतानुसार इस संसार में उन्मुक्त विचरण कर रहे हैं। देवत्व, धैर्य और सिद्धियों का आपके बिना अस्तित्व नहीं रह सकता। आप को भुलाकर इस संसार में सभी जीव अत्यन्त कष्ट से ही जीवित रहते हैं। आपके बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कठिन है। क्षुधित और दुर्गति को प्राप्त लोगों को योग और समाधि कैसे प्राप्त हो सकती है। ऐसे आपको छोड़कर संसार की साररूपा, एकमात्र जगत् का पालन करनेवाली वह कमला (लक्ष्मी) भी, हे शङ्कर, जिन श्री, धर्म, शौर्य, रूप, ऋजुता, सर्वातिशय और वीर्य से परिपूर्ण महात्मा के वश में हैं, उन विष्णु देव की, जिनके अभाव के बिना यह सब लय को प्राप्त हो जाता है, कौन समता कर सकता है। यह संसार हर प्रकार के पापों से विमोहित है। यद्यपि विष्णु जन्म, जरा, मृत्यु और समस्त कामनाओं से ऊपर हैं, तथापि वे धर्म की रक्षा और साधुओं के पालन में रत रहते हैं। हे कान्त, कामद, शाश्वत ! मैंने ध्यानपूर्वक इस स्तोत्र को सुना, परन्तु हे देवाधिदेव ! कामनाओं में लिप्त होने के कारण मैं इसका एकाग्रचित्त और ध्यानपूर्वक उच्चारण करने में अपने को असमर्थ पा रही हूं। अतः मैं आप से निवेदन करती हूं कि आप इस स्तोत्र के स्थान पर केवल एक नाम बतायें जिसके दैनिक पाठ से हे परमेश्वर, हे वृषभध्वज, मुझे वही फल प्राप्त हो जो सम्पूर्ण सहस्रनामों के जप से मिलता है ॥ २०४–२२२ ॥

श्रीमहादेव उवाच। ॐ राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्रनामभिस्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ २२३ ॥ अतः सर्वाणि तीर्थानि जलं चैव प्रयागजम्। विष्णोर्नामसहस्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ २२४ ॥ इति नारदपञ्चरात्रोक्तश्रीविष्णोर्नामसहस्रं समाप्तम्।

श्रीमहादेव बोले : हे वरानने ! अकेले 'रामनाम' ही सहस्रनाम के बराबर है। मैं भी सर्वदा 'ॐ राम राम, राम' इस प्रकार मनोरम रामनाम में ही रमण करता हूं। अतः सर्वतीर्थों और प्रयाग का जल मिल कर भी इस विष्णु सहस्रनाम की सोलहवीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकते। इति नारदपञ्चरात्रोक्त श्रीविष्णुसहस्रनाम ॥ २२३–२२४ ॥

अथ महापुरुषविद्यारम्भः।

जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥ १ ॥ नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानव्यक्तिरूपिणे। ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ २ ॥ देवानां दानवानां च सामान्यमसि दैवतम्। सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ॥ ३ ॥ एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा। अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमायासमावृतः ॥ ४ ॥ संसारसागरं घोरमनन्तं क्लेशभाजनम्। त्वमेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥ ५ ॥ न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम्। तथाऽपि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ ६ ॥ नैव किञ्चित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽसि न कस्यचित्। नैव किञ्चिदसाध्यं ते न च साध्योऽसि कस्यचित् ॥ ७ ॥ कार्याणां कारणं पूर्वं वचसां वाच्यमुत्तमम्। योगिनां परमां सिद्धिं परमं ते पदं विदुः ॥ ८ ॥ अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन्महाभये। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने शरणं परम् ॥ ९ ॥ कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत। शरीरेऽपि गतौ चापि वर्तते मे महद्भयम् ॥ १० ॥ त्वत्पादकमलादन्यन्न मे जन्मान्तरेष्वपि। निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छामि सद्गतिम् ॥ ११ ॥ विज्ञानं यदिदं प्राप्तं यदिदं ज्ञानमूर्तिजम्। जन्मान्तरेपि मे देव माभूदस्य परिक्षयः ॥ १२ ॥ दुर्गतावपि जातायां त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम। यदि नाथं च विज्ञयं तावतास्मि कृती सदा ॥ १३ ॥ आकामकलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम्। कामये वैष्णवत्वं तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥ १४ ॥ इति महापुरुषविद्या समाप्ता।

महापुरुषविद्या : हे पुण्डरीकाक्ष ! आपकी जय हो। हे विश्वभावन ! आपको नमस्कार। हे महापुरुषों के पूर्वज, सुब्रह्मण्य ! आपको नमस्कार ! प्रधान व्यक्ति रूपी हिरण्यगर्भ को नमस्कार ! शुद्धज्ञानस्वरूप वासुदेव को नमस्कार ! आप देवों और दानवों के समान रूप से देवता हैं। आपके दोनों चारणों की मैं शरण में जाता हूं। आप अकेले ही संसार के स्रष्टा और संहारक हैं। आप गुण और माया से आच्छादित अध्यक्ष और अनुमन्ता हैं। यह घोर

संसार सागर अनन्त क्लेश का भाजन है। मनीषिजन आपकी ही शरण प्राप्त कर इसे पार करते हैं। आपका न रूप है, न आकार है, न शस्त्र है, न स्थान है; फिर भी आप पुरुषाकार होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। न तो आपके परोक्ष कुछ है और न आप किसी के प्रत्यक्ष हैं। न तो आपको कुछ असाध्य है और न आप किसी के साध्य हैं। कार्यों के आप पूर्व कारण हैं; वाणियों की आप उत्तम वाणी हैं। आप का परमपद योगियों की परमसिद्धि है—ऐसा लोग कहते हैं। हे देवेश! इस महाभयङ्कर संसार में मैं भयभीत हूं। हे पुण्डरीकाक्ष! मैं आपके अतिरिक्त दूसरी शरण नहीं जानता। हे अच्युत! सब दिशाओं में और सभी कालों में शरीर की गति में भी मुझे बहुत भय लग रहा है। आप के चरणकमलों के अतिरिक्त जन्मान्तरों में भी कुशल का ऐसा कारण मैं नहीं देख रहा हूं जिससे मुझे सद्गति प्राप्त हो सके। यह जो अजित विज्ञान मैंने प्राप्त किया है उसका, हे देव! जन्मान्तर में भी विनाश न हो। दुर्गति होने पर भी आप ही मेरी गति और मति हैं। यदि आपको मैं जान ले तो मैं उतने ही से सदा कृतार्थ हूं। कामना और कलुष से युक्त मेरा चित्त आपके पैरों में स्थित है। मैं सभी जन्मों में केवल वैष्णवत्व की ही कामना करता हूं। इति महापुरुषविद्या समाप्त।

अथ नृसिंहकवचप्रारम्भः।

नारद उवाच। इन्द्रादिदेववृन्देश ईड्येश्वर जगत्पते। महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रूहि मे प्रभो ॥ १ ॥ यस्य प्रपठनाद्विद्वांस्त्रैलोक्यविजयी भवेत्।

नृसिंह कवच : नारदजी बोले : हे इन्द्रादिदेववृन्देश, ईड्येश्वर, जगत्पते! आप महाविष्णु नृसिंह के इस कवच को मुझे बतायें जिसके पाठ से विद्वान् त्रैलोक्यविजयी हो जाते हैं।

ब्रह्मोवाच। शृणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन। कवचं नृसिंहस्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २ ॥ स्रष्टाहं जगतां वत्स पठनाद्धारणाद्यतः। लक्ष्मीर्जगत्त्रयं पाति संहर्ता च महेश्वरः ॥ ३ ॥ पठनाद्धारणाद्देवा बहवश्च दिगीश्वराः। ब्रह्ममन्त्रमयं वक्ष्ये भ्रान्तादिविनिवारकम् ॥ ४ ॥ यस्य प्रसादाद्दुर्वासास्त्रैलोक्यविजयी भवेत्। पठनाद्धारणाद्यस्य शास्ता च क्रोधभैरवः ॥ ५ ॥

ब्रह्माजी बोले : हे पुत्रश्रेष्ठ, तपोधन नारद! मैं तुम्हें नृसिंह का कवच बतला रहा हूं। इससे मनुष्य त्रैलोक्यविजयी होता है। हे वत्स! इसके पठन तथा धारण से ही मैं जगत् का स्रष्टा हूं, लक्ष्मीजी तीनों लोकों का पालन

करती हैं और महेश्वर संहारक हैं। इसके पठन तथा धारण करने से बहुत से देव दिगीश्वर हो गये हैं। मैं उसी भ्रान्तिनिवारक ब्रह्ममन्त्रमय का उपदेश करूंगा जिसके प्रसाद से दुर्वासा ऋषि त्रैलोक्यविजयी हो गये और जिसके पठन तथा धारण से ही क्रोधभैरव शास्ता हैं।

त्रैलोक्यविजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः। ऋषिश्छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः ॥ ६ ॥ क्ष्रौं बीजं मे शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः ॥ ७ ॥ ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥' द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो मन्त्रराजः सुरद्रुमः। कण्ठं पातु ध्रुवं क्ष्रौं हृद्भगवते चक्षुषी मम ॥ ९ ॥ नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु कर्णकम्। दीप्तदंष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम् ॥ १० ॥ सर्वरक्षोघ्नाय च तथा सर्वभूतहिताय च। सर्वज्वरविनाशाय दहदह पदद्वयम् ॥ ११ ॥ रक्षरक्ष वर्ममन्त्रः स्वाहा पातु मुखं मम। तारादिरामचन्द्राय नमः पातु हृदं मम ॥ १२ ॥ क्लीं पायात्पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः। नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रौं क्ष्रौं चहुं फट् ॥ १३ ॥ षडक्षरः कटिं पातु ॐ नमो भगवते पदम्। वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं ऊरुद्वयम् ॥ १४ ॥ क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः। क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः पायात्पदद्वयम् ॥ १५ ॥ क्ष्रौं नृसिंहाय क्ष्रौं च सर्वाङ्गे मे सदावतु।

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ॥ १६ ॥ तव स्नेहान्मया ख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्। गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात्कवचं ततः ॥ १७ ॥ सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत्। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ १८ ॥ हवनादीन्दशांशेन कृत्वा तत्साधकोत्तमः। ततस्तु सिद्धकवचो रूपेण मदनोपमः ॥ १९ ॥ स्पर्द्धामुद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेन्मुखे। पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ २० ॥ अपि वर्षसहस्राणां पूजानां फलमाप्नुयात्। भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥ २१ ॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ नरसिंहो भवेत्स्वयम्। योषिद्वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे करे ॥ २२ ॥ बिभृयात्कवचं पुण्यं सर्वसिद्धियुतो भवेत्। काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ॥ २३ ॥ जन्मवन्ध्या नष्टपुत्रा बहुपुत्रवती भवेत्। कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २४ ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येवं त्रैलोक्य-

विजयी भवेत् । भूतप्रेतपिशाचाश्च राक्षसा दानवाश्च ये ॥ २५ ॥ तं दृष्ट्वा प्रपलायन्ते देशाद्देशान्तरं ध्रुवम् । यस्मिन्गृहे च कवचं ग्रामे वा यदि तिष्ठति । तद्देशं तु परित्यज्य प्रयान्ति ह्यतिदूरतः ॥ २६ ॥ इति ब्रह्मसंहितायां त्रैलोक्यमङ्गलं नाम नृसिंहकवचं समाप्तम् ।

हे वत्स ! मैंने सभी मन्त्रों के घनीभूत शरीर को तुम्हारे स्नेह से तुम्हें बताया है । तुम इसे किसी से न कहना । गुरुपूजा करने के बाद इस कवच को ग्रहण करना चाहिये । इसके बाद मनुष्य सर्वपुण्ययुत और सर्वसिद्धियुत हो जाता है । इसका पुरश्चरण १०८ बार जप जानना चाहिये । इसके दशांश से हवन आदि करके श्रेष्ठ साधक सिद्ध कवचवाला होकर रूप में मदन के समान हो जाता है । ऐसे साधक के घर में लक्ष्मी स्पर्धा छोड़कर निवास करती हैं तथा उसके मुख में वाणी निवास करती है । पुष्पाञ्जल्यष्टक देकर मूलमन्त्र के साथ इसका एक बार पाठ करने से साधक हजारों वर्षों की पूजा का फल प्राप्त करता है । जो साधक भोजपत्र पर इसे लिख कर गुटिका बनाकर सोने की ताबीज में रख कर कण्ठ या दाहिनी भुजा में धारण करता है वह स्वयं नृसिंह रूप बन जाता है । स्त्री बाँये हाथ में तथा पुरुष दाहिने हाथ में इस कवच को बाँधे तो यह सब सिद्धियों का दाता होता है । काकवन्ध्या, मृतवत्सा, जन्मवन्ध्या और नष्टपुत्रा भी इसके प्रसाद से वहुपुत्रवती हो जाती हैं । कवच के प्रसाद से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है । इस प्रकार वह तीनों लोकों को क्षुभित कर देता है और त्रैलोक्यविजयी हो जाता है । भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस तथा दानव जो भी हैं वे सब इस कवच को धारण करनेवाले को देख कर दूसरे देश में भाग जाते हैं । जिस घर या ग्राम में यह कवच होता है उस देश को छोड़कर वे सब (भूत-प्रेत आदि) दूर भाग जाते हैं । इति ब्रह्मसंहिता में त्रैलोक्यमोहन नामक कवच समाप्त ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्ड में विष्णुतन्त्ररूपी
सप्तम तरङ्ग समाप्त ॥ ७ ॥

सूर्य

अष्टम तरंग

सूर्य तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः।

अथ सूर्यमन्त्रप्रयोगः।

शारदातिलक में दश अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य सूर्यमन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। दिवाकरो देवता। ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः। दृष्टादृष्टफलसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ दिवाकर देवतायै नमः हृदि ॥३॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ श्रीं शक्तये नमः पादयो ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मूर्तिन्यास : ॐ ॐ आदित्याय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ एं रवये नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ उं भानवे नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ इं भास्कराय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ अं सूर्याय नमः पादयोः ॥ ५ ॥ इति मूर्तिन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यासः : ॐ ॐ नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ घृं नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ णिं नमः कण्ठे ॥ ३ ॥ ॐ सूं नमः हृदि ॥ ४ ॥ ॐ यं नमः कुक्षौ ॥ ५ ॥ ॐ आं नमः नाभौ ॥ ६ ॥ ॐ दिं नमः लिङ्गे ॥७॥ ॐ त्यं नमः पादयोः ॥८॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । रक्ताब्जयुग्माभयदानहस्तं केयूरहारांगदकुण्डलाढ्यम् । माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे बन्धूककान्तिं विलसत्त्रिनेत्रम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिसूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने इत्यन्तं पीठदेवतां सम्पूज्य पीठशक्तिं पूजयेत् । तद्यथा :

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में 'मण्डूकादि सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने' इसे अन्त में रखकर पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार पीठ शक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ रां दीप्तायै नमः ॥ १ ॥ ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रूं जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ रैं भद्रायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ वैं विभूत्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ वों विमलायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ वौं अघोरायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं विद्युतायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः ॥ ९ ॥

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय सौराय योगपीठाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा 'ॐ खं खखोल्काय नमः' इति मन्त्रेण मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः ।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में अग्न्युत्तारणपूर्वक 'ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय सौराय योगपीठाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके 'ॐ खं खखोल्काय नमः' इस मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे । उसमें क्रम यह है : पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां सूर्य मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥'

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर आवरणपूजा आरम्भ करे (सूर्यपूजन यन्त्र देखिये चित्र २२) :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे । सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा हृदयाय

नमः[१] हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥१॥ निर्ऋतिकोणे । ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा[२] शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २॥ वायव्ये ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा शिखायै वषट्[३] शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ऐशान्ये ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं[४] कवचश्रीपा० ॥४॥ पूज्यपूजकयोर्मध्ये । ॐ अग्नितेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्[५] नेत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे । ॐ सर्वतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अस्त्रायफट् अस्त्रश्रीपा० ॥ ६॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । फिर पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के बीच में प्राची की कल्पना करके प्राच्यादि क्रम से चारों दिशाओं में :

ॐ ॐ आदित्याय नमः[७] आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ यं रवये नमः[८] । रविश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ उं भानवे नमः[९] भानुश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ इं भास्कराय नमः[१०] । भास्करश्रीपा० ॥ ४ ॥ इति सम्पूज्य आग्नेयादिविदिक्षु च ॐ ऊषायै नमः[११] ऊषाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रं प्रज्ञायै नमः[१२] प्रज्ञाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ प्रभायै नमः[१३] प्रभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सन्ध्यायै नमः[१४] सन्ध्याश्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[१५] । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[१६] । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः[१७] । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[१८] । वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः[१९] । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः[२०] । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चामुण्डायै नमः[२१] । चामुण्डाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः[२२] । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥ स्वपुरतः । ॐ अरुणाय नमः[२३] । अरुणश्रीपा० ॥ ९ ॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से :

ॐ चन्द्राय नमः[२४]। चन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ मङ्गलाय नमः[२५]। मङ्गलश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ बुधाय नमः[२६]। बुधश्रीपा० ॥३॥ ॐ बृहस्पतये नमः[२७]। बृहस्पतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शुक्राय नमः[२८] शुक्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ शनैश्चराय नमः[२९]। शनैश्चरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ राहवे नमः[३०]। राहुश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ केतवे नमः[३१]। केतुश्रीपा० ॥ ८ ॥

इस प्रकार अष्टग्रहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ।४

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[३२]। इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः[३३]। अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः[३४]। यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[३५]। निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः[३६]। वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः[३७]। वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः[३८]। कुबेरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः[३९]। ईशानश्रीपा० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये। ॐ आं ब्रह्मणे नमः[४०]। ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[४१]। अनन्तश्रीपा० ॥ १० ॥

इस प्रकार दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥ फिर भूपुर के बाहर :

ॐ वं वज्राय नमः[४२] ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः[४३] ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः[४४] ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः[४५] ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः[४६] ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः[४७] ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः[४८] ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[४९] ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः[५०] ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः[५१] ॥ १० ॥

इससे अस्त्रों की पूजा करे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। दशसहस्रहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवंकृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'दशलक्षं जपेन्मन्त्रं समिद्भिः क्षीरशाखिनाम्। तत्सहस्रं प्रजुहुयात्क्षीराक्ताभिर्जितेन्द्रियः ॥ १ ॥ एवं सम्पूज्य विधिवद्भास्करं भक्तवत्सलम्। दद्यादर्घ्यं प्रतिदिनं वारे वा तस्य चोदिते ॥ २ ॥

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण दश लाख जप है। दश सहस्रहोम है। तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध

होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि मन्त्र का दश लाख जप करे और दूध से सिक्त क्षीरी वृक्षों की समिधाओं से जितेन्द्रिय होकर होम करे। इस प्रकार विधिवत भक्तवत्सल भास्कर (सूर्य) की पूजा करके प्रतिदिन रविवार को अर्घ्य देवे।

अथार्घ्यविधानम्। प्रभाते मण्डलं कृत्वा पूर्ववत्पीठमर्चयेत्। पात्रं ताम्रमयं प्रस्थतोयग्राहि मनोरमम् ॥३॥ विधाय तत्र मनुना पूरयेत्तच्छुभोदकैः। कुंकुमं रोचनं राजीरक्तचन्दनवैणवान् ॥ ४ ॥ करवीरजपाशालीकुशश्यामाकतण्डुलान्। निक्षिपेत्सलिले तस्मिन्नैक्यं सङ्कल्प्य भानुना ॥ ५ ॥ साङ्गमभ्यर्चयेत्तस्मिन्भास्करं प्रोक्तलक्षणम्। गन्धपुष्पादि नैवेद्यैर्यथाविधि विधानवित् ॥ ६ ॥ तद्विधाय जपेन्मन्त्रं सम्यगष्टोत्तरं शतम्। पुनः सम्पूज्य गन्धाद्यैर्जानुभ्यामवनीं गतः ॥ ७ ॥ आमस्तकं तदुद्धृत्य व्योम्नि सावरणे रवौ। दृष्टिं विधाय स्वैकेन मूलमन्त्रं धिया जपन् ॥ ८ ॥ दद्यादर्घ्यं दिनेशाय प्रसन्नेनान्तरात्मना। कृत्वा पुष्पाञ्जलिं भूयो जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ९ ॥ यावदर्घामृतं भानुः समादत्ते निजैः करैः तेन तृप्तो दिनमणिर्दद्यात्तस्मै मनोरथान् ॥ १० ॥ अर्घदानमिदं पुंसामायुरारोग्यवर्द्धनम्। धनधान्यपशुक्षेत्रपुत्रमित्रकलत्रदम् ॥ ११ ॥ तेजोवीर्ययशःकान्तिविद्याविभवभाग्यदम्। गायत्र्युपासनाशक्तः सन्ध्यावन्दनतत्परः। दशवर्णं जपन्विप्रो नैव दुःखमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥ इति सूर्यदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः। इति सूर्यपटलं समाप्तम्।

अर्घ्यविधान : प्रातःकाल मण्डल बनाकर पूर्ववत पीठ की पूजा करे। एक सेर जल भरने लायक एक सुन्दर ताम्रपात्र लेकर उसमें मन्त्र से स्वच्छ जल भरे। केसर, गोरोचन, राई, लालचन्दन, बंसलोचन, कनेर, अड़उल का फूल, शाली, कुशा और सावाँ के चावल उस जल में सूर्य के लिये सङ्कल्प करके डाल दे। विधानवित साधक गन्ध, पुष्पादि नैवेद्य से पूर्वोक्त सूर्य का यथाविधि साङ्ग पूजन करे। यह सब करने के बाद १०८ मन्त्र का जप करे। पुनः घुटनों को भूमि पर टेक कर गन्ध आदि से पूजा करके मस्तक ऊपर उठाकर आकाश में आवरणसहित सूर्य की ओर दृष्टि लगाकर मन से मूलमन्त्र का जप करते हुये अन्तरात्मा से प्रसन्न होकर सूर्य को अर्घ्य देवे। पुष्पाञ्जलि देकर पुनः एक सौ आठ मन्त्र का जप करे। जब सूर्य अर्घामृत को अपनी किरणों से ग्रहण करते हैं तब उससे तृप्त होकर वे दिनमणि साधक को मनोवांछित फल देते हैं। यह अर्घदान मनुष्यों की आयु और

आरोग्य का वर्द्धन करनेवाला तथा धन-धान्य, पशु, भूमि, पुत्र, मित्र और पत्नी प्रदान करनेवाला है। यह तेज, वीर्य, यश, कान्ति, विद्या, विभव और भाग्य का देनेवाला है। गायत्री उपासना में लगा हुआ, सन्ध्या-वन्दन में तत्पर और इस दशाक्षर मन्त्र को जपनेवाला विप्र कभी दुःख नहीं पाता। इति सूर्य दशाक्षर मन्त्र प्रयोग। इति सूर्यपटल समाप्त।

अथ सूर्यपद्धति प्रारम्भः।

पूर्वकृत्य कृत्वा पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रातः स्मरणं कुर्यात्।

सूर्यपद्धति : पूर्वकृत्य करके पुरश्चरण के दिन ब्राह्ममुहूर्त में उठ कर प्रातः स्मरण करे।

अथ सूर्यप्रातःस्मरणम्।

ॐ प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि। सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्य रूपम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च। वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च। तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः। स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ इति प्रातःस्मरणं कृत्वा शौचादिकं विधाय स्नानं च कुर्यात्। ततः पूजागृहमागत्य नित्यनैमित्तिकं विधाय स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं च कुर्यात्। ततो वामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥ इति नत्वा पीठपूजां कुर्यात्। तद्यथा :

सूर्य के इन तीन श्लोकों का जो प्रतिदिन प्रातःकाल पाठ करता है वह समस्त व्याधियों से मुक्त होकर सुख प्राप्त करता है। इस प्रकार प्रातः स्मरण करके साधक शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करे। इसके बाद पूजागृह में आकर नित्य-नैमित्तिक कर्म करके अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति, संहारमातृका न्यास करके प्रयोगोक्त न्यासादि करे। इसके बाद वामभाग में 'श्रीगुरुभ्यो

नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥' इससे नमस्कार करके इस प्रकार पीठपूजा करे।

पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या सूर्यमण्डल में :

मध्यभागे : ॐ मं मण्डूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ आग्नेय्याम्। ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम्। ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्ये। ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्ये। ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे। ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे। ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥१८॥ पश्चिमे। ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे। ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये। ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥

इति 'मण्डूकादिसूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने' इत्यन्तं पीठदेवताः सम्पूज्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत्। ततः शङ्खस्थाने ताम्रपात्रं घण्टां च सर्वदेवोपयोगिपद्धति मार्गेण संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय मूलेन नमः इति जलेन संप्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे स्थापयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य।

इस प्रकार 'मण्डूकादि अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' यहाँ तक पीठदेवताओं की पूजा करके प्रयोगोक्त नवपीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद शङ्ख के स्थान में ताम्रपात्र और घण्टा को सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से स्थापित करके गन्ध, अक्षत आदि पूजा की सामग्रियों को पूजोपकरणार्थ अपने दाहिने ओर रखकर मूलमन्त्र के अन्त में 'नमः' लगाकर उसके द्वारा जल से प्रोक्षण करके जल के लिये एक बृहत्पात्र, पङ्खा, छत्र, दर्पण और चमर को अपने बाँये हाथ की ओर रक्खे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित

यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर आसन मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके :

देशकालौ स्मृत्वा मम श्रीसूर्यनारायणनूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करके इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करे :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि । क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । अस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

इससे जल छिड़क कर हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसंहं हंसः सोहं अस्य सूर्यनारायणसपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥

पुनः ॐ आंह्रींक्रौं यंरंलंवंशंषंहं हंसः सोहं अस्य सूर्यनारायण-सपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः ॥ २ ॥

पुनः ॐ आंह्रींक्रौं यंरंलंवंशंषंसंहं हंसः सोहं अस्य सूर्यनारायण-सपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ ३ ॥

पुनः । ॐ आंह्रींक्रौं यंरंलंवंशंषंसंहं हंसः सोहं अस्य सूर्यनारायण-सपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायू-पस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥

इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य यः प्राणतोनिमिषतोमहित्वेविधेम इति-मन्त्रिति त्रिवारं पठेत् । ॐ मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा । इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा ।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके 'यः प्राणतोनिमिषतोमहित्वेविधेम' इसका तीन बार पाठ करे । फिर 'ॐ मनोजूतिर्जुषतासुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा' यह कहकर संस्कार सिद्धि के लिये पन्द्रह प्रणव की आवृत्ति करके :

अनेन सूर्यनारायणसपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारा-न्संपादयामि ।

यह कहे । इसके बाद :

'ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि । तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् ।'

इससे १०८ बार अभिमन्त्रित करके मूलदेवता का ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके इस प्रकार आवाहन करे । अक्षत लेकर :

'ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारायणाय नमः । इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाहनम् ॥ १ ॥

'ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च । यदि पूर्णं भवेत्कृ-त्यं तदाप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥' ॐ सूर्यनारायणाय नमः इह सम्मुखो भव । इति सम्मुखीकरणम् ॥ २ ॥

'ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये । तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारायणाय नमः सुस्वागतं समर्पयामि । इति सर्वत्र ॥ ३ ॥

'ॐ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते । आसनं दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर' ॥ १ ॥ इत्यासनम् ॥ ४ ॥

इस प्रकार आसन देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे :

ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः । प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके पाद्यादि से पूजन करे :

अथ पाद्यादि पूजनम् । 'ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः । तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥'

इससे अर्घोदक से पाद्य देवे ॥ १ ॥

'ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने । आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥ इत्याचमनम् ॥ २ ॥

ॐ तापत्रय हरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् । तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥

इससे अर्घोदक से अर्घ्य देवे ॥ ३ ॥

ॐ सर्वाकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने । मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ २ ॥ इति मधुपर्कम् ॥ ४ ॥

'ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ इत्याचमनीयम् ॥ ५ ॥

'ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ इति सुगन्धतैलम् ॥ ६ ॥

'ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥ इति जलस्नानं ॥ ७ ॥

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्। पञ्चामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

इससे पञ्चामृत से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान कराये ॥ ८ ॥

'ॐ सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयै वापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥' इति रक्तवस्त्रम् ॥ ९ ॥

'ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ १० ॥

'स्वभावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयाय ते। भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥ १ ॥

इससे दाहिने हाथ के अँगूठे से स्पृष्ट अनामिक अँगुली से मुद्रा बनाकर भूषण देवे ॥ १ ॥

'ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

अँगूठे को कनिष्ठा के मूल में लगाकर गन्धमुद्रा प्रदर्शित करे। इति गन्धम् ॥ १२ ॥

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥'

सभी अँगुलियों से अक्षत देवे। इत्यक्षतान् ॥ १३ ॥

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥'

तर्जनी को अँगूठे के मूल में लगाकर पुष्पमुद्रा से पुष्प देवे। इति पुष्पम् ॥ १४ ॥

इस प्रकार पुष्पदान पर्यन्त पूजन करके देव की आज्ञा से प्रयोगोक्त आवरणपूजा करके धूपादि पूजन करे।

अथ धूपादिपूजनम्। 'ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीसूर्यनारायणाय नमः। धूपं समर्पयामि। इति सर्वत्र।

तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगे धूपमुद्रया नाभिदेशतः तां धूपयित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रंनिधाय शङ्खजलमुत्सृजेत्। इति धूपम् ॥ १ ॥

तर्जनी मूल से अँगूठे को लगाकर धूपमुद्रा से नाभि देश तक धूपित करके देव के बाँये भाग में धूपपात्र को रखकर शङ्ख के जल को छोड़ देवे। इति धूपम् ॥ १ ॥

ततः दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मन्त्राक्षरतन्तुभिर्वर्तीं निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयेत्।

इसके बाद दीपपात्र को गाय के घी से भरकर, यन्त्र में जितने अक्षर हों उतने तन्तुओं की बत्ती उसमें डालकर प्रणव (ॐ) से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से पाद पर्यन्त दीप प्रदर्शित करे :

'ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० सां० दीपं समर्पयामि।

इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय शङ्खजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्ने दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ २ ॥

यह पढ़कर देव के दाहिने भाग में उसे रखकर शङ्ख के जल को गिराकर मध्यमा और अँगूठे को मिलाकर दीपमुद्रा प्रदर्शित करे ॥ २ ॥

ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं नैवेद्यं निधाय 'ॐ ह्रीं नमः' इत्यर्घ्यजलेन प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं बामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनु मुद्रां

प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

इसके बाद देव के आगे या देव के दाहिने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर स्वर्णादि से निर्मित भोजनपात्र रखकर उसके बीच षड्रसों से युक्त विविध प्रकार के नैवेद्य रखकर 'ॐ ह्रीं नमः' इससे अर्घ्य जल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से उसे देख कर अधोमुख दाहिने हाथ पर वैसे ही बाँये हाथ को रखकर नैवेद्य को ढँक कर 'ॐ यं' इस वायुबीज को सोलह बार जप कर वायु से उसके दोषों को सुखाकर, फिर दाहिने करतल के पृष्ठ में बाँये करतल को लगाकर नैवेद्य प्रदर्शित करके 'ॐ रं' इस वह्नि बीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोषों को दग्ध करे। फिर बाँये करतल में 'ॐ वं' इस अमृत बीज का चिन्तन करके उसके पृष्ठभाग में दाहिने करतल को लगाकर नैवेद्य प्रदर्शित करके 'ॐ वं' इस सुधाबीज को सोलह बार जप कर उससे उठी अमृतधारा से नैवेद्य के प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से उसका प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित करके मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध और पुष्प से पूजन करके देव के उद्गत तेज का स्मरण करते हुये बाँये अँगूठे से नैवेद्य पात्र को स्पर्श करके दाहिने हाथ से जल लेकर :

'ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० सां० नैवेद्यं समर्पयामि।

इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति नैवेद्यम् ॥ ३ ॥

इससे भूतल पर देव के दाहिनी ओर जल छिड़क कर बाँये हाथ से अनामिका मूल के साथ अँगूठे को लगाकर ग्रासमुद्रा प्रदर्शित करे। इति नैवेद्यम् ॥ ३ ॥

'ॐ नमस्ते देव देवेश सर्वतृप्तिकरं परम्। परमानन्दपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥ इति जलम् ॥ ४ ॥

'ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरण मात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ २ ॥

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे ॥ ५ ॥

'ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिकैर्युक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥' इति ताम्बूलम् ॥ ६ ॥

'ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ १ ॥' इति फलम् ॥ ७ ॥

'ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥' इति कर्पूरार्तिक्यम् ॥ ८ ॥

'ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥'

इससे सात प्रदक्षिणा करके :

'ॐ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।'

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे ॥ ९ ॥

'ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥' इति पुष्पाञ्जलिः ॥ १० ॥

इस प्रकार पुष्पाञ्जलि देने के बाद स्तुति पाठ से स्तुति करके हाथ जोड़ कर इस प्रकार प्रार्थना करे :

'ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥१॥' अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़ कर प्रार्थना करके :

'ॐ यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकम्पय ॥ १ ॥'

'इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दद्यात्। ततो मालामादाय सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण मालायाः संस्कारान् कृत्वा अशक्तश्चेत्।

यह पढ़कर देव के दाहिने हाथ में पूजार्पण जल देवे। इसके बाद माला लेकर सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से माला का संस्कार करे। यदि असमर्थ हो तो :

'ॐ ह्रीं मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥'

इससे माला की प्रार्थना करके :

'ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ।'

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमन्त्रं जपेत् । नित्यमेव समाना जपाः कार्याः । न तु न्यूनाधिकाः । ततो जपान्ते ।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ से माला को लेकर हृदय में धारण करके अपने इष्ट देवता का ध्यान करके मध्यमा अँगुली के मध्य पर्व पर उसे स्थापित करके अँगूठे के अग्रभाग से उसे घुमाते हुये एकाग्रचित्त से मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति प्रातःकाल से लेकर मध्याह्नकाल तक मूलमन्त्र का जप करे। इस प्रकार नित्य एक समान जप करना चाहिये—कभी अधिक या कम नहीं। फिर जप के अन्त में :

'ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा । तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥' ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ।

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद्गुप्तं कुर्यात् ।

इससे माला को शिर पर रखकर गोमुखी के भीतर रख देवे । अपवित्र दशा में उसका स्पर्श न करे, किसी अन्य को न दे, अपवित्र स्थान पर उसे न रक्खे और अपनी योनि के समान उसे गुप्त रक्खे ।

ततः । कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्वा जपार्पणं कुर्यात् । तद्यथा अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय ।

इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करके पुनः मूलमन्त्रोक्त ऋष्यादिन्यास और हृदयादि षडङ्गन्यास करके पञ्चोपचारों से पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे और इस प्रकार जलार्पण करे : अर्घ्योदक को चुल्लू में लेकर :

'ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥' इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु वाचा मनसा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्रीसूर्यनारायणायार्पयामि । ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु ।

इति देवदक्षिणकरे जलसमर्पणं कृत्वा कृताञ्जलिपूर्वकंक्षमापनं पठेत् । तथा च ।

इससे देव के दाहिने हाथ में जल समर्पण करके हाथ जोड़कर इस प्रकार समापन का पाठ करे :

'ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥१॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्यो गतिर्मम् । अन्तश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर ॥४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् । तेषुतेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च । आगता सुखसम्पत्तिः पुण्या च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् । देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥८॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर । तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥'

इससे कृताञ्जलिपूर्वक प्रार्थना करके शङ्ख का जल गिराकर उसे देव के ऊपर घुमा कर :

'साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥'

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्वा शङ्खं यथास्थानं निवेशयेत् । ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किञ्चिदुद्धृत्य ॐ चण्डांशवे नमः इति चण्डांशुं सम्पूज्य इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात् । तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात् । तद्यथा ।

यह कहते हुये देव के दाहिने हाथ में कुछ जल देकर पूर्ववत् अर्घ्य को देव के शिर पर देकर शङ्ख को यथा स्थान रक्खे । इसके बाद गतसार नैवेद्य से देव का उच्छिष्ट निकाल कर 'ॐ चण्डांशवे नमः' इससे चण्डांशु का पूजन

करके उच्छिष्टाधिकारी को ऐशानी दिशा में देवे। उससे शेष नैवेद्य को शिव पर धरकर देवभक्तों में बांट कर तथा स्वयं भी खा कर इस प्रकार विसर्जन करे :

'ॐ गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ १ ॥'

इससे अक्षतों को फेंक कर विसर्जन करके :

'ॐ तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥'

इति हृदयकमले हस्तं दत्वा स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्।

इससे हृदयकमल पर हाथ रखकर अपने हृदय में स्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आपको देवरूप में भावना करके सुखपूर्वक विचरण करे।

एवमेव विधिना जपं समाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। इति सूर्यनारायणपूजापद्धतिः समाप्ता।

इस विधि से जप समाप्त करके सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। इति सूर्यनारायण पूजापद्धति-समाप्त।

अथ सूर्यकवचप्रारम्भः।

श्रीसूर्य उवाच। साम्बसाम्ब महाबाहो शृणु मे कवचं शुभम्। त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१॥ यज्ज्ञात्वा मन्त्रवित्सम्यक् फलमाप्नोति निश्चितम्। यद्धृत्वा च महादेवो गणानामधिपोऽभवत् ॥ २ ॥ पठनाद्धारणाद्विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा। एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥ ३ ॥

सूर्यकवच : श्रीसूर्य बोले : हे साम्ब, हे साम्ब, महाबाहो! तुम मेरे शुभ कवच को सुनो। यह परम् अद्भुत त्रैलोक्यमङ्गल नामक कवच है जिसे जानकर मन्त्रवित् निश्चितरूप से सम्यक फल प्राप्त करता है और जिसे धारण कर महादेव देवों के स्वामी हो गये। इसके पाठ तथा धारण से ही विष्णु सदा सब के पालक हैं। इसी प्रकार इन्द्रादि सभी ने समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त किया है :

कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोनुष्टुबुदाहृतम्। श्रीसूर्यदेवता चात्र सर्वदेवनमस्कृतः ॥ ४ ॥ आरोग्ययशोमोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।

प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम् ॥ ५ ॥ सूर्योऽव्यान्नयनद्वन्द्वमादित्यः कर्णयुग्मकम्। अष्टाक्षरो महामन्त्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥६॥ ह्रीं बीजं मे शिखां पातु हृदये भुवनेश्वरः। चन्द्रबीजं विसर्गाढ्यं पातु मे गुह्यदेशकम् ॥ ७ ॥ त्र्यक्षरोसौ महामन्त्रः सर्वतन्त्रेषु गोपितः। शिवो वह्निसमायुक्तो वामाक्षिबिन्दुभूषितः ॥ ८ ॥ एकाक्षरो महामन्त्रः श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितम्। गुह्याद्गुह्यतरो मन्त्रो वांछा चिन्तामणिः स्मृतः ॥ ९ ॥ शीर्षादिपादपर्यन्तं सदा पातु मनूत्तमः।

इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ १० ॥ श्रीप्रदं कान्तिदं नित्यं धनारोग्यवविर्धनम्। कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधिविनाशनम् ॥ ११ ॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान्भवेत्। बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ॥ १२ ॥ तत्तत्सर्वं भवत्येव कवचस्य च धारणात्। भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ १३ ॥ ब्रह्मराक्षसवेताला नैव द्रष्टुमपि क्षमाः। दूरादेव पलायन्ते तस्य संकीर्तनादपि ॥ १४ ॥ भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरुकुंकुमैः। रविवारे च संक्रान्त्यां सप्तम्यां च विशेषतः ॥ १५ ॥ धारयेत्साधकश्रेष्ठस्त्रैलोक्यविजयी भवेत्। त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद्दक्षिणे भुजे ॥ १६ ॥ शिखायामथ वा कण्ठे सोपि सूर्यो न संशयः। इति ते कथितं साम्ब त्रैलोक्ये मङ्गलाभिधम् ॥ १७ ॥ कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम्। अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम्। सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥१८॥ इति ब्रह्मयामले त्रैलोक्यमङ्गलं नाम श्रीसूर्यकवचं समाप्तम्।

इस प्रकार तीनों लोकों में दुर्लभ दिव्य कवच मैंने तुम्हें बताया है। यह श्रीप्रद, कान्तिप्रद तथा सदा धन और आरोग्य का वर्द्धन करनेवाला है। यह कुष्ठ आदि रोगों का शमन करनेवाला तथा महाव्याधियों का विनाशक है। जो तीनों सन्ध्याओं में इसे पढ़ता है वह नीरोग तथा बलवान होता है। यहाँ अधिक कहने से क्या प्रयोजन, मन में जो है वह सब इस कवच के धारण से सिद्ध हो जाता है। भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस तथा वेताल आदि में इसे देखने की क्षमता नहीं है। इसके पाठ से ये सब दूर से ही भाग जाते हैं। भोजपत्र पर गोरोचन तथा केसर से लिख कर रविवार को संक्रान्ति तथा सप्तमी को विशेष रूप से

साधक यदि इसे धारण करे तो श्रेष्ठ तथा त्रैलोक्यविजयी होता है। तीन धातुओं के बीच में इसे रखकर दाहिनी भुजा में या शिखा में या कण्ठ में धारण करने से साधक सूर्य के समान हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है। हे साम्ब ! मैंने यह त्रैलोक्यमङ्गल नामक कवच तुम्हें बतलाया है। यह कवच संसार में दुर्लभ है। तुम्हारे स्नेह से मैंने इसे तुम्हें बताया है। इस दिव्य उत्तम कवच को बिना जाने जो सूर्य का जप करता है उसे करोड़ों कल्पों में भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। इति ब्रह्मयामलोक्त त्रैलोक्यमङ्गल नामक सूर्य कवच समाप्त।

अथ सूर्यस्तवराजप्रारम्भः।

वसिष्ठ उवाच। स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनिसन्ततः। राजन्नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम् ॥ १ ॥ विद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा। स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

सूर्य स्तवराज : वसिष्ठ बोले : हे राजन् ! वहाँ सहस्रांशु दिवाकर सूर्य की सहस्रनाम से स्तुति करते हुये अत्यन्त दुर्बल, उभरी नसोंवाले, दुःखी कृष्णपुत्र साम्ब को देखकर सूर्यभगवान् स्वप्न में दर्शन देकर पुनः बोले :

श्रीसूर्य उवाच। साम्बसाम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत। अलं नामसहस्रेण पठस्विमं स्तवं शुभम् ॥ ३ ॥ यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च। तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ॥४॥

श्रीसूर्य बोले : साम्ब, साम्ब, महाबाहो, जाम्बवतीसुत ! हे वत्स ! जो नाम गुप्त, पवित्र और शुभ हैं उन्हें मैं तुम्हें बताऊँगा। उन्हें सुनकर तुम धारण करो।

विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः ॥ ५ ॥ लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः। लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा ॥ ६ ॥ तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः। गभस्तिहस्तो ब्रध्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः ॥ ७ ॥

एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम। देहारोग्यकरश्चैव धनवृद्धियशस्करः ॥ ८ ॥ स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः। य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्ये स्तवनोदये ॥ ९ ॥ स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम् ॥१०॥ एतज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः। एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च ॥ ११ ॥ बलिमन्त्रोऽर्घमन्त्रश्च धूपमन्त्रस्तथैव च। अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे। पूजितोयं महामन्त्रः सर्वपापहरः शुभः ॥ १२ ॥

यह २१ नामों का स्तव मुझे अत्यन्त प्रिय है। यह शरीर को नीरोग करनेवाला, धनवृद्धिकर और यशस्कर है। यह तीनों लोकों में स्तवराज के नाम से विख्यात है। जो इससे दोनों सन्ध्याओं में प्रणत होकर मेरी स्तुति करता है वह सभी पापों से मुक्त होता है। कायिक, वाचिक तथा मानसिक जो दुष्कृत्य हैं वे सब इसके जप से नष्ट हो जाते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। यह जप, होम और सन्ध्योपासन, बलिमन्त्र, अर्घमन्त्र तथा धूपमन्त्र है। अन्नदान में, प्रणाम में, प्रदक्षिणा में, शुभ और सर्वपापहर यह महामन्त्र पूजित है।

एवमुक्त्वातु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः। आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत ॥ १३ ॥ साम्बोपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्। पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्दुर्गाद्विमुक्तवान् ॥१४॥ इति साम्बपुराणे सूर्यस्तवराजः समाप्तः।

यह कहकर सूर्यभगवान् जगदीश्वर कृष्णपुत्र साम्ब को आमन्त्रण देकर वहीं अन्तर्धान हो गये। साम्ब भी स्तवराज से सप्ताश्ववाहन सूर्य की स्तुति करके पवित्रात्मा, नीरोग, श्रीमान् तथा दुःख से विमुक्त हो गये। इति साम्ब पुराणोक्त सूर्यस्तवराज समाप्त।

अथ सूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारम्भः।

धौम्य उवाच।

सूर्य का अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र : धौम्य बोले :

ॐ सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः। गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ॥ १ ॥ पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम्। सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥ २ ॥ इन्द्रो विवस्वान्दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः ॥ ३ ॥ वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसांपतिः। धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥ कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः। कला काष्ठा मुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ ५ ॥ संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः। पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥ ६ ॥ कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः। वरुणः सागरांशश्च जीमूतो जीवनारिहा ॥ ७ ॥ भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः। स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ ८ ॥ अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः। जयो विशालो वरदः सर्व-

धातुनिषेवितः ॥ ९ ॥ मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारणः। धन्वन्तरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः ॥ १० ॥ द्वादशात्माऽरविन्दाक्षः पिता माता पितामहः। प्रजाद्वारं सर्गद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् ॥ ११ ॥ दाहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः। चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥ १२ ॥

एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः। नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत्स्वयम्भुवा ॥ १३ ॥ सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्। वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम् ॥१४॥

ये कीर्तनीय और अमित तेजस्वी सूर्यभगवान् के १०८ नाम स्वयभू भगवान् ने कहा था। सुरगण, पितृगण, यक्षों से सेवित असुर, निशाचर तथा सिद्ध लोगों से पूजित, उत्तम स्वर्ण और अग्नि के समान तेजस्वी सूर्यभगवान् को मैं कल्याण के लिये नमस्कार करता हूं।

सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्स पुत्रदारान्धनरत्नसञ्चयम्। लभेत् जातिस्मरतान्नरः सदा धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान् ॥ १५ ॥ इमं स्तवं देववरस्य यो नरः प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः। विमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेत् कामान्मनसा यथेप्सितान् ॥ १६ ॥ इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे श्रीसूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

जो प्रातःकाल शान्तचित्त होकर इसका पाठ करता है वह मनुष्य पुत्र, स्त्री, धन तथा रत्न राशि प्राप्त करता है; पूर्व जन्मों के रहस्यों को जान लेता है तथा सदा धृति और मेधा को प्राप्त करता है। जो मनुष्य शुद्ध मन से समाहित होकर देववर सूर्यभगवान् का कीर्तन करता है वह शोक के दावानल सागर से मुक्त हो जाता है तथा अभीष्ट कामनाओं को प्राप्त करता है। इति महाभारत, वनपर्वोक्त धौम्य-युधिष्ठिर संवाद में सूर्य अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र समाप्त।

अथ आदित्यहृदयप्रारम्भः।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १ ॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥ २॥ रामराम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन्वत्स समरे विजयिष्यसे ॥ ३ ॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं

शिवम् ॥ ४ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपाप प्रणाशनम्। चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥ रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणांल्लोकान्पाति गभस्तिभिः ॥७॥

आदित्य हृदय : उधर श्रीराम युद्ध से श्रान्त और चिन्ता करते हुये रणभूमि में खड़े थे। इतने में रावण भी युद्ध के लिये उनके सामने उपस्थित हो गया। यह देख भगवान् अगस्त्य मुनि, जो देवताओं के साथ युद्ध देखने के लिये आये थे, श्रीराम के पास जाकर बोले : सबके हृदय में रमण करनेवाले महाबाहो राम ! यह सनातन और गोपनीय स्तोत्र सुनो। वत्स ! इसके जप से तुम युद्ध में अपने समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लोगे। इस गोपनीय स्तोत्र का नाम 'आदित्य हृदय' है। यह परमपवित्र और सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करनेवाला है। इसके जप से सदा विजय की प्राप्ति होती है। यह नित्य, अक्षय और परमकल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मङ्गलों का भी मङ्गल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिन्ता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ानेवाला उत्तम साधन है। भगवान् सूर्य अपनी अनन्त किरणों से सुशोभित (रश्मिमान्) हैं। ये नित्य उदय होनेवाले (समुद्यन्) देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान् नाम से प्रसिद्ध, प्रभा का विस्तार करनेवाले (भास्कर) और संसार के स्वामी (भुवनेश्वर) हैं। तुम इनका ('रश्मिमते नमः, समुद्यते नमः, देवासुर नमस्कृताय नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः' इन नाम मन्त्रों द्वारा) पूजन करो। सम्पूर्ण देवता इन्हीं के स्वरूप हैं। ये तेज की राशि तथा अपनी किरणों से जगत् को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करनेवाले हैं। ये ही अपनी रश्मियों का प्रसार करके देवता और असुरों सहित सम्पूर्ण लोकों का पालन करते हैं।

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः ॥ ८ ॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥ आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ १० ॥ हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः। घनवृष्टिरपांमित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥ १३ ॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्व-

तापनः । कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥ नक्षत्रग्रह ताराणामधिपो विश्वभावनः । तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोस्तु ते ॥ १५ ॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः । ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमोनमः । नमोनमः सहस्रांशो आदित्याय नमोनमः ॥ १७ ॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमोनमः । नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोस्तु ते ॥ १८ ॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे । भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ १९ ॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने । कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे । नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥२१॥ नाशयत्येष वै भूत तमेव सृजति प्रभुः । पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ २२ ॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः । एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ २३ ॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च । यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमः प्रभुः ॥ २४ ॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च । कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ २५ ॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् । एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसे ॥ २६ ॥ अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जयिष्यसि । एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७ ॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा । धारयामास सुप्रीता राघवः प्रयतात्मवान् ॥ २८ ॥ आदित्यं वीक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् । त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥ २९ ॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागतम् । सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥ ३० ॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः । निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥ ३१ ॥ इति वाल्मीकीये श्रीमद्रामायणे आदित्यहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।

'राघव ! विपत्ति में, कष्ट में, दुर्गम मार्ग में तथा अन्य किसी भय के अवसर पर जो कोई पुरुष इन सूर्यदेव का कीर्तन करता है, उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता । अतः तुम एकाग्रचित्त होकर इन देवाधिदेव जगदीश्वर की पूजा करो । इस आदित्य हृदय का तीन बार जप करने से तुम युद्ध में विजय प्राप्त करोगे । महाबाहो ! तुम इसी क्षण रावण का बध कर सकोगे ।' यह कह कर अगस्त्यजी जैसे आये थे उसी प्रकार चले गये । उनका उपदेश सुनकर महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी का शोक दूर हो गया । उन्होंने प्रसन्न होकर शुद्ध

चित्त से आदित्य हृदय को धारण किया और तीन बार आचमन करके शुद्ध हो भगवान् सूर्य की ओर देखते हुये इसका तीन बार जप किया । इससे उन्हें अपार हर्ष प्राप्त हुआ । फिर परम पराक्रमी राम ने धनुष उठाकर रावण की ओर देखा और उत्साहपूर्वक विजय प्राप्ति के लिये आगे बढ़े । उन्होंने पूरा प्रयत्न करके रावण के वध का निश्चय किया । उस समय देवताओं के मध्य में खड़े हुये भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर श्रीराम की ओर देखा और निशाचरराज रावण के विनाश का समय निकट जानकर हर्षपूर्वक कहा : 'राम अब शीघ्रता करो ।' इतिवाल्मीकीय रामायण में आदित्य हृदय स्तोत्र समाप्त ।

अथ सूर्यसहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः ।

सुमन्तुरुवाच । माघे मासि सिते पक्षे सप्तम्यां कुरुनन्दन । निराहारो रविं भक्त्या पूजयेद्विधिना नृप ॥ १ ॥ पूर्वोक्तेन जपेज्जाप्यं देवस्य पुरतः स्थितः । शुद्धैकाग्रमना राजञ्जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ २ ॥

सूर्यसहस्रनाम : सुमन्तु बोले : हे कुरुनन्दन ! माघ मास के शुक्लपक्ष में सप्तमी के दिन निराहार रहकर भक्तिपूर्वक सविधि सूर्य की पूजा करनी चाहिये । हे राजन् ! पूर्वोक्त विधि से देव के आगे बैठ कर जितक्रोध, जितेन्द्रिय तथा एकाग्रमन से शुद्ध होकर जप करना चाहिये ।

शतानीक उवाच । केन मन्त्रेण जप्तेन दर्शनं भगवान् व्रजेत् । स्तोत्रेण वापि सविता तन्मे कथय सुव्रत ॥ ३ ॥

शतानीक बोले : हे सुव्रत ! किस मन्त्र के जप से अथवा स्तोत्र के पाठ से सूर्यभगवान् दर्शन देते हैं ? आप उसे कहें ।

सुमन्तुरुवाच । स्तुतो नामसहस्रेण यदा भक्तिमता मया । तदा मे दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ५ ॥

सुमन्तु बोले : मैंने भक्ति से जब सहस्रनामों द्वारा सूर्यभगवान् की स्तुति की थी तब उन दिवाकर देव ने साक्षात् दर्शन दिया था ।

शतानीक उवाच । नाम्नां सहस्रं सवितुः श्रोतुमिच्छामि ते द्विज । येन ते दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ५ ॥

शतानीक बोले : हे द्विज ! मैं तुमसे उसी सहस्रनाम को सुनना चाहता हूं जिसके द्वारा साक्षात् दिवाकर देव ने तुम्हें दर्शन दिया था ।

सुमन्तुरुवाच । सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् । न चेदस्ति भयं किञ्चिद्यजनेन च शाम्यति ॥ ६ ॥ ज्वराद्विमुच्यते राजन्स्तोत्रेऽस्मिन्पठिते नरः । अन्ये च रोगाः शाम्यन्ति पठतः शृण्वतस्तथा ॥ ७ ॥

सम्पद्यन्ते यथाकामास्सर्वभोगा यथेप्सिताः। य एतदादितः श्रुत्वा संग्रामं प्रविशेन्नरः ॥ ८ ॥ स जित्वा समरे शत्रूनभ्येति गृहमक्षतः। वन्ध्यानां पुत्रजननं भीतानां भयनाशनम् ॥ ९ ॥ भूतिकारि दरिद्राणां कुष्ठिनां परमौषधम्। बालानां चैव सर्वेषां ग्रहरक्षो निवारणम् ॥ १० ॥ पठेदेतद्धि यो राजन् स श्रेयः परमाप्नुयात्। स सिद्धसर्वसङ्कल्पः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ११ ॥ धर्मार्थिभिर्द्धर्मलब्ध्यै सुखाय च सुखार्थिभिः। राज्याय राज्यकामैश्च पठितव्यमिदं नरैः ॥ १२ ॥ विद्यावहं तु विप्राणां क्षत्रियाणां जयावहम्। पश्वावहं तु वैश्यानां शूद्राणां धर्मवर्द्धनम् ॥ १३ ॥ पठतां शृण्वतामेतद्भवतीति न संशयः। तच्छृणुष्व नृपश्रेष्ठ प्रयतात्मा ब्रवीमि ते। नाम्नां सहस्रं विख्यातं देवदेवस्य भास्वतः ॥ १४ ॥

सुमन्तु बोले : यह सहस्रनाम समस्त मङ्गलों का मङ्गल करनेवाला तथा सब पापों का नाश करनेवाला है। कोई ऐसा भय नहीं है जो इससे शान्त नहीं हो जाता। हे राजन् ! इस स्तोत्र को पढ़ने से मनुष्य ज्वरमुक्त हो जाता है। इसके पाठ और श्रवण से अन्य रोग शान्त हो जाते हैं। इच्छानुसार सभी भोग तथा सभी कामनायें पूर्ण ही जाती हैं। जो इसे प्रारम्भ से सुनकर युद्ध में जाता है वह शत्रुओं को जीतकर अक्षत घर लौट आता है। यह स्तोत्र बन्ध्याओं को पुत्र देनेवाला, भयभीतों के भय का नाश करनेवाला, दरिद्रों को धन देनेवाला, कोढ़ियों की परम औषधि, सभी बालकों के ग्रहों और राक्षसों का निवारण करनेवाला है। हे राजन् ! जो इसे पढ़ता है वह परम श्रेय को और सिद्ध सर्वसङ्कल्प होकर अत्यन्त सुख को प्राप्त करता है। धर्मार्थी को धर्म प्राप्ति के लिये, सुखार्थी को सुख प्राप्ति के लिये तथा राज्यकामी को राज्य प्राप्ति के लिये इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। यह स्तोत्र ब्राह्मणों को विद्या देनेवाला, क्षत्रियों को जय देनेवाला, वैश्यों को पशु देनेवाला और शूद्रों के धर्म की वृद्धि करनेवाला है। यह सब इसके पढ़नेवाले और सुननेवाले को प्राप्त होता है। हे नृपश्रेष्ठ ! मैं तुम्हें इस स्तोत्र को बता रहा हूं ध्यान से सुनो। यह भगवान् भास्कर देव का सहस्रनाम स्तोत्र सम्पूर्ण संसार में विख्यात है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसूर्यसहस्रनाम्नां भगवान् पराशर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसूर्योदेवता। सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ विश्वविद्विश्वजित्कर्ताविश्वात्माविश्वतोमुखः। विश्वेश्वरोविश्वयोनिर्नियतात्माजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ कालाश्रयः कालकर्ताकालहाकालनाशनः। महायोगीमहाबुद्धिर्महात्मासुमहाबलः ॥ २ ॥ प्रभुर्विभुर्भूत-

नाथोभूतात्माभुवनेश्वरः। भूतभव्योभावितात्माभूतान्तःकरणश्शिवः ॥ ३ ॥ शरण्यः कमलानन्दोनन्दनोनन्दवर्द्धनः। वरेण्योवरदोयोगीसुसंयुक्तःप्रकाशकः ॥ ४ ॥ प्राक्प्राणःपरमःप्राणः प्रीतात्माप्रियतःप्रियः। नयःसहस्रपात्साधुर्दिव्यकुण्डलमण्डितः ॥५॥ अव्यङ्गधारीधीरात्माप्रचेतावायुवाहनः। समाहितमतिर्द्धाताविधाताकृतमङ्गलः ॥ ६ ॥ कपर्दीकल्पकृद्रुद्रःसुमनाधर्मवत्सलः। समायुक्ताविमुक्तात्माकृतात्माकृतिनांवरः ॥७॥ अविचिन्त्यवपुःश्रेष्ठोमहायोगीमहेश्वरः। कान्तः कामादिरादित्योनियतात्मानिराकुलः ॥ ८ ॥ कामःकारुणिकःकर्ताकमलाकरबोधनः। सप्तसप्तिरचिन्त्यात्मामहाकारुणिकोत्तमः ॥ ९ ॥ सञ्जीवनोजीवनाथोजगज्जीवोजगत्पतिः। अजयोविश्वनिलयसंविभागोवृषध्वजः ॥ १० ॥ वृषाकपिः कल्पकर्ताकल्पान्तकरणोरविः। एकचक्ररथोमौनीसुरथोरथिनां वरः ॥ ११ ॥ अक्रोधनोरश्मिमालीतेजोराशिर्विभावसुः। दिव्यकृद्दिनकृद्देवोदेवदेवोदिवस्पतिः ॥ १२ ॥ दीननाथोहविर्होतादिव्यबाहुर्द्दिवाकरः। यज्ञोयज्ञपतिःपूषास्वर्णरेताःपरावहः ॥ १३ ॥ परापरज्ञस्तरणिरंशुमालीमनोहरः। प्राज्ञः प्रजापतिसूर्यःसविताविष्णुरंशुमान् ॥ १४ ॥ सदागतिर्गन्धबाहुर्विहितोविधिराशुगः। पतङ्गः पतगः स्थाणुर्विहङ्गोविहगोवरः ॥ १५ ॥ हर्यश्वोहरिताश्वश्चहरिदश्वोजगत्प्रियः। त्र्यम्बकसर्वदमनोभावितात्माभिषग्वरः ॥ १६ ॥ आलोककृल्लोकनाथोलोकालोकनमस्कृतः। कालःकल्पान्तकोवह्निस्तपनस्संप्रतापनः ॥ १७ ॥ विरोचनोविरूपाक्षसहस्राक्षः पुरन्दरः। सहस्ररश्मिर्मिहिरोविविधाम्बरभूषणः ॥ १८ ॥ खगः प्रतर्द्दनोधन्योहयगोवाग्विशारदः। श्रीमांश्चशिशिरोवाग्मीश्रीपतिः श्रीनिकेतनः ॥ १९ ॥ श्रीकण्ठःश्रीधरःश्रीमान्श्रीनिवासोवसुप्रदः। कामचारोमहामायोमहेशोविदिताशयः ॥ २० ॥ तीर्थक्रियावान् सुनयोविभवोभक्तवत्सलः। कीर्तिः कीर्तिकरोनित्यः कुण्डलीकवचीरथी ॥ २१ ॥ हिरण्यरेताः सप्ताश्वः प्रयतात्मापरन्तपः। बुद्धिमानमरश्रेष्ठोरोचिष्णुः पाकशासनः ॥ २२ ॥ समुद्रोधनदोधातामान्धाताकश्मलापहः। तमोघ्नोध्वान्तहावह्निर्होतान्तःकरणोगुहः ॥ २३ ॥ पशुमान्प्रयतानन्दोभूतेशः श्रीमतांवरः। नित्योदितोनित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः ॥ २४ ॥ अजितोविजयोजेताजङ्गमस्थावरात्मकः। जीवानन्दोनित्यगामीविजेताविजयप्रदः ॥ २५ ॥ पर्जन्योग्निस्स्थितिः स्थेयःस्थविरोगुर्निरञ्जनः। प्रद्योतनोरथारूढःसर्वलोकप्रकाशकः ॥ २६ ॥ ध्रुवोमेधीमहावीर्योहंसः संसारतारकः। सृष्टिकर्ताक्रियाहेतुर्मार्त्तण्डोमरुतांपतिः ॥ २७ ॥ मरुत्वान्द

हनस्त्वष्टाभगोभाग्योऽर्यमापतिः । वरुणांशोजगन्नाथःकृतकृत्यः सुलोचनः ॥ २८ ॥ विवस्वान्भानुमान्कार्यंकारणंतेजसांनिधिः । असङ्गगामीतिग्मांशुर्द्धर्मादिर्दीप्तदीधितिः ॥ २९ ॥ सहस्रदीधितिर्ब्रध्नःसहस्रांशुर्दिवाकरः । गभस्तिमाम्दीधितिमान्स्रग्विमानतुलद्युतिः ॥ ३० ॥ भास्करःसुरकार्यज्ञः सर्वज्ञस्तीक्ष्णदीधितिः । सुरज्येष्ठः सुरपतिर्बहुज्ञोवचसांपतिः ॥ ३१ ॥ तेजोनिधिर्बृहत्तेजाबृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः । अहिमानूर्जितोधीमानामुक्तः कीर्तिवर्द्धनः ॥ ३२ ॥ महावैद्याग्रेणपतिर्गणेशोगणनायकः । तीव्रप्रतापनस्तापीतापनोविश्वतापनः ॥ ३३ ॥ कार्त्तस्वरोहृषीकेशः पद्मानन्दोभिनन्दितः । पद्मनाभोमृताहारःस्थितिमान्केतुमान्नभ ॥३४॥ अनाद्यन्तोच्युतोविश्वोविश्वामित्रोघृणीविराट् । आमुक्तः कवचीवाग्मीकंचुकीविश्वभावनः ॥३५॥ अनिमित्तगतिःश्रेष्ठःशरण्यःसर्वतोमुखः । विगाहीरेणुरसहः समायुक्तसमाहितः ॥ ३६ ॥ धर्मकेतुर्धर्मरतिः संहर्तासंयमोयमः । प्रणतार्तिहरोवादीसिद्धकार्योजनेश्वरः ॥ ३७ ॥ नभोविगाहनस्सत्यस्तामसः सुमनोहरः । हारीहरिर्हरोवायुर्ऋतुःकालानलद्युतिः ॥ ३८ ॥ सुखसेव्योमहातेजाजगतामन्तकारणम् । महेन्द्रोविष्टुतस्तोत्रंस्तुतिहेतुः प्रभाकरः ॥ ३९ ॥ सहस्रकरआयुष्मानरोषःसुखदस्सुखी । व्याधिहासुखदः सौख्यंकल्याणः कलिपनांवरः ॥ ४० ॥ आरोग्यकर्मणांसिद्धिर्वृद्धिर्ऋद्धिरहस्पतिः हिरण्यरेताआरोग्यंविद्वान्बन्धुर्बुधोमहान् ॥ ४१ ॥ प्रणवान्धृतिमान्धर्मोधर्मकर्तारुचिप्रदः । सर्वप्रियःसर्वसहःसर्वशत्रुनिवारणः ॥४२॥ प्रांशुर्विद्योतनोद्योतः सहस्रकिरणः कृतिः । केयूरभूषणोद्भासीभासितोभासनोनलः ॥ ४३ ॥ शरण्यार्तिहरोहोताखद्योतःखगसत्तमः । सर्वद्योतोभवद्योतःसर्वद्युतिकरोमलः ॥ ४४ ॥ कल्याणः कल्याणकरः कल्पः कल्पकरः कविः । कल्याणकृत्कल्पवपुःसर्वकल्याणभाजनः ॥ ४५ ॥ शान्तिप्रियः प्रसन्नात्माप्रशान्तः प्रशमप्रियः । उदारकर्मासुनयः सुवर्चावर्चसोज्ज्वलः ॥ ४६ ॥ वर्चस्वीवर्चसामीशस्त्रैलोक्येशोवशानुगः । तेजस्वीसुयशावर्णिवर्णाध्यक्षोबलिप्रियः ॥ ४७ ॥ यशस्वीवेदनिलयस्तेजस्वीप्रकृतिस्थितः । आकाशगः शीघ्रगतिराशुगःश्रुतिमान्खगः ॥ ४८ ॥ गोपतिर्ग्रहदेवेशोगोमानेकः प्रभञ्जनः । जनिताप्रजनंजीवोदीपःसर्वप्रकाशकः ॥ ४९ ॥ कर्मसाक्षीयोगनित्योनभस्वानसुरान्तकः । रक्षोघ्नोविघ्नशमनः किरीटीसुमनः प्रियः ॥ ५० ॥ मरीचिमालीसुमतिःकृतातिथ्योविशेषतः । शिष्टाचारः शुभाचारःस्वाचाराचारतत्परः ॥ ५१ ॥ मन्दारोमाठरोरेणुः क्षोभणः पक्षिणांगुरु । स्वविशिष्टोविशिष्टात्मविधेयोज्ञानशोभनः ॥ ५२ ॥ महाश्वेता-

प्रियोज्ञेयःसामगोमोददायकः । सर्ववेदप्रगीतात्मासर्ववेदयोलालयः ॥५३॥ वेदमूर्तिश्चतुर्वेदोवेदभृद्वेदपारगः । क्रियावानतिरोचिष्णुर्वरीयांश्चवरप्रदः ॥ ५४ ॥ व्रतचारीव्रतधरोलोकबन्धुरलंकृतः । अलङ्काराक्षरोदिव्यविद्यावान्विदिताशयः ॥ ५५ ॥ अकारोभूषणोभूष्योभूष्णुर्भवनपूजितः । चक्रपाणिर्वज्रधरःसुरेशोलोकवत्सलः ॥ ५६ ॥ राज्ञीपतिर्महाबाहुः प्रकृतिर्विकृतिर्गुणः । अन्धकारापहःश्रेष्ठोयुगावर्तोयुगादिकृत् ॥५७॥ अप्रमेयः सदायोगीनिरहङ्कारईश्वरः । शुभप्रदःशुभशोभाशुभकर्माशुभास्पदः ॥ ५८ ॥ सत्यवान्धृतिमानर्च्योह्यकारोवृद्धिदोनलः । बलभृद्बलदोबन्धुर्बलवान्बलिनांवरः ॥ ५९ ॥ अनङ्गोनागराडिन्द्रःपद्मयोनिर्गणेश्वरः । संवत्सरऋतुर्नेताकालचक्रप्रवर्तकः ॥ ६० ॥ पद्मेक्षरः पद्मयोनिः प्रभवोनसरद्युतिः । सुमूर्तिःसुमतिस्सोमोगोविन्दोजगदादिजः ॥ ६१ ॥ पीतवासाःकृष्णवासादिग्वासातीन्द्रियोहरिः । अतीन्द्रोऽनेकरूपात्मास्कन्दःपरपुरञ्जयः ॥ ६२ ॥ शक्तिमान्शूलधृग्भास्वान्मोक्षहेतुरयोनिजः । सर्वदर्शीजितोदर्शोदुःस्वप्नाशुभनाशनः ॥ ६३ ॥ मङ्गल्यकर्तातरणिर्वेगवान्कश्मलापहः । स्पष्टाक्षरोमहामन्त्रोविशाखोयजनप्रियः ॥ ६४ ॥ विश्वकर्मामहाशक्तिर्ज्योतिरीशोविहङ्गमः । विचक्षणोदक्षइन्द्रःप्रत्यूहःप्रियदर्शनः ॥ ६५ ॥ अश्विनौवेदनिलयो वेदविद्विदिताशयः । प्रभाकरोजितरिपुः सुजनोरुणसारथिः ॥ ६६ ॥ कुबेरसुरथःस्कन्दोमहितोभिहितोगुरुः । ग्रहराजोग्रहपतिर्ग्रहनक्षत्रमण्डनः ॥ ६७ ॥ भास्करःसततानन्दोनन्दनोनन्दिवर्द्धनः । मङ्गलोप्यथमङ्गलवान्माङ्गल्योमङ्गलापहः ॥ ६८ ॥ मङ्गलाचारचरितःशीर्णःसर्वव्रतोव्रती । चतुर्मुखःपद्ममालीपूतात्माप्रणतार्तिहा ॥ ६९ ॥ अकिञ्चनसत्यसन्धोनिर्गुणोगुणवान्गुणी । सम्पूर्णः पुण्डरीकाक्षोविधेयोयोगतत्परः ॥ ७० ॥ सहस्रांशुःक्रतुपतिःसर्वस्वंसुमतिः सुवाक् । सुहावनोमाल्यदामाधृताहारोहरिप्रियः ॥७१॥ ब्रह्मप्रचेता प्रथितः प्रतीतात्मास्थिरात्मकः । शतबिन्दुः शतमखोगरीयाननलप्रभुः ॥ ७२ ॥ धीरामहत्तरोधन्यः पुरुषः पुरुषोत्तमः । विद्याधाराधिराजोहिविद्यावान्भूतिदःस्थितः ॥ ७३ ॥ अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् विश्वात्मा बहुमङ्गलः । सुस्थितः सुरथः स्वर्णोमोक्षाधारनिकेतनः ॥ ७४ ॥ निर्द्वन्द्वोद्वन्द्वहासर्गः सर्वगः संप्रकाशकः । दयालुस्सूक्ष्मधीः शान्तिः क्षेमाक्षेमस्थितिप्रियः ॥ ७५ ॥ भूधरोभूपतिर्वक्तापवित्रात्मात्रिलोचनः । महावराहः प्रियकृद्दाताभोक्ताभयप्रदः ॥ ७६ ॥ चतुर्वेदधरोनित्योविनिद्रोविविधाशनः । चक्रवर्तीधृति-

करः सम्पूर्णोऽथमहेश्वरः ॥ ७७ ॥ विचित्ररथएकाकीसप्तसप्तिः परात्परः । सर्वोदधिस्थितिकरः स्थितिः स्थेयः स्थितिप्रियः ॥ ७८ ॥ निष्कलः पुष्करनिभोवसुमान्वासवप्रियः । वसुमान्वासवस्वामीवसुदातावसुप्रदः ॥ ७९ ॥ बलवान्ज्ञानवांस्तत्त्वमोकारस्त्रिषुसंस्थितः । सङ्कल्पयोनिर्दिनकृद्भगवान्कारणावहः ॥ ८० ॥ नीलकण्ठोधनाध्यक्षश्चतुर्वेदप्रियंवदः । वषट्कारोहुतंहोतास्वाहाकारोहुताहुतिः ॥ ८१ ॥ जनार्दनोजनानन्दो नरोनारायणोम्बुदः । स्वर्णाङ्गक्षपणोवायुः सुरासुरनमस्कृतः ॥ ८२ ॥ विग्रहोविमलोबिन्दुर्विशोकोविमलद्युतिः । द्योतितोद्योतनोविद्वान्विविक्त्वान्वरदोबली ॥ ८३ ॥ धर्मयोनिर्महामोहोविष्णुर्भ्रातासनातनः । सावित्री भावितोराजाविसृतोविघृणीविराट् ॥ ४ ॥ सप्तार्चिः सप्ततुरगः सप्तलोकनमस्कृतः । सम्पन्नोथजगन्नाथः सुमनाश्शोभनप्रियः ॥ ८५ ॥ सर्वात्मासर्वकृत्सृष्टिः सप्तिमान्सप्तमीप्रियः । सुमेधामाधवोमेध्योमेधावीमधुसूदनः ॥ ८६ ॥ अङ्गिरागतिकालज्ञोधूमकेतुसुकेतनः । सुखीसुखप्रदः सौख्यंकामीकान्तिप्रियोमुनिः ॥ ८७ ॥ सन्तापनः सन्तपनआतपीतपसांपतिः । उग्रश्रवासहस्रोस्रः प्रियङ्कारीप्रियङ्करः ॥ ८८ ॥ प्रीतोविमन्युरम्भोदोजीवनो जगतांपतिः । जगत्पिताप्रीतमनाः सर्वः शर्वोगुहाबलः ॥ ८९ ॥ सर्वगो जगदानन्दोजगन्नेतासुरारिहा । श्रेयः श्रेयस्करोज्यायानुत्तमोत्तम उत्तमः ॥ ९० ॥ उत्तमोथमहामेरुर्धारणोधरणीधरः । धाराधरोधर्मराजोधर्माधर्मप्रवर्तकः ॥ ९१ ॥ रथाध्यक्षोरथपतिस्त्वरमाणोमितानलः । उत्तरोनुत्तरस्तापीतारापतिरपांपतिः ॥ ९२ ॥ पुण्यसंकीर्तनः पुण्योहेतुर्लोकत्रयाश्रयः । स्वर्भानुर्विहगारिष्टोविशिष्टोत्कृष्टकर्मकृत् ॥ ९३ ॥ व्याधिप्रणाशनः क्षेमः शूरस्सर्वजितांवरः । एकनाथोरथाधीशः शनैश्चरपितासितः ॥९४॥ वैवस्वतगुरुर्मृत्युर्द्धर्मनित्योमहाव्रतः । प्रलम्बहारः सञ्चारीप्रद्योतोद्योतितोनलः ॥ ९५ ॥ सन्तानकृत्परोमन्त्रोमन्त्रमूर्तिर्महाबलः । श्रेष्ठात्मासुप्रियः शम्भुर्मरुतामीश्वरेश्वरः ॥ ९६ ॥ संसारगतिविच्छेतासंसारार्णवतारकः । सप्तजिह्वः सहस्रार्चीरत्नगर्भोपराजितः ॥ ९७ ॥ धर्मकेतुरमेयात्माधर्माधर्मवरप्रदः । लोकसाक्षीलोकगुरुर्लोकेशश्छन्दवाहनः ॥ ९८ ॥ धर्मरूपः सूक्ष्मवायुर्द्धनुष्पाणिर्द्धनुर्द्धरः । पिनाकधृङ्महोत्साहोनैकमायोमहाशनः ॥ ९९ ॥ वीरः शक्तिमतांश्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतांवरः । ज्ञानगम्योदुराराध्योलोहिताङ्गोरिमर्दनः ॥ १०० ॥ अनन्तोधर्मदोनित्योधर्मकृच्चत्रिविक्रमः । दैवत्रस्त्र्यक्षरोमद्योनीलाङ्गोनीललोहितः ॥ १०१ ॥

एकोनेकस्त्रयीव्यासः सवितासमितिञ्जयः । शार्ङ्गधन्वानलोभीमः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०२ ॥ परमेष्ठीपरंज्योतिर्नाकपालीदिवस्पतिः । वदान्योवासुकिर्वैद्यआत्रेयोतिपराक्रमः ॥ १०३ ॥ द्वापरः परमोदारः परमब्रह्मचर्यवान् । उद्दीप्तवेषोमुकुटीपद्महस्तोहिमांशुभृत् ॥ १०४ ॥ स्मितः प्रसन्नवदनः पद्मोदर निभाननः । सायंदिवादिव्यवपुरनिर्देश्योमहारथः ॥१०५॥ महारथोमहानीशः शेषः सत्त्वरजस्तमः । धृतातपत्रप्रतिमोविमर्षीनिर्णयः स्थितः ॥ १०६ ॥ अहिंसकः शुद्धमतिरद्वितीयोऽरिमर्द्दनः । सर्वदोधनदोमोक्षोविहारीबहुदायकः ॥ १०७ ॥ ग्रहनाथोग्रहपतिर्ग्रहेशस्तिमिरापहः । मनोहरवपुः शुभ्रः शोभनः सुप्रभाननः ॥ १०८ ॥ सुप्रभः सुप्रभाकारः सुनेत्रोनिक्षुभापतिः । राज्ञीप्रियः शब्दकरो ग्रहेशस्तिमिरापहः ॥ १०९ ॥ सैंहिकेयरिपुर्देवोवरदोवरनायकः । चतुर्भुजोमहायोगीश्वरपतिस्तथा ॥ ११० ॥ अनादिरूपोदितिजोरत्नकान्तिः प्रभामयः । जगत्प्रदीपोविस्तीर्णोमहाविस्तीर्णमण्डलः ॥ १११ ॥ एकचक्ररथः स्वर्णरथः स्वर्णशरीरधृक् । निरालम्बोगगनगोधर्मकर्मप्रभावकृत् ॥११२॥ धर्मात्माकर्मणांसाक्षीप्रत्यक्षः परमेश्वरः । मेरुसेवीसुमेधावीमेरुरक्षाकरोमहान् ॥११३॥ आधारभूतोरतिमांस्तथाचधनधान्यकृत् । पापसन्तापसंहर्तामनोवाञ्छितदायकः ॥ ११४ ॥ रोगहर्ताराज्यदायीरमणीयगुणोनृणी । कालत्रयानन्तरूपोमुनिवृन्दनमस्कृतः ॥ ११५ ॥ सन्ध्यारागकरः सिद्धः सन्ध्यावन्दनवन्दितः । साम्राज्यदाननिरतः समाराधनतोषवान् ॥११६॥ भक्तदुःखक्षयकरोभवसागरतारकः । भयापहर्ताभगवानप्रमेयपराक्रमः । मनुस्वामीमनुपतिर्मान्योमन्वन्तराधिपः ॥ ११७ ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि । नाम्नां सहस्रं सवितुः पाराशर्यो यदाह मे ॥११८॥ धन्यं यशस्यमायुष्यंदुष्टदुःस्वप्ननाशनम् । बन्धमोक्षकरं चैवभानोर्नामानुकीर्तनम् ॥ ११९ ॥

यस्त्विदंशृणुयान्नित्यंपठित्वाप्रयतोनरः । अक्षयंसुखमन्नाद्यंभवेत्तस्योपसाधितम् ॥ १२० ॥ नृपाग्नितस्करभयंव्याधिभ्योनभयंभवेत् । विजयीचभवेन्नित्यंश्रेयश्चपरमाप्नुयात् ॥ १२१ ॥ कीर्तिमान् सुभगोविद्वान्ससुखीप्रियदर्शनः । भवेद्वर्षशतायुश्चसर्वव्याधिविवर्जितः ॥ १२२ ॥ नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतः पठेद्यः प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमाधियुक्तः । द्वारेणतं परिहरन्तिसदैवरोगाभीतास्सुपर्णमिवसर्वमहोरगेन्द्राः ॥ १२३ ॥ इति श्रीभविष्यपुराणे सप्तमकल्पे भगवतः श्रीसूर्यस्य नाम्नां सहस्रं समाप्तम् ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे श्रीसूर्यतन्त्रेऽष्टमस्तरङ्गः ॥८॥

जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर नित्य इस स्तोत्र को सुनता है उसे अक्षय सुख और भोग्य सामग्री प्राप्त होती है। उसे राजा, अग्नि तथा चोर का भय, और व्याधियों का भय नहीं होता। वह नित्य विजयी होता है। नित्य परम कल्याण को प्राप्त करता है और कीर्तिमान होता है। वह सुभग, विद्वान, सुखी, प्रियदर्शन, शतायु तथा सब रोगों से रहित होता है। जो मनुष्य पवित्र, सुसमाधियुक्त, नियमों का पालन करते हुये प्रातःकाल सूर्य के इस सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है उसके द्वार से सभी रोग भयभीत पक्षियों और उरगों के समान भाग जाते हैं।

भविष्यपुराण के सप्तम कल्प में भगवान् सूर्य का सहस्रनाम स्तोत्र समाप्त।

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्ड में सूर्यतन्त्ररूपी
अष्टम तरङ्ग समाप्त ॥ ८ ॥
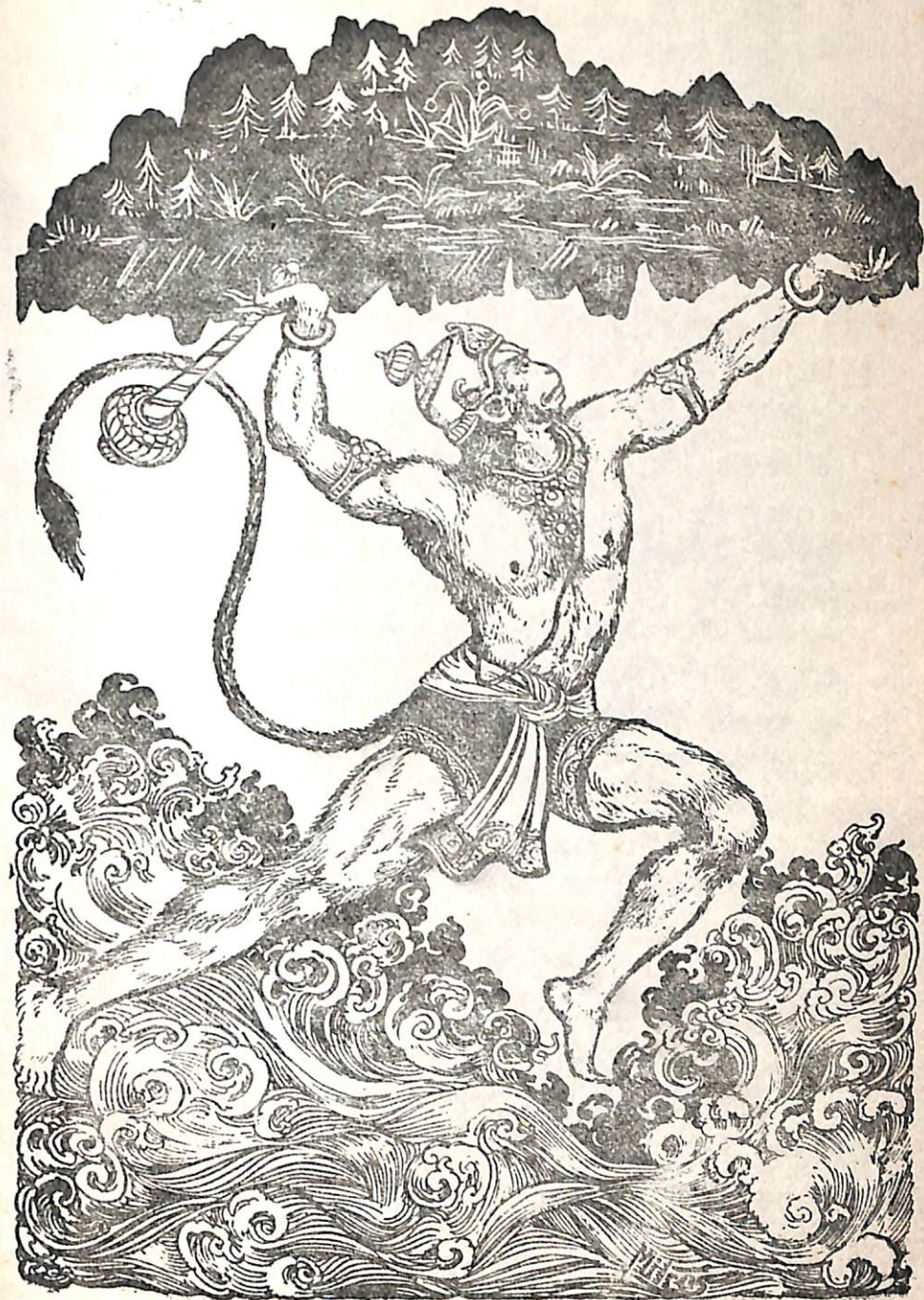
हनुमान

नवम तरंग

हनुमत्तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः

अथ हनुमद्द्वादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

आदिपटल प्रारम्भ : हनूमद्द्वादशाक्षर मन्त्रप्रयोग :

मन्त्र महोदधि में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः' इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य हनुमन्मन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषिः। जगती छन्दः। हनुमान् देवता। ह्सौं बीजम्। ह्स्फ्रें शक्तिः। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ रामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ जगती छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ हनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ह्सौं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्स्फ्रें शक्तये नमः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रौं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्स्रौं कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्सौं अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार करन्यास भी करे। इसके बाद इस प्रकार मन्त्र वर्ण-न्यास करे :

मन्त्रवर्णन्यास : ह्रौं नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ह्स्फ्रें नमः ललाटे ॥ २ ॥ ख्फ्रें नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ह्स्रौं नमः मुखे ॥ ४ ॥ ह्स्ख्फ्रें नमः कण्ठे ॥ ५ ॥ ह्सौं नमः बाह्वोः ॥ ६ ॥ हं नमः हृदि ॥ ७ ॥ नुं नमः कुक्षौ ॥ ८ ॥ मं नमः नाभौ ॥ ९ ॥ तें नमः लिङ्गे ॥ १० ॥ नं नमः जान्वोः ॥ ११ ॥ मः नमः पादयोः ॥ १२ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ध्यानम् । बालार्कायुततेजसं त्रिभुवनप्रक्षोभकं सुन्दरं सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम् । नादेनैव समस्तराक्षसगणान्सन्त्रासयन्तं प्रभुं श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम् ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करके इस प्रकार नवपीठशक्तियों की पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इस प्रकार पूजन करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसपर अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमते सर्वाश्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त पूजन करके देवता की आज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे ।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर और आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :
(हनुमत्कूट द्वादशाक्षरी पूजन यन्त्र देखिये चित्र २३) :

षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतसृषु दिक्षु मध्ये दिक्षु च । ॐ ह्रौं हृदयाय नमः[१] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा[२] । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट्[३] शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्स्रौं कवचाय[४] हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्[५] । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्सौं अस्त्राय फट्[६] । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम और दक्षिणावर्त :

ॐ रामभक्ताय नमः[७] । रामभक्तश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ महातेजसे नमः[८] । महातेजःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कपिराजाय नमः[९] । कपिराजश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ महाबलाय नमः[१०] । महाबलश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः[११] । द्रोणाद्रिहारकश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ मेरुपीठार्चकारकाय नमः[१२] । मेरुपीठार्चकारकश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः[१३] । दक्षिणाशाभास्करश्रीपा० ।७। ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः[१४] । सर्वविघ्ननिवारकश्रीपा० ।८।

इस प्रकार नामों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति द्वितीयावरण ।२।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राचीक्रम से :

ॐ सुग्रीवाय नमः[१५] । सुग्रीवश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अङ्गदाय नमः[१६] । अङ्गदश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नीलाय नमः[१७] । नीलश्रीपा० ॥३॥ ॐ जाम्बवते नमः[१८] । जाम्बवच्छ्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नलाय नमः[१९] । नलश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ सुषेणाय नमः[२०] । सुषेणश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ द्विविदाय नमः[२१] । द्विविदश्रीपा० ॥ ७ ॥ मयन्दाय नमः[२२] । मयन्दश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों वानरों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण ।३

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपाः । तद्दशांशतो होमः एवंकृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च 'एवं ध्यात्वा जपेदर्कसहस्रं जितमानसः । दशांशं जुहुयाद्व्रीहीन्पयोदध्याज्यसंयुतान् ॥ १ ॥ एवंसिद्धे मनौ मन्त्री स्वपरेष्टं प्रसाधयेत् । कदलीबीजपूराम्रफलैर्हुत्वासहस्रकम् ॥ २ ॥ द्वाविंशति ब्रह्मचारीन्विप्रान्सम्भोजयेदथ । एवंकृते महाभूतविषचौराद्युपद्रवाः ॥ ३ ॥ नश्यन्ति क्षणमात्रेण विद्वेषिग्रहदानवाः । अष्टोत्तरशतं वारि मन्त्रितं विषनाशनम् ॥ ४ ॥ रात्रौ नवशतं मन्त्रं जपेद्दशदिनावधि । यो नरस्तस्य नश्यन्ति राजशत्रूत्थभीतयः ॥ ५ ॥ अभिचारोत्थभूतोत्थज्वरे तं मन्त्रितैर्जलैः । भस्मभिःसलिलैर्वापि ताडयेज्ज्वरिणं क्रुधा ॥ ६ ॥ दिनत्रयाज्ज्वरान्मुक्तः स सुखं लभते नरः । तन्मन्त्रितौषधं जग्ध्वा नीरोगो जायते ध्रुवम् ॥ ७ ॥

इसका पुरश्चरण बारह हजार जप है। तत्तद्दशांश होमादि करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि इस प्रकार ध्यान करके एकाग्र मन से साधक को बारह हजार जप तथा दूध, दही एवं घी मिलाकर धान से दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अपना अथवा दूसरे का अभीष्ट कार्य करना चाहिये। केला, बिजौरा एवं आम—इन फलों से १ हजार आहुतियाँ देकर २२ ब्रह्मचारी एवं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। ऐसा करने से महाभूत, विष एवं चोर आदि के उपद्रव तथा विद्वेष करनेवाले ग्रह एवं दानवादि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित जल विष को नष्ट कर देता है। जो व्यक्ति रात में लगातार १० दिन तक इस मन्त्र का ९०० जप करता है वह राजभय एवं शत्रुभय से मुक्त हो जाता है। अभिचारजन्य एवं भूतजन्य ज्वर में इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल या भस्म से क्रोधपूर्वक ज्वरग्रस्त रोगी को प्रताडित करना चाहिये। ऐसा करने से वह ३ दिन के भीतर ज्वरमुक्त होकर सुखी हो जाता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित औषधि खाकर मनुष्य निश्चित रूप से नीरोगी हो जाता है।

तन्मन्त्रितं पयः पीत्वा योद्धुं गच्छेन्मनुं जपन्। तज्जप्तभस्मलिप्ताङ्गः शस्त्रसंघैर्न बाध्यते ॥ ८ ॥ शस्त्रक्षतं व्रणः शोफो लूतास्फोटोऽपि भस्मना। निमन्त्रितेन संस्पृष्टाः शुष्यन्त्यचिरतो नृणाम् ॥ ९ ॥

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पीकर और इस मन्त्र को जपते हुये अपने शरीर में भस्म लगाकर जो व्यक्ति इसी मन्त्र का जप करते हुये युद्ध में जाता है उसे युद्ध में अनेक अस्त्र-शस्त्र आदि बाधा नहीं पहुंचाते। शस्त्र का घाव, अन्य घाव, गाँठ, लूता (चर्मरोग) एवं फोड़े आदि पर ३ बार अभिमन्त्रित भस्म लगाने से वे शीघ्र सूख जाते हैं।

सूर्यास्तमयमारभ्य जपेत्सूर्योदयावधि। कीलकं भस्म चादाय सप्ताहावधिसंयुतः ॥ १० ॥ निखनेद्भस्मकीलौ तौ विद्विषोद्वार्यलक्षितः। विद्वेषं मिथ आपन्नाः पलायन्तेऽरयोऽचिरात् ॥ ११ ॥

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय पर्यन्त निरन्तर ७ दिन कील एवं भस्म लेकर जप करना चाहिये। फिर अपने शत्रुओं की जानकारी के बिना उस भस्म एवं कीलों को शत्रु के दरवाजे पर गाड़ दे। ऐसा करने से शत्रु परस्पर झगड़ा करते हुये शीघ्र भाग जाते हैं।

अभिमन्त्रितभस्माम्बु देहचन्दनसंयुतम्। खाद्यादियोजितं यस्मै दीयते स तु दासवत् ॥ १२ ॥ क्रूराश्च जन्तवोऽनेन भवन्ति विधिना वशाः। ईशानदिक्स्थमूलेन भूतांकुशतरोः शुभाम् ॥ १३ ॥ अंगुष्ठमात्रां प्रतिमां प्रविधाय हनूमतः। प्राणसंस्थापनं कृत्वा सिन्दूरैः परिपूज्य च ॥१४॥ गृहस्याभिखो द्वारे निखनेन्मन्त्रमुच्चरन्। भूताभिचारचौराग्निविषरोगनृपोद्भवाः ॥ १५ ॥ सञ्जायन्ते गृहे तस्मिन्न कदाचिदुपद्रवाः। प्रत्यहं धनपुत्राद्यैरेधते तद् गृहं चिरम् ॥ १६ ॥

शरीर पर लगाये गये चन्दन के साथ अभिमन्त्रित भस्म एवं जल को खाद्यान्न में मिलाकर जिसे खिला दिया जाय वह दास हो जाता है। इस रीति से क्रूर पशु भी वश में हो जाते हैं। करञ्ज वृक्ष की ईशान कोण की जड़ लेकर उससे हनुमानजी की प्रतिमा बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके तथा सिन्दूर का लेप करके इस मन्त्र का जप करते हुये उसे घर के दरवाजे पर गाड़ देना चाहिये। ऐसा करने से उस घर में भूत, अभिचार, चोर, अग्नि, विष, रोग तथा राज्य जन्य उपद्रव कभी भी नहीं होते तथा घर में प्रतिदिन धन, पुत्र आदि की वृद्धि होती है।

निशि श्मशानभूमिस्थो भस्मना मृत्स्नयापि वा। शत्रोः प्रतिकृतिं कृत्वा हृदि नाम समालिखेत् ॥ ७ ॥ कृतप्राणप्रतिष्ठां तां भिन्द्याच्छस्त्रेर्मनुं जपन्। मन्त्रान्ते प्रोच्चरेच्छत्रोर्नाम छिन्धि च भिन्धि च ॥ १८ ॥ मारयेति च तस्यान्ते दन्तैरोष्ठं निपीड्य च। पाण्योस्तले प्रपीड्याथ त्यक्त्वा तां सदनं व्रजेत् ॥ १९ ॥ एवं सप्तदिनं कुर्वन्हन्याच्छत्रून्शिवावितम्।

रात में श्मशान भूमि की मिट्टी या भस्म से शत्रु की प्रतिमा बनाकर हृदय पर उसका नाम लिखना चाहिये। फिर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके इस मन्त्र के बाद शत्रु का नाम और फिर 'छिन्धि, भिन्धि एवं मारय' लगातार मन्त्र का जप करते हुये शस्त्र से उस प्रतिमा के टुकड़े-टुकड़े करने चाहिये। फिर होठों को दाँत से दबाकर हथेलियों से उस प्रतिमा को मसल कर वहीं छोड़कर अपने घर आ जाना चाहिये। सात दिन तक निरन्तर ऐसा करने से भगवान् शिव के द्वारा रक्षित भी शत्रु मर जाता है।

अर्धचन्द्राकृतौ कुण्डे स्थण्डिले वा हुतं चरेत् ॥ २० ॥ मुक्तकेशः श्मशानस्थो लवणै राजिकायुतैः। उन्मत्तफलपुष्पैश्च नखरोमविषैरपि ॥ २१ ॥ काककौशिकगृध्राणां पक्षैः श्लेष्मान्तकाक्षजैः। समिद्वरैश्च त्रिशतं दक्षिणाशामुखो निशि ॥ २२ ॥ सप्तघस्रानिदं कुर्वन्मारयेद्रिपुमुद्धतम्।

श्मशान में केश खोलकर अर्धचन्द्राकृतिवाले कुण्ड या स्थण्डिल में राई मिश्रित लवण, धतूरे के फल एवं पुष्प, कौवा, उल्लू एवं गीध के नख, रोम एवं पङ्खों से तथा विष से लिसोढ़ा एवं बहेड़ा की समिधा से दक्षिण की ओर मुँह करके रात में होम करना चाहिये। एक सप्ताह तक ऐसा करने से व्यक्ति उद्धत शत्रु को मार डालता है।

शतषट्कं जपेद्रात्रौ श्मशाने दिवसत्रयम् ॥२३॥ ततो वेताल उत्थाय वदेद्भावि शुभाशुभम् । उदितं कुरुते सर्वं किंकरीभूय मन्त्रिणः ॥२४॥

श्मशान में रात्रि में निरन्तर ३ दिन तक उक्त मन्त्र का ६०० जप करना चाहिये। ऐसा करने से वेताल उठकर मान्त्रिक का दास बनकर भविष्य में होनेवाली शुभाशुभ बातों की तथा अन्य शङ्काओं को भी स्पष्ट करता है।

वश्ये युद्धे नृपद्वारे समरे चौरसङ्कटे । मन्त्रोयं साधितो दद्यादिष्टसिद्धि ध्रुवं नृणाम् ॥ २५ ॥ वस्त्रे शिलायां फलके ताम्रपात्रेथ कुड्यके । भूर्जे वा तालपत्रे वा रोचनानाभिकुंकुमैः ॥ २६ ॥ यन्त्रमेतत्समालिख्य त्यक्त्वासौ ब्रह्मचर्यवान् । कपेः प्राणान्प्रतिष्ठाप्य पूजयेत्तं यथाविधि ॥ २७ ॥ सर्वदुःखनिवृत्त्यैतद्यन्त्रमात्मनि धारयेत् । ज्वरमार्याभिचारघ्नं सर्वोपद्रवशान्तिकृत् ॥ २८ ॥ योषितामपि बालानां धृतं जनमनोहरम् । इति हनुमद्द्वादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

वशीकरण में, युद्ध में, राजद्वार पर, संग्राम में एवं चोट आदि के सङ्कट में निश्चित रूप से यह मन्त्र अभीष्ट फल देता है। वस्त्र, शिला, फलक, ताम्रपत्र, दीवार, भोजपत्र या ताड़पत्र पर गोरोचन, कस्तूरी एवं कुंकुम से यन्त्र को (देखिये चित्र २४) लिख कर साधक उपवास एवं ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये उसमें हनुमानजी की प्राणप्रतिष्ठा करके उसका विधिवत् पूजन करे। सब दुःखों से छुटकारा पाने के लिये यह यन्त्र स्वयं धारण करना चाहिये। यह यन्त्र ज्वर, शत्रु एवं अभिचार को नष्ट करता और सब उपद्रवों को शान्त करता है। यह सुन्दर यन्त्र स्त्री एवं बच्चों द्वारा धारण करने पर उनका भी कल्याण करता है। इति हनुमद्द्वादशाक्षर मन्त्रप्रयोग।

अथ हनुमदष्टादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र महोदधि में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहाः इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । हनुमान् देवता । हुं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ हनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥३॥ हुं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ आञ्जनेयाय नमः हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय नमः शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ अग्निगर्भाय नमः कवचाय हुं ॥४॥ ॐ रामदूताय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इसी प्रकार करन्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । **'ॐ दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम् । श्रवणकुण्डलशोभिमुखाम्बुजं नमत वानरराजमिहाद्भुतम् ॥१॥'**

इस प्रकार ध्यान करने के बाद सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्वयै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इस प्रकार पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसपर अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा एवं जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमन्ताय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त पूजन करके आवरण पूजा करे। (द्वादशाक्षरी हनुमत्कल्पपूजन यन्त्र देखिये चित्र २५) :

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्ष मध्ये दिक्षु च ॐ आञ्जनेयाय हृदयाय नमः[१] हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय कवचाय[४] हुम्। कवचश्रीपा० ॥४॥ ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ब्रह्मास्त्र निवारकाय अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर और मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके :

प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ रामभक्ताय नमः[७] ॥ ७॥ ॐ महातेजसे नमः[८] ॥ २ ॥ ॐ कपिराजाय नमः[९] ॥ ९ ॥ ॐ महाबलाय नमः[१०] ॥ ४ ॥ ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः[११] ॥ ५ ॥ ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः[१२] ॥ ६ ॥ ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः[१३] ॥७॥ ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः[१४] ॥८॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टकोणाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ सुग्रीवाय नमः[१५] ॥ १ ॥ ॐ अङ्गदाय नमः[१६] ॥ २ ॥ ॐ नीलाय नमः[१७] ॥ ३ ॥ ॐ जाम्बवते नमः[१८] ॥ ४ ॥ ॐ नलाय नमः[१९] ॥ ५ ॥ ॐ सुषेणाय नमः[२०] ॥६॥ ॐ द्विविदाय नमः[२१] ॥७॥ ॐ मयन्दाय नमः[२२] ॥८॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपाः। तद्दशांशतो होमः। एवंकृते मन्त्रः सिद्धो

भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। जितेन्द्रियो नक्तभोजी प्रत्यहं साष्टकं शतम् ॥ १ ॥ जपित्वा क्षुद्ररोगेभ्यो मुच्यते दिवसत्रयात् ॥ २ ॥ भूतप्रेतपिशाचादिनाशायैवं समाचरेत्। महारोगनिवृत्त्यै तु सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥३॥ एकाशनोऽयुतं नित्यं जपन्ध्यायन्कपीश्वरम्। राक्षसौघं विनिघ्नन्तमचिराज्जयति द्विषम् ॥ ४ ॥ सुग्रीवेण समं रामं सन्दधानं स्मरन्कपिम्। प्रजप्यायुतमेतस्य सन्धिं कुर्याद्विरुद्धयोः ॥ ५ ॥ लङ्कां दहन्तं तं ध्यायन्नयुतं प्रजपेन्मनुम्। शत्रूणां प्रदहेद् ग्रामानचिरादेव साधकः ॥६॥ प्रयाणसमये ध्यायन् हनूमन्तं मनुं जपन्। यो याति सोऽचिरात्स्वेष्टं साधयित्वा गृहं भजेत् ॥ ७ ॥ यः कपीशं सदा गेहे पूजयेज्जपतत्परः। आयुर्लक्ष्म्यौ प्रवर्द्धेते तस्य नश्यन्त्युपद्रवाः ॥ ८ ॥ शार्दूलतस्करादिभ्यो रक्षेन्मनुरयं स्मृतः। प्रस्वापकाले चौरेभ्यो दुष्टस्वप्नादपि ध्रुवम् ॥ ९ ॥ इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण १० हजार जप है। तत्तद्दशांश हवन आदि करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि इस मन्त्र का १० हजार जप करना तथा तिलों से दशांश होम करना चाहिये। जो साधक इन्द्रियों को वश में रखकर केवल रात्रि में भोजन कर इस मन्त्र का निरन्तर ३ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार जप करता है वह मात्र ३ दिन में ही क्षुद्र रोगों से मुक्त हो जाता है। भूत, प्रेत, पिशाच आदि को दूर करने के लिये भी यह प्रयोग करना चाहिये। किन्तु असाध्य या लम्बी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिये प्रतिदिन १ हजार जप करना चाहिये। एक समय हविष्यान्न का भोजन कर राक्षस समूह को नष्ट करते हुये कपीश्वर का ध्यान करते हुये जो साधक प्रतिदिन १० हजार जप करता है वह शीघ्र ही शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। सुग्रीव के साथ राम की मित्रता कराते हुये कपीश्वर का ध्यान करते हुये इस मन्त्र का १० हजार जप करने से शत्रुओं में सन्धि करायी जाती है। लङ्कादहन करते हुये कपीश्वर का ध्यान करते हुये जो साधक इस मन्त्र का १० हजार जप करता है वह शीघ्र ही शत्रुओं के घरों को जला देता है। यात्रा के समय हनुमानजी का ध्यान करते हुये इस मन्त्र को जपता हुआ जो व्यक्ति जाता है वह अपना अभीष्ट कार्य सम्पन्न करके शीघ्र ही घर आ जाता है। जो व्यक्ति अपने घर में सदैव हनुमानजी की पूजा करता है और जप में तत्पर रहता है उसकी आयु एवं सम्पत्ति में वृद्धि

होती है तथा उपद्रव नष्ट होते हैं। इस मन्त्र का स्मरण करने से सिंह आदि हिंसक जन्तुओं एवं चोर आदि से रक्षा होती है। सोते समय इसका स्मरण करने से चोरों से रक्षा होती है तथा दुःस्वप्न नहीं दिखलाई पड़ते। इत्यष्टादशाक्षर हनुमन्मन्त्र प्रयोग।

अथ द्वादशाक्षरमन्त्ररूपहनुमत्कल्पः।

(गारुडीतन्त्रे) देव्युवाच। शैवानि गाणपत्यानि शाक्तानि वैष्णवानि च। साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि तानि च ॥ १ ॥ श्रुतानि देवदेवेश त्वद्वक्त्रान्निःसृतानि च। किञ्चिदन्यत्तु देवानां साधनं यदि कथ्यताम् ॥ २ ॥

द्वादशाक्षर मन्त्ररूप हनुमत्कल्प : (गारुडी तन्त्र के अनुसार) देवी बोली : हे देवदेवेश शिवसाधन, गणेशसाधन, शक्तिसाधन, विष्णुसाधन, सूर्यसाधन आदि अनेक साधनों की रीति मैंने आपके समीप श्रवण किया है। अब मैं अन्यान्य देवताओं का साधन सुनने के लिये इच्छुक हूं। उसे आप मुझे बतायें।

महादेव उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानाऽवधारय। हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥३॥ एतद्गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरं परम्। जपी यस्य प्रसादेन लोकत्रयजितो भवेत् ॥ ४ ॥ तत्साधनमहं वक्ष्ये नृणां सिद्धिकरं द्रुतम् ॥ ५ ॥ वियत्सनरकंघोरंहनुमतेतदनन्तरम्। रुद्रात्मकायकवचंफडितिद्वादशाक्षरम् ॥ ६ ॥ एतन्मन्त्रं मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः। तवस्नेहेनं भक्त्या च दासोऽस्मि तव सुन्दरि ॥ ७ ॥ एतन्मन्त्रमर्जुनाय प्रदत्तं हरिणा पुरा। जपेन साधनं कृत्वा जितं सर्वं चराचरम् ॥ ८ ॥ मन्त्रो यथा : 'हं हनुमतेरुद्रात्मकाय हुंफट्' इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

महादेवजी बोले : हे देवि ! मैं इस समय हनुमत्साधन कहता हूं, उसे तुम सावधान होकर सुनो। यह साधन अत्यन्त पुण्यप्रद और महापातकों का नाश करनेवाला है। इसकी साधनविधि अत्यन्त गुप्त और शीघ्र सिद्धि देने वाली है। जिस साधन के बल से साधक तीनों लोकों को जय करने में समर्थ हो सकता है उसी साधन की विधि मैं तुमसे कह रहा हूं। यह मनुष्यों को सिद्धि देनेवाली है। पहले 'हं', उसके बाद 'हनुमते' उसके बाद 'रुद्रात्मकाय' और अन्त में 'हुं फट्' लगाने से यह बारह अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार बनता है : 'हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्'। इस मन्त्र को यत्नपूर्वक गुप्त रखना

चाहिये। हे सुन्दरि ! मैं तुम्हारा दास हूं। अतः मैंने तुम्हारे स्नेह और भक्ति से वशीभूत होकर इस मन्त्र को बताया है। इस मन्त्र को सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था। अर्जुन ने इसी मन्त्र को सिद्ध करके चर और अचर जगत् को जीता था।

अस्य विधानम्। नदीकूले विष्णुगेहे निर्जनस्थाने पर्वते वने वा जपस्थानभूमि परिग्रहणं कृत्वा नदीतीरे स्नात्वा कुशासने उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य।

इसका विधान : नदी तट पर, विष्णु मन्दिर में, निर्जन स्थान पर, अथवा वन में जपस्थान के लिये भूमि का परिग्रहण करके नदी में स्नान करके कुशासन पर बैठ कर आचमन और मूलमन्त्र से प्राणायाम करके :

देशकालौ सङ्कीर्त्यामुकगोत्रोमुक शर्माहं श्रीहनुमत्प्रीतिकामोऽमुकमन्त्रेण लक्षजपरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य भूतशुद्ध्यादिकं कुर्यात्। अस्य ऋष्यादिकादेरभावः। 'हं हनुमतेरुद्रात्मकायहुंफट् स्वाहा' इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ एवमेव विधिना करन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा ध्यायेत्।

यह सङ्कल्प करके भूतशुद्धि आदि करे। इसके ऋष्यादिन्यास का अभाव है। 'हं हनुमतेरुद्रात्मकाय हुं फट् स्वाहा।' इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः' इस विधि से करन्यास और हृदयादिषडङ्गन्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। ॐ महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति। तिष्ठतिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुच्चरन् ॥ १ ॥ लाक्षारसारुणं गात्रं कालान्तकयमोपमम्। ज्वलदग्निलसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम्। अङ्गदाद्यैर्महावीरैवेष्टितं रुद्ररूपिणम्।

इस प्रकार हनुमानजी का ध्यान करके पूजा आरम्भ करे।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डलं कृत्वा ततः सकेसरं रक्तचन्दनं घृष्ट्वा तेन लेखनीं च कृत्वा ताम्रादिपत्रेष्टदलपद्मं विलिख्य मण्डले संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिः प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य मूलेन पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा ततः।

पीठादि पर सर्वतोभद्रमण्डल बनाये। फिर केसर और रक्तचन्दन को घिस कर और लाल चन्दन की लेखनी से ताम्रादि पत्र पर अष्टदल पद्म लिख कर मण्डल में स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजन करके मूलमन्त्र में आठ अञ्जलि पुष्प देने के बाद :

ॐ कुले रघूणां समवाप्य जन्म विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः। लङ्केश्वरं यः समयाञ्चकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या ॥ १ ॥

इससे श्रीराम का ध्यान करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे : पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से (द्वादशाक्षरी हनुमन्मन्त्रयन्त्र देखिये चित्र २६) :

ॐ सुग्रीवाय नमः[१]। सुग्रीवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ लक्ष्मणे नमः[२]। लक्ष्मणश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ अङ्गदाय नमः[३]। अङ्गदश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ नलाय नमः[४]। नलश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नीलाय नमः[५]। नीलश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ जाम्बवते नमः[६]। जाम्बवच्छ्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुमुदाय नमः[७]। कुमुदश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ केसरिणे नमः[८]। केसरिश्रीपा० ॥ ८ ॥ देवदक्षिणतः। ॐ पवनाय नमः[९]। पवनश्रीपा० ॥ ९ ॥ वामे। ॐ अञ्जन्यै नमः[१०]। अञ्जनीश्रीपा० ॥ १० ॥

इस प्रकार पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यमिदं ह्यावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और आठ अञ्जलि पुष्प देकर विशेषार्घ से जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पुनर्ध्यात्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। लक्षान्ते दिवसं प्राप्य तेन महत्पूजनं कृत्वा दिवारात्रि व्याप्य जपेत्। तावत्कालं जपेत् यावत्सन्दर्शनं भवेत्। एवंकृते हनुमांस्त्रिभागशेषासु निशासु आगच्छति साधकाय वरं दत्वा पुनर्व्रजति तथा च। नदीकूले विष्णुगेहे निर्जने पर्वते वने। एकाग्रचित्तमाधाय साधयेत्साधनं महत् ॥ ९ ॥ महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति। तिष्ठतिष्ठ रणे दुष्ट घोरं रावं समुच्चरन्। लाक्षारसारुणं गात्रं कालान्तकयमोपमम्। ज्वलदग्नि-

लसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम्। अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥१०॥ एवंरूपं हनूमन्तं ध्यात्वा यः प्रजपेन्मनुम्। लक्षजपात्प्रसन्नः सत्यसत्यं ते कथितं मया ॥ ११ ॥ ध्यानैकमात्रतः पुंसां सिद्धिरेव न संशयः। प्रातः स्नात्वा नदीतीरे उपविश्यकुशासने ॥ १२ ॥ प्राणायामं षडङ्गञ्च मूलेन सकलं चरेत्। पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा ध्यात्वा रामं ससीतकम् ॥ १३ ॥ ताम्रपात्रे ततः पद्ममष्टपत्रं सकेसरम्। रक्तचन्दनघृष्टेन लिखेत्तस्य शलाकया ॥ १४ ॥ कर्णिकायां लिखेन्मन्त्रं तत्रावाह्य कपिप्रभुम्। कर्णिकायां हनूमन्तं ध्यात्वा पाद्यादिकं ततः ॥ १५ ॥ गन्धपुष्पादिकं चैव निवेद्य मूलमन्त्रतः। सुग्रीवं लक्ष्मणं चैव चाङ्गदं नलनीलकम् ॥१६॥ जाम्बवन्तं च कुमुदं केसरिणं दलेदले। पूर्वादिक्रमतो देवि पूजयेद्गन्धचन्दनैः ॥१७॥ पवनञ्चाञ्जनञ्चैव पूजयेद्दक्षवामतः। दलाग्रेषु कपिभ्योपि पुष्पाञ्जल्यष्टकं ततः ॥ १८ ॥ ध्यात्वा तु मन्त्रराजं वै लक्षं यावत्तु साधकः। लक्षान्ते दिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत् ॥ १९ ॥ एकाग्रचित्तमनसा तस्मिन्पवननन्दने। दिवारात्रौ जपं कुर्याद्यावत्सन्दर्शनं भवेत् ॥ २० ॥ सुदृढं साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः। सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः ॥ २१ ॥ यथेप्सितं वरं दत्वा साधकाय कपिप्रभुः। वरं लब्ध्वा साधकेन्द्रो विहरेदात्मनः सुखैः ॥ २२ ॥ एतद्धि साधनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम्। तव स्नेहान्मयाख्यातं भक्तासि मयि पार्वति ॥ २३ ॥ इति श्रीगारुडे तन्त्रे देवीश्वरसंवादे द्वादशाक्षरहनुमत्कल्पं समाप्तम्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके पुनः ध्यान करके एकाग्रचित्त से मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जिस दिन एक लाख जप पूरा हो जाय उस दिन महापूजा करनी चाहिये। फिर रातदिन हनुमानजी के मन्त्र का जप करने से हनुमानजी का दर्शन प्राप्त होता है। जब तक दर्शन न हो तब तक जप करते रहना चाहिये। ऐसा करने से हनुमानजी रात्रि के चौथे प्रहर में आकर साधक को दर्शन और वर देकर पुनः चले जाते हैं। कहा भी गया है कि : नदी तट पर, विष्णुभगवान् के मन्दिर में, निर्जन स्थान में अथवा पर्वत पर एकाग्रचित्त होकर इस महत् साधन को करना चाहिये। हनुमान्जी बड़े भारी पर्वत को उखाड़ कर रावण की ओर धावमान हो रहे हैं और रावण से घोर शब्द करते हुये कहते हैं कि 'रे दुष्टात्मा ! ठहर, ठहर, भाग मत।' हनुमान्जी का वर्ण लाक्षारस के समान अरुण है। उनका भयानक स्वरूप कालान्तक यम के समान है। उनके दोनों नेत्र अग्नि

की भाँति प्रकाशमान हैं और देह कोटि सूर्यों की कान्ति के समान है। रुद्र-रूपी हनुमानजी अङ्गद आदि महान वीरों से घिरे हैं। इस प्रकार हनुमानजी का ध्यान करके मन्त्र का जप करे। एक लाख जप पूर्ण हो जाने पर हनुमानजी उस साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं। हे देवि, तुमसे मैंने हनुमानजी का मन्त्र सत्य-सत्य कहा है। ध्यानमात्र करने से ही मनुष्यों को सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है। प्रातःकाल स्नान करके नदी के किनारे कुशासन पर बैठ कर मूलमन्त्र से प्राणायाम और षडङ्गन्यास करके मूलमन्त्र द्वारा आठ अञ्जलि पुष्प प्रदान करके सीता सहित श्रीराम का ध्यान करे। इसके बाद इस प्रकार हनुमानजी का यन्त्र अङ्कित करे : पहले केसर सहित घिसे रक्तचन्दन और रक्तचन्दन की ही कलम से ताम्रपात्र पर अष्टदल कमल लिखना चाहिये। फिर उसके बीच में मूलमन्त्र लिखकर और उस मूलमन्त्र को ही हनुमानजी का स्वरूप समझ कर आवाहनपूर्वक पाद्यादि देवे। फिर मूलमन्त्र से गन्ध पुष्पादि निवेदन कर सुग्रीव, लक्ष्मण, अङ्गद, नल, नील, जाम्बवान, कुमुद और केसरी इनको कमल के आठों दलों में लिखकर पूर्वादि क्रम से इन आठों का पूजन करे। हनुमानजी के दक्षिण भाग में अञ्जनी का पूजन करे। दल के अग्रभाग में 'ॐ कपिभ्यो नमः' इस मन्त्र से आठ अञ्जलि पुष्प चढ़ाये। फिर कपिराज का ध्यान करके मन्त्र का जप करे। इस मन्त्रराज का एक लाख जप करना चाहिये। जिस दिन लाख जप पूरा हो उस दिन महापूजा करनी चाहिये। एकाग्रचित्त से रात-दिन हनुमानजी के मन्त्र का जप करने पर हनुमानजी का दर्शन होता है। जब तक दर्शन न हो तब तक जप करते रहना चाहिये। ऐसा करने से हनुमानजी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जान रात के समय प्रसन्न होकर उसके समीप आते और उसको अभिलषित वर देते हैं। इस प्रकार साधक वर प्राप्त कर सुखपूर्वक विहार करता है। यह परम पुण्यप्रद साधन देवों के लिये भी दुर्लभ है। हे देवि, तुम मेरी भक्त हो इस कारण तुम्हारे स्नेह से वशीभूत होकर मैंने इसे प्रकाशित किया है। गारुडी तन्त्रोक्त पार्वती-महादेव के संवाद में द्वादशाक्षर हनुमत्कल्प समाप्त।

अथ हनुमद्दशाक्षरमन्त्रवीरसाधनप्रयोगः।

हनुमतोऽतिगुह्यं तु लिख्यते वीरसाधनम्। स्वबीजं पूर्वमुच्चार्य पवनं च ततो वदेत् ॥ १ ॥ नन्दनं च ततो देयं ङेऽवसानेऽनलप्रिया। दशार्णोऽयं मनुः प्रोक्तो नराणां सुरपादपः ॥ २ ॥ मन्त्रो यथा। 'हंपवननन्दनाय स्वाहा' इति दशाक्षरो मन्त्रः।

हनुमानजी का दशाक्षर वीरसाधन मन्त्र : यहाँ हनुमानजी का अत्यन्त गुप्त वीरसाधन लिखते हैं : पहले स्वबीज (हं) का उच्चारण करके 'पवन' कहे। उसके बाद 'नन्दन' में चतुर्थी विभक्ति लगाकर अनलप्रियो 'स्वाहा' रक्खे। यथा : 'हं पवननन्दनाय स्वाहा' यह दशाक्षर मन्त्र हुआ जो मनुष्यों के लिये कल्पवृक्ष के समान है।

अस्य विधानम्।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः। गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य चाम्भसि। मूलमन्त्रं ततो जप्त्वा सिञ्चेदादित्य-संख्यया ॥ ३ ॥' ततो वाससी परिधाय गङ्गातीरे पर्वते वा उपविश्य। ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ इत्यादिना करन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा प्राणायामं कुर्यात्। तथा च। अकारादिवर्णानुच्चार्य वामनासापुटेन वायुं पूरयेत्। पञ्चवर्गानुच्चार्य वायुं कुम्भयेत्। यकारादिवर्णानुच्चार्य दक्षिणनासापुटेन वायुं रेचयेत्। एवं वारत्रयं कृत्वा मन्त्रवर्णैरङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इसका विधान : ब्राह्ममुहूर्त में उठकर सन्ध्या-वन्दन आदि नित्य क्रिया करने के उपरान्त नदी के किनारे जाकर स्नान करके तीर्थावाहनपूर्वक आठ बार मूलमन्त्र का जप करे। फिर उस जल के द्वारा बारह बार अपने मस्तक पर अभिषेक करे। इसके बाद वस्त्र युगल धारण कर गङ्गा के तट या पर्वत पर बैठ कर 'ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ आदि प्रकार से करन्यास और हृदयादिषडङ्गन्यास करके इस प्रकार प्राणायाम करे : अकारादि १६ वर्णों का उच्चारण करके वामनासा से वायु को पूर्ण करे। फिर ककारादि से मकारपर्यन्त २५ अक्षरों का उच्चारण करके दोनों नासापुटों को बन्द करके कुम्भक करे। फिर यकारादि से क्षकारान्त वर्णों का उच्चारण करके दाहिने नासापुट से वायु का रेचन करे। इसी प्रकार दक्षिण नासापुट से वायु को खींच कर पूरक करे, फिर दोनों नासापुटों से कुम्भक और वामनासापुट से रेचन करे। इस प्रकार तीन बार प्राणायाम करके मन्त्र के वर्णों से अङ्गन्यासपूर्वक ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। ध्यायेद्रणे हनूमन्तं कपिकोटिसमन्वितम्। धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमुत्थितम्। लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले। गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम्। हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्त्रयम्। ब्रह्माण्डं स समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा षट्सहस्रं जपेत् । सप्तमदिवसं प्राप्य तदा दिवा रात्रिं व्याप्य जपेत् । ततो महाभयं दत्वा त्रिभागशेषासु निशासु नियतमागच्छति । साधको यदि मायां तरति तदेप्सितं वरं प्राप्नोति । विद्यां वापि धने वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम् । तत्क्षणादेव चाप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् । इति दशाक्षरवीरमन्त्रसाधनम् ।

इस प्रकार ध्यान करके मूलमन्त्र का ६ हजार जप करे । ६ दिन इस प्रकार जप करने के बाद सातवें दिन-रात जप करना चाहिये । इस प्रकार जप करने से रात के चौथे प्रहर में महाभय प्रदर्शनपूर्वक हनुमानजी निश्चित रूप से साधक के समीप आते हैं । यदि साधक माया को, अर्थात् भय को त्याग करने में समर्थ हो तो अभिलषित वर प्राप्त कर सकता है । विद्या, धन, राज्य या शत्रुनिग्रह सब कुछ उसी क्षण प्राप्त होता है : यह सत्य है, सुनिश्चित सत्य है । इति दशाक्षरी वीर साधन ।

अथ अष्टादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

अष्टादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो हनुमते आवेशय आवेशय स्वाहा' इत्यष्टादशाक्षरमन्त्रः ।

इसका विधान : रक्तचन्दन की हनुमानजी की प्रतिमा बनाकर प्राण-प्रतिष्ठा करे और उसे रक्तवस्त्र धारण करावे । फिर स्वयं भी लालरङ्ग के वस्त्र धारण करके लालरङ्ग के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर रात के समय हनुमानजी का पञ्चोपचारों से पूजन करे, गुड़ के चूरमे का नैवेद्य लगावे और उस नैवेद्य को मूर्ति के सामने आठ पहर रक्खा रहने दे । जब दूसरे दिन नैवेद्य लगावे तब पहले दिन के नैवेद्य को उठाकर किसी पात्र में इकट्ठा करले । अनुष्ठान समाप्त होने के बाद किसी दुर्बल ब्राह्मण को वह एकत्र नैवेद्य दे दे या पृथिवी में गाड़ दे । घृत का दीपक जलावे, रुद्राक्ष की माला से ११०० मन्त्र का नित्य जप करे और जपस्थान पर ही लालरङ्ग के वस्त्र पर सो जाय । ऐसा करने से ११ दिन के भीतर हनुमान्जी ब्रह्मचारी के स्वरूप में रात के समय स्वप्न में दर्शन देकर साधक के प्रश्नों का निश्चित रूप से उत्तर देते हैं । साधक जो कुछ पूछता है वह सब हनुमान्जी बता देते हैं । जिस कामना की पूर्ति के लिये यह जप किया जाता है वह भी हनुमान्जी पूर्ण कर देते हैं । यह एक महात्मा द्वारा उपदेशित अत्यन्त चमत्कारी मन्त्र है । इसको सदा गुप्त रखना चाहिये । इत्यष्टादशाक्षर हनुमान् मन्त्र प्रयोग ।

अथ चतुर्दशाक्षरहनुमन्मन्त्रप्रयोगः ।

चौदह अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा' इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान :

आम के पत्ते पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से एक लाख बार इस मन्त्र को लिखने से मनोरथ और राज्यादि का प्रयोजन सिद्ध होता है । इससे सभी मनोवांछित कार्य निश्चित रूप से सिद्ध होते हैं । यदि 'ॐ नमो हरिमर्कटमर्कटाय अमुकं हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा' इस प्रकार भोजपत्र या कागज पर सिन्दूर से लिख कर वीरमूर्ति हनुमान् के मस्तक पर चिपका दे और पञ्चोपचार से पूजन करके सरसों के तेल की हनुमान्जी के मस्तक पर इस मन्त्र के द्वारा एक लाख धारा देवे तो शत्रु का और शत्रुधन का नाश होता है तथा शत्रु अत्यन्त दुःखी होकर साधक के पैरों पर गिर पड़ता है । यह विधि भी एक जटिल सिद्ध पुरुष द्वारा अनुभूत विद्या है । इति चतुर्दशाक्षर हनुमान् मन्त्र प्रयोग । हनुमत्पटल समाप्त ।

अथ हनुमत्पूजापद्धतिप्रारम्भः ।

तत्रादौ मन्त्रानुष्ठानप्रारम्भात्पूर्वकृत्यम् । चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते पुण्यतीर्थक्षेत्रे विष्णुगेहे पर्वते वने वा निर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसम्प्लावनादिभिः स्मृत्युक्तं शोधनोपायैः शुद्धिं सम्पाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रमाहाराविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् । ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्ताङ्गतार्थं विष्णुपूजातर्पणश्राद्धानि होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्माशक्तिस्तदा प्रायश्चित्ताङ्गतार्थं पञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः ।

हनुमत्पूजापद्धति प्रारम्भ : मन्त्रानुष्ठान प्रारम्भ से पहले के पूर्व कृत्य : चन्द्रमा और नक्षत्रों से बलान्वित शुभ मुहूर्त में पुण्य तीर्थक्षेत्र में, विष्णु मन्दिर में, पर्वत पर, वन में या निर्जन स्थान पर अनुष्ठान के योग्य भूमि का ग्रहण करके वहाँ पर मार्जन, दहन, खनन, सप्लावन आदि स्मृति में कहे गये शुद्धि के उपायों से शुद्धि करके जपस्थान के चारों ओर एक क्रोश या दो क्रोश क्षेत्र आहार-विहारादि के लिये परिकल्पित करके जपस्थानभूमि में कूर्म का शोधन करे । इसके बाद पुरश्चरण के तीन दिन पहले क्षौर कर्म कराकर प्रायश्चित्ताङ्ग के लिये विष्णुपूजा, तर्पण, श्राद्ध, होम तथा चान्द्रायणादि व्रत करे । व्रत में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करे । यदि

सभी कर्मों में अशक्त हो तो प्रायश्चित्ताङ्गता के लिये पञ्चगव्य का प्राशन करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥'

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत्। तद्दिने उपवासं कुर्यात्। अशक्तश्चेत पयःपानं हविष्यान्नेनैकभक्तव्रतं वा कुर्यात्। ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्री जपं कुर्यात्। तथा च।

मूलमन्त्र का पाठ करके प्रणव से पञ्चगव्य का पान करे। उस दिन उपवास करे। यदि अशक्त हो तो दुग्धपान, हविष्यान्न भोजन या एक समय भोजन करे। इसके बाद पुरश्चरण से पूर्वदिन स्वदेह शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे :

देशकालौ सङ्कीर्त्य ममामुकगोत्रस्यामुकशर्मणो ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीहनुमन्मन्त्रपुरश्चरणाधिकारार्थं चायुतगायत्रीजपमहं करिष्ये।

इससे सङ्कल्प करके तीनों महाव्याहृतियों के साथ दश हजार गायत्री का जप करे। इसके बाद :

गायत्र्या आचार्यंॠषि विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवतां तर्पयामि ॥ ३ ॥

इति तर्पणं कृत्वा ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तिशुभाशुभं स्वप्नं विचारयेत्। तथा च स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः।

इससे तर्पण करके उस रात को देवोपासना से शुभाशुभ स्वप्न का इस प्रकार विचार करे : स्नानादि करके हरि के चरणकमल का स्मरण करके कुशासन आदि की शय्या पर सुखपूर्वक बैठ कर शिव की प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥

इस मन्त्र से १०८ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय। इसके बाद

रात में देखे स्वप्न को प्रातःकाल गुरु को निवेदन करे अथवा स्वयं विचार करे। इति पूर्वकृत्य।

अथ प्रातःकृत्यम्।

पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे-मुहूर्ते चोत्थाय प्रातःस्मरणं कृत्वा भूमिं प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः।

प्रातःकृत्य : पुरश्चरण के दिन श्रेष्ठ साधक प्रातःकाल से दो दण्ड पहले ब्राह्म मुहूर्त में उठकर प्रातः स्मरण करके भूमि की प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वत स्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत्। ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते देशे उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषं च कृत्वा दन्तधावनं कुर्यात्। तथा च। आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत्।

इस प्रकार भूमि की प्रार्थना करके श्वासानुसार भूमि पर पांव रखकर बाहर जाय। इसके बाद गाँव के बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त स्थान पर उत्तराभिमुख बिना जूता पहने और वस्त्र से शिर को ढँक कर मलमोचन करके मिट्टी और जल से यथासंख्या शौच करके, हाथ-पाँव धोकर, कुल्ला करके दाँतों को इस प्रकार साफ करे : आम चम्पा, अपामार्ग आदि में से किसी एक की बारह अंगुल दातुन लेकर इस प्रकार प्रार्थना करे :

'ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च। श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वंनो देहि वनस्पते ॥ १ ॥'

इति सम्प्रार्थ्य। 'ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा' इति मन्त्रेण काष्ठं छित्त्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इत्यनेन दन्तान् संशोध्य ऐं बीजेन जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निःक्षिपेत्। ततो मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात्।

इस प्रकार प्रार्थना करके 'ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा' इस मन्त्र से दातुन को छील कर 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इससे दाँतों को साफ करके 'ऐं' बीज से जिह्वा को छील कर नैर्ऋत्य दिशा में शुद्ध स्थान पर दातुन फेंक दे। इसके बाद मूलमन्त्र से मुख का प्रक्षालन करके और आचमन करके स्नान करे।

तात्कालिकोद्धृतोदकेनोष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषित-शीतोदकेन। ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मन्त्रः।

तत्काल कूएँ से निकाले जल या उष्ण जल को बासी जल को नहीं ताम्रादि के एक बड़े पात्र में लेकर उसमें तीर्थों का आवाहन करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि। एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ २ ॥'

इति तीर्थान्यावाह्य। 'ॐ ऋतं च सत्यं०' इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य वरुणमन्त्रेण स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कर्पासोत्पन्नरक्तवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

इससे तीर्थों का आवाहन करके 'ॐ ऋतं च सत्यं०' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वरुण मन्त्र से स्नान करके शुद्ध और सुखा सूती लाल वस्त्र पहन कर सूर्य को अर्घ्य देवे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते' ॥ १ ॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नानीयवस्त्रं परिपीड्य आचम्य नित्यनैमित्तिकं समाप्य शैवं पञ्चत्रिपुड्रं वैष्णवं द्वादशोर्ध्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्यात्। ततः पूजागृह-द्वारमागत्य मूलेन अस्त्राय फडिति द्वारं सम्प्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम्। ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम् ॐ वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वारोपरि ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहल्याम् ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट ॥ ६ ॥ इति द्वारपूजां कृत्वा जपस्थाने गत्वा।

इससे अर्घ्य देकर स्नान के वस्त्र को गार कर और आचमन करके नित्य-नैमित्तिक कर्म को समाप्त कर शैव पञ्चत्रिपुण्ड्र और वैष्णव द्वादशोर्ध्व-पुण्ड्र तिलक करे। इसके बाद पूजागृह के द्वार पर आकर मूलमन्त्र में 'अस्त्राय फट्' जोड़ कर द्वार का सम्प्रोक्षण करके दक्षिण शाखा में 'ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखा में 'ॐ वं वटकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥ द्वार के ऊपर ॐ स सरस्वत्यै नमः ॥ ५ ॥ देहली पर 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इससे द्वारपूजा करके जपस्थान पर जाकर :

'ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरण सिद्धये। ध्येयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्ध्यतामिति ॥ १ ॥'

इस मन्त्र से भूमि का ग्रहण करके पीपल, गूलर, पलाश में से किसी एक की लकड़ी की एक-एक बित्ते की दश कीलें बनाकर : ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके :

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धये ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत्। ततश्च 'ॐ सुदर्श-नायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रत्येककीलं सम्पूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य जपस्थानमध्ये गणेश-कूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालांश्च सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च बलिं दत्त्वा तद्वाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में दश कीलों को गाड़ दे। इसके बाद 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक की पूजा करके वहीं पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि लोकपालों का आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजा करके जपस्थान के बीच गणेश, कूर्म, अनन्त, वसुधा तथा क्षेत्रपालों की पूजा करके दिक्पालों, क्षेत्रपालों तथा गणपति को बलि देकर उसके बाहर भूतबलि देवे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः। ते सर्वे प्रीतमानसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥'

इन दोनों मन्त्र से दशों दिशाओं के बाहर उड़द और भात की बलि देकर बाँये हाथ की अँगुलियों से जल निकाल कर पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु नान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करके हाथ-पैर का प्रक्षालन करके :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं सम्प्रोक्ष्य तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यत्र जपकर्त्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीप-

स्थापनं च कुर्यात् । यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । इति कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ।

इस मन्त्र से मण्डप में प्रोक्षण करके वहाँ आसानभूमि पर कूर्मशोधन करना चाहिये । जहाँ जपकर्ता एक ही हो वहाँ कूर्म के मुख पर बैठ कर वहीं दीप की भी स्थापना करे । किन्तु जहाँ अनेक जपकर्ता हों वहाँ कूर्ममुख पर दीपक की ही स्थापना करे । इस प्रकार कूर्मशोधन करके वहाँ आसन के नीचे जल आदि से त्रिकोण बनाकर वहाँ :

ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥२॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥

इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनं १ तदुपरि मृगाजिनं २ तदुपरि कम्बलाद्यासनं ३ केवलकुशासनं वा आस्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ।

इस मन्त्र से गन्ध, अक्षत तथा पुष्पों से पूजा करके उसके ऊपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म, उसके ऊपर कम्बल आदि का आसन या केवल कुशासन बिछाकर स्थापित तीनों आसनों के ऊपर क्रम से :

ॐ अनन्ताय नमः १ ॐ विमलासनाय नमः २ ॐ पद्मासनाय नमः ३'।

इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुखउदङ्मुखोवोपविश्यासनं शोधयेत् । तत्र मन्त्रः ।

इन तीन मन्त्रों से तीन-तीन दर्भ प्रत्येक आसन पर रक्खे । इस प्रकार आसन स्थापित करके पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ कर आसन का शोधन करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलञ्छन्दः । आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥

इन मन्त्रों से आसन का प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से शिखा बाँध कर :

ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ३ ॥

इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्यात् । तथा च । दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैःशनैः प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकः ॥ १ ॥

इससे तीन आचमन करके प्रणायाम करे । कहा भी गया है कि दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने नासापुट को रोक कर वामनासापुट से सोलह बार मूलमन्त्र जपते हुये धीरे-धीरे प्राणवायु को खींच कर शिर के सहस्रार चक्र में धारण करे । यह पूरक हुआ ।

पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुम्भयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैः शनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ एव मेव प्राणायामजपं कृत्वा ।

पुनः दाहिने हाथ की अनामिका, तर्जनी, और अँगूठे से दोनों नासापुटों को बन्द करके मूलमन्त्र का ६४ बार जप करते हुये कुम्भक करे । पुनः दाहिने नासापुट से अँगूठे का निरोध हटा कर ३२ बार मूलमन्त्र का जप करते हुये धीरे-धीरे वायु को निकालते हुये रेचक करे । इस प्रकार जपपूर्वक प्राणायाम करके :

देशकालौ सङ्कीर्त्यामुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा श्रीहनुमद्देवताया अमुकमन्त्रसिद्धिप्रतिबन्धकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमन्त्रसिद्धिकामः इयत्संख्याजपतत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं (केवलजपरूपपुरश्चरणं वा) अहं करिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करके :

'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात् ।

'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से तीन चुटकी बजाकर दिग्बन्धन करके सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति तथा संहार मातृका न्यास करके प्रयोगोक्त न्यासादि करे ।

पीठपूजाप्रयोग : पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की इस प्रकार स्थापना करे :

वामभागे श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥

इससे नमस्कार करके पुष्प और अक्षत लेकर पीठ के मध्य :

पीठमध्ये ॐ मं मण्डूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥२॥ ॐ अं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय

नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥ १२ ॥ आग्नेयाम् ॐ धं धर्माय नमः ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्ये ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्ये ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥१९॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ पुनः पीठमध्ये । ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥२१॥ ॐ सं संविन्नलाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥२४॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥२५॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः ॥२९॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥३०॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ३३ ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥

इस प्रकार पीठ देवताओं की स्थापना करके प्रयोगोक्त नवपीठशक्तियों की पूजा करे।

अथ शङ्खस्थापनप्रयोगः ।

देवता के वामभाग में त्रिकोणमण्डल बनाकर जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के भीतर मायाबीज ह्रीं लिख कर 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इससे पूजन करके मूलमन्त्र से त्रिपदाधार का प्रक्षालन करके त्रिकोण के बीच उसे स्थापित करके :

ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शङ्खपात्रासनाय नमः ।

इससे आधार की पूजा करे। फिर

ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्चजन्याय नमः ।

इस मन्त्र से प्रक्षालित शङ्ख को आधार के ऊपर स्थापित करके :

ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने शङ्खपात्राय नमः ।

इससे शङ्ख की पूजा करे। इसके बाद मूलमन्त्र में नमः लगाकर उससे शङ्ख में जल भर कर :

ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने शङ्खपात्रामृताय नमः ।

इससे गन्ध, अक्षत आदि से पूजा कर उसे अभिमन्त्रित करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता । पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥

इससे अभिमन्त्रित करके प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते ।

इससे प्रार्थना करके :

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्ख प्रचोदयात् ।

इस शङ्ख गायत्री का आठ बार जपकर शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे। इति शङ्खस्थापन।

अथ घण्टा स्थानप्रयोगः ।

देव के दाहिने घण्टा की स्थापना करके उसे बजाकर इस प्रकार पूजा करे :

'ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः' आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।

इससे आवाहन करके 'ॐ जगद्ध्वने मन्त्रमात स्वाहा' इस मन्त्र से घण्टा स्थित गरुड और घण्टा की पूजा करके गरुडमुद्रा प्रदर्शित करे।

इति घण्टा संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थापयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य ।

इस प्रकार घण्टा स्थापित करके गन्ध, अक्षत तथा पुष्पादि पूजा के उपकरणार्थ अपने दाहिने पार्श्व में रखकर मूलमन्त्र में 'नमः' लगाकर इससे जल से प्रोक्षण करके, जल के लिये एक बड़ा पात्र, छत्र, दर्पण और चंवर अपने वामभाग में स्थापित करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से अभ्यञ्ज करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर आसनमन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके :

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम श्रीहनुमद्देवतानूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।

इससे सङ्कल्प कर उसमें इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करे :

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानिच्छन्दांसि। क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलम्। अस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इससे जल को भूमि पर गिराकर हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसं हंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ १ ॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसं हंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः ॥ २ ॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसं हंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ ३ ॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसं हंसः सोहं अस्य हनुमद्देवतासपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ४॥

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके :

यः प्राणतोनिमिषतोमहित्वेविधेम इति।

इसका तीन बार पाठ करे। इसके बाद :

ॐ मनोजूतिर्जुषता सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा।

यह कहकर संस्कार सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव की आवृत्ति करके :

अनेन श्रीहनुमद्देवतासपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि नमः।

यह कहे। फिर

'ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।'

इससे १०८ बार अभिमन्त्रित करके मूलदेवता का ध्यान करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करे।

अथावाहनादिपूजनम्।

अक्षत लेकर :

'ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित। यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीहनुमते नमः। इहागच्छ इह तिष्ठ एवं सर्वत्र। इत्यावाहनम् ॥ १ ॥

'ॐ अज्ञानान्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च। यद्यपूर्णं भवेत्कृत्यं तदाप्यभिमुखो भव ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः इह सम्मुखो भव इति संम्मुखीकरणम् ॥२॥

'ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये। तस्मै ते परमेशाय स्वागत स्वागतं च ते ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः सुस्वागतं समर्पयामि। इति सुस्वागतम् ॥१॥

'ॐ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर' ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः आसनं समर्पयामि। इत्यासनम् ॥ ४ ॥

इस प्रकार आसन देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे :

ॐ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि।

इस प्रकार प्रार्थना करके पाद्यादि से पूजन करे।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू श्रीहनुमते नमः पाद्यं समर्पयामि। इति पाद्यम् ॥ १ ॥

'ॐ देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने। आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः आचमनं समर्पयामि। इत्याचमनम् ॥ २ ॥

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥

इससे अर्घोदक से अर्घ्य देकर :

श्रीहनुमते नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

यह कहे। इति अर्घ्य ॥ ३ ॥

ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने। मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० श्रीहनुमते नमः मधुपर्कं समर्पयामि। इति सर्वत्र। इति मधुपर्कः ॥ ४ ॥

'ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरण मात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥' इति पुनराचमनीयम् ॥ ५ ॥

ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥ इति स्नानम् ॥ ६ ॥

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयैवापादि ते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति रक्तवस्त्रे ॥ ७ ॥

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ ८ ॥

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयाय ते। भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥ १ ॥

इससे दाहिने हाथ के अँगूठे से स्पृष्ट अनामिका द्वारा मुद्रा प्रदर्शित करते हुये भूषण देवे। इत्याभूषण ॥ ९ ॥

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर अंगूठे को कनिष्ठा मूल में लगाकर गन्धमुद्रा दिखाये ॥ १० ॥

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

सभी अँगुलियों से अक्षत देवे। इत्यक्षत ॥ ११ ॥

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

तर्जनी को अँगूठे के मूल में लगाकर पुष्पमुद्रा से पुष्प देवे। इतिपुष्पदान ॥ १२ ॥

इस प्रकार पुष्पान्त पूजन करके और प्रयोगोक्त आवरणपूजा करके धूपादि से पूजन करे।

अथ धूपादिपूजनम्। 'फडिति' धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेनाग्नि संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घण्टां वादयन्।

'फट्' से धूपपात्र का प्रोक्षण करके मूलमन्त्र में 'नमः' लगाकर उससे गन्ध और पुष्प से पूजा कर उसे सामने रक्खे। फिर 'रं' इस अग्निबीज से अग्नि की स्थापना करके उसपर मूलमन्त्र से दशाङ्ग डालकर घण्टा बजाते हुये :

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीहनुमते नमः धूपं समर्पयामि।

इति पठित्वा नाभिदेशे धूपयित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं निधाय शङ्खजलं चोत्सृज्य तर्जनीमूलांगुष्ठयोगे धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत्। इति धूपः ॥ १ ॥

यह पढ़ते हुये नाभि देश को धूपित करके धूपपात्र देवता के वामभाग में रखकर शङ्ख का जल गिराकर तर्जनीमूल और अँगूठे के योग से धूपमुद्रा उसे प्रदर्शित करे। इति धूपदान ॥ १ ॥

इसके बाद दीपपात्र को गाय के घी से भर कर मन्त्र के अक्षरों की संख्या के बराबर तन्तुओं की बत्ती उसमें डालकर 'ॐ' इस प्रणव से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से लेकर पादपर्यन्त दीप प्रदर्शित करे :

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीहनुमते नमः दीपं समर्पयामि।

यह पढ़कर देव के दाहिने भाग में दीपपात्र को रखकर शङ्ख का जल

गिरा कर मध्यमा और अँगूठे को मिलाकर उसे दीपमुद्रा प्रदर्शित करे। इति दीपदान ॥ २ ॥

ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिभोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं मोदकं वा निधाय मूलेन सम्प्रोक्ष्याधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामहस्तं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजेन षोडशधा सञ्जप्य वायुना-तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतलं तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले (ॐ वं) इति अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामागुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

इसके बाद देव के आगे या दक्षिण भाग में जल से चतुरस्र मण्डल बना कर स्वर्णादि का भोजनपात्र रख कर उसके बीच षड्रसों से युक्त नाना प्रकार के नैवेद्य या मोदक रखकर मूलमन्त्र से उसका प्रोक्षण करके अधोमुख दाहिने हाथ पर उसी प्रकार बायाँ हाथ रख कर नैवेद्य को ढँक कर 'ॐ यं' इस वायुबीज को सोलह बार जप कर वायु से उसके दोषों को सुखा दे। फिर दाहिने करतल और उसके पृष्ठ भाग में बाँये करतल को लगाकर नैवेद्य प्रदर्शित करके 'ॐ रं' इस वह्निबीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोषों को दग्ध करे। फिर बाँये करतल में 'ॐ वं' इस अमृतबीज का चिन्तन करके उसके पृष्ठभाग में दाहिना करतल लगाकर नैवेद्य को प्रदर्शित करके 'ॐ वं' इस सुधाबीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अमृत की धारा से नैवेद्य को प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से उसका प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित करके मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध-पुष्प से पूजन करके देव से उद्गत तेज का स्मरण करते हुये बाँये अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श करके दाहिने हाथ में जल लेकर :

'ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भू० साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय श्रीहनुमते नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

इससे भूतल पर देव के दक्षिण भाग में जल गिराकर बाँये हाथ से अनामिका मूल और अँगूठे का योग करके ग्रासमुद्रा उसे दिखाये। फिर 'देव ने भोजन कर लिया है' ऐसी भावना करके जल देवे। इति नैवेद्य ॥ ३ ॥

'ॐ नमस्ते देव देवेश सर्वतृप्तिकरं वरम्। परमानन्दपूर्णं त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥ इति जलम् ॥ ४ ॥

ॐ 'उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्।' इत्याचमनम् ॥ ५ ॥

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे ॥६॥

'ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिकैर्युक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।' इति ताम्बूलम् ॥ ७ ॥

'ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि।' इति फलम् ॥ ८ ॥

'ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।' इति कर्पूरम् ॥ ९ ॥

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे।

यह कहकर तीन प्रदक्षिणा करके :

'ॐ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।'

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे ॥ १० ॥

'ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥' इति पुष्पाञ्जलिः ॥ ११ ॥

इस प्रकार पुष्पाञ्जलि देने के बाद स्तुतिपाठ से स्तुति करके हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करे :

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथयन्मया क्रियते विभो। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥१॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥३॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयिजातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ॥ ४ ॥

इससे हाथ जोड़कर प्रार्थना करके :

'ॐ यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकम्पय ॥ १ ॥'

यह पढ़कर देव के दाहिने हाथ में पुजार्पण जल देवे। इसके बाद माला लेकर सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से माला का संस्कार करे। यदि अशक्त हो तो :

'ॐ ह्रीं मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥'

इससे माला की प्रार्थना करके :

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा।'

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेत्। नित्यशः समाना एव जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकाः। ततो जपान्ते।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में उसे धारण करके और अपने इष्टदेवता का ध्यान करके मध्यमा अँगुली के मध्य पर्व पर उसे स्थापित करके अँगूठे से उसे घुमाते हुये और एकाग्रचित्त से मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुए यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करे। नित्य एक समान संख्या में ही जप करे, अधिक या कम नहीं। फिर जप के अन्त में :

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम। शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥

'ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः' इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत्। नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्यं दद्यात्। अशुचिस्थाने न निधापयेत्। स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात्।

'ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः' इससे माला को शिर पर रखकर फिर गोमुखी के भीतर रख देवे। अपवित्र दशा में उसका स्पर्श न करे, किसी दूसरे को न देवे, अपवित्र स्थान पर उसे न रक्खे और अपनी योनिवत उसे गुप्त रक्खे।

ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनर्मूलमन्त्रोक्तन्यासादिकं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा जपार्पणं कुर्यात्। तथा च। शङ्खोदकेन चुलुकमादाय।

इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि पढ़कर पुनः मूलमन्त्रोक्त न्यासादि करके पञ्चोपचारों से पूजन करके और पुष्पाञ्जलि देकर इस प्रकार जपार्पण करे : शङ्खोदक को चुल्लू में लेकर :

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मदीयं च सकलं श्रीहनुमद्देवतायै समर्पयामि। ॐ तत्सत् इति ब्रह्मार्पणं भवतु।

इससे देव के दाहिने हाथ में जल समर्पण करके कृताञ्जलिपूर्वक क्षमापन स्तोत्र पढ़े :

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥३॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्यो गतिर्मम। अन्तश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥५॥ प्रातर्योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम्। तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्या च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्। देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥ ८ ॥ क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर। तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥

इस प्रकार हाथ जोड़कर प्रार्थना करके शङ्ख का जल गिरा कर देव के ऊपर घुमाकर :

साधु वा साधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शङ्खं यथास्थाने निवेशयेत्। ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्। तथा च।

यह कहकर देव के दाहिने हाथ में थोड़ा जल देकर पूर्ववत् अर्घ्य देव के शिर पर देकर शङ्ख को यथास्थान रख दे। इसके बाद गतसार देवोच्छिष्ट

नैवेद्य को शिर पर रखकर उसे देवभक्तों में बाँट कर और स्वयं खाकर इस प्रकार विसर्जन करे :

ॐ गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ १ ॥

इससे अक्षतों को फेंक कर विसर्जन करके :

ॐ तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥

इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं स्वहृदये संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्। एवमेवविधिना जपं समाप्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जन-ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। इति हनुमत्पूजापद्धति समाप्ता।

इससे हृदयकमल पर हाथ रखकर देव को हृदय में स्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आपको देवरूप में भावित करते हुये यथासुख विहार करे। इस प्रकार जप समाप्त करके सर्वदेवोपयोगि पद्धति मार्ग से उसका दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। इति हनुमान पूजापद्धति समाप्त।

अथ पञ्चमुखीहनुमत्कवचप्रारम्भः।

श्रीपार्वत्युवाच। सदाशिव वरस्वामिञ्ज्ञानद प्रियकारक। कवचादि मया सर्वं देवानां संश्रुतं प्रिय ॥ १ ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं करुणानिधे। वायुसूनोर्वरं येन नान्यदन्वेषितं भवेत्। साधकानां च सर्वस्वं हनुमत्प्रीति वर्द्धनम् ॥ २ ॥

पञ्चमुखी हनुमत्कवच : श्रीपार्वती बोलीं : हे सदाशिव, वरस्वामिन्, ज्ञानद, प्रियकारक, प्रिय ! मैंने सभी देवों के कवचादि को सुन लिया है। हे करुणानिधे ! इस समय मैं वायुनन्दन हनुमानजी के श्रेष्ठ कवच को सुनना चाहती हूं जिससे किसी अन्य का अन्वेषण न करना पड़े और जो साधकों का सर्वस्व तथा हनुमानजी की प्रीति का वर्धन करनेवाला है।

श्रीशिव उवाच। देवेशि दीर्घनयने दीक्षादीप्तकलेवरे। मां पृच्छसि वरारोहे न कस्यापि मयोदितम् ॥ ३ ॥ कथं वाच्यं हनुमतः कवचं कल्पपादपम्। स्त्रीरूपा त्वमिदं नानाकूटमण्डितविग्रहम् ॥ ४ ॥ गह्वरं गुरुगम्यं च यत्र कुत्र वदिष्यसि। तेन प्रत्युत पापानि जायन्ते गजगामिनि ॥ ५ ॥ अत एव महेशानि नो वाच्यं कवचं प्रिये ॥ ६ ॥

श्रीशिवजी बोले : हे देवेशि, दीर्घनयने, दीक्षादीप्तकलेवरे, हे वरारोहे ! मुझसे तुम जो पूछ रही हो उसे मैंने किसी को नहीं बताया है। हनुमानजी के कवच को, जो कल्पवृक्ष है, मैं कैसे बताऊँ ? तुम तो स्त्रीरूप हो और यह नानाप्रकार के कूटों से मण्डित शरीरवाला है। यह गहन और गुरुगम्य है। तुम जहाँ-तहाँ इसे कह दोगी जिससे हे गजगामिनि ! पाप होगा। हे महेशानि, हे प्रिये ! इसलिये इस कवच को मैं नहीं बताऊँगा।

श्रीपार्वत्युवाच। वदान्यस्य वचो नेदं नादेयं जगतीतले। त्वं वदान्यावधिः प्राणनाथो मे प्रियकृत्सदा ॥ ७ ॥ मह्यं च किं दत्तं ते तदिदानीं वदाम्यहम्। गणपं शक्ति सौरे च शैवं वैष्णवमुत्तमम् ॥ ८ ॥ मन्त्र यन्त्रादिजालं हि मह्यं सामान्यतस्त्वया। दत्तं विशेषतो यद्यत्तत्सर्वं कथयामि ते ॥९॥ वीरा मतारको मन्त्रः कोदण्डस्यापि मे प्रियः। नृहरेः सामराजो हि कालिकाद्याः प्रियम्वद ॥ १० ॥ दशविद्याविशेषेण षोडशी-मन्त्रनायिकाः। दक्षिणामूर्तिसंज्ञोऽन्यो मन्त्रराजो धरापते ॥ ११ ॥ सहस्रार्जुनकस्यापि मन्त्रा येऽन्ये हनूमतः। ये ते ह्यदेया देवेश तेऽपि मह्यं समर्पिताः ॥ १२ ॥ किं बहूक्तेन गिरिश प्रेमयन्त्रितचेतसा। अर्धाङ्गमपि मह्यं ते दत्तं किं ते वदाम्यहम्। स्त्रीरूपं मम जीवेश पूर्वं तु न विचारितम् ॥ १३ ॥

श्रीपार्वती बोली : यह वदान्य वचन नहीं है कि संसार में अदेय नहीं है। हे प्राणनाथ ! आप तो वदान्य की अन्तिम सीमा हैं, आप सदा मेरे लिये प्रिय करनेवाले हैं और मुझे क्या नहीं दिया है—अर्थात् सबकुछ दे दिया है जिसे मैं कह रही हूं : गाणपत्य, शाक्त, सौर, शैव और उत्तम वैष्णव मन्त्र, यन्त्रादि जाल यह सब मैंने आप से प्राप्त किया है। गम्भीर तारक मन्त्र, कोदण्ड का प्रिय मन्त्र, नृसिंह और हे प्रियंवद ! सामराज तथा कालिका मन्त्र, विशेषरूप से दश महाविद्या, षोडशी मन्त्र नायिका, दक्षिणामूर्ति नामक मन्त्रराज, धरापति सहस्रार्जुन का मन्त्र,—ये सब जो आपको अदेय था, उसे हे देवेश ! आपने मुझे दे दिया है। हे गिरीश ! अधिक कहने से क्या ! प्रेम में बँधे मन से आपने मुझे आधा अङ्ग ही दे दिया है। मैं आपको क्या कहूं। हे जीवेश ! आपने तब मेरे स्त्रीरूप को नहीं विचारा।

श्रीशिव उवाच। सत्यंसत्यं वरारोहे सर्वं दत्तं मया तव। परं तु गिरिजे तुभ्यं कथ्यते शृणु साम्प्रतम् ॥ १४ ॥ कलौ पाखण्डबहुला नानावेषधरा नराः। ज्ञानहीना लुब्धकाश्च वर्णाश्रमबहिष्कृताः ॥ १५ ॥ वैष्णवत्वेन विख्याताः शैवत्वेन वरानने। शाक्तत्वेन च देवेशि सौरत्वेने-

तरे जनाः ॥ १६ ॥ गाणपत्वेन गिरिजे शास्त्रज्ञानबहिष्कृताः । गुरुत्वेन समाख्याता विचरिष्यन्ति भूतले ॥ १७ ॥ ते शिष्यसंग्रहं कर्तुमुद्युक्ता यत्र कुत्रचित् । मन्त्राद्युच्चारणे तेषां नास्ति सामर्थ्यमम्बिके ॥ १८ ॥ तच्छिष्याणां च गिरिजे तथापि जगतीतले । पठन्ति पाठयिष्यन्ति विप्रद्वेषपराः सदा ॥१९॥ द्विजद्वेषपराणां हि नरके पतनं ध्रुवम् । प्रकृतं वच्मि गिरिजे यन्मया पूर्वमीरितम् ॥ २० ॥ नानारूपमिदं नानाकूटमण्डितविग्रहम् । तत्रोत्तरं महेशानि शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥ २१ ॥ तुभ्यं मया यदा देवि वक्तव्यं कवचं शुभम् । नानाकूटमयं पश्चात्त्वयाऽपि प्रेमतः प्रिये ॥ २२ ॥ वक्तव्यं कुत्रचित्तत्तु भुवने विचरिष्यति ।

श्रीशिवजी बोले : हे वरारोहे ! यह सत्य है, बिल्कुल सत्य है कि मैंने तुम्हें सब दे दिया है । परन्तु हे गिरिजे ! इस समय मैं तुमसे जो कुछ कहता हूं उसे सुनो । कलियुग में पाखण्ड से भरे हुये, नानाप्रकार के वेष धारण किये हुये, ज्ञानविहीन, लोभी और हे वरानने ! वर्णाश्रम से बहिष्कृत वैष्णव या शैव नाम से विख्यात हैं । हे देवेशि ! कुछ लोग शाक्त और सौर नाम से प्रसिद्ध हैं । हे गिरिजे ! कुछ लोग इस पृथिवी पर गाणपत्य और शास्त्रज्ञान से बहिष्कृत होते हुये भी गुरु के रूप में विचरण करेंगे । ऐसे लोग यत्र-तत्र शिष्य संग्रह में प्रयत्नशील रहेंगे । हे अम्बिके ! इस संसार में मन्त्रादि के उच्चारण में उनका तथा उनके शिष्यों का सामर्थ्य नहीं है । वे सब इसे पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे तथा विप्रों से द्वेष रक्खेंगे । जो द्वेष करते हैं उनका नरक में पतित होना निश्चित है । हे गिरिजे ! मैंने पूर्व में जो कहा था उसे ही प्रकृत होकर कह रहा हूं । यह कवच नानारूपवाला और नानाकूटों से मण्डित शरीरवाला है । हे महेशानि ! अतः मेरे उत्तर को यत्न से सुनो । हे देवि ! मैं जब तुम्हें इस शुभ और नानाकूट मय कवच को बतलाऊँगा तो, हे प्रिये ! तुम भी प्रेम से किसी योग्यव्यक्ति को बता देगी और इस प्रकार यह कवच त्रिभुवन में विचरण करने लगेगा ।

भुवनान्तःपतितां भद्रे यदि पुण्यवतां सताम् ॥ २३ ॥ सत्सम्प्रदायशुद्धानां दीक्षामन्त्रवतां प्रिये । ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या विशेषेण वरानने ॥ २४ ॥ उच्चारणे समर्थानां शास्त्रनिष्ठावतां सदा । हस्तागतं भवेद्भद्रे तदा ते पुण्यमुत्तमम् ॥ २५ ॥ अन्यथा शूद्रजातीनां पूर्वोक्तानां महेश्वरि । मुखशुद्धिविहीनानां दाम्भिकानां सुरेश्वरि ॥ २६ ॥ यदा हस्तगतं तत्स्यात्तदा पापं महत्तव । तस्माद्विचार्य देवेशि ह्यधिकारिणमम्बिके ॥ २७ ॥ वक्तव्य नात्र सन्देहो नान्यथा निरयं व्रजेत् । किं कर्तव्यं मया तुभ्यमुच्यते

प्रेमतः प्रिये । त्वयापीदं विशेषेण गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ २८ ॥

हे भद्रे ! यदि संसार में जन्मे पुण्यवान्, सत्सम्प्रदाय से शुद्ध, मन्त्रदीक्षा पाये हुये व्यक्तियों तथा हे वरानने, हे प्रिये ! उच्चारण करने में समर्थ तथा शास्त्रनिष्ठ सज्जन ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के हाथ में यह पहुंचेगा तो हे भद्रे तुम्हें पुण्य होगा । किन्तु हे महेश्वरि, हे सुरेश्वरि ! अन्यथा पूर्वोक्त मुखशुद्धिविहीन, दाम्भिक और शूद्र जातियों के हाथों में पहुंचने पर तुम्हें बहुत पाप लगेगा । हे देवेशि, हे अम्बिके ! इसीलिये विचार कर अधिकारी व्यक्तियों को ही इसे बताना चाहिये अन्यथा नरक जाना पड़ेगा । हे प्रिये ! मैं क्या करूँ ? स्नेह के कारण मैं तुम्हें बता तो रहा हूं किन्तु तुम भी इसे अपनी योनि के समान गुप्त रख कर इसकी रक्षा करना ।

ॐ श्रीपञ्चवदनायाञ्जनेयाय नमः ।

ॐ अस्य श्रीपञ्चमुखहनुमन्मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । पञ्चमुखविराड्ढनुमान्देवता । ह्रीं बीजम् । श्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । क्रूं कवचम् । क्रैं अस्त्राय फट् ।

इस मन्त्र को पढ़कर तीन चुटकी बजाता हुआ दशोदिशाओं में दिग्बन्धन करे । इति दिग्बन्धन ।

श्रीगरुड उवाच । अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गसुन्दरि । यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥ १ ॥ अथ ध्यानम् । पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्चनयनैर्युतम् । बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ १ ॥ पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् । दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥ २ ॥ अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥ ३ ॥ पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥ ४ ॥ उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् । पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् । येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् ॥ ६ ॥ जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् । ध्यायेत्पञ्चमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥७॥ खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं पाशमंकुशपर्वतम् । मुष्टिंकौमोदकीं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् ॥ ८ ॥ भिन्दिपाल ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुङ्गव । एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम् ॥ ९ ॥ प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम् । दिव्यमालाम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १० ॥ सर्वाश्चर्यमयं देवं हनूमद्विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥

गरुडजी ने कहा : हे सुन्दरी ! देवादिदेव भगवान् ने अपने प्रिय हनुमान् जी का जिस प्रकार ध्यान एवं पूजन आदि किया था उसका मैं निरूपण करता हूं, उसे सावधानी से सुनो। महा भयङ्कर पाँचमुख तथा पन्द्रह नेत्र एवं भक्तों के समस्त अभीष्ट कार्य को करनेवाले, दश बाहुओं से युक्त हनुमान् जी का पञ्चवक्त्रमय स्वरूप है। इसमें पूर्व दिशावाला मुख करोड़ों सूर्य क समान कान्ति एवं भयङ्कर दाँतों से युक्त तथा क्रोधयुक्त भृकुटी चढ़ी हुई दृष्टिवाला वानर नाम का मुख है। उनके दक्षिण ओर के मुख का नाम नारसिंह है, जो भयविनाशक, अत्यन्त तेजस्वी शरीरवाला, भयङ्कर तथा महाअद्भुत है। उसी प्रकार महाबलवान् समस्त नागों को शान्त करनेवाला तथा विष, भूत आदि को नष्ट करनेवाले, टेढ़े मुखवाले हनुमान्जी के पश्चिममुख का नाम गारुडमुख है। उनके उत्तर दिशा की ओर के मुख का नाम सौकर है, जो कि आकाश के समान देदीप्यमान्, नील वर्णवाला तथा पाताल, सिंह, वेताल और ज्वरादि रोगों को नष्ट करनेवाला है। उसी तरह भयङ्कर, दानवों को नष्ट करनेवाला तथा महाबलवान् तारकासुर का जिस मुख से वध किया था हे विप्रश्रेष्ठ ! उस हनुमान्जी के ऊपर की ओर के मुख का नाम 'हयानन' है। जो साधक इन रुद्रस्वरूप, दयासागर, पञ्चमुखवाले हनुमान् का ध्यान करता है एवं उनके शरणागत होता है उसके समस्त शत्रुओं को हनुमान्जी नष्ट कर देते है। खड्ग, त्रिशूल, खटवाङ्ग, पाश, अंकुश, पर्वत, मुष्टि, कौमोदकी गदा, वृक्ष तथा कमण्डलु, भिन्दिपालादि अस्त्रजाल धारण किये हुये एवं दशों ज्ञानमुद्रा ऋषियों को प्रदर्शित करते हुये, समस्त आभरणों से सुशोभित, प्रेतासन पर बैठे हुये दिव्य माला एवं गन्ध लगाये हुये, चारों ओर मुखवाले, आश्चर्यकारी ऐसे हनुमान्जी का मैं ध्यान करता हूं।

अथ ध्यानम् : पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं वक्त्रं शशांकशिखरं कपिराजवर्यम्। पीताम्बरादिमुकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥ १२ ॥ मर्कटेश महोत्साह सर्वशत्रुहरः परः। शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापद उद्धर ॥ १३ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटमन्त्रमिमं परिलिख्यतिलिख्यति वामतले। यदि नश्यतिनश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चतिमुञ्चति वामलता ॥ १४ ॥

इस प्रकार ध्यान करके कवच का पाठ करे :

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते

पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतमथनाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकलविषहराय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते पञ्चवदनायोत्तरमुखायादिवराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते पञ्चवदनायोर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशङ्कराय स्वाहा ॥ ६ ॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीपञ्चमुखहनुमन्मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। पञ्चमुखवीरहनुमान्देवता। हनुमानिति बीजम्। वायुपुत्र इति शक्तिः। अञ्जनीसुत इति कीलकम्। श्रीरामदूतहनुमत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ रामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ पञ्चमुखवीरहनुमद्देवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ हनुमानिति बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ वायुपुत्र इति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ अञ्जनीसुत इति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अञ्जनीसुताय अगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १॥ ॐ रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ पञ्चमुखहनुमते करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यास।

षडङ्गन्यास : ॐ अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ पञ्चमुखहनुमतेऽस्ताय फट् ॥ ६ ॥ ॐ पञ्चमुखहनुमते स्वाहा। इति षडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके पुनः ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। वन्दे वानरनारसिंहखगराट्क्रोडाश्ववक्त्रान्वितं दिव्यालङ्करणं त्रिपञ्चनयनं देदीप्यमानं रुचा। हस्ताब्जैरसिखेटपुस्तकसुधाकुम्भाकुशाद्रीन् हलं खट्वाङ्गं फणिभूरुहं दशभुजं सर्वारिवीरापहम् ॥१॥

विनियोग : ॐ रामदूतायाञ्जनेयाय वायुपुत्राय महाबलपराक्रमाय सीतादुःखनिवारणाय लङ्कादहनकारणाय महाबलप्रचण्डाय फाल्गुनसखाय कोलाहलसकलब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनीरालङ्घनाय पिङ्गलनयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवनाय दुष्टनिबर्हणाय दृष्टिनिरालंकृताय सञ्जीविनीसञ्जीविताङ्गदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणाय दशकण्ठ-

विध्वंसनाय रामेष्टाय फाल्गुनमहासखाय सीतासहितरामवरप्रदाय षट्-
प्रयोगागमपञ्चमुखवीरहनुमन्मन्त्रजपे विनियोग ।

दिग्बन्ध : ॐ हरिमर्कटमर्कटाय वंवंवंवंवं वौषट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ
हरिमर्कटमर्कटाय फंफंफंफंफं फट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय
खेंखेंखेंखेंखें मारणाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय लुंलुंलुंलुंलुं
आकर्षितसकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥४॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय धंधंधंधंधं
शत्रुस्तम्भनाय स्वाहा ॥५॥ हरिमर्कटमर्कटाय ठंठंठंठंठं कूर्ममूर्तये पञ्च-
मुख वीरहनुमते परयन्त्रपरतन्त्रोच्चाटनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ कंखंगंघंङं-
चछंजंझंञंटंठंडंढंणंतंथंदंधंनंपंफंबंभंमंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं स्वाहा । इति
दिग्बन्धः ॥ ७ ॥

इसे पढ़कर अपने मस्तक के चारों ओर चुटकी बजाकर दिग्बन्ध करे ।

ॐ पूर्वकपिमुखाय पञ्चमुखहनुमते ठंठंठंठंठं सकलशत्रुसंहारणाय
स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुखहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय
ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ पश्चिम-
मुखाय गरुडाननाय पञ्चमुखहनुमते मंमंमंमंमं सकलविषहराय स्वाहा
॥ १० ॥ ॐ उत्तरमुखायादिवराहाय लंलंलंलंलं नृसिंहाय नीलकण्ठमूर्तये
पञ्चमुखहनुमते स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रुंरुंरुंरुंरुं रुद्र-
मूर्तये सकलप्रयोजननिर्वाहकाय स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अञ्जनीसुताय वायु-
पुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय श्रीरामचन्द्रकृपापादुकाय महा-
वीर्यप्रमथनाय ब्रह्माण्डनाथाय कामदाय पञ्चमुखवीरहनुमते स्वाहा ।
भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिन्यन्तरिक्षग्रहपरयन्त्रपरतन्त्रोच्चा-
टनाय स्वाहा । सकलप्रयोजननिर्वाहकाय पञ्चमुखवीरहनुमते श्रीराम-
चन्द्रवरप्रदाय जंजंजंजंजं स्वाहा ॥ १३ ॥

इदं कवच पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः । एकवारं जपेत्स्तोत्रं सर्व-
शत्रु निवारणम् ॥ १ ॥ द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् । त्रिवारं
च पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं शुभम् ॥ २ ॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवा-
रणम् । पञ्चवारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशङ्करम् ॥ ३ ॥ षड्वारं च पठेन्नित्यं
सर्वदेववशङ्करम् । सप्तवार पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ ४ ॥ अष्ट-
वारं पठेन्नित्यमिष्टकामार्थसिद्धिदम् । नववारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्नु-
यात् ॥ ५ ॥ दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम् । रुद्रावृत्तीः पठेन्नित्यं
सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ६ ॥ कवचस्मरणेनैव महाबलमवाप्नुयात् ॥ ७ ॥

इति श्रीसुदर्शनसंहितायां श्रीरामचन्द्रसीताप्रोक्तं श्रीपञ्चमुखहनुमत्कवचं
सम्पूर्णम् ।

इस कवच का पाठ करने के बाद महाकवच का पाठ करे । इस कवच
का एक बार पाठ करने से समस्त शत्रुनाश और दो बार नित्य पाठ करने
से पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि होती है । तीन बार नित्य पाठ करने से यह शुभ
और सर्वप्रकार की सम्पत्तियाँ देनेवाला होता है । चार बार नित्य पाठ करने
से यह सर्वरोगनिवारक होता है । पाँच बार नित्य पाठ करने से साधक
सर्वलोकों को वश में कर लेता है । छः बार नित्य पाठ करने से सर्वदेवों को
वशीभूत करता है । सात बार नित्य पाठ करने से यह सर्वसौभाग्यदायक
होता है । आठ बार नित्य पाठ करने से यह इष्टकार्य की सिद्धि प्रदान
करता है । नव बार नित्य पाठ करने से राजभोग प्राप्त होता है । दश बार
नित्य पाठ करने से त्रैलोक्य ज्ञान की दृष्टि और ग्यारह बार नित्य पाठ
करने से निश्चित रूप से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । इस कवच के श्रवण-
मात्र से ही साधक महाबलवान् हो जाता है । इति सुदर्शन संहितान्तर्गत
श्रीरामचन्द्र सीताप्रोक्त श्रीपञ्चमुख हनुमत्कवच सम्पूर्ण ।

एकमुख हनुमत्कवच मिश्रतरङ्ग में षटकवची प्रयोग के अन्तर्गत देखिये ।

अथैकादशमुखहनुमत्कवचम् ।

लोपामुद्रोवाच । कुम्भोद्भव दयासिन्धो श्रुतं हनुमतः परम् । यन्त्र-
मन्त्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ॥ १ ॥ दयां कुरुमयि प्राणनाथ
वेदितुमुत्सहे । कवचं वायुपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः ॥ २ ॥ इत्येवं वचनं
श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् । वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्राप्रतिः
प्रभुः ॥ ३ ॥

एकादशमुख हनुमत्कवच : लोपामुद्रा बोली : हे कुम्भोद्भव, हे दया-
सिन्धो ! मैंने आपके मुख से कहा गया हनुमान्जी का परम यन्त्र-मन्त्रादि
सब सुना । हे प्राणनाथ ! वायुपुत्र के एकादशमुखकवच को जानने की मेरी
इच्छा है जिसे आप दया कर मुझे बतायें । अपनी प्रिया के इस प्रकार के
नम्रतापूर्ण वचन को सुनकर पति (अगस्त्यजी) ने लोपामुद्रा से इस प्रकार
कहा :

अगस्त्य उवाच । नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम् । ब्रह्मप्रोक्तं-
तु कवचं शृणु सुन्दरि सादरम् ॥ ४ ॥ सनन्दनाय सुमहच्चतुरानन-
भाषितम् । कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षोनिबर्हणम् ॥ ५ ॥ सर्वसम्पत्प्रदं
पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे ॥ ६ ॥

अगस्त्यजी बोले : हे सुन्दरि ! रामदूत महामति हनुमान्‌जी को नमस्कार करके ब्रह्मा द्वारा प्रोक्त कवच को सादर सुनो। प्रिये ! चतुरानन ब्रह्मा ने समस्त अभीष्टों को देनेवाले, सम्पूर्ण राक्षसों को नष्ट करनेवाले तथा समस्त सम्पत्तियों को देनेवाले इस पुण्यकारी कवच का वर्णन सनन्दनादि से मधुर स्वरों में इस प्रकार किया था।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमदेकादशमुखहनुमत्कवचस्य सनन्दन ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः। प्रसन्नात्मा हनुमान्देवता। वायुपुत्रेति बीजम्। मुख्यः प्राण इति शक्तिः सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ स्फें बीजं शक्तिधृक् पातु शिरो मे पवनात्मजः। क्रौं बीजात्मा नयनयोः पातु मां वानरेश्वरः ॥ १ ॥ क्षंबीजरूपी कर्णौ मे सीताशोकविनाशनः। ग्लौंबीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः ॥ २ ॥ वं बीजार्थश्च कण्ठं मे पातु चाक्षय्यकारकः। ऐंबीजवाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः ॥ ३ ॥ वं बीजकीर्तितः पातु बाहू मे चाञ्जनीसुतः। ह्रां बीजो राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोदरम् ॥ ४ ॥ ह्सौं बीजमयो मध्यं पातु लङ्काविदाहकः। ह्रीं बीजधरो मां पातु गुह्यं देवेन्द्रवन्दितः ॥ ५ ॥ रं बीजात्मा सदा पातु चोरुवारिधिलङ्घनः। सुग्रीवसचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥ ६ ॥ पादौ पादतले पातु द्रोणाचलधरो हरिः। आपादमस्तकं पातु रामदूतो महाबलः ॥ ७ ॥ पूर्वे वानरवक्त्रो मामाग्नेयां क्षत्रियान्तकृत्। दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गणनायकः ॥ ८ ॥ वारुण्यां दिशि मामव्यात्खगवक्त्रो हरीश्वरः। वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्यां पातु मां सदा ॥ ९ ॥ क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यां रुद्ररूपधृक्। ऊर्ध्वं हयाननः पातु त्वधः शेषमुखस्तथा ॥ १० ॥ रामास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरूपी महाभुजः।

इत्येव रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा ॥ ११ ॥ एकादशमुखस्यैतद् गोप्यं वै कीर्तितं मया। रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम् ॥१२॥ पुत्रदं धनदं चोग्रशत्रुसंघविमर्दनम्। स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम् ॥ १३ ॥ एतत्कवचमज्ञात्वा मन्त्रसिद्धिर्न जायते। चत्वारिंशत्सहस्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः ॥ १४ ॥ एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान्। द्विवारं वा त्रिवारं वा पठन्नायुष्यमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ क्रमादेकादशादेवमावर्तनजपात्सुधीः। वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः ॥ १६ ॥ यंयं चिन्तयते चार्थं तंतं प्राप्नोति पूरुषः। ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् ॥ १७ ॥

इस प्रकार श्रीराम के दूत के कवच को सदा पढ़ना चाहिये। एकादशमुख इस गोपनीय कवच को मैंने बताया। यह राक्षसों का नाश करनेवाला, अभीष्टदाता, सौम्य, सर्वसम्पत्तियों को देनेवाला, पुत्रदाता, धनदाता और उग्र शत्रुओं का विमर्दन करनेवाला, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करनेवाला, दिव्य, शुभ और चिन्तित मनोरथों को देनेवाला है। इस कवच को जाने बिना कभी मन्त्रसिद्धि नहीं होती। मनुष्य को शुद्ध चित्त से इस कवच का ४० हजार पाठ करना चाहिये। एक बार नित्य पाठ करने से यह कवच सिद्धिदायक होता है। दो बार या तीन बार पाठ करने से दीर्घायु प्राप्त होती है। क्रम से इस एकादशदेव के आवर्तन तथा जप से सुधी साधक वर्ष के अन्त में साक्षात् दर्शन प्राप्त करता है—इसमें संशय नहीं है। मनुष्य जिस-जिस अर्थों को सोचता है वह सभी उसे प्राप्त होते हैं। मैंने ब्रह्मा द्वारा कहे गये इस महान् कवच को तुमसे कहा है।

इत्येवमुक्त्वा वचनं महर्षिस्तूष्णीं बभूवेन्दुमुखीं निरीक्ष्य। संहृष्टचेताऽपि तदा तदीय पादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः ॥ १८ ॥ इति श्रीअगस्त्यसारसंहितायामेकादशमुखहनुमत्कवचं सम्पूर्णं।

इस प्रकार कहकर अपनी इन्दुमुखी पत्नी को देखकर महर्षि चुप हो गये। प्रसन्नचित्त लोपामुद्रा ने भी उस समय अत्यन्त प्रसन्नता के साथ अपने पति के चरणों में नमस्कार किया। इति श्रीअगस्त्यसंहितोक्त एकादशमुख हनुमत्कवच सम्पूर्ण।

अथ श्रीरामप्रोक्तहनुमत्कवच प्रारम्भः।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीहनुमान्देवता। मारुतात्मजति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति। शक्तिः। आत्मनः इति कीलकम्। सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ श्रीरामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ।। १ ।। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।। २ ।। श्रीहनुमद्देवतायै नमः हृदि ।। ३ ।। मारुतात्मजेति बीजाय नमः गुह्ये ।। ४ ।। अञ्जनीसूनुरिति शक्तये नमः पादयोः ।। ५ ।। आत्मनः इति कीलकाय नमः नाभौ ।। ६।। विनियोगायः नमः सर्वाङ्गे ।।७।। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ।।१।। पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः ।।२।। अक्षपघ्नाय मध्यमाभ्यां नमः ।। ३ ।। विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां

नमः ।। ४ ।। लङ्काविदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।५।। श्रीरामकिङ्कराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।। ६ ।। इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हनुमते हृदयाय नमः ।। १ ।। पवनात्मजाय शिरसे स्वाहा ।। २ ।। अक्षपघ्नाय शिखायै वषट् ।। ३ ।। विष्णुभक्ताय कवचाय हुम् ।। ४ ।। लङ्काविदाहकाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ५ ।। श्रीरामकिङ्कराय अस्त्राय फट् ।। ६ ।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम् : ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशंसियशसं देदीप्यमानं रुचा । सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥ १ ॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम् । नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावारपराक्रमम् ॥ २ ॥ वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम् । ऊर्ध्वंदक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥ स्फटिकाभं स्वर्ण कान्ति द्विभुजं च कृताञ्जलिं । कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्बुजहरिं भजेत् ॥ ४ ॥

हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः । पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागरपारगः ॥ ५ ॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः । अधस्ताद्विष्णुभक्तश्च पातुमध्ये च पावनिः ॥ ६ ॥ अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः । लङ्काविदाहक पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥७॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः । भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥ ८ ॥ नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः । कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः ॥ ९ ॥ नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ॥ १० ॥ भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः । नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः ॥ ११ ॥ वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः । लङ्काविभञ्जकः पातु पृष्ठे देशे निरन्तरम् ॥ १२ ॥ नाभिं च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः । गुह्यं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः ॥ १३ ॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः । अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीः सदा ॥ १४ ॥ सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ।

हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः ॥ १५ ॥ स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति । त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं पुनः ॥१६॥ सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात् । अर्धरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ॥ १७ ॥ क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ।

अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥ १८॥ स एव जयमाप्नोति संग्रामेष्वभयं तथा । यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ लिखित्वा पूजयेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत् । कारागृहे प्रयाणे च संग्रामे देशविप्लवे ॥ २० ॥ यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा ॥ २१ ॥ यो वाराम्निधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्य प्रतापान्वितो वैदेहीघनतापशोकहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः । अक्षाद्यर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान्समीरात्मजः ॥ २२ ॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे अगस्त्यनारदसंवादे श्रीरामचन्द्रप्रोक्तं हनुमत्कवचं सम्पूर्णम् ।

इस प्रकार जो विचक्षण विद्वान् इस हनुमत्कवच का पाठ करता है वही पुरुषश्रेष्ठ भुक्ति और मुक्ति को प्राप्त करता है । जो तीनों कालों में अथवा एक काल ही तीन महीने तक पाठ करता है वह क्षणमात्र में समस्त अरिष्टों को जीतकर लक्ष्मी को प्राप्त करता है । जो अर्धरात्रि को जल में स्थित होकर सात बार पढ़ता है उसका क्षय, अपस्मार, कुष्ठ आदि तापज्वर नष्ट हो जाता है । रविवार के दिन जो पीपल के नीचे स्थित होकर इस कवच को पढ़ता है वह संग्राम में अभय होकर जय प्राप्त करता है । जो इसे नित्य हाथ में धारण करता है उसकी सभी कामनायें पूर्ण होती हैं । जो इस कवच को लिखकर इसकी पूजा करता है उसके ग्रह-भय दूर हो जाते हैं । कारागृह में, यात्रा में, संग्राम में तथा देश के विप्लव में जो इस हनुमत्कवच को पढ़ता है उसे कभी भय नहीं होता । जिस प्रतापी ने समुद्र को एक छोटे से तालाब के समान लाँघ कर सीताजी के गहन ताप और शोक का हरण किया, जो बैकुण्ठ और भक्तप्रिय है, जिसने युद्ध में अक्षादि से अर्जित राक्षसेश्वर के महादर्प का हरण किया, वही वानरश्रेष्ठ हनुमान् सदा हमारी रक्षा करें । इति श्रीब्रह्माण्डपुराण में अगस्त्य-नारदसंवाद में श्रीरामचन्द्र प्रोक्त हनुमत्कवच सम्पूर्ण ।

अथ हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रप्रारम्भः ।

ऋषयः ऊचुः । ऋषे लोहगिरिं प्राप्तः सीताविरहकातरः । भगवान् किं व्यधाद्रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्वरम् ॥ १ ॥

हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र : ऋषि बोले : हे ऋषे ! लोहगिरि पर पहुंच कर सीताविरह से कातर भगवान् श्रीराम ने क्या किया ? वह सब आप हमलोगों को शीघ्र बतायें ।

वाल्मीकिरुवाच । मायामानुषदेहोयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम् । हनुमन्त

जगत्स्वामी बालार्कसमतेजसम् ॥ २ ॥ स सत्वरं समागम्यं साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च । कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हनुमान् राममब्रवीत् ॥ ३ ॥

वाल्मीकिजी बोले : उदयकालीन सूर्य के समान तेजस्वी, जगत्स्वामी कपीश्वर हनुमान् के समक्ष परात्पर, परब्रह्म परमेश्वर राम ने अपने माया-रूपी विग्रह का दर्शन कराया । तब शीघ्र आकर हनुमान्जी ने साष्टाङ्ग प्रणाम करके हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा :

श्रीहनुमानुवाच । धन्योस्मि कृतकृत्योऽस्मि दृष्ट्वा त्वत्पादपङ्कजम् । योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥ ४ ॥ पुरुषोत्तम देवेश कर्तव्यं तन्निवेद्यताम् ।

हनुमान्जी बोले : योगियों के लिये परम योगतत्व द्वारा भी अगम्य, संसाररूपी भय को नष्ट करनेवाले, स्वाभीष्ट आपके इन चरणकमलों को देखकर आज मैं धन्य एवं कृत्यकृत्य हो गया । हे देवेश हे पुरुषोत्तम आप आज्ञा दीजिये कि मुझे क्या करना है ।

श्रीराम उवाच । जनस्थानं कपिश्रेष्ठ कोऽप्यागत्य विदेहजाम् ॥ ५ ॥ हृतवान्विप्रसंवेषो मारीचानुगते मयि । गवेष्यः साम्प्रतं वीर जानकी-हरणे परः ॥ ६ ॥ त्वयागम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरः । सप्त-कोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवः प्रभुः ॥ ७ ॥

श्रीराम बोले : हे कपिश्रेष्ठ ! जब मैं मारीच का पीछा कर रहा था तब साधु वेषधारी कोई जनस्थान में आकर विदेहपुत्री सीता का हरण कर ले गया । हे वीर ! इस समय जानकीहरण करनेवाले उस व्यक्ति की खोज करना चाहिये । तुम ज्ञानियों में श्रेष्ठ, तुमसे कोई देश अगम्य नहीं है । तुम सात करोड़ महामन्त्रों से अभिमन्त्रित शरीरवाले समर्थ पुरुष हो ।

ऋषय ऊचुः । को मन्त्रः किं च तद्ध्यानं तन्नो ब्रूहि यथार्थतः । तथा सुधारसं पीत्वा न तृप्यामः परंतपः ॥ ८ ॥

ऋषि बोले : वह कौन-सा मन्त्र है ? वह कौन-सा ध्यान है ? उसे आप हमें यथार्थरूप से बतायें । हे परंतप । इस कथारूपी अमृत रस का पान कर भी अभी तक हमलोग तृप्त नहीं हुये है ।

वाल्मीकिरुवाच । मन्त्रं हनुमतो विद्धि भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् । महारिष्टमहापापमहादुःखनिवारणम् ॥ ९ ॥

वाल्मीकिजी बोले : भुक्ति-मुक्तिप्रदायक एवं महारिष्ट, महापाप, महादुःख निवारक हनुमान् के मन्त्र को जानो :

'ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लङ्काविध्वंसनायाञ्जनीगर्भसम्भूताय शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्दे-वाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा ।'

अन्यं हनुमतो मन्त्रं सहस्रनामसंज्ञकम् । जानन्ति ऋषयः सर्वे महा-दुरितनाशम् ॥ १० ॥ अस्य संस्मरणात्सीता लब्धा राज्यमकण्टकम् विभीषणाय च ददावात्मनं लब्धवान्मया ॥ ११ ॥

यह सहस्रनाम संज्ञक हनुमान् मन्त्र है । इसी प्रकार अन्य सहस्रनाम-वाले, समस्त पापों के विनाशक हनुमान्जी के मन्त्र को समस्त ऋषिगण जानते ही हैं । जिस मन्त्र के स्मरणमात्र से ही मैंने अपहृत सीता को प्राप्त किया तथा विभीषण को अकण्टक राज्य दिया ।

ऋषय ऊचुः । सहस्रनामसन्मन्त्रं दुःखाघौघनिवारणम् । वाल्मीके ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूयामः कथां पराम् ॥ १२ ॥

ऋषि बोले : हे वाल्मीके ! दुःखों के समूह का निवारण करनेवाला जो सहस्रनाम मन्त्र है उसे आप हमें शीघ्र सुनायें, हम उस श्रेष्ठ कथा को सुनना चाहते हैं ।

वाल्मीकिरुवाच । शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे सहस्रनामकं स्तवम् । स्तवा-नामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रदायकम् ॥ १३ ॥

वाल्मीकिजी बोले : हे ऋषियों ! उस सहस्रनाम स्तोत्र को आपलोग सुने जो दिव्य और सत्य अर्थ को देनेवाला है ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीहनुमन्महारुद्रो देवता । ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजम् । श्रीं इति शक्तिः । किलिकिलिबुबुकारेणेति कीलकम् । लङ्का-विध्वंसनेति । कवचम् । मम सर्वोपद्रवशान्त्यर्थे सर्वकर्मसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : श्रीरामचन्द्रऋषये नमः शिरसि ।। १ ।। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।। २ ।। श्रीहनुमन्महारुद्र देवतायै नमः हृदि ।। ३ ।। ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजाय नमः गुह्ये ।। ४ ।। श्रीं इति शक्तये नमः पादयोः ।। ५ ।। किलि-किलि बुबुकारेणेति कीलकाय नमः नाभौ ।। ६ ।। लङ्काविध्वंसनेति कवचाय नमः बाहुद्वये ।।७।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।।८।। इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ऐं हनुमते अगुष्ठाभ्यां नमः ।।१।। ॐ लङ्काविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः ।। २ ।। ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः ।। ३ ।। ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः ।। ४ ।। ॐ किलिकिलि

बुबकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।५ ।। ॐ ह्लींश्रींह्लौं ह्लां फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।। ६ ।। इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हनुमते हृदयाय नमः ।। १ ।। ॐ लङ्काविध्वंसनाय शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय कवचाय हुम् ।।४।। ॐ किलिकिलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ५ ।। ॐ ह्लींश्रींह्लौंह्लां फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ।। ६ ।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम् : प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम् । सुग्रीवादियुतं ध्यायेत्पीताम्बरसमावृतम् ॥ १४ ॥ गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम् । ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालङ्कारभूषितम् ॥ १५ ॥

श्रीरामचन्द्र उवाच । ॐ हनुमाञ्श्रीपदोवायुपुत्रोरुद्रोअधोऽजरः । अमृत्यर्वीरवीरश्चग्रामवासोजनाश्रयः ॥ १६ ॥ धनदो निर्गुणः कायो वीरोनिधिपतिर्मुनिः । पिङ्गाक्षोवरदो वाग्मीसीताशोकविनाशनः ॥१७॥ शिवःसर्वः परोव्यक्तोव्यक्ताव्यक्तोरसाधरः । पिङ्गरोम पिङ्गकेशः श्रुतिगम्य सनातनः ॥ १८ ॥ अनादिर्भगवान्देवोविश्वहेतुर्निरामयः । आरोग्यकर्ता-विश्वेशोविश्वनाथोहरीश्वरः ॥ १९ ॥ भर्गोरामोरामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः । विश्वंभरोविश्वमूर्तिविश्वाकारोऽथविश्वदः ॥ २० ॥ विश्वात्मा-विश्वसेव्योऽथविश्वोविश्वहरीरविः । विश्वचेष्टोविश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ॥ २१ ॥ प्लवङ्गमःकपिश्रेष्ठोज्येष्ठोविद्यावनेचरः । बालवृद्धो-युवातत्वंतत्त्वगम्यउदारजः ॥ २२ ॥ अञ्जनीसूनुरव्यग्रोग्रामख्यातोधरा-धरः । भूर्भुवःस्वर्महर्लोकोजनलोकस्तपोऽव्ययः ॥२३॥ सत्यमोङ्कारगम्य-श्चप्रणवोव्यापकोऽमलः । शिवधर्मप्रतिष्ठातारामेष्टःफाल्गुनप्रिय. ॥ २४ ॥ गोष्पदीकृतवारीशःपूर्णकामोधरापतिः । रक्षोघ्नं पुण्डरीकाक्षःशरणागत-वत्सलः ॥ २५ ॥ जानकीप्राणदाताचरक्षःप्राणापहारकः । पूर्णः सत्यः पीतवासादिवाकरसमप्रभः ॥ २६ ॥ देवोद्यानविहारीचदेवताभयभञ्जनः । भक्तोदयोभक्तलब्धोभक्तपालनतत्परः ॥ २७ ॥ द्रोणहर्ताशक्तिनेताशक्ति-राक्षसमारकः । रक्षोघ्नोरामदूतश्चशाकिनीजीवहारकः ॥ २८ ॥ बुबु-कारहतारातिगर्वपर्वतमर्दनः । हेतुस्त्वहेतुःप्रांशुश्च विश्वभर्ताजगद्गुरुः ॥ २९ ॥ जगन्नेताजगन्नाथोजगदीशोजनेश्वरः । जगद्धितोहरिःश्रीशो-गरुडस्मयभञ्जनः ॥ ३० ॥ पार्थध्वजोवायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितप्रभः । ब्रह्मपुच्छःपरब्रह्मपुच्छोरामेष्ट एव च ॥ ३१ ॥ सुग्रीवादियुतोज्ञानीवानरो-वानरेश्वरः । कल्पस्थायीचिरञ्जीवीप्रसन्नश्चसदाशिवः ॥ ३२ ॥ सन्नतः

सद्गतिर्भक्तिमुक्तिदःकीर्तिनायकः । कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैवसमुद्रःश्रीपदः शिवः ॥ ३३ ॥ भक्तोदयोभक्तगम्योभक्तभाग्यप्रदायकः । उदधिक्रमणो-देवः संसारभयनाशकः ॥ ३४ ॥ बलिबन्धनकृद्विश्वजेताविश्वप्रतिष्ठितः । लङ्कारिः कालपुरुषोलङ्केशगृहभञ्जनः ॥३५॥ भूतावासोवासुदेवोवसुस्त्रि-भुवनेश्वरः । श्रीरामरूपः कृष्णस्तुलङ्काप्रासादभञ्जकः ॥ ३६ ॥ कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदोविश्वपावनः । विश्वभोक्ताऽथमारघ्नोब्रह्म-चारीजितेन्द्रियः ॥३७॥ ऊर्ध्वगोलांगुलीमालीलांगूलाहतराक्षसः । समीर-तनुजोवीरोवीरमारोजयप्रदः ॥ ३८ ॥ जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवण-कीर्तनः । पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिः जगत्पावनपावनः ॥ ३९ ॥ देवेशोजित-मारोऽथरामभक्तिविधायकः । ध्याताध्येयोभगः साक्षीचेताचैतन्यविग्रहः ॥ ४० ॥ ज्ञानदः प्राणदः प्राणोजगत्प्राणसमीरणः । बिभीषणप्रियः शूरः पिप्पलायनसिद्धिदः ॥४१॥ सिद्धिः सिद्धाश्रयः कालः कालभक्षकभञ्जनः । लङ्केशनिधनस्थायीलङ्कादाहकईश्वरः ॥ ४२ ॥ चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्चका-लाग्निः प्रलयान्तकः । कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥ ४३ ॥ सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मारेवत्यादिनिवारकः । लक्ष्मणप्राणदाताचसीताजीवन-हेतुकः ॥ ४४ ॥ रामध्येयोहृषीकेशोविष्णुभक्तोजटीबलिः । देवारिदर्पहा-होताधाताकर्ताजगत्प्रभुः ॥ ४५ ॥ नगरग्रामपालश्चशुद्धोबुद्धोनिरन्तरः । निरञ्जनोनिर्विकल्पोगुणातीतोभयङ्करः ॥ ४६ ॥ हनुमन्तोदुराराध्यस्तपः साध्योमहेश्वरः । जानकीघनशोकोत्थतापहर्तापरात्परः ॥४७॥ वाङ्मयः सदसद्रूपकारणं प्रकृतेः परः । भाग्यदोनिर्मलोनेतापुच्छलङ्काविदाहकः ॥ ४८ ॥ पुच्छबद्धयातुधानोयातुधानरिपुप्रियः । छायापहारीभूतेशो-लोकेशः सद्गतिप्रदः ॥ ४९ ॥ प्लवङ्गमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः । सौम्योगुरुः काव्यकर्ताभक्तानांचवरप्रदः ॥ ५० ॥ भक्तानुकम्पीविश्वेशः पुरुहूतः पुरन्दरः । क्रोधहर्तातापहर्ताभक्ताऽभयवरप्रदः ॥ ५१ ॥ अग्नि-र्विभावसुर्भानुर्यमोनिर्ऋतिरेवच । वरुणोवायुगतिमान् वायुः कुबेरईश्वरः ॥५२॥ रविश्चन्द्रः कुजः सौम्योगुरुः काव्यः शनैश्चरः । राहुःकेतुर्मरुद्दाता धर्ताहर्तासमीरजः ॥ ५३ ॥ मशकीकृतदेवारिर्दैत्यारिर्मधुसूदनः । कामः कपिः कामपालः कपिलोविश्वजीवनः ॥ ५४ ॥ भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः । स्वाहास्वधाहविः काव्यहव्यवाहप्रकाशकः ॥ ५५ ॥ स्वप्रकाशो महावीरोलघुरमितविक्रमः । भञ्जनोदानगतिमान्सद्गतिः पुरुषोत्तमः ॥ ५६ ॥ जगदात्माजगद्योनिर्जगदन्तोह्यनन्तकः । विपाप्मा-

निष्कलङ्कोऽथमहात्माहृदयंकृतिः ॥ ५७ ॥ खंवायुः पृथिवीरामोवह्नि-र्दिक्पालएवच । क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ताचपल्वलीकृतसागरः ॥ ५८ ॥ हिरण्मयः पुराणश्चखेचरोभूचरोमनुः । हिरण्यगर्भः सूत्रात्माराजराजोनिशांपतिः ॥ ५९ ॥ वेदान्तवेद्यउद्गीथोवेदवेदाङ्गपारगः । प्रतिग्रामस्थितिः सद्यः स्फूर्तिदातागुणाकरः ॥ ६० ॥ नक्षत्रमालीभूतात्मासुरभिः कल्पपादपः । चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारोह्यनुत्तमः ॥ ६१ ॥ पुण्यश्लोकः पुराराति-र्ज्योतिष्मान्शर्वरीपतिः । किलिकिलिरावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ॥६२॥ ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् । अपस्मारहरः स्मर्ताश्रुति-र्गाथास्मृतिर्मनुः ॥ ६३ ॥ स्वर्गद्वारप्रजाद्वारमोक्षद्वारपतीश्वरः । नादरूपः परंब्रह्मब्रह्मब्रह्मपुरातनः॥६४॥ एकोऽनेकोजनःशुक्लःस्वयंज्योतिरनाकुलः । ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विकोराजसस्तमः ॥ ६५ ॥ तमोहर्तानिला-लम्बोनिराहारोगुणाकरः । गुणाश्रयोगुणमयोबृहत्कर्माबृहद्यशाः ॥ ६६ ॥ बृहद्धनुर्बृहत्पादोबृहन्मूर्धाबृहत्स्वनः । बृहत्कायोबृहन्नासोबृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥ ६७ ॥ बृहद्यत्नोबृहत्कामोबृहत्पुच्छोबृहत्करः । बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥ ६ ॥ बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदोबृहदीश्वरः । बृहल्लोकनुतोद्रष्टाविद्यादाताजगद्गुरुः ॥ ६९ ॥ देवाचार्यः सत्यवादी-ब्रह्मवादीकलाधरः । सप्तपातालगामीचमलयाचलसंश्रयः ॥ ७० ॥ उत्तरा-शास्थितः श्रीदोदिव्यौषधिवशः खगः । शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणः प्राणचंचुरः ॥ ७१ ॥ चतुरोब्राह्मणोयोगीयोगगम्यःपरावर । अनादिनिधि-दोव्यासोवैकुण्ठः पृथिवीपतिः ॥७२ ॥ अपराजितोजितारातिः सदानन्दो-गिरीशजः । गोपालीगोपतिर्योद्धाकलिकालपरात्परः ॥ ७३ ॥ मनोवेगी-सदायोगीसंसारभयनाशनः । तत्त्वदाताऽथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वन्तत्त्वप्रकाशकः ॥ ७४ ॥ शुद्धोबुद्धोनित्ययुक्तोभक्तराजोजगद्रथः । प्रलयोऽमितमायश्च-मायातीतोविमत्सरः ॥ ७५ ॥ मायाभर्जितरक्षाश्चमायानिर्मितविष्टपः । मायाश्रयश्चनिर्लेपोमायानिर्वर्तकः सुखम् ॥ ७६ ॥ सुखीसुखप्रदोनागो-महेशकृतसंस्तवः । महेश्वरः सत्यसन्धः शरभः कलिपावनः ॥ ७७ ॥ रसोरसज्ञः सम्मानोरूपचक्षुः श्रुतिः रवः । घ्राणोगन्धः स्पर्शनञ्चस्पर्शो-ऽहङ्कारमानगः ॥ ७८ ॥ नेतिनेतीतिगम्यश्चवैकुण्ठभजनप्रियः । गिरीशो-गिरिजाकान्तोदुर्वासाः कविरङ्गिराः ॥ ७९ ॥ भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनोनारद-स्तुम्बरुर्बलः । विश्वक्षेत्रोविश्वबीजोविश्वनेत्रश्चविश्वपः ॥ ८० ॥ याजकोय-जमानश्चपावकः पितरस्तथा । श्रद्धाबुद्धिः क्षमातन्त्रोमन्त्रोमन्त्रपितासुरः

॥ ८१ ॥ राजेन्द्रोभूपतीरुण्डमालीसंसारसारथिः । नित्यसम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ॥ ८२ ॥ गणपः केशवोभ्रातापितामाताऽथमारुतिः । सहस्रमूर्द्धासहस्रास्यः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ८३ ॥ कामजित्कामदहनः कामीकामफलप्रदः । मुद्रापहारीरक्षोघ्नः क्षितिभारहरोबलः ॥ ८४ ॥ नखदंष्ट्रायुधोविष्णुर्भक्तभायवरप्रदः । दर्पहादर्पदोदंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ॥ ८५ ॥ महानिधिर्महाभागोमहाभर्गोमहर्द्धिदः । महाकारोमहायोगी महातेजामहाद्युतिः ॥ ८६ ॥ महाकर्मामहानादोमहामन्त्रो महामतिः । महागमोमहोदारोमहादेवात्मकोविभुः ॥ ८७ ॥ रुद्रकर्माकृतकर्मरत्ननाभः कृतागमः । अम्भोधिलङ्घनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः ॥ ८८ ॥ जिता-मित्रोजयः सोमोविजयो वायुवाहनः । जीवोधातासहस्रांशुर्मुकुन्दोभूरि-दक्षिणः ॥८९॥ सिद्धार्थःसिद्धिदः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिहेतुकः । सप्तपाताल-चरणः सप्तर्षिगणवन्दितः ॥९०॥ सप्ताब्धिलङ्घनोवीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः । सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ॥९१॥ सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोत्र-स्वराश्रयः । सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ॥ ९२ ॥ सप्त-सामोपगीतश्चसप्तपातालसंश्रयः । मेधादः कीर्तिदः शोकहारीदौर्भाग्य-नाशनः ॥ ९३ ॥ सर्ववश्यकरोगर्भदोषहापुत्रपौत्रदः । प्रतिवादिमुख-स्तम्भोरुष्टचित्तप्रसादनः ॥ ९४ ॥ पराभिचारशमनो दुःखहाबन्धमोक्षदः । नवद्वारपुराधारोनवद्वारनिकेतनः ॥ ९५ ॥ नरनारायणस्तुल्योनवनाथ-महेश्वरः । मेखलीकवचीखड्गीभ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥ ९६ ॥ बहुयोजन-विस्तीर्णपुच्छःपुच्छहतासुरः । दुष्टग्रहनिहन्ताचपिशाचग्रहघातकः ॥९७॥ बालग्रहविनाशीचधर्मनेताकृपाकरः । उग्रकृत्यउग्रवेगउग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥ ९८ ॥ शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोतामहाबलः । समग्रगुणशाली चव्यग्रोरक्षोविनाशनः ॥९९॥ रक्षोग्निदाहोब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः । मेघनादोमेघरूपोमेघवृष्टिनिवारकः ॥ १०० ॥ मेघजीवनहेतुश्चमेघश्यामः-परात्मकः । समीरतनयोयोद्धातत्त्वविद्याविशारदः ॥ १०१ ॥ अमोघो-मोघदृष्टिश्चदिष्टदोऽरिष्टनाशनः । अर्थोऽनर्थापहारीचसमर्थोरामसेवकः ॥१०२॥ अर्थिवन्द्योसुराराति:पुण्डरीकाक्षआत्मभूः । सङ्कर्षणोविशुद्धात्मा-विद्याराशिःसुरेश्वरः ॥ १०३ ॥ अचलोद्धारकोनित्यःसेतुकृद्रामसारथिः । आनन्दःपरमानन्दोमत्स्यःकूर्मोनिधीशयः ॥ १०४ ॥ वाराहोनारसिंहश्च-वामनोजमदग्निजः । रामःकृष्णःशिवोवृद्धःकल्कीरामश्चमोहनः ॥ १०५ ॥ नन्दीभृङ्गीचचण्डीचगणेशोगणसेवितः । कर्माध्यक्षःसुरारामोविश्रामो-

जगतीपतिः ॥ १०६ ॥ जगन्नाथःकपीशश्चसर्वावासःसदाश्रयः । सुग्रीवादिस्तुतोदान्तःसर्वकर्माप्लवङ्गमः ॥ १०७ ॥ नखदारितरक्षाश्चनखयुद्धविशारदः । कुशलःसुधनःशेषोवासुकिस्तक्षकस्तथा॥ १०८॥ स्वर्णवर्णोबलाढ्यश्चपुरजेताघनाशनः । कैवल्यदोपःकैवल्योगरुडःपन्नगोगुरुः ॥ १०९ ॥ किलक्लिरावहतारातिर्गर्वपर्वतभेदनः । वज्राङ्गोवज्रवज्रश्चभक्तवज्रनिवारकः ॥ ११० ॥ नखायुधोमणिग्रीवोज्वालामालीचभास्करः । प्रौढप्रतापस्तपनोभक्त तापनिवारकः ॥ १११ ॥ शरणंजीवनंभोक्ता नानाचेष्टोऽथ चञ्चलः । स्वस्थस्त्वस्वास्थ्यहादुःखशातनः पवनात्मजः ॥११२॥ पावनः पवनःकान्ताभक्तागःसहनोबला । मेघनादरिपुर्मेघनादसंहतराक्षसः ॥ ११३ ॥ क्षरोऽक्षराविनीतात्मावानरेशःसतांगतिः । श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्चसहायोऽसहनायकः ॥ ११४ ॥ अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गोदिव्यः संसृतिनाशनः । अध्यात्मविद्यासारश्चाप्यध्यात्मकुशलः सुधीः ॥ ११५ ॥ अकल्मषःसत्यहेतुःसत्यदःसत्यगोचरः । सत्यगर्भःसत्यरूपःसत्यः सत्यपराक्रमः ॥ ११६ ॥ अञ्जनीप्राणलिङ्गश्च वायुवंशोद्वहःश्रुतिः । भद्ररूपोरुद्ररूपःसुरूपश्चित्ररूपधृक् ॥११७॥ मैनाकवन्दितःसूक्ष्मदशनोविजयोऽजयः । क्रान्तदिङ्मण्डलोरुद्रःप्रकटीकृतं विक्रमः ॥ ११८ ॥ कम्बुकण्ठः प्रसन्नात्माह्रस्वनासोवृकोदरः । लम्बोष्ठःकुण्डलीचित्रमालीयोगविदांवरः ॥ ११९ ॥ विपश्चित्कविरानन्दविग्रहोऽनल्पशासनः । फाल्गुनीसूनुरव्यग्रोयोगात्मायोगतत्परः ॥ १२० ॥ योगविद्योगकर्ताचयोगयोनिर्दिगम्बरः । अकारादिकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः ॥ १२१ ॥ उलूखमुखःसिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः । श्लिष्टजङ्घःश्लिष्टजानुःश्लिष्टपाणिःशिखाधरः ॥ १२२ ॥ सुशर्माऽमितशर्मा च नारायणपरायणः । जिष्णुर्भविष्णूरोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेवच ॥ १२३ ॥ हरिरुद्रानुकृद्दक्षकम्पनो भूमिकम्पनः । गुणप्रवाहः सूत्रात्मावीतरागस्तुतिप्रियः ॥१२४॥ नागकन्याभयध्वंसीऋतुपर्णःकपालभृत् । अनुकूलोक्षयोऽपायो नपायोवेदपारगः ॥ १२५ ॥ अक्षरःपुरुषोलोकनाथऋक्षप्रभुर्दृढः । अष्टाङ्गयोगफलभूःसत्यसन्धःपुरुष्टुतः ॥ १२६ ॥ श्मशानस्थाननिलयःप्रेतविद्रावणक्षमः । पञ्चाक्षरपरःपञ्चमातृकोरञ्जनध्वजः ॥ १२७ ॥ योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीःशत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः । ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डोदशात्मकः ॥ १२८ ॥ अप्रपञ्चःसदाकारःशूरसेनाविदारकः । वृद्धःप्रमोदआनन्दःसप्तजिह्वपतिर्धरः ॥ १२९ ॥ नवद्वारपुराधारःप्रत्यग्रःसामगायकः । षट्चक्रधामास्वर्लोकभयहृन्मानदोमदः ॥१३०॥

सर्ववश्यकरःशक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः । अष्टमूर्तिर्नयोपेतोविरूपःसुरसुन्दरः ॥१३१॥ धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः । नन्दिप्रियःस्वतन्त्रश्च मेखलीडमरुप्रियः ॥ १३२ ॥ लोहाङ्गः सर्वविद्धन्वीखण्डलः शर्वईश्वरः । फलभुक्फलहस्तश्चसर्वकर्मफलप्रदः ॥ १३३ ॥ धर्माध्यक्षोधर्मफलोधर्मोधर्मप्रदोऽर्थदः । पञ्चविंशतितत्त्वज्ञस्तारकोब्रह्मतत्परः ॥ १३४ ॥ त्रिमार्गवसतिर्भीमःसर्वदुष्टनिबर्हणः । ऊर्जस्वान्निष्कलःशूलीमौलिर्गर्जन्निशाचरः ॥ १३५ ॥ रक्ताम्बरधरोरक्तोरक्तमालाविभूषणः । वनमालीशुभाङ्गश्चश्वेतःश्वेताम्बरोयुवा ॥ १३६ ॥ जयोऽजयपरीवारःसहस्रवदनःकपिः । शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकः ॥१३७॥ सद्योजातःकामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः । शम्भुतेजाःसार्वभौमोविष्णुभक्तःप्लवङ्गमः ॥ १३८ ॥ चतुर्नवति मन्त्रज्ञःपौलस्त्यबलदर्पहा । सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गदप्रिय ईतिनुत् ॥ १३९ ॥ स्मृतिबीजंसुरेशानःसंसारभयनाशनः । उत्तमःश्रीपरीवारःश्रितरुद्रश्चकामधुक् ॥ १४० ॥

वाल्मीकिरुवाच । इति नाम्नां सहस्रेण स्तुतो रामेण वायुभूः । उवाच तं प्रसन्नात्मा सन्धायात्मानमव्ययम् ॥ १४१ ॥

वाल्मीकि बोले : इस प्रकार सहस्रनाम से श्रीराम ने हनुमान्‌जी की स्तुति की । तत्पश्चात प्रसन्नात्मा श्रीहनुमान्‌जी अपने को संयत करके अव्यय श्रीराम के प्रति यह वचन बोले :

श्रीहनुमानुवाच । ध्यानास्पदमिदं ब्रह्ममत्पुरःसमुपस्थितम् । स्वामिन्कृपानिधेरामज्ञातोसिकपिनामया ॥ १४२ ॥ त्वद्ध्याननिरतालोकाः किमाञ्जपसि सादरम् । तवागमनहेतुश्चज्ञातोह्यत्रमयाऽनघ ॥ १४३ ॥ कर्तव्यंममकिंरामतथाब्रूहिचराघव ।

श्रीहनुमान्‌जी बोले : हे स्वामिन् ! हे कृपानिधे श्रीराम ! एकमात्र ध्यानगम्य परब्रह्मस्वरूप आप मेरे सम्मुख उपस्थित हैं । तुच्छ बुद्धि वानर होते हुए भी मैंने आपको पहचान लिया है । समस्त चराचरमात्र आपके ही ध्यान में निरन्तर रत रहते हैं और आप इतनी श्रद्धापूर्वक मेरी स्तुति करते हैं । आपके यहाँ आने का कारण मैंने जान लिया है । हे राघव, हे राम ! मुझे क्या करना है यह आप बतायें ।

इतिप्रचोदितोरामः प्रहृष्टात्मेदमब्रवीत् ॥१४४॥ श्रीराम उवाच । दुर्जयः खलुवैदेहीगृहोत्वाकोऽपिनिर्गतः । हत्वातं निर्घृणंवीरमानयत्वंकपीश्वर ॥ १४५ ॥ मम दास्यंकुरुसखेभवविश्वसुखङ्करः । तथाकृते त्वया वीर मम कार्यं भविष्यति ॥ १४६ ॥

इस प्रकार हनुमान्जी के कहने पर प्रसन्नचित्त होकर श्रीराम बोले : किसी दुर्जय व्यक्ति ने सीताजी का हरण कर लिया है। अतः हे कपीश्वर ! उस निर्घृण वीर को मारकर शीघ्रातिशीघ्र उन्हें (सीता को) मेरे सम्मुख लाओ। उसे (अपहरणकर्ता को) मेरे अधीन करके हे मित्र ! तुम समस्त प्राणि मात्र को सुख प्रदान करो। हे वीर ! तुम्हारे ऐसा करने पर मेरा कार्य होगा।

ओमित्याज्ञां तु शिरसा गृहीत्वा स कपीश्वरः। विधेयं विधिवत्तत्र चकार शिरसा स्वयम् ॥ १४७ ॥

तत्पश्चात कपीश्वर ने 'ॐ' कहकर आज्ञा को शिरोधार्य करके विधिवत् वहाँ पर स्वयं कर्तव्य का पालन किया :

इदं नाम्नां सहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः। दुःखौघो नश्यते तस्य सम्पत्तिर्वर्धतेऽचिरम् ॥१४८॥ वश्यं चतुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः। राजानो राजपुत्राश्च राजकीयाश्च मन्त्रिणः ॥ १४९ ॥ अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम्। त्रिकालपठनात्तस्य सिद्धिः स्यात्करसंस्थिता ॥ १५० ॥ ब्राह्मे मूहूर्ते चोत्थाय प्रत्यहं यः पठेन्नरः। ऐहिकामुष्मिकं सोपि लभते नात्रसंशयः ॥ १५१ ॥ संग्रामे सन्निविष्टानां वैरिविद्रावणं परम्। ज्वरापस्मारशमनं गुल्मादीनां निवारणम् ॥१५२॥ साम्राज्यसुखसम्पत्ति-दायकं जायते नृणाम्। स्वर्गं मोक्षं समाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः ॥१५३॥ य इदं पठते नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः। सर्वान्कामानवाप्नोति वायुपुत्र-प्रसादतः॥१५४॥ इति ब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीरामकृतं हनुमत्सहस्र-नामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इस सहस्रनाम का जो प्रतिदिन पाठ करता है उसके दुःख के समूह नष्ट हो जाते हैं, उसकी सम्पत्ति की शीघ्र वृद्धि होती है और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष ये चतुर्विध पुरुषार्थ उसके अधीन हो जाते हैं। प्रतिदिन तीन सन्ध्याओं में इसका पाठ करने से राजा, राजपुत्र, मन्त्रीगण सभी अधीन हो जाते हैं। पीपल के मूल में बैठकर इसका पाठ करने से शत्रुजन्य भय नष्ट होता है। ब्राह्म मुहूर्त में उठकर जो प्राणी प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करता है वह निःसन्देह इहलोक तथा परलोक के सुखों को प्राप्त करता है। यह स्तोत्र संग्राम में रत लोगों के शत्रुओं का परमनाशक है। यह ज्वर तथा अपस्मार का नाशक तथा गुल्मादि रोगों का निवारक है। यह मनुष्यों को साम्राज्य सुख और सम्पत्ति का देनेवाला है। मनुष्य श्रीरामचन्द्र के प्रसाद से स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त करता है। जो शान्त चित्त होकर इस स्तोत्र को

नित्य पढ़ता या सुनता है वह हनुमान्जी की कृपा से सभी कामनाओं को प्राप्त करता है। इति ब्रह्माण्ड पुराण के उत्तरखण्ड में श्रीरामकृत हनुमत्सहस्र-नाम स्तोत्र सम्पूर्ण।

अथ हनुमत्स्तोत्रप्रारम्भः।

हनुमानुवाच। तिरश्चामपियोराजासमवायंसमीयुषाम्। तथासुग्रीव-मुख्यानांयस्तंबन्द्यंनमाम्यहम् ॥१॥ सकृदेवप्रसन्नाय विशिष्टायैवराज्यदः। बिभीषणाययोदेवस्तं वीरं प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ योमहापुरुषोव्यापीमहा-ब्धौकृतसेतुकः स्तुतोयेनजटायुश्चमहाविष्णुंनमाम्यहम् ॥ ३ ॥ तेजसा-प्यायितायस्यज्वलन्तिज्वलनादयः। प्रकाशतेस्वतन्त्रोस्तंज्वलन्तंनमा-म्यहम् ॥ ४ ॥ सर्वतोमुखतायेन लीलयादर्शितारणे। राक्षसेश्वरयोधानां तं वन्देसर्वतोमुखम् ॥ ५ ॥ नृभावन्तुप्रपन्नानांहिनस्तिचसदारुजम्। नृसिंहतनुप्राप्तोयस्तं नृसिंहंनमाम्यहम् ॥ ६ ॥ यस्माद्बिभ्यतिवातार्कज्वल-नेन्द्राःसमृत्यवः। भयं तनोतिपापानांभीषणंतन्नमाम्यहम् ॥ ७ ॥ परस्य-योग्यतांवीक्ष्यहरतेपापसन्ततिम्। पुरस्ययोग्यतांवीक्ष्यतं भद्रंप्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥ योमृत्युंनिजदासानांमारयत्यतिचेष्टदः। तत्रापिनिज दासार्थंमृत्यु-मृत्युंनमाम्यहम् ॥ ९ ॥ यत्पादपद्मप्रणतोभवत्युत्तमपूरुषः। तमीशंसर्व-देवानांनमनीयंनमाम्यहम् ॥१०॥ आत्मभावंसमुत्क्षिप्यदास्यंचैवघूत्तमम्। भजेहंप्रत्यहंरामंससीतंसहलक्ष्मणम् ॥ ११ ॥ नित्यंश्रीरामभक्तस्यकिङ्करा-यमकिङ्कराः। शिववत्योदिशस्तस्यसिद्धयस्तस्यदासिकाः ॥ १२ ॥

इदंहनुमताप्रोक्तंमन्त्रराजात्मकंस्तवम्। पठेदनुदिनंयस्तुसरामेभक्ति-मान्भवेत्। इति हनुमत्कल्पे श्रीरामकृद्धनुमन्मन्त्रराजात्मकस्तवराजः समाप्तः।

हनुमान् प्रोक्त इस मन्त्र राजात्मक स्तव का जो प्रतिदिन पाठ करता है वह श्रीराम में भक्तिमान् होता है। हनुमत्कल्प में श्रीरामकृत हनुमन्मन्त्र-राजात्मक स्तवराज समाप्त।

अथलांगूलास्त्रशत्रुञ्जयस्तोत्रप्रारम्भः।

ॐ हनुमन्तंमहावीरंवायुतुल्यपराक्रमम्। मम कार्यार्थमागच्छप्रण-मामिमुहुर्मुहुः ॥ १ ॥

लांगूलास्त्र शत्रुञ्जय स्तोत्र : वायु के समान पराक्रमी, महाबली हनुमान्जी को मैं बार-बार प्रणाम करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मेरे कार्य के लिये आप आइये।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रमालामन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । नाना छन्दांसि । श्रीमन्महावीरो हनुमान्देवता । मारुतात्मज ह्सौं इति बीजम् । अञ्जनीसूनुह्स्फ्रें इति शक्तिः । ॐ ह्रांह्रांह्रां इति कीलकम् । श्रीरामभक्तह्रां इति प्राणः । श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर ह्रांह्रींह्रूं इति जीवः । ममारातिपराजयनिमित्तशत्रुञ्जयस्तोत्रमालामन्त्रजपे विनियोगः ।

करन्यास : ॐ ऐं श्रींह्रांह्रींह्रूं स्फ्रेंख्फ्रेंह्सौंस्ख्फ्रेंह्सौं नमो हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ इति बीजादौ सर्वत्र संयोज्य रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ लक्ष्मण प्राणदात्रे मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ अञ्जनीसूनवे अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ सीताशोकविनाशाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ लङ्काप्रासादभञ्जनाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हनुमते हृदयाय नमः ॥ १ ॥ रामदूताय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ लक्ष्मणप्राणदात्रे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ अञ्जनीसूनवे कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ सीताशोकविनाशिने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ लङ्काप्रासादभञ्जनाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम् । 'ॐ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा । सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥ १ ॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ २ ॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम् । नियुद्धउपसङ्गात्रं पारावारपराक्रमम् ॥ ३ ॥ वामहस्तगदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम् । उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥ ४ ॥'

इति ध्यात्वा 'अरेमल्लचटखेत्युच्चारणेऽथवातोडरमल्लचटखेत्युच्चारणेकपिमुद्रांप्रदर्शयेत् ।'

इस प्रकार ध्यान करके 'अरे मल्ल चटख' ऐसा उच्चारण करके अथवा 'तोडरमल्ल चटख' का उच्चारण करके हनुमान्जी को कपिमुद्रा प्रदर्शित करे।

अथ मालामन्त्रः ।

'ॐ ऐंश्रींह्रांह्रींह्रूं स्फ्रें ख्फ्रेंह्सौंह्स्ख्फ्रेंह्सौं नमोहनुमतेत्रैलोक्याक्रमणपराक्रमश्रीरामभक्तममपरस्यचसर्वशत्रून्चतुर्वर्णसम्भवान्पुंस्त्रीनपुंसकान्भूतभविष्यद्वर्तमानान् नानादूरस्थसमीपस्थान्नानानामधेयान्नानासङ्करजातिजान्कलत्रपुत्रमित्रभृत्यबन्धुसुहृत्समेतान्प्रभुशक्तिसहितान्धनधान्यादिसम्पत्तियुतान्राज्ञोराजपुत्रसेवकान्मन्त्रीसचिवसखीनात्यन्तिकक्षणेनत्वरयाएतद्दिनावधिनानानोपायैर्मारयमारय शस्त्रैश्छेदयछेदय अग्निनाज्वालयज्वालय दाहयदाहय अक्षय कुमारवत्पादतलाक्रमणेनाऽनेनशिलातलेनात्रोटयत्रोटय घातयघातय बधबध भूतसङ्घैःसहभक्षयभक्षय क्रुद्धचेतसानखैर्विदारयविदारय देशादस्मादुच्चाटयउच्चाटय पिशाचवत्भ्रंशयभ्रंशय भ्रामयभ्रामय भयातुरान्विसंज्ञान्सद्यःकुरुकुरुभस्मीभूतान्उद्धूलयउद्धूलय भक्तजनवत्सलसीताशोकापहारकसर्वत्रमामेनञ्चरक्षरक्षह्रांह्रांह्रांहुंहुंहुंघेघेघेहुंफट्स्वाहा' ॥ १ ॥ 'ॐ नमोहनुमतेमहाबलपराक्रमायमहाविपत्तिनिवारकायभक्तजनमनःकामनाकल्पद्रुमायदुष्टजनमनोरथस्तम्भनायप्रभञ्जनप्राणप्रियायस्वाहा ॥ २ ॥' 'ॐ ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः ममशत्रून्शूलेनच्छेदयछेदय अग्निनाज्वालयज्वालय दाहयदाहय उच्चाटयउच्चाटय हुंफट्स्वाहास्वाहास्वाहा ।'

यह मालामन्त्र पढ़कर पुनः ध्यान करके इस प्रकार स्तोत्रपाठ करे :

ॐ हनुमते नमः । श्रीमन्तं हनुमन्तमार्तरिपुभिर्भूभृत्तरुभ्राजितं चाल्यद्बालधिबन्धवैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम् । अष्टौ रक्तपिशङ्गनेत्रनलिनं भ्रूभङ्गमङ्गस्फुरत्प्रोद्यच्चण्डमयूखमण्डलमुखं दुखापहं दुःखिनाम् ॥ १ ॥ कौपीनं कटिसूत्रमौञ्ज्यजिनयुग्देवं विदेहात्मजा प्राणाधीशपदारविन्दनिरत स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम् । ध्यात्वैवं समराङ्गणस्थितमथानीय स्वहृत्पङ्कजे सम्पूज्याखिलपूजनोक्तविधिना सम्प्रार्थयेप्रार्थितम् । इति ध्यात्वा स्तोत्र पठेत् । ॐ हनूमन्नञ्जनीसूनो महाबलपराक्रम । लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय ॥ १ ॥ मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक । लोलल्लां० ॥ २ ॥ अक्षक्षपण पिङ्गाक्ष क्षितिजाशुक्क्षयङ्कर । लो० ॥ ३ ॥ रुद्रावतार संसारदुःखभारापहारक । लोल० ॥४॥ श्रीरामचरणांभोजमधुपायितमानस । लो० ॥ ५ ॥ बालिकालरदक्लान्तसुग्रीवोन्मोचन प्रभो । लोल० ॥ ६ ॥ सीताविरहवारीशमग्नसीतेशतारक । लो० ॥ ७ ॥ रक्षोराजप्रतापाग्निदह्यमान जगद्वन । लो० ॥८॥ ग्रस्ताशेषजगत्स्वास्थ्य राक्षसाम्भोधिमन्दर । लो० ॥९॥ पुच्छगुच्छस्फुरद्धूमानलदग्धारिपत्तन । लो० ॥ १० ॥ जगन्मनोदुरुल्लंघ्यपारावारविलङ्घन । लो० ॥११॥ स्मृतमात्रसमस्तेष्ट पूरक प्रणतप्रिय । लो० ॥१२॥ रात्रिञ्चरचमूराशिकर्तनैकविकर्तन । लो० ॥१३॥ जानकीजानकीजानिप्रेमपात्रपरंतप । लोल० ॥१४॥ भीमादिकमहावीरवीरवेशावतारक । लो० ॥ १५ ॥ वैदेहीविरहक्लान्त-

रामरोषैकविग्रह । लो० ॥ १६ ॥ वज्राङ्गनखदंष्ट्रेशवज्रिवज्रावकुण्ठन । लो० ॥ १७ ॥ अखर्वंगर्वंगन्धपर्वतोद्भेदनस्वर । लो० ॥ १८ ॥ लक्ष्मण-प्राणसन्त्राणत्रातास्तीक्ष्णकरान्वय । लो० ॥ १९ ॥ रामादिविप्रयोगार्तं-भरताद्यर्तिनाशन । लो० ॥ २० ॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेपसमुत्क्षिप्तारिवैभव । लो० ॥ २१ ॥ सीताशीर्वादसम्पन्नसमस्तावयवाक्षत । लोलल्लांगूलपातेन ममारातीन्निपातय ॥ २२ ॥

इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टःशत्रुञ्जयंनाम पठेत्स्वयं यः । स शीघ्रमेवास्त-समस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात् ॥ २३ ॥ इति श्रीलांगूलास्त्र-शत्रुञ्जयहनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे हनुमत्तन्त्रे नवमस्तरङ्गः ॥ ९ ॥

इस प्रकार पीपल वृक्ष के नीचे शत्रुञ्जय नामक इस स्तोत्र का जो स्वयं पाठ करता है वह शीघ्र ही समस्त शत्रुओं का नाश करके हनुमान्जी के प्रसाद से प्रमुदित होता है । इति श्रीलांगूलास्त्र शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्र सम्पूर्ण ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्ड में हनुमत्तन्त्ररूपी

नवम तरङ्ग समाप्त ॥ ९ ॥
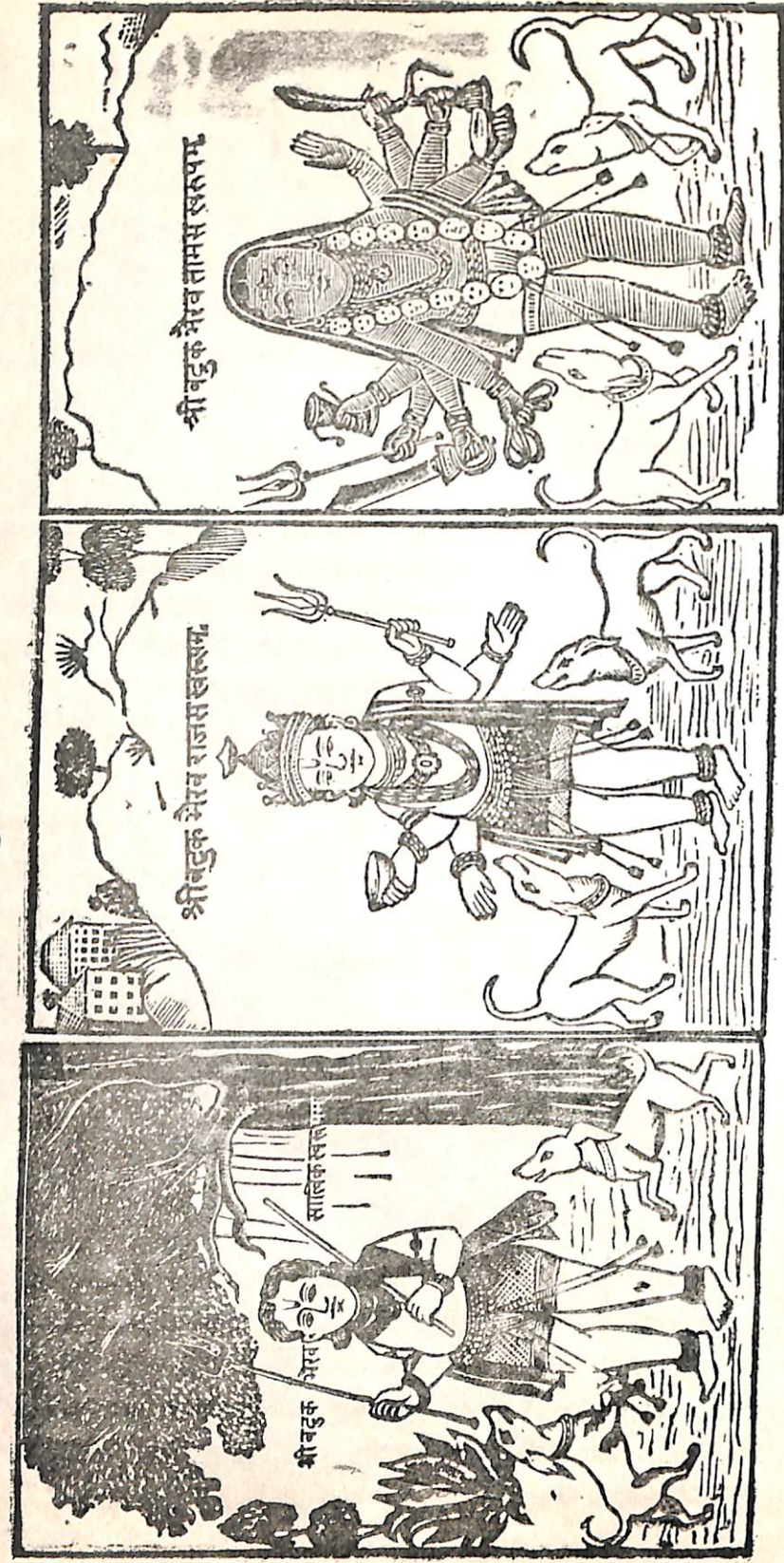
वटुकभैरव

दशम तरंग

वटुकभैरव तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः। दृष्ट्वातन्त्राण्यनेकानि श्रीमद्वटुकनाथस्य पटलं-वक्ष्यतेधुना ॥ १ ॥

आदि पटल प्रारम्भ : अनेक तन्त्रों को देखकर श्रीवटुकनाथ का पटल कह रहे हैं।

रुद्रयामले। एकदागिरिजाशम्भुंपप्रच्छोपासनाविधिम् । येनेदं सर्वलोकानामाप्सितं च फलंभवेत् ॥ २ ॥

रुद्रयामल में कहा गया है : एक बार गिरिजा (पार्वती) ने शिवजी से ऐसी उपासनाविधि पूछी थी जिसमें संसार के लोगों की अभीष्ट सिद्धि हो :

श्रीपार्वत्युवाच। प्राणनाथजगन्नाथजगदादिजगन्मय। शम्भोशङ्कर-देवेशवटुकाराधनंवद ॥ ३ ॥ एकादशसहस्रन्तुभजनंहित्वयोदितम्। विधिस्तस्यविशेषेणब्रूहित्वंशङ्कराधुना ॥ ४ ॥ येनकार्याणिसिध्यन्तिसाध-कानांनिरन्तरम्। सुगोप्यमपिदेवेशविधिंप्रब्रूहिशङ्कर ॥ ५ ॥

श्रीपार्वती बोली : हे प्राणनाथ, जगन्नाथ, जगदादिजगन्मय, देवेश, हे शम्भो ! हे शङ्कर ! आप बटुकजी की आराधना-विधि बतायें। आपने ११ हजार भजन-पूजन बताया है। हे शङ्कर ! अब आप ऐसी विधि बतायें जिससे साधकों को निरन्तर सिद्धि प्राप्त हो। हे देवेश ! यह गोपनीय हो तब भी आप इस विधि को बतायें।

ईश्वर उवाच। सम्यक्पृष्टंत्वयादेविलोकदुःखविमोचनम्। मयावटुक-रूपंहिधृतंसर्वसुखावहम् ॥ ६ ॥ अन्येदेवास्तुकालेनप्रसन्नाः सम्भवंतिहि। वटुकः सेवितः सद्यः प्रसीदतिध्रुवंशिवे ॥ ७ ॥ दुःखेचसेवितः शीघ्रंदुःखं-नाशयतेक्षणात् । सुखेचसेवितोनित्यंसुखंवर्द्धंयते बहु ॥ ८ ॥ शृणुदेवि-प्रवक्ष्यामिवटुकस्यमहात्मनः। विधानंपरमंगोप्यंब्रह्मादीनांसुदुर्लभम् ॥९॥ मन्त्रेणैवसुसंक्षेपात्कथयिष्यामिवल्लभे। येनविज्ञानमात्रेणत्रैलोक्यंसाधये-त्सुधीः ॥ १० ॥

ईश्वर बोले : हे देवि ! तुमने सम्यक् प्रश्न पूछा है। मैंने संसार के दुःख

को दूर करनेवाले और सब को सुख देनेवाले बटुकरूप को ही धारण किया है। अन्य देवता तो समय से प्रसन्न होते हैं, किन्तु हे शिवे! बटुकजी सेवा करने पर ही शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, यह निश्चित है। दुःख में सेवन करने से ये शीघ्र दुःखों का नाश कर देते हैं और सुख में सेवा करने से ये नित्य सुख की बहुत वृद्धि करते हैं। हे देवि सुनो, मैं महात्मा बटुक के परम गोपनीय विधान को बताऊँगा, जो ब्रह्मादि के लिये भी दुर्लभ है। हे वल्लभे! मैं संक्षिप्त रूप से ही इस मन्त्र को कहूंगा। इसके विज्ञानमात्र से ही सुधी साधक त्रैलोक्य का साधन कर सकता है।

एकदादेवदेवेशितपसेमन्दराचलम्। गतोहंपरमानन्दान्मूलप्रकृतिमीश्वरीम् ॥११॥ चक्रेपरमसन्तुष्टां तपसाभावितात्मना। आकाशरूपिणी-देवीप्रोवाचवचनं मुदा ॥ १२ ॥

हे देवदेवेशि! एक दिन मैं मन्दराचल पर परमानन्द मूलप्रकृति ईश्वरी के पास गया और वहां मैंने भक्तिभाव से उन्हें परम सन्तुष्ट किया। तब आकाशरूपिणी वह देवी प्रसन्नतापूर्वक बोलीं:

तुष्टाहंशङ्करप्रीतावरं वरयदुर्लभम्। बटुकस्यविधानंमेपरमंभक्तितो-वरम् ॥१३॥ परमाशयान्मन्त्रस्ययेनसिध्यन्तिसर्वथा। मनोरमाणिमन्त्रस्य-सर्वकार्याणिसाम्प्रतम् ॥ १४ ॥ इतिवाक्यंचमेश्रुत्वामूलभूतासनातनी। उवाचयादृशंदेवीविधानंश्रृणुवल्लभे ॥ १५ ॥

हे शङ्कर! मैं तुमसे सन्तुष्ट और प्रसन्न हूं। तुम मुझ से दुर्लभ वर मांगो। 'मैं बटुक के विधान को भक्ति से श्रेष्ठ अनुभव करता हूं। मन्त्र के परमाशय से यह मन्त्र सब कार्यों को सर्वथा सिद्ध कर देता है।' मेरे इस वाक्य को सुन कर उन मूलभूत सनातनी देवी ने जैसा विधान कहा था उसे, हे वल्लभे तुम सुनो।

बटुकाख्यस्यदेवस्यभैरवस्यमहात्मनः। ब्रह्माविष्णुमहेशाद्यैर्वन्दितस्य दयानिधेः ॥ १६ ॥ न्यासा एकादशप्रोक्ताबटुकाराधनेशिवे। यान्विनानै-वसिद्धिः स्याद्वर्षाणामयुतैरपि ॥ १७ ॥ प्रथमः प्रेतबीजेन नृसिंहबीजेन-चापरः। क्वाणबीजेनसत्यायाः श्रीबीजेनततः परः ॥ १८ ॥ प्राणबीजेन-चैन्यासान् कुर्यात्तत्रविचक्षणः। घण्टाबीजेनचन्यासं विधायख्यातिबीजतः ॥ १९ ॥ मूलबीजेनपश्चाच्चन्या संकृत्वामहामतिः। भ्रामरीबीजतोन्या-संविदध्यात्प्रीतिसंयुतः ॥ २० ॥

महात्मा भैरव का बटुकाख्य विधान ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि द्वारा भी वन्दित है। हे शिवे! बटुक की आराधना में ग्यारह न्यास कहे गये हैं जिनके बिना हजारों वर्षों में भी सिद्धि नहीं हो सकती। पहला प्रेत बीज से, दूसरा नृसिंह बीज से, तीसरा क्वाण बीज से, चौथा सत्या बीज से, पांचवां श्री बीज से और छठां प्राण बीज से बुद्धिमान मनुष्य न्यास करे। सातवां घण्टा बीज से, आठवां ख्याति बीज से, नवां मूल बीज से न्यास करके महामति साधक प्रीतियुक्त होकर भ्रामरी बीज से न्यास करे।

एवंन्यासाञ्जपादौतुनकरोतिनरोयदा। वाञ्छयेहंवरारोहेतावन्मंत्रो-नसिध्यति ॥२१॥ इतिन्यासान् समाधायपुरश्चरणकारकाः। यथोक्तन्यास-कारीचयदिनोवरमाप्नुयात् ॥ २२ ॥ तदाकन्यादूषणोत्थंममपापं प्रजाय-ताम् न्यासैरेतैर्वरारोहे ब्रह्महत्याविनश्यति ॥ २३ ॥ काकथान्यस्यपापस्य-सत्यंसत्यंवदामिते। ममन्यासानथोवक्ष्ये त्रीन्देवस्यमहात्मनः ॥२४॥ यान् विधायनरोविन्देत् सिद्धिंलोकेषुदुर्लभाम्। आकूतबीजंविन्यस्येन्मस्तके-गण्डयोर्मुखे ॥ २५ ॥ कालबीजंचक्षुषोश्चकर्णयोरपिविन्यसेत्। नाभौलिङ्गे गुदेवापिविद्याबीजं कपोलयोः ॥ २६ ॥ ब्रह्मरन्ध्रेदन्तपंक्तौविन्यसेत्साधको-त्तमः। एतन्न्यासत्रयंप्रोक्तं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥ २७ ॥ यस्यप्रसाद-मासाद्यसाधकः शीघ्रसिद्धिदः। श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामिश्रृङ्खलान्यासमुत्तमम् ॥ २८ ॥ यस्यप्रसादाच्चशिवेबटुकः सिद्धिदोभवेत्। महापराख्यंबीजंच-विन्यसेत्साधकोत्तमः ॥ २९ ॥ न्यासेनानेनसुश्रोणिसाक्षाच्छिवसमोभवेत्।

इस प्रकार जप के आरम्भ में जब मनुष्य न्यासों को नहीं करता तो, हे वरारोहे! मैं चाहता हूं कि उसका मन्त्र सिद्ध न हो। परन्तु इस प्रकार न्यास का संविधान करके पुरश्चरण करनेवाला साधक यथोक्त न्यासों को करके भी यदि वर न पावे तो मुझे कन्यादूषण का पाप लगे। हे वरारोहे! इन न्यासों से ब्रह्महत्या का नाश होता है अन्य पापों का फिर क्या कहना—यह मैं तुमसे सत्य, बिल्कुल सत्य कहता हूं। अब मैं तीन महात्मा देवों का न्यास कहूंगा जिन्हें करके मनुष्य संसार में दुर्लभ सिद्धि प्राप्त करता है। कथित बीजों का न्यास मस्तक पर, गालों पर और मुखपर करे। कालबीज का चक्षुओं और कानों पर करे। नाभि, लिङ्ग या गुदा, गालों, ब्रह्मरन्ध्र दन्तपंक्ति पर साधकोत्तम विद्या बीज का न्यास करे। ये तीन न्यास साधकों को अभीष्ट सिद्धि देनेवाले कहे गये हैं। इनका प्रसाद प्राप्त करके साधक शीघ्र ही सिद्धिवाला हो जाता है। हे देवि! सुनो, मैं उत्तम श्रृङ्खला न्यास कहूंगा। हे शिवे! इसके प्रसाद से बटुक सिद्धि देनेवाले हो जाते हैं। साधकोत्तम महापराख्य बीज का न्यास करे। हे सुश्रोणी! इस न्यास से साधक शिव के समान हो जाता है।

वटुकस्याथवक्ष्यामिमातृकान्यासमुत्तमम् ॥ ३० ॥ कृतेनयेनवटुकः साधकस्यकरेभवेत् । वटुकस्यपरंपूज्यं मातृकान्यासमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ विज्ञायसाधयेत्प्राज्ञः ससद्यः शिवतांव्रजेत् । विनैवंमातृकान्यासंयोन्येनन्यासमाचरेत् ॥ ३२ ॥ वटुकस्तस्यकुपितः सद्यः शापंप्रयच्छति । तस्यन्यासः प्रकर्तव्यः साधकेनविपश्चिता ॥ ३३ ॥ सर्वेषुमातृस्थानेषुवपुःपावनहेतवे । मातृकान्यासमेनंहित्यक्त्वाऽन्यंन्यासमाचरेत् ॥ ३४ ॥ वर्षकोटिप्रयत्नेन-ससिद्धिंनैवविन्दति । ॐकारमादौसंयोज्यसर्वंपूर्ववदाचरेत् ॥ ३५ ॥ अयमन्तर्मातृकाख्योन्यासः स्यात्पूर्वंसिद्धिदः । ॐकारमादिमन्कृत्वान्यासोयंवरवर्णिनी । नम्नाबहिर्मात्रिकाख्योन्यासचूडामणिर्भवेत् ॥ ३६ ॥ अथान्यंन्यासमाख्यास्येशृणुष्ववरवर्णिनि । सरस्वतीमातृकाख्यंसद्यःसिद्धिप्रदायकम् ॥ ३७ ॥ न्यसेन्महामतेबीजमातृकास्थानकेषुच । महासरस्वतीदेवीसद्यःसिद्धिप्रदायिका ॥ ३८ ॥ महासरस्वतीबीजंकथितंदेवदुर्लभम् । इमेन्यासाःसमाख्यातावटुकाराधने शिवे ॥ ३९ ॥ सद्यःसिद्धिकरादेवि-भाग्यलभ्यानसंशयः । न्यूनन्यासस्यकर्तायःसद्योहानिमवाप्नुयात् ॥ ४० ॥ एतस्मादधिकान्यासाःयस्तंचपीठन्यासकम् । यन्त्रावरणन्यासंचपीठपूजाविधिंचरेत् ॥ ४१ ॥ एवंन्यासतनुंदेविध्यायेद्वटुकभैरवम् ।

अब मैं बटुक के उत्तम मातृका न्यास को कहूंगा । मातृका न्यास के बिना जो अन्य न्यास करता है उसपर क्रुद्ध होकर बटुक उसे शीघ्र शाप देता है । अतः बुद्धिमान साधक को यह न्यास करना चाहिये । सभी मातृका स्थानों में शरीर की शुद्धता के लिये इस मातृका न्यास को छोड़कर जो अन्य न्यासो को करता है वह करोड़ों वर्षो के प्रयत्नों से भी सिद्धि नहीं प्राप्त कर सकता । ॐ को आदि में रखकर सब कुछ पूर्ववत करना चाहिये । यह अन्तर्मातृका न्यास पूर्वसिद्धि देनेवाला है । हे वरवर्णिनि ! प्रारम्भ में ॐ लगाकर बहिर्मातृका न्यास चूडामणि नाम से विख्यात है । हे वरवर्णिनि ! मैं अब सरस्वती मातृका नामक न्यास कहूंगा, उसे सुनो । यह तत्काल सिद्धिप्रद है । हे महामति ! मातृका स्थानों में बीज का न्यास करे । महासरस्वती शीघ्र ही सिद्धि देनेवाली है । देवदुर्लभ महासरस्वती बीज मैंने तुम्हें बताया है । हे शिवे ! बटुकाराधन में ये सब न्यास कहे गये हैं । हे देवि ये सभी तत्काल सिद्धि देनेवाले है और भाग्य से ही प्राप्त होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है । जो न्यून न्यास करता है वह शीघ्र हानि को प्राप्त करता है । इससे अधिक न्यास पीठ न्यास है । अतः यन्त्रावरण न्यास और पीठपूजा की विधि करनी चाहिये । तदुपरान्त हे देवि ! न्यासतनु बटुकभैरव का इस प्रकार ध्यान करे ।

शुद्धस्फटिकसङ्काशंद्विनेत्रोत्पलशोभितम् ॥ ४२ ॥ कुटिलालकसंवीतं-चारुस्मरेमुखाम्बुजम् । नानारत्नमयैःकल्पैःकिंकिणीजालनूपुरैः ॥ ४३ ॥ दीप्तंशुक्लाम्बरावीतंद्विभुजंदक्षिणेकरे । त्रिशिखंसव्यहस्तेचदधानंदण्ड-मद्भुतम् ॥ ४४ ॥ वटुवेशधरंशम्भुंसात्त्विकं साधकः स्मरेत् ।

शुद्ध स्फटिक के समान दो नेत्र कमलों से सुशोभित, कुटिल केशों से संवीत सुन्दर मुख कमलवाले, अनेक प्रकार के रत्नों से युक्त, किङ्किणी, जाल तथा नूपुरों से दीप्त श्वेत वस्त्रावृत, दो हाथों वाले, दाहिने हाथ से त्रिशूल तथा बायें हाथ में अद्भुत दण्डधारण किये हुये बटुवेशधारी सात्विक शम्भु का ध्यान साधकों को करना चाहिये ।

एवंध्यात्वायजेद्देवंशैवेपीठेसुरेश्वरि ॥ ४५ ॥ पात्रासादनशङ्खंचघण्टा-कलशस्थापनम् । विशेषार्घस्थापनंवायन्त्रस्थापनमेवच ॥ ४६ ॥ सप्तधातुमयेपीठेताम्रजेवापटेशुभे । संस्थाप्यतत्रतद्यन्त्रंध्यात्वातत्रबटुप्रिये ॥ ४७ ॥ यथाकामंतथाध्यानंकारयेत्साधकोत्तमः । क्रूरकार्येषुसर्वेषुध्यानं वैतामसंस्मृतम् ॥ ४८ ॥ वश्येविद्वेषणेस्तम्भेराजसं ध्यानमीरितम् । सात्त्विकंशुभकार्येषुध्यानभेदाःसमीरितः ॥ ४९ ॥ अन्येवैध्यानभेदाश्चस्तवराजे-प्रकीर्तिताः ।

हे सुरेश्वरि ! इस प्रकार ध्यान करके शैव पीठ में यज्ञ करे । पात्रसंग्रह, शङ्ख, घण्टा तथा कलश की स्थापना, विशेषार्घ स्थापन या यन्त्र स्थापन करे । सर्वधातुमय पीठ में या ताम्रपात्र में या वस्त्र में इस यन्त्र को वहाँ स्थापित करके, हे बटुप्रिये ! ध्यान करके श्रेष्ठ साधक यथाकाम ध्यान करे । सभी क्रूर कर्मों में तामस ध्यान बताया गया है । वशीकरण, विद्वेषण तथा स्तम्भन में राजस ध्यान कहा गया है । शुभ कर्मों में सात्विक ध्यान कहा गया है । स्तवराज में ध्यान के अन्य भेद भी बताये गये हैं ।

मूर्तिमूलेनसङ्कल्प्यतस्यामावाहयेत्प्रभुः ॥ ५० ॥ सद्योजातेनमन्त्रेण-मूलाद्येनचसुव्रते । सन्निधाप्याथमूलेनकेवलेनस्वमुद्रया ॥५१॥ अघोरान्तेनमूलेसन्निरोधनमाचरेत् । मूलेनसम्मुखीकुर्यादवगुण्ठ्याथमूलतः ॥ ५२ ॥ षडङ्गैःशकलीकृत्यामृतीकृत्यचमूलतः । परमीकरणंचैवस्वस्वमुद्राभिरर्चयेत् ॥ ५३ ॥ एतत्सर्वंविधातव्यंततोध्यायेत्समाहितः । कृत्वासुस्थापनंतस्यमुद्राःसंदर्शयेदथ ॥ ५४ ॥ लिङ्गाद्याःपूर्वमुद्दिष्टायोनिमुद्रातथान्तिमा । तांदर्शयेत्तत्पुरुषंमूलाभ्यांचमहेश्वरि ॥ ५५ ॥ आसनाद्यैश्चपुष्पान्तैरुपचारैस्ततोर्चयेत् । ततो देवाज्ञयासम्यग्यजेदावरणदेवताः ॥ ५६ ॥ मन्त्राक्षराणांसंख्याकैस्तन्तुभिर्न्हासुत्रजैः । वर्ति कृत्वा घृतेनैव दीपतत्रप्रदापयेत्

॥ ५७ ॥ तैलेनवाप्रकुर्वीतदीपदान विधानतः । बलिन्यासविधिकृत्वा ध्यानंकृत्वायथोक्तवत् ॥ ५८ ॥

हे सुव्रते ! मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके उसमें मूलमन्त्रादि सद्योजात मन्त्र से प्रभु का आवाहन करना चाहिये । केवल मूलमन्त्र एवं स्वमुद्रा से उसका सन्निधापन करना चाहिये । अघोरान्त मूलमन्त्र से उसका सन्निरोधन करना चाहिये । मूलमन्त्र से उसका अवगुण्ठन करके मूलमन्त्र से ही सम्मुखीकरण करे । षडङ्गों से सकलीकरण और मूलमन्त्र से अमृतीकरण तथा परमीकरण करके स्वस्वमुद्राओं से पूजा करे । यह सब विधान करके समाहित चित्त से ध्यान करना चाहिये । इस प्रकार सुस्थापना करके उनकी मुद्रा दिखलानी चाहिये । लिङ्गादि मुद्रायें पहले कही गई हैं । योनिमुद्रा उनमें अन्तिम है । हे महेश्वरि ! इन सब को मूलमन्त्र से उस पुरुष को दिखाना चाहिये । इसके बाद आसनादि से लेकर पुष्पाञ्जलि पर्यन्त उपचारों से पूजा करे । इसके बाद देवाज्ञा से आवरण देवताओं की अच्छी तरह पूजा करनी चाहिये । मन्त्र में जितने अक्षर हैं उतनी संख्या में मदार की रूई से बने सूत्रों की बत्ती बनाकर घी से दीपक जलाना चाहिये अथवा विधानपूर्वक तेल का दीपदान करे । बलि तथा न्यास विधि यथोक्त रीति से करके ध्यान करना चाहिये ।

श्रीपार्वत्युवाच । भगवन्करुणासिन्धोदीनबन्धोजगद्गुरो । कृपांकृत्वासमाख्याहिसूत्रैरेवपृथक्पृथक ॥ ५९ ॥ साधकस्तुतथासिद्धिमचिरेणर्वविदति । कालेनेहयथाल्पेनसाधकः सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ६० ॥ गोपनीयोनमन्त्रोयंबटुकाख्योजगद्गुरो । तथानिरूपयविभोबालकोपियथालभेत् ॥ ६१ ॥

श्रीपार्वती बोली : हे भगवन्, करुणासिन्धो, दीनबन्धो, जगद्गुरो ! कृपा करके आप सूत्र रूप में ही पृथक्-पृथक् बतायें जिससे साधक शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त कर सके । हे जगद्गुरो ! यह महामन्त्र यद्यपि गोपनीय है तथापि आप इस प्रकार बतायें जिससे बालक भी इसे प्राप्त कर ले ।

ईश्वर उवाच शृणुदेविजगत्पूज्येन्यासबीजानिशोभने । प्रकटानियथाशश्वत्कथयामिहितायते ॥ ६२ ॥

ईश्वर बोले : हे शोभने, जगत्पूज्ये ! न्यास बीजों को सुनो । परम्परा से चले आ रहे जो न्यास बीज हैं उन्हें मैं तुम्हारे कल्याण के लिये कहता हूं :

तत्रादावापदुद्धारकबटुकमन्त्रप्रयोगः ।

आपदुद्धारक बटुकमन्त्र प्रयोग : रुद्रयामल में २१ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणायकुरुकुरुबटुकायह्रीम् । इत्येकविंशत्यक्षरोमन्त्रः ।

इसका विधान : आचमन और मूलमन्त्र से प्राणायाम करके ।

देशकालौसंकीर्त्य श्रीमद्बटुकभैरवदेवताप्रीतयेममामुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं लक्षसंख्यात्मकजप (अथवैकविंशतिलक्षात्मकजप) रूपपुरश्चरणमहं करिष्ये ।

इति सङ्कल्प्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेणकृत्वाप्रेतबीजाद्यश्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासान्तं सर्वन्यासं च पद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात् । तद्यथा ।

इससे सङ्कल्प करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति तथा संहारमातृका न्यास सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से करने के बाद प्रेतबीजाद्य श्रीकण्ठादि कलामातृका न्यास पर्यन्त सब न्यास पद्धति मार्ग से करके प्रयोगोक्त न्यासादि इस प्रकार करे :

विनियोग : अस्यश्रीबटुकभैरवमन्त्रस्य बृहदारण्य ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीबटुकभैरवो देवता । ह्रीं बीजम् । ह्रींशक्तिः । ॐ कीलकम् । श्रीबटुकभैरवप्रीतये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ बृहदारण्यऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीबटुकभैरवदेवतायै नमः हृदि ॥ ४ ॥ ह्रींबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीशक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ह्रौं वौं ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः ॥१॥ ॐ ह्रैं वैं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय नमः मध्यमयोः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय नमः अनामिकयोः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः ॥ ५ ॥ इतिकरन्यासः ।

मूर्तिन्यास : ॐ ह्रौं वौं ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रैं वैं तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षिणकर्णे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय उत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय पश्चिम वक्त्राय नमः चूडाधः ॥५॥ इति मूर्तिन्यासः ।

पञ्चब्रह्ममन्त्रन्यास : ॐ ह्रों वों ईशानाय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोराय नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः पादयोः ॥ ५ ॥ इति पञ्चब्रह्ममन्त्रन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

ततः ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इत्यस्त्रमन्त्रेण तालैश्छोटिकाभिर्वा दशदिग्बन्धनं कृत्वा ध्यायेत् ।

इसके बाद 'सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस अस्त्रमन्त्र से चुटकी बजाकर दशों दिशाओं का दिग्बन्धन करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् । ॐ शुद्धस्फटिकसङ्काशं सहस्रादित्यवर्चसम् । नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम् ॥ १ ॥ अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम् । दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥२॥ भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम् । दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम् ॥३॥ खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः । डमरुं च कपालं च वरदं भुजङ्गं तथा । अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ ४ ॥

इस प्रकार ध्यान करके मनसोपचारों से पूजा करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पद्धति मार्ग से स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके इस प्रकार नवपीठशक्तियों की पूजा करे:

पूर्वादिक्रमेण । ॐ वां वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः ॥२॥ ॐ रौं रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ कां काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कं कलविकरण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ वं बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ॥७॥ ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये । ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करने के बाद स्वाणदि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर शक्ति गन्धाष्टक से यन्त्र लिखकर :

ॐ नमो भगवते बटुकाय सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः ।'

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा

करके, पुन ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारोंसे पूजन करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (आपदुद्धारक बटुकपूजन यन्त्र देखिये २७) : पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि बटुक परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह कहकर पुष्पाञ्जलि भैरव पर डालकर आज्ञा लेकर आवरणपूजा आरम्भ करे । यहाँ सर्वत्र पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके आवरण देवताओं की पूजा करनी चाहिये ।

इसके बाद दाहिने हाथ की तर्जनी तथा अँगूठे से गन्ध, अक्षत और पुष्प लेकर देव के अङ्ग पर आग्नेयी आदि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्रोच्चरेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद कर्णिका के बाहर अष्टदलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ ह्रीं आं असिताङ्गभैरवाय नमः[२] । असिताङ्गभैरवश्रीपा० ॥१॥ ॐ ह्रीं इं रुरुभैरवाय नमः[३] । रुरुभैरवश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं ऊं चण्डभैरवाय नमः[४] । चण्डभैरवश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः[५] । क्रोधभैरवश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः[६] । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ एं ह्रीं कपालभैरवाय नमः[७] । कपालभैरवश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं औं भीषणभैरवाय नमः[८] । भीषणभैरवश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः[९] । संहारभैरवश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आष्टभैरवों की पूजा करके त्रिकोण में पूर्वादि क्रम से :

ॐ सत्त्वाय नमः[१०] ॥१॥ ॐ रजसे नमः[११] ॥२॥ ॐ तमसे नमः[१२] ॥३॥

इससे त्रिगुणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

त्रिकोण के बाहर षट्कोण पूर्वादिक्रम से :

ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः[१३]। भूतनाथश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः[१४]। आदिनाथश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः[१५]। आनन्दनाथश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः[१६]। सिद्धशाबरनाथश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः[१७]। सहजानन्दनाथश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं निःसीमानन्दनाथाय नमः[१८]। निःसीमानन्दनाथश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद वर्तुल में पूर्वादि क्रम से :

ॐ ह्रीं डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः[१९]। डाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं राकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२०]। राकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२१]। लाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं काकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२२]। काकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२३]। शाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२४]। हाकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं याकिनीपुत्रेभ्यो नमः[२५]। याकिनीपुत्रश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं देवीपुत्रेभ्यो नमः[२६]। देवीपुत्रश्रीपा० ॥ ८ ॥ देवदक्षिणतः। ॐ ह्रीं उमापुत्रेभ्यो नमः[२७]। उमापुत्रश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः[२८]। रुद्रपुत्रश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं मातृपुत्रेभ्यो नमः[२९]। मातृपुत्रश्रीपा० ॥ ११ ॥ पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः[३०]। ऊर्ध्वमुखीपुत्रश्रीपा० ॥ १२ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः[३१]। अधोमुखीपुत्रश्रीपा० ॥ १३ ॥

इससे त्रयोदश पुत्रवर्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलबिन्दु भैरव पर छिड़कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

वर्तुल से बाहर पूर्वादि से आग्नेयी दिशा पर्यन्त वामावर्त क्रम से :

पूर्वे ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय नमः[३२]। ब्रह्माणीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥१॥

ऐशान्ये। ॐ ह्रीं माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः[३३]। माहेश्वरीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ २ ॥ उत्तरे। ॐ ह्रीं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः[३४]। वैष्णवीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ३ ॥ वायव्ये। ॐ ह्रीं कौमारीपुत्रवटुकाय नमः[३५]। कौमारीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ४ ॥ पश्चिमे। इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः[३६]। इन्द्राणीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये। ॐ ह्रीं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः[३७]। महालक्ष्मीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ६ ॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं वाराहीपुत्रवटुकाय नमः[३८]। वाराहीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥ ७ ॥ आग्नेये। ॐ ह्रीं चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः[३९]। चामुण्डापुत्रवटुकश्रीपा०।

इससे आठ मातृपुत्र वटुकों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलबिन्दु भैरव के ऊपर डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

अष्टदलों के बाहर चतुरस्र के भीतर इन्द्रादि क्रम से प्राची दिशा की कल्पना करके पूर्वादि दश दिशाओं में :

पूर्वे। ॐ ह्रीं हेतुकाय नमः[४०]। हेतुकश्रीपादुकां पूज० ॥ १ ॥ आग्नेये। ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः[४१]। त्रिपुरान्तकश्रीपा० ॥ २ ॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं वैतालाय नमः[४२]। वैतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्प० ॥ ३ ॥ नैर्ऋते। ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः[४३]। अग्निजिह्वश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे। ॐ ह्रीं कालान्तकाय नमः[४४]। कालान्तकश्रीपा० ॥५॥ वायव्ये। ॐ ह्रीं करालाय नमः[४५]। करालश्रीपा० ॥ ६ ॥ उत्तरे। ॐ ह्रीं एकपादाय नमः[४६]। एकपादश्रीपा० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये। ॐ ह्रीं भीमरूपाय नमः[४७]। भीमरूपश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं अचलाय नमः[४८]। अचलश्रीपा० ॥ ९ ॥ नैर्ऋतवरुणयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं हाटकेशाय नमः[४९]। हाटकेशश्रीपा० ॥ १० ॥

इससे हेतुकादि दश वटुकों का पूजन करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव पर जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

फिर वहीं त्रिरेखात्मक भूपुर की प्रथम रेखा में दिशाओं, विदिशाओं और उनके अन्तराल में सोलह स्थानों पर श्रीकण्ठादि से लेकर महासेन तक की पूजा करे। उसमें क्रम यह है।

पूर्वे। ॐ ह्रीं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः[५०]। श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीश्रीपा० ॥१॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं आं अनन्तेशशिवरजाभ्यां नमः[५१]। अनन्तेशविरजाश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे। ॐ ह्रीं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः[५२]। सूक्ष्मेशशाल्मलीश्रीपा० ॥ ३ ॥ उत्तरे। ॐ ह्रीं ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः[५३]। त्रिमूर्तीशलोलाक्षीश्रीपा० ॥४॥ आग्नेय्याम्। ॐ ह्रीं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः[५४]। अमरेशवर्तुलाक्षीश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋते। ॐ ह्रीं ऊं अर्घीशदीर्घघोणाभ्यां नमः[५५]। अर्घीशदीर्घघोणाश्रीपा० ॥ ६ ॥ वायव्ये। ह्रीं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः[५६]। भारभूतीशदीर्घमुखीश्रीपादुकां पू० ॥ ७ ॥ ऐशान्ये। ॐ ह्रीं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः[५७]। अतिथीशगोमुखीश्रीपा० ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये। ॐ ह्रीं लृं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः[५८]। स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाश्रीपा० ॥९॥ दक्षिणनैर्ऋतमध्ये। ॐ ह्रीं लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः[५९]। हरेशकुण्डोदरीश्रीपा० ॥१०॥ पश्चिमवायुमध्ये। ॐ ह्रीं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः[६०]। झिण्टीशोर्ध्वकेशीश्रीपा० ॥ ११ ॥ उत्तरेशानमध्ये। ॐ ह्रीं ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः[६१]। भौतिकेशविकृतमुखीश्रीपा० ॥ १२ ॥ अग्निदक्षिणमध्ये। ॐ ह्रीं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः[६२]। सद्योजातेशज्वालामुखीश्रीपा० ॥ १३ ॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये। ॐ ह्रीं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः[६३]। अनुग्रहेशोल्कामुखीश्रीपा० ॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये। ॐ ह्रीं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः[६४]। अक्रूरेशश्रीमुखीश्रीपा० ॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये। ॐ ह्रीं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः[६५]। महासेनेशविद्यामुखीश्रीपा० ॥ १६ ॥

इस प्रकार पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलविन्दु भैरव के ऊपर डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति सप्तमावरण ॥ ७ ॥

इसके बाद भूपुर की द्वितीय रेखा में दिशाओं, विदिशाओं और उनके अन्तराल में सोलह स्थानों पर क्रोधीश्वरादि सोलहों की पूजा करे। उसमें क्रम यह है।

पूर्वे। ॐ ह्रीं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः[६६]। क्रोधीशमहाकालीश्रीपा० ॥ १ ॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं खं चण्डीशसरस्वतीभ्यां नमः[६७]। चण्डीशसरस्वतीश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे। ॐ ह्रीं गं पञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः[६८]। पञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीश्रीपा० ॥३॥ उत्तरे। ॐ ह्रीं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः[६९]। शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेय्याम्। ॐ ह्रीं ङं एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः[७०]। एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिश्रीपा० ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये। ॐ ह्रीं चं कूर्मेशात्मकशक्तिभ्यां नमः[७१]। कूर्मेशात्मकशक्तिश्रीपा० ॥ ६ ॥ वायव्ये। ॐ ह्रीं छं एकनेत्रेशभूतमातृकाभ्यां नमः[७२]। एकनेत्रेशभूतमातृकाश्रीपा० ॥७॥ ऐशान्ये। ॐ ह्रीं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः[७३]। चतुराननेशलम्बोदरीश्रीपा० ॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये। ॐ ह्रीं झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः[७४]। अजेशद्राविणीश्रीपा० ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋतमध्ये। ॐ ह्रीं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः[७५]। सर्वेशनागरीश्रीपा० ॥ १० ॥ पश्चिमवायुमध्ये। ॐ ह्रीं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः[७६]। सोमेशखेचरीश्रीपा० ॥११॥ उत्तरेशानमध्ये। ॐ ह्रीं ठं लाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः[७७]। लाङ्गलीशमञ्जरीश्रीपा० ॥ १२ ॥ अग्नेययाम्यमध्ये। ॐ ह्रीं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः[७८]। दारुकेशरूपिणीश्रीपा० ॥१३॥ नैर्ऋतपश्चिममध्ये। ॐ ह्रीं ढं अर्धनारीशवीरणीभ्यां नमः[७९]। अर्ध नारीशवीरणीश्रीपादुकांपू० ॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये। ॐ ह्रीं णं उमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः[८०]। उमाकान्तेशकाकोदरीश्रीपा० ॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये। ॐ ह्रीं तं आषाढेशपूतनाभ्यां नमः[८१]। आषाढेशपूतनाश्रीपा० ॥ १६ ॥

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इत्यष्टमावरण ॥ ८ ॥

इसके बाद भूपुर की तृतीय रेखा में दिशाओं, विदिशाओं और उनके अन्तराल में सोलह स्थानों पर दण्डीश्वरादि से लेकर भृग्वीश्वर आदि तक पूजा करे। उसमें क्रम यह है।

पूर्वे। ॐ ह्रीं थं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः[८२]। दण्डीशभद्रकालीश्रीपादुकां पू० ॥ १ ॥ दक्षिणे। ॐ ह्रीं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः[८३]। अत्रीशयोगिनीश्रीपा० ॥ २ ॥ पश्चिमे। ॐ ह्रीं धं मीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः[८४]।

मीनेशशङ्खिनीश्रीपा० ॥ ३ ॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं नं मेषेशगर्जनीभ्यां नमः[८५] मेषेशगर्जनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेयाम् । ॐ ह्रीं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः[८६] । लोहितेशकालरात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये । ॐ ह्रीं फं शिखीशकुब्जिकाभ्यां नमः[८७] । शिखीशकुब्जिकाश्रीपा० ॥ ६ ॥ वायव्ये । ॐ ह्रीं बं छागलेशकपर्दिनीभ्यां नमः[८८] । छागलेशकपर्दिनी श्रीपा० ॥७॥ ऐशान्ये । ॐ ह्रीं भं द्विरण्डेशवज्रिणीभ्यां नमः[८९] । द्विरण्डेश-वज्रिणीश्रीपा० ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये । ॐ ह्रीं मं महाकालेशजयाभ्यां नमः[९०] । महाकालेशजयाश्रीपा० ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋतमध्ये । ॐ ह्रीं यं त्वगात्मभ्यां बालेशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः[९१] । बालेशसुमुखेश्वरीश्रीपा० ॥ १० ॥ पश्चिमवायव्यमध्ये । ॐ ह्रीं रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः[९२] । भुजङ्गेशरेवतीश्रीपा० ॥ ११ ॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः[९३] । पिनाकीशमाधवीश्रीपा० ॥ १२ ॥ आग्नेय-दक्षिणमध्ये । ॐ ह्रीं वं वेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः[९४] । खड्गीश-वारुणीश्रीपा० ॥ १३ ॥ नैर्ऋतपश्चिममध्ये । ॐ ह्रीं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमः[९५] । बकेशवायवीश्रीपा० ॥१४॥ वायुसोममध्ये । ॐ ह्रीं षं मज्जात्मभ्यां नमः । श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः[९६] । श्वेतेशरक्षोव-धारिणीश्रीपा० ॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये । ॐ ह्रीं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसह जाभ्यां नमः[९७] । भृग्वीशसहजाश्रीपा० ॥ १६ ॥

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद भूपुर के बाहर देव के दक्षिण ओर लकुलीश आदि तीन की पूजा करे : उसमें क्रम यह है ।

ॐ ह्रीं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः[९८] । लकुलीशलक्ष्मी-श्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः[९९] । शिवे शव्यापिनीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः[१००] । संवर्तकेशमहामायाश्रीपा० ॥ ३ ॥

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद :

ऐशान्ये । ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्यो दिव्ययोगीश्वरेभ्यो नमः[१०१] । योगिनीसहित दिव्ययोगीश्वरश्रीपा० ॥ १ ॥ आग्नेये । ॐ ह्रीं योगिनी-सहितेभ्योऽन्तरिक्षस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः[१०२]।योगिनीसहितान्तरिक्षस्थयोगीश्वर-श्रीपा० ॥२॥ नैर्ऋते । ॐ ह्रीं योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः[१०३] । योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरश्रीपा० ॥ ३ ॥ पूर्वे । गं गणपतये नमः[१०४] । गणपतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ दक्षिणे भैं भैरवाय नमः[१०५] । भैरवश्रीपा० ॥ ५ ॥

पश्चिमे । क्षं क्षेत्रपालाय नमः[१०६] । क्षेत्रपालश्रीपा० ॥ ६ ॥ उत्तरे । दुं दुर्गायै नमः[१०७] । दुर्गाश्रीपा० ॥ ७ ॥

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति नवमावरण ॥ ९ ॥

इसके बाद भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से दश दिशाओं में इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करे । उसमें क्रम यह है :

ॐ ह्रीं लं इन्द्राय नमः[१०८] । इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः[१०९] । अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं मं यमाय नमः[११०] । यमश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः[१११] । निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ह्रीं वं वरुणाय नमः[११२] । वरुणश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं यं वायवे नमः[११३] । वायु-श्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः[११४] । सोमश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः[११५] । ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं आं ब्रह्मणे नमः[११६] । ब्रह्मश्रीपा० ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[११७] । अनन्तश्रीपा० ॥ १० ॥

इस प्रकार दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति दशमावरण ॥ १० ॥

इसके बाद इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[११८] ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः[११९] ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः[१२०] ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः[१२१] ॥ ४ ॥ ॐ पा पाशाय नमः[१२२] ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः[१२३] ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः[१२४] ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[१२५] ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः[१२६] ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः[१२७] ॥ १० ॥

इससे अस्त्रों की पूजा करके 'रुद्र' पद जोड़कर पुष्पाञ्जलि देकर १. स्तम्भन, २. चतुरास्रणि, ३. मच्छ, ४. गोक्षु, योनि—इन पाँच मुद्राओं को दिखाये । इति एकादशावरण ॥ ११ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पञ्चबलिदानं दत्वा पशुबलिदानादिकं विधाय जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमेकविंशति लक्षजपः । जपान्तेतिलाज्येनमधुमिश्रितेन दशांशतो होमः । होमान्ते

होमदशांशेन मन्त्रान्ते 'ॐ वटुकभैरवं तर्पयामि' इत्युक्त्वा दुग्धमिश्रित जलेन तर्पणं कुर्यात् । ततस्तर्पणदशांशेन मन्त्रान्ते 'ॐ आत्मानमभिषिञ्चामि नमः ।' इति मूर्ध्न्यभिषेकः । होमतर्पणाभिषेकाशक्तौ तत्तत्स्थाने तत्तद्द्विगुणो जपः कार्यः ततोऽभिषेकदशांशसंख्याकमष्टोत्तरशतं वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । इति शारदातिलके ज्ञेयम् ।

इस प्रकार आवरणपूजा करके, धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके पञ्चबलिदान और पशुबलिदानादि को सम्पन्न करके जप करे । इसका पुरश्चरण २१ लाख जप है । जप के अन्त में घी और मधुमिश्रत तिलों से दशांश होम करना चाहिये । होम के अन्त में होम का दशांश मन्त्र के अन्त में 'ॐ वटुक भैरवं तर्पयामि' यह लगाकर दुग्धमिश्रित जल से तर्पण करना चाहिये । फिर मन्त्र के अन्त में 'ॐ आत्मानमभिषिञ्चामि नमः' यह लगाकर तर्पण का दशांश मूर्धा पर अभिषेक करे । होम, तर्पण और अभिषेक में अशक्त होने पर तत्तत्स्थान पर उससे दूना जपकार्य करना चाहिये । इसके बाद अभिषेक की दशांश संख्या या १०८ ब्राह्मणों को भोजन कराये । ऐसा शारदातिलक में कहा में कहा गया है ।

रुद्रयामले पुरश्चरणलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणब्राह्मणभोजनानि कारयेत् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च (रुद्रयामले) 'लक्षमेकंजपेन्मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः । तद्दशांशं च जुहुयात्तिलैर्मधुरसंयुतैः ॥ १ ॥ अनेन मनुना देवी सिद्धेन जगतीतले । असाध्यं नास्ति लोकेषु सत्यंसत्यं मयोदितम् ॥ २ ॥ एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हसि । यथाकामं तथा ध्यानं कारयेत्साधकोत्तमः ॥ ३ ॥ क्रूरकार्येषु सर्वेषु ध्यानं वै तामसं स्मृतम् । वश्ये विद्वेषणे स्तम्भे राजसं ध्यानमीरितम् ॥ ४ ॥ सात्त्विकं शुभकार्येषु ध्यानभेदः समीरितः । बालसूर्यांशुसंकाशं राजसं ध्यानमुच्यते ॥ ५ ॥ सात्त्विकं श्वेतवर्णं च कृष्णं तामसमुच्यते । सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे राजसं ध्यानमुच्यते ॥ ६ ॥'

रुद्रयामल के अनुसार पुरश्चरण एक लाख जप है । तत्तद्दशांश होम, तर्पण, ब्राह्मण भोजन करे । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है और मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । रुद्रयामल में कहा भी गया है कि हविष्य का आहार करनेवाला जितेन्द्रिय होकर एक लाख जप करे । उसका दशांश घी, शकर तथा मधुमिश्रित तिलों से होम करे । हे देवि ! इस सिद्ध मन्त्र से संसार में कुछ भी असाध्य नहीं है, यह मैंने सत्य, बिल्कुल

सत्य कहा है । इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । श्रेष्ठ साधक इच्छानुसार ध्यान करे । सभी क्रूर कर्मों में तामस ध्यान कहा गया है । वशीकरण, विद्वेषण और स्तम्भन में राजस ध्यान कहा गया है । शुभ कार्यों में सात्विक ध्यान कहा गया है । ध्यानभेद इस प्रकार बताये गये हैं : बाल सूर्य के समान राजस ध्यान कहा जाता है । सात्विक ध्यान श्वेतवर्ण और राजस ध्यान कृष्णवर्ण है । सर्वकामार्थ सिद्धियों के लिये राजस ध्यान बताया गया है ।

तामस ध्यान इस प्रकार है :

'ॐ त्रिनेत्रं रक्तवर्णं च वरदाभयहस्तकम् । सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव च ॥ ७ ॥ रक्तवस्त्रपरीधानं रक्तमाल्यानुलेपनम् । नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरणभूषितम् ॥ ८ ॥

राजस ध्यान इस प्रकार है :

तुषारकणिकाभासं मायारूपमनन्तकम् । मूर्ध्नि खण्डेन्दुशकलं त्रिनेत्रं शान्तिलोचनम् ॥ ९ ॥ सर्वकारणकर्तारं द्विभुजं रत्नभूषितम् । कपालं वामहस्ते च सूक्ष्मदण्डं च दक्षिणे ॥ १० ॥ पादनूपुरसंयुक्तंछिन्नशीर्षविभूषितम् । सर्पमालासमायुक्तं हस्तोरुस्थूलजानुषु । आन्त्रमालासमायुक्तं सर्वाभरणभूषितम् ॥ ११ ॥

सात्विक ध्यान इस प्रकार है :

श्वेतवर्णं चतुर्बाहुं जटामुकुटधारिणम् । भुजङ्गपाशहस्तं च हस्ते दण्डकमण्डलुम् ॥ १२ ॥ शुक्लयज्ञोपवीतं च शुक्लकौपीन वाससम् । शुक्लवस्त्रपरीधानं श्वेतमालानुलेपनम् ॥ १३ ॥ त्रिनेत्रं नीलकण्ठं च मुक्ताभरणभूषितम् ।

अन्य ध्यान भेद स्तवराज में कहे गये हैं ।

अथ प्रयोगः (रुद्रयामले) शुक्लपक्षे द्वितीयायां शुक्रवारे समाहितः । पूर्ववत्पूजयेद्देवं सिद्धान्नं च निवेदयेत् ॥ १ ॥ पलार्द्धं च वचाचूर्णं तन्मानघृतसंयुतम् । पद्मपत्रे विनिःक्षिप्य त्रिसहस्रं जपेद्बुधः ॥ २ ॥ प्राशयेन्नियतो भूत्वा पुनर्लक्षत्रयं जपेत् । तस्यैवं कुर्वतः प्रज्ञा निःसीमा भवति ध्रुवम् ॥ ३ ॥ गद्यपद्यमयी वाणी श्रुतस्याप्यवधारणम् ।

प्रयोग : (रुद्रयामल के अनुसार) शुक्लपक्ष की द्वितीया शुक्रवार को समाहित होकर पूर्ववत् देव की पूजा करे तथा सिद्धान्न देवे । आधा पल वचा का चूर्ण, उतना ही घी, पद्मपत्र पर रखकर बुद्धिमान तीन हजार जप करे । जितेन्द्रिय होकर उसे खाये और पुनः एक लाख जप करे । इससे प्रज्ञा निश्चित-

रूप से असीम हो जाती है और गद्य-पद्यमय वाणी तथा सुन लेनेमात्र से ही धारण कर लेने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां भूमिपुत्रस्य वासरे ॥ ४ ॥ आराध्य विधिवद्देवं तस्याग्रे स्थापयेद्बुधः। रोचनां हेमजे पात्रे सम्पूज्य विधिनाथताम् ॥ ५ ॥ गन्धपुष्पादिना स्पृष्ट्वा तां जपेदयुतत्रयम्। तद्गत्वर्ति प्रज्वाल्य कपिला-घृतसेविताम् ॥ ६ ॥ सौवर्णे नृकपाले वा पात्रे संगृह्य चाञ्जनम्। सम्पूज्य च पुनर्जप्त्वा तत्पात्रं मन्त्रसंग्रहम् ॥ ७ ॥ ध्यात्वा वादवदंशोरे तदा चाञ्जनमाचरेत्। वश्या भवन्ति ते सर्वे यान्यान्पश्यतिसाधकः ॥८॥

कृष्णपक्ष, चतुर्थी मङ्गलवार को विधिपूर्वक देव की पूजा करके बुद्धिमान मनुष्य उनके आगे स्वर्णपात्र में गोरोचन की विधिपूर्वक पूजा करके गन्ध-पुष्पादि से स्पर्श करके तीस हजार जप करे। उसमें कपिला गाय के घी से युक्त बत्ती को जलाकर स्वर्णपात्र या मनुष्य की खोपड़ी में काजल संग्रह करके उसकी पूजा करके पुनः जप करके उस काजल-संग्रहपात्र का कामना के अनुसार ध्यान करके आंजन लगाने से साधक जिसे भी देखता है वह वशीभूत हो जाता है।

वन्ध्याचिकित्सां कुर्वाणो बालार्काभं समर्चयेत्। हरिद्रार्धपलं चैव वचाचूर्णं च तत्समम् ॥ ९ ॥ पेषयित्वा तु गोमूत्रे गोलकं घृतसंयुतम्। पद्मपत्रे विनिःक्षिप्य स्थापयेद्देवसन्निधौ ॥ १० ॥ प्रणिपत्य नमस्कृत्य जपे-दुच्चैः सहस्रकम्। एवमेव प्रकारेण प्राशयेत्तु महौषधम् ॥ ११ ॥ श्री-मन्तमायुष्मन्तं च बलवन्तं सुदर्शनम्। विद्यावन्तं पुत्रवन्तं सद्यः पुत्र-मवाप्नुयात् ॥ १२ ॥

वन्ध्या की चिकित्सा करनेवाला बाल सूर्य के समान देव की पूजा करे। आधा पल हल्दी और उतना ही बचा का चूर्ण गोमूत्र में घीसकर घी मिला कर गोला बना ले और उसे पद्मपत्र पर रखकर देवता के आगे स्थापित करे। साष्टाङ्ग नमस्कार करके उच्चस्वर से एक हजार जप करे। फिर इस औषधि को खिलाने से वह बन्ध्या स्त्री श्रीमान, आयुष्मान, बलवान, सुन्दर विद्यावान और पुत्रवान् पुत्र को शीघ्र प्राप्त करती है।

वश्यार्थमयुतं जप्त्वा रक्तपुष्पैर्दशांशतः। होमं कुर्यात्करवीरैः श्वेतै-र्विद्यामवाप्नुयात् ॥ १३ ॥ लक्ष्म्याप्त्यै कमलैर्होमो दीर्घायुर्दूर्वया हुते। गुडेन रोगनाशः स्यादपमृत्युनिवारणम् ॥ १४ ॥ वस्त्रेण वस्त्रप्राप्तिः स्याद्धान्याप्तिर्धान्यहोमतः। पुत्रजीवीफलैर्होमे सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥ अश्वत्थसमिधाहोमे पुत्राप्तिः सर्वसिद्धयः। लवणघृतहोमेन शत्रून्मादकरं भवेत ॥ १६ ॥ काकोलूकमांसहोमाच्छत्रून्मारयते ध्रुवम्। सप्तरात्रेण देवेशि श्मशाने च त्रिलक्षकम् ॥ १७ ॥ जपित्वा बलिदानेन वटुको दर्शने भवेत्। वटवृक्षतले मर्त्यस्त्रिलक्षं प्रजपेन्निशि ॥ १८ ॥ रसायनं च गुटिकां चेटकासिद्धिमाप्नुयात्। विभीतकवृक्षतले यदि लक्षं जपेन्नरः ॥ १९ ॥ वेतालभूतप्रेताश्च वश्या भवन्ति निश्चयात्। जुहुया-दरुणाम्भोजैर्रजोदोषैर्मधुप्लुतैः ॥ २० ॥ लक्षसंख्या तदर्धं वा प्रत्यहं भोजयेद्द्विजान्। वनितां युवतीं रम्यां प्रीणयेद्देवताधिया ॥ २१ ॥ होमान्ते धनधान्याद्यैस्तोषयेद्गुरुमात्मनः। एवं कृते जगद्वश्यं रमाया भवनं भवेत् ॥ २२ ॥

वशीकरण के लिये जो दश हजार जप करके कनेर के लाल और श्वेत पुष्पों से दशांश होम करता है वह विद्या को प्राप्त करता है। लक्ष्मी प्राप्ति के लिये कमलों से होम करना चाहिये। दीर्घायु के लिये दूब से होम करे। गुड़ के होम से रोग और अपमृत्यु का नाश होता है। वस्त्र के होम से वस्त्र प्राप्ति और अन्न के होम से अन्न प्राप्ति होती है। पुत्रजीवा के फलों से होम करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। पीपल की समिधाओं से होम करने से पुत्र की तथा सर्वसिद्धियों की प्राप्ति होती है। नमक और घी के होम से शत्रुओं में उन्माद उत्पन्न होता है। कौवा तथा उल्लू के मांस के होम से शत्रु की निश्चित रूप से मृत्यु होती है। सात रात तक हे देवेशि, श्मशान में तीन लाख जप तथा बलिदान करने से बटुक का दर्शन होता है। बरगद के वृक्ष के नीचे रात में मनुष्य तीन लाख जप करे तो रसायन गुटिका तथा चेटिका की सिद्धि प्राप्त करता है। यदि बहेड़े के पेड़ के नीचे एक लाख जप करे तो निश्चित रूप से बेताल, भूत, प्रेत आदि वश में हो जाते हैं। मधु और रज से लिप्त लाल कमलों से एक लाख या आधा लाख होम करना तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। फिर देवता बुद्धि से वनिता या सुन्दर युवती को प्रसन्न करना और होम के बाद गुरु को धन-धान्य से तृप्त करना चाहिये। ऐसा करने से सारा संसार वश में हो जाता है।

रक्तोत्पलैस्त्रिमध्वक्तैररुणैर्वा हरिद्रजैः। पुष्पैः पयोक्तैः सघृतैर्होमा-द्विश्वं वशं नयेत् ॥ २३ ॥ वाक्सिद्धिं लभते मन्त्री पालाशकुसुमैर्हुते। कर्पूरागरुसंयुक्तं गुग्गुलुं जुहुयात्सुधीः ॥ २४ ॥ ज्ञानं दिव्यमवाप्नोति तेनैव स भवेत्कविः। क्षीराक्तैरमृताखण्डैर्होमः सर्वापमृत्युजित् ॥ २५ ॥ दूर्वाभिरायुषे होमः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम्। गिरिकर्णिभवैः पुष्पैस्तुवधू-कर्णिकारजैः ॥ २६ ॥ मालतीकुसुमैर्हुत्वा तत्पुत्रांश्च वशं नयेत्। कारण्ड-

कुसुमैर्वैश्यान् वृषलान् पाटलोद्भवैः ॥ २७ ॥ आत्मानमविलेपान्तस्थित-साध्याह्वयान्वितम् । मन्त्रमुच्चार्य जुहुयान्मन्त्री मधुरलोडितैः ॥ २८ ॥ सर्षपैः पटुसंमिश्रैर्वशयेत्पार्थिवान्क्षणात् । अनेनैव विधानेन सपत्नीं तत्सुतानपि ॥ २९ ॥ जातिबिल्वफलैः पुष्पैर्मधुरत्रयसंयुतैः । नरनारी-नरपतीन्होमतो वशयेद्ध्रुवम् ॥ ३० ॥ मालतीकुसुमोद्भूतैः पुष्पैश्चन्दन-लोडितैः । जुहुयात्कवितां मन्त्री लभते वत्सरान्तरे ॥ ३१ ॥ मधुरत्रय-संयुक्तै फलैर्बिल्वसमुद्भवैः । जुहुयाद्वशयेल्लोकान्छ्रियं प्राप्नोति वाञ्छि-ताम् ॥ ३२ ॥ पाटलैः कुसुमैः कुन्दैरुत्पलैर्नागचम्पकैः । नद्यावर्तैर्विकचितैः कृतमालैर्जुहोति यः ॥३३॥ जायते वत्सरादर्वाक् श्रिया विजितपार्थिवः । साज्यैरन्ने च हुते मन्त्री भवेदन्नसमृद्धमान् ॥ ३४ ॥ कस्तूरीकुंकुमोपेतं कर्पूरं जुहुयाद्वशी । कन्दर्पादधिकं सद्यः सौन्दर्यमधिगच्छति ॥ ३५ ॥ लाजान् प्रजुहुयान्मन्त्री दधिक्षीरघृतप्लुतान् । विजित्य रोगानखिला-ञ्जीवेच्च शरदां शतम् ॥ ३६ ॥ पादद्वयं मलयजं पादं कुसुमकेशरम् । पादं गोरोचनायाश्च त्रीणि पिष्ट्वा हिमाम्भसा ॥ ३७ ॥ विदध्यात्तिलकं भाले यान्पश्वाद्यान्विलोकयेत् । यान्स्पृशेत् स्पर्शिता ये वै वश्याः स्युस्तस्य तेऽचिरात् ॥ ३८ ॥ कर्पूरकपिचोराणि समभागानि कल्पयेत् । चर्तुभागो जटामांसी तावती रोचना मता ॥ ३९ ॥ कुंकुमं सप्तभागं स्याद् द्विभागं चन्दनं मतम् । अगरं नवभागं स्यादेवं भागक्रमेण च ॥ ४० ॥ हिमाद्रिः कन्यकापिष्टमेतत्सर्वं सुसाधितम् । यो भाले तिलकं धत्ते कुर्याद्भूमि-पतीन्नरान् ॥ ४१ ॥ वासितान्मदगर्वाढ्यान्मदोन्मत्तान्मतङ्गजान् । सिंहान्व्याघ्रान्महासर्पान्भूतवेतालराक्षसान् ॥ ४२ ॥ दर्शनादेव वशयेत्ति-लकं धारयेन्नरः ।

मधु, घी तथा शहद से लिप्त लाल कमलों से अथवा हल्दी, लाल फूलों तथा दूध एवं घी सहित अन्नों से होम करने से मनुष्य संसार को वश में कर करता है । पलाश के फूलों से होम करने से साधक वाणी की सिद्धि प्राप्त करता है । सुधी साधक यदि कपूर और अगुरु सहित गुग्गुल का होम करे तो उसे दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है और वह कवि हो जाता है । दूध से सिक्त गिलोय के टुकड़ों का होम करने से मनुष्य अपमृत्यु को जीत लेता है । दीर्घायु प्राप्त करने के लिये दूध से सिक्त दूब से तीन दिन तक होम करना चाहिये । गिरिकर्णिका के फूलों से वधुकर्णिकारज से तथा मालती के फूलों से होम करने से साधक उस स्त्री के पुत्रों को वश में कर लेता है । कारण्ड के फूलों से वैश्यों को तथा पाटल के फूलों से शूद्रों को वश में कर लेता है ।

उग्रविलेपान्त में स्थित साध्य के नाम से युक्त अपने मन्त्र का उच्चारण करके साधक नमक और सरसों से होम करके क्षण में राजाओं को वश में कर लेता है । इसी विधान से सपत्नी तथा उसके पुत्रों को भी वश में कर लेता है । घी, मधु तथा शकर सहित जाती पुष्पों के फूल तथा बिल्व फलों से होम करने से स्त्री-पुरुषों को निश्चित रूप से वश में कर लेता है । चन्दन सहित मालती के फूलों से होम करने साधक एक वर्ष में कविता करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है । घी, मधु तथा शकर का होम करने से मनुष्य लोगों को वश में कर लेता है और अभीष्ट लक्ष्मी को प्राप्त करता है । पाटल, कुसुम, कुन्द, कमल तथा नागचम्पा, नद्यावंत तथा पूर्ण पुष्पित अमलतास के फूलों से जो होम करता है वह एक वर्ष के भीतर ही लक्ष्मी से राजा को भी जीत लेता है । घी से युक्त अन्न से होम करने से साधक समृद्धि प्राप्त करता है । जो कस्तूरी, कुंकुम और कपूर का होम करता है वह तत्काल कामदेव से भी अधिक सौन्दर्य प्राप्त कर लेता है । जो साधक दूध, दही तथा घी मिश्रित धान के लावा से होम करता है वह समस्त रोगों को जीतकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है । जो आधा भाग मलयगिरि का चन्दन, एक चौथाई कुसुम केसर और एक चौथाई गोरोचन को एक साथ ठण्डे पानी में पीसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाता है वह जिन पशु आदि प्राणियों को देख या स्पर्श कर लेता है वे तत्काल वश में हो जाते हैं । कपूर, शिलारस तथा रोचक सम भाग, जटामांसी चार भाग, गोरोचन चार भाग, केसर सात भाग, चन्दन दो भाग, अगर नव भाग—इन सब को ठण्डे जल में घीकुवार के साथ पीसकर जो माथे पर तिलक करता है वह मनुष्यों को राजा बना देता है । जो इस तिलक को धारण करता है वह मन्दोमत्त हाथियों, सिंहों, व्याघ्रों, सर्पों, भूतो, वेतालों तथा रासक्षों को देखने मात्र से वश में कर

(शारदातिलकेविशेषः) बिल्वप्रसूनैर्जुहुयान्महतीं विन्दते श्रियम् ॥ ४३ ॥ लवणैर्मधुसंयुक्तैर्वशयेद्वनिताजनान् । वृष्टिकामेन होतव्यं वेत-सानां समिद्वरैः ॥ ४४ ॥ वश्याय जुहुयान्मन्त्री मधुना दिवसत्रयम् । कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्स्यात्तु चतुर्दशी ॥ ४५ ॥ तिलैस्तण्डुलसंमिश्रै-र्मधुरत्रयलोलितैः । त्रिसहस्रं प्रतिदिने जुहुयात्संस्कृतेऽनले ॥ ४६ ॥ वटु-केशं समभ्यर्च्य भक्ष्यभोज्यफलान्वितः । नित्यं निवेद्य समये मध्यरात्रे बलिं हरेत् ॥ ४७ ॥ एवं जपित्वा प्रयतः सहस्राण्येकविंशतिः । समाप्ति-दिवसे रात्रावजं हत्वा बलिं हरेत् ॥ ४८ ॥ ततः कारयिता राजा

तोषयेत्साधकं धनैः । प्रयोगदिवसे नित्यं भक्ष्यभोज्यैः सदक्षिणैः ॥ ४९ ॥ विप्रान्सप्त महादेवि तोषयेद्वाञ्छितासये । समाप्तिदिवसे विप्रान्सप्तसप्त समाहितः ॥ ५० ॥ भोजयेद्वस्त्रवित्ताद्यैस्तोषयेज्जगदीश्वरि । विधानानेन सन्तुष्टो वटुकेशः प्रयच्छति ॥ ५१ ॥ तेजो बलं यशः पुत्रान्कान्ति लक्ष्मीं मनोरमाम् । नश्यन्ति शत्रवःसर्वे वर्द्धते मित्रबान्धवाः ॥ ५२ ॥ अवग्रहो न जायते विषये तस्य भूपते । जुहुयात्केवलैर्लोणैरयुतं स्तम्भनेच्छया ॥ ५३ ॥ साधयेद्विधिनानेन भस्म सर्वार्थसिद्धिदम् ।

शारदातिलक में विशेष रूप से कहा गया है कि जो बेल के फूलों से होम करता है वह महती लक्ष्मी को प्राप्त करता है । मधु से युक्त नमक से होम करने से स्त्रियों को वश में किया जा सकता है । वर्षा चाहनेवालों को बेत की समिधाओं से होम करना चाहिये । वशीकरण के लिये साधक को तीन दिन तक मधु से होम करना चाहिये । कृष्णाष्टमी से चतुर्दशी तक चावल मिश्रित तिलों में घी, मधु तथा शकर मिलाकर तीन हजार प्रतिदिन संस्कृत अग्नि में होम करने, वटुकेश की पूजा करके भक्ष्य-भोज्य से युक्त नैवेद्य की बलि मध्यरात्रि में देने तथा जितेन्द्रिय होकर इक्कीस हजार जप करने के बाद समाप्ति के दिन बकरे की बलि देनेवाले साधक को यदि राजा सन्तुष्ट करे, प्रयोग के दिनों में नित्य भक्ष्य-भोज्य तथा दक्षिणा दे और हे महादेवि ! अभीष्ट प्राप्तिके लिये सात ब्राह्मणोंको सन्तुष्ट करे; फिर साधना समाप्ति के दिन शान्त चित्त होकर एक साथ सात ब्राह्मणों को भोजन करा कर उन्हें हे जगदीश्वरी ! वस्त्र तथा धन से सन्तुष्ट करे तो इस विधि से सम्पूर्ण कृत्य करने से वटुकेश साधक को तेज, बल, यश, पुत्र, कान्ति तथा मनोरम लक्ष्मी प्रदान करते हैं । ऐसे साधक के सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं । मित्रों, बन्धु तथा बान्धवों की वृद्धि होती है । ऐसे राजा का राज्य कभी अवर्षण से त्रस्त नहीं होता । स्तम्भन की इच्छा से केवल नमक से दश हजार होम करना और उक्त विधि से सिद्ध किया गया भस्म सर्वार्थसाधक होता है ।

उशीरं चन्दनं कुष्टं घनसारं सकुंकुमम् ॥ ५४ ॥ श्वेतार्कमूलवाराही लक्ष्मीक्षीरमहीरुहाम् । त्वचो विल्वतरोर्मूलं शोषयित्वा सुचूर्णयेत् ॥ ५५ ॥ चूर्णं व्योम्नि गृहीतेन गोमयेन विमिश्रितम् । कृत्वा पिण्डाभिसंशोष्य संस्कृते हव्यवाहने ॥ ५६ ॥ मूलेन दग्ध्वा तद्भस्म शुभे पात्रे विनिःक्षिपेत् । केतकीमालतीपुष्पैर्वासयेद्भस्म शोधितम् ॥ ५७ ॥ अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं स्पृष्ट्वा भस्म सुपूजितम् । एतदादाय दिवसे प्रातः पुण्ड्रं करोति यः ॥ ५८ ॥ ब्राह्मणो वेदविधिना त्रिपुण्ड्रं धारयेत्सुधीः । शूद्रा-

द्यैर्मूलमन्त्रेण सर्वे वा मूलमन्त्रतः ॥ ५९ ॥ तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः । रिपुचोरमृगादिभ्यो भयमस्य न जायते ॥ ६० ॥ वर्द्धन्ते सम्पदः सर्वाः पूज्यन्ते सकलैर्जनैः । राजा वश्यो भवेत्तस्य सामात्यः सपरिच्छदः ॥ ६१ ॥ अभिषेकं प्रकुर्वीत् राज्ञो विजयकांक्षिणः ।

उशीर, चन्दन, कूठ, धनसार, कुंकुम, सफेद मदार की जड़, वाराही, लक्ष्मी तथा क्षीरी वृक्षों का वल्कल, बेल की जड़, इन सब को सुखाकर अच्छी तरह पीसे । आकाश में ही गृहीत गोबर के साथ इस चूर्ण को मिलाकर गोला बनाकर सुखा ले । संस्कृत अग्नि में इसका मूलमन्त्र से होम करके उसके भस्म को शुद्ध पात्र में रक्खे । केतकी तथा मालती के फूलों से उस शोधित भस्म को सुवासित करे । फिर उस भस्म को छूकर दश हजार मन्त्रों का जप करे । इस प्रकार सुपूजित भस्म से प्रतिदिन अपने माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाना चाहिये । सुधी ब्राह्मण वेदविधि से त्रिपुण्ड्र लगाये, शूद्र आदि मूलमन्त्र से त्रिपुण्ड्र लगाये अथवा सभी लोग मूलमन्त्र से त्रिपुण्ड्र लगायें तो उनके रोग, कृत्या, द्रोह और महाग्रह नष्ट हो जाते हैं । ऐसे साधक को शत्रु, चोर तथा जानवरों से भय नहीं होता । उसकी सभी सम्पत्तियों की वृद्धि होती है, सभी लोगों से वह पूजित होता है और राजा अपने मन्त्रियों तथा पार्षदों सहित उसके वश में हो जाता है । विजय की आकांक्षा रखनेवाले राजा का इस भस्म से अभिषेक करना चाहिये ।

पूर्वोक्तमण्डले क्लृप्ते वितानध्वजशोभिते ॥ ६२ ॥ सर्वतोभद्रमालिख्य कर्णिकां तस्य पूजयेत् । अष्टद्रोणप्रमाणेन शालिभिः शोभितैः शुभैः ॥ ६३ ॥ तदर्धास्तण्डुलास्तस्मिंस्तस्य दूर्वाक्षतान्वितम् । होमादिविहितं कुम्भं नवरत्नसमन्वितम् ॥ ६४ ॥ संस्थाप्य विमलैस्तोयैरापूर्यास्मिन्विनिःक्षिपेत् । क्षीरद्रुमप्रबालानि लक्ष्मीदूर्वासमायुतम् ॥ ६५ ॥ कर्पूरं चन्दनं बिल्वमुशीरं कुंकुमं पुनः । कङ्कोलमगुरुं जाति मल्लिकाचम्पकोत्पलैः ॥ ६६ ॥ गोमेददाडिमं पञ्चात्पट्टसूत्रेण वेष्टयेत् । तस्मिन्नावाह्य वटुकं राजसं सम्प्रपूजयेत् ॥ ६७ ॥ बहिरष्टसु कुम्भेषु भैरवानष्ट पूजयेत् । त्रयोदशसु कुम्भेषु त्रयोदश गणान्यजेत् ॥ ६८ ॥ बाह्ये दशसु कुम्भेषु लोकेशानर्चयेत्सुधीः । तद्बहिर्द्वचष्टकुम्भेषु श्रीकण्ठादीन्सुरेश्वरान् ॥ ६९ ॥ पञ्चत्रिंशद्घटेष्वर्चेत्कादिवर्णेश्वरान् क्रमात् । इति गन्धादिभिः सम्यक् पञ्चावरणमर्चयेत् ॥७०॥ अयुतं प्रजपेत्स्पृष्ट्वा तान्घटान्देशिकोत्तमः । पायसैः सर्पिषा शुद्धैस्तिलैर्दशशतं पृथक् ॥ ७१ ॥ जुहुयात्तान्घटान्स्पृष्ट्वा

प्रत्यहं बलिमाहरेत् । राजसोक्तप्रकारेण रात्रौ देशिकसत्तमः ॥ ७२ ॥ सुदिने शोभने लग्ने वाचयित्वा द्विजातिभिः । स्वस्तिमङ्गलवाक्यानि विशुद्धैर्वेदपारगैः ॥ ७३ ॥ नदत्सु पञ्चवाद्येषु प्रणम्य वटुकेश्वरम् । जितेन्द्रियं शुद्धकायं राजानं ब्राह्मणप्रियम् ॥ ७४ ॥ आस्तिकं शुद्धवचनमभिषिञ्चेत्प्रसन्नधीः । अभिषिक्तो नरपतिः प्रणिपत्य गुरुं परम् ॥ ७५ ॥ भूयसीं दक्षिणां दद्यात्प्रसीदति यथा गुरुः । राजाभिषिक्तो भवति साक्षाद्भूमिपुरन्दरः ॥ ७६ ॥ परान्विजयते भूपान्स्तूयतेसकलैर्नरैः । भक्ष्यभोज्यैर्धनैर्धान्यैः पूजयन्ति यशस्विनः । कृताभिषेकः षण्मासं प्रतिमासं महीपतिः ॥ ७७ ॥ इत्येकविंशत्यक्षरवटुकभैरवमन्त्रप्रयोगः ।

वितान तथा ध्वजा से शोभित पूर्वोक्त मण्डल के बन जाने पर सर्वतोभद्रमण्डल लिख कर आठ द्रोण शुभ शोभायुक्त शालि से उसकी कर्णिका का पूजन करे। उसमें उनके आधे अर्थात् चार द्रोण में चावल, दूब और अक्षत डाल देवे। होमादि विधि के लिये नव रत्नों से युक्त घड़ा स्थापित करके शुद्ध जल से उसे भरकर उसमें क्षीरी वृक्षों के कोपल, लक्ष्मी, दूब, कपूर, चन्दन, बेल, उशीर, कुंकुम, कंकोल, अगर, जाती, मल्लिका, चम्पा, कमल, गोमेद, अनार आदि से युक्त घट को वस्त्र और सूत से लपेट देवे। उसमें वटुक का आवाहन करके उनकी राजसी ढँग से पूजा करे। बारह आठ कुम्भों में आठ भैरवों की पूजा करे। तेरह कुम्भों में तेरह गणों की पूजा करे और बाहर ही दश कुम्भों में लोकेशों की पूजा करे। फिर उसके बाहर सोलह कुम्भों में श्रीकण्ठ आदि की पूजा करे। पैंतीस घड़ों में 'क' आदि वर्णों के स्वामियों की पूजा करे। इस विधि से गन्धादि से अच्छी तरह पञ्चावरणों की पूजा करे। साधक उन घड़ों का स्वर्श करके दश हजार मन्त्र का जप करे। खीर, घी तथा शुद्ध तिलों से दश हजार अलग-अलग होम करे तथा घड़ों को स्पर्श करके राजसोक्त प्रकार से प्रतिदिन रात्रि में बलि देवे। उत्तम दिन और शुभ लग्न में विशुद्ध वेदज्ञानी ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराकर पाँच प्रकार के बाजों को बजवाते हुये वटुकेश्वर को प्रणाम करके जितेन्द्रिय, शुद्धकाय, ब्राह्मणप्रिय, आस्तिक, शुद्धवाणी बोलनेवाले राजा का प्रसन्नधी साधक अभिषेक कराये। इस प्रकार अभिषिक्त होकर राजा परमगुरु को प्रणाम करके प्रचुर दक्षिणा देवे जिससे गुरु प्रसन्न होवें। तब वह अभिषिक्त राजा इस पृथिवीमण्डल का इन्द्र होता है। जिस राजा का छः मास या प्रति मास अभिषेक होता है वह अन्य राजाओं को जीत लेता है, समस्त

मनुष्यों से पूजित होता है और यशस्वी लोग धन-धान्य से उसकी पूजा करते हैं। इति एकविंशत्यक्षर वटुक भैरवमन्त्र प्रयोग समाप्त।

अथ स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रप्रयोगः ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि स्वर्णाकर्षणभैरवम् । यस्यानुष्ठानमात्रेण स्वर्णराशिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ शान्तिकं पौष्टिकं चैव वश्याकर्षणमोहनम् । मारणोच्चाटनं द्वेषस्तम्भनं च प्रशस्यते ॥ २ ॥ मन्त्रो यथा :

स्वर्णाकर्षणभैरव मन्त्र प्रयोग : अब स्वर्णाकर्षण भैरव को कह रहे हैं जिसके अनुष्ठान मात्र से स्वर्णराशि प्राप्त होती है तथा शान्तिक, पौष्टिक और वशीकरण, आकर्षण, मोहन, मारण, उच्चाटन, विद्वेषण और स्तम्भन भी सिद्ध होते हैं। ५७ अक्षरों का यह मन्त्र इस प्रकार है :

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धायलोकेश्वरायस्वर्णाकर्षणभैरवायममदारिद्र्यविद्वेषणायमहाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं' इति सप्तपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः । पंक्तिश्छन्दः । हरिहरब्रह्मात्मकस्वर्णाकर्षणभैरवो देवता । ह्रीं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । ॐ कीलकम् । स्वर्णाकर्षणभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थं स्वर्णराशिप्राप्तये स्वर्णाकर्षणभैरवमन्त्रजपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरवदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरवाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ महाभैरवाय नमः । श्रीं ह्रीं ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीं आपदुद्धारणाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामलबद्धाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ लोकेश्वराय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ स्वर्णाकर्षणभैरवाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् । अक्षयस्वर्णमाणिक्यं तडित्पूरितपात्रकम् ॥१॥ अभिलषितं महाशूलं तोमरं चामरद्वयम् । सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥ २ ॥ मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वरप्रदम् । सन्ततं चिन्तयेद्दश्यं भैरवं सर्वसिद्धिम् ॥३॥ पारिजातद्रुमकान्तारस्थिते मणिमण्डपे । सिंहासनागतं ध्यायेद्भैरवं स्वर्णदायकम् ॥ ४ ॥ गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः सन्दधतं त्रिनेत्रम् । देव्यायुतं तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥ ५ ॥

इससे ध्यान करने के बाद मानसोपचारों से पूजन करे । फिर पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में या लिङ्गतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पद्धति मार्ग से स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त देवताभ्यो नमः' इससे पूजन करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥३॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोछ कर :

'ॐ नमो भगवते स्वर्णाकर्षणभैरवयोगपीठात्मने नमः ।'

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके पुनः ध्यान करके :

ॐ गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः सन्दधतं त्रिनेत्रम् । देव्या युतं तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥ १ ॥ मन्दारद्रुममूलभाजि महति माणिक्यसिंहासने संविष्टोदरभिन्नपङ्कजरुचा देव्या कृतालिङ्गनः । भक्तेभ्यः करां रत्नपात्रभरितं स्वर्णं ददानोऽनिशं स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैकभूः ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे । पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे । इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे (स्वर्णाकर्षण भैरव पूजन यन्त्र देखिये चित्र २८) :

अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि क्रम से :

ॐ आकाशाय नमः[१] । मूर्ध्नि पूजयामि ॥ १ ॥ ॐ समीरणाय नमः[२] । मुखे पूजयामि ॥ २ ॥ ॐ दहनाय नमः[३] । बाह्वोः पूजयामि ॥ ३ ॥ ॐ वैवर्ताय नमः[४] । हृदि पूजयामि ॥ ४ ॥ ॐ विश्वम्भराय नमः[५] । उदरे पूजयामि ॥ ५ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः[६] । कटौ पूजयामि ॥ ६ ॥ ॐ जनार्दनाय नमः[७] । जानुनोः पूजयामि ॥७॥ ॐ इन्द्राय नमः[८] । पादयोः पूजयामि ॥८॥

इससे अष्टाङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलविन्दु डालकर 'समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः स्वर्णाकर्षणभैरवाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद त्रिकोण के मध्य पूर्वकोण में :

ॐ वटुकभैरवाय नमः[९] । वटुकभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ईशानकोणे ॐ कालभैरवाय नमः[१०] । कालभैरवश्रीपा० ॥ २ ॥ अग्निकोणे ॐ क्षेत्रपालभैरवाय नमः[११] । क्षेत्रपालभैरवश्रीपा० ॥ ३ ॥

इस प्रकार पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलविन्दु डालकर 'समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः स्वर्णाकर्षण भैरवाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु', यह कहे । इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद त्रिकोण के बाहर षट्कोणों में आग्नेयादि क्रम से :

अग्निकोणे ॐ आपदुद्धारणाय नमः[१२] । आपदुद्धारणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ नैर्ऋत्यकोणे । ॐ अजामलबद्धाय नमः[१३] । अजा-

मलबद्धपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ वायुकोणे ॐ लोकेश्वराय नमः[१४] । लोकेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ऐशान्ये । ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः[१५] । स्वर्णाकर्षणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ प्राच्याम् । ॐ मम दारिद्र्यविद्वेषणाय नमः[१६] । मम दारिद्र्यविद्वेषणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ पश्चिमे । ॐ श्रीमहाभैरवाय नमः[१७] । श्रीमहाभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥

इससे पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलविन्दु डालकर 'समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षण-भैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु', यह कहे । इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद वृत्त में पूर्वादि क्रम से :

ॐ असिताङ्गभैरवाय ब्राह्मीशक्तिहिताय नमः[१८] । ब्राह्मीशक्तिसहितासिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय माहेश्वरीशक्ति सहिताय नमः[१९] । माहेश्वरीशक्तिसहितरुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ चण्डभैरवाय कौमारीशक्तिसहिताय नमः[२०] । कौमारीशक्तिसहितचण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय वैष्णवीशक्तिसहिताय नमः[२१] । वैष्णवीशक्तिसहितक्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय वाराहीशक्तिसहिताय नमः[२२] । वाराहीशक्तिसहितोन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ ॐ कपालिभैरवाय नारसिंहीशक्तिसहिताय नमः[२३] । नारसिंहीशक्तिसहितकपालिभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ॐ भीषणभैरवाय चामुण्डाशक्तिसहिताय नमः[२४] । चामुण्डाशक्तिसहितभीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय चण्डिकाशक्तिसहिताय नमः[२५] । चण्डिकाशक्तिसहितसंहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥

इस प्रकार आठों भैरवों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ १ ॥

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ भैरव के ऊपर जलविन्दु डालकर 'समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षण भैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु', यह कहे । इति चतुर्थावरण ॥४॥

इसके बाद वर्तुल से बाहर अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ आदित्याय स्वशक्तिसहिताय नमः[२६] । स्वशक्तिसहितादित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ सोमाय स्वशक्तिसहिताय नमः[२७] । स्वशक्तिसहितसोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ भौमाय स्वशक्तिसहिताय नमः[२८] । स्वशक्तिसहितभौमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ बुधाय स्वशक्तिसहिताय नमः[२९] । स्वशक्तिसहितबुधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ जीवाय स्वशक्तिसहिताय नमः[३०] । स्वशक्तिसहित जीवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय स्वशक्तिसहिताय नमः[३१] । स्वशक्तिसहितशुक्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चराय स्वशक्तिसहिताय नमः[३२] । स्वशक्तिसहित शनैश्चरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥ ॐ राहवे केतवे च स्वस्वशक्तिसहिताय नमः[३३] । स्वस्वशक्तिहितराहुकेतुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥

इस प्रकार नवग्रहों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलविन्दु डालकर 'समुद्राः सचक्रकाः सायुधाः सवाहनाः सशक्तिकाः सपरिवाराः स्वर्णाकर्षण भैरवाः सर्वोपचारैः पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति पञ्चमावरण ॥५॥

इसके बाद भूपुर के भीतर देव के दाहिने :

ॐ पूजाविधिसिद्धयै नमः[३४] । पूजाविधिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ रससिद्धयै नमः[३५] । रससिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ स्वर्णसिद्धयै नमः[३६] । स्वर्णसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥

इससे पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

इससे पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से भैरव के ऊपर जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

इसके बाद भूपुर के बाहर देवता के वामभाग में :

ॐ भूतप्रेतपिशाचवेतालसुरेभ्यो नमः१७। भूतप्रेतपिशाचवेतालासुरश्री-पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इससे पूजा करे। इति सप्तमावरण ॥ ७ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और उसके बाहर वज्रादि आयुधों की पूजा करे। इति अष्टमा-नवमावरण ॥ ८-९ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य देवं ध्यात्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तथा च। 'लक्षं जपेद्दशांशेन पायसैर्जुहुयात्सुधीः। दशांशं तर्पयेत्पश्चाद्धोमयेच्च दशांशकम् ॥ १ ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्मन्त्रसिद्धिर्न संशयः। एवं सिद्धे कृते मन्त्रे अयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥ २ ॥ दारिद्र्यं दूरमुत्क्षिप्य जायते धनदोपमः। करवीरैर्जातिपुष्पैर्जपादाडिमसम्भवैः ॥ ३ ॥ रक्तप्रसूनैर्जुहुयात्सौभाग्यं च समश्नुते। सिद्धद्रव्येण जुहुयाल्लभ्यन्ते चाष्टसिद्धयः ॥४॥ पायसेनापि जुहुयाल्लभ्यते सकलं फलम्। आज्यं च जुहुयाद्देवि ऐहिकामुष्मिकं फलम् ॥ ५ ॥ मन्त्रसिद्धिं च लभते चन्दनादींधनैः क्रमात्। इति स्वर्णाकर्षणभैरवसप्तपञ्चाशदक्षरमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके देव का ध्यान करके जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। कहा भी गया है कि एक लाख जप करके सुधी साधक उसका दशांश खीर से होम करे। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन से मन्त्र निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर मन्त्र का दश हजार जप करने से साधक की दरिद्रता दूर होती है और वह कुबेर के समान हो जाता है। करवीर तथा जाती के फूलों, अढउल और अनार के लाल फूलों से साधक यदि होम करे तो वह सौभाग्य प्राप्त करता है। सिद्ध द्रव्यों से होम करने से उसे आठ सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। खीर से हवन करने से सभी फल प्राप्त होते हैं। हे देवि! जो घी से होम करता है वह भी ऐहिक और पारलौकिक फल पाता है। चन्दन की समिधाओं से होम करने पर साधक क्रमशः मन्त्रसिद्धि प्राप्त करता है। इति स्वर्णाकर्षण भैरव सप्तपञ्चाशदक्षर मन्त्र पुरश्चरण प्रयोग।

अथ वटुकभैरववीरसाधनप्रयोगः।

श्रीपार्वत्युवाच। भगवन्देवदेवेश रहस्यं वटुकस्य मे। ब्रूहि येन वशीकुर्युः साधका भैरवं शिवम् ॥ १ ॥

वटुकभैरव वीरसाधन प्रयोग : श्रीपार्वती बोली : हे भगवन्, देवदेवेश! आप मुझे वटुक का रहस्य बतायें जिससे साधकगण भैरव और शिव के बिना भी सबको वश में कर सकें।

ईश्वर उवाच। शृणु देवि परं गोप्यं कथयामि सुशोभने। रहस्यं सिद्धिदं साक्षाद्वटुकस्य महात्मनः ॥ २ ॥ सर्वे वटुकदेवस्य साधने ये निरूपिताः। उपाया निष्फला एव विनैकं वीरसाधनम् ॥ ३ ॥ येश्चान्यसाधनं हित्वा उपायं चान्यमाश्रयत्। न च सिद्धिमवाप्नोति नरो वर्षशतैरपि ॥ ४ ॥

ईश्वर बोले : हे देवि! सुशोभने! मैं परम गोपनीय साक्षात् वटुक महाराज का सिद्धिदायक रहस्य तुम्हें बता रहा हूं। वटुकदेव के साधन में जो उपाय बताये गये हैं वे सभी उपाय एकमात्र वीरसाधन के बिना निष्फल हैं। जो अन्य साधन के हितार्थ अन्य उपायों का आश्रय लेते हैं वे सैकड़ों वर्षों में भी सिद्धि नहीं प्राप्त कर सकते।

तत्र प्रयोगो यथा। साधकेन्द्रः कृतनित्यक्रियः पालाशपत्रकृतषोडशपुटेषु जलेन प्रफुल्लितान् सुपक्वान् माषान् मुद्गान् मसूरान् चणकान् ओदनक्षीरापूपान् सुहालीन (शष्कुलि) एकैकपदार्थं द्विद्विपात्रे एवं षोडशपात्रे सम्पूर्य अन्यपात्रे किञ्चिदधिकं च पूर्वोक्तं सर्वं कन्यया कर्तितं कर्पाससूत्रं कुंकुमेन रञ्जितान् क्षीरवृक्षभवानष्टौ कीलान् स्तम्भार्थमेकं कीलं तेभ्यः स्थलान्नव कीलान् गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपान् अष्टौ ताम्बूलानि च फलानि गृहीत्वा उत्तरसाधकसहितः श्मशाननिकटे गत्वा पादौ प्रक्षाल्य आचम्य स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा बद्धाञ्जलिरिदं वाक्यं वदेत्।

इसमें प्रयोग इस प्रकार है : साधकेन्द्र नित्यक्रिया से निवृत होने के पश्चात् पलाश के सोलह दोने बनाकर उनमें जल से फुलाये हुये पके उड़द, मूंग, मसूर, चने, भात, खीर, पूए और शष्कुलि (एक प्रकार की रोटी) इनमें से एक-एक पदार्थ दो-दो दोनों में और इस प्रकार सोलह दोनों को भरकर, एक अन्य पात्र में कुछ अधिक रखकर, कन्या द्वारा काता हुआ और कुंकुम में रंगा सूत, क्षीरीवृक्ष की लकड़ी की आठ कीलें, और एक कील मध्य स्तम्भ के लिये, इस प्रकार नव कील, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि, आठ ताम्बूल

तथा फल आदि लेकर इनके साथ साधक श्मशान के निकट जाकर पाँव धोकर और आचमन करके अपने इष्टदेवता का ध्यान करने के बाद हाथ जोड़ कर यह वाक्य बोले :

'ॐ अत्र श्मशाने याः काश्चिद्देवता निवसन्ति हि। ताः प्रयच्छन्तु मे सिद्धि प्रसन्नाः सन्तु पान्तु माम् ॥ १ ॥'

इससे प्रार्थना करके इस प्रकार आत्मरक्षा करे। अक्षत लेकर :

'ॐ पूर्वे मां शङ्करः पातु तथाग्नेय्यां च शूलधृक्। कपाली दक्षिणे पातु नैर्ऋत्ये जटिलोवतु ॥ १ ॥ पश्चिमे पार्वतीनाथो वायव्ये प्रमथाधिपः। उत्तरे मुण्डमालोव्यादेशान्ये वृषभध्वजः ॥ २ ॥ ऊर्ध्वं पातु तथा शम्भुरधस्ताद्धूलिधूसरः। अग्रतो भैरवः पातु पृष्ठतः पातु खेचरः ॥ ३ ॥ दक्षिणे भूचरः पातु वामे च पिशिताशनः। केशान्पातु विशालाक्षो मूर्धानं च मरुत्प्रियः ॥ ४ ॥ मस्तकं पातु भूतेशो नेत्रे पातु महामनाः। कपोलो पातु वीरेशो गण्डौ गण्डाभिमर्दनः ॥ ५ ॥ उत्तरोष्ठे विरूपाक्षो ह्यधरे योगिनीप्रियः। अक्षेषु दक्षविध्वंसी चिबुके तु कपालधृक् ॥ ६ ॥ कण्ठे रक्षतु मां देवो नीलकण्ठो जगद्गुरुः। दक्षस्कन्धे गिरीन्द्रेशो वामस्कन्धे वसुञ्जयः ॥ ७ ॥ दक्षिणे च भुजे सर्वमन्त्रनाथः सदाऽवतु। वामे भुजे सार्वभौमो हृदये पातु पाण्डुरः ॥ ८ ॥ दक्षहस्ते पशुपतिर्वामे पातु महेश्वरः। उदरे सर्वकल्याणकारकोवतु मां सदा ॥ ९ ॥ नाभौ कामप्रविध्वंसी जंघे पातु दयामयः। जानुनी पातु जामित्रो गुल्फौ गौरीपतिः सदा ॥ १० ॥ पादपृष्ठे सामनिधिस्तथा पादांगुलीर्हरः। पादाधः पातु सततं व्योमकेशो जगत्प्रियः ॥ ११ ॥'

इन आत्मरक्षा मन्त्रों को पढ़कर पूर्वादि दिशाओं में रक्षा बीजमन्त्रों को पढ़े :

ॐ ह्लांह्लींह्लूंह्लः नमः पूर्वे ॥ १ ॥ ॐ ह्लि ह्लु ह्लों नमः आग्नेये ॥ २ ॥ ॐ ह्लौंश्रीं नमः दक्षिणे ॥ ३ ॥ ॐ ग्लूं ब्लंनगनग नमः नैर्ऋत्ये ॥ ४ ॥ ॐ प्रूं प्रूं प्रूं संसः नमः पश्चिमे ॥ ५ ॥ ॐ भ्रां भ्रां नमः वायव्ये ॥ ६ ॥ ॐ भ्रां भैरवाय नमः उत्तरे ॥ ७ ॥ ॐ भ्रांभ्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये ॥ ८ ॥ ॐ भ्रां ग्लौं ब्लं नमः ऊर्ध्वे ॥ ९ ॥ ॐ घ्रांघ्रंघ्रः नमः अधोदेशे ॥ १० ॥

इति पठन् नमस्कुर्यात्। ततः पूर्वाद्यष्टदिक्षु कीलाष्टकं मध्यश्मशाने च स्तम्भनार्थं स्थलकीलकं च निखाय पूजासाहित्यं मध्यस्तम्भसमीपे संस्थाप्य पूर्वाभिमुखो भैरवं प्रार्थयेत्।

इस प्रकार पढ़कर नमस्कार करे।

इसके बाद पूर्वादि आठ दिशाओं में आठ कीलें और मध्य श्मशान में स्तम्भ के लिये एक स्थल कील गाड़कर पूजा सामग्री को मध्य स्तम्भ के समीप रखकर पूर्वाभिमुख होकर भैरव की प्रार्थना करे :

ॐ भां भैरवाय नमः। भां भैरव भैरव भयङ्कर हर मां रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा।

इति प्रार्थयेत्। ततः सिद्धमाषादिभरितपलाशपुटकं गन्धपुष्पधूपदीपादिपूजासामग्रीं गृहीत्वा पायसोदकपात्रहस्तो निर्भयः पूर्वकीलकसमीपं गत्वा तत्र : ॐ लं इन्द्र साङ्गसपरिवार इहागच्छागच्छ इतीन्द्रमावाह्य ततः ऐरावतारूढं वज्रहस्तं पीतवर्णं सहस्राक्षं सुरगणपरिवारम्। इति ध्यात्वा ततः 'ॐ लं इन्द्राय नमः। आसनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र माषपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् :

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद पके हुये उड़द आदि से भरे पलाश के दोनों को और गन्ध, पुष्प, दीप आदि पूजा सामग्री तथा पानी का पात्र हाथ में लेकर निर्भय होकर पूर्व की कील के समीप जाकर वहाँ 'ॐ लं इन्द्र सांगसपरिवार इहागच्छागच्छ' इससे इन्द्र का आवाहन करके वहाँ 'ऐरावतारूढं वज्रहस्तं पीतवर्णं सहस्राक्षं सुरगणपरिवारम्', इससे ध्यान करके 'ॐ लं इन्द्राय नमः' इससे आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप आदि उपचारों से पूजन करके उसके आगे जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें उड़द के दोने को रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं भो इन्द्र सुरनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनी सिद्धि मे देहि रक्ष मामिमं माषबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट्'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ १ ॥

इसके बाद आग्नेय कोण के कील के समीप जाकर वहाँ :

'ॐ रं अग्ने साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ।

इससे अग्नि का आवाहन करके :

मेषारूढं शक्तिहस्तं त्रिनेत्रं तेजोनिधिं। इति ध्यात्वा :

ॐ रं अग्नये नमः। इत्यासनार्घ्यपाद्याचमनस्नानगन्धपुष्पाक्षतधूपदीपोपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मुद्गभरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् :

इससे ध्यान करके 'ॐ रं अग्नये नमः' इससे आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप आदि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें मूंग से भरे दोने को रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बांये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ रंरांहंरूंरिरींह्लिह्लूंह्लोंअग्ने तेजोनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनीं सिद्धि मे देहि इमं मुद्गबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट्'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ २ ॥

इसके बाद दक्षिण दिशा की कील के समीप जाकर वहाँ :

ॐ मं यम साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे यम का आवाहन करके :

महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं प्रेतगणपरिवेष्टितं ।

ध्यात्वा ॐ वं यमाय नमः । इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मसूरभरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ मं यमाय नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर मसूर से भरे दोने को उसमें रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बांये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

ॐ प्रां प्रीं प्रूं भो यम प्रेताधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इमं मसूर-बलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् ।

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ३ ॥

इसके बाद नैर्ऋत्य कोणगत कील के समीप जाकर वहाँ :

'ॐ क्षं निर्ऋते साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे नैर्ऋति का आवाहन करके :

प्रेतारूढं धूम्रवर्णं खड्गहस्तं रक्षोभिः परिवृतं । इति ध्यात्वा :

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र चणकपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ क्षं निर्ऋतये नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें चने से भरे

दोने को रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बांये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ फ्रंफ्रांफ्रेंहूंहूंग्रेंग्रेंह्लौंह्लौंभोभो रक्षनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इदं चणकबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् ।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ४ ॥

इसके बाद पश्चिम दिशागत कील के समीप जाकर वहाँ :

ॐ वं वरुण साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे वरुण का आवाहन करके :

मकरारूढं पाशहस्तं श्वेतवर्णं यादोगणपरिवारसहितं ।

इति ध्यात्वा ॐ वं वरुणाय जलनाथाय नमः इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्रौदनपूरितपात्रं निधाय दक्षहस्तेन जलं गृहीत्वा वामहस्ते तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ वरुणाय जलनाथाय नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें भात के दोने को रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर बांये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ ब्रांब्रींब्रूंभोभो वरुण जलनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धि मे देहि इममोदनबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् ।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ५ ॥

इसके बाद वायुकोणगत कील के समीप जाकर वहाँ :

'ॐ यं वायो साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे वायु का आवाहन करके :

मृगारूढं वृक्षायुधधरं स्वमरुद्गण सहितं ।

ध्यात्वा ॐ यं वायवे नमः । इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र पायसपूरितं पुटकं निधाय दक्ष हस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ यं वायवे नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें खीर का दोना रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर बांये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ वांवींवूं ॐ व्रांव्रांव्रं भोभो वायो भुवनपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं पायसबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट्।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ६ ॥

इसके बाद उत्तर दिशागत कील के समीप जाकर वहाँ :

ॐ कुं कुबेर साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे कुबेर का आवाहन करके :

नरवाहनं गदाहस्तं शुक्लवर्णं यक्षगणपरिवेष्टितं :

ध्यात्वा ॐ कुं कुबेराय नमः इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्रापूपपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ कुं कुबेराय नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें पूये का दोना रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ कूंकूंकूं ॐ कांकांकां भोभो यक्षनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इममपूपबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् ।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ७ ॥

इसके बाद ईशान कोणगत कील के समीप जाकर वहाँ :

'ॐ हं ईशान साङ्ग सपरिवार इहागच्छागच्छ ।

इससे ईशान का आवाहन करके :

वृषभारूढं शूलहस्तं श्वेतवर्णं विद्यागणसेवितमीशानं ।

ध्यात्वा ॐ हं ईशानाय नमः । इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र शष्कुलीपूरितपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन् ।

इससे ध्यान करके 'ॐ हं ईशानाय नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके उसके सामने जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें शष्कुलि के दोने को रखकर दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करके :

'ॐ श्रांश्रींश्रूं ॐ श्रांश्रांश्रां भोभो ईशान विद्याधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं शष्कुलीबलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् ।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर, ताम्बूल देकर प्रणाम करे ॥ ८ ॥

इस प्रकार आठों दिक्पालों को बलि देने के बाद मध्य स्तम्भ के समीप जाकर निर्भय होकर वहाँ ह्लां ह्लीं ह्लूं स्तम्भाय नमः' इससे आसनादि उपचारों से पूजन करके मन्त्रमय कवच का पाठ करे । मन्त्रमय कवच इस प्रकार है :

'ॐ ह्लांह्लींह्लूंह्लः क्षांक्षींक्षूंक्षः ख्रांख्रींख्रूंख्रः घ्रांघ्रींघ्रूंघ्रः म्रांम्रींम्रूंम्रः म्रोंम्रोंम्रोंम्रों क्लोंक्लोंक्लोंक्लों श्रोंश्रोंश्रोंश्रों ज्रोंज्रोंज्रोंज्रों हुंहुंहुंहुंहुंहुंहुंहुं फट् सर्वतो रक्षरक्षरक्षरक्ष भैरवनाथनाथ हुं फट् ।'

इति मन्त्ररूपकवचद्वारा स्वशरीरे व्यापकरूपेणात्मरक्षां कृत्वा स्तम्भसमीपे स्वासने पूजिते पूर्वाभिमुख उपविश्य स्वपुरतः स्तम्भात् पश्चिमे भूतले यन्त्रं लिखित्वा तन्मध्ये देवमावाह्य आसनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य अङ्गादि सम्पूज्य तत्राष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ।

इस मन्त्ररूप कवच द्वारा स्वशरीर में व्यापक रूप से आत्मरक्षा करके स्तम्भ के समीप अपने पूजित आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर अपने आगे स्तम्भ से पश्चिम भूमि पर यन्त्र (देखिये चित्र २९) लिखकर उसके बीच देव का आवाहन करके आसनादि षोडशोपचारों से पूजन करके अङ्गादि की पूजा करे । फिर पूज्य और पूजक के बीच प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः[८] ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः[९] ॥ २ ॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः[१०] ॥ ३ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः[११] ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः[१२] ॥ ५ ॥ ॐ कपालभैरवाय नमः[१३] ॥ ६ ॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः[१४] ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय नमः[१५] ॥ ८ ॥

इससे आठ भैरवों की पूजा करे । इसके बाद षोडशदलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ कुलिशाय नमः[१६] ॥ १ ॥ ॐ सुकुलीशाय नमः[१७] ॥ २ ॥ ॐ जामित्राय नमः[१८] ॥ ३ ॥ ॐ रामठाय नमः[१९] ॥ ४ ॥ ॐ अरिभाय नमः[२०] ॥ ५ ॥ ॐ प्रचण्डाय नमः[२१] ॥ ६ ॥ ॐ चण्डकेशाय नमः[२२] ॥ ७ ॥ ॐ चण्डात्मने नमः[२३] ॥ ८ ॥ ॐ चामराय नमः[२४] ॥ ९ ॥ ॐ चरित्राय नमः[२५] ॥ १० ॥ ॐ चमत्काराय नमः[२६] ॥ ११ ॥ ॐ चञ्चलाय नमः[२७]

॥ १२ ॥ ॐ चारुभूषणाय नमः[28] ॥ १३ ॥ ॐ चामीकराय नमः[29] ॥ १४ ॥ ॐ चारुवाहाय नमः[30] ॥ १५ ॥ ॐ चारुवाहांकिताय नमः[31] ॥ १६ ॥

इसमें बटुक के १६ मित्रों की पूजा करे।

फिर उसके बाहर अष्टदलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[32] ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[33] ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः[34] ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[35] ॥ ४ ॥ ॐ वाराह्यै नमः[36] ॥ ५ ॥ ॐ नरसिंह्यै नमः[37] ॥ ६ ॥ ॐ चामुण्डायै नमः[38] ॥ ७ ॥ ॐ चण्डिकायै नमः[39] ॥ ८ ॥

इसमें आठ मातृकाओं की पूजा करे।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश[40-49] दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि[50-59] च सम्पूज्य पुनः मध्ये श्रीवटुकभैरवं धूपादिनमस्कारान्तं पूजयित्वा पायसनैवेद्यं दत्त्वा अक्षतानादाय स्थापितयन्त्रदेवतामण्डले विकिरन् वीरशान्ति पठेत्। तथा च।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों (४०—४९) तथा वज्रादि आयुधों (५०—५९) की पूजा करने के बाद पुनः मध्य में श्री वटुकभैरव की धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके खीर का नैवेद्य देने के बाद अक्षत लेकर उसे स्थापित यन्त्रदेवतामण्डल में बिखेरते हुये वीरशान्ति का इस प्रकार पाठ करे :

'ॐ श्मशानदेशे ये वीराः शिरस्यादाय शासनम्। मम स्थिता निकृन्तन्ति साधकानां मनोरथान्। अपूजिताः पूजितास्ते सर्वकाम फलप्रदाः ॥ १ ॥

इस प्रकार वीरशान्ति का पाठ करके वहीं पर :

ॐ चण्ड आयाहि ॥ १ ॥ ॐ प्रचण्ड आयाहि ॥ २ ॥ ॐ ऊर्ध्वकेश आयाहि ॥ ३ ॥ ॐ भीषण आयाहि ॥ ४ ॥ ॐ प्रभीषण आयाहि ॥ ५ ॥ ॐ व्योमकेश आयाहि ॥ ६ ॥ ॐ व्योमवाह आयाहि ॥ ७ ॥ ॐ व्योमव्यापक आयाहि ॥ ८ ॥

इति पृथकपृथक गन्धादिभिरुपचारैः सम्पूज्य पायसनैवेद्यं च पृथक्-पृथक समर्प्य निर्भयः सन् पश्चिमाभिमुखः प्राणायामऋष्यादिन्यास-पूर्वकं प्रयोगोक्तान् न्यासान् कृत्वा प्राग्वन्मालां सम्पूज्य मूलमन्त्रस्याष्टाक्षरपदोच्चारणपूर्वकमुच्चैःस्तवराजं पठित्वा प्रसन्नचित्तो मूलमन्त्रं जपेत्। तदा देवतायामागतायांवामहस्तेन पायसपात्रमादाय दक्षिण-हस्तेन देवं भोजयेत्। ततस्तृप्तो देवो वरं वरयेति ब्रूयात्तदा दण्डवद्-

भूमौ प्रणम्य निजेप्सितवरं गृहीत्वा स्वयं गत्वा महोत्सवं कुर्यात्। तथा च (रुद्रयामले) 'भैरवाय समीपे तु वामहस्तेन पायसम्। भोजयेच्च-जपं कुर्यान्निर्भय प्रीतमानसः ॥ १ ॥ तृप्तो देवो यदा ब्रूयाद्वरं वरय वाञ्छितम्। प्रणम्य दण्डवद्भूमौ वाञ्छितं वरमुच्चरन् ॥ २ ॥ गृहे-चागत्य प्रयत उत्सवं च समाचरेत्। अनेन मनुना देवि सिद्धो भवति भूतले ॥ ३ ॥ असाध्यं नास्ति लोकेषु सत्यंसत्यं मयोदितम् ॥ ४ ॥' इति वीरसाधनप्रयोगः।

इससे पृथक्-पृथक् गन्ध आदि उपचारों से पूजन करके खीर का नैवेद्य पृथक्-पृथक् समर्पित करे। फिर निर्भय होकर पश्चिमाभिमुख प्राणायाम और ऋष्यादि न्यास पूर्वक प्रयोगोक्त न्यास करके पूर्ववत माला की पूजा करके मूलमन्त्र के अष्टाक्षर पदोच्चारण पूर्वक उच्चस्वर से स्तवराज का पाठ करे और फिर प्रसन्नचित्त होकर मूलमन्त्र का जप करे। तब देवता के आ जाने पर बांये हाथ से खीर के पात्र को लेकर दाहिने हाथ से देव को भोजन कराये। इससे प्रसन्न होकर जब वह 'वर माँगो' यह बोले तब दण्ड-वत भूमिपर लेटकर प्रणाम करके अपना अभीष्ट वर लेकर स्वयं जाकर महोत्सव करे। रुद्रयामल में कहा गया है कि भैरव के समीप बांये हाथ से खीर खिलाये और प्रसन्न होकर जप करे। उससे तृप्त होकर जब देव यह कहे कि 'वर माँगो' तब भूमि पर दण्डवत लेट कर प्रणाम करने के बाद वाञ्छित वर माँग कर और घर आकर प्रसन्नतापूर्वक उत्सव करे। हे देवि ! इस मन्त्र से साधक पृथिवी पर सिद्ध हो जाता है। संसार में कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता। यह मेरा कथन सत्य, बिल्कुल सत्य है। इति वीरसाधन प्रयोग।

अथ वटुकभैरवदीपदानप्रयोगः।

वटुकभैरव दीपदान प्रयोग : शिवसागर में कहा गया है :

पार्वत्युवाच। देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक। दीपदानविधिं ब्रूहि वटुकस्य महात्मनः ॥ १ ॥

पार्वती बोलीं : हे देवदेव, जगन्नाथ, भक्तों पर अनुग्रह करनेवाले ! महात्मा बटुक के दीपदान की विधि आप बतायें।

महादेव उवाच। नोक्तः पूर्वं महेशानि दीपो वै भैरवस्य च। आपत्काले महादेवि दीपयागं समाचरेत् ॥ २ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं च

योगः करणं शशी। न राशिर्न च सूर्यादिग्रहांश्चैव विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥ यथाकामनया ध्यात्वा दीपदानं प्रयोजयेत्। दीपनाशे पुनर्दीपं कृत्वा शान्ति तु कारयेत् ॥ ४ ॥ त्रिपञ्चसप्तनवभिः पात्रं कृत्वा विचक्षणः। शुभे सौम्यमुखो दीपो ह्यशुभे दक्षिणामुखः ॥ ५ ॥

महादेव बोले : हे महेशानि ! मैंने भैरव का दीपदान पहले नहीं कहा था। हे महादेवि ! आपत्काल में दीपयज्ञ करना चाहिये। इसमें तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रमा, राशि तथा सूर्य आदि ग्रहों का भी विचार नहीं करना चाहिये। यथाकामना ध्यान करके दीपदान प्रयोग करना चाहिये। दीप के नष्ट हो जाने पर विचक्षण साधक को पुनः दीप निर्माण और तीन, पाँच, सात या नव पात्र तैयार करके शान्ति करना चाहिये। शुभ कर्मों में दीपक का मुख पूर्व दिशा की ओर होता है और अशुभ कार्यों में दीप को दक्षिण मुख रखना चाहिये।

(तत्र मुहूर्तनिर्णयः)।

वैशाखश्रावणाश्विनकार्तिकेयादिपञ्चके। शुक्लपक्षे प्रकर्तव्या यावत्कृष्णा च पञ्चमी ॥ १ ॥ सप्तमी पूर्णिमा चैव द्वितीया पञ्चमी तथा। त्रयोदशी च दशमी तृतीया प्रतिपत्तथा ॥ २ ॥ द्वादशी च तथा षष्ठी ह्येताः स्युस्तिथयः शुभाः। वृद्धिवैधृतिपाताश्च ये ते योगाः शुभाः स्मृताः ॥ ३ ॥ बालवं कौलवं चैव गरं चेति शुभानि वै। ग्रीष्मं विना शुभाः एव ऋतवः परिकीर्तितः ॥ ४ ॥ मासद्वयात्मकाः श्रेष्ठा दिनं दिनार्द्धमेव च ॥ ५ ॥ सूर्योदयं समारभ्य यावदस्तं गतो रविः। अहोरात्रप्रमाणेन ग्रीष्माद्याः परिकीर्तिताः ॥ ६ ॥ दिवा पूर्वाह्णकोः कालः रात्रौ निशीथ एव च। यद्वा सर्वत्र रात्रौ तु सूर्यचन्द्रोपरागयोः। अर्द्धोदये महाष्टम्यां कालमोहौ च रात्रिके ॥ ७ ॥

दीपदान का मुहूर्तनिर्णय : वैशाख, श्रावण, आश्विन्, कार्तिक आदि से लेकर अगले पाँच महीनों, अर्थात् वैशाख से फाल्गुन तक के महीनों का शुक्लपक्ष की पञ्चमी से कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक दीपदान प्रशस्त माना गया है। इनमें भी प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तिथियाँ विशेष शुभ हैं। वृद्धि, वैधृति और पातयोग शुभ माने गये हैं। बालव, कौलव और गर ये करण शुभ हैं। ग्रीष्म को छोड़ कर दो-दो मास की पाँच ऋतुयें शुभ कही गई हैं जिनमें दिन और दिनार्द्ध शुभ है। सूर्योदय से लेकर सुर्यास्त तक अहोरात्र प्रमाण को ग्रीष्मादि ऋतुयें कहा गया है। दिन का पूर्वाह्ण अथवा रात्रि का पूर्वाह्ण, निशीथ-

काल, अथवा जब सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण लगा हो तब सदा शुभ है। महाष्टमी में जब चन्द्रमा का अर्द्धोदय हो तथा कालरात्रि और मोहरात्रि भी दीपदान में शुभ हैं।

अथ कार्यपरत्वेन पात्रविस्तारे तैलमानम्।

विंशत्पलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये षडंगुलम्। विस्तारे चांगुलान्येव षोडश परिकीर्तितम् ॥ १ ॥ पञ्चाशत्पलगव्यं च वश्ये चौर्यादिकर्मणि। त्रिंशद्दशपले पात्रे मानं तद्वत्प्रकीर्तितम्। षष्टिपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये नवांगुलम्। अंगुलानि चतुर्विंशदायामे परिकल्पयेत् ॥ ३ ॥ पञ्चसप्तमिते तैले सर्वशत्रुविनाशनम्। द्विपञ्चाशत्पले पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षष्ठिमत् ॥ ४ ॥

कार्यपरत्व दृष्टि से पात्रानुसार तेलमान : बीस पलवाले पात्र की गहराई नीचे से ऊपर तक ६ अँगुल तथा विस्तार १६ अँगुल कहा गया है। पचास पल गाय का घी वशीकरण और चौर्यादि कर्मों में कहा गया है। चालीस पलवाले पात्र में मान उसी के अनुसार कहा गया है। साठ पलवाले पात्र में नीचे से ऊपर तक की ऊँचाई नव अँगुल तथा विस्तार चौबीस अँगुल बनाना चाहिये। पैंतीस पल तेलवाला दीपक सब शत्रुओं का विनाशक है। बावन पलवाले पात्र की ऊँचाई नीचे से ऊपर तक साठ पलवाले दीपक के समान होनी चाहिये।

शतं पलमिते तैले दीपाद्वैरिविनाशनम्। शतं पलमिते पात्रे चोच्छ्रायो द्वादशांगुलः ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशच्चैव ह्यायामे तन्मध्ये तु सहस्रकम्। सर्वकर्मणि सिद्धिः स्याद्दीपे पलसहस्रके ॥ ६ ॥ सपादशतपात्रे च पञ्चोत्तरशताधिके। पञ्चदशांगुलोच्छ्रायं व्यायामे षट् च त्रिंशके ॥ ७ ॥ अयुतपलदीपश्च निगडाद्विमुक्तये। सहस्रपलदीपे च बन्दिमोक्षः प्रजायते ॥ ८ ॥ त्रिंशत्पलमिते पात्रे मान्यं चैव तु पूर्ववत्। त्रिंशत्पलमिते तैले दिनान्येकोनविंशतिः ॥ ९ ॥ कन्याभिकांक्षी तैलेन प्रत्यहं दीपमाचरेत्। इच्छितां लभते कन्यां भैरवस्य प्रसादतः ॥ १० ॥

सौ पलवाले दीपक से शत्रुओं का विनाश होता है। सौ पलवाले दीपक की ऊँचाई बारह अँगुल तथा उसका विस्तार बत्तीस अँगुल होना चाहिये। उसके मध्य में एक हजार पलवाला दीपक रक्खे। एक हजार पलवाले दीपक से सब कर्मों में सिद्धि होती है। सवासौ पलवाले दीप तथा एक सौ पलवाले दीप की ऊँचाई पन्द्रह अँगुल तथा उसका विस्तार छत्तीस अँगुल कहा गया है। दश हजार पलवाला दीपक कारागार से मुक्ति दिलानेवाला होता है।

तीस पलवाले पात्र का मान पूर्ववत् होना चाहिये। तीस पलवाले तेल के
दीपक को कन्या का अभिलाषी प्रतिदिन यदि इक्कीस दिन तक जलावे तो
भैरव के प्रसाद से वह इच्छानुसार कन्या प्राप्त करता है।

नृकपालमिते पात्रे चोच्छ्रायं तु रसांगुलम्। विंशत्पलमिते दीपे
प्रत्यहं विंशतिर्दिने ॥ ११ ॥ सर्वरोगविनाशाय क्षयापस्मारदारुणे। दश-
पलमित्रे पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु त्रिंशतम् ॥ १२ ॥ दशपलमिते तैलं प्रत्यहं
सप्तवासरे। राजवश्यकरं क्षिप्रं यदि साक्षाज्जगत्पतिः। नित्यदीपप्रमाणे
तु पात्रं पलत्रयं स्मृतम् ॥ १३ ॥ (तन्त्रांतरेपि) शतमष्टोत्तरं चाथ
पलानि प्रथमे विधौ अष्टाशीति द्वितीये च परेष्टाविंशतिः प्रिये। सर्व-
कार्येषु देवेशि संख्या प्रोक्ता त्रिधाऽत्र वै ॥ १४ ॥

मानव कपाल के मानवाले दीप की ऊँचाई छः अँगुल होनी चाहिये।
बीस पल परिमाणवाले दीपक को प्रतिदिन जलाने से सब रोगों का विनाश
होता है। इससे दारुण क्षय और अपस्मार भी नष्ट हो जाते हैं। दश पल-
वाले पात्र की लम्बाई तीस पलवाले दीप के समान समझें। दश पलवाले
दीपक में सात दिन तक प्रतिदिन तेल डालकर दीपक जलाने से साधक
राजा को भी वश में कर लेता है, चाहे वह राजा साक्षात् जगत्पति ही
क्यों न हो। नित्य दीपक जलाने के लिये प्रतिदिन तीन पलवाला पात्र कहा
गया है। दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि : हे प्रिये ! प्रथम विधि में सौ या
एक सौ आठ पलवाले दीपक प्रशस्त हैं। द्वितीय विधि में ८८ पलवाला दीपक
कहा गया है। तृतीय विधि में २८ पलवाला दीपक कहा गया है। हे देवि !
सभी कर्मों में यही तीन प्रकार की संख्या कही गई है।

अथ कार्यपरत्वेन पात्रे धातुमानम् : सौवर्णं सिद्धिदं पात्रं वश्ये
रौप्यं प्रकल्पयेत्। विद्वेषणकरं लौहं मारणे मृण्मयं तथा ॥ १५ ॥ उच्चा-
टनकरं कांस्यं मोहे पित्तजलं स्मृतम्। अन्योक्तसर्वकार्येषु सर्वाभावे तु
ताम्रजम् ॥ १६ ॥

कार्यपरक दृष्टि से धातुमान : सिद्धि के लिये स्वर्ण का दीपपात्र तथा
वशीकरण के लिये चाँदी का दीपपात्र बनाना चाहिये। विद्वेषण के लिये
लोहे का पात्र तथा मारण के लिये मिट्टी का पात्र होना चाहिये। उच्चाटन
के लिये काँसे का पात्र और मोहन के लिये पीतल का पात्र कहा गया है।
अन्य सब कार्यों में और सबके अभाव में ताँबे का दीपपात्र लेना चाहिये।

(तन्त्रान्तरेपि) गोधूमाश्च तिला माषा मुद्गाश्च तण्डुलाः क्रमात्।
पञ्चधान्यमिदं प्रोक्तं सर्वदा दीपदापने ॥ १७ ॥ वश्ये तण्डुलपिष्टोत्थं

मारणे माषपिष्टजम्। तिलपिष्टसमुद्भूतमुच्चाटनविधौ स्मृतम् ॥ १८ ॥
प्रियस्यागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं सतण्डुलम्। मोहने मुद्गजं प्रोक्तं
पात्रद्रव्यमनुक्रमात् ॥ १९ ॥

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है कि गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, चावल—
क्रमशः ये पाँच अन्न कहे गये हैं। सदा इन्हीं से दीपक बनाकर दीपदान
करना चाहिये। वशीकरण में चावल के आटे से, मारण में उड़द के आटे से,
उच्चाटन में तिल के आटे से, प्रिय के आगमन में चावल तथा गेहूं के आटे
से तथा मोहन में मूंग के आटे से क्रमशः दीपक बनाकर दीपदान करना
चाहिये।

अथ कार्यपरत्वेन तैलमानम्।

गव्यमाकर्षणे कृत्ये कौस्तुभं स्तम्भने स्मृतम्। तिलतैलं तथा गव्यं
घृतं वश्ये प्रकल्पयेत् ॥ १ ॥ कटुतैलं द्वेषणे च मारणे राजिकं स्मृतम्।
आज्यं चौष्ट्रं माहिषं च मेषमुच्चाटने मतम् ॥ २ ॥ बन्दिबन्धनमोक्षे च
तथा भूतपिशाचके। सार्षपं तैलमापूर्य दीपदानं विधीयते ॥ ३ ॥ अथवा
तिलतैलं तु सर्वकार्ये प्रशस्यते ॥ ४ ॥

कार्यपरत्व से तैलमान : आकर्षण कर्म में घी, स्तम्भन में सरसों का
तेल और वशीकरण में तिल का तेल तथा गाय का घी प्रयोग में लाना
चाहिये। कटुतैल द्वेषण में तथा मारण में राई का तेल कहा गया है।
उच्चाटन में ऊँटनी, भैंस तथा भेड़ का घी कहा गया है। बन्दी को मुक्त
कराने के लिये या भूत-पिशाच को छुड़ाने के लिये सरसों के तेल के दीपक
से दीपदान करना चाहिये। अथवा सर्वकार्यों में तिल के तेल को प्रशस्त
कहा गया है।

अथ कार्यपरत्वेन वर्तिमानम्।

एका पञ्च तथा सप्त एकविंशतिसंख्यया। अयुग्माऽथ प्रकर्तव्या
युग्मां नैव तु कारयेत् ॥ १ ॥ (तन्त्रांतरेऽपि) वर्तिरेका प्रकर्तव्या तिस्रो
वा वर्तयस्तथा। शतेन त्रिशतेनाथ सहस्रेणाथवर्तिकाम् ॥ २ ॥ कार-
यित्वा शुभे पात्रे संस्थाप्य ज्वालयेत्तथा। श्वेतं शान्तौ तथा पीतं स्तम्भे
वश्ये तु रक्तकम् ॥ ३ ॥ माञ्जिष्ठं द्वेषणे प्रोक्तं मारणे कृष्णसूत्रजम्।
सर्वाभावे महादेवि श्वेतसूत्रं प्रशस्यते ॥ ४ ॥

कार्यपरत्व से बत्ती का मान : एक, पाँच, सात तथा इक्कीस संख्या
के तन्तुओं से बत्ती बनाना चाहिये। जूस संख्या नहीं होनी चाहिये। दूसरे
तन्त्र में भी कहा गया है कि बत्ती एक या तीन तन्तु की बनानी चाहिये।

सौ और तीन सौ अथवा हजार तन्तुओं की बत्तियाँ बनाकर शुभपात्र में रखकर जलावे। शन्ति में श्वेत, स्तम्भन में पीली, वशीकरण में लाल, द्वेषण में मजीठ के रङ्ग की तथा मारण में काले रङ्ग की बत्ती कही गई है। हे महादेवि ! सभी के अभाव में श्वेत सूत्र ही प्रशस्त माना गया है।

अथ दीपदानप्रयोगः ।

तत्रात्मनो यजमानस्यवा चन्द्रतारानुकूले शुभेह्नि तिथिवारसुलग्नेषु त्वरितकार्यं चेदमृतघटीषु शुभहोरायां वा दीपारम्भं कुर्यात्। स च ग्रहणे संक्रान्तौ कृष्णाष्टम्यां दुर्गोत्सवेऽर्धोदयादिमहापर्वसु कृतस्तात्कालिकफलप्रदो भवति ।

दीपदान-प्रयोग : अपने या यजमान के चन्द्रमा तथा नक्षत्रों के अनुकूल होनेपर शुभ तिथि, दिन और लग्न में, अमृत घड़ी में या शुभ होरा में त्वरित कार्य करते हुये दीपदान करे। ग्रहण में, संक्रान्ति में, कृष्णपक्ष की अष्टमी में, दुर्गोत्सव में, अर्द्धोदय में और महापर्वों में किया गया दीपदान तत्काल फलप्रद होता है।

दीपदानसम्भारो यथा।

कपिलगोमयम् १ तिन्त्राद्याम्लद्रव्यम् २ यथाकामनया दीपपात्रम् ३ यथोक्तमाज्यं तैलं वा ४ यथोक्ता वर्तयः ५ शीघ्रकार्ये पात्रपल ६३ द्रव्यपल १०८ तन्तु १००० द्वितीयपक्षे पात्रपल ३२ द्रव्यपल ८८ तन्तु ३०० मध्यमप्रकारे पात्रपल १६ द्रव्यपल २८ तन्तु १०० कनिष्ठपक्षे पात्रपल ८ द्रव्यपल ८ तन्तु १६ नित्यदीपे पात्रपल ३ द्रव्यपल १ तन्तु २१ शुभे दीपमुखमुत्तरे। साधकः पूर्वाभिमुखः। आधारयन्त्रमुखमुत्तरे। अशुभे दीपयन्त्रसाधकानां मुखं दक्षिणे। नित्ये षडंगुलान्यष्टखदिरकीलानि नैमित्तिके द्वादशांगुलानि कीलानि दीपाग्रे प्रथमकीलपूजनं दक्षिणावर्ते दीवडी ८ कीलप्रत्येक १ रक्तचन्दनसिंदूरादिसुपक्वान् माषान् कमलाकारं रक्तचन्दनकवीरकुसुमाक्षतैर्युतं सदीपं बलिदानार्थमेकैके रात्रे एवाष्टपात्रे सम्पूर्य एवं च दीपदानात्पूर्वदिने सामग्री सम्पाद्य एकभक्तव्रतं कृत्वाऽपरदिने कृतोपवासो भूमौ स्वपेत्। दीपदानदिने ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय नित्यनैमित्तकं समाप्य कम्बलासन उपविश्य आदौ गणपतिपूजनं कृत्वा अर्घं संस्थाप्य ।

दीपदान की सामग्री : १. कपिला गाय का गोबर, २. इमली आदि खट्टे द्रव्य, ३. कामना के अनुसार दीपपात्र, ४. यथोक्त तेल या घी, ५. यथोक्त बत्तियाँ। शीघ्र कार्य के लिये पात्रपल ६३, द्रव्यपल १०८, तन्तु १०००,

द्वितीय पक्ष में पात्रपल ३२, द्रव्य पल ८८, तन्तु ३००; मध्यम प्रकार में पात्रपल १६, द्रव्यपल २८, तन्तु १००; कनिष्ठ पक्ष में पात्रपल ८, द्रव्य पल ८, तन्तु २६। नित्य दीप में पात्रपल ३, द्रव्य पल १, तन्तु २१। शुभ कार्य में दीप का मुख उत्तर, साधक का मुख पूर्व और आधार यन्त्र का मुख उत्तर की ओर रहना चाहिये। अशुभ कार्य में दीपक, यन्त्र और साधक इन सब का मुख दक्षिण की ओर होना चाहिये। नित्य दीपदान में छः अँगुल से आठ अँगुल की खैर की लकड़ी की कीलें तथा नैमित्तिक कार्य में बारह अँगुल की कीलें लेनी चाहिये। दीप के आगे प्रथम कील का पूजन दक्षिणावर्त करना चाहिये। रक्तचन्दन, सिन्दूर आदि, पके हुये उड़द, आठ दिशाओं में गड़ी प्रत्येक कील के सामने उड़द रखने के लिये आठ दोने, लालचन्दन, अबीर, फूल और अक्षतों के साथ दीप सहित बलिदान के लिये प्रति रात्रि के लिये कमलाकार भरे हुये आठ पात्र। दीपदान से पूर्व दिन सामग्री तैयार करके एक समय भोजन करके और दूसरे दिन उपवास करके भूमिपर सोये। दीपदान के दिन ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नित्य-नैमित्तिक कार्य समाप्त करने के बाद कम्बलासन पर बैठ कर आरम्भ में गणपति का पूजन करके और अर्घ स्थापित करके :

देशकालौ संकीर्त्य श्रीमद्बटुकभैरवप्रीतिकामो दीपदानं कर्तुं ममेप्सितफलावाप्त्यै आचार्यं त्वामहं वृणे।

इससे आचार्य का वरण करके वस्त्राभूषण निवेदित करके और दक्षिणा देकर :

'ॐ भक्त्या समागतोहं ते पादयोर्भक्तवत्सल। दीपकार्यं च भवता सम्पाद्यं वै नमो नमः ॥ १ ॥'

इति मन्त्रेण दण्डवन्नमस्कृत्य अन्यान् त्रीन् पञ्च सप्त नवैकादश वा ब्राह्मणान् वृणुयात्। तैर्ब्राह्मणैः सहाचार्यः पुण्याहवाचनादिनान्दीश्राद्धांतानि कृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कृत्वा पद्धतिमार्गेण पञ्चदश न्यासान् कुर्यात्। ततः सपादहस्तां समन्ततः चतुरस्रां चतुरंगुलोच्चां दीपवेदीशोधितस्थले निर्माय कपिलागोमयेनोपलिप्य तस्योपरि रक्तचन्दनेन बटुकभैरवप्रयोगोक्तयन्त्रं लिखेत्। ततो दीपवेदिकाग्रे तण्डुलैरष्टदलं कृत्वा तस्योपरि कलशोक्तविधिना कलशं संस्थाप्य ततः स्वर्णादिनिर्मितां बटुकप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकमासनमन्त्रेणासनं दत्वा कलशोपरि विराजयित्वा प्राणान्प्रतिष्ठाप्य पाद्यादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। ततः

इस मन्त्र से दण्डवत नमस्कार करके, अन्य तीन, पाँच, सात, नव या ग्यारह ब्राह्मणों का वरण करे। इन ब्राह्मणों तथा आचार्य के साथ पुण्याहवाचन से लेकर नान्दी श्राद्ध पर्यन्त कर्म करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि स्थिति-संहार मातृका न्यास करके पद्धति मार्ग से पन्द्रह न्यास करे। इसके बाद शोधित भूमि पर सवा हाथ की भुजाओं वाली चौकोर चार अँगुल ऊँची दीपवेदी बनाकर कपिला गाय के गोबर से लीपकर उसपर लालचन्दन से वटुकभैरवप्रयोगोक्त यन्त्र लिखे। इसके बाद दीप की वेदी के आगे चावलों से अष्टदल बनाकर उसपर कलशस्थापनोक्त विधि से कलश स्थापित करके स्वर्णादि से निर्मित वटुक की प्रतिमा को अग्न्युत्तारण-पूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर कलश पर विराजित कराकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके पाद्यादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद :

देशकालौ संकीर्त्य मम यजमानस्य वा सकलमनोरथसिद्धये प्रयोगा-नुसारेण चत्वारिंशद्दिनं वाष्टविंशतिदिनं वा एकविंशतिदिनं वा पञ्च दशदिनं वा सप्तदिनपर्यन्तममुकसंख्यामितेन पात्रेण घृतेन तैलेन वा अमुकसंख्याकाभिर्वर्तिभिर्दीपदानमहं करिष्ये।

यह संकल्प करे।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवदीपदानमालामन्त्रस्य मन्मथ ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता वं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। मम सर्वमनोरथसिद्धये दीपदाने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मन्मथ ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥

इति ऋष्यादिन्यासं कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं विधाय यथाकामं ध्यायेत्। ततः पूर्वोक्तदीपवेद्युपरि लिखितं यन्त्रमक्षतैः पूरयित्वा तस्या वेद्या अष्टदिक्षु खदिरवृक्षोद्भवानष्टकीलान् निखाय तेषु कीलेषु पूर्वादि-दिक्षमारभ्याष्टभैरवेभ्यो बलिं दद्यात्। तथा च।

इस प्रकार ऋष्यादि न्यास और प्रयोगोक्त न्यासादि करके यथाकाम ध्यान करे। इसके बाद पूर्वोक्त दीपवेदी पर लिखित यन्त्र को अक्षतों से पूरित करके उस वेदी की आठों दिशाओं में खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी

आठ कीलें गाड़ कर उन कीलों पर पूर्वादि दिशा से प्रारम्भ करके आठ भैरवों को इस प्रकार बलि देवे :

पूर्व की कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ जयन्त भैरवाय नमः' इस मन्त्र से गन्धादि द्वारा जयन्त की पूजा करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं जयन्तभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ १ ॥

फिर आग्नेय कोणगत कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ अघोर भैरवाय नमः' इस मन्त्र से गन्धादि द्वारा अघोर की पूजा करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं अघोरभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ २ ॥

इसके बाद दक्षिण कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ चामीकराय नमः' इस मन्त्र से चामीकर का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं चामीकरभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ३ ॥

इसके बाद नैर्ऋत्य कोणगत कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द के पात्र को रखकर 'ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः' इस मन्त्र से असिताङ्ग भैरव का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं असिताङ्गभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ४ ॥

इसके बाद पश्चिम कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ भीषण भैरवाय नमः' इस मन्त्र से भीषण

भैरव का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं भीषणभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ५ ॥

इसके बाद वायुकोणगत कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ प्रचण्ड भैरवाय नमः' इस मन्त्र से प्रचण्ड भैरव का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं चण्डभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ६ ॥

इसके बाद उत्तर दिशागत कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द का पात्र रखकर 'ॐ कराल भैरवाय नमः' इस मन्त्र से कराल भैरव का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं करालभैरव एह्येहि इमं सदीपं मासान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ७ ॥

इसके बाद ईशान कोणगत कील के समीप जाकर जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर वहाँ उड़द के पात्र को रखकर 'ॐ कपाल भैरवाय नमः' इस मन्त्र से कपाल भैरव का पूजन करके दाहिने हाथ में जल लेकर और बाँये हाथ से उस पात्र का स्पर्श करते हुये :

'ॐ ह्रीं कपालभैरव एह्येहि इमं सदीपं माषान्नबलिं गृह्णगृह्ण मां रक्षरक्ष अभीष्टं कुरुकुरु स्वाहा।'

इस मन्त्र से उस पात्र में जल और बलि डालकर प्रणाम करे ॥ ८ ॥

इस प्रकार आठों दिशाओं में बलि देकर :

ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः ॥२॥ ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ ग्लौं गणपतये नमः ॥ ५ ॥ ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वं वटुकभैरवाय नमः ॥ ७ ॥

इति नत्वा ततो यथाकामं कृतं दीपं वेदीमध्ये तण्डुलोपरि संस्थाप्य गायत्रीमन्त्रेण यथाकामं घृतं तैलं वाऽऽपूर्य यथाकामं वर्ति निधाय याव-

त्संख्यकास्तन्तवस्तावतीभिर्मन्त्रावृत्तिभिरभिमन्त्र्य मूलेन दीपानुरूपां शलाकां दीपे निधाय दक्षिणधारां छुरिकां निधाय :

इससे नमस्कार करके यथाकाम निर्मित दीपक को वेदी के मध्य चावलों पर रखकर गायत्री मन्त्र से यथाकाम घी या तेल से भरकर यथाकाम बत्ती उसमें डालकर जितनी संख्या के तन्तु उस बत्ती में हैं उतनी संख्या तक मन्त्र की आवृत्तियों से उसे अभिमन्त्रित करके मूलमन्त्र से दीप के अनुरूप शलाका दीप में रखकर और दक्षिण धारा में छुरिका को भी रखकर :

'ॐ ह्रीं छीं छुरिके मम शत्रूञ्छेदिनि रिपून् निर्द्दलयनिर्द्दलय मां पाहिपाहि स्वाहा।'

इससे छुरिका की पूजा करने के बाद :

'ॐ ह्रां ह्रीं सर्वाङ्गसुन्दर्यै शलाकायै नमः।

इससे शलाका की पूजा करे। इसके बाद मूलमन्त्र से या गायत्री मन्त्र से दीपक को जलाकर पुनः पूर्ववत् न्यासादि करके हाथ में कुश, जल, गन्ध, अक्षत तथा पुष्प लेकर :

'ॐ ऐं श्रीं क्लीं ऐं श्रीं सर्वज्ञाय प्रचण्डपराक्रमाय वटुकभैरवाय इमं दीपं गृहाण सर्वकार्याणि साधयसाधय दुष्टान्नाशयनाशय त्रासयत्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरुकुरु हुं फट् स्वाहा।'

इससे दीप के प्रति संकल्प करके दीप के आगे जल डालकर पुनः दाहिने हाथ मे जल लेकर :

'ॐ गृहाण दीपं देवेश वटुकेश महाप्रभो। ममाभीष्टं कुरु क्षिप्रमापद्भ्यो मां समुद्धर ॥ १ ॥'

यह कहकर और मूलमन्त्र पढ़कर 'बटुकभैरवाय इमं दीपं निवेदयामि नमः' इससे जल को भूमि पर छोड़कर दीप को भैरव को निवेदित करके इस दीप की प्राणप्रतिष्ठा करे। हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रों यंरंलंवंशंषंसंह्रौं अंसहंसः ह्रीं अं हंसः अस्य बटुकभैरवदीपस्य प्राणा इह प्राणाः।

पुनः अस्य बटुकभैरवदीपस्य जीव इह स्थितः।

पुनः अस्य बटुकभैरवदीपस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

पुनः अस्य बटुकभैरवदीपस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोतजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥

इससे प्राणप्रतिष्ठा करके वहाँ दीप में बटुक का आवाहन करके यथा-

काम ध्यान करके, पाद्यादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पद्धतिमार्गानुसार पूजा करके प्रयोगोक्त आवरण पूजा करे। फिर धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके इस प्रकार बलि देवे :

दीपस्य वामभागे त्रिकोणवृत्तषट्कोणमण्डलं कृत्वा ॐ बलिमण्डलाय नमः। इति मण्डलं सम्पूज्य तत्राधारं संस्थाप्य तत्र शाल्योदनशर्करालाजाचूर्णगुडापूपशष्कुलीसूपपायसान्नादिकं घृतप्लुतमनेकजातीयं बलिद्रव्यं (तन्त्रान्तरेपि) घृतमधुशर्करामोदकमाषान्नवटकं च विविधभक्ष्यद्रव्याणि यथासम्भवं माषमुद्गान्नप्रधानबलिद्रव्यं वा क्षत्रियादिभिः समांसबलिद्रव्यं कमलाकारं कृत्वा तस्योपरि गन्धाक्षतपुष्पदीपादिकं निधाय आधारोपरि संस्थाप्य।

दीप के बाँये भाग में त्रिकोण, वृत्त और षट्कोण से युक्त मण्डल बनाकर 'ॐ बलिमण्डलाय नमः' इससे मण्डल की पूजा करके वहाँ आधार स्थापित करके वहाँ पर शालि चावलों का भात, शकर, लावा का चूर्ण, गुड़, पूआ, पूरी, दाल, खीर आदि घी से प्लुत अनेक प्रकार के बलि द्रव्य (दूसरे तन्त्र के अनुसार भी : घी, मधु, शकर, मोदक, उड़द का बड़ा और विविध भक्ष्य द्रव्य और क्षत्रियादि समांस बलिद्रव्य रक्खें) को कमलाकार बनाकर उसके ऊपर गन्ध, अक्षत, पुष्प और दीपादि रखकर आधार पर स्थापित करके :

देशकालौ संकीर्त्य ममामुकफलावाप्तये श्रीवटुकभैरवप्रीतये अमुकद्रव्यबलिदानमहं करिष्ये।

यह संकल्प करके 'ॐ वं वटुकबलिद्रव्याय नमः' इस मन्त्र से पूजा करके दाहिने हाथ में जल लेकर बाँये अँगूठे से बलिपात्र का स्पर्श करते हुये मूलमन्त्र को पढ़कर :

'ॐ एह्येहि विदुषि पुरं भञ्जयभञ्जय नर्तयनर्तय निग्रहनिग्रह महाभैरववटुक बलिं गृह्णगृह्ण स्वाहा ॥१॥ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्णगृह्ण स्वाहा ॥ २॥'

इस मन्त्र से जल और बलि छोड़कर प्रणाम करे।

मांस सहित बलि की दशा में :

'ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॥ १ ॥' ॐ अरिपिशितमांसान्नबलिं गृह्णगृह्ण 'शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिनेदिने। भक्षयेद्यो गणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः ॥ १ ॥ सर्वगणेभ्यो नमः। आमिषं गृह्णगृह्ण भक्षयभक्षय मां रक्षरक्ष स्वाहा।'

इन मन्त्रों से बलि देवे।

इति बलिं दत्त्वा यथाकामं देवं ध्यात्वा ततः अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतं वा यथाशक्ति मूलं प्रजप्याष्टोत्तरशतनामस्तवराजं च एकविंशतिवारमेकादशवारं वा शतवारं वा महाप्रयोगश्चेत्सहस्रवारं वा ब्राह्मणैः सहावृत्य पुनः पूर्वोक्तसंख्यया मन्त्रं जपेत्। ततः 'गुह्यातिगुह्य' इति मन्त्रेण जपं समर्प्य ततः स्तोत्रकवचसहस्रनामादिकं दीपसमाप्तिपर्यन्तं प्रत्यहं पठेत्।

इस प्रकार बलि देकर यथाकाम देव का ध्यान करने के बाद एक हजार आठ या एक सौ आठ बार यथाशक्ति मूलमन्त्र को जप कर और एक सौ आठ नामों के स्तवराज का इक्कीस बार या ग्यारह बार या सौ बार, और यदि महाप्रयोग हो तो एक हजार बार ब्राह्मणों के साथ आवृत्ति करके पुनः पूर्वोक्त संख्या में मन्त्र का जप करे। इसके बाद 'गुह्यातिगुह्य' इस मन्त्र से जप समर्पित करके स्तोत्र, कवच, सहस्रनामादि का दीप-समाप्ति पर्यन्त प्रतिदिन पाठ करे।

यावद्दीपं तावदशुभं न वदेत्। क्रोधपरनिन्दापरस्त्रीषु पराङ्मुखो भवेत्। पाठान्ते वटुकान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च पायसान्नैर्वटकैर्मोदकैश्चणकैश्च नानाभक्ष्यभोज्यैश्च प्रत्यहं तर्पयित्वा ततः आचार्यः स्वयं वा शान्तिस्तोत्रं पठेत्। शान्तिस्तोत्रं यथा।

जब तक दीप रहे तब तक अशुभ न बोले। क्रोध, परनिन्दा तथा परस्त्री आदि विषयों से पराङ्मुख रहे। पाठ के अन्त में कुमारों और उत्तम सुवासित वस्त्रधारिणी कुमारियों को खीर, बड़े, मोदक, चने आदि नाना प्रकार के भक्ष्य-भोज्य पदार्थों से प्रतिदिन तृप्त करने के बाद स्वयं या आचार्य शान्ति-स्तोत्र का पाठ करे। शान्ति-स्तोत्र इस प्रकार है :

'यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके कर्मप्रसिद्ध इति नाम फलं प्रसूते। तं सन्ततं सकलसाधकवाञ्छिताभिचिन्तामणिं सुरगणाधिपतिं नमामि ॥ १ ॥ रक्ताम्बरं ज्वलनपिङ्गजटाकलापं ज्वालावलीकुटिलचन्द्रधरं त्रिनेत्रम्। बालार्कचाम्रफलकाञ्चनतुल्यवर्णं देवीसुतं वटुकनाथमहं भजामि ॥ २ ॥ हरतु कुलगणेशो विघ्नसर्पानशेषान्नयतु कुलसपर्यापूर्णतां साधकानाम्। पिबतु वटुकनाथः शोणितं निन्दकानां दिशतु सकलकामान्साधकानां गणेशः ॥ ३ ॥ सततवितततेजाश्चक्रभासा विनम्रग्रसनसमुदितो वै विश्वसंदोहनाभिः। प्रलयनयननाभिः किन्तुरात्मोद्भवाभिर्भवतु भुवनगर्भो भैरवो नः पुनातु ॥ ४ ॥ या काचिद्योगिनी

रौद्रा सौम्या घोरतरापरा। गृह्यतां बलिपूजां सा मम व्याधिं व्यपोहतु ॥ ५ ॥ नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु प्रदूषकाः। अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥ ६ ॥'

इति पठेत्। ततो जपदशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कृत्वा ब्राह्मणान् जपानुसारेण दक्षिणादिभिः सन्तोष्य आचार्यं कार्यानुसारेण दक्षिणावस्त्रालङ्कारादिभिः परितोष्य प्रणमेत्।

इसका पाठ करे। इसके बाद जप के दशांश से होम और तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराकर जप के अनुसार ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करे। आचार्य को भी कार्यानुसार दक्षिणा, वस्त्र तथा अलङ्कार आदि से सन्तुष्ट करके उन्हें प्रणाम करे :

'अयं दीपविधिः प्रोक्तो वटुकस्य तवानघे। योजनीयः प्रयत्नेन सत्यंसत्यं वदाम्यहम् ॥ १ ॥ परिवारसमायुक्तौ सपुत्रौ सहपत्निकौ। सर्वान्देवान्प्रपूज्याथावरणेन समन्वितान् ॥ २ ॥ मध्यं तु पूजयेद्देवं वटुकं दीपमध्यतः। पञ्चोपचारैः सम्पूज्य धूपदीपादिभिः क्रमात् ॥ ३ ॥ कवचं स्तवराजं च आपदुद्धारणं जपेत्। मन्त्रं लक्षं जपेद्देवि कवचं चायुतं पठेत् ॥ ४ सहस्रं स्तवराजं च कार्यमुद्दिश्य मन्त्रवित्।

हे अनघे ! बटुक की यह दीपविधि मैंने तुम्हारे लिये कहा है। इसे प्रयत्न से प्रयोग करना चाहिये ऐसा मैं सत्य, बिल्कुल सत्य कहता हूं। परिवार से युक्त, सपुत्र, पत्नीसहित, सावरणादि सब देवताओं की पूजा करके दीपमध्यगत बटुक की पूजा करे। इस प्रकार धूप दीपादि के क्रम से पञ्चोपचारों से पूजा करके कवच, स्तवराज, तथा आपदुद्धारण स्तोत्र का जप करे। हे देवि ! कार्य को उद्दिष्ट करके मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये। कवच का दश हजार और स्तवराज का एक हजार जप करना चाहिये।

कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तं दीपाग्रेप्रपठेत्सदा ॥ ५ ॥ सूर्यास्तकालमारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत्। तावन्मन्त्रं जपेद्रात्रौ कार्यमुद्दिश्य मन्त्रवित् ॥ ६ ॥ अष्टमीदिनमारभ्य यावत्कृष्णा चतुर्दशी। तावन्मन्त्रं जपेद्रात्रौ सर्वकार्यप्रसाधने ॥ ७ ॥

कलियुग में दीप के आगे सदा चौगुना पाठ बताया गया है। सूर्यास्त काल से आरम्भ करके जब तक सूर्योदय न हो तब तक रात्रि में कार्य को उद्दिष्ट करके मन्त्रवित् मन्त्र का जप करे। अष्टमी के दिन से आरम्भ करके कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक सर्वकार्य सिद्धि के लिये रात को ही मन्त्र का जप करना चाहिये।

नदीतीरे शिवागारे बिल्वमूले गिरौ तथा। गुहायां सिद्धपीठे च सन्निधौ भैरवस्य च ॥ ८ ॥ पुत्रप्राप्तिः सहस्रे स्याद्द्विगुणे च धनागमः। त्रिगुणे बन्धनान्मुक्तिश्चतुःसंख्ये प्रियागमः ॥ ९ ॥ बाणसंख्ये स्तम्भनं स्याद्रससंख्ये क्षयो भवेत्। सप्तसंख्ये जगद्वश्यमष्टसंख्ये तु मोहनम् ॥ १० ॥ अंकसंख्ये महोत्साह उच्चाटो दशसंख्यके। एकादशेन देवेशि ह्यखिलाः सिद्धयः स्मृताः ॥ ११ ॥ लक्षेणैकेन देवेशि चक्रवर्ती भवेद्ध्रुवम्। कोटिसंख्ये महादेवि भवेद्भैरवसन्निभः ॥ १२ ॥ नौकाया व्यवहारे च जपेत्सप्त शतं तथा। कृषिकर्मणि वाणिज्ये रुद्रसंख्याशतानि च ॥ १३ ॥ दीपाग्रे कलशाग्रे च पठित्वा फलमाप्नुयात्। दीपाग्रे च यथाशक्ति गायत्री वटुकस्य च ॥ १४ ॥ जपेद्दीपं समर्प्याथ कवचं प्रजपेत्ततः। मन्त्रं जप्त्वा पुनर्वर्मं पठेन्मन्त्रं ततः परम् ॥ १५ ॥ स्तवराजं पठित्वा तु मन्त्रं जप्त्वा निवेदयेत्। पुरुषोत्तमपादाब्जद्वितयेर्पितमौलिना। कथितो रामचन्द्रेण दीपदानविधिः शुभः ॥ १६ ॥ इति वटुकभैरवदीपदानविधानम्।

नदी तट पर, शिव मन्दिर में, बेल के वृक्ष के नीचे, पर्वत पर, गुफा में, सिद्धपीठ में, भैरव के निकट एक हजार जप से पुत्र की तथा दो हजार जप से धन की प्राप्ति होती है। तीन हजार जप से बन्धन मुक्ति और चार हजार जप से प्रियजन का आगमन होता है। पाँच हजार जप से स्तम्भन होता है। छः हजार जप से शत्रु का क्षय होता है। सात हजार जप से संसार वश में होता है। आठ हजार जप से मोहन होता है। नव हजार जप से महोत्साह और दश हजार जप से उच्चाटन होता है। हे देवेशि ! ग्यारह हजार जप से अखिल सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। हे देवेशि ! एक लाख जप से साधक निश्चित रूप से चक्रवर्ती हो जाता है। और हे महादेवि ! एक करोड़ जप से वह भैरव के समान हो जाता है। नौका के व्यवहार में सात सौ जप करना चाहिये। कृषि कर्म और व्यापार में दीपक या कलश के सम्मुख बारह सौ जप करके सिद्धि प्राप्त करे। दीपक के सम्मुख बटुक की गायत्री का यथाशक्ति जप करे। दीपक को समर्पित करके कवच का जप करना चाहिये। मन्त्र का जप करके कवच पढ़कर उसके बाद पुनः मन्त्र पढ़े। स्तवराज का पाठ करने के बाद मन्त्र का जप करके निवेदन करे। पुरुषोत्तम के उभय चरण कमलों में मस्तक झुकाये हुये श्रीरामचन्द्र के द्वारा यह शुभ दीपदान विधि कही गई है। इति वटुक भैरव दीपदान विधि समाप्त।

अथ श्रीवटुकभैरवपूजापद्धतिप्रारम्भः।

नमः कर्पूरगौराय कैलासाचलवासिने। गौरीकण्ठग्रहानन्दनिष्पा-

दायान्धकद्विषे ॥ १ ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारको जगदीश्वरः । देवाधिदेवो वटुकभैरवोऽवतु मां सदा ॥ २ ॥

श्रीवटुकभैरव पूजा पद्धति : कैलाश पर्वत के निवासी, कपूर के समान गोरे, पार्वती का कण्ठ ग्रहण कर आनन्द निष्पादन करने वाले और अन्धकासुर के द्वेषी भगवान को मेरा नमस्कार । उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार करने वाले जगदीश्वर, देवाधिदेव वटुक भैरव सदा मेरी रक्षा करें ।

भैरवाराधनविधिं प्रवक्ष्यामि समासतः । साधकानां हितार्थाय मुमुक्षूणां विशेषतः । षट्कर्मणां च संसिद्ध्यै वक्ष्ये भैरवपद्धतिम् ॥ ३ ॥'

साधकों और विशेषतः मुमुक्षुओं के हितार्थ भैरवाराधन की विधि संक्षेप से कह रहा हूं । षट्कर्मों की सिद्धि के लिये भैरव पद्धति को मैं कहूंगा ।

पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तार्थं विष्णुपूजां विष्णुतर्पणं विष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणदिव्रतं च कुर्यात । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्माशक्तस्तदा प्रायश्चित्तार्थं पञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः ।

पुरश्चरण के तीन दिन पहले क्षौरादि कराकर प्रायश्चित के लिये विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध, होम और चान्द्रायणादि व्रत करे । व्रत में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करे । यदि सभी कर्मों में अशक्त हो तो प्रायश्चित्तार्थ पञ्चगव्य का प्राशन करे । उसमें यह मन्त्र है :

'ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पञ्चगव्यं हि दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥'

इति पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत् । तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नेन एकभक्तव्रतं वा कुर्यात् । ततः पुरश्चरणात् । पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् । तत्र क्रमः :

यह पढ़कर प्रणव से पञ्चगव्य का पान करे और उस दिन उपवास करे । यदि अशक्त हो तो दुग्धपान और एक काल हविष्यान्न भोजन करके व्रत करे । इसके बाद, पुरश्चरण से पूर्व दिन स्वदेह की शुद्धि के लिये तथा पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का जप करे । उसमें क्रम यह है :

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीमद्वटुकभैरवपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रेण सिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करके गायत्री का दश हजार जप करे । इसके बाद :

गायत्र्याचार्यऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥

इससे तर्पण करे । इसके बाद उस रात्रि में देवता की उपासना करके शुभाशुभ स्वप्न का विचार करे । उसमें क्रम यह है :

स्नानादि करके विष्णु भगवान के चरणकमल का ध्यान करके कुशासन आदि की शय्या पर यथासुख स्थित होकर वृषभध्वज शिवजी की इस मन्त्र से प्रार्थना करे :

ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन । इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने । वामाय-विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः । क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य स्वप्यात् । ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । ततः चन्द्रतारादिबलान्विते समुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे श्रीमान्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासने चोपविश्य स्वशिरसिसहस्रदलपङ्कजे कोटीन्दुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत् । गुरुस्मरणम् ।

इस मन्त्र से १०८ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय । इसके बाद रात में देखे स्वप्न को गुरु के सम्मुख निवेदित करे अथवा स्वयं स्वप्न का विचार करे । इसके बाद चन्द्रमा और नक्षत्रों से बलान्वित उत्तम मुहूर्त में एकान्त स्थान पर जप स्थान की व्यवस्था करके पुरश्चरण के दिन साधक प्रातःकाल से दो दण्ड पूर्व ब्राह्म मुहूर्त में उठकर निद्रास्थान से बाहर निकलकर हाथ-पैर धोकर आचमन करके रात के वस्त्रों को बदलकर अन्य वस्त्र पहन कर शुद्ध आसन पर बैठकर अपने शिर में स्थित सहस्रदल कमल में करोड़ों चन्द्रमा के प्रकाशपीठ पर श्रीगुरु का इस प्रकार ध्यान करे :

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् । योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके और मानसोपचारों से पूजन करके :

प्रातः प्रभृतिसायान्तं सायादिप्रातरन्ततः । यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥

इस मन्त्र से सब कुछ गुरु को निवेदन करके उसकी आज्ञा लेकर श्रीबटुक का प्रातः स्मरण करे।

अथ श्रीवटुकप्रातःस्मरणम्।

प्रातः स्मरामि वटुकं सुकुमारमूर्तिं श्रीस्फाटिकाभसदृशं कुटिलालकाढ्यम्। वक्त्रं दधानमणिमादिगुणैर्हि युक्तं हस्तद्वयं मणिमयैः पदभूषणैश्च ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि वटुकं तरुणं त्रिनेत्रं कामास्पदं वरकपालत्रिशूलदण्डान्। भक्तार्तिनाशकरणे दधते करेषु तं कौस्तुभाभरणभूषितदिव्यदेहम् ॥ २ ॥ प्रातःकालेसदाऽहंभगणपरिधरं भालदेशे महेशं नागं पाशं कपालं डमरुमथ सृणिं खड्गघण्टाभयानि। दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं त्रिनयनसहितं मुण्डमालं करेषु यो धत्ते भीमदंष्ट्रं मम विजयकरं भैरवं तं नमामि ॥ ३ ॥ देवदेव कृपासिन्धो सर्वनाशिन्महाऽव्यय। संसारासक्तचित्तं मां मोक्षमार्गे निवेशय ॥ ४ ॥

एतच्छ्लोकचतुष्कं वै भैरवस्य तु यः पठेत्। सर्वबाधाविनिर्मुक्तो जायते निर्भयः पुमान् ॥ ५ ॥

भैरव के इन चार श्लोकों को जो प्रातःकाल पढ़ता है वह सभी बाधाओं से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है।

एवं ध्यात्वा गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरुं समर्पयेत्। अथाजपाजपसङ्कल्पः संक्षेपतः।

इस प्रकार ध्यान करके गुरु, मन्त्र, देवता तथा अपनी—इन सब की एकात्मता की भावना करके अजपा जप गुरु को समर्पित करे। अजपा जप का संकल्प इस प्रकार है।

आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के। वासान्ते वालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः। षट्सहस्रं गदापाणे षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः। सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः। हंसोपि जीवो परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शम्भुः ॥ ४ ॥

इति पठित्वा। अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकजपागायत्री मन्त्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि। इत्युक्त्वाष्टोत्तरशतावृत्ति हंसगायत्रीं जपेत्।

इसे पढ़कर 'रात-दिन में लिये गये २१ हजार ६ सौ श्वास-निःश्वासात्मक अजपा गायत्री मन्त्र का जप श्रीगणेश, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जीवात्मा, परमात्मा तथा श्रीगुरु को यथासंख्या समर्पित करता हूं' यह कहकर १०८ हंस गायत्री का जप करे। हंस गायत्री मन्त्र इस प्रकार है:

अथ हंसगायत्रीमन्त्रः।

हरिः ॐ 'हंसोहंसस्य विद्महे हंसोहंसस्यधीमहि हंसोहंसः प्रचोदयात्।'

इसका जप करके:

त्रैलोक्यचैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव। प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥

इससे प्रार्थना करके भूमि की प्रार्थना करे:

अथ भूमिप्रार्थनामन्त्रः।

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ १ ॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्यश्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्वा बहिर्व्रजेत्। इति प्रातःकृत्यम्।

इस प्रकार भूमि की प्रार्थना करके भूमि पर श्वासानुसार पैर रखकर बाहर जावे। इति प्रातःकृत्य।

अथ शौचक्रिया। ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डूषान्तं दन्तधावनं कुर्यात्।

शौचक्रिया : इसके बाद ग्राम से बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त स्थान पर उत्तराभिमुख नङ्गे पैर और शिर को वस्त्र से ढंक कर मलमोचन करके मिट्टी तथा जल से यथासंख्या शौच करके हाथ-पाँव धोकर दातुन और कुल्ला करे।

अथ दन्तधावनम्।

दन्तधावन : आम, चम्पा, अपामार्ग में से किसी एक की बारह अंगुल दातुन लेकर यह प्रार्थना करे:

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च। श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके :

'ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा।' इति मन्त्रेण काष्टं छित्वा 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः।' इत्यनेन दन्तान् संशोध्य 'ऐं' मन्त्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्ये शुद्धदेशे निःक्षिपेत्। मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात्।

'ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा' इस मन्त्र से काठ को काट कर 'ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इससे दाँतों को साफ करके 'ऐं' मन्त्र से जिह्वा को छीलकर दातुन को धोकर नैर्ऋत्य दिशा में स्वच्छ स्थान पर फेंक दे। फिर मूलमन्त्र से मुख धोकर स्नान करे।

अथ स्नानम्। ततः तीर्थस्नानं मङ्गलस्नानं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा अशक्तश्चेद् गृहस्नानं कुर्यात्। तत्र क्रमः। तात्कालिकोद्धृतोदकेनोष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन तद्यथा। ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मन्त्रः।

स्नान : इसके बाद तीर्थस्नान, मङ्गलस्नान सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करे। यदि अशक्त हो तो गृहस्नान करे। इसमें क्रम यह है : तत्काल कूएँ से निकाले गये पानी से स्नान करे, बासी पानी से नहीं। ताम्रादि के एक बड़े पात्र में जल लेकर तीर्थों का आवाहन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देवं तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ २ ॥

इससे तीर्थों का आवाहन करके :

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ३ ॥

यह पढ़कर 'ऋतं च सत्यं०' इस मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करके स्नान करे। इस प्रकार स्नान करके सूखे सफेद कपास के वस्त्र को पहनकर सूर्य को अर्घ्य देवे। उसमें मन्त्र यह है :

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते।

इससे अर्घ्य देकर स्नान से भीगे वस्त्र को निचोड़ कर यज्ञोत्थ भस्म से

पाँच त्रिपुण्ड्र लगाकर रुद्राक्षमाला धारण करते हुये वैदिकी सन्ध्या करके तान्त्रिकी सन्ध्या करे।

तान्त्रिकी सन्ध्या प्रयोग :

देशकालौ संकीर्त्य श्रीबटुकभैरवाराधनयोग्यतार्जननार्थं तन्त्रसन्ध्यामहं करिष्ये।

इससे संकल्प करके :

ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥

इति त्रिराचम्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकराङ्गन्यासान् कृत्वा मूलेन जलं संवीक्ष्य। 'अस्त्राय फट्।' इति सम्प्रोक्ष्य। अनेनैव दर्भेण सन्ताड्य 'कवचाय हुम्।' इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुम्भमुद्रया मूर्ध्नि सिञ्चेत्। ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय। 'ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः।' इति मन्त्रेण सप्तवारमभिमन्त्र्य तद्गलितोदकबिन्दुभिर्दक्षहस्तेन शिरसि मार्जयेत्। तत्र मन्त्राः।

इससे तीन आचमन करके मूलमन्त्र से प्राणायाम करके और ऋष्यादिकराङ्गन्यास करके मूलमन्त्र से जल को देखकर, 'अस्त्राय फट्' इससे संप्रोक्षण करके, उसी दर्भ से सन्ताडन करके 'कवचाय हुम्' इससे अभ्युक्षण करे। फिर कुम्भ मुद्रा से उस जल से अपने शिर पर सिञ्चन करे। इसके बाद बाँये हाथ में दाहिने हाथ से तीर्थ जल लेकर 'ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः' इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके उससे गिरते हुये जलबिन्दुओं से ही शिर पर मार्जन करे। उसमें मन्त्र ये हैं।

ह्रां व्रां हृदयाय नमः वौषट् ॥ १ ॥ ह्रीं व्रीं शिरसे स्वाहा वौषट् ॥ २ ॥ ह्रूं व्रूं शिखायै वौषट् ॥ ३ ॥ ह्रैं वैं कवचाय हुं वौषट् ॥ ४ ॥ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ह्रः वः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः ॥ ७ ॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः। भवेभवेनातिभवेभवस्वमां भवोद्भवाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ वामदेवाय नमोज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमोबलाय नमोबलविकरणाय नमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ॥ ९ ॥ ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेस्तुसदाशिवोम् ॥ १२ ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं मूलमन्त्रश्च।

एतैर्मन्त्रैर्मार्जयित्वा वामहस्तस्थं जलं वामनासासमीपमानीय इडया देहान्तरादाकृष्य पापौघं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तदुदकं दक्षिणया विरेच्य वामहस्तस्थमुदकं दक्षिणेनादाय पुरःकल्पितवज्रशिलायामस्त्रमन्त्रेण क्रोधादास्फालयेत् । ततः पूर्ववदाचम्य कराङ्गन्यासौ कृत्वा अर्घपात्रे जलं कृत्वा तमादाय मूलमुच्चार्य 'शिवरूपाय सूर्यायेदमर्घ्यं स्वाहा ।' इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीं मूलमन्त्रं जपेत् । गायत्रीमन्त्रो यथा ।

इन मन्त्रों से मार्जन करके बाँये हाथ में स्थित जल को बाँये नासापुट के समीप लाकर इडा नाडी से देह के भीतर खींच कर पाप के समूह का प्रक्षालन करके जल को दाहिने नासापुट से निकाल कर उस कृष्णवर्ण जल को दाहिने हाथ में ग्रहण कर ले । फिर बाँये हाथ के जल को भी दाहिने हाथ में लेकर सामने कल्पित वज्रशिला पर अस्त्रमन्त्र से क्रोधपूर्वक पटक दे । इसके बाद पूर्ववत् आचमन करके करन्यास तथा अङ्गन्यास करके अर्घपात्र में जल डालकर और उसमें से जल लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण कर 'शिवरूपाय सूर्यायेदमर्घ्यं स्वाहा', इससे तीन बार अर्घ्य देकर मूलमन्त्र से उपस्थान करके गायत्री और मूलमन्त्र का जप करे । गायत्री मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।'

इस गायत्री मन्त्र को २८ बार और मूलमन्त्र को १०८ बार जप कर जप निवेदित कर प्रणाम करे । इति तान्त्रिकी सन्ध्या प्रयोग ।

द्वारपूजा : पूजागृह के द्वार पर आकर द्वारपूजा करे । उसमें क्रम यह है : 'अस्त्राय फट्' इससे द्वार का प्रोक्षण करके दक्षिण शाखा में 'गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखा में 'वं वटुकाय नमः ॥ ३ ॥ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ४ ॥' द्वार के ऊपर 'सं सरस्वत्यै नमः' ॥ ५ ॥ देहली पर 'अस्त्राय फट्' इस प्रकार पूजा करे ।

इसके बाद जपस्थान पर जाकर पीपल, गूलर, अथवा पलाश में से किसी एक की लकड़ियों की एक-एक बित्ते की दश कीलें बनवाकर 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके :

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः । विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु ॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः । अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में दशों कीलों को गाड़ दे । इसके बाद

'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक कील की पूजा करके उसके बाहर भूतबलि देवे । उसमें मन्त्र यह है :

'ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः । मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे ॥ १ ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः । ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥'

इन दो मन्त्रों से दशों दिशाओं में बाहर उड़द और भात की बलि देवे । इसके बाद बाँये हाथ की अँगुलियों से अर्घ्य जल को गिराकर पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् । सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु नान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करे ।

इस प्रकार भूतों को बलि देकर और हाथ-पैर धोकर आचमन करे । फिर उसके बाद :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य । तत्र तावदासनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम् । यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य तत्रैव जपं दीपस्थापनं च कुर्यात् । यत्र बहवः जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ।

इस मन्त्र से मण्डप के भीतर प्रोक्षण करके वहाँ पर आसनभूमि पर कूर्मशोधन करे । जहाँ जपकर्त्ता एक ही हो वहाँ कूर्ममुख पर बैठकर वहीं जप तथा दीपस्थापन करे । जहाँ पर जपकर्त्ता बहुत हों वहाँ कूर्ममुख पर दीपक की स्थापना करे । इस प्रकार कूर्मशोधन करके वहाँ आसन के नीचे जलादि से त्रिकोण बनाकर :

ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥२॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥

इससे गन्ध, अक्षत, पुष्प से सम्पूजन करके उसपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म और उसके ऊपर कम्बल का आसन बिछाकर स्थापित इन तीनों आसनों के ऊपर क्रम से :

ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥

इन तीन मन्त्रों से तीन-तीन दर्भ प्रत्येक आसन पर रक्खे। इस प्रकार आसन स्थापित करके वहाँ पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर आसन का शोधन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। कूर्मोदेवता। सुतलञ्छन्दः। आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥

इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करने के बाद मूलमन्त्र से शिखा बाँधकर आचमन तथा प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्यं मम श्रीमद्वटुकभैरवदेवताप्रीतये अमुकमन्त्र-सिद्धयर्थं लक्षसंख्यात्मकं (अथवा एकविंशतिलक्षसंख्यात्मकं) जपं तत्त-द्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये।

इस सङ्कल्प का उच्चारण करके जल को भूमि पर गिरा देवे।

इसके बाद भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति तथा संहारमातृका न्यासों को सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करके प्रेतबीज से सरस्वतीबीज पर्यन्त इस प्रकार पन्द्रह न्यासों को करे :

१. **प्रेतबीज न्यास** : ॐ हसहौं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ हसहौं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हसहौं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हसहौं कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ हसहौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हसहौं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति प्रेतबीजन्यासः प्रथमः ॥ १ ॥

२. **सिंहबीजन्यास** : ॐ हसक्षं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ हसक्षं नमः बाह्वोः ॥ २ ॥ ॐ हसक्षं नमः लिङ्गे ॥ ३ ॥ ॐ हसक्षं नमः नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ हसक्षं नमः हस्तांगुलीषु ॥ ५ ॥ ॐ हसक्षं नमः पादांगुलीषु ॥ ६ ॥ इति सिंहबीजन्यासो द्वितीयः ॥ २ ॥

३. **काणबीजन्यास** : ॐ झ्रौं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १ ॥ ॐ झ्रौं नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ झ्रौं नमः नेत्रद्वये ॥ ३ ॥ ॐ झ्रौं नमः ग्रीवायां ॥ ४ ॥ ॐ झ्रौं नमः नासापुटयोः ॥ ५ ॥ ॐ झ्रौं नमः कपोलयोः ॥ ६ ॥ ॐ झ्रौं नमः चिबुके ॥ ७ ॥ ॐ झ्रौं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥८॥ इति काणबीजन्यासस्तृतीयः ॥३॥

४. **सत्याबीजन्यास** : ॐ मलहों नमः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ मलहों नमः हस्तयोः ॥ २ ॥ ॐ मलहों नमः करयोः ॥३॥ ॐ मलहों नमः नेत्रयोः ॥ ४ ॥ ॐ मलहों नमः कर्णयोः ॥ ५ ॥ ॐ मलहों नमः मुखे ॥ ६ ॥ ॐ मलहों नमः कुक्षिद्वये ॥ ७ ॥ ॐ मलहों नमः लिङ्गे ॥ ८ ॥ इति सत्याबीज-न्यासश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

५. **महाबीजन्यास** : ॐ श्रूं नमः चिबुके ॥ १ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ २ ॥ ॐ श्रूं नमः कर्णयोः ॥ ३ ॥ ॐ श्रूं नमः हृदये ॥ ४ ॥ ॐ श्रूं नमः मुखे ॥ ५ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ ६ ॥ ॐ श्रूं नमः नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ श्रूं नमः पादयोः ॥ ८ ॥ इति महाबीजन्यासः पञ्चमः ॥ ५ ॥

६. **प्राणबीजन्यास** : ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ १ ॥ ॐ प्रूं नमः सव्यकुक्षौ ॥ २ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ प्रूं नमः वामकुक्षौ ॥ ४ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ ५ ॥ ॐ प्रूं नमः दक्षपादतले ॥ ६ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥ ७ ॥ ॐ प्रूं नमः वामपादतले ॥ ८ ॥ ॐ प्रूं नमः हृदये ॥९॥ इति प्राणबीजन्यासः षष्ठः ॥ ६ ॥

७. **घण्टाबीजन्यास** : ॐ घ्रूं नमः गलघण्टिकायाम् ॥ १ ॥ ॐ घ्रूं नमः नाभौ ॥ २ ॥ ॐ घ्रूं नमः घण्टिकायाम् ॥ ३ ॥ ॐ घ्रूं नमः हृदये ॥ ४ ॥ इति घण्टाबीजन्यासः सप्तमः ॥ ७ ॥

८. **ख्यातिबीजन्यास** : ॐ ख्यूं नमः मस्तके ॥१॥ ॐ ख्यूं नमः पादयोः ॥२॥ ॐ ख्यूं नमः ग्रीवायाम् ॥ ३ ॥ ॐ ख्यूं नमः नाभिमण्डले ॥४॥ ॐ ख्यूं नमः गले ॥ ५ ॥ ॐ ख्यूं नमः हृदये ॥ ६ ॥ ॐ ख्यूं नमः जङ्घयोः ॥ ७ ॥ ॐ ख्यूं नमः नेत्रयोः ॥ ८ ॥ ॐ ख्यूं नमः कर्णयोः ॥ ९ ॥ ॐ ख्यूं नमः बाह्वोः ॥ १० ॥ ॐ ख्यूं नमः स्तनयोः ॥ ११ ॥ इति ख्यातिबीजन्यासोष्टमः ॥ ८ ॥

९. **मूलबीजन्यास** : ॐ ॐ नमः हृदये ॥ १ ॥ ॐ ॐ नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ ॐ नमः पादयोः ॥ ३ ॥ ॐ ॐ नमः हस्तयोः ॥ ४ ॥ ॐ ॐ नमः कर्णयोः ॥ ५ ॥ ॐ ॐ नमः नासापुटयोः ॥ ६ ॥ इति मूलबीजन्यासो नवमः ॥ ९ ॥

१०. **भ्रामरी बीजन्यास** : ॐ भरलसहीं नमः मुखे ॥ १ ॥ ॐ भरलसहीं नमः नेत्रद्वये ॥ २ ॥ ॐ भरलसहीं नमः कर्णद्वये ॥ ३ ॥ ॐ भरलसहीं नमः कपोलयोः ॥ ४ ॥ ॐ भरलसहीं नमः गण्डयोः ॥ ५ ॥ ॐ भरलसहीं नमः कण्ठदेशे ॥ ६ ॥ ॐ भरलसहीं नमः स्तनयोः ॥ ७ ॥ ॐ भरलसहीं नमः हृदये ॥ ८ ॥ ॐ भरलसहीं नमः पादयोः ॥ ९ ॥ ॐ भरलसहीं नमः चिबुके ॥ १० ॥ ॐ भरलसहीं नमः मस्तके ॥ ११ ॥ ॐ भरलसहीं नमः बाह्वोः ॥ १२ ॥ ॐ भरलसहीं नमः स्कन्धयोः ॥ १३ ॥ ॐ भरलसहीं नमः दन्तपंक्त्योः ॥ १४ ॥ ॐ भरलसहीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १५ ॥ ॐ भरलसहीं नमः आधारे ॥ १६ ॥ ॐ भरलसहीं नमः भ्रूमध्ये ॥ १७ ॥ इति भ्रामरी-बीजन्यासो दशमः ॥ १० ॥

११. **आकूती बीजन्यास** : ॐ नमरलमरक्षरशरसहीं नमः शिरसि ॥१॥

ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः गण्डयोः ॥२॥ ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः वक्त्रे ॥ ३ ॥ इति आकूतीबीजन्यास एकादशः ॥ ११ ॥

१२. कालबीजन्यास : ॐ करलसरमरीं नमः नेत्रयोः ॥ १ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः कर्णयोः ॥ २ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः नाभौ ॥ ३ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः लिङ्गे ॥ ४ ॥ ॐ करलसरमरीं नमः गुदे ॥ ५ ॥ इति कालबीजन्यासो द्वादशः ॥ १२ ॥

१३. विद्याबीजन्यास : ॐ क्षरशरहसीं नमः कपोलयोः ॥ १ ॥ ॐ क्षरशरहसीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ २ ॥ ॐ क्षरशरहसीं नमः दन्तपंक्तयोः ॥ ३ ॥ इति विद्याबीजन्यासस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

१४. शृङ्खलामहापराख्यबीजन्यास : ॐ सहसहलकलइशरवरलवऊईं नमः मस्तके ॥ १ ॥ ॐ सहसहलकलइशरवरबलवऊईं नमः दक्षनेत्रे ॥ २ ॥ एवं सर्वत्र । ॐ सह····नमः वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ सह····नमः दक्षकर्णे ॥ ४ ॥ ॐ सह····नमः वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ सह····नमः दक्षिणकपोले ॥ ६ ॥ ॐ सह····नमः वामकपोले ॥ ७ ॥ ॐ सह····नमः दक्षगण्डके ॥ ८ ॥ ॐ सह····नमः वामगण्डके ॥ ९ ॥ ॐ सह····नमः चिबुके ॥ १० ॥ ॐ सह····नमः गले ॥ ११ ॥ ॐ सह····नमः दक्षस्कन्धे ॥ १२ ॥ ॐ सह····नमः वामस्कन्धे ॥ १३ ॥ ॐ सह····नमः दक्षस्तने ॥ १४ ॥ ॐ सह····नमः वामस्तने ॥१५॥ ॐ सह····नमः हृदये ॥ १६ ॥ ॐ सह····नमः दक्षकुक्षौ ॥ १७ ॥ ॐ सह····नमः वामकुक्षौ ॥ १८ ॥ ॐ सह····नमः नाभौ ॥ १९ ॥ ॐ सह····नमः वक्षसि ॥ २० ॥ ॐ सह····नमः दक्षजङ्घायाम् ॥ २१ ॥ ॐ सह····नमः वामजङ्घायाम् ॥ २२ ॥ ॐ सह····नमः लिङ्गे ॥ २३ ॥ ॐ सह····नमः दक्षमेढ्रे ॥ २४ ॥ ॐ सह····नमः वाममेढ्रे ॥ २५ ॥ ॐ सह····नमः मूलाधारे ॥ २६ ॥ ॐ सह····नमः दक्षगुल्फे ॥ २७ ॥ ॐ सह····नमः वामगुल्फे ॥२८॥ ॐ सह····नमः दक्षपादे ॥ २९ ॥ ॐ सह····नमः वामपादे ॥ ३० ॥ ॐ सह····नमः दक्षपादांगुलीषु ॥ ३१ ॥ ॐ सह····नमः वामपादांगुलीषु ॥३२॥ ॐ सह····नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ३३ ॥ ॐ सह····नमः मूलाधारे ॥ ३४ ॥ ॐ सह····नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥३५॥ इति शृङ्खलामहापराख्यबीजन्यासश्चतुर्दशः ॥१४॥

१५. महासरस्वतीबीजमातृकान्यास : ॐ कलडरसहरहक्षशरईं ललाटे ॥ १ ॥ इति सर्वत्र । ॐ कल····रईं मुखवृत्ते ॥ २ ॥ ॐ कल····रईं दक्षनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ कल····रईं वामनेत्रे ॥ ४ ॥ ॐ कल····रईं दक्षकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ कल····रईं वामकर्णे ॥ ६ ॥ ॐ कल····रईं दक्षनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ कल····

रईं वामनासापुटे ॥ ८ ॥ ॐ कल····रईं दक्षगण्डे ॥ ९ ॥ ॐ कल····रईं वामगण्डे ॥ १० ॥ ॐ कल····रईं ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ११ ॥ ॐ कल····रईं अधरोष्ठे ॥ १२ ॥ ॐ कल····रईं ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ १३ ॥ ॐ कल····रईं अधोदन्तपंक्तौ ॥ १४ ॥ ॐ कल····रईं शिरसि ॥ १५ ॥ ॐ कल····रईं मुखाभ्यन्तरे ॥ १६ ॥ ॐ कल····रईं दक्षबाहुमूले ॥१७॥ ॐ कल····रईं दक्षकर्परे ॥१८॥ ॐ कल····रईं दक्षिणमणिबन्धे ॥ १९ ॥ ॐ कल····रईं दक्षकरांगुलिमूले ॥ २० ॥ ॐ कल····रईं दक्षकरांगुल्यग्रे ॥ २१ ॥ ॐ कल····रईं वामबाहुमूले ॥ २२ ॥ ॐ कल····रईं वामकूर्परे ॥ २३ ॥ ॐ कल····रईं वाममणिबन्धे ॥ २४ ॥ ॐ कल····रईं वामकरांगुलिमूले ॥ २५ ॥ ॐ कल····रईं वामकरांगुल्यग्रे ॥ २६ ॥ ॐ कल····रईं दक्षपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ कल····रईं दक्षजानुनि ॥ ८ ॥ ॐ कल····रईं दक्षगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ कल·· रईं दक्षपादांगुलिमूले ॥ ३० ॥ ॐ कल····रईं दक्षपादांगुल्यग्रे ॥३१॥ ॐ कल····रईं वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ कल····रईं वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ कल····रईं वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ कल····रईं वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ कल···रईं वामपादांगुल्यग्रे ॥ ३६ ॥ ॐ कल····रईं दक्षपार्श्वे ॥ ३७ ॥ ॐ कल····रईं वामपार्श्वे ॥ ३८ ॥ ॐ कल····रईं पृष्ठवंशे ॥ ३९ ॥ ॐ कल····रईं नाभौ ॥ ४० ॥ ॐ कल····रईं जठरे ॥ ४१ ॥ ॐ कल····रईं हृदि ॥ ४२ ॥ ॐ कल····रईं दक्षांसे ॥ ४३ ॥ ॐ कल····रईं वामांसे ॥ ४४ ॥ ॐ कल··· रईं ककुदि ॥ ४५ ॥ ॐ कल····रईं हृदयादिदक्षकरांगुल्यग्रपर्यन्तम् ॥ ४६ ॥ ॐ कल····रईं हृदयादिवामकरांगुल्यग्रपर्यन्तम् ॥ ४७ ॥ ॐ कल····रईं हृदयादिदक्षपादांगुल्यग्रपर्यन्तम् ॥४८॥ ॐ कल····रईं हृदयादिवामपादांगुल्यग्रपर्यन्तम् ॥ ४९ ॥ ॐ कल····रईं नाभ्यादिहृदयपर्यन्तम् ॥ ५० ॥ ॐ कल····रईं हृदयादिमुखपर्यन्तं न्यसेत् ॥ ५१ ॥ इति महासरस्वतीबीजमातृकान्यासः पञ्चदशः ॥ १५ ॥

इस प्रकार पन्द्रह न्यासों को करने के बाद पीठदेवताओं का न्यास करे।

अथ पीठदेवतान्यासः ।

ॐ मं मण्डूकाय नमः मूलाधारे ॥ १ ॥ ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने ॥ २ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः नाभौ ॥ ३ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॐ आं आधारशक्तये नमः । ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः । ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ सुं सुधाम्बुधये नमः । ॐ मं मणिमण्डपाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः । इति हृदये ॥ ४ ॥ ॐ धं धर्माय नमः दक्षांसे ॥ ५ ॥ ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांसे ॥ ६ ॥ ॐ वं वैराग्याय

नमः वामोरौ ॥ ७ ॥ ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ ८ ॥ ॐ अं अधर्माय नमः वदने ॥ ९ ॥ ॐ अं अज्ञानाय नमः वामपार्श्वे ॥ १० ॥ ॐ अं अवैराग्याय नमः नाभौ ॥ ११ ॥ ॐ अं अनैश्वर्याय नमः दक्षपार्श्वे ॥ १२ ॥ ॐ ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः । ॐ सं सविन्नालाय नमः । ॐ सं सर्वतत्त्वपद्माय नमः । ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः । ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः । पं पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः । ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः । ॐ चं चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः । ॐ रं अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः । ॐ सं सत्त्वबोधात्मने नमः । ॐ रं रजःप्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमोमोहात्मने नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः । ॐ मां मायातत्त्वात्मने नमः । ॐ कं कलातत्त्वात्मने नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वात्मने नमः । ॐ पं परतत्त्वात्मने नमः । ॐ शिं शिवतत्त्वात्मने नमः । इति हृदये ॥ १३ ॥

इसके बाद हृदय में ही पूर्वादि आठ दिशाओं में नव पीठशक्तियों का न्यास करे :

ॐ वां वामायै नमः पूर्वभागे । ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः आग्नेय । ॐ श्रें श्रेष्ठायै नमः दक्षिणे । ॐ रौं रौद्रायै नमः नैर्ऋते । ॐ कां काल्यै नमः पश्चिमे । ॐ कं कलविकरण्यै नमः वायव्ये । ॐ बं बलविकरण्यै नमः उत्तरे । ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ऐशान्ये । ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ऊर्ध्वभागे । ॐ मं मनोन्मन्यै नमः हृदयमध्ये ॥ १४ ॥

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः ।'

इस मन्त्र से अपने हृदय में पीठदेवताओं के लिये आसन देकर आवरण-देवता न्यास करे ।

अथावरणदेवतान्यासः ।

प्रथमावरण देवन्यास : शिरसि ॐ ह्रां वां हृदये देवाय भूतनाथाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसि देवाय आदिनाथाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायां देवायानन्दनाथाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचदेवाय सिद्धशाबर-नाथाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रदेवाय सहजानन्दनाथाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्रदेवाय निःसीमानन्दनाथाय नमः ॥ ६ ॥ इति प्रथमावरण-देवन्यासः ॥ १ ॥

द्वितीयावरण देवन्यास : ललाटे ॐ डां डाकिनी पुत्रेभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ शां शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ लां लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ३ ॥

ॐ कां काकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ सां साकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ५ ॥ ॐ हां हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ ॐ मां मालिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥७॥ ॐ दें देवीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ॐ मां मातृपुत्रेभ्यो नमः ॥ ९ ॥ ॐ रुं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः ॥ १० ॥ ॐ ऊं ऊर्ध्वमुखपुत्रेभ्यो नमः ॥ ११ ॥ ॐ अं अधोमुखपुत्रेभ्यो नमः ॥ १२ ॥ इति द्वितीयावरणदेवतान्यासः ॥ २ ॥

तृतीयावरण देवन्यास : कण्ठस्थाने ॐ ब्रं ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मां माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ कौं कौमारीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ वैं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ इं इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ मं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वां वाराहीपुत्र-वटुकाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चां चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः ॥ ८ ॥ इति तृतीया-वरणदेवतान्यासः ॥ ३ ॥

चतुर्थावरण देवन्यास : हृदये ॐ हें हेतुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ त्रिं त्रिपुरान्तकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ वें वेतालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अग्निजिह्वाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ कां कालान्तकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कं करालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एयालाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं श्रीमाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ अं अचलाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ हां हाटकेशाय नमः ॥ १० ॥ इति चतुर्थावरणदेवता-न्यासः ॥ ४ ॥

पञ्चमावरण देवन्यास : नाभौ ॐ श्रीं श्रीकण्ठाय नमः ॥ १ ॥ ॐ अं अनन्तेशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ सूं सूक्ष्मेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अर्मीशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ भां भारभूतीशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अतिथीशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ स्थां स्थाण्वीशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं हरेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ झिं झिंटी-शाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ भौं भौतिकेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ सं सद्योजातेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ अं अनुग्रहेशाय नमः ॥१२॥ ॐ क्रूं क्रूरेशाय नमः ॥१३॥ ॐ मं महासेनेशाय नमः ॥ १४ ॥ इति पञ्चमहावरणदेवतान्यासः ॥ ५ ॥

षष्ठावरण देवन्यास : स्वाधिष्ठाने ॐ क्रों क्रोधीशाय नमः ॥१॥ ॐ चं चण्डीशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पं पञ्चान्तकेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ शिं शिवोत्त-मेशाय नमः ॥ ४ ॥ एं एकरुद्रेशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कूं कूर्मेशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एकनेत्रेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चं चतुराननेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ अं अजेशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ सं सर्वेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ सों सोमेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ लां लाङ्गलीशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ दां दारुकेशाय नमः ॥१३॥ ॐ अं अर्धनारीशाय नमः ॥१४॥ ॐ उं उमाकान्तेशाय नमः ॥१५॥

ॐ आं आषाढीशाय नमः ।। १६ ।। इति षष्ठावरणदेवतान्यासः ।। ६ ।।

सप्तमावरण देवन्यास : मूलाधारे ॐ दं दण्डीशाय नमः ।।१।। ॐ अं अत्रीशाय नमः ।। २ ।। ॐ मं मीनेशाय नमः ।। ३ ।। ॐ में मेषेशाय नमः ।। ४ ।। ॐ लों लोहितेशाय नमः ।। ५ ।। ॐ शिं शिखीशाय नमः ।। ६ ।। ॐ छं छगलण्डेशाय नमः ।। ७ ।। ॐ द्विं द्विरण्डेशाय नमः ।। ८ ।। ॐ मं महाकालीशाय नमः ।।९।। ॐ वां वालीशाय नमः ।।१०।। ॐ भुं भुजङ्गेशाय नमः ।। ११ ।। ॐ पिं पिनाकीशाय नमः ।। १२ ।। ॐ खं खड्गीशाय नमः ।। १३ ।। ॐ वं वकीशाय नमः ।। १४ ।। ॐ श्वें श्वेतेशाय नमः ।। १५ ।। ॐ भृं भृग्वीशाय नमः ।। १६ ।। ॐ नं नकुलीशाय नमः ।। १७ ।। ॐ शिं शिवेशाय नमः ।।१८।। ॐ सं सम्वर्तकेशाय नमः ।।१९।। ॐ दिं दिव्ययोगिन्यै नमः ।। २० ।। ॐ अं अन्तरिक्षयोगिन्यै नमः ।। २१ ।। ॐ भूं भूमिष्ठयोगिन्यै नमः ।। २२ ।। ॐ सं संवर्तयोगिन्यै नमः ।। २३ ।। इति सप्तमावरणदेवतान्यासः ।। ७ ।।

अष्टमावरण देवन्यास : पादयोः ॐ इं इन्द्राय वज्रहस्ताय नमः ।।१।। ॐ अं अग्नये शक्तिहस्ताय नमः ।। २ ।। ॐ यं यमाय दण्डहस्ताय नमः ।। ३ ।। ॐ क्षं निर्ऋतये खड्गहस्ताय नमः ।।४।। ॐ वं वरुणाय पाशहस्ताय नमः ।। ५ ।। ॐ वां वायवे अंकुशहस्ताय नमः ।। ६ ।। ॐ सं सोमाय गदाहस्ताय नमः ।। ७ ।। ॐ ईं ईशानाय त्रिशूलहस्ताय नमः ।। ८ ।। ॐ ब्रं ब्रह्मणे कमलहस्ताय नमः ।। ९ ।। ॐ अं अनन्ताय चक्रहस्ताय नमः ।। १० ।। इत्यष्टमावरणदेवतान्यासः ।। ८ ।।

इस प्रकार न्यास करके श्रीकण्ठादि कलामातृकान्यास करे :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीकण्ठादिन्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः । गायत्री छन्दः । अर्धनारीश्वरो देवता । हलो बीजानि । स्वराः शक्तयः चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः ।

श्रीकण्ठादि कलामातृका के अन्तर्गत ऋष्यादिन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि ।।१।। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ।। २ ।। अर्धनारीश्वरदेवतायै नमः हृदि ।। ३ ।। हलबीजेभ्यो नमः गुह्ये ।। ४ ।। स्वरशक्तिभ्यो नमः पादयोः ।। ५ ।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।। ६ ।। इति श्रीकण्ठादिना कलामातृकान्तर्गतऋष्यादिन्यासः ।

श्रीकण्ठादि कलामातृका के अन्तर्गत करन्यास : ॐ ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।। १ ।। ॐ ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः ।। २ ।। ॐ ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः ।।३।। ॐ ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः ।।४।। ॐ ह्सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।५।। ॐ ह्सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।।६।। इति श्रीकण्ठादिना कलामातृकान्तर्गतकरन्यासः ।

श्रीकण्ठादि कलामातृका के अन्तर्गत हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ह्सां हृदयाय नमः ।। १ ।। ॐ ह्सीं शिरसे स्वाहा ।। २ ।। ॐ ह्सूं शिखायै वषट् ।। ३ ।। ॐ ह्सैं कवचाय हुम् ।। ४ ।। ॐ ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।। ५ ।। ॐ ह्सः अस्त्राय फट् ।। ६ ।। इति श्रीकण्ठादिना कलामातृकान्तर्गतहृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम् । पाशांकुशवराक्षस्रक्पाणिशीतांशुशेखरम् । त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्धनारीश्वरं भजे ॥ १ ॥ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशांकुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः । बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशंवपुराश्रयामः ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके श्रीकण्ठादि का इस प्रकार न्यास करे :

ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः मस्तके ।। १ ।। ॐ ह्सौं आं अनन्तेशविरजाभ्यां नमः आननवृत्ते ।। २ ।। ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे ।। ३ ।। ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्तिलोलाक्षीभ्यां नमो वामनेत्रे ।। ४ ।। ॐ ह्सौं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकर्णे ।। ५ ।। ॐ ह्सौं ऊं अर्घीशदीर्घघोणाभ्यां नमो वामकर्णे ।। ६ ।। ॐ ह्सौं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः दक्षनासापुटे ।। ७ ।। ॐ ह्सौं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः वामनासापुटे ।। ८ ।। ॐ ह्सौं ऌं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमो दक्षगण्डे ।। ९ ।। ह्सौं ॡं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः वामगण्डे ।। १० ।। ॐ ह्सौं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।। ११ ।। ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे ।। १२ ।। ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।। १३ ।। ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ ।। १४ ।। ॐ ह्सौं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि ।।१५।। ॐ ह्सौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः मुखमध्ये ।। १६ ।। ॐ ह्सौं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः दक्षस्कन्धे ।।१७।। ॐ ह्सौं खं चण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः दक्षकूर्परे ।।१८।। ॐ ह्सौं गं पञ्चान्तकेशगौरीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे ।।१९।। ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ।२०। ॐ ह्सौं ङं एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ।। २१ ।। ॐ ह्सौं चं कर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वामस्कन्धे ।। २२ ।। ॐ ह्सौं छं एकाननेशभूत-

मातृकाभ्यां नमः वामकूर्परे ॥ २३ ॥ ॐ ह्सौं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः वाममणिबन्धे ॥ २४ ॥ ॐ ह्सौं झं अंजेशद्रविणीभ्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ २५ ॥ ॐ ह्सौं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥२६॥ ॐ ह्सौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले ॥ २७ ॥ ॐ ह्सौं ठं लङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः दक्षजानुनि ॥ २८ ॥ ॐ ह्सौं डं दारुकेशभागिनीभ्यां नमः दक्षगुल्फे ॥ २९ ॥ ॐ ह्सौं ढं अर्धनारीश्वरेशवारणीभ्यां नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥ ३० ॥ ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेशवृकोदरीभ्यां नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ३१ ॥ ॐ ह्सौं तं आषाढीशपूतनाभ्यां नमः वामपादमूले ॥ ३२ ॥ ॐ ह्सौं थं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः वामजानुनि ॥ ३३ ॥ ॐ ह्सौं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः वामगुल्फे ॥ ३४ ॥ ॐ ह्सौं धं मीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ३५ ॥ ॐ ह्सौं नं मेषेशतर्जनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ३६ ॥ ॐ ह्सौं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः दक्षकुक्षौ ॥ ३७ ॥ ॐ ह्सौं फं शिखीशकुण्डलिनीभ्यां नमः वामकुक्षौ ॥ ३८ ॥ ॐ ह्सौं बं छागलण्डेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे ॥ ३९ ॥ ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः नाभौ ॥ ४० ॥ ॐ ह्सौं मं महाकालेशजयाभ्यां नमः उदरे ॥ ४१ ॥ ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः हृदये ॥ ४२ ॥ ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः दक्षांसे ॥ ४३ ॥ ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि ॥ ४४ ॥ ॐ ह्सौं वं मेदआत्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः वामांसे ॥४५॥ ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः हृदयादिदक्षकराग्रान्तम् ॥४६॥ ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः हृदयादिवामकराग्रान्तम् ॥ ४७ ॥ ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः हृदयादिवामपादान्तम् ॥ ४८ ॥ ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ॥ ४९ ॥ ॐ ह्सौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः हृदयादिनाभ्यन्तम् ॥५०॥ ॐ ह्सौं क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेशमायाभ्यां नमः हृदयादिशिरोन्तम् ॥५१॥

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता घृतशूलकपालकाः । शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिन्दूरारुणविग्रहाः । रक्तोत्पलकपालाभ्यामलंकृतकराम्बुजाः ॥ १ ॥

इस प्रकार श्रीकण्ठादि कलामातृका न्यास करके प्रयोगोक्त न्यासादि करे। इसके बाद पीठादि पर रचित लिङ्गतोभद्रमण्डल में या सर्वतोभद्रमण्डल में उसके बीच मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करे। उसमें क्रम यह है : पुष्प और अक्षत लेकर अपने वामभाग में।

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ २ ॥ मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ॥ ३ ॥

इससे पूजन करके पीठ के मध्य में :

ॐ मं मण्डूकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ आं आधारशक्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ४ ॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥ १० ॥ ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः ॥१२॥ इससे पूजा करे। आग्नेयाम् ॐ धं धर्माय नमः ॥१३॥ नैर्ऋत्याम ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः ॥ १४ ॥ वायव्याम् ॐ वैं वैराग्याय नमः ॥ १५ ॥ ऐशान्याम ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः ॥ १६ ॥ पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः ॥ १७ ॥ दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः ॥ १९ ॥ उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ २० ॥ इससे पूजा करे। पुनः पीठमध्ये। ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ सं संविन्नालाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ २४ ॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः ॥ २५ ॥ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ २७ ॥ ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ २८ ॥ ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥ २९ ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ३१ ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ३२ ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥३३॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ३४ ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ॥ ३६ ॥ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ॥ ३७ ॥ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ॥ ४० ॥

इस प्रकार पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की पूजा करे :

पूर्वे ॐ वां वामायै नमः ॥ १ ॥ आग्नेयाम् ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः ॥२॥ दक्षिणे। ॐ रौं रौद्रयै नमः ॥ ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ कां काल्यै नमः ॥ ४ ॥ पश्चिमे। ॐ कं कलविकरण्यै नमः ॥ ५ ॥ वायव्ये। ॐ बं बलविकरण्यै नमः ॥ ६ ॥ उत्तरे। ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ऐशान्ये। ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८ ॥ पीठमध्ये। ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर घृत से उसपर अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देवे। फिर उसे स्वच्छ वस्त्र से सुखा ले और शक्ति गन्धाष्टक से यन्त्र लिखकर :

ॐ नमो भगवते वटुकाय सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योग-पीठात्मने नमः।

इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा वक्ष्यमाणं देवयन्त्रं पूजनं विनैव केवलं पीठमध्ये संस्थाप्य पात्रासादनं कुर्यात् तत्रादौ साम्बकलशस्थापनम्। देवदक्षिणे यक्षकर्दममिश्रितजलेन भूमिं विलिप्य त्रिकोणं च कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य ततस्त्रिकोणान्तर्मायां 'ह्रीं' विलिख्य त्रिकोणेषु कूटत्रयेण सम्पूज-येत्। तद्यथा। मूलस्यखण्डत्रयं कृत्वा अग्निकोणे प्रथमकूटं दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं वामकोणे तृतीयकूटं च सम्पूज्य त्रिकोणमध्ये ह्रींकारदेशे ॐ ह्रीं आधार शक्तिभ्यो नमः। इति आधारशक्तीः पूजयेत्। ततः मूलेन नमः इति त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ततः प्रथमकूटमुच्चार्य धर्मप्रददशकलाव्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः इत्या-धारं सम्पूज्य पूर्वादिक्रमेण दश वह्निकला यजेत्। तद्यथा।

साम्ब कलशस्थापन : इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर वक्ष्यमाण देव यन्त्र को बिना पूजन के केवल पीठ के मध्य स्थापित करके पात्रासादन करे। इसमें सर्वप्रथम साम्ब कलशस्थापन होता है। देव के दाहिने यक्षकर्दम (कपूर, अगुरु, कस्तूरी, कुंकुम, चन्दन इन महासुगन्धि द्रव्यों को यक्षकर्दम कहते हैं) से मिश्रित जल से भूमि को लीपकर त्रिकोण बनाकर जल से प्रोक्षण करके उस त्रिकोण के अन्दर मायाबीज 'ह्रीं' लिखकर त्रिकोण में कूटत्रय (मूलमन्त्र का तीन खण्ड करना कूटत्रय कहा जाता है) से पूजा करे। इस प्रकार मूलमन्त्र के तीन खण्ड करके अग्निकोण में प्रथम कूट, दक्षिण कोण में द्वितीय कूट तथा वामकोण में तृतीय कूट की पूजा करके त्रिकोण के मध्य में ह्रींकार देश में 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः' इससे आधारशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद मूलमन्त्र के अन्त में नमः लगाकर उस त्रिपदाधार को धोकर त्रिकोण के मध्य में स्थापित करके प्रथम कूट का उच्चारण करके 'धर्मप्रददशकलाव्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः' इससे आधार का पूजन करके पूर्वादि क्रम से इस प्रकार दश वह्नि कलाओं का जप करे :

यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ १ ॥ रं ऊष्मायै नमः ॥ २ ॥ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ ३ ॥ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ ४ ॥ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ॥ ५ ॥ षं

सुश्रियै नमः ॥ ६ ॥ सं सुरूपायै नमः ॥ ७ ॥ हं कपिलायै नमः ॥ ८ ॥ लं हव्यवाहायै नमः ॥ ९ ॥ क्षं कव्यवाहायै नमः ॥ १० ॥

इति पूजयेत्। ततो मूलेनास्त्राय फट्। इति कलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिभिर्भूषयित्वा ततो द्वितीयकूटमुच्चार्य 'ॐ अर्थप्रदद्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः' इति कलशं सम्पूज्य तद्बाह्ये पूर्वादिषु सूर्यस्य द्वादश कलाः पूजयेत्। तद्यथा।

इससे पूजा करे। इसके बाद मूलमन्त्र के साथ 'अस्त्राय फट्' बोलकर कलश को धोकर उसे आधार के ऊपर दोनों हाथों से स्थापित करके लाल वस्त्र तथा माला आदि से भूषित करके द्वितीय कूट का उच्चारण करके 'ॐ अर्थप्रद द्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः' इससे कलश की पूजा करके उसके बाहर पूर्वादि दिशाओं में सूर्य की द्वादश कलाओं की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ १२ ॥

इस प्रकार पूजा करे। फिर शुद्ध जल से घट को मुख पर्यन्त भरकर :

'ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।

इति तीर्थान्यावाह्य ततस्तृतीयकूटमुच्चार्य 'ॐ कामप्रदषोडश-कलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः' इति जले पूजयित्वा पूर्वादिषु षोडश सोमकला यजेत्। तद्यथा :

इससे तीर्थों का आवाहन करके तृतीय कूट का उच्चारण करके 'ॐ कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः' इससे जल में पूजन करके पूर्वादि दिशाओं में षोडश सोमकलाओं का इस प्रकार यजन करे :

ॐ अं अमृतायै नमः ॥ १ ॥ ॐ आं मानदायै नमः ॥ २ ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ईं तुष्टयै नमः ॥ ४ ॥ ॐ उं पुष्टयै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥६॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥७॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायै

नमः ॥ ११ ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ १२ ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ १३ ॥ ॐ औं अङ्गदायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥१५॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ १६ ॥

इस प्रकार पूजन करके देवता का ध्यान करे। इति साम्ब कलश-स्थापन ॥ १ ॥

अथ सुधाकुम्भस्थापनम्। स्ववामे त्रिकोणं षट्कोणं वृत्तं चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा शङ्खमुद्रया मण्डलं स्पर्शयेत्। ततस्त्रिकोणान्तरमयं विलिख्य त्रिकोणेषु कूटत्रयं पूजयेत्। तद्यथा : अग्निकोणे प्रथमकूटं दक्षिणकोणे द्वितीयकूटं वामकोणे तृतीयकूटं च पूजयेत्। ततः षट्कोणेषु अग्निकोणे ॐ हृदयशक्तिभ्यां नमः। ऐशान्ये ॐ शिरः शक्तिभ्यां नमः। वायव्येः शिखाशक्तिभ्यां नमः। नैर्ऋते कवचशक्तिभ्यां नमः। पूर्वे : नेत्रशक्तिभ्यां नमः। पश्चिमे : अस्त्रशक्तिभ्यां नमः इति षडङ्गानि गन्ध-पुष्पाभ्यां सम्पूज्य षटकोणाद्बहिर्वर्तुले अकारादिक्षकारान्तं मातृकां सम्पूजयेत्। ततो वर्तुलाद्बहिश्चतुरस्रे पूर्वद्वारे उद्यानपीठाय नमः। दक्षिणद्वारे। जालन्धरपीठाय नमः। पश्चिमद्वारे। पूर्णगिरिपीठाय नमः। उत्तरद्वारे। कामगिरिपीठाय नमः। इति चतुःपीठानि गन्ध-पुष्पाभ्यां सम्पूज्य त्रिकोणमध्ये 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः' इत्या-धारशक्तीः पूजयेत्। ततो 'मूलेन नमः' इति मन्त्रेणाधारद्रव्यं प्रक्षाल्य मण्डलोपरि संस्थाप्य ततः प्रथमकूटमुच्चार्य ॐ धर्मप्रददशकला-व्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः इति सम्पूज्य पूर्वादिषु दश वह्निकला यजेत्। तथा च।

सुधाकलश स्थापन : अपने बाँये त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्र सहित मण्डल बनाकर शङ्खमुद्रा से मण्डल का स्पर्श करे। इसके बाद उस त्रिकोण के भीतर मायाबीज ह्रीं लिखकर त्रिकोण की कूटत्रय से इस प्रकार पूजा करे : अग्निकोण में प्रथम कूट, दक्षिण कोण में द्वितीय कूट और वाम-कोण में तृतीय कूट की पूजा करके षट्कोण के अग्निकोण में 'ॐ हृदय-शक्तिभ्यां नमः', ईशानकोण में 'ॐ शिरःशक्तिभ्यां नमः', वायव्य कोण में 'शिखाशक्तिभ्यां नमः', नैर्ऋत्य कोण में 'कवच शक्तिभ्यां नमः', पूर्व में 'नेत्र-शक्तिभ्यां नमः', और पश्चिम में 'अस्त्रशक्तिभ्यां नमः' से षडङ्गों की गन्ध और पुष्प से पूजा करके षट्कोण के बाहर वर्तुल में अकारादि से क्षकारान्त मातृकाओं का पूजन करे। इसके बाद वर्तुल के बाहर चतुरस्र के पूर्व द्वार पर उद्यानपीठाय नमः। दक्षिण द्वार पर जालन्धर पीठाय नमः। पश्चिम

द्वार पर पूर्ण गिरिपीठाय नमः। उत्तर द्वार पर कामगिरिपीठाय नमः। इससे चारों पीठों की गन्ध और पुष्पों से पूजा करके त्रिकोण के मध्य में 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः' इससे आधारशक्ति की पूजा करे। फिर मूल-मन्त्र में नमः लगाकर इस मन्त्र से आधारद्रव्य का प्रक्षालन करके मण्डल पर उसे स्थापित करके प्रथम कूट का उच्चारण करके 'ॐ धर्मप्रद दशकला-व्याप्तात्मने वह्निमण्डलाय नमः' इससे पूजा करे। फिर पूर्वादि दिशाओं में वह्निकलाओं का इस प्रकार यजन करे :

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ १ ॥ ॐ रं ऊष्मायै नमः ॥ २ ॥ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ षं सुश्रियै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सं सुरूपायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं कपिलायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ लं हव्यवाहायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः ॥ १० ॥

इति पूजयेत्। ततः मूलेनास्त्राय फट् इति मन्त्रेण कलशं प्रक्षाल्य रक्तवस्त्र माल्यादिभिर्भूषयित्वा रत्नखचितं तत्पात्रं त्रिपदाधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य द्वितीयकूटमुच्चार्य ॐ अर्थप्रदद्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। इति मन्त्रेण कलशं स्पृष्ट्वा पूर्वादिषु द्वादश सूर्यकला यजेत्। तथा च।

इससे पूजा करे। इसके बाद मूलमन्त्र में 'अस्त्राय फट्' जोड़कर इस मन्त्र से कलश का प्रक्षालन करके रक्तवस्त्र और माला आदि से भूषित कर रत्नखचित उस पात्र को दोनों हाथों से त्रिपदाधार पर स्थापित करके द्वितीय कूट का उच्चारण करके 'ॐ अर्थप्रद द्वादशकलाव्याप्तात्मने सूर्यमण्डलाय नमः' इस मन्त्र से कलश का स्पर्श करके पूर्वादि दिशाओं में द्वादश सूर्य-कलाओं का इस प्रकार यजन करे।

ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ झं तं विविश्वायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ १२ ॥

इति पूजयेत्। ततः सुवासित वस्त्रगालिततीर्थामृतेन घटमापूर्य तृतीयकूटमुच्चार्य कामप्रदषोडशकलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः। इति संप्रोक्ष्य तदमृते षोडशचन्द्रकला यजेत्। तथा च।

इससे पूजा करे। इसके बाद सुवासित वस्त्र से छाने हुये तीर्थामृत से घट को भरकर तृतीय कूट का उच्चारण करके 'कामप्रद षोडशकलाव्याप्तात्मने सोममण्डलाय नमः' इस मन्त्र से उस अमृत में षोडश चन्द्रकलाओं का इस प्रकार यजन करे :

ॐ अं अमृतायै नमः ॥ १ ॥ ॐ आं मानदायै नमः ॥ २ ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ ऌं चन्द्रिकायै नमः ॥९॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ १२ ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ १३ ॥ ॐ औं अङ्गदायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥१५॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ १६ ॥

इससे पूजन करके इस प्रकार द्रव्यशुद्धि करे :

'ॐ सुधादेवी विद्महे कामेश्वर्यै च धीमहि तन्नो रक्ताक्षि प्रचोदयात्।

इस सुधागायत्री मन्त्र से दश बार अभिमन्त्रित करके मूलमन्त्र का दश बार जप करे। इससे शुद्धि करके इस प्रकार शापमोचन करे :

ॐ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्। कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ १ ॥ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे। आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ २ ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ ३ ॥

इस मन्त्र से सुधा को ढँक कर यह मन्त्र पढ़े :

'ॐ सां सीं सूं सैं सौं सः शुक्रशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः ॥१॥'

इसका बारह बार जप करे ॥ १ ॥ फिर :

'ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः।'

इसका दश बार जप करे ॥ २ ॥ फिर :

'ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।'

इसका दश बार जप करे ॥ ३ ॥ फिर :

'ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादेव्यै नमः।'

इसका दश बार जप करे ॥ ४ ॥

इससे शुक्र, ब्रह्मा, कृष्ण और रुद्र के शापों का उद्धार करके इस प्रकार दश दोषों का निवारण करे :

'ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनि परमाकाशशून्यवाहिनि चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणि पात्रं विशविश स्वाहा।'

इस मन्त्र का पात्र के ऊपर दश बार जप करे ॥ १ ॥ फिर :

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि। तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्।'

इस मन्त्र का पात्र के ऊपर दश बार जप करे ॥ २ ॥

इन दोनों मन्त्रों को पढ़ने के बाद दश दोषों के निवारणार्थ इन दश मन्त्रों के द्वारा पात्र पर अक्षतों को डाले :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यंरंलंवं आस्फालिनी ग्रामचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां सङ्गमस्पर्शचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फें घं ङं लं क्षं दृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं क्रों घटचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं तपनीयवधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं भां क्रीं क्लीं निर्दयचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्रूं छं स्रों स्रौं खेदयखेदय सर्वजनसृष्टिस्पर्शदोषाय हुं फट् स्वाहा ॥ १० ॥

यह कहकर कुम्भ पर अक्षतों को छिड़के। इसके बाद :

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऋतजा अद्रिजाऋतं बृहत् ॥ १ ॥

इत्यनेन त्रिवारं द्रव्योपरि पठित्वा गन्धपुष्पाणि निःक्षिप्य द्रव्यंशुद्धमिति भावयन् दोषरहितद्रव्यमध्ये आनन्दभैरवमानन्दभैरवीं च ध्यायेत्।

इस मन्त्र को तीन बार द्रव्य के ऊपर पढ़कर गन्ध और पुष्प डालकर 'द्रव्य शुद्ध हो गया है' ऐसी भावना करते हुये दोषरहित द्रव्य के मध्य आनन्द भैरव तथा आनन्द भैरवी का ध्यान करे।

अथानन्दभैरवध्यानम्। 'सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ १ ॥ अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम्। वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥ २ ॥ कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम्। पाशांकुशधरं देवं गदामुसलधारिणम् ॥ ३ ॥ खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरं शूलकुन्तलम्। विधृतं खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिकम् ॥ ४ ॥ लोहितं देवदेवेशं भावयेत्साधकोत्तमः ॥ ५ ॥

इस प्रकार ध्यान करके :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वौषट्।

इस मन्त्र से आनन्द भैरव की तीन बार पूजा करके आनन्द भैरवी का इस प्रकार ध्यान करे :

भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्। हेमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्। प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके :

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं सुधादेव्यै वौषट्।'

इत्यानन्दभैरवीं सम्पूजयेत्। ततः स्थालीमध्ये किञ्चिद्द्रव्यं गृहीत्वा द्रव्यमध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे। त्रिकोणदक्षावर्तं विलिख्य।

इससे आनन्द भैरवी की पूजा करे। इसके बाद स्थाली में किञ्चित द्रव्य लेकर द्रव्य के मध्य शक्तिचक्र लिखे। उसके अभाव में दक्षिणावर्त त्रिकोण लिख कर :

ऊर्ध्वरेखा में अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः। दक्षिणरेखा में कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठंडंढंणंतं। उत्तर रेखा में थंदंधंनंपंफंबंभंमंयंरंलंवंशंषंसंहं दक्षिणपार्श्व में ॐ ळं नमः। वामपार्श्व में ॐ क्षं नमः। त्रिकोणमध्य में कामकलां 'ईं'।

यह लिखकर द्रव्य के मध्य में अमृतत्व का चिन्तन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं अमृते अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतस्वरूपिणि अमृतं स्रावयस्रावय शुक्रादिशापात् सुरां मोचयमोचय मोचिकायै नमः।

इति विचिन्तयेत। ततः 'ह्रीं ॐ जूं सः' इति मृत्युञ्जयमन्त्रं द्वाविंशतिवारं जपित्वा तेनैव मन्त्रेण द्रव्यं कलशे क्षिप्त्वा मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य सुधामन्त्रेणाभिमन्त्रयेत्। तत्र मन्त्रः।

यह चिन्तन करे। इसके बाद 'ह्रीं ॐ जूं सः' इस मृत्युञ्जय मन्त्र को २२ बार जप कर उसी मन्त्र से द्रव्य को कलश पर डालकर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके सुधामन्त्र से अभिमन्त्रित करे। उसमें मन्त्र यह है :

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः। पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम्।

इति अभिमन्त्रयेत्। पश्चाद्धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य

कवचेनावगुंठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा कलशं ध्यायेत्।

इससे अभिमन्त्रित करे। फिर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके, मत्स्यमुद्रा से ढँक कर, कवच से अवगुण्ठित करके, चक्र से रक्षा करके, अस्त्र से चुटकियाँ बजाकर दश दिग्बन्धन करके कलश का ध्यान करे।

अथ कलशध्यानम्। देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोसि महाकुम्भ विष्णुना विधृतः करे ॥ १ ॥ त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वे वेदाः समाश्रिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ शिवस्त्वं च घटोसि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ ३ ॥ त्वयि तिष्ठन्ति कलशे यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्त्तुमीहे जलोद्भव ॥ ४ ॥ त्वदालोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलं महत्। सान्निध्यं कुरु भो कुम्भ प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ५ ॥

इससे ध्यान करके घटसूक्त का पाठ करे :

अथ घटसूक्तम्।

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदे सागरोत्तमे। तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत्कन्यकारूपधारिणीम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजां देवीं रक्तान्तायतलोचनाम्। आपीनवर्णां स्वर्णाभां बहुरूपां परां सुराम् ॥ २ ॥ तां सर्वां तु सुरां सर्वदेवानामभयङ्करीम्। या सुरा सा रमा देवी यो गन्धः स जनार्द्दनः ॥३॥ यो वर्णः स भवेद्ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः। स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुताशनः ॥ ४ ॥ इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः। घटो ब्रह्मा रसो विष्णुर्बिन्दवो रुद्र एव च ॥ ५ ॥ हुंकार ईश्वरः प्रोक्तो ह्युन्मोदस्तु सदाशिवः। घटमूल स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः ॥ ६ ॥ घटकण्ठे नीलकण्ठो घटाग्रे सर्वदेवताः। लब्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिया ॥ ७ ॥ सर्वविद्या तु या देवी सुरादेवि नमोस्तु ते। अनेन घटसूक्तेन द्रव्यशुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥

इस प्रकार घटसूक्त का पाठ करके कलश में प्राणप्रतिष्ठा करे :

अथ कलशप्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः।

हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं श्रीमद्बटुकभैरवस्याधारसहितस्य कलशेस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः ॥१॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं श्रीमद्बटुकभैरवस्यास्मिन्कलशे जीव इह स्थितः ॥ २ ॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं श्रीमद्बटुकभैरवस्यास्मिन्कलशे सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्वाश्रोत्र घ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥

इससे प्राणप्रतिष्ठा करके और गन्ध आदि से पूजा करके उस कलश में चारों दिशाओं में पाँच रत्नों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वे । ॐ ग्लूं गगनरत्नाय नमः । दक्षिणे । ॐ स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः । पश्चिमे । ॐ म्लूं पातालरत्नाय नमः । उत्तरे । ॐ म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः । मध्ये । ॐ न्लूं नागरत्नाय नमः ।

इससे पञ्चरत्नों की पूजा करके पञ्चमुद्राओं से नमस्कार करके कलश के लिये इस प्रकार बलि देवे : कुम्भ के समीप लाल चन्दन, सिन्दूर तथा कुंकुम का एकत्र मिलाकर उससे त्रिकोण, वृत्त और चतुरस्रमय मण्डल बनाकर वहाँ 'सर्वपथिकदेवेभ्यो नमः' इससे गन्ध और पुष्प से पूजन करके उसके ऊपर मीनमुद्रान्वित द्रव्यशुद्धि की बलि रखकर तत्वमुद्रा से बलि देकर उस बलि को बाँये हाथ से कलश के ऊपर तीन बार घुमाकर मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुये पूजा के बाहर फेंक देवे । इति सुधाकलश स्थापन विधि ।

अथ शुद्धिस्थापनविधि ।

कुम्भ के बाँये शुद्धि की स्थापना करके इस प्रकार पात्रासादन करे । कुम्भ के बाँये साम्बकलशस्थापनोक्त विधि से शुद्धि की स्थापना करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित करके :

ॐ उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि न पशुस्त्वं शिवोसि भो । शिवाकृत्यमिदं पिण्डं यतस्त्वं शिवतां व्रज ॥१॥ ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि । तन्नश्छागः प्रचोदयात् ॥ २ ॥

इसका तीन बार पाठ करे । इति शुद्धिस्थापन । इस प्रकार शुद्धिस्थापित करके पात्रासादन करे :

अथ पात्रासादनप्रयोगः ।

पात्रासादन प्रयोग : इसमें पहले शङ्खस्थापन प्रयोग : देव के वामभाग में साम्ब कलश स्थापनोक्त विधि से शङ्ख की स्थापना करके गन्ध आदि से उसकी पूजा करके इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे :

ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता । पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे

गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥ २ ॥

इससे अभिमन्त्रित करके प्रार्थना करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तु ते ॥ १ ॥

इससे प्रार्थना करके :

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि । तन्नः शङ्खः प्रचोदयात् ।

इसका आठ बार जप करके शङ्खमुद्रा प्रदर्शित करे । इति शङ्खस्थापन ॥ १ ॥

अथ विशेषार्घस्थापनम् । आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये स्वपुरतः साम्बकलशोक्तविधिना विशेषार्घपदमुच्चरन् विशेषार्घं संस्थाप्याभिमन्त्रयेत् । तत्र मन्त्राः ।

विशेषार्घस्थापन : अपने और श्रीचक्र के मध्य अपने आगे साम्बकलशोक्त विधि से 'विशेषार्घ' पद का उच्चारण करते हुये विशेषार्घ स्थापित कर अभिमन्त्रित करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ऐं क्लीं सौं ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भवम् । आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥ १ ॥ अखण्डैकरसानन्दकलेवरसुधात्मनि । स्वच्छन्दस्फुरणान्मन्त्रान्निधेह्यकुलरूपिणी ॥ २ ॥ क्लीं अकुलस्थामृताकारे सिद्धज्ञानकलेवरे । अमृतत्वं निधेह्यस्मिन्वस्तुनि क्लिन्नरूपिणी ॥ ३ ॥ सौः तद्रूपेणैकरस्यं च कृत्वास्यैतत्स्वरूपिणी । भूत्वा पराभृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु ॥ ४ ॥

इन मन्त्रों से अर्घ्य को अभिमन्त्रित करके पूर्ववत् पञ्चरत्नों की पूजा करे । इति विशेषार्घ स्थापन ॥ २ ॥

इति विशेषार्घ्यं स्थापयित्वा देवदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रमेवमेवविधिना स्थापयेत् । इति त्रिरर्घ्यस्थापनम् ॥ ३ ॥

इस प्रकार विशेषार्घ की स्थापना करके देव के दाहिने ओर प्रोक्षणी पात्र को इसी विधि से स्थापित करे । इति त्रिरर्घ्यस्थापन ॥ ३ ॥

ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रं १, गुरुपात्रं २, भैरवपात्रं ३, शक्तिपात्रं ४, योगिनीपात्रं ५, भोगपात्रं ६, वीरपात्रं ७, आत्मपात्रं ८, बलिपात्रं ९, एतानि नव पात्राणि दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्का इति

चत्वारि पात्राणि साम्बकलशोक्तविधिना स्थापयेत् । अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगेति पञ्चपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत् । तत्राप्यशक्तश्चेत्तदा एकमेव शङ्खं संस्थापयेत् ।

इसके बाद विशेषार्घ के बाँये भाग में १. श्रीपात्र, २. गुरुपात्र, ३. भैरवपात्र, ४. शक्तिपात्र, ५. योगिनीपात्र, ६. भोगपात्र, ७. वीरपात्र, ८. आत्मपात्र, ९. बलिपात्र—ये नव पात्र तथा दाहिने ओर पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय और मधुपर्क के चारों पात्रों को साम्ब कलशोक्त विधि से स्थापित करे। इन सब में अशक्त हो तो गुरुपात्र, वीरपात्र, आत्मपात्र, बलिपात्र और भोगपात्र—ये पाँच पात्र तथा पाद्यादि उपचार के लिये केवल एक पात्र ही स्थापित करे। यदि इनमें भी अशक्त हो तो केवल एक शङ्ख की ही स्थापना करे।

घण्टास्थापन प्रयोग : देव के दाहिने भाग में घण्टा स्थापित करके उसे बजाते (देवताओं के आगमनार्थ और राक्षसों के गमनार्थ घण्टा बजाना और पश्चात् घण्टा का पूजन करना चाहिये) हुये इस प्रकार पूजा करे :

ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः । आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

इससे आवाहन करके 'ॐ जगद्ध्वने मन्त्रमातः स्वाहा' इस मन्त्र से घण्टा स्थित गरुड की और घण्टा की पूजा करके गरुडमुद्रा प्रदर्शित करे। इति घण्टास्थापन।

अखण्ड दीपस्थान प्रयोग : देव के दाहिने भाग में घृत का दीप तथा बाँये हाथ में तेल का दीप इस प्रकार स्थापित करना चाहिये : दीपपात्र को गाय के घी से या तेल से भरकर २१ तन्तुओं की बत्ती उसमें डालकर प्रणव (ॐ) से जलाकर सुदर्शन मन्त्र से घृतदीप की पूजा करे। सुदर्शन मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सांरींरूंरैंरौंरः सुदर्शनायास्त्राय फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से गन्ध और पुष्प से पूजा करे।

तेल के दीपक की पाशुपतास्त्र मन्त्र से पूजा करे। पाशुपतास्त्र मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पूजा करे।

इस प्रकार पूजा करके दोनों हाथों से दीपशिखा का स्पर्श करके यह मन्त्र पढ़े :

ॐ अघोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा।

यह पढ़कर तेज में अपने को समर्पित करके इस प्रकार चित्त-शोधन करे :

हुं फट् स्वाहा इति मुखे ॥१॥ ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदये ॥२॥

हाथ देकर आत्मरक्षा करके ॐ मन्त्र से चन्दन और पुष्प हाथ से रगड़ कर पुष्प और अक्षत लेकर :

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः । मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥ १ ॥

इस मन्त्र से ऐशानी दिशा में पुष्प को दूर फेंक कर हाथ धोकर आचमन करे। इत्यखण्डदीपस्थापन।

इति दीपं संस्थाप्य गन्धाक्षतादिपूजोपकरणानि स्वदक्षिणे संस्थाप्य मूलेन 'नमः' इति सम्प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनच्छत्रादर्शचामराणि च वामपार्श्वे निधापयेत् ।

इस प्रकार दीप की स्थापना करके गन्ध, अक्षतादि पूजा के उपकरण अपने दाहिने भाग में स्थापित करके मूलमन्त्र में 'नमः' लगाकर इससे प्रोक्षण करके जल के लिये बृहत्पात्र, पङ्खा, छाता, दर्पण, और चँवर बाँये पार्श्व में रक्खे।

अथ मांसशोधनम् ।

ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरच्छेदाय धीमहि। तन्नो मांसः प्रचोदयात् ।

इसका दश बार जप करने से मांस शुद्ध होता है।

अथ मीनशोधनम् ।

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।'

इस मन्त्र से मीन का शोधन करे।

अथ मुद्राशोधनम् ।

ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते आश्विनौ धत्तां वर्धेतां पुष्करस्रजौ ॥ १ ॥ तथा 'ॐ ग्लूं ज्लूं ग्लूं स्वाहा ।'

इन मन्त्रों से मांस और मीन मुद्राओं का शोधन करे।

इस प्रकार शोधन करके यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करे।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

देशकालौ संकीर्त्य मम वटुकभैरवदेवतानूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करे।

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि। क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। अस्य नूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इससे जल छिड़क कर यन्त्र को हाथ से ढँक कर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः॥ १॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः॥ २॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि॥ ३॥

पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहं अस्य वटुकभैरवसपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वकचक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥ ४॥

इससे प्राणप्रतिष्ठा करके :

यः प्राणतोनिमिषतोमहित्वैवेविधेमइति मन्त्रिति।

इसका तीन बार पाठ करे। फिर 'मनोजूतिर्जूषतासुप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा' यह कहकर संस्कार सिद्धि के लिये प्रणव की १५ बार आवृत्ति करके :

अनेन वटुकभैरवसपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामीति।

यह कहे। इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। शुद्धस्फटिकसङ्काशंसहस्रादित्यवर्चसम्। नीलजीमूतसङ्काशंनीलाञ्जनसमप्रभम्॥ १॥ अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्। दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम्॥ २॥ भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्। दिगम्बरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम्॥ ३॥ खट्वांगमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः। डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा॥ ४॥ अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्।

इस प्रकार बटुक का ध्यान करके उनका यजन आरम्भ करे। उसमें मन्त्र यह है : अक्षत लेकर :

देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित। यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव

इहावह॥ १॥ आगच्छ देव वटुक स्थाने चात्र स्थितो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ २॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः श्रीवटुकभैरवदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ।

इससे अक्षतों को फेंक कर आवाहनीमुद्रा प्रदर्शित करे। इति आवाहन।१।

तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगः प्रभो। भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम्॥ १॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव इहतिष्ठ।

इससे अक्षत फेंक कर स्थापिनीमुद्रा प्रदर्शित करे। इति स्थापन॥ २॥

अनन्या तव देवेश मूर्तिशक्तिरियं प्रभो। सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परः॥ १॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह सन्निधेहि।

इससे अक्षतों को फेंक कर सन्निधापनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सन्निधापन॥ ३॥

आज्ञया तव देवेश कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे। आत्मानन्दैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो॥ १॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह सन्निरुध्य।

इससे अक्षतों को फेंक कर सन्निरोधन मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सन्निरोधन॥ ४॥

अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च। यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव॥ १॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव इह सम्मुखो भव।

इससे अक्षतों को फेंक कर सम्मुखीकरण मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सम्मुखीकरण॥ ५॥

अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते। स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः॥ १॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव अवगुण्ठितो भव ।'

इससे अक्षतों को फेंक कर अवगुण्ठिनी मुद्रा प्रदर्शित करे। इस प्रकार अवगुण्ठन करके सुस्वागत करे ॥ ६ ॥ उसमें मन्त्र यह है :

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये। तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ श्रीवटुकभैरवाय नमः' सुस्वागतं समर्पयामि। इति सुस्वागतम् ॥ ७ ॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः' आसनं समर्पयामि ।

इससे आसन देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ॥८॥ उसमें मन्त्र यह है :

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि।

इससे प्रार्थना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करे ॥ ९ ॥

अथ पाद्यादिपूजनम्।

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दविग्रहः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' पाद्यं समर्पयामि ।

इससे सामान्यार्घोदक से अथवा शङ्खोदक से पाद्य देवे ॥ १ ॥

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' अर्घ्यं समर्पयामि। इत्यर्घः ॥ २ ॥

ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने। मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' मधुपर्कं समर्पयामि। इति मधुपर्कम् ॥ ३ ॥

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने। आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः आचमनं समर्पयामि। इत्याचमनम् ॥४॥

इस प्रकार आचमन देकर और पञ्चामृत स्नानादि सर्वदेवोपयोगी मार्ग से कराकर इस प्रकार जलस्नान कराये :

ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' शङ्खोदकस्नानं समर्पयामि। इति स्नानम् ॥ ५ ॥

ॐ सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ श्रीवटुकभैरवाय नमः' वस्त्रं समर्पयामि। इति वस्त्रम् ॥ ६ ॥

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' यज्ञोपवीतं समर्पयामि। इति यज्ञोपवीतम् ॥ ७ ॥

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' गन्धं समर्पयामि।

यह कहकर अँगूठे को कनिष्ठा मूल में लगाकर गन्धमुद्रा दिखाये। इति गन्ध ॥ ८ ॥

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' अक्षतान्समर्पयामि। इत्यक्षतान् ॥ ९ ॥

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' पुष्पं समर्पयामि।

तर्जनी को अंगुष्ठमूल में लगाकर पुष्पमुद्रा प्रदर्शित करे ॥ १० ॥

इस प्रकार पुष्पान्त समर्पण तक पूजा करने के बाद देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम इस प्रकार है :

श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुद्धरेत्। पूजयामि नमः पश्चात्पूजयेदङ्गदेवताः ॥ १ ॥

यह कहकर आवरण देवताओं की पूजा करे। उसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥ २ ॥

यह कहकर पुष्पाञ्जलि भैरव के ऊपर देकर आज्ञा लेकर, सर्वत्र पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करते हुये प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपादि से पूजन करे।

अथ धूपादिपूजाप्रयोगः। फडिति धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय (ॐ रं) इति वह्निबीजेनोपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्वा घण्टां वादयन्।

धूपादि पूजा : 'फट्' मन्त्र से धूपपात्र का प्रोक्षण करके मूलमन्त्र में नमः लगाकर उससे गन्ध-पुष्प के द्वारा पूजा करके सामने रखकर 'ॐ रं' इस अग्निबीज से उसपर अग्नि स्थापित करके उसके ऊपर मूलमन्त्र से दशांग देकर घण्टा बजाते हुये :

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः' धूपं समर्पयामि।

इससे नाभिदेश में धूप दिखाकर देव के वामभाग की ओर धूपपात्र को रखकर तर्जनीमूल के साथ अंगूठे को लगाकर धूपमुद्रा प्रदर्शित करे। इति धूप ॥ १ ॥

इसके बाद दीपपात्र में गाय का घी भरकर २१ तन्तुओं की बत्ती उसमें डालकर प्रणव (ॐ) से उसे जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से लेकर पादपर्यन्त दीप प्रदर्शित करे।

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। स बाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः दीपं समर्पयामि।

यह पढ़कर देव के दक्षिण भाग में दीप को रख दे। इसके बाद शङ्ख का जल गिराकर मध्यमा और अंगूठे के योग से दीपमुद्रा प्रदर्शित करे। इति दीप ॥ १ ॥

देवस्याग्रे जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं माषपिष्टं तैलपक्वं वटकं च विविधप्रकारं वा नैवेद्यं संस्थाप्य 'ॐ ह्रीं नमः' इति मन्त्रेणार्घ्यजलेन सम्प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्यंनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायुबीजं षोडशधा सञ्जप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ रं) इति वह्निबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा ततो वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं सञ्जप्य तदुत्थामृतधारयाप्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

देव के आगे जल से चतुरस्र मण्डल बनाकर स्वर्णादि से निर्मित भोजनपात्र को स्थापित करके उसके बीच में षड्रसों से युक्त तेल में पकावे उड़द के बड़े या विविध प्रकार के नैवेद्य रखकर 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र से अर्घ्यजल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से उसे देखकर अधोमुख दाहिने हाथ पर

इसी प्रकार बायाँ हाथ रखकर नैवेद्य को ढँक कर 'ॐ यं' इस वायुबीज को सोलह बार जप कर वायु से तद्गत दोषों को सुखा दे। इसके बाद दाहिने करतल के पृष्ठ भाग पर बाँये करतल को रखकर नैवेद्य दिखाकर 'ॐ रं' इस वह्निबीज को सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोषों को दग्ध करे। इसके बाद बाँये करतल में अमृत बीज का चिन्तन करते हुये उसके पृष्ठ भाग पर दाहिने करतल को रखकर नैवेद्य प्रदर्शित करके 'ॐ वं' इस सुधा बीज को सोलह बार जप कर उससे निकली अमृतधारा से नैवेद्य के प्लावित होने की भावना करते हुये मूलमन्त्र से प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे। फिर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध तथा पुष्प से पूजन करके बाँये अंगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर दाहिने हाथ में जल लेकर :

ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः' नैवेद्यं समर्पयामि।

इति जलमुत्सृज्य 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इति देवस्य दक्षहस्ते जलं दत्त्वा देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन्। ततो वामहस्तेनानामामूलांगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत्। दक्षिणहस्तेन प्राणादिपञ्चमुद्राः प्रदर्शयेत्।

इससे जल डालकर 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इससे देव के दाहिने हाथ में जल देकर 'देव ने उस जल को पी लिया है' ऐसी भावना करे। इसके बाद बाँये हाथ की अनामिका के मूल में अंगूठे को लगाकर ग्रासमुद्रा प्रदर्शित करे। फिर दाहिने हाथ से प्राणादि पाँच मुद्रायें इस प्रकार प्रदर्शित करे।

१. 'ॐ प्राणाय नमः' कहते हुये अंगूठे, तर्जनी, मध्यमा और अनामा से प्राणमुद्रा दिखाये।

२. 'ॐ अपानाय स्वाहा' कहते हुये अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा से अपानमुद्रा प्रदर्शित करे।

३. 'ॐ व्यानाय स्वाहा' कहते हुये अंगूठे, मध्यमा और अनामिका से व्यानमुद्रा प्रदर्शित करे।

४. 'ॐ उदानाय स्वाहा' कहते हुये अंगूठे, तर्जनी, मध्यमा और अनामिका से उदानमुद्रा प्रदर्शित करे।

५. 'ॐ समानाय स्वाहा' कहते हुये सभी उँगलियों से समानमुद्रा प्रदर्शित करे।

इस प्रकार पाँच मुद्रायें प्रदर्शित करके 'देव ने भोजन कर लिया है' यह भावना करके जल देवे। इति नैवेद्य ॥ ३ ॥

ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरो वरः। परमानन्दपूर्णस्त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय जलं समर्पयामि।'

इस मन्त्र से कपूर आदि से सुवासित स्वर्णपात्रस्थ जल निवेदित करके इस प्रकार अन्तःपट देवे ॥ ४॥

ब्रह्मा शाद्यैः सरसमभितः सोपविष्टः समन्तात्सिजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानो वयस्यैः। नर्मक्रीडाप्रहसनपराग्हासयन्पंक्तिभोक्तॄन् भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् भैरवेशः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्यम्। आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीच स्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥ २ ॥

इससे अन्तःपट देकर इस प्रकार आचमन देवे ॥ ५ ॥

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने। आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः' आचमनं समर्पयामि।

इससे आचमन देकर मूलमन्त्र से कुल्ला करने के लिये जल देवे। इत्याचमन ॥ ६ ॥

इसके बाद गतसार नैवेद्य से थोड़ा-सा निकाल कर 'ॐ चण्डेश्वराय नमः' इस मन्त्र से देव के उच्छिष्ट को ऐशानी दिशा में चण्डेश्वर को देवे।

अथ पञ्चबलिदानविधिः। ततो यन्त्रस्य पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरेषु त्रिकोणवृत्तचतुरस्रं मण्डलं कृत्वा। 'ॐ ह्रीं मण्डलाय नमः।' इति मण्डलं सम्पूज्य। पूर्वे 'ॐ वं वटुकाय नमः' इति पाद्यादिभिः सम्पूज्य ततः पक्वान्नपूर्णसलिलमीनमांसं कमलाकारं दीपचतुष्टययुक्तं वा बलिपात्रेषु पूरयित्वा मीनमुद्रां प्रदर्श्य वामांगुष्ठानामाभ्यां गृहीत्वा।

पञ्चबलिदान विधि : इसके बाद यन्त्र के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्रमय मण्डल बनाकर 'ॐ ह्रीं मण्डलाय नमः' इससे मण्डल की पूजा करे। इसके बाद पूर्व में 'ॐ वं बटुकाय नमः' इससे पाद्यादि से पूजा करके पका अन्न, जल, मीन और मांस को कमलाकार करके अथवा चार दीपों से बलि पात्रों को पूर्ण करके मीनमुद्रा प्रदर्शित कर बाँये अंगूठे तथा अनामिका से उसे ग्रहण कर :

'ॐ एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिर्वटुकाय नमः।'

इति मन्त्रेण पूर्वदले उत्सृजेत् ॥ १ ॥ ततो दक्षिणे-पूर्ववन्मण्डलं सम्पूज्य तन्मध्ये 'यां योगिनीभ्यो नमः।' इति योगिनीरभ्यर्च्य पूर्ववत्पात्रे द्रव्यं पूरयित्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य दक्षांगुष्ठानामाभ्यां बलिपात्रं गृहीत्वा।

इस मन्त्र से बलिपात्र को पूर्वदल में छोड़ दे ॥ १ ॥ इसके बाद दक्षिण में पूर्ववत् मण्डल की पूजा करके उसके बीच 'यां योगिनीभ्यो नमः' इससे योगिनियों की पूजा करके पूर्ववत् पात्र को द्रव्यों से भरकर योनिमुद्रा प्रदर्शित करके दाहिने अंगूठे और अनामिका से बलिपात्र को ग्रहण कर :

'ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीत्या देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ १ ॥ 'ॐ योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वयोगिनी हुं फट् स्वाहा एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः।'

इति मन्त्रेण बलिपात्रं दक्षिणमण्डल उत्सृजेत् ॥ २ ॥ ततः पश्चिमे पूर्ववन्मण्डलं सम्पूज्य तन्मध्ये 'क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति क्षेत्रपालाभ्यर्च्य। पूर्वोक्तपात्रे द्रव्यं पूरयित्वा अंकुशमुद्रां प्रदर्श्य दक्षांगुष्ठमध्यमानामाभ्यां बलिपात्रं गृहीत्वा।

इस मन्त्र से बलिपात्र को दक्षिण मण्डल में रख देवे ॥ २ ॥ इसके बाद पश्चिम में पूर्ववत् मण्डल की पूजा करके उसके बीच 'क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इससे क्षेत्रपाल की अभ्यर्चना करके पूर्वोक्त द्रव्यों से पात्र को भरकर और अंकुशमुद्रा प्रदर्शित कर दाहिने अंगूठे, मध्यमा और अनामिका से बलिपात्र को ग्रहण कर :

'ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल धूपादिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः।'

इति मन्त्रेण बलिपात्रं पश्चिम मण्डल उत्सृजेत् ॥ ३ ॥ ततः उत्तरे-पूर्ववन्मण्डलं सम्पूज्य तन्मध्ये 'गं गणेशाय नमः' इति गणेशमभ्यर्च्य पूर्वोक्तपात्रे द्रव्यं पूरयित्वा दक्षांगुष्ठतर्जनीनामाभ्यां बलिपात्रं गृहीत्वा।

इस मन्त्र से बलिपात्र पश्चिम मण्डल में रख देवे ॥ ३ ॥ इसके बाद उत्तर में पूर्ववत् मण्डल की पूजा करके उसके बीच 'गं गणेशाय नमः' इससे गणेश की अभ्यर्चना करके पूर्वोक्त रूप से पात्र को द्रव्यों से भरकर दाहिने हाथ के अंगूठे, तर्जनी और अनामिका से बलिपात्र को ग्रहण करके :

'ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण एष बलिर्गणपतये नमः।'

इति मन्त्रेण बलिपात्रमुत्तरमण्डल उत्सृजेत् ॥ ४ ॥ ततो गणपतिसमीपे पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा 'ॐ ह्रीं व्यापकमण्डलाय नमः।' इति सम्पूज्य साधारणबलिं माषभक्तं वा संस्थाप्य मूलेनाभिमन्त्र्य तत्र धूपदीपादिभिः सर्वभूतानि सम्पूज्य तत्त्वमुद्रां प्रदर्श्य।

इस मन्त्र से बलिपात्र को उत्तर के मण्डल में रख देवे ॥ ४ ॥ इसके बाद गणपति के समीप पूर्ववत् मण्डल बनाकर 'ॐ ह्रीं व्यापक मण्डलाय नम' इससे पूजन करके साधारण बलि या माष और भात स्थापित करके मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके वहाँ धूपादि से सर्वभूतों की पूजा करके तत्त्वमुद्रा प्रदर्शित करके :

'ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्योहं स्वाहा एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः।'

इति मन्त्रेण बलिपात्रं गणपतिसमीप उत्सृजेत्। इति पञ्च बलीनशक्तश्चेदेकमेव बलिं भैरवाय दद्यात्। इति पञ्चबलिदानम्।

इस मन्त्र से बलिपात्र के समीप डाल दे। इन पञ्चबलियों में अशक्त हो तो एक ही बलि भैरव के लिये देवे। इति पञ्चबलिदान।

अथ पशुबलिदानप्रयोगः। अर्द्धरात्रे देवं सम्पूज्य पञ्चाब्दं सर्वलक्षणोपेतं छागाद्यं पशुमानीय।

पशुबलिदान प्रयोग : आधी रात को देवता की पूजा करके सर्वलक्षण सम्पन्न पञ्चवर्षीय बकरे को लाकर :

'ॐ वाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती। कावेरी चन्द्रभागा च सिंधुभैरवसागराः ॥ १ ॥ अजस्नाने ममेशानि सान्निध्यमिहकल्पय।

पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च। पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये ॥ २ ॥'

इति जलमभिमन्त्र्य मूलेन स्नापयित्वा सिंदूरमाल्यादिभिरलंकृत्य देवस्याग्रे संस्थाप्य मूलं पठित्वा गन्धमिश्रिताध्योंदकेन त्रिः सम्प्रोक्ष्य अस्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुंठ्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्।

इससे जल को अभिमन्त्रित करके मूलमन्त्र से उसे स्नान कराकर सिन्दूर और माला आदि से अलंकृत करके देव के आगे स्थापित कर मूलमन्त्र पढ़ते हुये गन्धमिश्रित अर्घ्योदक से तीन बार प्रोक्षण करके, अस्त्र मन्त्र से संरक्षण करके, कवच से अवगुण्ठन करके तथा धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके कृताञ्जलि होकर यह प्रार्थना करे :

'ॐ छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः। प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥ भैरवप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने। भैरवबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोनमः ॥ २ ॥ यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३ ॥'

इससे प्रार्थना करके इस प्रकार उसके प्रत्येक अङ्ग की पूजा करे :

ॐ रुधिरवदनायै नमः। इति शिरसि ॥ १ ॥ ॐ चण्डिकायै नमः इति कपोले ॥ २ ॥ ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः। इति चक्षुषोः ॥ ३ ॥ ॐ बृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ॥ ४ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः। इति नासायाम् ॥ ५ ॥ ॐ उग्रदन्तिकायै नमः। इति जिह्वायाम् ॥ ६ ॥ ॐ महादन्तिकायै नमः। इति ग्रीवायाम् ॥ ७ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः। इति उदरे ॥ ८ ॥ ॐ धर्माय नमः। इति जंघाचतुष्टये ॥ ९ ॥

इस प्रकार पूजा करके जल लेकर :

'ॐ ह्रीं वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहाय पशुरूपभैरवाय इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा।'

इससे सम्प्रोक्षण करके तिल, कुश तथा जल लेकर :

देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रः श्रीमदमुकशर्माहं छागसमसंख्याकं पञ्चवर्षावच्छिन्नश्रीमद्वटुकभैरवप्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान्वह्निदैवताम् श्रीमद्वटुकभैरवाय तुभ्यं घातयिष्ये।

इससे पूजा करके इस प्रकार खड्गपूजा करे : खड्ग को सामने रखकर :

'ॐ नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयान्ती नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनाढ्या। निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥ १ ॥

इससे खड्ग का ध्यान करके :

'ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्वपशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्करिणी कुरुकुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं तिरस्करिणी सकलजनवाग्वादिनी सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणतिरस्करणी कुरुकुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

इन दो मन्त्रों से नमस्कार करके :

'ॐ ह्रीं ह्रीं खड्ग आं कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाना नमः।'

इससे गन्ध आदि से तीन बार पूजा करके खड्ग के ऊपर सिन्दूर आदि से ह्रींकार लिख कर 'ॐ खड्गाय नमः' इससे पूजा करके बलि के कान में पशुगायत्री सुनाये। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ ह्रीं बलिरूपाय विद्महे वटुकप्रियाय धीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात्।'

इसे बलि के कान में सुनाकर खड्ग को हाथ में लेकर यह प्रार्थना करे :

'ॐ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः। श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोस्तु ते ॥ १ ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा। नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वर ॥ २ ॥ रोहिणी च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः। पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥ ३ ॥ नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः। भावशुद्धो मर्षणश्च अतितेजास्तथैव च ॥ ४ ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः। तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ ५ ॥ भैरवीरसनाबुद्ध्या एकघाते तु घातयेत् ॥ ६ ॥'

इससे खड्ग की प्रार्थना करके :

'ॐ रे वज्रासुरनाशाय देव कार्यार्थतत्परः। पशुश्छेद्यः स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोस्तु ते ॥ १ ॥'

यह पढ़कर :

पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि। तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

यह और मूलमन्त्र पढ़कर :

श्रीवटुकभैरवाय इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे।

इससे बलि के कन्धे पर खड्ग को देकर सम्पूर्ण रक्त तथा मुण्ड को देव के आगे करके :

ॐ अद्य पञ्चवर्षावच्छिन्नश्रीवटुकभैरवप्रीतिकाम इमं छागरुधिरं समुण्डं श्रीबटुकभैरव तुभ्यमहं प्रददे ।

इससे समर्पित करे । इसके बाद :

'ॐ बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा । मरुतो येऽश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरग राक्षसाः । डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः ॥ २ ॥ जृंभिकासिद्धगन्धर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः । दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाशकाः ॥ ३ ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः । मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ४ ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेतसुखावहाः ॥ ५ ॥'

इससे निवेदन करे ।

ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य स्नात्वा तिलकं धृत्वा देवं सम्प्रार्थ्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा बान्धवैः सह भुञ्जीत । एवमेव गजतुरङ्गादिना बलिं दद्यात् ।

इसके बाद हाथ-पाँव धोकर स्नान करके तिलक लगाकर देव की प्रार्थना करके पुष्पाञ्जलि देकर बान्धवों के साथ भोजन करे । इसी प्रकार हाथी, घोड़े आदि की भी बलि देवे ।

'अनेन बलिदानेन सन्तुष्टो भैरवः स्वयम् । शत्रुसैन्यं विभज्याथ स्वगणेभ्यः प्रयच्छति । क्रुद्धः स भञ्जयेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥१॥'

इति पशुबलिदानप्रयोगः ।

अथ ताम्बूलम् ।

'ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलान्वितम् । कर्पूरादिसमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकभैरवाय नमः' ताम्बूलं समर्पयामि । इति ताम्बूलम् ॥ ६ ॥

इससे ताम्बूल देकर छत्र, चामर आदि सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से देवे । अशक्त हो तो आरती करे ।

अथ आरार्तिकम् । शालिगोधूमपिष्टेन सगुडजीरकेण च त्रिकोणाकारं मण्डूकरूपं वा नव दीपान् स्वर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्तीर्निःक्षिप्य मायाबीजेन (ह्रीं) प्रज्वाल्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य

मूलेनारार्तिक्यं सम्पूज्य मूलं पठित्वा देवोपरि नेत्रादिपादपर्यन्तं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयित्वा घण्टां नादयेत् । तत्र मन्त्रः ।

आरती : गुड़ और जीरा मिश्रित शालि चावल या गेहूं के आटे से त्रिकोणाकार या मण्डूकाकार बनाकर नव दीपों को स्वर्णादि की थाली में स्थापित करके घी से उन्हें भरकर कपूर आदि की बत्ती डालकर माया बीज (ह्रीं) से जलाकर चक्रमुद्रा प्रदर्शित कर, मूलमन्त्र से आरती की पूजा करके मूलमन्त्र पढ़कर देव के ऊपर नेत्र से लेकर पादपर्यन्त नव बार या तीन बार घुमाते हुये घण्टा बजाये । उसमें मन्त्र यह है :

'अन्तस्तेजा बहिस्तेजा एकीकृत्य निरन्तरम् । त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥'

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकभैरवाय नमः' नीराजनं समर्पयामि ।

यह कहकर देव के दाहिने उसे रखकर शङ्ख का जल गिरा देवे । इति आरती ।

अथ प्रदक्षिणा ।

'यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदेपदे ॥ १ ॥'

इस मन्त्र से तीन प्रदक्षिणा करके मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

इससे प्रदक्षिणा करके :

'प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ।'

यह कहते हुये साष्टाङ्ग प्रणाम करे ।

अथ पुष्पाञ्जलिः ।

'नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण भैरवेश्वर ॥ १ ॥

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः' पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर स्तुति पाठ से देव की स्तुति करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

अथ प्रार्थना ।

'ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव । मम कृत्यमिदं सर्व-

मिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे । कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥'

इस प्रकार हाथ जोड़कर प्रार्थना करने के बाद :

'यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं च नैवेद्यं गृहाणचानुकम्पय ॥ १ ॥

यह पढ़कर देव के दाहिने हाथ में पूजार्पण जल देकर सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से माला के संस्कारों को सम्पादित करे । यदि अशक्त हो तो साधारण संस्कार करे ।

अथ साधारणमालासंस्कारः । जपार्थं रुद्राक्षमालामानीय क्वचित्पात्रे वामहस्तेनाच्छाद्य मूलेनार्घोदकेनाभ्युक्ष्य वस्त्रेणाशोष्य ।

साधारण मालासंस्कार : जप के लिये रुद्राक्ष की माला लाकर किसी पात्र में बाँये हाथ से ढँक कर मूलमन्त्र के साथ अर्घोदक से अभ्युक्षण करके वस्त्र से सुखाकर :

'ॐ मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात्त्वं सिद्धिदा भव ।'

इस मन्त्र से गन्ध-पुष्प से पूजन करके पुनः :

'ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ।'

इति मन्त्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपेत् । नित्यमेव समाना जपाः कार्या न तु न्यूनाधिकाः । मूलमन्त्रो यथा ।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में धारण करते हुये अपने इष्ट देवता का ध्यान करके मध्यमा अँगुली के मध्य पर्व पर स्थापित करके अँगूठे के अग्रभाग से घुमाकर एकाग्रचित्त होकर मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति मूलमन्त्र का जप करे । नित्य समान ही जप करना चाहिये, कभी कम या अधिक नहीं । मूलमन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु बटुकाय ह्रीं ।'

इस २१ अक्षर के मन्त्र का जप करे । फिर जप के अन्त में :

'त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥ १ ॥' 'ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः ।'

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद् गुप्तां कुर्यात् । ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्वा जपं देवार्पणं कुर्यात् तद्यथा ।

इससे माला को शिर पर रखकर गोमुखी को एकान्त स्थान पर रख देवे । अपवित्र अवस्था में उसका स्पर्श न करे, दूसरे को न दे, अपवित्र स्थान पर न रक्खे, और अपनी योनि के समान गुप्त रक्खे । इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का पाठ करके पुनः मूलमन्त्र का ऋष्यादि न्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास करके पञ्चोपचारों से पूजन करके और पुष्पाञ्जलि देकर जप को इस प्रकार देव को अर्पित करे : अर्घोदक को चुल्लू में लेकर :

'ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥ १ ॥ 'ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्याव स्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्रीमद्बटुकभैरवदेवतायै समर्पयामि नमः । 'ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु ।

इससे देव के दाहिने हाथ में जप समर्पण का जल देकर हाथ जोड़ कर क्षमापन का पाठ करे ।

अथ क्षमापनम् ।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ॥ १ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम । अन्तश्चरेण भूतानि इष्टस्त्वं परमेश्वर ॥४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रातर्योनिसहस्राणां सहस्रेषु व्रजाम्यहम् । तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥६॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च । आगता सुखसम्पत्तिः पुण्या च तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् । देवो जयति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि ॥ ८ ॥

क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यते भुवनेश्वर। तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ६ ॥

इससे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने के बाद शङ्ख उठाकर देव के ऊपर घुमाकर :

'साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥'

इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किञ्चिज्जलं दत्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्वा शङ्खं यथास्थाने निवेश्य देवस्योच्छिष्ट नैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्।

यह कहते हुये देव के दाहिने हाथ में कुछ जल देकर पूर्ववत् अर्घ्य को देव के शिर पर देकर शङ्ख को यथास्थान रख दे। फिर देव के उच्छिष्ट नैवेद्य को शिर पर रखकर उस नैवेद्यादि को देवभक्तों में बाँटकर और स्वयं खाकर विसर्जन करे।

अथ विसर्जनम्।

'ॐ गच्छगच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यद्धि ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम् ॥ १ ॥'

इससे अक्षतों को फेंककर विसर्जन करके देव को अपने हृदय के मध्य इस प्रकार स्थापित करे :

'तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥'

इससे हृदय कमल पर हाथ रखकर देव को उसमें स्थापित करके मानसोपचारों से पूजन करके अपने आपको देवरूप में भावना करते हुये यथासुख विहार करे।

ततोऽर्धरात्रे ग्रामाद्बहिश्चतुष्पथे नित्यं देवतिथ्यां वा रविशनिभौमवारेषु वा पूर्वोक्तविधिना बलिं दद्यात्। तथा च।

इसके बाद अर्धरात्रि को ग्राम से बाहर चौराहे पर नित्य देवतिथि पर या रविवार, शनिवार या मङ्गलवार को पूर्वोक्त विधि से बलि दे। यथा :

पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा मण्डलं सम्पूज्य तन्मध्ये वटुकं पञ्चोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः।

पूर्ववत् मण्डल बनाकर मण्डल की पूजा कर उसके बीच पञ्चोपचारों से वटुक की पूजा करे। इसके बाद :

'गदात्रिशूलडमरुपात्रहस्तं त्रिलोचनम्। कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत्सर्वविघ्ननिवारणम् ॥ १ ॥'

इस प्रकार ध्यान करके :

ॐ श्रीवटुकभैरव एह्येहि बलिं गृह्णगृह्ण हुं फट् स्वाहा।'

इससे बलि देकर हाथ-पाँव धोकर शान्ति स्तोत्र का पाठ करे।

अथ शान्तिस्तोत्रम्।

'नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा नश्यन्तु दूषका नराः। साधकानां शिवाः सन्तु स्वाम्नायपरिपालनम् ॥ १ ॥ जयन्तु मातरः सर्वा जयन्तु योगिनीगणाः। जयन्तु सिद्धा डाकिन्यो जयन्तु गुरुशक्तयः ॥ २ ॥ नन्दन्तु क्षणिमाद्याश्च नन्दन्तु भैरवादयः। नन्दन्तु भैरवाः सर्वे सिद्धविद्याधरादयः ॥ ३ ॥ ये चाम्नायविशुद्धाश्च मन्त्रिणः शुद्धबुद्धयः। सर्वदा नन्दयानन्दं नन्दन्तु कुलपालकाः ॥ ४ ॥ इन्द्राद्यास्तर्पिताः सन्तु तृप्यन्तु वास्तु देवताः। चन्द्रसूर्यादयो देवास्तृप्यन्तु गुरुभक्तितः। नक्षत्राणि ग्रहा योगाः करणाद्यास्तथापरे। ते सर्वे सुखिनो यान्तु मासाश्च तिथयस्तथा ॥ ६ ॥ तृप्यन्तु पितरः सर्वे ऋतवो वत्सरादयः। खेचरा भूचराश्चैव तृप्यन्तु मम भक्तितः ॥ ७ ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा ये चान्ये देवयोनयः। सर्वे तु सुखिनो यान्तु सर्वा नद्यश्च पक्षिणः ॥ ८ ॥ पर्वताः सुखिनः सन्तु तथा तत्कन्दरा गुहाः। ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा ॥ ६ ॥ तीर्थानि पशवो गावो ये चान्याः पुण्यभूमयः। वृद्धाः पतिव्रता नार्यः शिवं कुर्वन्तु मे सदा ॥ १० ॥ शिवं सर्वत्र मे चास्तु पुत्रदारधनादिषु। राजानः सुखिनः सन्तु क्षेममार्गे तु मे सदा ॥ ११ ॥ शुभा मे दिवसा यान्तु शिवास्तिष्ठन्तु मे शिवाः। द्वेष्टारः साधकानां च सदैवाम्नायदूषकाः ॥ १२ ॥ डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्तातृप्ताश्च तेषु ताः। शत्रवो नाशमायान्तु मम निन्दाकराः सदा ॥ १३ ॥ ये निन्दकास्ते विपदं प्रयान्तु ये साधकास्ते प्रभवन्तु सिद्धाः। ये सर्ववीराः करुणावलोकाः पुनः परेश मम सन्निधत्स्व ॥ १४ ॥'

इति शान्तिपाठं पठित्वा जलमुत्सृज्य स्वगृहे गत्वा पृष्ठदेशे नावलोकयेत्। गृहद्वारमागत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गृहप्रवेशं कृत्वा कुशासने शय्यायां यथासुखं स्वप्यात्। इति श्रीवटुकभैरवपूजापद्धतिः समाप्ता।

इस प्रकार शान्ति पाठ करके जल छोड़कर बिना पीछे देखे अपने घर चला आये। घर के द्वार पर आकर हाथ-पाँव धोकर घर में प्रवेश कर कुशासन की शय्या पर यथासुख सो जाय। इति श्रीवटुकभैरव पूजापद्धति समाप्त।

अथ श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचम् ।

रुद्रयामल में इस प्रकार कहा गया है :

श्रीदेव्युवाच । भगवन्सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिदायकम् । भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि ॥ १ ॥ प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि । सत्यंसत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः ॥ २ ॥

श्रीदेवी बोलीं : हे भगवान् ! आप सर्वज्ञ और देवों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाले हैं । यदि आप की मुझपर कृपा है तो भैरव कवच मुझे बताइये । यदि आप नहीं बतायेंगे तो मैं प्राण त्याग दूंगी । यह सत्य है, सत्य है, पुनः सत्य, बिल्कुल सत्य है । इसमें कोई संशय नहीं है ।

इत्थं देव्या वचः श्रुत्वा प्रहस्यांति स्वयं प्रभुः । उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वरः ॥ ३ ॥

इस प्रकार देवी के वचन सुनकर देवाधिदेव, महेश्वर शिवजी जोर से हँस कर बोले ।

ईश्वर उवाच । वाटुकं कवचं दिव्यं शृणु मत्प्राणवल्लभे । चण्डिकातन्त्रसर्वस्वं वटुकस्य विशेषतः ॥ ४ ॥ तत्र मन्त्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम् । शंखवर्णद्वयो ब्रह्मा वटुकश्चन्द्रशेखरः ॥ ५ ॥ आपदुद्धारणो देवः भैरवः परिकीर्तितः । प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये ॥ ६ ॥ प्रणवं कामदं विन्द्याल्लज्जाबीजं च सिद्धिदम् । वटुकायेति विज्ञेयं महापातकनाशनम् ॥ ७ ॥ आपदुद्धारणायेति त्वदुपाद्धारणं नृणाम् । कुरुद्वयं महेशानि मोहने परिकीर्तितम् ॥ ८ ॥ वटुकाय महेशानि स्तम्भने परिकीर्तितम् । लज्जाबीजं तथा विद्यान्मुक्तिदं परिकीर्तितम् ॥ ९ ॥ द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः क्रमेण जगदीश्वरि ।

ईश्वर बोले : हे प्राणप्रिये ! बटुक का दिव्य कवच तुम सुनो । यह चण्डिका तन्त्र का और विशेषकर बटुकभैरव का सर्वस्व है । इसमें मन्त्राद्यक्षर वासुदेव के स्वरूपवाला है । ब्रह्मा और चन्द्रशेखर बटुक दोनों शङ्खवर्णवाले हैं । भैरव को आपदुद्धारक देव कहा गया है । चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष) की सिद्धि में मैं इस सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप से कहूंगा । प्रणव को अभीष्टप्रद, तथा लज्जा बीज को सिद्धिदायक जाने । बटुकाय पद को महापातक नाशक जाने । आपदुद्धारणाय पद मनुष्यों का आपत्ति से उद्धार करनेवाला है । हे महेशानि ! दो 'कुरु' (कुरु कुरु) पद मोहन कर्म के लिये कहे गये हैं । 'बटुकाय' को हे महेशानि ! स्तम्भन में कहा गया है । लज्जा बीज तथा मन्त्रमुक्तिदायक है ऐसा जानना चाहिये । हे जगदीश्वरी यह मन्त्र २२ अक्षरोंवाला है ।

कवच पाठः

विनियोग : ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचस्य भैरव ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीवटुकभैरवो देवता । मम वटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

'ॐ पातु नित्यं शिरसि पातु ह्रीं कण्ठदेशके ॥ १० ॥ वटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय च । कुरु द्वयं लिङ्गमूले त्वाधारे वटुकाय च ॥११॥ सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च । षडंगसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः ॥१२॥ ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वाङ्गं मम सर्वदा । ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः । गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह ॥१४॥ ॐ ह्रीं दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा । ॐ ह्रीं विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गं मम सर्वदः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चंडिका । असिताङ्गः शिरः पातु ललाटं रुरुभैरवः ॥१६॥ ॐ ह्रीं चण्डभैरवः पातु वक्त्रं कण्ठं श्रीक्रोधभैरवः । उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा ॥१७॥ ॐ ह्रीं नाभिदेशे कपाली च लिङ्गे भीषणभैरवः । संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वंश ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं बाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम् । हंसबीजं पातु हृदि सोहं रक्षतु पादयोः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च । रक्षतु द्वारमूले च दशदिक्षु समन्ततः ॥२०॥ ॐह्रीं प्रणवं पातु सर्वाङ्गं लज्जाबीजं महाभये ।

इति ब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम् ॥ २१ ॥ चतुर्वर्गप्रदं नित्यं स्वयंदेव प्रकाशितम् । यः पठेच्छृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमम् ॥ २२ ॥ सदानन्दमयो भूत्वा लभते परमं पदम् । य इदं कवचं देवि चिन्तयेन्मन्मुखोदितम् ॥ २३ ॥ कोटिजन्मार्जितं पापं विनश्यति च तत्क्षणात् । जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसङ्कटे ॥२४॥ कवचस्मरणाद्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् । भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि ॥२५॥ कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः । तस्य पादाम्बुजद्वंद्वं राज्ञां मुकुटभूषणम् ॥२६॥ तस्य भूतिं विलोक्यैव कुबेरोपि तिरस्कृतः । यस्य विज्ञानमात्रेण मन्त्रसिद्धिर्न संशयः ॥२७॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्वटुकं नरः । न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात् ।२८। मन्वन्तरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते । इह लोके महारोगी दारिद्र्येणातिपीडितः ॥ २९ ॥ शत्रूणां वशगो भूत्वा

करपात्री भवेज्जडः। देयं पुत्राय शिष्याय शा ताय प्रियवादिने ॥ ३० ॥ कार्पण्यरहितायालं वटुभक्तिरताय च। योपरागे प्रदाता वै तस्यस्याति सत्वरम् ॥३१॥ आयुर्विद्या यशो धर्मं बलं चैव न संशयः। इति ते कथितं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ३२ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तं श्रीवटुकभैरव-ब्रह्मकवचं सम्पूर्णम्।

इस प्रकार भैरव का ब्रह्मकवच कहा गया है। चतुर्वर्ग का फल देनेवाले इस कवच को स्वयं देव ने प्रकाशित किया है। जो इस श्रेष्ठ कवच को पढ़ता, सुनता, या नित्य धारण करता है वह सदा आनन्दमय होकर परम पद प्राप्त करता है। मेरे मुख से कहे गये इस कवच का हे देवि ! जो चिन्तन करता है उसके करोड़ों जन्मों के पाप तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं। जल में, अग्नि में, दुष्टग्रह के समय या शत्रु के संकट के समय हे देवि जो इस कवच का स्मरण करता है वह सर्वत्र विजयी होता है। यदि भक्तियुक्त होकर इस कवच का पूजन करे तो साधक नारियों के लिये कामदेव के समान और शत्रुओं के लिये यम के समान हो जाता है और उसके दोनों चरणकमल राजाओं के मुकुट के भूषण बन जाते हैं। उसकी विभूति को देखकर कुबेर भी तिरस्कृत हो जाते हैं। इसके विज्ञान मात्र से निःसंशय यन्त्र सिद्ध हो जाता है। जो मनुष्य इस कवच को जाने बिना वटुक का जप करता है वह कभी फल नहीं प्राप्त करता, और घोर नरक में जाता है तथा तीनमन्वन्तरों तक तिर्यग्योनि में पड़ा रहता है, और इस लोक में महारोगी होकर दरिद्रता से अत्यधिक पीड़ित रहता है। इससे शत्रु वशीभूत होकर करपात्री और जड़ हो जाते हैं। हे प्रियवादिने ! यह पुत्र, शिष्य और शान्ति प्रदान करता है। जो कार्पण्यरहित होकर वटुक की भक्ति में रत रहता है, उस अपरागी को यह शीघ्र आयु, विद्या, यश, धर्म और बल प्रदान करता है, इसमें संशय नहीं है। इस प्रकार हे देवि ! मैंने तुम्हें यह कवच बताया जिसे स्वयोनिवत गोपनीय रखना चाहिये। इति श्रीरुद्रयामल प्रोक्त श्रीवटुक-भैरव ब्रह्मकवच सम्पूर्ण।

अथ श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं (रुद्रयामले)।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवसहस्रनामात्मकस्तोत्रस्य दुर्वासा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। भैरवो वटुकनाथो देवता। मम सर्वकार्य-सिद्ध्यर्थं सर्वशत्रुनिवारणार्थं वटुकसहस्रनामपाठे विनियोगः।

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः। नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमोनमः ॥ १ ॥ नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः। नमः

शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥ २ ॥ नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोस्तु ते। नमस्त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः ॥ ३ ॥ नमः संसारसाराय सारदाय नमोनमः। नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ४ ॥ नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः। क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमोनमः ॥ ५ ॥ नमो नागविनाशाय भैरवाय नमोनमः। नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोस्तु ते ॥ ६ ॥ नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमोनमः। नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने ॥ ७ ॥ नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमोनमः। नमः संकष्टनाशाय शङ्कराय नमोनमः ॥ ८ ॥ नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमोनमः। नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोस्तु ते ॥ ९ ॥ नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकाका नमोस्तु ते। नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः ॥ १० ॥ नमो जलदरूपाय सामरूप नमोस्तु ते। नमः स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः ॥ ११ ॥ नमो नीलस्वरूपाय रङ्गरूपाय ते नमः। नमो मण्डलरूपाय मण्डलाय नमोनमः ॥ १२ ॥ नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः। नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमोनमः ॥ १३ ॥ नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोस्तुते। नमः संसारबीजाय विरूपाय नमोनमः ॥१४॥ नमो विमलरूपाय भैरवाय नमोनमः। नमो जङ्गमरूपाय जलजाय नमोनमः ॥१५॥ नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः। नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६ ॥ नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमोनमः। नमः शान्ताय दान्ताय भ्रमरूपिन्नमोस्तु ते ॥ १७ ॥ न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः। नमः कमलकान्ताय कालवृद्धाय ते नमः ॥ १८ ॥ नमो ज्योतिःस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः। नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १९ ॥ नमो जयस्वरूपाय जगज्जाड्यनिवारिणे। महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः ॥ २० ॥ नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने। नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः ॥ २१ ॥ नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे। विश्ववन्द्याय वन्द्याय नमो विश्वम्भराय ते ॥ २२ ॥ नमो नेत्रस्वरूपाय नेत्ररूपिन्नमोस्तु ते। नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ २३ ॥ नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः। नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः ॥२४॥ नमो ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः। नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥ २५ ॥ नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः। नमः संहाररूपाय पालकाय नमोनमः

॥ २६ ॥ नमश्चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः । नमो मन्दारवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ॥ २७ ॥ योगिगम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः । नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः ॥ २८ ॥ नमः शत्रुविनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः । नमो भक्तिविनोदाय दुर्भागाय नमोनमः ॥ २९ ॥ नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमोनमः । नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमोनमः ॥ ३० ॥ नमो रजःस्वरूपाय सात्त्विकाय नमोनमः । नमस्तामसरूपाय तारणाय नमोनमः ॥ ३१ ॥ नमो गंगाविनोदाय जटासंधारिणे नमः । नमो भैरवरूपाय भाषणाय नमोनमः ॥ ३२ ॥ नमः संग्रामरूपाय संग्रामजयदायिने । संग्रामसाररूपाय यौवनाय नमो नमः ॥ ३३ ॥ नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमोनमः । नमस्त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः ॥ ३४ ॥ नमो द्वन्द्वस्वरूपाय रूपदाय नमोनमः । नमः शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धिविनाशिने ॥ ३५ ॥ महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥३६॥ नमः शम्भुस्वरूपाय शम्भुस्वरूपिन्नमोस्तु ते । नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः ॥ ३७ ॥ नमः कुक्कुरवाहाय वहनाय नमोनमः । नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमोनमः ॥ ३८ ॥ नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने । संसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथाय ते नमः ॥ ३९ ॥ नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमोनमः । नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥ ४० ॥ नमो यन्त्र स्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोस्तु ते । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥४१॥ नमः कलङ्करूपाय कलङ्काय नमोनमः । नमः संसारपाराय भैरवाय नमोनमः ॥ ४२ ॥ रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमोनमः । नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमोनमः ॥ ४३ ॥ नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः । नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः ॥ ४४ ॥ नमो मोदस्वरूपाय श्रोणरूपाय ते नमः । नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥ ४५ ॥ नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः । नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोस्तु ते ॥ ४६ ॥ नमः कन्थानिवासाय पटवासाय ते नमः । नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमोनमः ॥ ४७ ॥ नमो वटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ४८ ॥ नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नमोस्तु ते । नमः औषधरूपाय औषधाय नमोनमः ॥४९॥ नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमोनमः । नमो ज्वरनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः ॥ ५० ॥ नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः । विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय

नमोनमः ॥ ५१ ॥ नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः । नमः पवित्रधाराय परशुधाराय ते नमः ॥ ५२ ॥ यज्ञोपवीतिदेवाय देवदेव नमोस्तु ते । नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥ ५३ ॥ नमोरगप्रतापाय तापनाय नमोनमः । नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः ॥ ५४ ॥ नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः । नमो मलयरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ॥ ५५ ॥ नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमोनमः । नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने ॥ ५६ ॥ कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः । नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ ५७ ॥ नमो योनिस्वरूपाय भ्रातृरूपाय ते नमः । नमो भगिनिरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥५८॥ नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः । नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धान्तसारिणे ॥ ५९ ॥ नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः । नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ६० ॥ नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः । नमो ज्योतिःस्वरूपाय निर्गुणाय नमोनमः ॥ ६१ ॥ निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः । निर्मायाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः ॥६२॥ नमःकण्ठप्रकाशाय शत्रुनाशाय ते नमः । नमः आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः ॥ ६३ ॥ नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः । नमो वाराहरूपाय वामनाय नमोनमः ॥ ६४ ॥ नम आनन्दरूपाय आनन्दाय नमोनमः । नमोस्त्वनर्घ्यकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः ॥ ६५ ॥ नमः पापविमोक्षाय मोक्षदाय नमोनमः । नमः कैलासनाथाय कालनाथाय ते नमः ॥ ६६ ॥ नमो बिन्दुरविन्दाय बिन्दुभाय नमोनमः । नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ६७ ॥ नमो मेरुनिवासाय भक्तवासाय ते नमः । नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ६८ ॥ नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः । नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः ॥ ६९ ॥ नमो मैत्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते नमः । नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथाय ते नमः ॥ ७० ॥ नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः । नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः ॥ ७१ ॥ नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः । नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः ॥७२॥ नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः । नमो भैरववासाय भैरवाय नमोनमः ॥ ७३ ॥ नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः । नमश्चन्द्रनिवासाय चन्द्रावासाय ते नमः ॥ ७४ ॥ नमः कलिंगवासाय कलिंगाय नमोनमः । नम उत्कलवासाय महेन्द्रवासाय ते नमः ॥ ७५ ॥ नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः । नमः सुन्दरवासाय भैरवाय नमो-

नमः ॥ ७६ ॥ नमः आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् । नमो ब्राह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः ॥ ७७ ॥ नमः क्षत्रियवासाय वैश्यवासाय ते नमः । नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमोनमः ॥ ७८ ॥ नमः पातालमूलाय मूलावासाय ते नमः । नमो रसातलवासाय सर्वपातालवासिने ॥ ७९ ॥ नमः कङ्कालवासाय कङ्कवासाय ते नमः । नमो मन्त्रनिवासाय भैरवाय नमोनमः ॥ ८० ॥ नमोऽहंकाररूपाय रजोरूपाय ते नमः । नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमोनमः ॥ ८१ ॥ नमो नलिनरूपाय नलिनाङ्गप्रकाशिने । नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ८२ ॥ नमो दुष्टनिवासाय साधूपायनरूपिणे । नमो नम्रस्वरूपाय स्तम्भनाय नमोनमः ॥ ८३ ॥ पञ्चयोनिप्रकाशाय चतुर्योनिप्रकाशिने । नवयोनि प्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ ८४ ॥ नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे । चतुःषष्टिप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ ८५ ॥ नमो बिन्दुप्रकाशाय । सुप्रकाशाय ते नमः । नमो गगनस्वरूपाय सुखरूप नमोस्तु ते ॥ ८६ ॥ नमश्चाम्बररूपाय भैरवाय नमोनमः । नमो नाना स्वरूपाय सुखरूप नमोस्तु ते ॥ ८७ ॥ नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहर्त्रे नमोस्तु ते । नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः ॥ ८८ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः प्रेतनिवासाय पिशाचाय नमोनमः ॥ ८९ ॥ नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोस्तु ते । नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः ॥ ९० ॥ नमः संसारभाराय भारकाय नमोनमः । नमो देहस्वरूपाय अदेहाय नमोनमः ॥ ९१ ॥ देवदेहाय देवाय भैरवाय नमोनमः । विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोस्तु ते ॥ ९२ ॥ स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः । स्थितिरूपाय स्थित्याय स्थितीनां पतये नमः ॥ ९३ ॥ सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमोनमः । स्थविष्ठाय गिरिष्ठाय श्रेष्ठाय परमात्मने ॥ ९४ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः पारदरूपाय पवित्राय नमोनमः ॥ ९५ ॥ नमो वेधकरूपाय अनिन्द्राय नमोनमः । नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः ॥ ९६ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमो निन्दस्वरूपाय अनिन्दाय नमोनमः ॥ ९७ ॥ नमो विशदरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः शरण्यशरणाय शरण्यानां सुखाय ते ॥ ९८ ॥ नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमोनमः । नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥ ९९ ॥ नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमोनमः । अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधामा त्रास्वरूपिणे ॥ १०० ॥

नमोक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमोनमः । अर्धमात्राय पूर्णाय पूर्णाय ते नमोनमः ॥१०१॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः । नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥ १०२ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः सृष्टिस्वरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने ॥ १०३ ॥ नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमोनम. । सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥ १०४ ॥ नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमोनमः । नमो धारास्वरूपाय खड्गहस्ताय ते नमः ॥ १०५ ॥ नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमोनमः । नमः कुण्डलवर्णाय शवमुण्डविभूषिणे ॥ १०६ ॥ महाक्रुद्धाय चण्डाय भैरवाय नमोनमः । नमो वासुकिभूषाय सर्वभूषाय ते नमः ॥१०७॥ नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमोनमः । पानपात्रप्रमत्तायमत्तरूपाय ते नमः ॥ १०८ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । माध्वाकारसुवर्णाय माधवाय नमोनमः ॥ १०९ ॥ नमो माङ्गल्यरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः कुमाररूपाय स्त्रीशूर्पाय नमोनमः ॥ ११० ॥ नमो गन्धस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमो दुर्गन्धरूपाय सुगन्धाय नमोनमः ॥१११॥ नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूषण ते नम. । नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ ११२ ॥ नमः पुष्पविनोदाय पुष्पपूजाय ते नमः । नमो भक्ति निवासाय भक्तदुःख निवारिणे ॥ ११३ ॥ भक्तप्रियाय शान्ताय भैरवाय नमोनम. । नमो भक्तिस्वरूपाय रूपदाय नमोनमः ॥ ११४ ॥ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः ॥ ११५ ॥ नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमोनमः । नमः खट्वाङ्गहस्ताय कालहस्ताय ते नमः ॥ ११६ ॥ नमो घोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे । घोरधर्माय घोराय भैरवाय नमोनमः ॥ ११७ ॥ घोरत्रिशूलहस्ताय घोरयानाय ते नमः । घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमोनमः ॥११८॥ घोरवाहनगम्याय अगम्याय नमोनमः । घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ ११९ ॥ घोरशब्दाय घोराय घोरदेहाय ते नम. । घोरद्रव्याय घोराय भैरवाय नमोनमः ॥ १२० ॥ घोरसङ्गाय सिंहाय सिद्धिसिंहाय ते नमः । नमः प्रचण्डसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः ॥ १२१ ॥ नम. सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः । नमो विजयरूपाय जयदाय नमोनमः ॥ १२२ ॥ नमो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १२३ ॥ नमोमेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः । नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ १२४ ॥ दुर्जयाय दुरन्ताय दुर्लभाय दुरात्मने । भक्तिलभ्याय भव्याय भाविताय नमोनमः ॥ १२५ ॥ नमो

गौरवरूपाय गौरवाय नमोनमः । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १२६ ॥ नमो बिघ्ननिवाराय विघ्ननाशिन्नमोस्तु ते । विघ्नविद्रावणायैव भैरवाय नमोनमः ॥ १२७ ॥ नमः किंशुकरूपाय रजोरूपाय ते नमः । नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १२८ ॥ नमो गणस्वरूपाय गणनाथाय ते नमः । नमो विश्वविकासाय भैरवाय नमोनमः ॥ १२९ ॥ नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः । नमो हेरम्बरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३० ॥ नमस्त्रिधास्वरूपाय रूपदाय नमोनमः । नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३१ ॥ नमः सरस्वतिरूपाय बुद्धिरूपाय ते नमः । नमो वन्द्यस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३२ ॥ नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिरूपाय ते नमः । नमः शशाङ्करूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३३ ॥ नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः । नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३४ ॥ नमो विशदरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३५ ॥ नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमोनमः । नमो गङ्गास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः ॥ १३६ ॥ नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमो दुःखविनाशाय दुःखमोक्षणरूपिणे ॥ १३७ ॥ महाचलाय वन्द्याय भैरवाय नमोनमः । नमो नन्दस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३८ ॥ नमो नन्दिस्वरूपाय स्थिररूपाय ते नमः । नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १३९ ॥ नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने । नमः शान्ताय शुद्धाय भैरवाय नमोनमः ॥ १४० ॥ नमो नर्मदारूपाय जलरूपाय ते नमः । नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमोनमः ॥ १४१ ॥ नमो महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः । नमः संसृतिरूपाय शरणीयाय ते नमः ॥ १४२ ॥ नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमोनमः । नमः संसारसाराय सरसां पतये नमः ॥ १४३ ॥ नमस्तेजःस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः । नमः कारुण्यरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥१४४॥ नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः । नमः शंकरवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः ॥१४५॥ नमो विष्टरकर्णाय यज्ञकर्णाय ते नमः । नमः शम्बुककर्णाय भैरवाय नमोनमः ॥ १४६ ॥ नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः । नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमोनमः ॥ १४७ ॥ नमः आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः । नमो दिग्रूपकर्णाय भैरवाय नमोनमः ॥ १४८ ॥ नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमोनमः । नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमोनमः ॥ १४९ ॥ नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमोनमः । नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय

ते नमः ॥ १५० ॥ नमो विमलनेत्राय योगिनेत्राय ते नमः । नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमोनमः ॥ १५१ ॥ नमः कलिन्दरूपाय कलिन्दाय नमोनमः । नमो ज्योतिःस्वरूपाय ज्योतिषाय नमोनमः ॥ १५२ ॥ नमस्तारप्रकाशायताररूपिन्नमोस्तु ते । नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमोनमः ॥ १५३ ॥ नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोस्तु ते । नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५४ ॥ नमः आनन्दरूपाय जगदानन्दरूपिणे । नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५५ ॥ नमः शङ्खनिवासाय शङ्कराय नमोनमः । नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५६ ॥ नमो न्यासस्वरूपाय न्यासरूप नमोस्तु ते । नमो बिन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५७ ॥ नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय ते नमः । नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५८ ॥ नमो जम्बुकरूपाय जङ्गमाय नमोनमः । नमो गरुडरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १५९ ॥ नमो लम्बुकरूपाय लम्बिकाय नमोनमः । नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६० ॥ नमो वीरस्वनिराय विरणाय नमोनमः । नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६१ ॥ नमो डम्बस्वरूपाय डमरुधारिन्नमोस्तु ते । नमः कलङ्कनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥ १६२ ॥ नमः ऋद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमोनमः । नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६३ ॥ नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः । धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६४ ॥ नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः । नमो धर्मार्थसिद्धाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६५ ॥ नमो विरजरूपाय रूपारूपप्रकाशिने । नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६६ ॥ नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमोनमः । नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६७ ॥ नमः सहस्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः । नमः आनन्दरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १६८ ॥ नमः संहारबन्धाय बन्धकाय नमोनमः । नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमोनमः ॥ १६९ ॥ नमो विभुस्वरूपाय व्यापकाय नमोनमः । नमो माङ्गल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः ॥ १७० ॥ नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूपिन्नमोस्तु ते । नमो व्यालविभूषाय भैरवाय नमोनमः ॥ १७१ ॥ नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानां पतये नमः । नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः ॥ १७२ ॥ नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः । नमः पालकरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १७३ ॥ नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः । नमो विश्वविलासाय भैरवाय नमो-

नमः ॥ १७४ ॥ नमोनमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोस्तु ते। नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः ॥ १७५ ॥ नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमोनमः। नमो भद्राधिपतये भयहन्त्रे नमोस्तु ते ॥ १७६ ॥ नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे। नमो मत्ताय शान्ताय भैरवाय नमोनमः ॥ १७७ ॥ नमो मलयवासाय कैलासाय नमोनमः। नमः कैलासवासाय कालिकातनयाय ते ॥ १७८ ॥ नमः संसारपाराय भैरवाय नमोनमः। नमो मातृविनोदाय विमलायनमो नमः ॥ १७९ ॥ नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमोनमः। नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः ॥ १८० ॥ नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमोनमः। नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥ १८१ ॥ नमो वृन्दविनोदाय वृन्दकाय नमोनमः। नमो वृंहितरूपाय भैरवाय नमोनमः ॥ १८२ ॥ नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमोनमः। नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमोनमः ॥ १८३ ॥ नमो नैस्थिरपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः। नमो मण्डलपीठाय उक्तपीठाय ते नमः ॥ १८४ ॥ नमो यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः। नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः ॥ १८५ ॥ नमोनाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः। नमः शङ्करनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥ १८६ ॥ नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः। नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ॥ १८७ ॥ विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः। नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः ॥ १८८ ॥ नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः। नमो विश्वविहाराय विश्वभाराय ते नमः ॥ १८९ ॥ नमो रङ्गसनाथाय रङ्गनाथाय ते नमः। नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ १९० ॥ नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमोनमः। नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः ॥ १९१ ॥ नमो मङ्गलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः। नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ १९२ ॥ नमो निर्धननाथाय सुखनाथाय ते नमः। नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ १९३ ॥ नमो द्रविडनाथाय दरिनाथाय ते नमः। नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥ १९४ ॥ नमो माध्वीकनाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः। नमो न्याससनाथाय ध्याननाथाय ते नमः ॥ १९५ ॥ नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः। नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥१९६॥ नमो विमलनाथाय मण्डलनाथाय ते नमः। नमः सरोजनाथाय मत्स्यनाथाय ते नमः ॥१९७॥ नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः। नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय

ते नमः ॥ १९८ ॥ नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः। नमो त्रिन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥ १९९ ॥ नमो मङ्गलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः। नमो गङ्गासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥ २०० ॥ नमो धीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः। नमः कंचुकिनाथाय भृङ्गिनाथाय ते नमः ॥ २०१ ॥ नमः समुद्रनाथाय गिरिनाथाय ते नमः। नमो माङ्गल्यनाथाय वटुकनाथाय ते नमः ॥ २०२ ॥ नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमोनमः। नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २०३ ॥ नमो गिरिशनाथाय वामनाथाय ते नमः। नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २०४ ॥ नमो मन्दरनाथाय मन्दनाथाय ते नमः। नमो भैरवीनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २०५ ॥ अम्बानाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः। नमः कालिसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २०६ ॥ नमो मुकुन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः। नमः कुण्डलनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २०७ ॥ नमोष्टचक्रनाथाय चक्रनाथाय ते नमः। नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः ॥ २०८ ॥ नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः। नमो दयासनाथाय जङ्गमेशाय ते नमः ॥ २०९ ॥ नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः। नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥२१०॥ नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः। नमो केवलनाथाय चैलनाथाय ते नमः ॥२११॥ नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमोनमः। नमो द्वन्द्वसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥२१२॥ नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः। नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमोनमः ॥ २१३ ॥ नमो दुष्टसनाथाय भैरवाय नमोनमः। नमो भयसनाथाय बिम्बनाथाय ते नमः ॥ २१४ ॥ नमो मायासनाथाय भैरवाय नमोनमः। नमो विटङ्कनाथाय टङ्कनाथाय ते नमः ॥ २१५ ॥ नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः। नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः ॥ २१६ ॥ नमो मानसनाथाय शापनाथाय ते नमः। नमो यन्त्रसनाथाय भैरवाय नमोनमः ॥ २१७ ॥ नमो डाकिनिनाथाय भैरवाय नमो गण्डूषनाथाय गण्डूषाय नमोनमः। नमो डङ्कनमोनमः ॥२१८॥ नमो डामरनाथाय डारकाय नमोनमः। नमो डङ्कसनाथाय डङ्कनाथाय ते नमः ॥२१९॥ नमो माण्डव्यनाथाय यज्ञनाथाय ते नमः। नमो यजुःसनाथाय क्रोडनाथाय ते नमः ॥२२०॥ नमः सामसनाथायाथर्वनाथाय ते नमः। नमः शून्याय नाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः ॥ २२१ ॥

इदं नामसहस्रं मे रुद्रेण परिकीर्तितम्। यः पठेत्पाठयेद्वापि स एव

मम सेवकः ॥ २२२ ॥ यंयं चिन्तयते कामं कारंकारं प्रियाकृतिम् । यः शृणोति दुरायन्तं तंतं प्राप्नोति मामकः ॥ २२३ ॥ राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ । यः पठेन्मानवो नित्यं स शूरः स्यान्न संशयः ॥ २२४ ॥ एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा पठेन्नरः । स भावेद्बुद्धिमान्लोके सत्यमेव न संशयः ॥ २२५ ॥ यः शृणोति नरो भक्त्या स एव गुणसागरः । यः श्रद्धया रात्रिकाले शृणोति पठ्यते च वा ॥ २२६ ॥ स एव साधकः प्रोक्तः सर्वदुष्टविनाशकः । अर्धरात्रे पठेद्यस्तु स एव पुरुषोत्तमः ॥ २२७ ॥ त्रिसन्ध्यायां देवगृहे श्मशाने च विशेषतः । वने च मार्गगमने बले दुर्जनसन्निधौ ॥ २२८ ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं स सुखी स्यान्न संशयः । विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ॥ २२९ ॥ शौर्यार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् । एवंविंशतिमन्त्रेण अक्षरेण सहैव मे ॥ २३० ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वकाममवाप्नुयात् । रसार्थी पाठमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यशः ॥ २३१ ॥ अन्नार्थी लभते चान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात् । रोगी प्रमुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥२३२॥ शापार्थी लभते शापं सर्वशत्रुविनाशनम् । स्थावरं जङ्गमं वापि विषं सर्वं प्रणश्यति ॥ २३३ ॥ सर्वलोकप्रियः शान्तो मातृपितृप्रियङ्करः । संग्रामे विजयस्तस्य यः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥ २३४ ॥ सर्वत्र जयदं देवि स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम् । इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं निन्दकाय न दर्शयेत् ॥ २३५ ॥ असाधकाय दुष्टाय मातृपितृविकारिणे । अधार्मिकायाकुलीनाय नैतत्स्तोत्रं प्रकाशयेत् ॥२३६॥

इस सहस्रनाम को रुद्र ने कहा है । जो इसे पढ़ता या पढ़ाता है वही मेरा सेवक है । ऐसा मेरा प्रिय सेवक जो-जो इच्छा करता है वह उस उस दुर्लभ पदार्थ को प्राप्त कर लेता है । राजद्वार पर, श्मशान में और जल के तट पर जो इसका पाठ करता है वह शूरवीर होता है, इसमें कोई संशय नहीं है । जो मनुष्य एककाल, द्विकाल या त्रिकाल में इसका पाठ करता है वह लोक में बुद्धिमान होता है, यह सत्य है और इसमें कोई संशय नहीं है । जो मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक सुनता है वही गुणों का सागर है । जो श्रद्धा से रात्रि के समय इसको सुनता और पढ़ता है वही सब दुष्टों का विनाश करने वाला साधक कहा गया है । जो अर्धरात्रि में इसे पढ़ता है वही पुरुषोत्तम है । तीनों सन्ध्याओं में देवगृह में तथा विशेषतः श्मशान में, वन में, मार्ग में, सेना में, दुर्जनों के निकट जो इसे नित्य ध्यानपूर्वक पढ़ता है वह निःसंशय सुखी होता है । विद्यार्थी इससे विद्या और धनार्थी धन प्राप्त करता है । शौर्यार्थी शौर्य और पुत्रार्थी पुत्र प्राप्त करता है । जो प्रातःकाल

उठकर मन्त्र के अक्षरों सहित इसका पाठ करता है वह सभी कामनाओं को प्राप्त करता है । पाठ मात्र से ही रसार्थी नित्य रसों को प्राप्त करता है, अन्नार्थी अन्न पाता है, सुखार्थी सुख प्राप्त करता है, रोगी रोग से मुक्त होता है और बन्दी बन्धन से मुक्त होता है । शाप देने की शक्ति चाहने वाला सर्वशत्रु विनाशक शाप देने की शक्ति पाता है; स्थावर और जङ्गम जो भी विष हैं वे सभी इससे नष्ट हो जाते हैं । जो इसे भक्तियुक्त होकर पढ़ता है । वह सर्वलोकप्रिय, शान्त, और माता-पिता का प्रिय करने वाला होता है । संग्राम में उसकी विजय होती है । हे देवि ! इस स्तोत्र को सर्वत्र जय प्रदान करने वाला कहा गया है । यह स्तोत्र महापुण्यदायक है । निन्दक को इसे नहीं दिखाना चाहिये । जो साधक न हो, जो दुष्ट हो, माता पिता के प्रति अनुकूल आचरण न करता हो, अधार्मिक हो, अकुलीय हो, ऐसों को यह स्तोत्र नहीं बताना चाहिये ।

साधकाय च भक्ताय योगिने धार्मिकाय च । गुरुभक्ताय शान्ताय दर्शयेत्साधकोत्तमः ॥ २३७ ॥ अन्यथा पापलिप्तः स्यात्क्रोधाय भैरवोत्तमे । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २३८ ॥

जो साधक हो, भक्त हो, योगी हो, धार्मिक हो, गुरुभक्त हो, शान्तचित्त हो, ऐसे श्रेष्ठ साधकों को ही बताना चाहिये । इसके विपरीत व्यवहार करने पर मनुष्य पापलिप्त तथा भैरव का कोपभाजन होता है । अतः सभी प्रयत्नों से इसको गोपनीय रखना चाहिये ।

इदं स्तोत्रं च रुद्रेण रामस्यापि मुखेर्पितम् । तन्मुखान्निःसृतं लोके दरिद्रायापि साधवे ॥ २३९ ॥ रामेण कथितं भ्रात्रे लक्ष्मणाय महात्मने । ततो दुर्वाससा प्राप्तं तैनेवोक्तं तु पाण्डवे ॥ २४० ॥ पाण्डवोप्यब्रवीत्कृष्णं कृष्णेनेहं प्रकीर्तितम् । अस्य स्तोत्रस्य महात्म्यं रामो जानाति तत्त्वतः ॥ २४१ ॥ रामोपि राज्यं सम्प्राप्तो ह्यस्य स्तोत्रस्य पाठतः । पाण्डवोपि तथा राज्यं सम्प्राप्तो भैरवस्य च ॥ २४२ ॥ अनेन स्तोत्रपाठेन किमलभ्यं भवेदिति । सर्वलोकस्य पूज्यस्तु जायते नात्र संशयः ॥ २४३ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तश्रीबटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इस स्तोत्र को रुद्र भगवान ने श्रीराम को अर्पित किया था । उनके मुख से निःसृत होकर यह संसार में सज्जन दरिद्र मनुष्यों के लिये प्रकट हुआ । राम ने इसे अपने भाई महात्मा लक्ष्मण को बताया । लक्ष्मण से दुर्वासा ने प्राप्त किया । दुर्वासा ने पाण्डवों को दिया । पाण्डवों ने श्रीकृष्ण

को बताया। श्रीकृष्ण ने मुझे बताया। इस स्तोत्र को तत्त्वतः श्रीराम जानते हैं। इस स्तोत्र के पाठ से ही राम ने राज्य प्राप्त किया। पाण्डवों ने भी इसी से अपना राज्य पाया। भैरव के इस स्तोत्र से क्या नहीं प्राप्त हो सकता! जो इसका पाठ करता है वह संसार में सबका पूज्य हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है। इति श्री रुद्रयामलोक्त वटुक भैरव सहस्रनाम स्तोत्र सम्पूर्ण।

अथ श्रीवटुकभैरवस्तवराजप्रारम्भः।

उक्तं च रुद्रयामले मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं त्रिलोचनम्। शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥ १ ॥

श्रीवटुकभैरव स्तवराज : रुद्रयामल में कहा गया है : मेरुपृष्ठ पर सुख से बैठे हुये देवाधिदेव त्रिलोचन शङ्कर से पार्वती ने पूछा :

पार्वत्युवाच। य एष भैरवो नाम आपदुद्धारको मतः। त्वया च कथितो देव भैरवः कल्प उत्तमः। तस्य नामसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च ॥ २ ॥ सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद। यानि सङ्कीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः ॥ ३ ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च।

पार्वती बोली : हे देव! आपके मत से यह भैरव नाम आपदुद्धारक है, और आपने, हे देव! उत्तम भैरव कल्प भी कहा है। उनके सहस्रों, लाखों और अरबों नाम हैं। उनमें से सार को निकालकर आप अब उनके ऐसे १०८ नाम बताइये जिनका कीर्तन करता हुआ साधक सब दुःखों से छूट जाता है तथा समस्त अभीष्टों और सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

ईश्वर उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः। आपदुद्धारणस्येह नामाष्टशतमुत्तमम् ॥ ४ ॥ सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापद्विनिवारणम्। सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम् ॥ ५ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्। आयुःकरं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम् ॥ ६ ॥ आद्यन्ते स्तोत्रपाठस्य मूलमन्त्रं जपेन्नरः। अष्टोत्तरशतं धीमान् यथासंख्यमथापि वा। जपान्तेऽप्युत्तरन्यासाः कर्तव्या जपसिद्धये ॥ ७ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं सिद्धार्थे विनियोजयेत्। साधकः सर्वलोकेषु सत्यंसत्यं न संशयः ॥ ८ ॥

ईश्वर बोले : हे देवि मैं यहाँ आपदुद्धारक महात्मा भैरव का उत्तम अष्टोत्तरशतनाम बतला रहा हूं। यह सभी पापों का हरण करनेवाला, पुण्यदाता, तथा समस्त आपत्तियों का निवारण करनेवाला है। हे देवि। यह साधकों की सभी कामनाओं का फल देने वाला तथा सुखकारक है। यह

समस्त मङ्गलों का मङ्गलकारक, समस्त उपद्रवों का नाशक, तथा आयु, पुष्टि, श्री और यश प्रदान करने वाला है। स्तोत्रपाठ के आदि और अन्त में मूलमन्त्र का १०८ बार अथवा यथा संख्या जप करना चाहिये। जप के बाद भी जप सिद्धि के लिये उत्तर न्यास करना चाहिये। इसके जप से साधक समस्त संसार में आयु, आरोग्य तथा ऐश्वर्य को सिद्ध कर लेता है इसमें कोई संशय नहीं है।

विनियोग : ॐ अस्य वटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीवटुकभैरवो देवता। अष्टबाहुमिति बीजम्। त्रिनयनमिति शक्तिः। प्रणवः कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे। विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ बृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ३। अष्टबाहुमिति बीजाय नमः गुह्ये ४। त्रिनयनेति शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां वां ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदाशिवोम्। अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः। भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः। कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवोम्। हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः

कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बल-प्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मयाय नमः। कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ह्रीं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः। भवेभवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः। नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ हः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

देहन्यास : ॐ ह्रीं भैरवाय नमः मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूताश्रयाय नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः कर्णनोः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः नासिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः जिह्वायाम् ॥६॥ ॐ ह्रीं नागहारनागयज्ञोपवीतिकाय नमः कण्ठे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः करयोः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः हृदये ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः नाभौ ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सबोधनाशनाय नमः कट्याम् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः ऊर्वोः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जङ्घयोः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं देवदेवेशाय नमः सर्वाङ्गे ॥ १४ ॥ इति देहन्यासः।

द्वितीय करन्यास : ॐ ह्रीं भैरवाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूतश्रेष्ठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय दिग्दिशायाम् ॥ ७ ॥ ॐ भैरवाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ८ ॥ इति करन्यासो द्वितीयः।

व्यापक न्यास : ॐ ह्रीं भैरवाय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं भूतहननाय नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सारमेयानुगाय नमः भ्रुवोः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः कर्णयोः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प्रेतवाहनाय नमः कपोलयोः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं भस्माङ्गाय नमः नासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं सर्पभूषणाय नमः ओष्ठयोः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः मुखे ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं शक्तिहस्ताय नमः गले ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं दैत्यशमनाय नमः स्कन्धयोः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अतुलतेजसे नमः बाह्वोः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं कपालिने नमः करयोः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं मुण्डमालिने नमः हृदये ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं शान्ताय नमः वक्षःस्थले ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं कामचारिणे नमः स्तनयोः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं सदातुष्टाय नमः उदरे ॥१६॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रेशाय नमः पार्श्वयोः ॥१७॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे।१८। ॐ ह्रीं क्षेत्रेज्ञाय नमः नाभौ ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं पापौघनाशाय नमः कट्याम्

॥ २० ॥ ॐ ह्रीं वटुकाय नमः लिङ्गे ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं रक्षाकराय नमः गुदे ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं रक्तलोचनाय नमः ऊर्वो ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं घुघुंराय नमः जानुनि ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जङ्घयोः ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपादुकाय नमः गुल्फयो ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं सुरेश्वराय नमः पादपृष्ठे ॥२७। ॐ ह्रीं आपदुद्धारकाय नमः आपादतलमस्तकपर्यन्त न्यास करे ॥२८॥ 'ॐ ह्रीं क्ष्म्रौं ब्लौं ह्रीं ॐ स्वाहा आपदुद्धारणभैरवाय नमः।' इससे सर्वाङ्ग में व्यापक करे ॥ २९ ॥ इति व्यापकन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करने से साधक साक्षात् भैरव हो जाता है।

दिग्न्यास : ॐ ह्रीं डमरुहस्ताय नमः पूर्वे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं दण्डधारिणे नमः दक्षिणे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं खड्गहस्ताय नमः पश्चिमे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं घण्टावादिने नमः उत्तरे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अग्निवर्णाय नमः अग्नये ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः नैर्ऋते ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सर्वभूतस्थाय नमः वायव्ये ॥७॥ ॐ ह्रीं अष्टसिद्धिदाय नमः ऐशान्याम् ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं खेचारिणे नमः ऊर्ध्वम् ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं रौद्ररूपिणे नमः पाताले ॥ १० ॥ इति दिग्न्यासः।

विलोम रूपसे करन्यास : ॐ ह्रीं रुद्राय नमः अंगुष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिखिसखाय नमः तर्जन्याम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं शिवाय नमः मध्यमायाम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलिने नमः अनामिकायाम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः कनिष्ठिकायाम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः करतलयोः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः कराग्रेषु ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः करपृष्ठयोः ॥ ८ ॥ इति विलोमरूपेण करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीआनन्दनाथाय नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादि षडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि समाप्त करके कामनापरत्व दृष्टि से उपयोगी स्वरूप का ध्यान करे।

अथ सात्त्विकं ध्यानम्। वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः। दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृश शूलदण्डौ दधानम् ॥ १ ॥

अथ राजसं ध्यानम्। उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्रजं

स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः। नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्ज्वलं बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये ॥ २ ॥

अथ तामसं ध्यानम्। ध्यायेन्नीलादिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं खड्गपाशाभयानि। नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम् ॥ ३ ॥

अथ सकलमनोरथप्राप्त्यर्थमिदं त्रिगुणात्मक ध्यानम्।

सकल मनोरथों की प्राप्ति के लिये त्रिगुणात्मक ध्यान इस प्रकार है :

शुद्धःस्फटिकसङ्काशं सहस्रादित्यवर्चसम्। नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम् ॥ १ ॥ अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्। दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥२॥ भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णं शिरोरुहम्। दिगम्बरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥ ३ ॥ खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः। डमरुं च कपालं च वरदं भुजङ्गं तथा। आत्मवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ ४ ॥

अथ साधारणं ध्यानम्।

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती। क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ १ ॥ आनीलकुन्तलमलक्तकरक्तवर्णं मौनीकृतं कृतमनोज्ञमुखारविन्दं। कल्याणकीर्तिकमनीयकपालपाणिं वन्दे महावटुकनाथमभीष्टसिद्ध्यै ॥ २ ॥ आनम्रसर्वगीर्वाणशिरोभृङ्गाङ्गसङ्गिनम्। भैरवस्य पदाम्भोजं भूयोऽस्या नौमि भूतये ॥ ३ ॥

इस प्रकार यथारुचि ध्यान करके भैरव से प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ ह्रीं भैरवभैरव भयकरहर मां रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा।'

इति मन्त्रेण प्रार्थयित्वा पटलस्थयन्त्रपीठे आवाहनादिप्राणं प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैरभ्यर्च्य पुनः कामनापरत्वेन यथारुचि ध्यात्वा प्रार्थनामन्त्रेण प्रार्थयित्वा दीपदानं कुर्यात्।

इस मन्त्र से प्रार्थना करके पटलस्थ यन्त्रपीठ में आवाहनादि तथा प्राण प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार से पूजा करके पुनः कामना के अनुसार यथारुचि ध्यान करके और प्रार्थना करके दीपदान करे :

अथ दीपदानप्रयोगः। मन्त्राक्षराणं संख्याकैस्तन्तुभिर्ब्रह्मसूत्रजैर्वर्तिं दत्वा घृते नैव दीपं तत्र प्रदापयेत्। अथ दीपदानमन्त्रः।

दीपदान प्रयोग : मन्त्र के अक्षरों की संख्या के अनुसार ब्रह्मसूत्रों की बत्ती बनाकर दीपक में डाले, फिर घी से दीपक को भरकर दीपदान करे। दीपदान मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रींश्रींक्लींह्रींश्रींवं सर्वज्ञाय महाबलपराक्रमाय वटुकाय नमः। इमं दीपं गृहाण सर्वं कार्यार्थं साधक दुष्टान्नाशयनाशय त्रासयत्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरुकुरु फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र से दीपक देकर मूलमन्त्र से तीन बार आचमन करके हाथ धो डाले। इस प्रकार दीपदान समाप्त करके बलिदान करे।

अथ बलिदानप्रयोगः।

ॐ ह्रां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ २ ॥ ॐ कुं नमः ॥ ३ ॥

इन बीजों से तीन बार आचमन और मूलमन्त्र से प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्य ममामुकफलावाप्तये श्रीवटुकप्रीतये बलिदानमहं करिष्ये।

इति संकल्प्य गणपतिं दुर्गां रक्तैश्चन्दनाक्षतपुष्पैरभ्यर्च्य देवस्याग्रे त्रिकोणं चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा तत्र गन्धाद्यैरभ्यर्च्य पात्रस्थं कवलाकारं सम्पादितं बलिं निधाय गन्धपुष्पाभ्यां मूलान्ते 'बलिरूपाय नमः' इति बलिं सम्पूज्य देवं तत्र सञ्चिन्त्य सम्पूज्य हस्ते बलिमादाय।

इससे संकल्प करके गणपति तथा दुर्गा की रक्तचन्दन, अक्षत तथा पुष्पों से पूजा करके देव के आगे त्रिकोण और चतुरस्रयुक्त मण्डल बनाकर वहां गन्धादि से पूजा करके पात्रस्थ कवलाकार बलि सम्पादित करके गन्ध-पुष्प से मूलमन्त्र के अन्त में 'बलिरूपाय नमः' लगाकर इससे बलि की पूजा करके वहां देव का चिन्तन और पूजन करके हाथ में बलि लेकर :

ॐ एह्येहि देववटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्णगृह्ण स्वाहा एष-बलिर्वटुकाय नमः।'

इस मन्त्र से बलि देवे। इसके बाद :

देशकालौ संकीर्त्य मम सकलकामनासिद्ध्यर्थे श्रीवटुकभैरवस्तोत्रस्यैकादशसहस्रपुरश्चरणांगत्वेन प्रतिस्तोत्रं मूलमन्त्रस्योत्तरशतसंख्याजपसंपुटितामुकसंख्यापाठमहं करिष्ये।

इससे सङ्कल्प करे और मूलमन्त्र का १०८ बार जप करे :

अथ मूलमन्त्र।

'ॐ ह्रीं वटुकायापदुद्धारणाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं ॐ।'

इस प्रकार वटुक भैरव की प्रसन्नता के लिये १०८ बार मूलमन्त्र का जप करे। इसके बाद वटुक भैरव को नमस्कार करके पञ्चोपचारों से पूजन करके और पुस्तक की भी पूजा करके स्तोत्र का पाठ करे।

अथ स्तोत्रम्।

ॐ ह्रीं भैरवोभूतनाथश्च भूतात्माभूतभावनः। क्षेत्रदः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रज्ञः क्षत्रियो विराट् ॥ १ ॥ श्मशानवासीमांसाशीखर्पराशिःस्मरान्तकृत्। रक्तपःपानपःसिद्धःसिद्धिदः सिद्धसेवितः ॥ २ ॥ कङ्कालःकालशमनःकलाकाष्ठातनुः कविः। त्रिनेत्रोबहुनेत्रश्चतथापिङ्गललोचनः ॥ ३ ॥ शूलपाणिःखड्गपाणिः कङ्कालीधूम्रलोचनः। अभीरुर्भैरवोनाथोभूतपोयोगिनीपतिः ॥ ४ ॥ धनदोधनहारीचधनवान्प्रीतिभावनः। नागहारोनागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ॥ ५ ॥ कालः कपालमालीचकमनीयः कलानिधिः। त्रिलोचनोज्ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखीचत्रिलोकपः ॥ ६ ॥ त्रिनेत्रतनयोडिंभःशान्तःशान्तजनप्रियः। वटुकोवटुवेषश्चखट्वाङ्गवरधारकः ॥ ७ ॥ भूताध्यक्षःपशुपतिःभिक्षुकः परिचारकः। धूर्तोदिगम्बरः शूरोहरिणःपाण्डुलोचनः ॥८॥ प्रशान्तः शान्तिदःसिद्धिः शङ्करःप्रियबान्धवः। अष्टमूर्तिनिधीशश्चज्ञानचक्षुस्तपोमयः ॥ ९ ॥ अष्टाधारःषडाधारः सर्पयुक्तःशिखीसखः। भूधरोभूधराधीशोभूपतिर्भूधरात्मजः ॥ १० ॥ कङ्कालधारीमुण्डीचनागयज्ञोपवीतवान्। जृंभणोमोहनःस्तम्भीमारणः क्षोभणस्तथा ॥ ११ ॥ शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः। बलिभुग्बलिभुग्नाथो बालोबालपराक्रमः ॥ १२ ॥ सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः। कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ॥ १३ ॥ सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यो प्रभुर्विष्णुरितीवहिः।

अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ॥ १ ॥ मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्। य इदं पठति स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम् ॥१५॥ न तस्य दुरितं किञ्चिन्नच भूतभयं तथा। न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ॥ १६ ॥ न शत्रुभ्यो भयं क्वापि प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्। पातकानां भयं चैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ॥ १७ ॥ मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये। औत्पत्तिके महाघोरे तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥१८॥ बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः। सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात् ॥ १९ ॥

हे देवि ! महात्मा भैरव का १०८ नाम मैंने तुम्हें बता दिया है। यह

रहस्यमय और अभीष्ट फलों को देने वाला है। जो इस उत्तम १०८ नामों वाले स्तोत्र को पढ़ता है उसे कोई कष्ट नहीं होता और उसे भूतों का तथा महामारी का भय नहीं रहता। ऐसे मनुष्य को कहीं पर शत्रुओं से भी भय प्राप्त नहीं होता। जो इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करता है वह पातकों के भी भय से मुक्त रहता है। उसे भारी भय, ग्रहभय और राजभय नहीं होता। मनुष्य को इससे शत्रुओं से भी कोई भय नहीं प्राप्त होता। इन भयों तथा पातकों से भय के समय इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। मारीभय में, राजभय में, चोरभय में, अग्नि भय में, घोर उत्पात में, दुःस्वप्न देखने पर, तथा घोर बन्धन में मनुष्य को एकाग्रचित्त होकर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। भैरव की कृपा से ये सब शान्त हो जाते हैं।

एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते। यः स्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि सम्वत्सरमतन्द्रितः ॥ २० ॥ स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः। षण्मासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम् ॥२१॥ राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं पुनः। रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयत्येव शात्रवान् ॥ २२ ॥ जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत्। धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यस्तु मानवः ॥ २३ ॥ जपेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि। धनं पुत्रं तथा दाराम्प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥ २४ ॥ रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः ॥२५॥ निगडैश्चापि बद्धो यः कारागेहे निपातितः। शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तं पठेच्चैवं दिवानिशि ॥ २६ ॥ यंयं चिन्तयते कामं तंतं प्राप्नोति निश्चितम्।[1] अप्रकाश्यं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्य चित् ॥ २७ ॥ सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते। दद्यात्स्तोत्रमिमं पुण्य सर्वकामफलप्रदम् ॥ २८ ॥

---

१. ग्रंन्थान्तरे विशेषः""रात्रौ वारत्रयं यो वै तस्य वश्यं जगद्भवेत्। प्रातश्चैकादशावृतिं रात्रौ वा पुनरेव हि ॥१॥ पूर्ववच्च विधिं कृत्वा पठनीयः स्तवः शुभः। महानिशि त्रिरावृत्ति यः करोति सदा शुचिः ॥ २ ॥ राजानो वशमायान्ति सभासोभास्करो भवेत्। शनौ च प्रातरुत्थाय दशावृतिं चरेदिह ॥ ३ ॥ होमादिकं च सम्पाद्य षण्मासादतुलां श्रियम्। शनौ चैवाश्वत्थमूले पूजयित्वा शिवं प्रिये ॥ २ ॥ शतावृतिं पठित्वा तु जगद्वल्लभतामियात्। रवौ च नाभिमात्रे हि जले स्थित्वा पठेदिह ॥५॥ एकादश तथावर्त्ति पठित्वा प्राप्नुयाच्छ्रियम्। पठेच्च रोगशान्त्यर्थं नक्षत्रे पुष्यसंज्ञके ॥ ६ ॥ अष्टावृत्ति

इसका पुरश्चरण ग्यारह हजार जप कहा गया है। हे देवि ! जो मनुष्य तीनों सन्ध्याओं में जागरूक होकर इसका पाठ करता है वह दुर्लभ इष्ट सिद्धियों को प्राप्त करता है। भूमि चाहनेवाला यदि ६ मास तक इसका जप करे तो वह भूमि प्राप्त कर लेता है। राजशत्रु के विनाश के लिये आठ मास तक जप करना चाहिये। रात में तीन बार जप करने के मनुष्य शत्रुओं का नाश कर देता है। जो मनुष्य तीन मास तक जप करता है वह राजा को वश में कर लेता है। हे देवि ! धनार्थी, पुत्रार्थी और दारार्थी मनुष्य तीन मास तक रात में एक बार जप करके धन, पुत्र तथा पत्नी को प्राप्त कर लेता है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे देवि इसके जप से रोगी रोग से मुक्त हो जाता है; बन्धन में पड़ा मनुष्य बन्धन मुक्त हो जाता है। भय-भीत भयमुक्त होता है। यह मैं सत्य कहता हूं, इसमें कोई संशय नहीं है। जो मनुष्य हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़ा हुआ कारागृह में डाल दिया गया है या जञ्जीरों से बँधा है वह यदि रात-दिन इसका पाठ करे तो वह जो-जो चाहता है वह सब निश्चित रूप से प्राप्त करता है। यह परम गोपनीय स्तोत्र है। इसे प्रकाशित नहीं करना चाहिये और ऐसे-तैसे व्यक्ति को कभी नहीं देना चाहिये। जो कुलीन, शान्त, ऋजु और दम्भवर्जित हो उसे ही इस पुण्यमय तथा सकल अभीष्टप्रद स्तोत्र को देना चाहिये।

इति श्रुत्वाततोदेवीनामाष्टशतमुत्तमम् । जजापपरयाभक्त्यासदा-

पठेद्यो वै आरोग्यं लभते ध्रुवम् । रवौ च विप्रान्संपूज्य पाठयेच्छतवारकम् ॥ ७ ॥ वारे वारे च षण्मासं पठित्वा सुतमाप्नुयात् । सप्तजन्मभवा वन्ध्या जीवत्पुत्रा भवेदिह ॥८॥ कन्याकामो भवेद्यो वै त्रिकालं रविवासरे । षण्मासादप्सरातुल्यां लभते स्त्रियमुत्तमाम् ॥ ९ ॥ वैद्यानामप्यसाध्यो वै रोगो भवति यस्य च । तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ॥ १० ॥ निष्फलश्चक्रतुस्तस्य भवतीह सदा प्रिये । सहस्रावर्तनं कृत्वा सफलश्च क्रतुर्भवेत् ॥ ११ ॥ ग्रहणे च पठेद्यो वै विधिना चन्द्रसूर्ययोः । मनोदिष्टां तदा सिद्धिं प्राप्नुयान्नात्र संशयः । तीर्थे चैव शुभे क्षेत्रे शिवस्य सन्निधौ प्रिये । पठित्वा पुत्रमन्त्रं च सद्यः सिद्धिं लभेदिह । त्रिरावृत्ति दशावृत्ति विंशति वा शतावधिः । सहस्रसंख्यया वाथ चैकादशसहस्रकम् । पुरश्चरणकं प्रोक्तं भैरवस्य महात्मनः । पुरश्चरणकं कृत्वा पठते नित्यमेव च । सद्यः सिद्धिं यथोक्तां हि प्राप्नुयान्नात्र संशयः । मानुषं जन्म मासाद्य दुःखभाजो भवन्ति वै । ते भजन्तु सदा देवं भैरवं सुखदायकम् । तद्दुःखं नैव विद्येत भैरवो नाशयेदिह ।

सर्वेश्वरेशी ॥ २९ ॥ भैरवोपिप्रहृष्टोभूत्सर्वलोकमहेश्वरः । वरंददाति भक्तेभ्यः पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः । सन्तोषंपरमंप्राप्यभैरवस्यमहात्मनः ॥३०॥

शिवजी से १०८ नाम वाले इस उत्तम स्तोत्र के माहात्म्य को सुनकर सर्वेश्वरी पार्वतीजी ने परम भक्ति से इस स्तोत्र का जप किया। सब लोकों के स्वामी भैरव भी इससे प्रसन्न हो गये। जो एकाग्रचित्त से इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे महात्मा भैरव परम सन्तोष प्राप्त करके वर प्रदान करते हैं।

वारंवारंभुवनजननीप्रोच्यतेसाधुवादः सत्यंसत्यंजगति सकलेभैरवोदेवएकः । यांयांसिद्धिंभुवनजठरेकामयेन्मानवोयस्तांस्तां सिद्धिंवितरति-सदाभैरवःसुप्रसन्नः ॥ ३१ ॥ पाणिभ्यांपरितः प्रपीड्यसुदृढंनिश्चोष्यनि-श्चोष्यच ब्रह्माण्डंसकलंप्रचालितरसालोच्चैःफलाभंमुहुः । पायंपायमपाययत्त्रिजगतिह्युन्मुत्तवत्तैरसैर्नृत्यंस्ताण्डवमम्बरेणशिरसापायान्महाभैरवः ॥ ३२ ॥ बिभ्राणःशुभ्रवर्णद्विगुणनवभुजंपञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रं ज्ञानेमुद्रेन्द्रशास्त्रं सविषममृतकंशङ्खभैषज्यचापम्।शूलंखट्वाङ्गबाणान्डमरुमसिगदावह्नि-मारोग्यमालामिष्टाभीतिश्चदोर्भिर्जयतिखलुमहाभैरवःसर्वसिद्धयै ॥ ३३ ॥

भुवनजननी पार्वती बार-बार साधुवाद देते हुये कहने लगी : सत्य है, सत्य है, संसार में केवल भैरव ही मात्र एक देव हैं। इस संसार में मनुष्य जो-जो सिद्धि चाहता है उस सबको प्रसन्न होकर भैरव सदा प्रदान करते है। बड़े आकार के पके आम के समान समस्त ब्रह्माण्ड को दोनों हाथों से चारों ओर से बार-बार अच्छी तरह दबाते हुये और उसके मधुर रस को स्वयं पान करते हुये जिसने तीनों लोकों में लोगों को पिलाया तथा उन उन्मादकारी रसों से उन्मत्त होकर आकाश को शिर पर उठाकर नृत्य करते हुए महाभैरव हमें दुःखों से बचावें। जो शुभ्रवर्णवाले हैं, जिनके १८ हाथ, ५ मुख, ३ आँखें हैं, जिनके ज्ञान में मुद्राशास्त्र तथा इन्द्रशास्त्र (इन्द्रजाल) निहित है तथा जो विष, अमृत, शङ्ख, औषधि एवं धनुष को धारण किये हुये हैं; और जो अपने हाथों में त्रिशूल, खट्वाङ्ग, बाण, डमरु, खड्ग, गदा, अग्नि, आरोग्यमाला तथा अभयदान की मुद्रा धारण किये हुये हैं वे महाभैरव समस्त सिद्धियों के लिये जगत में विख्यात हैं। उनकी सदा जय हो।

क्वाकाशःक्वसमीरणः क्वदहनःक्वापश्चविश्वम्भरा क्वब्रह्माक्वजनार्दनःक्वतरणिःक्वेन्दुश्चदेवासुराः । कल्पान्तेभदिगीशवत्प्रमुदितःश्रीसिद्ध-योगीश्वरः क्रीडानाटकनायको विजयतेदेवोमहाभैरवः ॥ ३४ ॥

कहाँ आकाश ! कहाँ वायु ! कहाँ अग्नि ! कहाँ जल ! कहाँ पृथिवी ! कहाँ ब्रह्मा ! कहाँ जनार्दन ! कहाँ सूर्य ! कहाँ चन्द्रमा ! कहाँ देव और असुर ! महाप्रलय के दिग्गजों के समान प्रमुदित श्रीसिद्धयोगीश्वर क्रीडा-नाटक-नायक महाभैरव देव सर्वत्र विजयी हो रहे हैं।

लिखित्वापरयाभक्त्याभैरवस्तोत्रमुत्तमम्। अष्टानांब्राह्मणानांचदेयं-पुस्तकमादरात् ॥३५॥ यान् यान्समीहतेकामांस्तांस्तान्प्राप्नोत्यसंशयम्। इहलोकेसुखंप्राप्यपुस्तकस्यप्रसादतः ॥ ३६ ॥ शिवलोकमनुप्राप्यशिवेन-सहमोदते। लिखित्वाभूर्जपत्रेतुत्रिलोहपरिवेष्ठितम् ॥ ३७ ॥ सौम्येचवस्तु-वसनेकर्पटेचसुशोभने। करेबाहौगलेकट्यांमूर्ध्निनत्रिलोहगोपितम्। यस्तु-धारयतेस्तोत्रं सर्वत्रजयप्राप्नुयात् ॥३८॥ इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे देवीश्वर-सम्वादे आपदुद्धारकश्रीवटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

परमभक्तिपूर्वक उत्तम भैरव स्तोत्र को लिख कर पुस्तक स्वरूप में आदर से आठ ब्राह्मणों को देना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य जो-जो कामनायें करता है उन सबको निःसंशय प्राप्त करता है। पुस्तक के प्रसाद से मनुष्य इस लोक में सुख प्राप्त कर शिवलोक को गमन करता है और वहाँ वह शिवजी के साथ आनन्द करता है। भोजपत्र पर इस स्तोत्र को लिखकर तीन धातुओं की ताबीज में रखकर कोमल वस्तु या उत्तम वस्त्र में लपेट कर कलाई में, बाँह में, कमर में, या सिर में जो धारण करता है वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। इति श्रीरुद्रयामल तन्त्र में देवी-ईश्वर के संवाद में आपदुद्धारक श्रीवटुकभैरव अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र समाप्त।

अथ वटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् (कालसंकर्षणतन्त्रे)।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता। ह्रीं बीजम्। भैरवीवल्लभः शक्तिः। नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकम्। समस्तशत्रु-दमने समस्तापन्निवारणे सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टु-प्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः। हृदये ॥३॥ ह्रीं बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ४ ॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ नीलवर्णो दण्डपाणेरिति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

अथ मूलमन्त्रः।

ॐ ह्रीं वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं

वटुकाय स्वाहा। इति मूलमन्त्र।

अथ ध्यानम्। नीलजीमूतसङ्काशो जटिलो रक्तलोचनः। दंष्ट्रा-करालवदनः सर्पयज्ञोपवीतिवान् ॥ १ ॥ दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्रग्वि-भूषितः। हस्तन्यस्तकिरीटीकोभस्मभूषितविग्रहः ॥ २ ॥ नागराजकटी-सूत्रो बालभूर्तिर्दिगम्बरः। मञ्जुसिञ्जानमञ्जीरपादकम्पितभूतलः ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः। योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डल-वेष्टितः ॥ ४ ॥ अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः। भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षुभ्रमणतत्परः। एवंभूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वरः ॥ ५ ॥

इस प्रकार ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करे।

ॐ ह्रीं वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः। भैरवीवल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः ॥ ६ ॥ वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसम्भवः। कपाललोचनः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ॥ ७ ॥ आपदुद्धारणो धीरो हरिणाङ्कशिरोमणिः। दंष्ट्राकरालो दष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिबर्हणः ॥ ८ ॥ सर्पहारः सर्वशिरः सर्पकुण्डलमण्डितः। कपाली करुणापूर्णः कपालैक-शिरोमणिः ॥ ९ ॥ श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोट्टहासवान्। वाग्मी-वामव्रतोवाङ्मीवामदेवप्रियङ्करः ॥ १० ॥ वनेचरो रात्रिचरो वसुदो वायुवेगवान्। योगी योगव्रतधरो योगिनीवल्लभो युवा ॥ ११ ॥ वीर-भद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवन्दितः। भूताध्यक्षो भूतिधरो भूतभीति-निवारणः ॥ १२ ॥ कलङ्कहीनः कङ्काली क्रूरः कुक्कुरवाहनः। गाढो गहनगम्भीरो गणनाथसहोदरः ॥ १३ ॥ देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान् दीप्तिलोचनः। महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः ॥१४॥ भद्रकाली-पतिर्भद्रो भद्रदोभद्रवाहनः। पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः ॥ १५ ॥ चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चण्डीहृदयनन्दनः। दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः ॥ १६ ॥ निरातङ्को निर्विकल्पःकल्पःकल्पान्त-भैरवः। मदताण्डवकृन्मत्तो महादेवप्रियो महान् ॥ १७ ॥ खट्वाङ्गपाणिः खातीतः खरशूलः खरान्तकृत्। ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ॥ १८ ॥ दिक्चरो भूचरो भूष्णुः खेचरो खेलनप्रियः। सर्वदुष्टप्रहर्ता च सर्वरोगनिषूदनः ॥ १९ ॥ सर्वकामप्रदः सर्वः सर्वपापनिकृन्तनः।

इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ॥ २० ॥ आपदुद्धारजनकं बटुकस्य प्रकीर्तितम्। एतच्छृणुयान्नित्यं लिखेद्वा स्थापयेद्गृहे ॥ २१ ॥ धारयेद्वा गले बाहौ तस्य सर्वा समृद्धयः। न तस्य दुरितं किञ्चिन्न

चोरनृपजं भयम् ॥ २२ ॥ न चापस्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि । न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ॥ २३ ॥ मासमेकं त्रिसन्ध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः । सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥२४॥ मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान्भवेत् । अञ्जनं गुटिकाखड्गं धातुवादरसायनम् ॥ २५ ॥ सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् । कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मन्त्रं चैव समीहितम् ॥ २६ ॥ वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः । एतत्ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥ २७ ॥ कालसङ्कर्षणीतन्त्रे कल्मीकल्मषनाशनम् । नरनारीनृपाणं च वशीकरणमम्बिके ॥ २८ ॥

इति कालसंकर्षणतन्त्रोक्तवटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।
इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे वटुकभैरवतन्त्रे
दशमस्तरङ्गः ॥ १० ॥

यह अष्टोत्तर शतनाम सर्वसमृद्धियों का दाता और आपत्तियों से उद्धार करनेवाला कहा गया है । जो इसे नित्य सुनता, लिखता, अपने घर में रखता अथवा अपने गले या बाँह में धारण करता है उसे समस्त समृद्धियाँ प्राप्त होती हैं । उसे कोई कष्ट नहीं होता । उसे चोर का और राजा का भय भी नहीं होता; और डाकिनी-शाकिनी से भी भय नहीं होता । कूष्माण्ड तथा ग्रहादि से भी उसे भय नहीं प्राप्त हो सकता । ज्वर से ऐसे साधक की अपमृत्यु नहीं हो सकती । जो मनुष्य एक मास तक पवित्र होकर तीनों सन्ध्याओं में इसका पाठ करता है वह समस्त दरिद्रताओं से मुक्त होकर भूमि के अन्दर गड़े खजानों को भी देखता है । दो मास तक इसका पाठ करनेवाला पादुकासिद्धि प्राप्त करता है । अञ्जन, गुटिका, खड्ग, धातुवाद (सोना-चाँदी बनाना), रसायनविद्या, कवित्वशक्ति, वेताल को वाहन बनाना, बिलसाधन, कार्यसिद्धि, महासिद्धि तथा इष्ट मन्त्र की सिद्धि इत्यादि सिद्धियों को साधकोत्तम, एक वर्ष तक पाठ करके प्राप्त करता है । हे देवि, हे अम्बिके ! मैंने यह परम गुह्य से भी गुह्यतर, अत्यन्त गोपनीय, पापियों के पाप का नाश करनेवाला, नर-नारियों का वशीकरण करनेवाला कालसंकर्षण तन्त्रोक्त स्तोत्र तुम्हें बताया है । इति कालसंकर्षण तन्त्रोक्त वटुकभैरव अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र समाप्त ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवता खण्ड में वटुकभैरव
तन्त्ररूपी दशम तरङ्ग समाप्त ।। १० ।।

एकादश तरंग

मिश्र तरंग

सबसे पहले क्षेत्रपालमन्त्र का प्रयोग बताया जा रहा है । इसका नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य क्षेत्रपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः । क्षेत्रपालो देवता । क्षं बीजम् । लः शक्तिः । सर्वेष्टसिद्ध्ये जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ।। १ ।। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ।। २ ।। ॐ क्षेत्रपालदेवतायै नमः हृदि ।। ३ ।। ॐ क्षं बीजाय नमः गुह्ये ।। ४ ।। ॐ लः शक्तये नमः पादयोः ।। ५ ।। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।। ६ ।। इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ क्षां अगुष्ठाभ्यां नमः ।।१।। ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः।।२।। ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां नमः ।। ३ ।। ॐ क्षैं अनामिकाभ्यां नमः ।। ४ ।। ॐ क्षौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।। ५ ।। ॐ क्षः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।। ६ ।। इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ क्षां हृदयाय नमः ।।१।। ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा ।। २ ।। ॐ क्षूं शिखायै वषट् ।। ३ ।। ॐ क्षैं कवचाय हुम् ।। ४ ।। ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ क्षः अस्त्राय फट् ।।६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् । ॐ नीलाञ्जनाद्रिनिभमूर्द्धपिशङ्गकेशं वृत्तोग्रलोचनमुदान्तगदा कपालम् । आशाम्बरं भुजङ्गभूषणमुग्रदंष्ट्रं क्षेत्रेशमद्भुततनुं प्रणमामि देवम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादि परत्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ।' इति सम्पूजयेत् । अस्य पीठशक्त्यादेरभावः । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय

घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारा जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्यावरण पूजां कुर्यात् तद्यथा ।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मंण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करे । इसकी पीठशक्तियों आदि का अभाव है । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर पीठ के बीच संस्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके, पुनः ध्यान करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजन करके इस प्रकार आवरण पूजा करे (क्षेत्रपाल पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३०) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में :

ॐ क्षां हृदयाय नमः[१] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ क्षीं शिरसे स्वाहा[२] । शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ क्षूं शिखायै वषट्[३] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्षैं कवचाय[४] हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ क्षः अस्त्राय फट्[६] । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताःसन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ अग्निलाख्याय नमः[७] । अग्निलाख्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अग्निकेशाय नमः[८] । अग्निकेशश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ करालाय नमः[९] । करालश्रीपा० ॥३॥ ॐ घण्टारवाय नमः[१०] । घण्टावरश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ महाकोपाय नमः[११] ।

१ अग्निलाख्यमग्निकेशं करालं तदनन्तरम् । घण्टारवमहाकोपं पिशिताशनसंज्ञकम् । पिङ्गलाक्षमूर्ध्वकेशं पत्रेषु परितो यजेत् ।

महाकोपश्रीपा० ॥५॥ ॐ पिशिताशनाय नमः[१२] । पिशिताशनश्रीपा० ॥६॥ ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः[१३] । पिङ्गलाक्षश्रीपा० ॥७॥ ॐ ऊर्ध्वकेशाय नमः[१४] । ऊर्ध्वकेशश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके बलि दे ।

'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इति मन्त्रेण माषभक्तबलिं दत्वार्धरात्रे पुनर्बलिं दद्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पण-मार्जनब्राह्मणभोजनं कुर्यात् । एवं कृते क्षेत्रपालः प्रसन्नो भवति । तथा च 'लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं जुहुयात्तद्दशांशतः । चरुणा घृतसिक्तेन ततः क्षेत्रे समर्चयेत् ॥ १ ॥ बलिनानेन सन्तुष्टः क्षेत्रपालः प्रयच्छति । कान्ति-मेधाबलारोग्यतेजः पुष्टियशःश्रियः । इति क्षेत्रपालनवाक्षरमन्त्रप्रयोगः।१।

'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः' इस मन्त्र से उड़द और भात की बलि देकर आधी रात को पुनः बलि देवे । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । फिर तत्तद्दशांश से क्रमशः होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे । ऐसा करने पर क्षेत्रपाल प्रसन्न होते हैं । कहा भी गया है कि 'एक लाख मन्त्र का जप करे और उसका दशांश चरु और घी से होम करे । इसके बाद क्षेत्र में पूजा करे । इस बलि से सन्तुष्ट क्षेत्रपाल कान्ति, मेधा, बल, आरोग्य, तेज, पुष्टि, यश और श्री देता है ।' इति क्षेत्रपाल नवाक्षर मन्त्र प्रयोग समाप्त ।

अथ वरुणमन्त्रप्रयोगः ।

४३ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ध्रुवासुत्वासक्षितिषु क्षियंतोव्य स्मत्याशु वरुणो मुमोच । अवोवन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयंपातस्वस्तिभिःसदानःस्व । इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो वरुणमन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य वरुणमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । त्रिष्टुप्छन्दः । वरुण देवता । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ वरुणदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ध्रुवासुत्वासक्षितिषु इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ क्षियंतोव्य स्मत्याशु इति तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वरुणो मुमोच इति मध्यमाभ्यां

नमः ॥ ३ ॥ अवोवन्वाना अदिते इति अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ रुपस्था-द्यूयंपात इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वतिभिः सदानः स्वः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ध्रुवासुत्वासक्षितिषु हृदयाय नमः ॥ १ ॥ क्षियन्तो व्यस्मत्याशु शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वरुणो मुमोच शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ अवोवन्वाना अदितेः कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ रुपस्थाद्यूयंपात नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वस्तिभिः सदानःस्वःअस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादि-षडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ध्रुं नमः । दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ १ ॥ ॐ वां नमः । दक्षपादांगुलिमूले ॥ २ ॥ ॐ सुं नमः । दक्षगुल्फे ॥ ३ ॥ ॐ त्वां नमः । दक्षजानुनि ॥४॥ ॐ सं नमः । दक्षपादमूले ॥५॥ ॐ क्षि नमः । वामपादां-गुल्यग्रे ॥६॥ ॐ ति नमः । वामपादांगुलिमूले ॥ ७ ॥ ॐ षुं नमः । वाम-गुल्फे ॥ ८ ॥ ॐ क्षि नमः । वामजानुनि ॥ ९ ॥ ॐ यं नमः वामपादमूले ॥ १० ॥ ॐ तों नमः । गुदे ॥ ११ ॥ ॐ व्यं नमः । लिङ्गे ॥ १२ ॥ ॐ स्मं नमः । आधारे ॥ १३ ॥ ॐ त्यां नमः । नाभौ ॥ १४ ॥ ॐ शुं नमः । दक्षिणकुक्षौ ॥ १५ ॥ ॐ वं नमः । वामकुक्षौ ॥ १६ ॥ ॐ रुं नमः । पृष्ठे ॥ १७ ॥ ॐ णों नमः । हृदि ॥ १८ ॥ ॐ मुं नमः । दक्षिणस्तने ॥ १९ ॥ ॐ मों नमः । वामस्तने ॥ २० ॥ ॐ चं नमः । गले ॥ २१ ॥ ॐ अं नमः । दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे ॥ २२ ॥ ॐ वों नमः । दक्षिणहस्तांगुलिमूले ॥ २३ ॥ ॐ वं नमः । दक्षिणमणिबन्धे ॥ २४ ॥ ॐ न्वां नमः । दक्षिणकूर्परे ॥ २५ ॥ ॐ नां नमः । दक्षबाहुमूले ॥ २६ ॥ ॐ अं नमः । वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ २७ ॥ ॐ दिं नमः । वामहस्तांगुलिमूले ॥ २८ ॥ ॐ तें नमः । वाममणिबन्धे ॥२९॥ ॐ रुं नमः । वामकूर्परे ॥ ३० ॥ ॐ पं नमः । वामबाहुमूले ॥३१॥ ॐ स्थां नमः । वक्त्रे ॥ ३२ ॥ ॐ द्यूं नमः । दक्षकपोले ॥ ३३ ॥ ॐ यं नमः । वामकपोले ॥ ३४ ॥ ॐ पां नमः । दक्षिणनासापुटे ॥ ३५ ॥ ॐ तं नमः । वामनासापुटे ॥ ३६ ॥ ॐ स्वं नमः । दक्षिणनेत्रे ॥ ३७ ॥ ॐ स्ति नमः । वामनेत्रे ॥ ३८ ॥ ॐ भि नमः । दक्षिणकर्णे ॥ ३९ ॥ ॐ सं नमः । वामकर्णे ॥ ४० ॥ ॐ दां नमः । भ्रूमध्ये ॥ ४१ ॥ ॐ नं नमः । मस्तके ॥ ४२ ॥ ॐ स्वं नमः । शिरसि ॥ ४३ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । ॐ चन्द्रप्रभं पङ्कजसन्निषण्णं पाशांकुशाभीतिवरं दधानम् । मुक्ताविभूषाञ्चितसर्वगात्रं ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं विभूत्यै ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतो-भद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादि-परतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूजयेत् । अस्य पीठशक्त्यादेर-भावः । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृते-नाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्यात् तद्यथा ।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करे । इसके पीठशक्तियों आदि का अभाव है । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राण प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा कर देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (वरुण पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३१) ।

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में:

ॐ हृदयाय नमः[1] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ शिरसे स्वाहा[2] । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शिखायै वषट्[3] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कवचाय[4] हुम् । कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्[5] । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अस्त्राय फट्[6] । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ शेषाय नमः[7]। शेषश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वासुकये नमः[8]। वासुकिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तक्षकाय नमः[9]। तक्षकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः[10]। कर्कोटकश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्माय नमः[11]। पद्मश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महापद्माय[12] नमः। महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शङ्खपालाय[13] नमः। शङ्खपालश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कुलिकाय[14] नमः। कुलिकश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके तथा धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च 'लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं पायसेन दशांशतः। सर्पिःसिक्तेन जुहुयान्मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये ॥ १ ॥ ऋणमुक्त्यै जपेन्मन्त्रं प्रत्यहं साष्टकं शतम्। जपेनानेन लभते महतीमव्ययां श्रियम् ॥ २ ॥ सितेक्षुशकलैर्मन्त्री जुहुयाद्घृतसंप्लुतैः। चतुर्दिनं दशशतमृणमुक्त्यै महाश्रिये ॥ ३ ॥ समिद्भिर्वेतसोत्थाभिः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम्। जुहुयाद्वृष्टिसंसिद्ध्यै मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः ॥ ४ ॥ अनेन विधिना मन्त्री सूर्ये शतभिषं गते। चतुःशतं घृतयुतं पायसं जुहुयाद्वशी ॥ ५ ॥ ऋणनाशाय सम्पत्त्यै वश्यारोग्याभिवृद्धये। भृगुवारे कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा ॥ ६ ॥ महतीं सम्पदं कुर्यान्नाशयेत्सकलापदः। शालिभिर्घृतसंसिक्तैः सरिदन्तरितः सुधीः ॥ ७ ॥ त्र्यहं चतुःशतं हुत्वा स्तम्भयेत्परसैन्यकम्। सायं प्रत्यङ्मुखो वह्निमाराध्य प्रजपेन्मनुम् ॥ ८ ॥ चतुःशतं विमुच्येत मन्त्री सर्वैरुपद्रवैः। मन्त्री प्रत्यङ्मुखो भूत्वा तर्पयेद्विमलैर्जलैः ॥ ९ ॥ सर्वोपद्रवनाशाय समस्ताभ्युदयाप्तये। बहुना किमिहोक्तेन मन्त्रेणानेन साधकः। साधयेत्सकलान्कामाञ्जपहोमादितत्परः ॥ १० ॥ इति वरुणत्रिचत्वारिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये। जप के दशांश से घी से सिक्त खीर का मन्त्रसिद्धि के लिये होम करे। ऋणमुक्ति के लिये प्रतिदिन एक सौ आठ मन्त्र का जप करना चाहिये। इसके जप से मनुष्य महती और अक्षत लक्ष्मी को

प्राप्त करता है। घी से परिप्लुत चीनी तथा गन्ने के टुकड़ों से ऋणमुक्ति के लिये तथा महाश्री की प्राप्ति के लिये साधक चार दिनों तक एक हजार होम करे। मन्त्रवित् साधक जितेन्द्रिय होकर वृष्टि के लिये दूध से सिक्त बेंत की समिधाओं से तीन दिन तक होम करे। इस विधि से ऋणनाश के लिये, सम्पत्ति प्राप्ति के लिये, वशीकरण के लिये तथा स्वास्थ्यवृद्धि के लिये घी से युक्त खीर की सूर्य के शतभिषा नक्षत्र में जाने पर चार सौ आहुतियाँ देनी चाहिये। शुक्रवार को घी और खीर से होम करने से सकल आपदाओं का नाश होकर महती समृद्धि प्राप्त होती है। सुधी साधक नदी के मध्य घी से सिक्त शालि चावलों से तीन दिन तक चार सौ आहुतियाँ देकर शत्रु की सेना को स्तम्भित कर देता है। सायंकाल पश्चिमाभिमुख होकर साधक अग्नि देवता की आराधना करके मन्त्र का चार सौ जप करे तो वह सभी उपद्रवों से मुक्त हो जाता है। समस्त उपद्रवों के नाश के लिये तथा समस्त अभ्युदय की प्राप्ति के लिये साधक को पश्चिमाभिमुख होकर विमल जल से तर्पण करना चाहिये। अधिक कहने से क्या लाभ? जप और होमादि में तत्पर होकर साधक समस्त कामनाओं को सिद्ध कर सकता है। इति वरुण का ४३ अक्षर मन्त्र प्रयोग समाप्त।

अथ कामदेवबीजमन्त्रप्रयोगः।

एकाक्षर बीज इस प्रकार है :

'क्लीं'[1] इत्येकाक्षरो बीजमन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : ॐ कामबीजमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्री छन्दः। सर्वसम्मोहनमकरध्वजो देवता। सर्वसम्मोहने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सम्मोहनऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ सर्वसम्मोहनमकरध्वजदेवतायै नमः। हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

---

१. अन्यस्वरूपी यथा : 'क्लीं कामदेवाय नमः' यह अष्टाक्षर मन्त्र है। अन्य सब कुछ पूर्ववत् है।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ क्लां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्लैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ क्लः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादि-षडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मानध्वजं चारुकृताङ्ग-रागम् । कराम्बुजैरंकुशमिक्षुचापपुष्पास्त्रपाशौ दधतं भजामि ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे ।

पूर्वादिक्रम से : ॐ मोहिन्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षोभिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ त्रास्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ स्तम्भिन्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कर्षिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ द्राविण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ आह्लादिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ क्लिन्नायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डाल-कर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ क्लीं मकरध्वजाय सर्वसम्मोहनशक्ताय पद्मासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके और प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान कर आवाहनादि से लेकर पुष्प-दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि मे काम परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे (कामदेव पूजनयन्त्र देखिये चित्र ३२) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ क्लां हृदयाय नमः[१] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा[२] । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ क्लूं शिखायै वषट्[३] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ क्लैं कवचाय[४] हुम् । कवचश्रीपा० ॥४॥

ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ क्लः अस्त्राय फट्[६] । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

फिर उसके आगे :

ॐ द्रां शोषणाय नमः[७] । शोषणश्रीपा० ॥१॥ ॐ द्रीं मोहनाय नमः[८] । मोहनश्रीपा० ॥२॥ ॐ सन्दीपनाख्यक्रीडाय नमः[९] । सन्दीपनाख्यक्रीडश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ब्लूं तापनाय नमः[१०] । तापनश्रीपा० ॥४॥ ॐ मादनाय नमः[११] । मादनश्रीपा० ॥ ५ ॥

इससे पञ्च बाणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ।२।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ कामाय नमः[१२] । कामश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भस्मशरीराय नमः[१३] । भस्मशरीरश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ अनङ्गाय नमः[१४] । अनङ्गश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ मन्मथाय नमः[१५] । मन्मथश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वसन्तसखाय नमः[१६] । वसन्त-सखाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ स्मराय नमः[१७] । स्मरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ इक्षुधनुर्ध-राय नमः[१८] । इक्षुधनुर्धरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ पुष्पबाणाय नमः[१९] । पुष्पबाण-श्रीपा० ॥ ८ ॥

इन आठ नामों से पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में वामावर्त क्रम से :

ॐ अनङ्गरूपायै नमः[२०] । अनङ्गरूपाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ अनङ्गमदनायै नमः[२१] । अनङ्गमदनाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ अनङ्गमन्मथायै नमः[२२] । अनङ्ग-मन्मथाश्रीपा० ॥३॥ ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः[२३] । अनङ्गकुसुमाश्रीपा० ४॥ ॐ अनङ्गकुसुमातुरायै नमः[२४] । अनङ्गकुसुमातुराश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ अनङ्ग-शिशिरायै नमः[२५] । अनङ्गशिशिराश्रीपा० ॥६॥ ॐ अनङ्गमेखलायै नमः[२६] । अनङ्गमेखलाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अनङ्गदीपकायै नमः[२७] । अनङ्गदीपका-श्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण ।४।

इसके बाद षोडशदलों में प्राची क्रम से वामावर्त :

ॐ युवत्यै नमः[२८]। युवतीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ विप्रलम्भायै नमः[२९]। विप्रलम्भाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः[३०]। ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ सुभ्रुवे नमः[३१]। सुभ्रूश्रीपा० ॥४॥ ॐ मदद्रवायै नमः[३२]। मदद्रवाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ सुरतायै नमः[३३]। सुरताश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ वारुण्यै नमः[३४]। वारुणीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ लोलायै नमः[३५]। लोलाश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ कान्त्यै नमः[३६]। कान्तिश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ सौदामिन्यै नमः[३७]। सौदामिनीश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ कामच्छत्रायै नमः[३८]। कामच्छत्राश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ चन्द्रलेखायै नमः[३९]। चन्द्रलेखाश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ शुक्त्यै नमः[४०]। शुक्तिश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ मदनायै नमः[४१]। मदनाश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ योन्यै नमः[४२]। योनिश्रीपा० ॥१५॥ ॐ मायावत्यै नमः[४३]। मायावतीश्रीपा० ॥ १६ ॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इसके बाद षोडशदलाग्रों में :

ॐ शोकाय नमः[४४]। शोकश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ मोहाय नमः[४५]। मोहश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विलासाय नमः[४६]। विलासश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विभ्रमाय नमः[४७]। विभ्रमश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मदनातुराय नमः[४८]। मदनातुरश्रीपा० ॥५॥ ॐ अपजयाय नमः[४९]। अपजयश्रीपा० ॥६॥ ॐ युवाकामाय नमः[५०]। युवाकामश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चूतपुष्पाय नमः[५१]। चूतपुष्पश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ रतिप्रियाय नमः[५२]। रतिप्रियश्रीपा० ॥९॥ ॐ ग्रीष्मान्तकराय नमः[५३]। ग्रीष्मान्तकरश्रीपा० ॥१०॥ ॐ ऊर्ज्योन्याय नमः[५४]। ऊर्ज्योन्यश्रीपा० ॥११॥ ॐ हेमन्ते शिशिरोन्मदाय नमः[५५]। हेमन्ते शिशिरोन्मदश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ इक्षुचापधराय नमः[५६]। इक्षुचापधरश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ पुष्पबाणहस्ताय नमः[५७]। पुष्पबाणहस्तश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ रक्तभूषाय नमः[५८]। रक्तभूषश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ वनितासक्तमानसाय नमः[५९]। वनितासक्तमानसश्रीपा० ॥ १६ ॥

इससे पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

इसके बाद अष्टदलों में प्राच्यादि क्रम से चारों दिशाओं में :

ॐ हावाय नमः[६०]। हावश्रीपा० ॥१॥ ॐ भावाय नमः[६१]। भावश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कटाक्षाय नमः[६२]। कटाक्षश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ भ्रूविलासाय नमः[६३]। भ्रूविलासश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेयादि चारों कोणों में : ॐ माधव्यै

नमः[६४]। माधवीश्रीपा० ॥५॥ ॐ मालत्यै नमः[६५]। मालतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ धरिणाख्यै नमः[६६]। धरिणाखीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ मदोत्कटायै नमः[६७]। मदोत्कटाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति सप्तमावरण ॥ ७ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके पुष्पाञ्जल्यष्टक देवे। इसमें मन्त्र यह है :

'ॐ नमोस्तु पुष्पबाणाय जगदानन्दकारिणे। मन्मथाय जगन्नेत्ररतिप्रीतिप्रदायिने ॥ १ ॥'

इससे पुष्पाञ्जल्यष्टक देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

'ॐ देवदेव जगन्नाथ वाञ्छितार्थप्रदायक। कृत्स्नान्पूरय मे त्वर्थान्कामान्कामेश्वरीप्रिय ॥ १ ॥'

इससे प्रार्थना करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : 'लक्षत्रयं जपेन्मन्त्रं मधुरत्रयसंयुतैः। पुष्पैः किंशुकजैः फुल्लैर्हुत्वा तत्तद्दशांशतः ॥ १ ॥ इत्थं यो भजते देवं सुगन्धिकुसुमादिभिः। स भवेल्लब्धसौभाग्यो लक्ष्म्या जितधनेश्वरः ॥२॥ अशोकपुष्पैर्दध्यक्तैर्जुहुयाद्दिवसत्रयम्। अष्टोत्तरसहस्रं यः स भवेज्जगतां प्रियः ॥ ३ ॥ गव्येनाज्येन जुहुयान्मन्त्रेणाष्टोत्तरं शतम्। साधकेन्द्रस-सम्पातमर्चिते हव्यवाहने ॥ ४ ॥ सम्पाताज्येन बनिता भोजयेदात्मनः पतिम्। अनया यद्यदादिष्टं तत्तत्स कुरुते सदा ॥५॥ कन्यार्थी जुहुयाल्लाजैर्दध्यक्तैर्मण्डलान्तरे। कन्यामिष्टामवाप्नोति सापि तत्पतिमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ कथितं पुष्पबाणस्य साङ्गोपाङ्गसमर्चनम्। सौभाग्यकान्तिविभवदारापुत्रसमृद्धिदम् ॥ ७ ॥'

इसका पुरश्चरण तीन लाख जप है। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'तीन लाख मन्त्र का जप करे और मधुर त्रय से युक्त पलाश के फूलों से जप का दशांश होम करे। जो इस प्रकार सुगन्धित पुष्पादि से कामदेव का भजन करता है उसे सौभाग्य प्राप्त होता है तथा लक्ष्मी से वह कुबेर से भी आगे

बढ़ जाता है। जो दही से सिक्त अशोक के पुष्पों से तीन दिन तक होम करता है तथा १००८ मन्त्र का जप करता है वह जगत्प्रिय हो जाता है। साधकेन्द्र साथ ही साथ पूजित अग्नि में गाय के घी से १०८ मन्त्र से होम करे। स्त्री अपने पति को घी के साथ भोजन कराये। इसके द्वारा जो-जो आदेश दिया जाता है वह सदा उस सब के अनुसार कार्य करता है। कन्या चाहनेवाले को चाहिये कि वह दही से मिश्रित धान के लावा से मण्डल के भीतर होम करे। इससे वह अभीष्ट कन्या को प्राप्त करेगा। कन्या भी यदि इसी प्रकार होम करे तो वह अभीष्ट पति प्राप्त करती है। कामदेव का यह साङ्गोपाङ्ग पूजन कहा गया है। यह सौभाग्य, कान्ति, विभव, स्त्री, पुत्र तथा समृद्धिदायक है।'

कामगायत्री मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि। तन्नोनङ्गः प्रचोदयात्।'

अष्टोत्तरशतं कामगायत्र्या मन्त्रवित्तमः। गायत्र्येषा बुधैरुक्ता जप्त्वा जनविमोहिनी ॥ ८ ॥ इति कामदेवबीजमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रवित् साधक विद्वानों द्वारा कथित इस काम गायत्री मन्त्र का १०८ जप करे तो वह जगत को मोहित करनेवाला हो जायेगा। इति कामदेव बीजमन्त्र प्रयोग।

अथ कुबेरमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में ३५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धि मे देहि दापय स्वाहा' इति पञ्चत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य कुबेरमन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः। बृहतीछन्दः। **शिवमित्रधनेश्वरो देवता। ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास : ॐ विश्रवाऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ बृहतीछन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ शिवमित्रधनेश्वरदेवतायै नमः। हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ यक्षाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धि मे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास : ॐ यक्षायांगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय तर्जनीभ्यां

नमः ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ धनधान्यसमृद्धि मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ देहि दापय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। मनुजवाह्यविमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्। शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुन्दिलम् ॥१॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में धर्मादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ धर्मादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करे। इसकी शक्ति आदि का अभाव है।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (कुबेर पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३३) : पुष्पाञ्जलि लेकर :

'ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां देहि धनद परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे।

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ यक्षाय हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय[४] हुम्। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धि मे नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ।६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तिलाज्येन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। सिद्धे मनौ प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्ठ सिद्धये ॥ १ ॥ शिवालये जपेन्मन्त्रमयुतं धनवृद्धये। बिल्वमूलोपविष्टेन जप्तो लक्षं धनर्द्धिदः ॥ २ ॥ इति पञ्चत्रिंशदक्षरकुबेरमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तिल तथा घी से दशांश हवन करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि साधक एक लाख जप करे। तिलों से जप का दशांश होम करे। इसके बाद मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सिद्धि के लिये प्रयोग करे। धनवृद्धि के लिये शिवालय में मन्त्र का दश हजार जप करे। बेल के नीचे बैठ कर एक लाख जप करने से धन प्राप्त होता है। इति ३५ अक्षर कुबेर मन्त्र प्रयोग।

अथ षोडशाक्षरकुबेरमन्त्रप्रयोगः।

१६ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है:

'ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।' इति षोडशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

षडङ्गन्यास: ॐ श्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ह्रीं क्लीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ श्रीं क्लीं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ वित्तेश्वराय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गन्यासं कुर्यात्।

ऋष्यादि न्यास, ध्यान और पूजा आदि सब पूर्ववत् है।

तथा च षोडशाक्षरमन्त्रोयं सर्वदारिद्र्यनाशनः। ध्यानार्चनादिकं सर्वमस्य पूर्ववदाचरेत् ॥ १ ॥ इति षोडशाक्षरकुबेरमन्त्रप्रयोगः।

कहा भी गया है कि यह १६ अक्षरों का मन्त्र सब दारिद्र्य का नाशक है। इसका ध्यान तथा पूजा आदि सब पूर्ववत् करे। इति षोडशाक्षर कुबेर मन्त्र प्रयोग।

अथ चन्द्रमोमन्त्रप्रयोगः।

अब मैं सर्वसमृद्धिदायक चन्द्रमा का मन्त्र कहूंगा। शारदातिलक में षडक्षर मन्त्र इस प्रकार है:

'सौं सोमाय नमः' इति षडक्षरमन्त्रः।

विनियोग: अस्य सोममन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। सोमो देवता। सौं बीजम्। नमः शक्तिः। मम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ भृगु ऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिश्छन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ सोमदेवतायै नमः। हृदि ॥ ३ ॥ सौं बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ४ ॥ नमः शक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास: ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ सां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ सैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ सौं नेत्रत्रयाय औषट् ॥ ५ ॥ ॐ सः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके इस प्रकार ध्यान करे।

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिम्बाननं मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरं च दधतं नीलालकोद्भासितं स्वस्यांकस्थभृगुदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रसोमतोभद्रमण्डले वा मं मण्डूकादिसोमान्तपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मण्डूकादिसोमान्तपीठदेवताभ्यो नमः।' इति पीठदेवताः सम्पूज्य तन्मध्ये 'ॐ सौं सोमाय रोहिणीपतये नमः' इति सम्पूज्य रौप्यादिनिर्मितं यन्त्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं 'सौं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मन्त्रेणपुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवाज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्र या सोमतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि सोमान्त

पीठदेवताओं की स्थापना करके : 'ॐ मं मण्डूकादि सोमान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं का पूजन करके उनके बीच 'ॐ सौं सोमाय रोहिणीपतये नमः' इससे पूजा करके चाँदी आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक 'सौं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके, प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करे। फिर देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। इसमें क्रम यह है (चन्द्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३४) :

षट्कोण केसरों में :

अग्निकोणे। ॐ सां हृदयाय नमः[१] ॥ १ ॥ निर्ऋतिकोणे। ॐ सीं शिरसे स्वाहा[२] ॥ २ ॥ वायव्ये। ॐ सूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ऐशान्ये। ॐ सैं कवचाय[४] हुम् ॥ ४ ॥ पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ॥ ५ ॥ देवतापश्चिमे। ॐ सः अस्त्राय फट्[६] ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इतिप्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से वामावर्त :

ॐ रोहिण्यै नमः[७]। रोहिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ कृत्तिकायै नमः[८]। कृत्तिकाश्रीपा० ॥२॥ ॐ रेवत्यै नमः[९]। रेवतीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ भरण्यै नमः[१०]। भरणीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रात्र्यै नमः[११]। रात्रिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ आर्द्रायै नमः[१२]। आर्द्राश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ज्योत्स्नायै नमः[१३]। ज्योत्स्नाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कलायै नमः[१४]। कलाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ आं आदित्याय नमः[१५]। आदित्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भौं भौमाय नमः[१६]। भौमश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ बुं बुधाय नमः[१७]। बुधश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः[१८]। शनैश्चरश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः[१९]। बृहस्पतिश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ रां राहवे नमः[२०]। राहुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शुं शुक्राय नमः[२१]। शुक्रश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कें केतवे नमः[२२]। केतुश्रीपा० ॥८॥

इससे आठों ग्रहों की पूजा करे और पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण ।३

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[२३]। इन्द्रश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः[२४]। अग्निश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः[२५]। यमश्रीपा० ॥३॥ ॐ क्षं नैर्ऋतये नमः[२६]। निर्ऋतिश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः[२७]। वरुणश्रीपा० ॥५॥ ॐ यं वायवे नमः[२८]। वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः[२९]। कुबेरश्रीपा० ॥७॥ ॐ हं ईशानाय नमः[३०]। ईशानश्रीपा० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३१]। ब्रह्मश्रीपा० ॥९॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३२]। अनन्तश्रीपा० ॥ १० ॥

इससे दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ।४।

फिर उसके बाहर :

ॐ वं वज्राय नमः[३३] ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः[३४] ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः[३५] ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः[३६] ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः[३७] ॥ ५ ॥ ॐ अं अङ्कुशाय नमः[३८] ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः[३९] ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[४०] ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः[४१] ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः[४२] ॥ १० ॥

इससे अस्त्रों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजन करके जप करे :

अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः। षट्सहस्रहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पण-मार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च 'रसलक्षं जपेन्मन्त्रं साधको विजितेन्द्रियः। तत्सहस्रं प्रजुहुयात्पायसैः सर्पिषा ॥ १ ॥ सोमान्तं पूजिते पीठे पूजयेद्रोहिणीपतिम्। एवं सिद्धमनुर्मन्त्री सम्पदां वसतिर्भवेत् ॥ २ ॥

इसका पुरश्चरण छः लाख जप है। छः हजार होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन होता है। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक को प्रयोग सिद्ध करना चाहिये। कहा भी गया है कि 'छः लाख मन्त्र का जप करना चाहिये और इतने ही हजार घी से युक्त खीर से होम करे। पीठ पर सोम पर्यन्त पूजा हो जाने पर

रोहिणी पति की पूजा करनी चाहिये । इस प्रकार मन्त्र को सिद्ध करनेवाला साधक सम्पत्ति का आगार बन जाता है ।

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थं ताराहार विभूषणम् । तारापति स्मरन्मन्त्री त्रिसहस्रं मनुं जपेत् ॥ ३ ॥ राज्यैश्वर्यं दरिद्रोऽपि प्राप्नुयाद्वत्सरान्तरे । पूर्वोक्तसंख्यं प्रजपेच्छशिनं मूर्ध्नि चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ रोगापमृत्यु दुःखानि जित्वा वर्षशतं वसेत् । ब्रह्मचर्यरतः शुद्धश्चतुर्लक्षमिदं जपन् ॥ ५ ॥ निधानं भूगतं सद्यः प्राप्नुयाद्यत्नवर्जितम् । जितेन्द्रियो जपेन्मन्त्रं पूर्णिमायां विशेषतः ॥ ६ ॥ भवेत्सौभाग्यनिलयः सम्पदामपरो निधिः । घोराञ्ज्वरान् शिरोरोगानभिचारानुपद्रवान् ॥७॥ विद्विषामपि सङ्घातं नाशयेन्मनुनाऽमुना । पौर्णमास्यां निराहारो दद्यादर्घ्यं विधूदये ॥ ८ ॥ प्राक्प्रत्यगायतं कुर्याद्भूतले मण्डलत्रयम् । निषण्णः पश्चिमे मन्त्री मण्डले विहितासने ॥ ९ ॥ मध्यस्थे स्थापयेत्पश्चात्पूजाद्रव्याण्यशेषतः । अस्मिन्हि मण्डले सोममर्चयित्वाम्बुजान्विते ॥१०॥ राजतं चषकं भद्रं स्थापयेत्पुरतः सुधीः । गोदुग्धेन समापूर्य स्पृष्ट्वा तं प्रजपेन्मनुम् ॥ ११ ॥ अष्टोत्तरशतं पश्चाद्विद्यामन्त्रेण देशिकः । दद्यादर्घ्यं शशाङ्काय सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १२ ॥ अनेन विधाना कुर्वन्प्रतिमासमतन्द्रियः । षण्मासाभ्यन्तरे सिद्धिं साधकेन्द्रः समश्नुते ॥ १३ ॥ श्रियमत्यूर्जितांपुत्रान्सौभाग्यं विपुलं यशः । कन्यामिष्टामवाप्नोति कन्यापि वरमीप्सितम् ॥ १४ ॥ बहुना किमिहोक्तेन सर्वं दद्यान्निशापतिः । इति षडक्षरचन्द्रमोमन्त्रप्रयोगः ।

हृदयकमल के मध्य में स्थित ताराओं के हार से विभूषित तारापति (चन्द्रमा) का स्मरण करता हुआ साधक यदि तीन हजार जप करे तो वह संवत्सर के अन्त तक दरिद्र भी हो तो राज्य और ऐश्वर्य प्राप्त करता है । साधक मूर्द्धा में शशि का ध्यान करते हुये पूर्वोक्त संख्या में जप करे तो वह रोग, अपमृत्यु तथा दुःखों को जीतकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है । ब्रह्मचर्य पूर्वक शुद्ध रह कर इस मन्त्र का चार लाख जप करनेवाला साधक बिना परिश्रम के भूमि के भीतर गड़े खजाने को प्राप्त कर सकता है । जितेन्द्रिय होकर विशेष रूप से पूर्णिमा को जो जप करता है वह सौभाग्य का आगार और सम्पत्तियों की निधि बन जाता है । इस मन्त्र से साधक घोर ज्वर, शिरोरोग, अभिचार, उपद्रव तथा शत्रु के समूह का भी नाश कर सकता है । पूर्णमासी को निराहार रहकर चन्द्रोदय के समय अर्घ्य देवे । पूर्व, मध्य और पश्चिम में भूमि पर तीन मण्डल बनावे । पश्चिम के मण्डल में आसन बिछा कर साधक स्वयं बैठे । तत्पश्चात् मध्य में समस्त पूजा की सामग्रियों को

स्थापित करे । इस कमल से युक्त मण्डल में साधक चन्द्रमा की पूजा करके सामने गोदुग्ध से पूर्ण चाँदी का उत्तम कटोरा रक्खे और उसका स्पर्श करके विद्यामन्त्र—विद्ये विद्यामालिनी चन्द्रिणी चन्द्रमुखि स्वाहा—से १०८ जप करके समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये चन्द्रमा को अर्घ्य देवे । इस विधि से प्रति मास अतन्द्रित होकर कार्य करता हुआ साधकेन्द्र छः मास के भीतर सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है । इससे विपुल लक्ष्मी, पुत्र, सौभाग्य तथा प्रचुर यश, इष्ट कन्या तथा कन्या को भी इष्ट पति प्राप्त होता है । यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ ? चन्द्रमा सब कुछ देते हैं । इति षडक्षर चन्द्रमा मन्त्रप्रयोग समाप्त ।

अथ चन्द्रमसस्तोत्रम् ।

ॐ श्वेताम्बरः श्वेतवपुः । किरीटी श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः । चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः शशाङ्कः श्रेयांसि मह्यं प्रददातु देवः ॥ १ ॥ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ क्षीरसिन्धुसमुत्पन्नो रोहिणीसहितः प्रभुः । हरस्य मुकुटावास बालचन्द्र नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ सुधामया यत्किरणाः पोषयन्त्योषधीवनम् । सर्वान्नरसहेतुं तं नमामि सिन्धुनन्दनम् ॥४॥ राकेशं तारकेशं च रोहिणी प्रियसुन्दरम् । ध्यायतां सर्वदोषघ्नं नमामीन्दुं मुहुर्मुहुः ॥ ५ ॥ इति चन्द्रमसस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ धनपुत्रादिप्रदमङ्गलमन्त्रविधानम् ।

मन्त्र महोदधि में षडक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ हां हंसः खं खः' इति षडक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

मार्गशीर्षे वैशाखे वा शुक्लपक्षे चन्द्रतारादिबलान्विते भौमवासरे व्रतं प्रगृह्य वक्ष्यमाणविधिना संवत्सरपर्यंतं कार्यम् । तद्यथा

मार्गशीर्ष या वैशाख के शुक्ल पक्ष में चन्द्र तारादि से बलान्वित मङ्गलवार के दिन व्रत लेकर आगे कही गई विधि के अनुसार पूरे एक वर्ष तक इस कार्य को करना चाहिये :

मङ्गलवारे अरुणोदयवेलायामुत्थाय शौचविधिं विधाय अपामार्गकाष्ठेन मौनधारणपूर्वकं दन्तधावनं कृत्वा नद्यादौ गृहे वा यथाविधि स्नात्वा रक्तवाससी परिधाय नित्यकर्म समाप्य शिवालये स्वगृहे वा रक्तगोमयलिप्तमण्डलेस्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य दक्षिणपार्श्वे रक्तचन्दनरक्तपुष्पादीनि सम्पाद्य सपवित्रकम् आचम्य मूलेन प्राणानायम्य ।

मङ्गलवार के दिन अरुणोदय वेला में उठकर नित्य शौचादि के पश्चात् मौन धारण पूर्वक अपामार्ग की दातुन करके नदी आदि में या घर में यथा-विधि स्नान करके लाल कपड़े पहन कर नित्य कर्म समाप्त करने के बाद शिवालय या अपने घर में लाल गोबर से लीपे मण्डल में अपने आसन पर उत्तर मुख बैठ कर दक्षिण पार्श्व में लाल चन्दन और लाल फूल आदि एकत्रित करके पवित्री हाथ में लिये हुये मूलमन्त्र से आचमन तथा प्राणा-याम करके :

देशकालौ स्मृत्वा मम जन्मराशेः सकाशान्नामराशेः सकाशाज्जन्म-लग्नाद्वर्षलग्नाद्वा गोचराच्चतुर्थाष्टमादिद्वयाद्यनिष्टस्थानस्थितभौमसर्वा-निष्टफलनिवृत्तिपूर्वक तृतीयैकादश शुभस्थानस्थितवदुत्तमफलावाप्त्यर्थं वा पुत्रप्राप्त्यर्थं श्री-आयुरारोग्यवृद्ध्यर्थंमृणच्छेदार्थंममुकरोगविनाशार्थं भौमव्रतं करिष्ये। तदङ्गत्वेन न्यासध्यानपूजार्घ्यं-मङ्गलदेवताप्रसन्नतार्थं दानादि च करिष्ये।

इससे संकल्प करके साधक अपने शरीर में इस प्रकार न्यास करे :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः। गायत्री छन्दः। धरा-त्मजो भौमो देवता। ह्रां बीजम्। हंसः शक्तिः। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ विरूपाक्षऋषये नमः सिरशि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। धरात्मजभौमदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रां बीजाय नमः गुह्ये ४। हंसः शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादि-न्यासः।

करन्यास। ॐ भौमाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रां भौमाय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ हं भौमाय मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ सः भौमाय अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ खं भौमाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ खः भौमाय करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ॐ भौमाय हृदयाय नमः १। ॐ ह्रां भौमाय शिरसे स्वाहा २। ॐ हं भौमाय शिखायै वषट् ३। ॐ सः भौमाय कवचाय हुम् ४। ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ खः भौमाय अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ॐ मङ्गलाय नमः अंघ्रयोः १। ॐ भूमिपुत्राय नमः जानुनोः २। ॐ ऋण-हर्त्रे नमः ऊर्वोः ३। ॐ धनप्रदाय नमः कट्याम् ४। ॐ स्थिरासनाय नमः गुह्ये ५। ॐ महाकायाय नमः उरसि ६। ॐ सर्वकर्मविरोधकाय नमः वाम-बाहौ ७। ॐ लोहिताय नमः दक्षिणबाहौ ८। ॐ लोहिताक्षाय नमः गले ९। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः वदने १०। ॐ धरात्मकाय नमः अंसयोः ११। ॐ कुजाय नमः नेत्रयोः १२। ॐ भौमाय नमः ललाटे १३। ॐ भूतिदाय नमः भ्रुवो १४। ॐ भूमिनन्दनाय नमः मस्तके १५। ॐ अङ्गारकाय नमः शिखायाम् १६। ॐ यमाय नमः सर्वाङ्गे १७। ॐ सर्वरोगप्रहारिणे नमः मूर्द्धादिहस्तान्तम् १८। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः मूर्धादिपादान्तम् १९। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः पादादिमूर्धान्तम् २०। ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः दशदिक्षु च २१। ॐ अङ्गारकाय नमः नाभौ २२। ॐ वक्राय नमः वक्षसि २३। ॐ भूमि-नन्दनाय नमः मूर्ध्नि २४।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदा शूलशक्तो करे धार-यन्तम्। अवन्तीसमुत्थं सुमेषानस्थं धरानन्दनं रक्तवस्त्रं समीडे॥१॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके ताँबे का अर्घ्य पद्धति मार्ग से स्थापित करके इस प्रकार पीठ पूजा आदि करे :

पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतो भद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ वामायै नमः॥ १॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः॥२॥ ॐ रौद्र्यै नमः॥ ३॥ ॐ काल्यै नमः॥ ४॥ ॐ कलविकरण्यै नमः॥ ५॥ ॐ बल-विकरण्यै नमः॥ ६॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः॥ ७॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः॥ ८॥ मध्ये। ॐ मनोन्मन्यै नमः॥ ९॥

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णपत्र या ताम्रपत्र में २१ त्रिकोणात्मक यन्त्र या रक्तचन्दन से निर्मित प्रतिमा को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय भूमिपुत्राय योगपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा के बाद पुनः ध्यान और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके :

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचो-दयात्।

इस भौम गायत्री से आवाहन आदि से लेकर रक्तगन्धाक्षत और रक्त पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरण पूजा करे (भौमपूजन यन्त्र देखिये चित्र ३५)। यन्त्र में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ ॐ भौमाय हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रां भौमाय शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ हं भौमाय शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ॥३॥ ॐ सः भौमाय कवचाय हुम्[४]। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ खं भौमाय नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ खः भौमाय अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद यन्त्र में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से दक्षिणावर्त :

ॐ मङ्गलाय नमः[७]। मङ्गलश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भूमिपुत्राय नमः[८]। भूमिपुत्रश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ऋणहर्त्रे नमः[९]। ऋणहर्तृश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ धनप्रदाय नमः[१०]। धनप्रदश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ स्थिरासनाय नमः[११]। स्थिरासनश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महाकायाय नमः[१२]। महाकायश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ सर्वकर्मविरोधकाय नमः[१३]। सर्वकर्मविरोधकश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ लोहिताय नमः[१४]। लोहितश्रीपा० ॥८॥ ॐ लोहिताक्षाय नमः[१५]। लोहिताक्षश्रीपा० ॥९॥ ॐ सामगानां कृपाकराय नमः[१६]। सामगानां कृपाकरश्रीपा० ॥१०॥ ॐ धरात्मजाय नमः[१७]। धरात्मजश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ कुजाय नमः[१८]। कुजश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ भौमाय नमः[१९]। भौमश्रीपा० ॥१३॥ ॐ भूतिदाय नमः[२०]। भूतिदश्रीपा० ॥१४॥ ॐ भूमिनन्दनाय नमः[२१]। भूमिनन्दनश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ अङ्गारकाय नमः[२२]। अङ्गारकश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ यमाय नमः[२३]। यमश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ सर्वरोगप्रहारिणे नमः[२४]। सर्वरोगप्रहारिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ सर्ववृष्टिकर्त्रे नमः[२५]। सर्ववृष्टिकर्तृश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः[२६]। वृष्टिहर्तृश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः[२७]। सर्वरोगापहारकश्रीपा० ॥ २१ ॥

इससे प्रत्येक कोष्ठ में क्रमशः उक्त २१ नामों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद यन्त्र में पूर्वादि आठ दिशाओं में :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[२८]। ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[२९]। माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः[३०]। कौमारीश्रीपादुकां ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[३१]। वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः[३२]। वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः[३३]। इन्द्राणीश्रीपा० ॥६॥ ॐ चामुण्डायै नमः[३४]। चामुण्डाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः[३५]। महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठ मातृकाओं की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥ इसके बाद यन्त्र में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥ ९ ॥ वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ॥ १० ॥

इससे दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥ फिर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पं पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥८॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥

इससे अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूप, दीप, गेहूं से बने नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा और नीराजन आदि से पूजा करके इस प्रकार अर्घ्य देवे : जल से भरे ताम्रपात्र में गन्ध, पुष्प और अक्षत डालकर और उसपर फल रख कर :

ॐ भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः। सुतार्थिनं प्रपन्नो त्वां गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥ १ ॥ रक्तप्रवालसंकाश जपाकुसुमसन्निभ। महीसुत महाबाहो गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥ २ ॥

इन दो मन्त्रों से अर्घ्य देकर भौम (मङ्गल) के पूर्वोक्त २१ नामों की २१ बार प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग प्रणाम करे और यथासंख्या मूलमन्त्र का

जप करने के बाद रेखा का इस प्रकार मार्जन करे : खैर की लकड़ी के अङ्गारों से तीन समान रेखायें खींच कर :

दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे। कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमाज्म्यहम् ॥ १ ॥ ऋणदुःखविनाशाय मनोऽभीष्टार्थसिद्धये। मार्जयाम्यसितारेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्भवाः ॥ २ ॥

इन दोनों मन्त्रों से बाँये पैर से रेखाओं को मिटाना चाहिये। इस प्रकार रेखा का मार्जन करके पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ धरणीगर्भ गर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने। नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥ २ ॥ देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः। सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे ॥ ३ ॥ यो वक्रगतिमापन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति। पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥ ४ ॥ प्रसादं कुरु मे नाथ मङ्गलप्रद मङ्गल। मेषवाहन रुद्रात्मन्पुत्रान्देहि धनं यशः ॥ ५ ॥

इससे प्रार्थना करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद ब्राह्मणों की पूजा करके और उनका आशीर्वाद लेकर गुरु को दक्षिणा देना और भोग में लगायी गई वस्तुओं को उन्हें खिलाना चाहिये।

अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः। समाप्ते व्रते सर्वतोभद्रमण्डलमध्ये ताम्रकलशं यथाविधि संस्थाप्य तत्र स्वर्णमयीं भौमप्रतिमां सम्पूज्य तदीशान्यां स्थण्डिले अग्नि प्रतिष्ठाप्य आघारावाज्यहोमं कृ वा मूलमन्त्रेणाज्यमिश्रितखदिरसमिद्भिर्दशांशतो जुहुयात्। ततः पूर्णपात्रदानां तं होमशेषं समाप्य स्वर्णमूर्त्यादिकमाचार्याय दत्त्वा पञ्चाशद्ब्राह्मणान् गोधूमान्नेन भोजयेत्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'रसलक्षजपैर्होमः समिद्भिः खदिरस्य च। इत्थं जपादिभिः सिद्धं स्वेष्टसिद्धौ प्रयोजयेत् ॥ १ ॥ नारी पुत्रमभीप्सन्ती भौमाहे तद्व्रतं चरेत्। मार्गशीर्षेऽथ वैशाखे तस्यारम्भः प्रशस्यते ॥ २ ॥ प्रतिभौमदिनं कुर्यादेवं संवत्सरावधिः। तिलैर्विधापयेद्धोमं शतार्द्धं भोजयेद्द्विजान् ॥ ३ ॥ एवं व्रतपरा नारी प्राप्नुयात्सुभगान्सुतान्। धनाप्त्यै ऋणनाशाय व्रतं कुर्यात्पुमानपि ॥ ४ ॥' इति भौमषडक्षरमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण छः लाख जप है। व्रत के समाप्त होने पर सर्वतोभद्रमण्डल के बीच ताम्रकलश की यथाविधि स्थापना करके वहाँ स्वर्णमयी

भौम की प्रतिमा का पूजन करके उसके ऐशानी दिशा में स्थण्डिल पर अग्नि की प्रतिष्ठा करके अग्नि में घी से होम करके मूलमन्त्र से घी-मिश्रित खैर की समिधाओं से दशांश होम करे। इसके बाद पूर्णपात्रदानपर्यन्त शेष होम को समाप्त करके सोने की मूर्ति आचार्य को देकर पन्द्रह ब्राह्मणों को गेहूं से बने पदार्थों से भोजन करावे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि ६ लाख जप तथा खैर की समिधाओं से दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार जपादि से सिद्ध मन्त्र का अपनी अभीष्ट सिद्धि में प्रयोग करना चाहिये। पुत्र चाहनेवाली स्त्री को मङ्गलवार के दिन उसका (मङ्गल का) व्रत करना चाहिये। मार्गशीर्ष या वैशाख में इसका प्रारम्भ करना प्रशस्त माना गया है। इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त प्रत्येक मङ्गलवार को व्रत एवं पूजन करना चाहिये। फिर एक वर्ष के बाद तिल से होम करना और ५० ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इस रीत से व्रतपरायण नारी सौभाग्यशाली पुत्रों को प्राप्त करती है। धनप्राप्ति और ऋणनाश के लिये पुरुषों को भी यह व्रत करना चाहिये। इति भौम षडक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ मङ्गलस्तोत्रम्।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य गर्गऋषिः। मङ्गलो देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्। रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखो मेघगदो गदाधृक्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः ॥१॥ ॐ मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः। स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः ॥ २ ॥ लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः। धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥ ३ ॥ अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः। वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥४॥ अङ्गारकोतिबलवानपि यो ग्रहाणां स्वेदोद्भवस्त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः। आरक्तचन्दनसुशीतलवारिणा योप्यभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ॥५॥ भोभो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्यां दुःखापहो दुरितशोकसमस्तहर्ता। नृणामृणं हरति तान्धनिनः प्रकुर्याद्यः पूजितः सकलमंगलवासरेषु ॥ ६ ॥ एकेन हस्तेन गदां बिभर्ति त्रिशूलमन्येन ऋजुक्रमेण। शक्तिं सदान्येन वरं ददाति चतुर्भुजो मङ्गलमादधातु ॥ ७ ॥ यो मङ्गलो मङ्गलमादधाति मध्यग्रहो यच्छति वांछितार्थम्। धर्मार्थकामादिसुखं प्रभुत्वं कलत्रपुत्रैर्न कदा वियोगः ॥ ८ ॥ कनकमयशरीरतेजसा दुर्निरीक्ष्यो हुतवह-

समकान्तिर्मालवे लब्धजन्मा। अवनिजतनयेषु श्रूयते यः पुराणो दिशतु मम विभूतिं भूमिजः सप्रभावः ॥ ९ ॥

एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोत्यसंशयः ॥१०॥ इतिवसिष्ठसंहितायां भौमस्तोत्रं समाप्तम्।

इस प्रकार प्रातःकाल उठ कर मङ्गल के इन नामों को जो पढ़ता है उसपर ऋण नहीं होता और वह धन प्राप्त करता है—इसमें कोई संशय नहीं है। इति वशिष्ठसंहितोक्त भौम स्तोत्र समाप्त।

अथ बुधस्तोत्रप्रारम्भः।

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवदुःखापहर्ता। धर्मस्य धृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥ १ ॥ प्रियंगुकनकश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं नमामि शशिनन्दनम् ॥ २ ॥ सोमसूनुर्बुधश्चैव सौम्यः सौम्यगुणान्वितः। सदा शान्तः सदा क्षेमो नमामि शशिनन्दनम् ॥ ३ ॥ उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः ॥ ४ ॥ शिरीषपुष्पसङ्काशः कपिशीलो युवा पुनः। सोमपुत्रो बुधश्चैव सदा शान्तिं प्रयच्छतु ॥ ५ ॥ श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कौतूहली कोमलवाग्विलासी। रजोधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥ ६ ॥ अहो चन्द्रसुत श्रीमन् मागधर्मासमुद्भवः। अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहुः खड्गखेटकधारकः ॥ ७ ॥ गदाधरो नृसिंहस्थः स्वर्णनाभसमन्वितः। केतकीद्रुमपत्राभ इन्द्रविष्णुप्रपूजितः ॥ ८ ॥ ज्ञेयो बुधः पण्डितश्च रौहिणेयश्च सोमजः। कुमारो राजपुत्रश्च शैशेवः शशिनन्दनः ॥ ९ ॥ गुरुपुत्रश्च तारेयो विबुधो बोधनस्तथा। सौम्यः सौम्यगुणोपेतो रत्नदानफलप्रदः ॥ १० ॥

एतानि बुध नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः। बुद्धिर्विवृद्धितां याति बुधपीडा न जायते ॥ ११ ॥ इति बुधस्तोत्रं समाप्तम्।

बुध के इन नामों को जो मनुष्य प्रातःकाल पढ़ता है उसकी बुद्धि में वृद्धि होती है और उसे बुध की पीड़ा नहीं होती। इति बुधस्तोत्र समाप्त।

अथ बृहस्पतिमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ बृं बृहस्पतये नमः।' इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य बृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः।

सुराचार्योदेवता। बृं बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ सुराचार्यदेवतायै नमः : हृदि ॥ ३ ॥ बृं बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ४ ॥ नमः शक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ब्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ब्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादि षडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरन्तं करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम्। पीतालेपनपुष्पवस्त्रमखिलालङ्कारसम्भूषितं विद्यासागरपारगं सुरगुरुं वन्दे सुवर्णप्रभम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में धर्माधर्मादि पीठ पर पीठदेवताओं की स्थापना करे। यहाँ पीठशक्तियाँ नहीं हैं। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसपर अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करे और प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर पुन ध्यान करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरणपूजा करे (बृहस्पति पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३६) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ ब्रां हृदयाय नमः[१] हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ब्रूं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ब्रैं कवचाय[४] हुम्। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[५] नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ब्रः अस्त्राय फट्[६] अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके।

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमशीतिसहस्रजपः। तद्दशांशतो घृतहोमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् तथा च। 'जपित्वाशीतिसाहस्रं हुत्वान्नेन घृतेन वा। धर्माधर्मादिपीठे तं पूजयेदङ्गदिग्भवैः॥ १॥ सिद्धे मनौ प्रकुर्वीत् प्रयोगानिष्टसिद्धये। हरिद्राकुसुमैर्हुत्वा घृताक्तैर्दिवसत्रयम्॥ २॥ सविंशतिशतं मन्त्री वासांसि लभते मणीन्। शत्रुरोगादिपीडासु स्वजने कलहोद्भवे॥ ३॥ जुहुयात्पिप्पलोत्थाभिः समिद्भिस्तन्निवृत्तये॥ ४॥' इत्यष्टाक्षरबृहस्पतिमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण ८० हजार जप है। तत्दशांश घी से होम आदि करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से साधक इस प्रकार प्रयोगों को सिद्ध करे: 'अस्सी हजार जप करके अन्न या घी से दशांश होम कर धर्माधर्म आदि पीठ पर अङ्ग एवं दिक्पालों के साथ उनका (बृहस्पति का) पूजन करना चाहिये। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर अभीष्टसिद्धि हेतु काम्य प्रयोग करना चाहिये। घी मिलाकर हल्दी एवं कुंकुम से लगातार तीन दिन तक प्रतिदिन १२० आहुतियां देने से साधक मणि एवं वस्त्र प्राप्त करता है। शत्रु तथा रोगों आदि की पीड़ा में एवं स्वजनों में कलह होने पर उसकी निवृत्ति के लिये पीपल की समिधाओं से हवन करना चाहिये। इत्यष्टाक्षर बृहस्पति मन्त्र प्रयोग।

अथ बृहस्पतिस्तोत्रप्रारम्भः। 'क्रौं शक्रादिदेवैः परिपूजितोसि त्वं जीवभूतो जगतो हिताय। ददाति यो निर्मलशास्त्रबुद्धिं स वाक्पतिर्मे वितनोतु लक्ष्मीम्॥ १॥ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः। दधाति दण्डं च कमण्डलुं च तथाक्षसूत्रं वरदोस्तु मह्यम्॥ २॥ बृहस्पतिः सुराचार्यो दयावाञ्छुभलक्षणः। लोकत्रयगुरुः श्रीमान्सर्वज्ञः सर्वतो विभुः॥ ३॥ सर्वेशः सर्वदा तुष्टः श्रेयस्कृत्सर्व-

पूजितः। अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता महाबलः॥ ४॥ विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः। भूर्भुवो धनदाता च भर्ता जीवो जगत्पतिः॥ ५॥ पञ्चविंशतिनामानि पुण्यानि शुभदानि च। नन्दगोपालपुत्राय भगवत्कीर्तितानि च॥ ६॥ प्रातरुत्थाय यो नित्यं कीर्तयेत्तु समाहितः। विप्रस्तस्यापि भगवान् प्रीतः स च न संशयः॥ ७॥'

तन्त्रान्तरेपि देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ १॥ अमराणां बुद्धिदाता वाग्मी यः करुणाकरः। यावन्तो ये च मुनयः पुरुषाकारपीतभाः॥ २॥ बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः। जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः॥ ३॥ सकलसुरविनेता ब्रह्मतुल्यप्रभावस्त्रिदशपतिकरैर्यो धृष्टपादारविन्दः। विमलमतिविकासी सर्वमाङ्गल्यहेतुर्ददतु मम विभूतिं वाक्पतिः सुप्रभावः॥ ४॥ बृहस्पतिमहं नौमि गुरुं देवेन्द्रपूजितम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं सर्वकामफलप्रदम्॥ ५॥ सर्वसंशयच्छेत्तारं वेत्तारं सर्वकर्मणाम्। परब्रह्ममयं नित्यं परमानन्दरूपिणम्॥ ६॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवं शरण्यं भक्तवत्सलम्। वरेण्यं वरदं शान्तं त्रिदशार्तिहरं परम्॥ ७॥ लम्बकूर्चं सुवर्णाभं स्वर्णयज्ञोपवीतिनम्। पीतवस्त्रपरीधानं मार्तण्डतिलकान्वितम्॥ ८॥ चन्दनागुरुकर्पूरैः सुगन्धैः शतपत्रकैः। सम्पूज्य ध्यायते यस्तु भक्त्या सुहृद्या नरैः॥ ९॥ धनं धान्यं जयं सौख्यं सौभाग्यं नृपमान्यता। भवन्ति सर्वदा तेषां त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर॥ १०॥ रोगाग्निसर्पचौराद्यास्तेषां न प्रभवन्ति हि। सुस्थानस्थोधिदेशे च ध्यानात्सर्वार्थसाधकः॥ ११॥

तन्त्रान्तरेपि नमः सुरेन्द्रवन्द्याय देवाचार्याय ते नमः। नमस्त्वनन्तसामर्थ्यं वेदसिद्धान्तपारग॥ १॥ सदानन्द नमस्तेस्तु नमः पीडाहराय च। नमो वाचस्पते तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे॥ २॥ नमोऽद्वितीयरूपाय लम्बकूर्चाय ते नमः। नमः प्रहृष्टनेत्राय विप्राणां पतये नमः॥ ३॥ नमो भार्गवशिष्याय विपन्नहितकारक। नमस्ते सुरसैन्याय विपन्नत्राणहेतवे॥ ४॥ विषमस्थस्तथा नृणां सर्वकष्टप्रणाशनम्। प्रत्यहं तु पठेद्यो वै तस्य कामफलप्रदम्॥ ५॥

बृहस्पति का ४४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ नमोस्तु बृहस्पतये पीतवस्त्राभरणाय यज्ञोपवीतमालाधराय ममार्चनं गृहाण कुरुकुरु स्वाहा' इति चत्वारिंशदक्षरमन्त्रः।

इति बृहस्पतिस्तोत्रं समाप्तम्।

अथ शुक्रमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र महोदधि में ११ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा' इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । विराटछन्दः । दैत्यपूज्यः शुक्रो देवता । ॐ बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ब्रह्मऋषये नमः । शिरसि ॥१॥ विराट्छन्दसे नमः । मुखे ॥ २ ॥ दैत्यपूज्यशुक्रदेवतायै नमः । हृदि ॥३॥ ॐ बीजाय नमः । गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहा शक्तये नमः । पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः ॥१॥ वस्त्रं शिरसे स्वाहा ॥२॥ मे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ देहि कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ शुक्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इसी प्रकार कराङ्गन्यास करे । इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । श्वेताम्भोजनिषण्णमापणतटे श्वेताम्बरालेपनं नित्यं भक्तजनाय सम्प्रददतं वासो मणीन् हाटकम् । वामेनैव करेण दक्षिण करे व्याख्यानमुद्रांकितं शुक्रं दैत्यवरार्चितं स्मितमुखं वन्दे सिताङ्गं प्रभुम् ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से पूजा करके सर्वतोभद्रमण्डल में धर्मादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर पुष्पासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करे । फिर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके आवरणपूजा करे (शुक्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३७) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में पूर्वोक्त षडङ्गन्यास मन्त्र से षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । तद्दशांशतो घृतहोमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । 'अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः । सिद्धे मन्त्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ १ ॥ सुगन्धैः श्वेतकुसुमैर्जुहुयाच्छुभवासरे । एकविंशतिवारं यो लभते सोंशुकं मणीन् ।' इत्येकादशाक्षरशुक्रमन्त्रप्रयोगः ।

इसका पुरश्चरण १० हजार जप है । तत्तद्दशांश घी से होमादि करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि 'इस मन्त्र का १० हजार जप करना चाहिये । घी से दशांश होम करे । सिद्ध मन्त्र से साधक इष्टसिद्धि के लिये प्रयोग करे । सुगन्धित श्वेत पुष्पों से जो व्यक्ति २१ शुक्रवारों को हवन करता है वह वस्त्र एवं मणि प्राप्त करता है ।' इत्येकादशाक्षर शुक्र मन्त्र प्रयोग ।

अथ शुक्रस्तोत्रप्रारम्भः । नमस्ते भार्गवश्रेष्ठ देव दानवपूजित । वृष्टिरोधप्रकर्त्रे च वृष्टिकर्त्रे नमोनमः ॥ १ ॥ देवयानीपितस्तुभ्यं वेदवेदाङ्गपारगः । परेण तपसा शुद्ध शङ्करो लोकशङ्करम् ॥ २ ॥ प्राप्तो विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः । नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे ॥ ३ ॥ तारामण्डलमध्यस्थ स्वभासा भासिताम्बर । यस्योदये जगत्सर्वं मङ्गलार्हं भवेदिह ॥ ४ ॥ अस्तं याते ह्यरिष्टं स्यात्तस्मै मङ्गलरूपिणे । त्रिपुरावासिनो दैत्यान् शिवबाणप्रपीडितान् ॥ ५ ॥ विद्यया जीवयच्छुक्रो नमस्ते भृगुनन्दन । ययातिगुरवे तुभ्यं नमस्ते कविनन्दन ॥ ६ ॥ बलिराज्यप्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः । भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वं गीर्वाणवन्दित ॥ ७ ॥ जीवपुत्राय यो विद्यां प्रादात्तस्मै नमोनमः । नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि ॥ ८ ॥ नमः कारणरूपाय नमस्ते कारणात्मने । स्तवराजमिदं पुण्यं भार्गवस्य महात्मनः ॥९॥

यः पठेच्छृणुयाद्वापि लभते वाञ्छितं फलम् । पुत्रकामो लभेत्पुत्रान् श्रीकामो लभते श्रियम् ॥ १० ॥ राज्यकामो लभेद्राज्यं स्त्रीकामः स्त्रियमुत्तमाम् । भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यं समाहितैः ॥ ११ ॥ अन्यवारे तु

होरायां पूजयेद्भृगुनन्दनम्। रोगार्तो मुच्यते रोगाद्भयार्तो मुच्यते भयात्॥ १२॥ यद्यत्प्रार्थयते वस्तु तत्तत्प्राप्नोति सर्वदा। प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगुपूजा प्रयत्नतः॥ १३॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्राप्नुयाच्छिवसन्निधौ॥ १४॥ इति स्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं समाप्तम्।

जो इसे पढ़ता या सुनता है वह वांछित फल प्राप्त करता है। शुक्रवार को एकाग्रमन से इसे पढ़ने से पुत्र की इच्छावाला पुत्र और धन की इच्छावाला धन प्राप्त करता है। राज की इच्छावाला राज्य और स्त्री की इच्छावाला स्त्री प्राप्त करता है। अन्य वारों को होरा में भृगुनन्दन की पूजा करने से रोग से पीड़ित रोग से मुक्त होता है और भय से पीड़ित भय से मुक्त होता है। वह जो-जो प्रार्थना करता है उन सब को सदा प्राप्त करता है। प्रातःकाल प्रयत्नपूर्वक भृगु पूजा करने से सर्वपापों से मुक्त होकर साधक शिवसान्निध्य प्राप्त करता है। इति स्कन्दपुराणोक्त शुक्रस्तोत्र समाप्त।

अथ व्यासमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में अष्टाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

'व्यां वेदव्यासाय नमः।' इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। सत्यवतीसुतो-देवता। व्यां बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्म ऋषये नमः। शिरसि॥ १॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः। मुखे॥ २॥ सत्यवतीसुतदेवतायै नमः। हृदि॥ ३॥ व्यां बीजाय नमः। गुह्ये॥ ४॥ नमः शक्तये नमः। पादयोः॥ ५॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ॐ व्यां हृदयाय नमः॥ १॥ ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा॥ २॥ ॐ व्यूं शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ व्यैं कवचाय हुम्॥ ४॥ ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥ ॐ व्यः अस्त्राय फट्॥ ६॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार कराङ्गन्यास करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं वामे जानुतले दधानमपरं हस्तेषु विद्यानिधिम्। विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहांगद्युतिं पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥ १॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद सर्वतोभद्रमण्डल में धर्मादि पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ धर्मादिपीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके आवरणपूजा करे (वेदव्यास पूजन यन्त्र देखिये चित्र १८) : षट्कोण-केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में :

ॐ व्यां हृदयाय नमः[1]॥ १॥ ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा[2]॥ २॥ ॐ व्यूं शिखायै वषट्[3]॥ ३॥ ॐ व्यैं कवचाय[4] हुम्॥ ४॥ ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्[5]॥ ५॥ ॐ व्यः अस्त्राय फट्[6]॥ ६॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि चारों दिशाओं में दक्षिणावर्त :

ॐ शल्याय नमः[7]। शल्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ १॥ ॐ वैशम्पायनाय नमः[8]। वैशम्पायनश्रीपा०॥ २॥ ॐ जैमिनये नमः[9]। जैमिनिश्रीपा०॥ ३॥ ॐ सुमन्ताय नमः[10]। सुमन्तश्रीपा०॥ ४॥ आग्नेयादिचतुष्कोणेषु ॐ श्रीशुकाय नमः[11]। श्रीशुकश्रीपा०॥ ५॥ ॐ उग्रश्रवसे नमः[12]। उग्रश्रवःश्रीपा०॥ ६॥ ॐ समन्याय नमः[13]। समन्यश्रीपा०॥ ७॥ ॐ चिमनाय नमः[14]। चिमनश्रीपा०॥ ८॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण॥ २॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमष्टसहस्रजपाः। पायसान्नेन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च 'जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत। एवं सिद्धमनुर्मन्त्री कवि-

त्वं शोभनाः प्रजाः ॥ १ ॥ व्याख्यानशक्ति कीर्ति च लभते सम्पदां च यः। मृत्युञ्जयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत् ॥ २ ॥ सर्वोपद्रवसंत्यक्तो लभते वाञ्छितं फलम्। मृत्युञ्जयस्य मन्त्रोयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः ॥३॥ जप्तोयं केवलो नृणामिष्टसिद्धि प्रयच्छति। किं पुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः ॥ ४ ॥ इति वेदव्यासाष्टाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण आठ हजार जप है और खीर से दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक इस प्रकार प्रयोगों को सिद्ध करे: मन्त्र का आठ हजार जप और खीर से दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक को सुन्दर कवित्व शक्ति, अच्छी सन्तान, व्याख्या शक्ति, कीर्ति एवं सम्पत्ति मिलती है। जो व्यक्ति मृत्युञ्जयमन्त्र से सम्पुटित व्यास मन्त्र का जप ('ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ' इस प्रकार जप करे) करता है वह सब उपद्रवों से मुक्त होकर वांछित फल प्राप्त करता है। यह मृत्युञ्जय मन्त्र तीन वर्णों का (ॐ जूं सः) है और मृत्यु का नाश करता है। यह अकेला मन्त्र जप करने से भी मनुष्यों को इष्टसिद्धि देता है और यदि इससे सम्पुटित व्यास मन्त्र का जप किया जाय तो इसके फल का क्या कहना? इति वेदव्यास अष्टाक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ धर्मराजमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में २४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

'ॐ क्रों ह्रीं आं वैं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः' इति चतुर्विशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ क्रों ह्रीं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ आं वैं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वैवस्वताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ धर्मराजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ भक्तानुग्रहकृते नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास: ॐ क्रों ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ आं वैं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वैवस्वताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ धर्मराजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ भक्तानुग्रहकृते कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके सावधान मन से देव का ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। पाथःसंयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो नृणां

पुण्यशुभावहः स्ववपुषा पापीयसां दुःखकृत्। श्रीमद्दक्षिणदिक्पतिर्महिषगो भूषाभरालंकृतो ध्येयः संयमिनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दण्डभृत् ॥ १ ॥

इति ध्यायेत्। सिद्धमन्त्रत्वादृष्यादिपूजाभावः। 'अभ्यस्तोयं सदा मन्त्रः सकलापद्विनाशनः। नरकप्राप्तिरोद्धा स्याद्रिपुभीतिनिवर्तकः ॥२॥' इति धर्मराजमन्त्रप्रयोगः।

इससे ध्यान करे। यह मन्त्र सिद्ध है इसलिये इसमें ऋष्यादि न्यास और पूजा की आवश्यकता नहीं है। सिद्ध मन्त्र होने के कारण यह अभ्यस्त होते ही समस्त आपत्तियों को दूर करता है, नरक जाने से रोकता है और शत्रभय को नष्ट करता है। इति धर्मराज मन्त्र प्रयोग।

अथ चित्रगुप्तमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में ३८ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है:

'ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधिकारिणे म्ल्व्यूं जन्मसम्पत्प्रलयं कथयकथय स्वाहा' इत्यष्टत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

करन्यास: ॐ नमो विचित्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ धर्मलेखकाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ यमवाहिकाधिकारिणे मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ म्ल्व्यूं जन्मसम्पत्प्रलयं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ कथयकथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ नमो विचित्राय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ धर्मलेखकाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ यमवाहिकाधिकारिणे शिखायै वषट् ॥३॥ म्ल्व्यूं जन्मसम्पत्प्रलयं कवचाय हुम् ॥४॥ कथयकथय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। किरीटोज्ज्वलं वस्त्रभूषाभिरामं विचित्रासनासीनमिन्दुप्रभास्यम्। नृणां पापपुण्यानि पत्रे लिखन्तं भजे चित्रगुप्तं सखायं यमस्य ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मन्त्रं जपेत्। तथा च। मन्त्रोयं चित्रगुप्तस्य सर्वदुःखौघनाशनः। सिद्धोमनुरयं पुंसां जपतां चित्रगुप्तकः। प्रसन्नो गणयेत्पुण्यं नैव पापं कदाचन् ॥ १ ॥ इति चित्रगुप्तमन्त्रप्रयोगः।

इससे ध्यान करके मन्त्र का जप करे। कहा भी गया है कि 'चित्रगुप्त का यह मन्त्र सब दुःखों एवं पापों को दूर करनेवाला बताया गया है। इस

सिद्ध मन्त्र का जप करनेवाले मनुष्यों से प्रसन्न होकर चित्रगुप्त उनके पुण्यों की ही गणना करते हैं पापों की नहीं। इति चित्रगुप्त मन्त्र प्रयोग।

अथ घण्टाकर्णमन्त्रप्रयोगः।

प्राकृतग्रन्थ में ३१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ घण्टाकर्णोमहावीरो देवदत्त सर्वोपद्रवनाशनं कुरुकुरु स्वाहा।'

इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्। स्वासने पूर्वाभिमुख स्थित्वा गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपकर्पूरेण सम्पूज्य पञ्चत्रिंशच्छतं प्रत्यहं जपेत्। जपान्ते पश्चिमाभिमुखो भूत्वा गुग्गुलेन सहस्रं हुनेत्। एवं कृतेन त्रिदिनान्तरे सर्वोपद्रवा नश्यन्ति राजभयादिकं नश्यति निर्भयो भवति। इति घण्टाकर्णमन्त्रप्रयोगः।

इसका विधान : अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा कपूर से पूजा करके मन्त्र का ३५०० प्रतिदिन जप करे। जप के अन्त में पश्चिमाभिमुख होकर गुग्गुल से एक हजार आहुति दे। इस प्रकार करने से तीन दिन में सभी उपद्रवों का नाश होता है। राजभय समाप्त हो जाता है और मनुष्य निर्भय हो जाता है। इति घण्टाकर्ण मन्त्र प्रयोग।

अथ कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधौ : अथेष्टदान्मनून् वक्ष्ये कार्तवीर्यस्य गोपितान्। यः सुदर्शनचक्रस्यावतारः क्षितिमण्डले ॥ १ ॥

मन्त्र महोदधि में कहा गया है कि शङ्कराचार्य प्रभृति आचार्यों के द्वारा अप्रकाशित कार्तवीर्यार्जुन के अभीष्ट फलदायक मन्त्रों को बतलाता हूं। यह कार्तवीर्यार्जुन भूमण्डल पर सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है। २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः'

इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। कार्तवीर्यार्जुनो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दत्तात्रेयऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ कार्तवीर्यार्जुनदेवतायै नमः। हृदि ॥३॥ ॐ बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ४ ॥ नमः शक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ फ्रां व्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं भ्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ क्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ फ्रां भ्रां हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्लीं भ्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ क्रैं श्रैं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ हुं फट् अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णव्यापकन्यास : ॐ फ्रों ॐ हृदये ॥१॥ ॐ व्रीं ॐ जठरे ॥२॥ ॐ क्लीं ॐ नाभौ ॥ ३ ॥ ॐ भ्रूं ॐ पुनः जठरे ॥ ४ ॥ ॐ आं ॐ गुह्ये ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं ॐ दक्षपादे ॥ ६ ॥ ॐ क्रों ॐ वामपादे ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं ॐ सक्थिनि ॥ ८ ॥ ॐ हुं ॐ जानुनि ॥ ९ ॥ ॐ फं ॐ जङ्घयोः ॥ १० ॥ ॐ कां ॐ मस्तके ॥ ११ ॥ ॐ तं ॐ ललाटे ॥ १२ ॥ ॐ वीं ॐ भ्रुवोः ॥ १३ ॥ ॐ यां ॐ श्रुत्योः ॥ १४ ॥ ॐ जुं ॐ नेत्रयोः ॥ १५ ॥ ॐ नां ॐ नासिकायाम् ॥ १६ ॥ ॐ यं ॐ वक्त्रे ॥ १७ ॥ ॐ नं ॐ गले ॥ १८ ॥ ॐ मं ॐ अंसयोः ॥ १९ ॥ ॐ फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। इससे सर्वाङ्ग में पादादि से मूर्धा पर्यन्त व्यापक करे। इति मन्त्र वर्णव्यापक न्यास।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। उद्यत्सूर्यसहस्रकान्तिरखिलक्षोणीधवैर्वन्दितो हस्तानां शतपञ्चकेन च दधच्चापानिषूंस्तावतः। कण्ठे हाटकमालया परिवृतश्चक्रावतारो हरेः पायात्स्यंदनगोऽरुणाभवसनः श्रीकार्तवीर्यो नृपः ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥३॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥५॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर 'ॐ नमो भगवते कार्तवीर्यार्जुनाय पद्मपीठात्मने नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करे और प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर पुनः ध्यान करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरण पूजा करे (कार्तवीर्यार्जुन पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३९) : षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में :

ॐ फ्रां व्रां हृदयाय[१] नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ क्लीं भ्रीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ हूं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ क्रैं श्रैं कवचाय[४] हुम्। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ हुं फट् अस्त्राय फट्[५]। अस्त्रश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः[६] सर्वाङ्गे। सर्वाङ्गश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि चारों दिशाओं में :

ॐ चोरमद विभञ्जनाय नमः[७] ॥ १ ॥ ॐ मारीमदविभञ्जनाय नमः[८] ॥ २ ॥ ॐ अरिमदविभञ्जनाय नमः[९] ॥३॥ ॐ दैत्यमदविभञ्जनाय नमः[१०] ॥ ४ ॥ आग्नेयादिकोणेषु। ॐ दुःखनाशाय नमः[११] ॥ ५ ॥ ॐ दुष्टनाशाय नमः[१२] ॥६॥ ॐ दुरितनाशाय नमः[१३] ॥७॥ ॐ रोगनाशकाय नमः[१४] ॥८॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ क्षेमकरायै नमः[१५] ॥ १ ॥ ॐ वश्यकरायै नमः[१६] ॥२॥ ॐ श्रीकरायै नमः[१७] ॥ ३ ॥ ॐ यशस्करायै नमः[१८] ॥ ४ ॥ ॐ आयुष्करायै नमः[१९] ॥५॥ ॐ प्रज्ञाकरायै नमः[२०] ॥ ६ ॥ ॐ विद्याकरायै नमः[२१] ॥ ७ ॥ ॐ धनकरायै नमः[२२] ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपाः। तिलतण्डुलपायसेन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च। 'लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। सतण्डुलैः पायसेन विष्णुपीठे यजेत्तु तम् ॥ १ ॥ एवं संसाधितो मन्त्रः प्रयोगार्हः प्रजायते। शुद्धभूमावष्टगन्धैर्लिखित्वा यन्त्रमादरात्। तत्र कुम्भं प्रतिष्ठाप्य तत्रावाह्यार्चयेन्नृपम् ॥ २ ॥ स्पृष्ट्वा कुम्भं जपेन्मन्त्रं सहस्रं विजितेन्द्रियः। अभिषिञ्चेत्तदम्भोभिः प्रियं सर्वेष्टसिद्धये ॥ ३ ॥ पुत्रान् यशो रोगनाशमायुः स्वजनरञ्जनम्। वाक्सिद्धिं सुदृशः कुम्भाभिषिक्तो लभते नरः ॥ ४ ॥ शत्रूपद्रवमापन्ने ग्रामे वा पुटभेदने। संस्थापयेदिदं यन्त्रमरिभीतिनिवृत्तये ॥ ५ ॥

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। चावल, तिल और खीर से दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'इस मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये। चावल एवं खीर मिलाकर तिलों से दशांश होम तथा वैष्णव पीठपर इसका पूजन करना चाहिये। इस प्रकार साधना करने से यह मन्त्र काम्य प्रयोगों के योग्य हो जाता है। शुद्ध भूमि में अष्टगन्ध से श्रद्धासहित उक्त यन्त्र लिखकर उसपर कुम्भ की प्रतिष्ठा करके उसमें कार्तवीर्यार्जुन का आवाहन करके विधिवत् पूजन करना चाहिये। फिर इन्द्रियों को वश में करके साधक को कुम्भ का स्पर्श कर मूलमन्त्र का एक हजार जप करना चाहिये। फिर उस कुम्भ के जल से अपने समस्त अभीष्टों की सिद्धि हेतु प्रियजन का अभिषेक करना चाहिये। कुम्भ के जल से अभिषिक्त व्यक्ति पुत्र, यश, आरोग्य, आयु, आत्मीयजनों से प्रेम, वाक्सिद्धि तथा स्त्री को प्राप्त करता है। गाँव या नगर में शत्रुओं का उपद्रव होने पर शत्रुओं का भय दूर करने के लिये इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिये।

सर्षपारिष्टलशुनकार्पासैर्मार्यते रिपुः। धत्तूरैः स्तम्भते निम्बैर्द्वेषते वश्यतेम्बुजैः ॥ ६ ॥ उच्चाटयते बिभीतस्य समिद्भिः खदिरस्य च। कटुतैलमहिष्याज्यैर्होमद्रव्याञ्जनं स्मृतम् ॥ ७ ॥ यवैर्हुतैः श्रियः प्राप्ति-

स्तिलैराज्यैरघक्षयः । तिलतण्डुलसिद्धार्थलाजैर्वश्यो नृपो भवेत् ॥ ८ ॥ अपामार्गार्कदूर्वाणां होमो लक्ष्मीप्रदोऽघनुत् । स्त्रीवश्य कृत्प्रियंगूनां पुराणां भूतशान्तिदः ॥ ९ ॥ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटबिल्वसमुद्भवाः । समिधो लभते हुत्वा पुत्रानायुर्धनं सुखम् ॥ १० ॥ निर्मोकहेमसिद्धार्थ-लवणैश्चोरनाशनम् । रोचनागोमयैः स्तम्भो भूप्राप्तिः शालिभिर्हुतैः ॥११॥ होमसंख्या तु सर्वत्र सहस्रादयुतावधिः । प्रकल्पनीया मन्त्रज्ञैः कार्यगौरव-लाघवात् ॥ १२ ॥ इति विंशत्यक्षरो कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रप्रयोगः ।

सरसों, रीठा, लहसुन एवं कपास के होम से शत्रु की मृत्यु हो जाती है। धतूरे के होम से उसका स्तम्भन, नीम के होम से विद्वेषण, कमल के होम से वशीकरण तथा बहेड़ा एवं खैर की समिधाओं के होम से शत्रु का उच्चाटन होता है। जौ के होम से लक्ष्मी प्राप्ति, तिल एवं घी के होम से पापक्षय तथा तिल, तण्डुल, सिद्धार्थ एवं लाजाओं के होम से राजा वश में हो जाता है। औंधा, आक एवं दूर्वा का होम लक्ष्मीदायक तथा पापनाशक होता है। प्रियंगु का होम स्त्रियों को वश में करता है। गुग्गुल का होम भूतों को शान्त करता है। पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद एवं बेल की समिधाओं से होम करके साधक पुत्र, आयु, धन एवं सुख प्राप्त करता है। निर्मोक (सोवा), धतूरा, सिद्धार्थ (सफेद सरसों) तथा लवण के होम से चोरों का नाश होता है। गोरोचन एवं गोबर के होम से स्तम्भन होता है तथा शालि (धान) के होम से भूमि प्राप्त होती है। मन्त्रज्ञ विज्ञान को कार्य की न्यूनाधिकता के अनुसार समस्त काम्य प्रयोगों में होम की संख्या एक हजार से दश हजार तक निश्चित कर लेनी चाहिये। इति विंशत्यक्षर कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र प्रयोग।

कार्तवीर्य के मन्त्र-भेद :

कार्तवीर्यार्जुन का एक अन्य ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

'ॐ नमो भगवते श्रीकार्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टान्तकाय तपोबलपराक्रमपरिपालितसप्तद्वीपाय सर्वराजन्यचूडामणये महाशक्तिमते सहस्रबाहवे हुं फट्' इति त्रिषष्टिवर्णो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

षडङ्गन्यास : राजन्यचक्रवर्तिने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ वीराय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ शूराय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ माहिष्मतीपतये कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ रेवाम्बुपरितृप्ताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ कारागेहप्रबाधितदशास्याय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

इस प्रकार षडङ्गन्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । सिच्यमानं युवतिभिः क्रीडन्तं नर्मदाजले । हस्तैर्जलौघं रुन्धन्तं ध्यायेन्मन्तं नृपोत्तमम् ॥ १ ॥

इति ध्यायेत् । अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् । तथा च । एवं ध्यात्वायुतं मन्त्रं जपेदन्यत्तु पूर्ववत् । पूर्ववत्सर्वमेतस्य समाराधनमीरितम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे। इसका पुरश्चरण १० हजार जप है। पूजा आदि सब कृत्य पूर्वोक्त मन्त्र के समान हैं। कहा भी गया है कि ऐसा ध्यान कर इस मन्त्र का १० हजार जप करना चाहिये तथा हवन, पूजन आदि अन्य कृत्य पूर्वोक्त मन्त्र के समान करने चाहिये। इस मन्त्र साधना के सभी अङ्ग पूर्वोक्त मन्त्र के समान हैं।

कार्तवीर्यार्जुन का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् । तस्य संस्मरणादेव हृतं नष्टं च लभ्यते ।

यह अनुष्टुप् रूपी मन्त्र है।

पञ्चाङ्गन्यास : ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम हृदयाय नमः ॥ १ ॥ राजा बाहुसहस्रवान् शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ तस्य संस्मरणादेव शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ हृतं नष्टं च लभ्यते कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् । तस्य संस्मरणादेव हृतं नष्टं च लभ्यते अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥

इस प्रकार पञ्चाङ्ग न्यास करे। अन्य सब कृत्य पूर्ववत् है।

एक अन्य मन्त्र :

ॐ कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली । सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः । रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः ।

इसका विधान :

द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् । अनष्टद्रव्यता तस्य नष्टस्य पुनरागमः ।

कार्तवीर्य के इन बारह नामों का जो पाठ करता है उसका नष्ट धन फिर से प्राप्त हो जाता है और फिर कभी नष्ट नहीं होता।

गायत्री मन्त्र :

ॐ कार्तवीर्याय विद्महे महावीर्याय धीमहि । तन्नोर्जुनः प्रचोदयात् । गायत्र्येषार्जुनस्योक्ता प्रयोगादौ जपेत्तु ताम् । अनुष्टुभं मनुं रात्रौ

जपतां चौरसञ्चया । पलायन्ते गृहाद्दूरं तर्पणाद्वचनादपि ॥ १ ॥ इति कार्तवीर्यार्जुनमन्त्रप्रयोगः ।

यह कार्तवीर्यार्जुन का गायत्री मन्त्र है । इस मन्त्र का कार्तवीर्य के प्रयोगों के प्रारम्भ में जप करना चाहिये । रात्रि में अनुष्टुप् मन्त्र का जप करने से चोर आदि के समुदाय घर से दूर भाग जाते हैं । इस मन्त्र से तर्पण या इसका उच्चारण करने से भी चोर भाग जाते हैं । इति कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र प्रयोग ।

अथ हनुमदादिषट्कवचप्रयोगः ।

श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकाण्डे ।

श्रीमदानन्दरामायण के मनोहरकाण्ड में कहा गया है :

आदौ नरैर्मारुतेश्च पठित्वा कवचं शुभम् । ततः शत्रुघ्नकवचं पठनीयमिदं शुभम् ॥ १ ॥ पठनीयं भरतस्य कवचं परमं ततः । ततः सौमित्रिकवचं पठनीयं सदा नरैः ॥ २ ॥ पठनीयं ततः सीताकवचं भाग्यवर्द्धनम् । ततः श्रीरामचन्द्रस्य कवचं सर्वदोत्तमम् ॥ ३ ॥ पठनीयं नरैर्भक्त्या सर्ववांछितदायकम् । एवं षट्कवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा ॥ ४ ॥ पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम् । ज्ञात्वात्र मानवैर्भक्त्या कार्यं च पठनं सदा ॥ ५ ॥ अशक्तेनात्र चत्वारि पठनीयानि सादरम् । हनूमतश्च सौमित्रेः सीताया राघवस्य च ॥ ६ ॥ इमानि पठनीयानि चत्वारि कवचानि हि । चतुर्णां कवचानां च पठने मानवाय च ॥ ७ ॥ न यद्यत्रावकाशश्चेत्तदा त्रीणि पठेन्नरः । मारुतेश्चात्र सीतायास्तथा श्रीराघवस्य च ॥८॥ त्रयाणां कवचानां च न पाठावसरो यदा । पठनार्थं मानवाय तदा द्वे कवचे स्मृते ॥ ९ ॥ मारुतेश्चाथ रामस्य सीताया राघवस्य वा । नैकमेव पठेच्चात्र श्रीरामकवचं शुभम् ॥ १० ॥ अवकाशे कवचानां षट्कमेव सदा नरैः । पठनीयं क्रमेणैव कर्तव्यो नालसः कदा ॥११॥ यदावकाशो नास्त्येव तदा तेषां सुखाप्तये । मया विशेषः प्रोक्तोऽयं न सर्वेषां मयेरितः ॥ १२ ॥

लोगों को चाहिये कि पहले हनुमत्कवच का पाठ करके शत्रुघ्नकवच का पाठ करें । इसके बाद भरतकवच और भरतकवच के बाद सौमित्रिकवच का पाठ करें । इसके बाद भाग्य को बढ़ानेवाले सीताकवच का पाठ करके श्रीरामकवच का पाठ करे । इस तरह सब वांछित फल देनेवाले छः कवचों का प्रतिदिन पाठ करते रहें । इन छहों कवचों का पाठ श्रेष्ठ और मोक्ष का साधन है । ऐसा समझ कर लोगों को सर्वदा इनका पाठ करते रहना

चाहिये । यदि ऐसा न कर सके तो हनुमान्, लक्ष्मण, सीता तथा राम के कवच का पाठ करे । यदि इन चारों के पाठ करने का समय किसी प्राणी को न मिले तो हनुमान्, सीता तथा राम के कवच का ही पाठ करे । यदि तीन कवच के पाठ करने का भी अवसर न मिल सके तो हनुमान तथा राम इन दोनों कवचों का ही पाठ करे । किन्तु इतना अवश्य ध्यान रक्खे कि ऊपर बतलाये कवचों में से किसी एक का अथवा रामकवच का ही पाठ करके न रह जाय । जब समय मिले, तब छहों कवचों का क्रमशः पाठ करे । आलस्यवश टाल न दे । यदि किसी विशेष अड़चन के कारण कुछ भी समय न मिल सके, तभी के लिये यह परिहार बतलाया गया है । यह सब समय और सबके लिये लागू नहीं है ।

एकमुखिहनुमत्कवचप्रारम्भः ।

एकदा सुखमासीनं शङ्करं लोकशङ्करम् । प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवम् ॥ १ ॥

एक बार संसार का कल्याण करनेवाले शङ्करजी सुखपूर्वक बैठे हुये थे । उसी समय गिरिजा (पार्वती) ने कपूर के समान धवल और कल्याणकारी अपने पति से पूछा :

श्रीपार्वत्युवाच । भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो । शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम् ॥ २ ॥ संग्रामे सङ्कटे घोरे भूतप्रेतादिके भये । दुःखदावाग्निसन्तप्तचेतसां दुःखभागिनाम् ॥ ३ ॥

पार्वती उवाच : हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे लोकनाथ ! हे जगत्प्रभो ! जो लोग किसी प्रकार के शोक से व्याकुल हों, उनकी किस प्रकार रक्षा की जा सकती है ? जो लोग घोर संग्राम, महान् संकट, भूत-प्रेत आदि की बाधाओं अथवा दुःखरूपी दावानल से जल रहे हों, उनके उद्धारार्थ कौन उपाय किया जा सकता है ?

श्रीमहादेव उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया । विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा ॥ ४ ॥ कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः । गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि ॥ ५ ॥ उद्यदादित्यसङ्काशमुदारभुजविक्रमम् । कन्दर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ॥ ६ ॥ श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् । अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥ ७ ॥ हनूमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः । रामेष्टः फाल्गुन सखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥ ८ ॥ उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः । लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥ ९ ॥

एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः। स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥ १० ॥ तस्य सर्वं भयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्। राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥ ११ ॥ उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः। आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ १२ ॥

श्री महादेवजी ने कहा : हे देवि ! मैं संसार की कल्याणकामना से तुम्हें वह हनुमत्कवच बतलाता हूं, जिसे राम ने प्रेमवश विभीषण को दिया था। यद्यपि यह गुप्त है, फिर भी मैं तुम्हें बतलाता हूं। हे सुन्दरी ! सुनो। उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशवान्, लम्बी भुजाओं और अनुपम पराक्रमवाले, करोड़ों कामदेव के समान सुन्दर, सब विद्याओं में विशारद, श्रीरामजी के हृदय को आनन्द देनेवाले, भक्तों के लिये कल्पवृक्ष के समान, भयरहित एवं वरदाता हनुमान्जी की मैं हाथ जोड़कर वन्दना करता हूं। हनुमान्, अञ्जनीपुत्र, वायुसूनु, महाबलवान्, राम के प्रिय, अर्जुन के मित्र, पीली आँखोंवाले, अनन्तबलशाली, समुद्र को लाँघनेवाले, सीता का शोक नष्ट करनेवाले, लक्ष्मण के प्राणदाता, रावण का अभिमान दूर करनेवाले, इन बारह नामों को जो मनुष्य सोते या जागते समय अथवा कहीं जाते समय पढ़ता है, उसे कहीं किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता और संग्राम में उसकी विजय होती है। राजद्वार, कन्दरा आदि किसी भी स्थान में उसे किसी प्रकार का भय नहीं रहता। जिसने समुद्र की जलराशि को खेल-खेल में लाँघकर सीता की शोकरूपिणी अग्नि को लेकर उसी से सारी लङ्का जलाकर राख कर डाली, ऐसे हनुमान्जी को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं।

ॐ नमो हनुमते सर्वंसर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्टबुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभयक्षोभय मम सर्वकार्याणि साधयसाधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् घेघे ॐ शिवसिद्धि ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा परकृतयन्त्रमन्त्रपराहङ्कारभूतप्रेतपिशाचदृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेष्टाकुविद्यासर्वोग्रभयानि निवारय निवारय बन्धबन्ध लुंठलुंठ विलुंचविलुंच किलिकिलि सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ फट् स्वाहा।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। श्रीहनुमान् परमात्मा देवता। अनुष्टुप्छन्दः। मारुतात्मज इति बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः। लक्ष्मणप्राणदातेति कीलकम्। रामदूतायेत्यस्त्रम्। हनुमान् देवता इति कवचम्। पिङ्गाक्षोऽमितविक्रम

इति मन्त्रः। श्रीरामचन्द्रप्रेरणया रामचन्द्रप्रीत्यर्थं मम सकलकामना सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अञ्जनीसुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं रामदूताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वायुपुत्राय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां अञ्जनीसुताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं रामदूताय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वायुपुत्राय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं अग्निगर्भाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानम्। ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा। सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥ १ ॥ उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखं शोभितं कुण्डलाङ्कम्। भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् ॥ २ ॥ वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्। निगूढमुपसङ्गम्य पारावारपराक्रमम् ॥ ३ ॥ स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्। कुण्डलद्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरिं भजे ॥ ४ ॥ सव्यहस्ते गदायुक्तं वामहस्ते कमण्डलुम्। उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनूमन्तं विचिन्तयेत् ॥ ५ ॥

प्रातःकाल के सूर्य के समान जिनका तेजस्वी स्वरूप है, जो राक्षसों का अभिमान दूर करने में समर्थ हैं और जो देवताओं में एक प्रमुख देवता माने जाते हैं, जिनका प्रशस्त यश तीनों लोकों में फैला हुआ है, जो अपनी असाधारण शोभा से देदीप्यमान हो रहे हैं, सुग्रीव आदि बड़े-बड़े वानर जिनके साथ हैं, जो सुव्यक्त तत्त्व के प्रेमी हैं, जिनकी आँखें अतिशय लाल-लाल हैं—पीले वस्त्रों से अलंकृत उन हनुमान्जी का मैं ध्यान करता हूं। उदय होते हुये करोड़ों सूर्य के समान जिनका प्रकाश है, जो सुन्दर वीरासन से बैठे हुये हैं, जिनके शरीर में मौंजी-यज्ञोपवीत आदि पड़े हैं और उनकी किरणों से जो और भी शोभासम्पन्न दीख रहे हैं, जिनके कानों में पड़े हुये कुण्डल अपनी मनोहर शोभा दिखा रहे हैं, भक्तों की कामना पूर्ण करनेवाले,

मुनिजनों से वन्दित, वेद के मन्त्रों की ऋचा सुनकर प्रसन्न होनेवाले, वानर-कुल के अग्रणी और समुद्र को गौ का खुर मात्र जलवाला बना देनेवाले हनुमान्‌जी का ध्यान करना चाहिये। वज्र के समान कठोर जिनका शरीर है, मस्तक पर पीला केश सुशोभित हो रहा है और कानों में सुवर्ण के कुण्डल पड़े हैं, ऐसे हनुमान्‌जी का मैं अतिशय आग्रह के साथ ध्यान करता हूं क्योंकि उनके पराक्रमरूपी समुद्र की कोई थाह नहीं है। स्फटिकमणि के समान अथवा सुवर्ण के समान जिनकी कान्ति है, दो भुजायें हैं, जो हाथ जोड़े खड़े हैं, दोनों कानों में दो सुवर्ण के कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं, ऐसे कमल के समान सुन्दर मुखवाले हनुमान्‌जी का मैं ध्यान करता हूं। जिनकी दाहिनी भुजा में गदा है, बायें हाथ में कमण्डलु है और जिनकी दाहिनी भुजा कुछ ऊपर उठी हुई है, ऐसे हनुमान्‌जी का ध्यान करना चाहिये।

अथ मन्त्रः। ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोलंकृताय अञ्जनीगर्भसम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्रकाशनपर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्यकरणपरोच्चाटनकुमारब्रह्मचर्यगम्भीरशब्दोदय ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय स्वाहा। ॐ नमो हनुमते एहिएहिएहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दयमर्दय छेदयच्छेदय मर्त्यान्मारयमारय शोषयशोषय प्रज्वलप्रज्वल भूतमण्डलपिशाचमण्डलनिरसनाय भूतज्वरप्रेतज्वरचातुर्थिकज्वरब्रह्मराक्षसपिशाचच्छेदनक्रियाविष्णुज्वरमहेशज्वरान् छिन्धिछिन्धि भिन्धिभिन्धि अक्षिशूले शिरोभ्यन्तरे ह्यक्षिशूले गुल्मशूले पित्तशूले ब्रह्मराक्षसकुलप्रबलनागकुलविनिर्विषझटितिझटिति ॐ ह्रीं फट् घेघे स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पवनपुत्रवैश्वानरमुखपापदृष्टिषोढाहष्टिहनुमते का आज्ञा फुरे स्वाहा स्वगृहे द्वारे पट्टके तिष्ठतिष्ठेति तत्र रोगभयं राजकुलभयं नास्ति तस्योच्चारणमात्रेण सर्वे ज्वरा नश्यन्ति ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं घेघे स्वाहा।

हनुमत्कवच : श्रीरामचन्द्र उवाच। हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥ १॥ उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः। अधस्तुविष्णुभक्तश्च पातु मध्यं तु पावनिः॥ २॥ लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्। सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः॥ ३॥ भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्। नेत्रे छायापहारी च पावनः प्लवगेश्वरः॥ ४॥ कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः। नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः॥ ५॥ वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिङ्गललोचनः। पातु देवः फाल्गुनेष्टश्चुबुकं दैत्यदर्पहा॥ ६॥ पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः। भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः॥ ७॥ नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः। वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः॥ ८॥ लङ्काविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्। नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः॥ ९॥ गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंगं पातु शिवप्रियः। ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः॥ १०॥ जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः। अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः॥ ११॥ अङ्गान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा। सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवित्॥ १२॥

हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान्विचक्षणः। स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥ १३॥ त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं नरः। सर्वान् रिपून्क्षणाज्जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्॥ १४॥ मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि। क्षयापस्मारकुष्ठादितापत्रयनिवारणः॥ १५॥ अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्। अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा॥ १६॥ बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगताम्। सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्॥१७॥ मारणं वैरिणां सद्यः शरणं सर्वसम्पदाम्। शोकस्य हरणे दक्षं वन्दे तं रणदारुणम्॥१८॥ लिखित्वा पूजयेद्यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्। यः करे धारयेन्नित्यं स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात्॥ १९॥ स्थित्वा तु बन्धने यस्तु जपं कारयति द्विजैः। तत्क्षणान्मुक्तिमाप्नोति निगडात्तु तथैव च॥ २०॥ य इदं प्रातरुत्थाय पठेच्च कवचं सदा। आयुरारोग्यसन्तानैस्तस्य स्तव्यः स्तवो भवेत्॥२१॥ इदं पूर्वं पठित्वा तु रामस्य कवचं ततः। पठनीयं नरैर्भक्त्या नैकमेव पठेत्कदा॥ २२॥ हनुमत्कवचं चात्र श्रीरामकवचं विना। ये पठन्ति नराश्चात्र पठनं तद्वृथा भवेत्॥ २३॥ तस्मात्सर्वैः पठनीयं सर्वदा कवचद्वयम्। रामस्य वायुपुत्रस्य सद्भक्तैश्च विशेषतः॥ २४॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे श्रीरामकृतैकमुखिहनुमत्कवच समाप्तम्॥ १॥

जो भी विचक्षण विद्वान् इस हनुमत्कवच का पाठ करता है, वही सब पुरुषों में श्रेष्ठ होता है और सारी भुक्ति-मुक्ति उसी को मिलती है। जो मनुष्य तीन महीने तक तीनों काल अथवा एक ही काल में इस हनुमत्कवच का पाठ करता है, वह सब शत्रुओं को पराजित करके अतुल लक्ष्मी का भण्डार प्राप्त करता है। यदि आधी रात के समय जल में खड़ा होकर सात बार इस

कवच का पाठ करे तो क्षय, अपस्मार, कुष्ठ एवं दैहिक, दैविक और भौतिक ये तीनों प्रकार के ताप दूर हो जाते हैं। जो मनुष्य रविवार को पीपल के नीचे बैठकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है और वह विजयी होता है। बुद्धि, बल, यश, धैर्य, निर्भयत्व, आरोग्यता, दृढ़ता और वाक्चापल्य, ये सब हनुमान्जी के ध्यान से प्राप्त हो सकते हैं। जो सब वैरियों को मारनेवाले और सब सम्पत्तियों के निधान हैं, जो शोक का अपहरण करने में अतिशय कुशल हैं, मैं उन रणदारुण हनुमान्जी को प्रणाम करता हूं। जो मनुष्य लिखकर इस कवच का पूजन करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है और जो अपनी भुजाओं में हमेशा बांधे रहता है उसे लक्ष्मी प्राप्त होती है। यदि प्राणी किसी तरह बन्धन में पड़ गया हो तो ब्राह्मणों द्वारा इस कवच का जप कराने से तत्क्षण बन्धन से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य सबेरे उठकर सदा इस कवच का पाठ करता है, उसे आयु-आरोग्य और सन्तान आदि सब वस्तुयें प्राप्त हो जाती हैं और सब लोग उसकी स्तुति करने लग जाते हैं। पहले इसका पाठ करके ही भक्तिपूर्वक श्रीरामकवच का पाठ करना चाहिये। अकेले किसी भी कवच का पाठ न करे। जो लोग हनुमत्कवच का पाठ किये बिना रामकवच का पाठ करेंगे, उनका वह पाठ व्यर्थ हो जायगा। इसलिए सब लोगों को चाहिये कि सदा दोनों कवचों का पाठ किया करें। राम के भक्त तो इस बातपर विशेष ध्यान रक्खें।

अथ शत्रुघ्नकवचप्रारम्भः।

शत्रुघ्नं धृतकार्मुकं धृतमहातूणीरबाणोत्तमं पार्श्वे श्रीरघुनन्दनस्य विनयाद्वामे स्थितं सुन्दरम्। रामं स्वीयकरेण तालदलजं धृत्वाऽतिचित्रं वरं सूर्याभं व्यजनं सभास्थितमहं तं बीजयन्तं भजे ॥ १ ॥

विनियोग : अस्य श्रीशत्रुघ्नकवचमन्त्रस्य अगस्तिर्ऋषिः। श्रीशत्रुघ्नो देवता। अनुष्टुप्छन्दः। सुदर्शन इति बीजम्। कैकेयीनन्दन इति शक्तिः। श्रीभरतानुज इति कीलकम्। भरतमन्त्रीत्यस्त्रम्। श्रीरामदास इति कवचम्। लक्ष्मणांशज इति मन्त्रः। श्रीशत्रुघ्नप्रीत्यर्थं सकलमनः-कामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास : ॐ शत्रुघ्नाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ सुदर्शनाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ भरतानुजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ भरतमन्त्रिणे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ रामदासाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ शत्रुघ्नाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ सुदर्शनाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ भरतानुजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ भरतमन्त्रिणे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ रामदासाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

इस प्रकार न्यासादि करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। रामस्य संस्थितं वामे पार्श्वे विनयपूर्वकम्। कैकेयीनन्दनं सौम्यं मुकुटेनातिरञ्जितम् ॥ १ ॥ रत्नकङ्कणकेयूरवनमालाविराजितम्। रशनाकुण्डलधरं रत्नहारसुनूपुरम् ॥ २ ॥ व्यजनेन वीजयन्तं जानकीकान्तमादरात्। रामन्यस्तेक्षणं वीरं कैकेयीतोषवर्द्धनम् ॥ ३ ॥ द्विभुजं कञ्जनयनं दिव्यपीताम्बरान्वितम्। सुभुजं सुन्दरं मेघश्यामलं सुन्दराननम् ॥ ४ ॥ रामवाक्ये दत्तकर्णं रक्षोघ्नं खड्गधारिणम्। धनुर्बाणधरं श्रेष्ठं धृततूणीरमुत्तमम् ॥ ५ ॥ सभायां संस्थितं रम्यं कस्तूरीतिलकाङ्कितम्। मुकुटस्थावतंसेन शोभितं च स्मिताननम् ॥ ६ ॥ रविवंशोद्भवं दिव्यरूपं दशरथात्मजम्। मथुरावासिनं देवं लवणासुरमर्दनम् ॥ ७ ॥

इति ध्यात्वा तु शत्रुघ्नं रामपादेक्षणं हृदि। पठनीयं वरं चेदं कवचं तस्य पावनम् ॥ ८ ॥

श्रीराम के चरणों में नेत्र लगाये हुये शत्रुघ्नजी का ध्यान करके इस उत्तम शत्रुघ्नकवच का पाठ करना चाहिये।

पूर्वे त्ववतु शत्रुघ्नः पातु याम्ये सुदर्शनः। कैकेयीनन्दनः पातु प्रतीच्यां सर्वदा मम ॥ ९ ॥ पातूदीच्यां रामबन्धुः पात्वधो भरतानुजः। रविवंशोद्भवश्चोर्ध्वं मध्ये दशरथात्मजः ॥ १० ॥ सर्वतः पातु मामत्र कैकेयीतोषवर्द्धनः। श्यामलाङ्गः शिरः पातु भालं श्रीलक्ष्मणांशजः ॥११॥ भ्रुवोर्मध्ये सदा पातु सुमुखोऽत्रावनीतले। श्रुतकीर्तिपतिर्नेत्रे कपोले पातु राघवः ॥ १२ ॥ कर्णौ कुण्डलकर्णोऽव्यान्नासाग्रं नृपवंशजः। मुखं मम युवा पातु पातु वाणीं स्फुटाक्षरः ॥ १३ ॥ जिह्वां सुबाहुतातोऽव्याद्यूपकेतुपिता द्विजान्। चुबुकं रम्यचुबुकः कण्ठं पातु सुभाषणः ॥ १४ ॥ स्कन्धौ पातु महातेजा भुजौ राघववाक्यकृत्। करौ मे कङ्कणधरः पातु खड्गी नखान्मम ॥ १५ ॥ कुक्षी रामप्रियः पातु पातु वक्षो रघूत्तमः। पार्श्वे सुरार्चितः पातु पातु पृष्ठं वराननः ॥ १६ ॥ जठरं पातु रक्षोघ्नः पातु नाभिं सुलोचनः। कटी भरतमन्त्री मे गुह्यं श्रीरामसेवकः ॥ १७ ॥ रामार्पितमनाः पातु लिङ्गमूरू स्मिताननः। कोदण्डधारी पात्वत्र

जानुनी मम सर्वदा ॥ १८ ॥ राममित्रः पातु जङ्घे गुल्फौ पातु सुनूपुरः । पादौ नृपतिपूज्योऽव्याच्छ्रीमान्पादांगुलीर्मम ॥ १९ ॥ पात्वङ्गानि समस्तानि ह्युदारांगः सदा मम । रोमाणि रमणीयोऽव्याद्रात्रौ पातु सुधार्मिकः ॥ २० ॥ दिवा मे सत्यसन्धोऽव्याद्भोजने शरसत्करः । गमने कलकण्ठोऽव्यात्सर्वदा लवणान्तकः ॥ २१ ॥

एवं शत्रुघ्नकवचं मया ते समुदीरितम् । ये पठन्ति नरास्त्वेतत्ते नराः सौख्यभागिनः ॥ २२ ॥ शत्रुघ्नस्य वरं चेदं कवचं मङ्गलप्रदम् । पठनीयं नरैर्भक्त्या पुत्र पौत्रप्रवर्द्धनम् ॥ २३ ॥ अस्य स्तोत्रस्य पाठेन यंयं कामं नरोऽर्थयेत् । तंतं लभेन्निश्चयेन सत्यमेतद्वचो मम ॥२४॥ पुत्रार्थी प्राप्नुयात्पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात् । इच्छाकामं तु कामार्थी प्राप्नुयात्पठनादिना ॥ २५ ॥ कवचस्यास्य भूम्यां हि शत्रुघ्नस्य विनिश्चयात् । तस्मादेतत्सदा भक्त्या पठनीयं नरैः शुभम् ॥ २६ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसम्वादे शत्रुघ्नकवचं समाप्तम् ॥ २ ॥

इस तरह मैंने तुम्हें शत्रुघ्नकवच कह सुनाया। जो लोग भक्तिपूर्वक इसका पाठ करते हैं, वे सुखभागी होते हैं। यह कवच बड़ा सुन्दर, मङ्गलप्रद तथा पुत्र-पौत्र को बढ़ानेवाला है। इस स्तोत्र का पाठ करनेवाला प्राणी जो-जो वस्तुयें चाहता है, उन्हें अवश्य पाता है। मेरी बात सच मानो। इसमें कोई संशय नहीं है। पुत्र चाहनेवाला पुत्र, धन चाहनेवाला धन तथा जो प्राणी जो भी चाहता है, सो उसे मिलता है। इस भूमण्डल में शत्रुघ्नकवच बड़ा उत्तम है। अतएव मनुष्य को अवश्य इसका पाठ करना चाहिये। श्रीमदानन्दरामायण में सुतीक्ष्ण-अगस्त्य संवादोक्त शत्रुघ्नकवच समाप्त।

अथ भरतकवचप्रारम्भः । अतः परं भरतस्य कवचं ते वदाम्यहम् । सर्वपापहरं पुण्यं सदा श्रीरामभक्तिदम् ॥ १ ॥ कैकेयीतनयं सदा रघुवरन्यस्तेक्षणं श्यामलं सप्तद्वीपपतेर्विदेहतनयाकान्तस्य वाक्ये रतम् । श्रीसीताधवसव्यपार्श्वनिकटे स्थित्वा वरं चामरं धृत्वा दक्षिणसत्करेण भरतं तं वीजयन्तं भजे ॥ २ ॥

अब मैं तुम्हें श्रीभरतजी का कवच बताऊँगा, जो पापों को हरनेवाला, पवित्र एवं श्रीरामचन्द्र की भक्ति देनेवाला है। मैं उन भरतजी की वन्दना करता हूं, जो श्रीरामचन्द्रजी की ओर निहार रहे हैं, जिनका श्याम स्वरूप है, जो सातों द्वीपों के अधिपति तथा रामचन्द्रजी की आज्ञा में तत्पर रहते हैं, जो राम की दाहिनी ओर बैठकर दाहिने हाथ से सुन्दर चमर हाँक रहे हैं—उन भरतजी का मैं ध्यान करता हूं।

विनियोग : अस्य श्रीभरतकवचमन्त्रस्यागस्त्य ऋषिः । श्रीभरतो देवता । अनुष्टुप्छन्दः । शङ्ख इति बीजम् । कैकेयीनन्दन इति शक्तिः । भरतखण्डेश्वर इति कीलकम् । रामानुज इत्यस्त्रम् । सप्तद्वीपेश्वरदास इति कवचम् । रामांशज इति मन्त्रः । श्रीभरतप्रीत्यर्थं सकलमनोरथसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

करन्यास : ॐ भरताय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ शङ्खाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ भरतखण्डेश्वराय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामानुजाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ सप्तद्वीपेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ भरताय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शङ्खाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ कैकेयीनन्दनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ भरतखण्डेश्वराय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ रामानुजाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ सप्तद्वीपेश्वराय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ रामांशजाय चेति दिग्बन्धः ॥ ७ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम् । ॐ रामचन्द्रसव्यपार्श्वे स्थितं केकयजासुतम् । रामाय चामरेणैव बीजयन्तं मनोरमम् ॥ १ ॥ रत्नकुण्डलकेयूरकङ्कणादिसुभूषितम् । पीताम्बरपरीधानं वनमालाविराजितम् ॥ २ ॥ माण्डवीधौतचरणं रशनानूपुरान्वितम् । नीलोत्पलदलश्यामं द्विजराजसमाननम् ॥ ३ ॥ आजानुबाहुं भरतखण्डस्य प्रतिपालकम् । रामानुजं स्मितास्यं च शत्रुघ्नपरिवन्दितम् ॥ ४ ॥ रामन्यस्तेक्षणं सौम्यं विद्युत्पुञ्जसमप्रभम् । रामभक्तं महावीरं वन्दे तं भरतं शुभम् ॥ ५ ॥

एवं ध्यात्वा तु भरतं रामपादेक्षणं हृदि । कवचं पठनीयं हि भरतस्येदमुत्तमम् ॥ ६ ॥

इस प्रकार ध्यान करके थोड़ी देर तक रामचन्द्रजी के चरणों का स्मरण करें। उसके बाद इस भरतकवच का पाठ करे।

ॐ पूर्वतो भरतः पातु दक्षिणे कैकयीसुतः । नृपात्मजः प्रतीच्यां हि पातूदीच्यां रघूत्तमः ॥ १ ॥ अधः पातु श्यामलाङ्गश्चोर्ध्वं दशरथात्मजः । मध्ये भारतवर्षेशः सर्वतः सूर्यवंशजः ॥ २ ॥ शिरस्तक्षपिता पातु भालं पातु हरिप्रियः । भ्रुवोर्मध्यं जनकजावाक्यैकतत्परोऽवतु ॥ ३ ॥ पातु जनकजामाता मम नेत्रे सदाऽत्र हि । कपोलौ माण्डवीकान्तः कर्णमूले स्मिताननः ॥ ४ ॥ नासाग्रं मे सदा पातु कैकेयीतोषवर्द्धनः । उदाराङ्गो

मुखे पातु वाणीं पातु जटाधरः ॥ ५ ॥ पातु पुष्करतालो मे जिह्वां दन्तान् प्रभामयः । चुबुकं वल्कलधरः कण्ठं पातु वराननः ॥ ६ ॥ स्कन्धौ पातु जितारातिर्भुजौ शत्रुघ्नवन्दितः । करौ कवचधारी च नखान् खड्गधरोऽवतु ॥ ७ ॥ कुक्षौ रामानुजः पातु वक्षः श्रीरामवल्लभः । पार्श्वे राघवपार्श्वस्थः पातु पृष्ठं सुभाषणः ॥ ८ ॥ जठरं च धनुर्धारी नाभिं शरकरोऽवतु । कटिं पद्मेक्षणः पातु गुह्यं रामैकमानसः ॥ ९ ॥ राममित्रः पातु लिङ्गमूरू श्रीरामसेवकः । नन्दिग्रामस्थितः पातु जानुनि मम सर्वदा ॥१०॥ श्रीराम पादुकाधारी पातु जङ्घे सदा मम । गुल्फौ श्रीरामबन्धुश्च पादौ पातु सुरार्चितः ॥११॥ रामाज्ञापालकः पातु ममाङ्गान्यत्र सर्वदा । मम पादांगुलीः पातु रघुवंशसुभूषणः ॥ १२ ॥ रोमाणि पातु मे रम्यः पातु रात्रौ सुधीमेम । तूणीरधारी दिवसं दिक्पातु मम सर्वदा ॥ १३ ॥ सर्वकालेषु मां पातु पाञ्चजन्यः सदा भुवि ।

एवं श्रीभरतस्येदं सुतीक्ष्णकवचं शुभम् ॥१४॥ मया प्रोक्तं तवाग्रे हि महामङ्गलकारकम् । स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रमिदं ज्ञेयं सुपुण्यदम् ॥ १५ ॥ पठनीयं सदा भक्त्या रामचन्द्रस्य हर्षदम् । पठित्वा भरतस्येदं कवचं रघुनन्दनः ॥ १६ ॥ यथा याति परं तोषं तथा स्वकवचेन न । तस्मादेतत्सदा जप्यं कवचानामनुत्तमम् ॥ १७ ॥ अस्यात्र पठनान्मर्त्यः सर्वान्कामानवाप्नुयात् । विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ १८ ॥ पत्नीकामो लभेत् पत्नीं धनार्थी धनमाप्नुयात् । यद्यन्मनोभिलषितं तत्तत्कवचपाठतः ॥ १९ ॥ लभ्यते मानवैरत्र सत्यंसत्यं वदाम्यहम् । तस्मात्सदा जपनीयं रामोपासकमानवैः ॥२०॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसम्वादे श्रीभरतकवचं समाप्तम् । ३ ॥

इस प्रकार मैंने तुम्हें श्रीभरतजी का कवच कह सुनाया। यह बड़ा मङ्गलकारी, सब स्तोत्रों में उत्तम और भलीभाँति पुण्यदाता है। लोगों को चाहिये कि श्रीरामचन्द्रजी को आनन्द देनेवाले इस भरतकवच का पाठ करके ही रामकवच का पाठ किया करें। इस कवच के पाठ से रामचन्द्र जितने प्रसन्न होते हैं, उतने अपने कवच अर्थात् रामकवच का पाठ सुनकर नहीं प्रसन्न होते। इस कारण लोगों को चाहिये कि सब कवचों में श्रेष्ठ इस कवच का पाठ अवश्य करें। इस कवच का पाठ करने से प्राणी सब कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। विद्या की कामनावाला विद्या, पुत्र की इच्छा रखनेवाला पुत्र, पत्नी चाहनेवाला पत्नी और धनार्थी धन प्राप्त करता है। इस तरह उसे जिस किसी वस्तु की इच्छा होती है, वह सब इस कवच के पाठ से प्राप्त हो

जाती है। यह बात मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं—झूठ कुछ भी नहीं। राम की उपासना करनेवालों को चाहिये कि सदा इस कवच का पाठ किया करें।

अथ लक्ष्मणकवचप्रारम्भः। अगस्त्य उवाच। सौमित्रि रघुनायकस्य चरणद्वन्द्वेक्षणं श्यामलं बिभ्रन्तं स्वकरेण रामशिरसिच्छत्रं विचित्राम्बरम्। बिभ्रन्तं रघुनायकस्य सुमहत्कोदण्डबाणासने तं वन्दे कमलेक्षणं जनकजावाक्ये सदा तत्परम् ॥ १ ॥

अगस्त्यजी ने कहा : मैं उन लक्ष्मणजी की वन्दना करता हूं, जो सदा रघुनाथजी के दोनों चरणकमल देखा करते हैं, जो अपने हाथ से श्रीरामचन्द्र के सिरपर छत्र की छाया किये रहते हैं, जो कन्धे पर रामचन्द्रजी का धनुष धारण किये रहते हैं, जो सर्वदा जानकीजी की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहते हैं और कमल के समान जिनकी आँखें हैं।

विनियोग : अस्य श्रीलक्ष्मणकवचमन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीलक्ष्मणो देवता। शेष इति बीजम्। सुमित्रानन्दन इति शक्तिः। रामानुज इति कीलकम्। रामदास इत्यस्त्रम्। रघुवंशज इति कवचम्। सौमित्रिरिति मन्त्रः। श्रीलक्ष्मणप्रीत्यर्थं सकलमनोभिलषितसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास : ॐ लक्ष्मणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ शेषाय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ सुमित्रानन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रामानुजाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ रामदासाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ रघुवंशजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ लक्ष्मणाय हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शेषाय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सुमित्रानन्दनाय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ रामानुजाय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ रामदासाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ रघुवंशजाय अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ॐ सौमित्रये इति दिग्बन्धः ॥ ७ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्। रामपृष्ठस्थितं रम्यं रत्नकुण्डलधारिणम्। नीलोत्पलदलश्यामं रत्नकङ्कणमण्डितम् ॥ १ ॥ रामस्य मस्तके दिव्यं बिभ्रतं छत्रमुत्तमम्। वरपीताम्बरधरं मुकुटेनातिशोभितम् ॥ २ ॥ तूणीरं कार्मुकं चापि बिभ्रन्तं च स्मिताननम्। रत्नमालाधरं दिव्यं पुष्पमालाविराजितम् ॥ ३ ॥

एवं ध्यात्वा लक्ष्मणं च राघवन्यस्तलोचनम् । कवचं जपनीयं हि ततो भक्त्याऽत्र मानवैः ॥ ४ ॥

इस प्रकार रामचन्द्रजी पर दृष्टि लगाये लक्ष्मणजी का ध्यान करके लोगों को चाहिये कि भक्तिपूर्वक लक्ष्मणकवच का पाठ करें।

लक्ष्मणः पातु मे पूर्वे दक्षिणे राघवानुजः । प्रतीच्यां पातु सौमित्रिः पातूदीच्यां रघूत्तमः ॥ ५ ॥ अधः पातु महावीरश्चोर्ध्वं पातु नृपात्मजः । मध्ये पातु रामदासः सर्वत्रः सत्यपालकः ॥ ६ ॥ स्मिताननः शिरः पातु भालं पातूर्मिलाधवः । भ्रुवोर्मध्ये धनुर्धारी सुमित्रानन्दनोऽक्षिणी ॥ ७ ॥ कपोले राममन्त्री च सर्वदा पातु वै मम । कर्णमूले सदा पातु कबन्धभुजखण्डनः ॥ ८ ॥ नासाग्रं मे सदा पातु सुमित्रानन्दनवर्धनः । रामन्यस्तेक्षणः पातु सदा मेऽत्र मुखं भुवि ॥ ९ ॥ सीतावाक्यकरः पातु मम वाणीं सदाऽत्र हि । सौम्यरूपः पातु जिह्वामनन्तः पातु मे द्विजान् ॥ १० ॥ चिबुकं पातु रक्षोघ्नः कण्ठं पात्वसुरार्दनः । स्कन्धौ पातु जितारातिर्भुजौ पङ्कजलोचनः ॥ ११ ॥ करौ कङ्कणधारी च नखान् रक्तनखोऽवतु । कुक्षिं पातु विनिद्रो मे वक्षः पातु जितेन्द्रियः ॥ १२ ॥ पार्श्वे राघवपृष्ठस्थः पृष्ठदेशं मनोरमः । नाभिं गम्भीरनाभिस्तु कटिं च रुक्ममेखलः ॥ १३ ॥ गुह्यं पातु सहस्रास्यः पातु लिङ्गं हरिप्रियः । ऊरू पातु विष्णुतुल्यः सुमुखोऽवतु जानुनि ॥ १४ ॥ नागेन्द्रः पातु मे जङ्घे गुल्फौ नूपुरवान्मम । पादावङ्गदतातोऽव्यात्पात्वंगानि सुलोचनः ॥ १५ ॥ चित्रकेतुपिता पातु मम पादांगुलीः सदा । रोमाणि मे सदा पातु रविवंशसमुद्भवः ॥ १६ ॥ दशरथसुतः पातु निशायां मम सादरम् । भूगोलधारी मां पातु दिवसे दिवसे सदा ॥ १७ ॥ सर्वकालेषु मामिन्द्रजिद्धन्ताऽवतु सर्वदा । एवं सौमित्रि कवचं सुतीक्ष्ण कथितं मया ॥ १८ ॥

इदं प्रातः समुत्थाय ये पठन्त्यत्र मानवाः । ते धन्या मानवा लोके तेषां च सफलो भवः ॥ १९ ॥ सौमित्रेः कवचस्यास्य पठनान्निश्चयेन हि । पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् ॥ २० ॥ पत्नीकामो लभेत्पत्नीं गोधनार्थी तु गोधनम् । धान्यार्थी प्राप्नुयाद्धान्यं राज्यार्थी राज्यमाप्नुयात् ॥ २१ ॥ पठितं रामकवचं सौमित्रिकवचं विना । घृतेन हीनो नैवेद्यस्तेन दत्तो न संशयः ॥ २२ ॥ केवलं रामकवचं पठितं मानवैर्यदि । तत्पाठेन तु सन्तुष्टो न भवेद्रघुनन्दनः ॥ २३ ॥ अतः प्रयत्नतश्चेदं सौमित्रिकवचं नरैः । पठनीयं सर्वदैव सर्ववांछितदायकम् ॥ २४ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीलक्ष्मणकवचं समाप्तम् ॥ ४ ॥

जो लोग सबेरे उठकर इस कवच का पाठ करते हैं, वे मनुष्य धन्य हैं और उनका जन्म सफल है। लक्ष्मणजी के इस कवच का पाठ करने से पुत्रार्थी पुत्र तथा धनार्थी धन पाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। पत्नी की कामनावाला प्राणी पत्नी, गोधन चाहनेवाला गोधन, धान्य का इच्छुक धान्य और राज्य की इच्छा रखनेवाला राज्य पाता है। बिना लक्ष्मणकवच का पाठ किये रामकवच का पाठ उसी तरह व्यर्थ जाता है, जिस तरह घी के बिना नैवेद्य लगाया जाना। केवल रामकवच का पाठ करने से रामचन्द्रजी विशेष प्रसन्न नहीं होते। इसलिये लोगों को चाहिये कि प्रयत्न करके सब प्रकार की कामना पूर्ण करनेवाले इस लक्ष्मणकवच का पाठ अवश्य करें।

अथ सीताकवचप्रारम्भः । या सीताऽवनिसम्भवाऽथ मिथिलापालेन संवर्द्धिता पद्माक्षनृपतेः सुताऽनलगता या मातुलुङ्गोद्भवा । या रत्ने लयमागता जलनिधौ या वेदवारं गता लङ्कां सा मृगलोचना शशिमुखी मां पातु रामप्रिया ॥ १ ॥

जो सीता पृथ्वी से उत्पन्न हुईं और मिथिलानरेश के द्वारा पाली-पोसी गयीं, जो मातुलुङ्ग से उत्पन्न होकर पद्माक्ष नामक राजा की पुत्री कही गयीं, जो समुद्र के रत्नों में लीन हुईं और चार बार लङ्का गयीं, ऐसी चन्द्रवदनी, मृगनयनी और रामकी प्रेयसी सीता मेरी रक्षा करें।

विनियोग : अस्य श्रीसीताकवचस्तोत्रमन्त्रस्य अगस्तिर्ऋषिः । श्रीसीता देवता । अनुष्टुप्छन्दः । रामेति बीजम् । जनकजेति शक्तिः । अवनिजेति कीलकम् । पद्माक्षसुतेत्यस्त्रम् । मातुलुङ्गीति कवचम् । मूलकासुरघातिनीति मन्त्रः । श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं च जपे विनियोगः ।

करन्यास : ॐ ह्रां सीतायै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रमायै तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं जनकजायै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं अवनिजायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रः मातुलुङ्ग्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां सीतायै हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं रमायै शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं जनकजायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ह्रैं अवनिजायै कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ह्रौं पद्माक्षसुतायै नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रः मातुलुंग्यै अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान।

अथ ध्यानम्। ॐ सीतां कमलपत्राक्षीं विद्युत्पुञ्जसमप्रभाम्। द्विभुजां सुकुमाराङ्गीं पीतकौशेयवासिनीम् ॥ १ ॥ सिंहासने रामचन्द्रवामभाग स्थितां वराम्। नानालङ्कारसंयुक्तां कुण्डलद्वयधारिणीम् ॥ २ ॥ चूडा-कङ्कणकेयूररशनानूपुरान्विताम्। सीमान्ते रविचन्द्राभ्यां निटिले तिलकेन च ॥ ३ ॥ नूपुराभरणेनापि घ्राणेऽतिशोभितां शुभाम्। हरिद्रां कज्जलं दिव्यं कुंकुमं कुसुमानि च ॥४॥ बिभ्रतीं सुरभिद्रव्यं सुगन्धस्नेहमुत्तमम्। स्मिताननां गौरवर्णां मन्दारकुसुमं करे ॥ ५ ॥ बिभ्रतीमपरे हस्ते मातु-लिङ्गमनुत्तमम्। रम्यहासां च बिम्बोष्ठीं चन्द्रवाहनलोचनाम् ॥ ६ ॥ कलानाथसमानास्यां कलकण्ठमनोरमाम्। मातुलुङ्गोद्भवां देवीं पद्माक्ष-दुहितां शुभाम् ॥ ७ ॥ मैथिलीं रामदयितां दासीभिः परिवीजिताम्।

एवं ध्यात्वा जनकजां हेमकुम्भपयोधराम् ॥ ८ ॥

सुवर्ण कलश के समान स्तनोंवाली जनकपुत्री सीता का इस प्रकार ध्यान करके कवच का पाठ करे।

श्रीसीता पूर्वतः पातु दक्षिणेऽवतु जानकी। प्रतीच्यां पातु वैदेही पातूदीच्यां च मैथिली ॥ ९ ॥ अधः मातुलुङ्गी ऊर्ध्वं पद्माक्षजाऽवतु। मध्येऽवनिसुता पातु सर्वतः पातु मां रमा ॥ १० ॥ स्मितानना शिरः पातु पातु भालं नृपात्मजा। पद्माऽवतु भ्रुवोर्मध्ये मृगाक्षी नयनेऽवतु ॥११॥ कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामवल्लभा। नासाग्रं सात्त्विकी पातु पातु वक्त्रं तु राजसी ॥ १२ ॥ तामसी पातु मद्वाणीं पातु जिह्वां पतिव्रता। दन्तान् पातु महामाया चिबुकं कनकप्रभा ॥ १३ ॥ पातु कण्ठं सौम्यरूपा स्कन्धौ पातु सुरार्चिता। भुजौ पातु वरारोहे करौ कङ्कण-मण्डिता ॥ १४ ॥ नखान् रक्तनखा पातु कुक्षौ पातु लघूदरा। वक्षः पातु रामपत्नी पार्श्वे रावणमोहिनी ॥ १५ ॥ पृष्ठदेशे वह्निगुप्ताऽवतु मां सर्वदैव हि। दिव्यप्रदा पातु नाभिं कटिं राक्षसमोहिनी ॥ १६ ॥ गुह्यं पातु रत्न-गुप्ता लिङ्गं पातु हरिप्रिया। ऊरू रक्षतु रम्भोरूर्जानुनी प्रियभाषिणी ॥ १७ ॥ जङ्घे पातु सदा सुभ्रूर्गुल्फौ चामरवीजिता। पादौ लवसुता पातु पात्वङ्गानि कुशाम्बिका ॥ १८ ॥ पादांगुलीः सदा पातु मम नूपुर-निःस्वना। रोमाण्यवतु मे नित्यं पीतकौशेयवासिनी ॥ १९ ॥ रात्रौ पातु कालरूपा दिने दानैकतत्परा। सर्वकालेषु मां पातु मूलकासुर-घातिनी ॥ २० ॥

एवं सुतीक्ष्ण सीतायाः कवचं ते मयेरितम्। इदं प्रातः समुत्थाय

स्नात्वा नित्यं पठेत्पुनः ॥ २१ ॥ जानकीं पूजयित्वा स सर्वान्कामा-नवाप्नुयात। धनार्थी प्राप्नुयाद्द्रव्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ॥ २२ ॥ स्त्रीकामार्थी शुभां नारीं सुखार्थी सौख्यमाप्नुयात्। अष्टवारं जापनीयं सीतायाः कवचं सदा ॥ २३ ॥ अष्टभ्यो विप्रवर्येभ्यो नमः प्रीत्यार्पयेत्सदा। फलपुष्पादिकादीनि यानि तानि पृथक्-पृथक ॥ २४ ॥ सीतायाः कवचं चेदं पुण्य पातकानाशनम्। ये पठन्ति नरा भक्त्या ते धन्या मानवा भुवि ॥ २५ ॥ पठन्ति रामकवचं सीतायाः कवचं विना। तथा विना लक्ष्मणस्य कवचेन वृथा स्मृतम् ॥ २६ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकाण्डे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीसीतायाः कवचं समाप्तम्।

हे सुतीक्ष्ण ! इस प्रकार मैंने तुम्हें सीताकवच बतलाया। जो प्राणी सबेरे स्नान के बाद नित्य इसका पाठ करके जानकीजी की पूजा करता है, वह अपनी सब इच्छायें पूर्ण कर लेता है। धन को चाहनेवाला धन और पुत्र की अभिलाषा रखनेवाला पुत्र पाता है। स्त्री की कामनावाला सुन्दरी स्त्री और सुख चाहनेवाला सौख्य पाता है। उपासक को चाहिये कि सदा आठ बार सीता-कवच का जप करे। आठ ब्राह्मणों को फल-पुष्प आदि वस्तुयें पृथक्-पृथक् दान दे। यह सीताकवच बड़ा पवित्र और पापों का नाशक है। जो लोग भक्तिपूर्वक इसका पाठ करते हैं, वे प्राणी संसार में धन्य हैं। जो लोग सीता तथा लक्ष्मणकवच के पाठ के बिना रामकवच का पाठ करते हैं, उनका वह पाठ व्यर्थ हो जाता है। इति श्रीमदानन्दरामायण के मनोहर काण्ड में सुतीक्ष्ण-अगस्त्य संवादोक्त श्रीसीताकवच समाप्त।

अथ श्रीरामकवचप्रारम्भः।

आजानुबाहुमरविन्द दलायताक्षमाजन्म शुद्धरसहासमुखप्रसादम्। श्यामं गृहीतशरचापमुदाररूपं रामं सराममभिराममनुस्मरामि ॥ १ ॥

जानुपर्यन्त जिनके बाहु हैं, कमलदल के समान जिनके विशाल नेत्र हैं, जन्म से ही जिनका प्रसन्नमुख है, जिन्होंने धनुष और बाण को धारण कर रक्खा है, जिनका उदार रूप है, ऐसे अभिराम राम का मैं ध्यान करता हूं।

विनियोग : अस्य श्रीरामकवचस्य अगस्त्य ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। सीतालक्ष्मणोपेतः श्रीरामचन्द्रो देवता। श्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्। नीलजीमूतसङ्काशं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम्। कोमलाङ्गं विशालाक्षं युवानमतिसुन्दरम् ॥ १ ॥ सीतासौमित्रिसहितं जटा मुकुट-धारिणम्। सासितूणधनुर्बाणपाणिं दानवमर्दनम् ॥ २ ॥ सदा चोरभये

राजभये शत्रुभये तथा। ध्यात्वा रघुपतिं क्रुद्धं कालानलसमप्रभम् ॥ ३ ॥ चीरकृष्णाजिनधरं भस्मोद्धूलितविग्रहम्। आकर्णाकृष्टशरकोदण्डभुजमण्डितम् ॥ ४ ॥ रणे रिपून् रावणादींस्तीक्ष्णमार्गणवृष्टिभिः। संहरन्तं महावीरमुग्रमैन्द्ररथस्थितम् ॥५॥ लक्ष्मणाद्यैर्महावीरैर्वृतं हनुमदादिभिः। सुग्रीवाद्यैर्महावीरैः शैलवृक्षकरोद्यतैः ॥ ६ ॥ वेगात्करालहुंकारैर्भुभुक्कारमहारवैः। नदद्भिः परिवादद्भिः समरे रावणं प्रति ॥ ७ ॥ श्रीराम शत्रुसङ्घान्मे हन मर्दय खादय। भूतप्रेतपिशाचादीन् श्रीरामाशुविनाशय ॥ ८ ॥

एवं ध्यात्वा जपेद्रामकवचं सिद्धिदायकम्। सुतीक्ष्णवज्रकवचं शृणु वक्ष्याम्यनुत्तमम् ॥ ९ ॥

इस प्रकार रामचन्द्रजी का ध्यान करके सिद्धिदायक रामकवच का जप करे। अगस्त्यजी कहते हैं कि हे सुतीक्ष्ण! मैं अतिशय उत्तम वज्रकवच कहता हूं।

श्रीरामः पातु मे मूर्ध्नि पूर्वे च रघुवंशजः। दक्षिणे मे रघुवरः पश्चिमे पातु पावनः ॥ १ ॥ उत्तरे मे रघुपतिर्भाले दशरथात्मजः। भ्रुवोर्दूर्वादलश्यामस्तयोर्मध्ये जनार्दनः ॥ २ ॥ श्रोत्रं मे पातु राजेन्द्रो दृशौ राजीवलोचनः। घ्राणं मे पातु राजर्षिर्गण्डौ मे जानकीपतिः ॥ ३॥ कर्णमूले खरध्वंसी भालं मे रघुवल्लभः। जिह्वां मे वाक्पतिः पातु दन्तावली रघूत्तमः ॥ ४ ॥ औष्ठौ श्रीरामचन्द्रो मे मुखं पातु परात्परः। कण्ठं पातु जगद्वन्द्यः स्कन्धौ मे रावणान्तकः ॥ ५ ॥ धनुर्बाणधरः पातु भुजौ मे वालिमर्दनः। सर्वाण्यंगुलिपर्वाणि हस्तौ मे राक्षसान्तकः ॥ ६ ॥ वक्षो मे पातु काकुत्स्थः पातु मे हृदयं हरिः। स्तनौ सीतापतिः पातु पार्श्वं मे जगदीश्वरः ॥७॥ मध्यं मे पातु लक्ष्मीशो नाभिं मे रघुनायकः। कौसल्येयः कटिं पातु पृष्ठं दुर्गतिनाशनः ॥ ८ ॥ गुह्यं पातु हृषीकेशः सक्थिनी सत्यविक्रमः। ऊरू शार्ङ्गधरः पातु जानुनी हनुमत्प्रियः ॥ ९ ॥ जंघे पातु जगद्व्यापी पादौ मे ताडिकान्तकः। सर्वाङ्गं पातु मे विष्णुः सर्वसन्धीननामयः ॥ १० ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादीन् पातु मे मधुसूदनः। पातु श्रीरामभद्रो मे शब्दादीन्विषयानपि ॥ ११ ॥ द्विपदादीनि भूतानि मत्सम्बन्धीनि यानि च। जामदग्न्यमहादर्पदलनः पातु तानि मे ॥ १२ ॥ सौमित्रिपूर्वजः पातु वागादीनीन्द्रियाणि च। रोमांकुराण्यशेषाणि पातु सुग्रीवराज्यदः ॥ १३ ॥ वाङ्मनोबुद्ध्यहङ्कारैर्ज्ञानाज्ञानकृतानि च। जन्मान्तरकृतानीह पापानि विविधानि च ॥ १४ ॥ तानि सर्वाणि

दग्ध्वाशु हरकोदण्डखण्डनः। पातु मां सर्वतो रामः शार्ङ्गबाणधरः सदा ॥ १५ ॥

इति श्रीरामचन्द्रस्य कवचं वज्रसम्मितम्। गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम ॥ १६ ॥ यः पठेच्छृणुयाद्वापि श्रावयेद्वा समाहितः। स याति परमं स्थानं रामचन्द्रप्रसादतः ॥ १७ ॥ महापातकयुक्तो वा गोघ्नो वा भ्रूणहा तथा। श्रीरामचन्द्रकवचपठनाच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥१८॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः। भोसुतीक्ष्ण यथा पृष्टं त्वया मम पुरा शुभम्। तथा श्रीरामकवचं मया ते विनिवेदितम् ॥ १९ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकाण्डे सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे श्रीरामकवचं समाप्तम्।

यह वज्रसदृश रामकवच गुह्य से भी गुह्य है। जो प्राणी इसे पढ़ता, सुनता या दूसरों को सुनाता है, वह रामचन्द्र की कृपा से परम धाम की प्राप्ति करता है, चाहे वह महापातकी, गोघाती या भ्रूणहत्याकारी ही क्यों न हो। इस श्रीरामकवच का पाठ करने से प्राणी शुद्ध होकर ब्रह्महत्या आदि पातकों से भी मुक्त हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे सुतीक्ष्ण! जैसा तुमने मुझसे पूछा था, मैंने श्रीरामकवच तुम्हें सुना दिया।

एवं षटकवचान्यत्र पठनीयानि सर्वदा। पठनं षट्कवचानां श्रेष्ठं मोक्षैकसाधनम्। इति श्रीहनुमदादिषट्कवचप्रयोगः समाप्तः ॥ ६ ॥

इन छहों कवचों का पाठ श्रेष्ठ और मोक्ष का साधन है। ऐसा समझकर लोगों को सर्वदा इनका पाठ करते रहना चाहिये। इति श्रीहनुमदादिषट्कवचप्रयोग समाप्त ॥ ६ ॥

अथ हरिवाहनगरुडमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में पञ्चाक्षर मन्त्र इस प्रकार है।

'क्षिप ॐ स्वाहा', इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य अनन्त ऋषिः। पंक्तिच्छन्दः। पक्षीन्द्रो देवता। ॐ बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अनन्तऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिच्छन्दसे नमः। मुखे ॥ २ ॥ पक्षीन्द्रदेवतायै नमः। हृदि ॥ ३ ॥ ॐ बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ४ ॥ स्वाहाशक्तये नमः। पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ज्वलज्वल महामते स्वाहा हृदये ॥ १ ॥ ॐ गरुडचूडानने स्वाहा शिरसि ॥ २ ॥ ॐ गरुडशिखे स्वाहा शिखायै वषट्

॥३॥ ॐ गरुड प्रभञ्जयप्रभञ्जय प्रभेदयप्रभेदय त्रासयत्रासय विमर्दयविमर्दय स्वाहा कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषयभीषय सर्वं दहदह भस्मीकुरुकुरु स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

करन्यास । ॐ ज्वलज्वल महामते स्वाहा अंगुष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ गरुड चूडानने स्वाहा तर्जन्योः ॥ २ ॥ ॐ गरुडशिखे स्वाहा मध्यमयोः ॥ ३ ॥ ॐ गरुडप्रभञ्जयप्रभञ्जय प्रभेदयप्रभेदय विमर्दयविमर्दय स्वाहा अनामिकयोः ॥४॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषयभीषय सर्वं दहदह भस्मी कुरुकुरु स्वाहा कनिष्ठयोः ॥ ५ ॥ ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् करतलकरपृष्ठयोः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ क्षिं नमः पादयोः ॥ १ ॥ ॐ पं नमः कटचोः ॥२॥ ॐ ॐ नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ स्वां नमः वक्त्रे ॥ ४ ॥ ॐ हां नमः मूर्ध्नि ॥५॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ **ध्यानम्** । सप्तस्वर्णनिभं फणीन्द्रनिकरैः क्लृप्ताङ्गभूषं प्रभुं स्मर्तॄणां शमयन्तमुग्रमखिलं नृणां विषं तत्क्षणात् । चञ्च्वग्रप्रचलद्भुजंगमभयं पञ्चोर्वरं बिभ्रतं पक्षोच्चारितसामगीतममलं श्रीपक्षिराजं भजे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर 'ॐ पक्षिराजाय स्वाहा' इस मन्त्र से मातृकापद्मपीठपर आसन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके पुनः ध्यान करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (गरुड पूजन यन्त्र देखिये चित्र ४०) । पुष्पाञ्जलि लेकर:

'ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः । अनुज्ञां देहि गरुड परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे । इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में :

ॐ ज्वलज्वल महामते स्वाहा[१] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ गरुडचूडानने स्वाहा[२] । शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥

ॐ गरुडशिखे स्वाहा[३] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ गरुड प्रभञ्जयप्रभञ्जय प्रभेदयप्रभेदय त्रासयत्रासय विमर्दयविमर्दय स्वाहा[४] । वर्मश्रीपा० ॥४॥ ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषयभीषय सर्वं दहदह भस्मीकुरुकुरु स्वाहा[५] । नेत्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् स्वाहा[६] । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥'

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से दक्षिणावर्त :

ॐ अनन्ताय नमः[७] । अनन्तश्रीपा० ॥१॥ ॐ वासुकये नमः[८] । वासुकिश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तक्षकाय नमः[९] । तक्षकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कर्कोटकाय नमः[१०] । कर्कोटकश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्माय नमः[११] । पद्मश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ महापद्माय नमः[१२] । महापद्मश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शङ्खपालाय नमः[१३] । शङ्खपालश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कुलिकाय नमः[१४] । कुलिकश्रीपा० ॥ ८ ॥

इत्यष्टौ नागान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥

इससे आठ नागों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ।२।

ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं पञ्चलक्षजपः । तद्दशांशतस्तिलाज्यहोमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च । 'पञ्चलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः । पूजयेन्मातृकापद्मे गरुडं वेदविग्रहम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनौ मन्त्री नाशयेद्गरलद्वयम् । विष्णुभक्तिपरो नित्यं यो भजेत्पक्षिनायकम् ॥ २ ॥ शत्रून्सर्वान्पराभूय सुखी भोगसमन्वितः । जीवेदनेकवर्षाणि सेवितो धरणीधवैः । कलेव-

शान्ते श्रीनाथसायुज्यं लभते तु सः ॥ ३ ॥ इति श्रीगरुडपञ्चाक्षर मन्त्र प्रयोग ॥ १ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण ५ लाख जप है। तिलों से दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे : कहा भी गया है कि 'पांच लाख जप और तिलों से दशांश होम तथा मातृकापद्मपीठ पर वेदमूर्ति गरुड का पूजन करना चाहिये। इस रीति से मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक स्थावर एवं जङ्गम दोनों प्रकार के विषों को नष्ट कर देता है। विष्णु की भक्ति में सदैव तत्पर रहकर जो व्यक्ति पक्षिराज की उपासना करता है वह सब शत्रुओं को परास्त करके सुख एवं भोग सहित सौ वर्ष तक जीवित रहता है और मृत्यु के बाद भगवान् विष्णु का सायुज्य प्राप्त करता है।' इति श्रीगरुडपञ्चाक्षर-मन्त्र प्रयोग।

अथ गरुडमालामन्त्रः।

तन्त्रसारे : ॐ नमो भगवते गरुडाय कालाग्निवर्णाय एह्येहि कालानललोलज्जिह्वाय पातयपातय मोहयमोहय विद्रावयविद्रावय भ्रम भ्रम भ्रामयभ्रामय हनहन दहदह पचपच हुं फट् स्वाहा।

अस्य विधानम्। अस्य पुरश्चरणमयुतजपाः। घृताक्तैः कृष्णपुष्पैर्दशांशतो होमः। एवं ध्यानमात्रेण दृष्टो निर्विषो भवेत्। चिरं जीवेत्। तथा च। 'विषमालोकनेनैव हन्यान्नाग कुलोद्भवम्।' इति मालामन्त्र-प्रयोगः।

इसका विधान : इसका विधान दश हजार जप है। घी से सिक्त काले फूलों से दशांश होम होता है। इस प्रकार ध्यान मात्र से देखते ही व्यक्ति निर्विष हो जाता है और चिरकाल तक जीवित रहता है। कहा भी गया है कि 'देखने मात्र से नागकुल से उत्पन्न विष को नष्ट कर देता है।' इति मालामन्त्र प्रयोग।

एक अन्य माला मन्त्र :

ॐ नमो भगवते गरुडाय महेन्द्रपर्वतशिखराकाररूपाय संहारसंहार मोचयमोचय निर्विषनिर्विष विषमप्यमृतं चाहारसहस्ररूपमिदं ज्ञापयामि स्वाहा। इति मालामन्त्रः।

अस्य विधानम्। अनेन गरुडमन्त्रप्रसादेन मन्त्री गरुडो भूत्वाभिमन्त्रितं स्थावरविषं भक्षितमप्यमृतं भवति किमसृतान्नपानादिकमिति।

इसका विधान : इस गरुड मन्त्र के प्रसाद से यदि साधक गरुड होकर

अभिमन्त्रित स्थावर विष खा ले तो वह विष उसके लिये अमृत हो जाता है। अमृत अन्न पानादि का तो कहना ही क्या?

अथ गरुडस्तवः। तन्त्रसारे : सुपर्णं वैनतेयं च नागारिं नागभीषणम्। जेतारञ्चविषारिं च अजितं विश्वरूपिणम् ॥ १ ॥ गरुत्मन्तं खगश्रेष्ठं तार्क्ष्यं कश्यपनन्दनम्।

द्वादशैतानि नामानि गरुडस्य महात्मनः ॥ २ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय स्थाने वा शयनेपि वा। विषं नाक्रमते तस्य न च हिंसन्ति हिंसकाः ॥३॥ संग्रामे व्यवहारे च विजयस्तस्य जायते। बन्धनान्मुक्तिमाप्नोति यात्रायां सिद्धिरेव च ॥ ४ ॥ इति गरुडस्तवः।

महात्मा गरुण के इन बारह नामों को जो प्रातःकाल उठकर किसी स्थान पर या शयन के समय पढ़ता है उसपर विष का प्रभाव नहीं पड़ता, हिंसक जीव उसको नहीं मार सकते, संग्राम में या व्यवहार में उसे सदैव विजय प्राप्त होती है, वह बन्धन से मुक्त हो जाता है और यात्रा में उसे सिद्धि प्राप्त होती है। इति गरुडस्तव।

हारीतः : नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः ॥ १ ॥ सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष। जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ २ ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते। शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिशवृक्षफलं यथा ॥ ३ ॥

एतान्गरुडमन्त्रांस्तु निशायां पठते यदि। मुच्यते सर्वबाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा ॥ ४ ॥

इन गरुड मन्त्रों को जो रात में पढ़ता है वह समस्त बाधाओं से मुक्त हो जाता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये।

गोभिलः : अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः। कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ॥ १ ॥ इति गरुडमन्त्रप्रयोगः।

अथ चरणायुधमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि के अनुसार चरणायुध मन्त्र का विधान कहा जा रहा है जिससे साधक अपने मनोरथों को सिद्ध कर सकता है। १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

आं यूं कोलियूं कोलि ह्रीं वां ह्रीं यूं कोलियूंकोलि चुवाक्रों' इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

प्रातः कृत्यक्रियश्चन्द्रताराद्बिलान्विते सुमुहूर्ते शैलाग्रे सरित्तटे

वा वृषशून्ये शङ्करमन्दिरे वा स्वासने पश्चिमाभिमुखः स्थित्वाचम्य प्राणानायम्य।

जिस दिन चन्द्र-तारादि बलवान हों उस दिन उत्तम मुहूर्त में प्रातःकाल नित्य क्रिया समाप्त करके पर्वत पर, नदी के तटपर, वृषशून्य शङ्कर के मन्दिर में या अपने आसन पर पश्चिमाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम करके :

देशकालौ संकीर्त्य मम चरणायुधामुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं चरणायुध-प्रसन्नार्थं लक्षजपस्तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरण-महं करिष्ये।

इससे संकल्प करके भूतशुद्धि आदि से लेकर मातृकान्यास पर्यन्त कृत्य करके इस प्रकार प्रयोगोक्त न्यासादि करे :

विनियोग : अस्य चरणायुधमन्त्रस्य महारुद्र ऋषिः। अतिजगती छन्दः। ह्रीं बीजम्। क्रों शक्तिः। चरणायुधो देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ महारुद्रऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ अतिजगती-छन्दसे नमः। मुखे ॥२॥ ह्रीं बीजाय नमः। गुह्ये ॥ ३ ॥ क्रों शक्तये नमः। पादयोः ॥४॥ चरणायुध देवतायै नमः। हृदि ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः। सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ आं यूं कोलि अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ यूं कोलि तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वां ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ यूं कोलि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ यूं कोलि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ चुवाक्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : आं यूं कोलि हृदयाय नमः ॥ १ ॥ यूं कोलि शिरसे स्वाहा ॥२॥ वां ह्रीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ यूं कोलि कवचाय हुम् ॥४॥ यूं कोलि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ चुवाक्रों अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ आं नमः। मूर्ध्नि ॥१॥ ॐ यूं नमः। भाले ॥२॥ ॐ कों नमः। दक्षिणभ्रुवि ॥ ३ ॥ ॐ लिं नमः। वामभ्रुवि ॥ ४ ॥ ॐ यूं नमः। दक्षनेत्रे ॥ ५ ॥ ॐ कों नमः। वामनेत्रे ॥ ६ ॥ ॐ लिं नमः दक्षकर्णे ॥ ७ ॥ ॐ वां नमः। वामकर्णे ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं नमः। दक्षनासापुटे ॥ ९ ॥ ॐ यूं नमः। वामनासापुटे ॥ १० ॥ ॐ कों नमः। वक्त्रे ॥ ११ ॥ ॐ लिं नमः। कण्ठे ॥१२॥ ॐ यूं नमः। कुक्षिद्वये ॥ १३ ॥ ॐ कों नमः। नाभौ

॥ १४ ॥ ॐ लिं नमः। लिङ्गे ॥ १५ ॥ ॐ चुं नमः। गुदे ॥ १६ ॥ ॐ वां नमः। जानुद्वये ॥ १७ ॥ ॐ क्रों नमः। पादद्वयो ॥१८॥ इति मन्त्रवर्णन्यास।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ॐ सर्वालंकृतिदीप्तकण्ठचरणो हेमाभदेहद्युतिः पक्ष-द्वन्द्वविधूननेतिकुशलः सर्वामराभ्यर्चितः। गौरीहस्तसरोजगोरुणशिखः सर्वार्थसिद्धिप्रदो रक्तं चञ्चुपुटं दधच्चलपदः पायान्निजान्कुक्कुटान् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में या लिङ्गतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण : ॐ वामायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २ ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ सर्वभूत-दमन्यै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय चरणायुधाय योगपीठा-त्मने नमः।

इस मन्त्र मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके कुक्कुट की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (चरणायुध कुक्कुट पूजन यन्त्र देखिये चित्र ४१) :

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां कुक्कुट देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे।

इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं और मध्यदिशा में :

ॐ आं यूं कोलि हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ यूं कोलि शिरसे स्वाहा[2] । शिरःश्रीपा० ॥२॥ ॐ वां ह्लीं शिखायै वषट्[3] । शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ यूं कोलि कवचाय हुम्[4] । कवचश्रीपा० ॥४॥ ॐ यूं कोलि नेत्रत्रयाय वौषट्[5] । नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ चुवाक्रों अस्त्राय फट्[6] । अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इसे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ शङ्कराय नमः[7] । शङ्करश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ गौर्यै नमः[8] । गौरी-श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गणपतये नमः[9] । गणपतिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ कार्तिकेयाय नमः[10] । कार्तिकेयश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ मन्दराय नमः[11] । मन्दारश्रीपा० ॥५॥ ॐ पारिजाताय नमः[12] । पारिजातश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ मयूराय नमः[13] । मयूरश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ बर्हिणे नमः[14] । बर्हिश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद दलों के अग्रभाग में अपनी-अपनी दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों में इन्द्रादि दिक्पालों और उनके आयुधों की पूजा करे :

ॐ लं इन्द्रायसायुधाय नमः । ॐ रं अग्नये सायुधाय नमः : ॐ मं यमाय सायुधाय नमः । ॐ क्षं निर्ऋतये सायुधाय नमः । ॐ वं वरुणाय सायुधाय नमः । ॐ यं वायवे सायुधाय नमः । ॐ सं सोमाय सायुधाय नमः । ॐ हं ईशानाय सायुधाय नमः । ॐ आं ब्रह्मणे सायुधाय नमः । ॐ ह्लीं अनन्ताय सायुधाय नमः ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके इस प्रकार बलि देवे :

दधिदुग्धमधुकर्पूरसितातांम्बूलमिश्रितं पायसेन पिण्डं कृत्वा गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य दीपं निधाय ।

दही, दूध, मधु, कपूर और चीनी मिलाकर पान के साथ खीर से पिण्ड बनाकर गन्ध अक्षतों से पूजा करके दीप रखकर :

ॐ यूं क्षं ह्लीं कुक्कुट कुक्कुट एह्येहि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय सर्वान्कामान्देहि यं कुं ह्लीं यूं नमः कुक्कुटाय ।

इस मन्त्र से बलि निवेदित करे । इस प्रकार बलि देकर हाथ-पैर धोकर पुनः ध्यान करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं लक्षं जपः । तिलाज्येन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च एवं ध्यात्वा समासीनः शैलाग्रे सरितस्तटे । वृषशून्ये पश्चिमास्थेऽथवा शङ्करसद्मनि ॥ १ ॥ शैवपीठे यजेत्ताम्रचूडं गौरीकरस्थितम् । लक्षं जपेद्दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत् ॥ २ ॥ एवं कृते प्रयोगार्हो जायते मन्त्रनायकः । प्रयोगादौ प्रजप्योसावयुतं द्विशताधिकम् (१०२००) ॥ ३ ॥ दध्ना क्षीरेण मधुना चन्द्रेण सितयान्वितैः । दद्याद्बलि सताम्बूलैः पायसैर्बलिमन्त्रतः ॥ ४ ॥ भोजनादौ भोजनान्ते लक्ष्मीसम्प्राप्तये सुधीः । बलिमेतत्प्रदायाथ कुबेरोधननाथताम् । शान्तौ पुष्टावपि बलिमेतमेव प्रदापयेत् ॥ ५ ॥ अन्न राजैस्त्रिमधुरोपेतैर्दद्याद् बलिं निशि । वशयेदखिलं विश्वं त्रिदिनं चोदनैर्नृप ॥ ६ ॥

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । तिल या घी से दशांश होम होता है और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि 'इस प्रकार ध्यान करके पर्वत पर, नदी तटपर, वृषशून्य पश्चिम दिशा में स्थित शिवालय में साधना करनी चाहिये । शैवपीठ पर गौरी के हाथ में स्थित ताम्रचूड का पूजन और १ लाख जप करके जप का दशांश तिलों से हवन करना चाहिये । ऐसा करने से यह मन्त्रराज काम्य प्रयोगों के योग्य हो जाता है । काम्य प्रयोगों में इस मन्त्र का १०००० बार जप करने के बाद दही, दूध, मधु कपूर एवं शकर मिलाकर पान के साथ खीर की बलि मन्त्र द्वारा बलि देनी चाहिये । लक्ष्मी प्राप्त करने के लिये भोजन के आरम्भ और समाप्ति के समय विद्वान को बलि देनी चाहिये । इसी बलि को देने से कुबेर धनाधीश बन गये । शान्तिक एवं पौष्टिक कर्मों में भी यह बलि देनी चाहिये ।

बलि की अन्य विधियाँ

दुग्धमिश्रितगोधूमपिष्टैः कुर्यादपूपकम् । आज्यकर्पूरयुक्तेन तेन दद्याद्बलिं निशि । त्र्यहमेवं बलौ दत्ते सुखी स्याद्वशयेज्जगत् ॥ ७ ॥

बलि की अन्य विधियाँ : १. गेहूं के आटे में दूध मिलाकर मालपूए बनाने चाहिये। उनमें घी एवं कपूर मिलाकर उनसे रात्रि में बलि देनी चाहिये। इस प्रकार तीन दिन तक बलि देने से साधक सुखी होकर जगत् को वश में कर लेता है।

करवीरैर्बिल्वपत्रैः पीतपुष्पैः सुगन्धिभिः। सहस्रसंख्यैः प्रत्येकं पूजयित्वा जपेन्मनुम् ॥ ८ ॥ सहस्रं निशि सप्ताह यमुद्दिश्य जनं सुधीः। स याति दासतां तस्य मनोवचनमकर्मभिः ॥ ९ ॥

२. एक हजार कनेर के फूल, बेलपत्र तथा सुगन्धित पीले फूलों से पूजन कर एक सप्ताह तक रात्रि के समय एक हजार मन्त्र का जप करना चाहिये। साधक जिस व्यक्ति का ध्यान करके यह प्रयोग करता है वह व्यक्ति मन, वचन एवं कर्म से उसका दास बन जाता है।

छागलावकयोर्मांसैः सप्ताहं वितरेद्बलिम्। सहस्रं प्रत्यहं जप्त्वा वशयेदखिलं जगत् ॥ १० ॥ नृपोत्थिते सपत्नोत्थे भये जाते च सङ्कटे। आपद्यपि तथान्यस्यां बलिं दद्यात् सुखाप्तये। गोपनीयो विधिरयं बलेः कथ्यो न दुर्मतौ ॥ ११ ॥

३. प्रतिदिन मूलमन्त्र का एक हजार जप करके एक सप्ताह तक बकरा एवं लावा (पक्षी विशेष) के मांस की बलि देने पर साधक सम्पूर्ण जगत को वश में कर लेता है। राजभय, शत्रुभय, सङ्कट या अन्य आपत्ति के समय सुखप्राप्ति हेतु यह बलि देनी चाहिये। बलिदान की यह विधि गोपनीय है। इसे दुष्टों को नहीं बताना चाहिये।

मुक्तकेशउदावक्त्रो जपेद्भानुसहस्रकम्। प्रत्यहं वसुघस्रान्तं यमुद्दिश्याधियामिनि। तमाकर्षति दूरस्थमपि किं निकटस्थितम् ॥ १२ ॥

४. रात्रि के समय शिखा खोल कर उत्तराभिमुख होकर जिस व्यक्ति का ध्यान कर साधक निरन्तर आठ दिन तक प्रतिदिन बारह हजार जप करता है वह व्यक्ति चाहे दूर हो या निकट, साधक उसे आकर्षित कर लेता है।

जातीफलैलाः संचूर्ण्य कर्पूरं मध्यतः क्षिपेत्। अभिमन्त्र्यार्कसाहस्रं सिन्दूररजसा युतम् ॥ १३ ॥ उष्णीकृत्याग्नितापेन क्लेदयेद्गाङ्गपाथसा। स्थापयेदायसे पात्रे तत्पृष्ठं स्तम्भितो भवेत् ॥ १४ ॥

५. जायफल एवं इलायची को पीसकर उसमें कपूर मिलाना चाहिये। फिर उसमें सिन्दूर मिलाकर १२ हजार मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित कर आग पर तपाकर गङ्गाजल से मार्जन करना चाहिये और उसे लोहे के पात्र में रखना चाहिये। उसका स्पर्श करनेवाला स्तम्भित हो जाता है।

कर्मारसदनाद्वह्निमानीयायसभाजने। स्थापयित्वेन्धयेत्काष्ठैः करवीरसमुद्भवैः ॥ १५ ॥ जुहुयात्तत्र धत्तूरबीजानि शतसंख्यया। सिद्धार्थतैललिप्तानि विषकर्णयुतानि च ॥ १६ ॥ सप्ताह एवं कृत्वारिं स्थानादुच्चाटयेद्ध्रुवम्। पक्षं देशान्तरगतं मासं सम्प्रापयेन्मृतिम् ॥ १७ ॥

६. लोहार के घर से अग्नि लाकर लोहे के पात्र में स्थापित कर कनेर की लकड़ी से प्रज्वलित करे; इसमें सरसों का तेल तथा विषपूर्ण मिश्रित धतूरे के बीजों से १०० आहुतियाँ देनी चाहिये। एक सप्ताह तक यह प्रयोग करने से शत्रु का अपने स्थान से उच्चाटन हो जाता है। १५ दिन तक यह प्रयोग करने से शत्रु विदेश चला जाता है और एक मास तक यह प्रयोग करने से वह मर जाता है।

तालपत्रं नराकारं कृत्वात्र स्थापयेदसून्। जपेदष्टसहस्रं तत्तीक्ष्णतैलविलेपितम् ॥ १८ ॥ तस्य खण्डानि पञ्चाशत् कृत्वा पितृवनोत्थिते। उन्मत्ततरुसंदीप्ते जुहुयाज्जातवेदसि ॥ १९ ॥ एवं प्रकुर्वंस्त्रिदिनं मारयेन्मोहयेदरिम्।

७. तालपत्र को मनुष्य जैसी आकृति का बनाकर उसमें शत्रु के प्राण को स्थापित कर उसपर भिलावे का तेल लगाना चाहिये। फिर उसके ५० टुकड़े कर धतूरे की लकड़ी से प्रज्वलित श्मशान की अग्नि में होम करना चाहिये। ऐसा लगातार तीन दिन तक करने पर साधक या तो शत्रु को मार देता है या मोहित (पागल) कर देता है।

साध्यर्क्षतरुकाष्ठेन कृत्वा पुत्तलिकां शुभाम्। तस्यामसून्प्रतिष्ठाप्य सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ॥ २० ॥ चिताकाष्ठस्य कीलेन तां स्पृष्ट्वा पितृकानने। छिन्द्याद्यदङ्गं शस्त्रेण तदङ्गं तस्य नश्यति ॥ २१ ॥

८. साध्य व्यक्ति के जन्म नक्षत्र सम्बन्धी वृक्ष की लकड़ी से सुन्दर प्रतिमा बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर चिता की लकड़ी की कील से उसे स्पर्श करते हुये श्मशान में मूलमन्त्र का एक हजार जप करना चाहिये। उस प्रतिमा का जो अङ्ग शस्त्र से काट दिया जाता है वही अङ्ग शत्रु का नष्ट हो जाता है।

वैरिमूत्रयुतां मृत्स्नां तत्पादरजसा सह। कुलालमृद्युतां कृत्वा पुत्तलीं रचयेत्तया ॥ २२ ॥ तस्या हृदि पदे मूर्ध्नि नामकर्मान्वितं मनुम्। लिखेच्छ्मशानजाङ्गारैरसून्संस्थापयेत्ततः ॥ २३ ॥ जप्त्वा सहस्रं मन्त्रेण तीक्ष्णतैलविलेपिताम्। शस्त्रेण शतधा कृत्वा जुहुयात्पितृभूवसौ ॥ २४ ॥

विभीतकाष्ठसंदीप्ते यमाशावदनो निशि। शत्रोर्निधनतारायां कृत्वैवं मारयेदरिम् ॥ २५ ॥

९. शत्रु के मूत्र से मिली मिट्टी एवं उसके पैर की मिट्टी को कुम्हार की मिट्टी में मिलाकर उससे पुतली बनानी चाहिये। उस पुतली के हृदय, पैर एवं शिरपर क्रमश साध्य का नाम, कर्म का नाम एवं मूलमन्त्र को चिताङ्गार से लिखना चाहिये। फिर उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर भिलावे का तेल लगाकर १ हजार मूलमन्त्र का जप करने के बाद शस्त्र से उसके १०० टुकड़े कर बहेड़े की लकड़ी से प्रज्वलित श्मशान की अग्नि में रात्रि के समय दक्षिणाभिमुख होकर होम करना चाहिये। शत्रु के निधन तारा (जन्मनक्षत्र से ७, १६ या २५वें नक्षत्रों) के दिन ऐसा करने से शत्रु मर जाता है।

निधाय गोमयं भूमौ प्रकुर्यात्प्रतिमां रिपोः। तालपत्रे समालिख्य मनुं नाम्ना विदर्भितम् ॥ २६ ॥ तत्पत्रं निक्षिपेत्तस्या हृदि तत्प्रतिमोपरि। मृज्जं वा दारुजं कुम्भं गोमयोदकपूरितम् ॥ २७ ॥ मनूनामयुतं ताडपत्रेणाद्यं निधापयेत् । तदसून्स्थापयेत्कुम्भे त्रिसन्ध्यं प्रजपेन्मनुम् ॥ २८ ॥ प्रत्यहं शतसंख्याकं छाया यावद्भवेद्रिपोः गोमयाम्भसि दृष्टायां तच्छायायां तु साधकः ॥२९॥ अधस्थायाः प्रतिकृतेश्छिन्द्यादङ्गमभीप्सितम्। शस्त्रेण तस्य नाशाय मृतये हृदयं गलम् ॥३०॥ प्रविद्धे कण्टकैर्मूर्ध्नि शिरोरोगो भवेद्रिपो। आधयो हृदये विद्धे पदोः पादव्यथा भवेत् ॥३१॥

१०. भूमिपर गोवर रखकर उससे शत्रु की प्रतिमा बनानी चाहिये। तालपत्र पर शत्रु के नाम सहित मूलमन्त्र को लिखकर उस पत्र को प्रतिमा के हृदय में रखकर उसके ऊपर गोबर एवं जल से भरा हुआ मिट्टी का या चाँदी का कलश रखना चाहिये तथा उसमें मन्त्र लिखकर डाल देना चाहिये। कुम्भ में शत्रु के प्राणों को स्थापित कर प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में कुम्भ का स्पर्श करते हुये मूलमन्त्र का १०० बार जप करना चाहिये। गोबर मिले जल में शत्रु की आकृति दिखाई पड़ते ही साधक कुम्भ के नीचे बनी उसकी प्रतिमा का इच्छित अङ्ग काट दे। ऐसा करने से शत्रु का वह अङ्ग नष्ट हो जाता है। प्रतिमा का हृदय या गला काटने पर शत्रु मर जाता है। प्रतिमा के शिर में काँटा चुभाने से शत्रु के शिर में रोग होता है। हृदय में काँटा चुभाने से मानसिक पीड़ा तथा पैर में काँटा चुभाने से पैरों में रोग होता है।

दारुणा कुक्कुटं कृत्वा तत्रास्य स्थापयेदसून्। तं स्पृष्ट्वा पूर्वं वद्ध्यात्वा जपेद्रविसहस्रकम् (१२००) ॥ ३२ ॥ उपचारैः समभ्यर्च्य छादयेद्रक्तवाससा। रथे संस्थाप्य तं देवं दिक्षु योधान्निधापयेत् ॥ ३३ ॥ चतुरो

वर्मसंवीतानश्वारूढानुदायुधान् । तत्संयुतो रणे गच्छेज्जेतुं बलवतो रिपून् ॥ ३४ ॥ वीराढ्यं कुक्कुटा दृष्ट्वा पलायन्ते रणेऽरयः। भीता दश दिशः सर्वे हर्यक्षं करिणो यथा ॥ ३५ ॥

लकड़ी से कुक्कुट बनाकर उसमें उसकी प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये। उसका स्पर्श कर पूर्ववत् ध्यान करके १२ हजार जप करना चाहिये। विविध उपचारों से पूजन कर लाल कपड़ें से उसे ढक देना चाहिये। फिर देव को रथ में स्थापित कर उसके चारों ओर कवचधारी एवं अश्वारोही ४ योद्धाओं को नियुक्त कर देना चाहिये। फिर उसे साथ लेकर बलवान् शत्रु को जीतने के लिए रणभूमि में जाना चाहिये। वीरों से घिरे उस कुक्कुट को देखकर शत्रुसेना भयभीत होकर चारों ओर उसी प्रकार भाग जाती है जिस प्रकार सिंह को देखकर गजसमूह भाग जाता है।

ताम्रचूडस्य मन्त्रेण मोदकाद्यभिमन्त्रितम्। यस्मै ददीत भक्षाय स वशो मन्त्रिणो भवेत् ॥ ३६ ॥

११. ताम्रचूड (चरणायुध) के मन्त्र से अभिमन्त्रित जिसे भी मोदक खाने के लिये दे दिया जाय वह मान्त्रिक के वश में हो जाता है।

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा रोचनाचन्दनादिभिः। विदधत्तिलकं भाले दर्शनाद्वशयेज्जनान् ॥ ३७ ॥ इति श्रीचरणायुधस्य ताम्रचूडकुक्कुटस्य वा मन्त्रप्रयोगः।

१२. गोरोचन, चन्दन, कुंकुम, कस्तूरी एवं कपूर आदि से बने चन्दन को १०८ बार अभिमन्त्रित कर उसका तिलक लगाने से देखनेवाले वश में हो जाते हैं। इति श्रीचरणायुध अथवा ताम्रचूड कुक्कुट मन्त्र प्रयोगः।

अथ पक्षिराजघूकतन्त्रप्रारम्भः।

चतुर्दश्याममायां वा रविवारो भवेद्यदि। गृहीत्वा पक्षिराजं चोदरं तस्य विदार्य च ॥ १ ॥ विष्ठा तस्य बहिष्कृत्य नग्नो भूत्वा श्मशानके। प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्रोद्घृतकज्जलम् ॥ २ ॥ गुग्गुलं धूपयेत्तस्य मन्त्रेण चाभिमन्त्रयेत्। अष्टोत्तरशतं वारं तदा सिद्धो भवेद् ध्रुवम् ॥ ३ ॥ कज्जलं तेन संग्राह्य ताम्रयन्त्रेण वेष्टिता। गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी ॥ ४ ॥ कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रे तदा पश्यति देवताम्। भूतप्रेतपिशाचादियक्षैश्च योगिनीः सह ॥ ५ ॥ नेत्रे प्रक्षाल्य गोमूत्रैर्मानुषी दृक् प्रजायते। योगद्वयेन कथिता मन्त्रस्यैकं वदामि ते ॥ ६ ॥ तत्र मन्त्रः।

यदि चतुर्दशी या अमावस्या रविवार के दिन पड़े तो उस दिन श्मशान में नग्न होकर उल्लू का पेट फाड़कर विष्ठा बाहर करके मनुष्य की खोपड़ी में उसे (उल्लू को) जलाकर उसमें से निकाले काजल को गुग्गुल से धूपित कर मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे तब वह निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है। उसमें से काजल को इकट्ठा करके ताँबे की ताबीज में उसे भरकर मुख में रखने से वह मनुष्य को अदृश्य कर देता है। उस काजल को यदि कोई आँख में लगा ले तो वह देवता को देखने लगता है। इतना ही नहीं वह भूत, प्रेत, पिशाच तथा यक्षों के साथ योगिनियों को भी देखने लगता है। गोमूत्र से आँखों को धो लेने से उसकी आँखें मानुषी (पूर्ववत्) हो जाती है। इस गुटिका के जो दो योग कहे गये हैं उन दोनों का मन्त्र एक है जो इस प्रकार है :

'ॐ कुरुकुरु स्वाहा मेहमरीअनेनधनेयः पाठेश्वरीनमः।'

उलूकमज्जातैलेन कज्जलं पारयेन्नरः। तेनाञ्जनेन वै कृत्वा अदृश्यं भवति ध्रुवम् ॥ ७ ॥ घूकनेत्रं गृहीत्वा तु तैलेन सह घर्षयेत्। श्मशाने कज्जलं पार्यं नेत्रे तेनाञ्जयेत्ततः ॥ ८ ॥ अदृश्यो भवति क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते।

उल्लू की मज्जा के तेल से मनुष्य काजल पारे। उस काजल का अपनी आँखों में अञ्जन करने से वह निश्चित रूप से अदृष्य हो जाता है। उल्लू का नेत्र लेकर तेल के साथ घिसे। उससे श्मशान में काजल पार कर अपनी आँखों में अञ्जन करे। इससे मनुष्य शीघ्र ही अदृश्य हो जाता है और देवता भी उसे नहीं देख पाते।

काकोलूकस्य पिच्छानि आत्मकचास्तथैव च ॥ ९ ॥ अन्तर्धूमगतान् दग्ध्वा सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्। अंकोलतैलगुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् ॥ १० ॥ अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवानामपि दुर्लभम्। काकोलूकस्य नीलस्य ग्राह्ये एतेषु च लोचने ॥ ११ ॥ तल्लोहेनाञ्जयेच्चक्षुरदृश्यो भवति ध्रुवम्। नेत्रे प्रक्षाल्य गोमूत्रैर्मानुषी दृक् प्रजायते ॥ १२ ॥ उलूकस्य शृगालस्य सूकरस्याक्षिरक्तकम्। नीलाञ्जनयुतं पिष्ट्वा दग्ध्वा श्रावपुटे दहेत् ॥ १३ ॥ तेनाञ्जितो नरोऽदृश्यो जायते नात्र संशयः। सर्वयोगेन वै मन्त्रं कथयामि शृणु प्रिये ॥ १४ ॥ तत्र मन्त्रः।

कौवा और उल्लू के पङ्ख तथा अपने बाल किसी अन्तर्धूम (बन्द पात्र) में जलाकर उसका बारीक चूर्ण तैयार कराये। फिर अकोल के तेल से उसकी गोली बनाकर शिर में धारण करे। इससे मनुष्य शीघ्र अदृश्य हो जाता है

और देवता भी उसे नहीं देख सकते। कौवा, उल्लू और नील (पक्षी विशेष) की आँखें लेकर उसका चूर्ण बनाकर लोहे की शलाका से आँख में अञ्जन करने से मनुष्य निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है। गोमूत्र से आँखें धो लेने से वे मानुषी (पूर्ववत्) हो जाती हैं। उल्लू, सियार तथा सूअर की आँखों का रक्त लेकर उसमें नीलाञ्जन पीसकर उसे शराबसम्पुट में मिट्टी की दो ढंकनियों को लेकर आपस में मिलाकर उनको जोड़ कर कपड़ा और मिट्टी से बन्द करके उसे गजपुट में फूंक कर अञ्जन तैयार कर ले। उस अञ्जन से अपनी आँखों में अञ्जन करे तो निश्चित रूप से वह अदृश्य हो जाता है—इसमें कोई संशय नहीं है। हे प्रिये! मैं इन सब योगों का मन्त्र तुम्हें बता रहा हूं। मन्त्र यह है :

'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलिहिलि चिलिचिलि व्याघ्रचर्मपरिधानाय मरुल मरुल कुरुकुरु चण्डप्रचण्ड किलिकिलि स्वाहा।'

उक्त योगों का यह मन्त्र है।

रविदिने घूकमांसं रक्तचन्दनकुंकुमैः। सह पिष्ट्वा वटीं कृत्वा टङ्कमानं तदा बुधैः ॥ १५ ॥ धूपो देयो गुग्गुलोश्च मन्त्रात्समभिमन्त्रयेत्। ताम्बूले दीयते यस्मै सा वश्या भवति ध्रुवम् ॥१६॥ घूकतालुं च ताम्बूले धृत्वा नारीं प्रदापयेत्। वश्याभवति सा नारी प्राणैरपि धनैरपि ॥ १७ ॥ घूकतुण्डं गृहीत्वा तु नागकेसरकेसरैः। गोरोचनेन संयुक्तं मन्त्रात्समभिमन्त्रयेत् ॥ १८ ॥ अष्टोत्तरशतं वारं तिलकं क्रियते नरैः। तस्य दर्शनमात्रेण वश्या भवति निश्चितम् ॥ १९ ॥ घूकजिह्वां निम्बपत्रैः एकीकृत्य प्रपेषयेत्। नेत्राञ्जनेन वै पश्येत्सर्वे वश्या भवन्ति हि ॥ २० ॥ घूकनेत्रं गृहीत्वा तु बिडालीनेत्रसंयुतम्। वत्सनागसमायुक्तं नागकेशरकेशरैः ॥ २१ ॥ रससर्षप्रयोगेन समभागेन पेषयेत्। श्मशाने गर्तकुण्डे तु स्थापयेद्दिनसप्तकम् ॥ २२ ॥ ततो निष्कास्य यस्या वै शिरसि प्रक्षिपेद् बुधः। विनाह्वानप्रसङ्गेन साऽऽयाति निश्चितं प्रिया ॥ २३ ॥ पूर्वोक्तसर्वद्रव्यैश्च नान्दनवनकपासकैः। वर्ति कृत्वा प्रयत्नेन एकवर्णिकगोघृतम् ॥ २४ ॥ मृत्पात्रे तद्विनिःक्षिप्य मघायां रविवासरे। अर्द्धरात्रे भवेन्नग्नः श्मशाने विजितेन्द्रियः ॥ २५ ॥ ललाटखर्परपात्रेण ह्यथ वा नरकपालके। कज्जलं पारयेद्यत्नान्मन्त्रेण चाभिमन्त्रयेत् ॥ २६ ॥ अष्टोत्तरशतं वारं गुग्गुलुं धूपयेत्ततः। सिद्धो भवति सर्वत्र काम्यकर्मणि योजयेत् ॥ २७ ॥ योषिद्वस्त्रे कज्जलेन रेखामेकां तु कारयेत्। वश्याऽऽयाति

तथा नारी यथाब्धौ सरिदागमः ॥ २८ ॥ घूकविष्ठां गृहीत्वा तु काक-विष्ठासमायुताम् । यस्या मूर्ध्नि क्षिपेच्चूर्णं वश्या भवति निश्चितम् ॥२९॥ उलूकहृदयं मांसं गोरोचनसमन्वितम् । अष्टाविंशतिवारं च मन्त्रेणैवाभि-मन्त्रयेत् ॥३०॥ अञ्जनं चाञ्जयेन्नेत्रे दृष्टिमात्रेण वश्यताम् । योगसिद्धिकरं मन्त्रं कथयामि शृणु प्रिये ॥ ३१ ॥ तत्र मन्त्रः ।

२. रविवार के दिन उल्लू का मांस लालचन्दन तथा केसर के साथ पीसकर एक टंक परिमाण की गोलियाँ बनाकर उसपर गुग्गुल का धूप देकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। जिसे इस गोली को ताम्बूल में दे दिया जाता है वह वशीभूत हो जाता है। उल्लू के तालु को ताम्बूल में रखकर नारी को दे देने से वह नारी प्राण और धन सहित वशीभूत हो जाती है। उल्लू की चोंच लेकर नागकेसर से तथा गोरोचन से मिलाकर १०८ बार मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके यदि मनुष्य तिलक लगावे तो उसके दर्शन मात्र से स्त्री निश्चित रूप से वशीभूत हो जाती है। उल्लू की जिह्वा को नीम के पत्तों के साथ पीसकर उससे आँखों में अंजन करने से साधक जिसे देखता है वह वशीभूत हो जाता है। उल्लू की आँख तथा बिल्ली की आँख, वत्सनाग, नागकेसर तथा सफेद दूब, पारा और सरसों सभी समान भाग लेकर पीसकर श्मशान में गड्ढा बनाकर ये सभी वस्तुयें उस गड्ढे में गाड़ दे। सात दिन तक गड़ा रहने के बाद निकाल कर उसे जिसके सिर पर डाल दिया जाय वह स्त्री बिना बुलाये प्रिया होकर निश्चित रूप से साधक के पास आ जाती है। पूर्वोक्त सभी द्रव्यों के साथ नन्दन वन में उत्पन्न कपास से बत्ती बनाकर प्रयत्नपूर्वक एकवर्णा गाय के घी के दीपक में डालकर मघा नक्षत्र में रवि-वार के दिन आधीरात को श्मशान में जितेन्द्रिय और नग्न होकर कच्चे खपड़े के पात्र में या मनुष्य की खोपड़ी में यत्न से काजल पारे। उस काजल को १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और गुग्गुल से धूपित करे। तब वह काजल सिद्ध हो जाता है। ऐसे काजल को काम्य कर्मों में लगाना चाहिये। यदि नारी के वस्त्र में इस काजल से एक रेखा बना दे तो वह नारी वशीभूत होकर उसी प्रकार साधक के पास चली आती है जिस प्रकार नदियाँ समुद्र में चली जाती हैं। उल्लू की विष्ठा तथा कौवे की विष्ठा को लेकर एकत्र चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को जिस नारी के सर पर फेंक दिया जाय वह निश्चित रूप से वशीभूत हो जाती है। उल्लू का हृदय और मांस में गोरोचन मिला-कर उसे २८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उससे आँखों में अंजन करे तो दर्शन मात्र से वह सबको वश में कर लेता है। हे प्रिये ! मैं उक्त योगों को

सिद्ध करनेवाला मन्त्र बता रहा हूं जिसे तुम सुनो। मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश अमुकं मे वशे कुरुकुरु स्वाहा।'

यह उक्त योग का मन्त्र है।

एकहस्ते काकपक्षे घूकपक्षे परे करे। मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कुश-सूत्रेण बन्धयेत् ॥ ३२ ॥ अञ्जलिभिर्जलेनैव तर्पयेद्धस्तपक्षके। एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥३३॥ विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा। उक्तयोगमयं मन्त्रं शृणु यत्नेन वै पुनः ॥ ३४ ॥ तत्र मन्त्रः ।

३. एक हाथ में कौवे का पङ्ख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पङ्ख लेकर उन्हें अभिमन्त्रित कर मिलाकर कुश की रस्सी से बाँध देवे। फिर एक अंजलि से ही हाथ के पङ्खों का तर्पण करे। इस प्रकार सात दिनों तक करे। फिर एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे। इससे साधक जिसका भी विद्वेषण करे वह निश्चित रूप से हो जाता है। उक्त योगमय मन्त्र को पुनः यत्नपूर्वक सुनो। मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषं कुरुकुरु स्वाहा।

उक्त योगों का यह मन्त्र है। १०८ बार जप से इसकी सिद्धि होती है।

घूकपक्षे कुजे वारे यद्गृहे निखनेन्नरः। उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण सिध्यति ॥ ३६ ॥ उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धार्थैः सहः मानवः। यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ ३७ ॥ काकोलूकस्य पक्षं तु हुत्वा चाष्टाधिकं शतम्। यन्नाम्न मन्त्रप्रयोगेन ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ ३८ ॥ पक्षिराजशिरश्चूर्णं रिपोश्च मस्तके क्षिपेत्। मन्त्रयोगेन वै तं स शीघ्रमुच्चाटयेद्ध्रुवम् ॥३९॥ उल्लूदंष्ट्रां निम्बुकाष्ठं बिडालीनखचर्मणी। धत्तूराम्बु श्मशानास्थि अरिगेहे विनिःक्षिपेत् ॥ ४० ॥ उच्चाटनं भवेत्तस्य सिद्धियोग उदाहृतः। उक्तयोगमयं मन्त्रं शृणु यत्नेन वै पुनः ॥ ४१ ॥

४. उल्लू के पङ्ख को मङ्गलवार को जिसके घर में गाड़ दे उसका मन्त्र के सिद्ध हुये बिना भी उच्चाटन हो जाता है। उल्लू की विष्टा लेकर पीली सरसों के साथ चूर्ण बना लेवे। इस चूर्ण को जिसके सिर पर फेंक दिया जाय उसका तत्काल उच्चाटन हो जाता है। कौवे और उल्लू के पङ्ख का १०८ बार जिसके नाम के साथ मन्त्र से होम करे उसका अवश्य उच्चाटन होता है। पक्षिराज (उल्लू) के शिर के चूर्ण को मन्त्र के योग से अभि-मन्त्रित करके शत्रु के शिर पर फेंक देने से उसका निश्चित रूप से उच्चाटन हो जाता है। उल्लू के दांत, नीबू की लकड़ी, बिल्ली का नख तथा चमड़ा,

धतूरे का रस और श्मशान की हड्डी शत्रु के घर में फेंकने से उसका उच्चाटन होता है। इसे सिद्ध योग कहा गया है। इस योगमय मन्त्र को पुनः यत्नपूर्वक सुनो। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश अमुकं सपुत्रबान्धवैः सह हनहन दहदह पचपच शीघ्रमुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठःठः।

यह उक्त योगों का मन्त्र है। १०८ बार इस मन्त्र के जप से सिद्धि मिलती है।

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्वितम्। यस्याङ्गे निःक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ ४२ ॥ तत्र मन्त्रः।

५. उल्लू की विष्टा लेकर वत्सनाभ के चूर्ण से युक्त करके जिसके अङ्ग पर फेंक दे वह शीघ्र यमराज के घर चला जाता है अर्थात् उसकी मृत्यु हो जाती है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश कालरूपाय अमुकं भस्मीकुरुकुरु स्वाहा।

इस योग के इस मन्त्र का १०८ जप करने से सिद्ध होती है।

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दापयेत्। विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते ॥ ४३ ॥

६. उल्लू की या बन्दर की विष्ठा प्रयत्नपूर्वक पान में जिसे दे दी जाय उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जाता है। इसका मन्त्र यह है।

ॐ नमो महापक्षेश बुद्धिस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा।

१०८ बार इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि मिलती है।

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा त्वैरण्डतैलेन पेषयेत्। यस्याङ्गे निःक्षिपेद्बिन्दुं विक्षिप्तो जायते नरः ॥ ४४ ॥ तत्र मन्त्रः।

७. उल्लू की विष्ठा लेकर एरंड के तेल से पीसे। इसके बूंद को जिस किसी के अङ्ग पर फेंक दिया जाय वह पागल हो जाता है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश विक्षिप्तं कुरुकुरु स्वाहा।

१०८ बार मन्त्र के जप से सिद्ध होता है।

उलूकहृदयं मांसं मन्त्रेण चाभिमन्त्रयेत्। गुग्गुलुं धूपयेत्तस्य शयानस्य हृदि क्षिपेत् ॥ ४५ ॥ मानसं वक्ति वृत्तान्तं यत्किञ्चिद्वर्तते हृदि। यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ४६ ॥ तत्र मन्त्रः।

८. उल्लू के हृदय या मांस को मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। गुग्गुल से उसे धूपित करे। सोये हुये जिस व्यक्ति के हृदय पर इसे फेंक दे वह अपने मन की

सभी बातों को कह डालता है। इसे ऐसे-तैसे किसी को नहीं देना चाहिये। यह सिद्ध योग है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश स्वप्नावस्थायां मनोभिलषितं कथय स्वाहा।

१०८ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

आषाढे कृष्णपक्षे च चतुर्दश्यां शुभे दिने। उलूकस्य कपाले तु धत्तूरं च मृदा सह ॥ ४७ ॥ बीजयेद्धूपं दत्त्वा च निखनेद्भूमिमण्डले। भैरवं च पुनर्ध्यात्वा जलोच्छिष्टेन सिञ्चयेत् ॥ ४८ ॥ दीपं प्रज्वालयेन्नित्यं घृतेन सह साधकः। यावत्सम्भवति वृक्षस्तावत्कालं यथाविधि ॥ ४९ ॥ फल-पुष्पत्वचामूलं पिष्ट्वा तु तिलकं यदि। इन्द्ररूपं भवेत्तस्य सहस्रनयनैर्युतम् ॥ ५० ॥ तत्र मन्त्रः।

९. आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के शुभ दिन उल्लू के कपाल में धतूरे और मिट्टी के साथ धूप देकर उसे भूमि में गाड़ देवे। पुनः भैरव का ध्यान करके उसे उच्छिष्ट जल से सींच देवे। फिर वहाँ साधक प्रतिदिन घी का तब तक दीपक जलावे जब तक वृक्ष न जमें। जब वृक्ष जम जाय तो यथाकाल विधिपूर्वक उसके फल, पुष्प, छाल तथा मूल को पीसकर तिलक लगाने से साधक सहस्र नेत्र होकर इन्द्र रूप हो जाता है। इसमें मन्त्र इस प्रकार है :

१०८ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

ॐ नमो महापक्षेश सहस्राक्षिरूपं कुरुकुरु स्वाहा।

पक्षिराजशिखायुक्तं हरितालं मनःशिला। वटीं कृत्वा प्रयत्नेन मन्त्रेण चाभिमन्त्रयेत् ॥५१॥ अष्टोत्तरशतवारं सिद्धो भवति तां वटीम्। अञ्जयेन्नेत्रयुगले रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ५२ ॥ उलूकस्य कपालेन घृतेन सह कज्जलम्। तेन नेत्राञ्जनं कृत्वा रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ५३ ॥ तत्र मन्त्रः।

१०. उल्लू की शिखा से युक्त हरिताल तथा मैनशिल को पीसकर गोली बना ले और उसे प्रयत्नपूर्वक अभिमन्त्रित करे। १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करने से वह गोली सिद्ध होती है। उसका दोनों आँखों में अञ्जन करने से मनुष्य रात में भी पुस्तक पढ़ने लगता है। उल्लू के कपाल और घी से काजल पार कर उसका अञ्जन लगाने से भी मनुष्य रात में पुस्तक पढ़ सकता है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापक्षेश रात्रौरात्रौ दर्शय स्वाहा।

१०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है।

उलूकचक्षुरादाय कुंकुमं रोचनं शशी । समांसं मधुना पिष्ट्वा अञ्जनं भूनिधिं दिशेत् ॥ ५४ ॥ तत्र मन्त्रः ।

११. उल्लू की आँख, केसर तथा गोरोचन को समभाग लेकर अञ्जन बनावे । इस अञ्जन को आँखों में लगाने मनुष्य गड़ी निधियों को देख सकता है । इसमें मन्त्र यह है ।

ॐ नमो महापङ्खेश भूनिधिं दर्शयदर्शय ठःठः स्वाहा ।

१०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है ।

उलूकदक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत् । बन्धयेद्वामकर्णे तु हरत्यै-काहिकं ज्वरम् ॥ ५५ ॥ उलूपक्षं गुग्गुलं च कृष्णवस्त्रेण वेष्टयेत् । वर्ति कृत्वा प्रयत्नेन घृतेन सह कज्जलम् ॥ ५६ ॥ चातुर्थिकज्वरशान्तिरञ्जनेन कृतेन वै । महाश्चर्यमिदं ज्ञेयं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ५७ ॥ उलूविष्ठां गृहीत्वा तु गुञ्जमात्रेण वै नरः । ताम्बूले भक्षिता स तु सर्वज्वरविनाश-कृत् ॥ ५८ ॥ तत्र मन्त्रः ।

१२. उल्लू के दाहिने पङ्ख को सफेद धागे से लपेट देवे । उसे बाँये कान में बाँधने से एकाहिक ज्वर ठीक होता है । उल्लू के पङ्ख तथा गुग्गुल को काले कपड़े से लपेट कर उसकी बत्ती बनाकर घी के दीपक में डालकर उससे काजल पारे । इस काजल का अञ्जन करने से चातुर्थिक ज्वर शान्त होता है। यह अत्यन्त आश्चर्यमय है । इसे भगवान् शङ्कर ने कहा है और यह अन्यथा नहीं हो सकता । उल्लू की विष्ठा को लेकर एक गुञ्जामात्र पान में डालकर खाने से सभी ज्वरों का नाश हो जाता है । इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापङ्खेश ज्वरं नाशयनाशय स्वाहा ।

१०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

उलूमांसं गृहीत्वा तुच्छाया शुष्कं तु कारयेत् । धूपं दत्वा प्रयत्नेन भूतबाधा विनश्यति ॥ ५९ ॥ तत्र मन्त्रः ।

१३. उल्लू का मांस लेकर छाया में सुखाकर और प्रयत्नपूर्वक धूपित करके प्रयोग करने पर भूतबाधा का विनाश होता है । इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो महापङ्खेश भूतबाधां नाशयनाशय स्वाहा ।

उक्त योगस्यायन्मन्त्रः । अष्टोत्तरशतजपैरस्य सिद्धिः । इति भूतबाधामन्त्रप्रयोगः ।

यह उक्त योग का मन्त्र है । १०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । इति भूतबाधा मन्त्र प्रयोग ।'

अथ सन्तानोपायः ।

अरुण उवाच । वृथा धनं गृहं धान्यमपुत्रजन्म निष्फलम् । ममोपरि दयां कृत्वा प्रायश्चित्तं वदस्व मे ॥ १ ॥

सन्तानोपाय : अरुण बोले : यदि पुत्र नहीं होता तो धन, गृह, धान्य (अन्न) आदि सब व्यर्थ है । मेरे ऊपर दया करके आप प्रायश्चित्त बतायें ।

श्रीसूर्य उवाच । विप्ररक्तापहारी च सोनपत्यः प्रजायते । तेन कार्यं विशुद्धयर्थं महारुद्रजपादिकम् ॥ २ ॥ तीर्थयात्रा प्रकर्तव्या रेवातापीसमुद्भवा । एकेनापि हि वस्त्रेण दम्पतीस्नानमुत्तमम् ॥ ३ ॥ श्रवणं हरिवंशस्य ब्राह्मणोद्वाहनं खग । अष्टोत्तरशतान् विप्रान् मिष्टान्नेन तु तर्पयेत् ॥ ४ ॥ ईशान इति मन्त्रेण जपं कुर्यात्सहस्र-कम् । दशांशहोमसंयुक्तं कुर्याच्च विधिवत्ततः ॥ ५ ॥ पद्मैस्तु लक्ष-संख्याकैः शिवं सम्पूज्य यत्नतः । स्वर्णधेनुः प्रदातव्या सवत्सा सुरभिस्तथा ॥ ६ ॥ घृतकुम्भं वैनतेय ब्राह्मणाय निवेदयेत् । एवं कृतेन वै तस्य ह्यपत्यं जायते सुता ॥ ७ ॥

श्रीसूर्य बोले : जो ब्राह्मण के रक्त का हरण करता है वह पुत्ररहित होता है । उसे विशुद्धि के लिये महारुद्र का जप आदि करना चाहिये । तथा रेवा और तापी नदी के किनारे तीर्थयात्रा करनी चाहिये । एक ही वस्त्र से पति-पत्नि को स्नान कराना चाहिये । हे खग ! इसके लिये हरिवंशपुराण का श्रवण करना, ब्राह्मण का विवाह तथा १०८ ब्राह्मणों को मिष्ठान्न से भोजन कराकर तृप्त करना चाहिये । 'ईशान' इस मन्त्र से एक हजार जप करना चाहिये । इसके बाद विधिपूर्वक दशांश होम करना चाहिये । एक लाख कमलों से यत्नपूर्वक शिव की पुजा करके, हे वैनतेय ! सोने की गाय एक सवत्सा दुधारू गाय, तथा घी से भरा एक घट ब्राह्मण को देना चाहिये। ऐसा करने से उसे कन्यारूपी सन्तति का जन्म होगा ।

गारुडेपि । हरिवंशकथां श्रुत्वा शतचण्डीविधानतः । भक्त्या श्रीशिवमाराध्य पुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥ ८ ॥

गरुडपुराण में भी कहा गया है कि शतचण्डी विधान से हरिवंश की कथा सुनकर भक्ति से शिव की पूजा करके सुधी पुत्र को उत्पन्न करे ।

महार्णवेपि । सौवर्णं बालकं कृत्वा दद्याद्दोलासमन्वितम् । अथवा वृषभं दद्याद्विप्रोद्वाहनमेव वा । महारुद्र जपो वापि लक्षपद्मैः शिवार्चनम् ॥ ९ ॥

महार्णव में भी कहा गया है कि सोने का बालक बनाकर पालने के

साथ दान देना चाहिये। अथवा वृषभ का दान करे या ब्राह्मण का विवाह कराये। अथवा महारुद्र का जप करे, या एक लाख कमलों से शिव की पूजा करे।

अथ मृतपुत्रत्वहरोपायः।

बालघाती च पुरुषो मृतवत्सः प्रजायते। ब्राह्मणोद्वाहनं चैव कर्तव्यं तेन शुद्ध्यति ॥ १० ॥ श्रवणं हरिवंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि। महारुद्रजपं चैव कारयेच्च यथाविधि ॥ ११ ॥ जुहुयाच्च शतांशेन दूर्वा आज्यपरिप्लुताः। एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्या च दक्षिणा ॥ १२ ॥ एकादश पशूंश्चैव दद्याद्वित्तानुसारतः। अन्येभ्योपि यथाशक्ति द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत् ॥ १३ ॥ स्नापयेद्दम्पती पश्चान्मन्त्रैर्वरुणदैवतैः। आचार्याय प्रदेयानि वस्त्रालङ्करणानि च ॥ १४ ॥

बालघाती पुरुष से मृत पुत्र उत्पन्न होता है। ब्राह्मण का विवाह कराने से उसकी शुद्धि होती है। हरिवंश का यथाविधि श्रवण तथा यथाविधि श्रीमहारुद्र का जप करना चाहिये। शतांश से घृतप्लुत दूर्वा से होम करना चाहिये और दक्षिणा में ग्यारह निष्क सोने के सिक्के देने चाहिये। अपने वित्त के अनुसार ११ पशु भी दान देना चाहिये। अन्य ब्राह्मणों के लिये भी दक्षिणा देवे। तत्पश्चात् पति-पत्नी को वरुण देवता के मन्त्रों से स्नान करना चाहिये और आचार्य को वस्त्र तथा अलङ्कार का दान देना चाहिये।

तत्रादौ हरिवंशश्रवणविधानम्।

कौस्तुभे : दम्पत्योरनुकूले सुदिने कृतनित्यक्रियः देवालयादिपुण्यस्थले स्वगृहे वा स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य।

इसमें सबसे पहले हरिवंश श्रवण का विधान कहते हैं। कौस्तुभ में कहा गया है कि पति-पत्नी के अनुकूल अच्छे दिन में नित्य क्रिया करके देवालय आदि पुण्यस्थल में या अपने घर में अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम करके :

देशकालौ स्मृत्वा अनेकजन्मार्जितानपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातनिक्षेपहरण विप्ररत्नापहरणादिदुरितसमूलनाशद्वारा दीर्घायुर्बहुपुत्रादिसन्ततिप्राप्तिकामो हरिवंशं श्रोष्यामि। तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं सर्वं कुर्यात्। ततो विभवानुसारेण श्रुताध्ययनसम्पन्नं ब्राह्मणमासने उदङ्मुखमुपवेश्य स्वयं

प्राङ्मुख उपविश्य पादप्रक्षालनं कृत्वा गन्धादिभिः सम्पूजयेत्। ततो वरणद्रव्याणि गृहीत्वा।

यह संकल्प करके गणपति पूजन से लेकर नान्दी श्राद्ध पर्यन्त सब कृत्य करे। इसके बाद अपने धन के अनुसार श्रुताध्ययन से सम्पन्न ब्राह्मण को आसन पर उत्तर मुख बैठाकर और स्वयं पूर्वमुख बैठकर पाद-प्रक्षालन करके गन्धादि से पूजा करे। इसके बाद वरण द्रव्यों को लेकर :

देशकालौ संकीर्त्य दीर्घायुष्बहुपुत्रकामनयाऽमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धपुष्पस्वर्णमुद्रिकासनकमण्डलुताम्बूलवासोभिर्हरिवंशश्रवणार्थं श्रावयितारं त्वामहं वृणे।

इति वृत्वा 'ॐ वृतोऽस्मि' इति प्रतिवचनानन्तरं वस्त्रालङ्कारैः सम्पूज्य पुस्तकं दद्यात्। ततः आचार्यः प्रतिदिनं पुस्तकं सम्पूज्य 'ॐ नारायणं नमस्कृत्यानन्तरं स्वगुरून्प्रणम्य स्पष्टपदाक्षरं वाचयेत्। दम्पती प्रतिदिने।

इससे वरण करके 'ॐ वृतोऽस्मि' इस उत्तर के बाद वस्त्र तथा अलङ्कारों से पूजा करके पुस्तक देवे। इसके बाद आचार्य प्रतिदिन पुस्तक की पूजा करके 'ॐ नारायण' को नमस्कार करके और अपने गुरु को प्रणाम करके स्पष्ट पद और अक्षरों सहित पुराण को बांचे। पति-पत्नी प्रतिदिन :

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १ ॥

इस मन्त्र के जप के साथ एकाग्रचित्त होकर पति-पत्नि पुराण का श्रवण करें।

तैलताम्बूलक्षौरमैथुनखट्वाशयनानि यावत्समाप्ति वर्जयन्तौ हविष्यं भुञ्जीयाताम् वाचकमपि प्रत्यहं पायसादिना भोजयेत्। ग्रन्थसमाप्तौ वाचकाय स्वलंकृतां पयस्विनीं सवत्सां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं कांस्यपित्तलदोहिनीं वस्त्रयुतां स्वर्णाभूषणादिदक्षिणां च दत्वा परितोष्य न्यूनं सम्पूर्णं वाचयित्वाशतं विप्रान् चतुर्विंशतिमिथुनानि च पायसान्नेन भोजयेत्। एवं कृते पुत्रो भवति न सन्देहः। इति हरिवंशश्रवण विधानम् ॥ १ ॥

तेल, ताम्बूल, क्षौर कर्म, मैथुन, खाट पर शयन आदि को हरिवंश की समाप्ति होने तक वर्जित रखते हुए हविष्य का भोजन करे। वाचक को भी प्रतिदिन खीर आदि से भोजन कराये। ग्रन्थ समाप्ति पर वाचक को उत्तम

अलङ्कारों से अलंकृत दूध देनेवाली सवत्सा ऐसी गाय दे जिसके सींगें सोने से तथा पैर चाँदी से मढ़े हों, पीठ पर ताँबे का झूला लगा हो और उसके साथ दूध दूहने के लिये काँसे या पीतल का बर्तन भी हो। इसके अतिरिक्त वस्त्र, स्वर्ण और आभूषणों की दक्षिणा देकर भी उसे सन्तुष्ट करे। सम्पूर्ण वाचन कराकर कम से कम १०० ब्राह्मणों को तथा चौबीस पति-पत्नी के जोड़ों को खीर से भोजन कराये। ऐसा करने पर पुत्र होता है इसमें सन्देह नहीं है। इति हरिवंश श्रवण विधान।

अथ सन्तानगोपालमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में अनुष्टुप् मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १ ॥ इत्युनुष्टुभो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोगः अस्य गोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। कृष्णो देवता। मम पुत्रकामनार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ नारदऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ कृष्णदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः ॥ १ ॥ गोविन्द तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ वासुदेव मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ जगत्पते अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ देहि मे तनयं कृष्ण कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ त्वामहं शरणंगतःकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः ॥ १ ॥ गोविन्द शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ वासुदेव शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ जगत्पते कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ देहि मे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ॐ विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः। प्रददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके बहिःपूजा करे। कहा भी गया है कि पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की पद्धति मार्ग से स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि पर-

तत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नवपीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥ १ ॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रह्व्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ॥ ९ ॥

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर :

ॐ नमो भगवते श्रीगोपालाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करे (सन्तान गोपाल पूजन यन्त्र देखिये चित्र ४२) : पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः। अनुज्ञां देहि गोपाल परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इससे आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य में :

ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र। ॐ गोविन्द शिरसे स्वाहा[2]। शिरःश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वासुदेव शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ जगत्पते कवचाय[4] हुम्। कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ देहि मे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रत्रयश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ त्वामहं शरणं गत अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ॥ ६ ॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। **इति प्रथमावरण ॥ १ ॥**

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके अष्टदलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ कालिन्द्यै नमः[७] । कालिन्दीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ नाग्नजित्यै नमः[८] । नाग्नजितीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ मित्रविन्दायै नमः[९] । मित्रबिन्दाश्रीपा० ॥३॥ ॐ चारुहासिन्यै नमः[१०] । चारुहासिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ रोहिण्यै नमः[११] । रोहिणीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ जाम्बवत्यै नमः[१२] । जाम्बवतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः[१३] । रुक्मिणीश्रीपा० ॥ ७ ॥ सत्यभामायै नमः[१४] । सत्यभामाश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों पटरानियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ ऐरावताय नमः[१५] ॥ १ ॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः[१६] ॥ २ ॥ ॐ वामनाय नमः[१७] ॥ ३ ॥ ॐ कुमुदाय नमः[१८] ॥ ४ ॥ ॐ अञ्जनाय नमः[१९] ॥५॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः[२०] ॥ ६ ॥ ॐ सार्वभौमाय नमः[२१] ॥ ७ ॥ ॐ सुप्रतीकाय नमः[२२] ॥ ८ ॥

इससे आठों दिग्गजों की पूजा करे और पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं लक्षजपे पुत्रप्राप्तिर्भवति । तथा च 'लक्षं जपोऽयुतं होमस्तिलैर्मधुरसंयुतैः । अर्चा पूर्वोदिता चैव मन्त्रः पुत्रप्रदो नृणाम् ॥१॥' इति सन्तानगोपालमन्त्रपुरश्चरणप्रयोगः ॥ २ ॥

इसका पुरश्चरण १ लाख जप करने से पुत्रप्राप्ति होती है । कहा भी गया है कि 'इस मन्त्र का एक लाख जप, मधु, घी एवं शकर मिश्रित तिलों से १० हजार होम तथा पूर्वोक्त रीति से (भगवान् बासुदेव का) पूजन करना चाहिये । इस प्रकार पुरश्चरण करने से यह मन्त्र मनुष्यों को पुत्र देता है । इति सन्तान गोपाल मन्त्र पुरश्चरण प्रयोग ॥ २ ॥

अथ पुत्रप्रदाभिलाषाष्टकम् ।

विश्वानर उवाच । एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यंसत्यं नेह नानास्ति किञ्चित् । एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥१॥ एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो नानारूपेष्वेकरूपोस्यरूपः । यद्वत्सपत्यकं

एकोप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥ २ ॥ रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रौप्यं वारां पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ । यद्वत्तद्वद्विष्वगेव प्रपञ्चो यस्मिञ्ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ॥ ३ ॥ तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः । पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यद्वच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥ ४ ॥ शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रेरघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् । व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग्वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ५ ॥ नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताऽखिलस्य । नो योगीन्द्रानेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ॥ ६ ॥ नो ते गोत्रं नाऽपि जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः । इत्थं भूतोपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद्भजे त्वाम् ॥ ७ ॥ त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः । त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोस्मि ॥ ८ ॥

स्तुत्वेति भूमौ निपपात विप्रः स दण्डवद्यावदतीव हृष्टः । तावत्स बालोखिलवृद्धवृद्धः प्रोवाच भूदेववरं वृणीहि ॥९॥ तत उत्थाय हृष्टात्मा मुनिर्विश्वानरः कृती । प्रत्यब्रवीत्किमज्ञातं सर्वज्ञस्य तव प्रभो ॥ १० ॥ सर्वान्तरात्मा भगवाञ्छर्वः सर्वप्रदो भवान् । याच्ञां प्रति नियुक्तं मां किमीशो दैन्यकारिणीं ॥ ११ ॥

इस प्रकार स्तुति करके वह ब्राह्मण प्रसन्न होकर पृथिवी पर दण्डवत् गिर पड़ा । तब वह बालक, जो समस्त वृद्धों में वृद्ध था, बोला : हे ब्राह्मण ! वर माँग ।' तब मुनि विश्वानर कृतार्थ हो उठकर बोले : हे प्रभो, आप तो सर्वज्ञ हैं । आपके लिये क्या अज्ञात है ? आप सभी की अन्तरात्मा हैं । आप भगवान् शर्व और सब कुछ देनेवाले हैं । यह दरिद्रता प्रदर्शित करनेवाली याच्ञा के प्रति आप मुझे नियुक्त क्यों कर रहे हैं ?'

इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवो विश्वानरस्य ह । शुचेः शुचिव्रतस्याथ शुचि स्मित्वाब्रवीच्छिशुः ॥ १२ ॥ बाल उवाच । त्वया शुचे शुचिष्मत्यां योभिलाषः कृतो हृदि । अचिरेणैव कालेन स भविष्यत्यसंशयः ॥ १३ ॥ तव पुत्रत्वमेष्यामि शुचिष्मत्यां महामते । ख्यातो गृहपतिर्नाम्ना शुचिः सर्वामरप्रियः ॥ १४ ॥ अभिलाषाष्टकं पुण्यं स्तोत्रमेतत्त्वयेरितम् । अब्दं त्रिकालपठनात्कामदं शिवसन्निधौ ॥ १५ ॥ एतत्स्तोत्रस्य पठनं पुत्रपौत्रधनप्रदम् । सर्वशान्तिकरं वापि सर्वापत्परिणाशनम् ॥ १६ ॥ स्वर्गापवर्गसम्पत्तिकारकं नात्र संशयः ।

पवित्रव्रती और पवित्र विश्वानर की इस वाणी को सुनकर पवित्र मुस्कान के साथ वह बालक देव बोले : 'हे शुचे ! तुम अपने हृदय में शुचिष्मती जो अभिलाषा रख रहे हो वह शीघ्र ही निश्चित रूप से पूर्ण हो जायगी । हे महामते ! मैं तुम्हारा पुत्र होकर शुचिष्मती में जन्म लूंगा और तुम समस्त देवताओं के प्रिय शुचि नामक गृहस्थ के रूप में प्रसिद्ध होगे । तुमने जो यह मेरा स्तवन किया है वह 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' के नाम से प्रसिद्ध होगा । शिव के सान्निध्य में एक वर्ष तक तीनों सन्ध्याओं में पाठ करने से यह अभीष्टों को पूर्ण करता है । इस स्तोत्र को पढ़ने से पुत्र, पौत्र तथा धन की प्राप्ति होती है । यह सभी प्रकार की शान्ति प्रदान करनेवाला एवं सभी विपत्तियों का नाशक स्वर्ग मोक्ष तथा सम्पत्तियों को देनेवाला है, इसमें कोई संशय नहीं है ।

प्रातरुत्थाय सुस्नातो लिङ्गमभ्यर्च्य शाम्भवम् ॥ १७ ॥ वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्रवान्भवेत् । वैशाखे कार्तिके माघे विशेषनियमैर्युतः ॥१८॥ यः पठेत्स्नानसमये लभते सकलं फलम् । कार्तिकस्य तु मासस्य प्रसादादहमव्ययः ॥ १९ ॥ तत् पुत्रत्वमेष्यामि यस्त्वन्यस्तत्पठिष्यति । अभिलाषाष्टकमिदं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ २० ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन महावन्ध्याप्रसूतिकृत् । स्त्री वा पुरुषेणापि नियमाल्लिङ्गसन्निधौ ॥ २१ ॥ अब्दं जपमिदं स्तोत्रं पुत्रदं नात्र संशयः । इत्युक्त्वान्तर्दधे बालः सोपि विप्रो गृहं गतः ॥ २२ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे विश्वेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

'प्रातः उठकर अच्छी तरह स्नान करके शाम्भव लिङ्ग की पूजा करके एक वर्ष तक इस स्तोत्र का जप करनेवाला अपुत्र हो तो पुत्रवान् होता है । वैशाख, कार्तिक तथा माघ में विशेष नियमों से युक्त होकर स्नान के समय जो इसे पढ़ता है वह समस्त फल प्राप्त करता है । कार्तिक मास में जो कोई इस स्तोत्र को पढ़ता है उसके पुत्र के रूप में मैं अव्यय होकर भी जन्म लूंगा । यह अभिलाषाष्टक है । इसे जैसे-तैसे को कभी नहीं देना चाहिये और प्रयत्नपूर्वक इसे गुप्त रखना चाहिये । यह महाबन्ध्या को भी पुत्र प्रदान करनेवाला है । स्त्री या पुरुष नियम से यदि शिवलिङ्ग के सामने एक वर्ष पर्यन्त जप करे तो यह स्तोत्र उनके लिये पुत्रदायक होगा इसमें कोई संशय नहीं है ।' यह कहकर वह बालक अन्तर्धान हो गया । वह ब्राह्मण भी अपने घर चला गया। इति श्रीस्कन्दपुराण के अन्तर्गत काशीखण्डोक्त विश्वेश्वर स्तोत्र समाप्त ।

अन्यः पुत्रप्राप्तिप्रयोगः ।

१२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है ।

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरुकुरु स्वाहा' इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः । अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शङ्करो दितम् ॥ १ ॥ इति द्वादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

आम के पेड़ पर चढ़ कर एकाग्रचित्त होकर जप करने से पुत्रहीन को पुत्र प्राप्त होता है । यह शङ्कर द्वारा कहा हुआ कभी असत्य नहीं हो सकता । इति द्वादशाक्षर मन्त्र प्रयोग :

पुत्रोत्पत्तिकारकयन्त्रम् ।

यन्त्र इस प्रकार है :

शङ्करमातुशङ्करपितु

(बायें: करैवरनलक्ष्मीपति; दायें: शङ्करयावैचारयोंदीप; नीचे: [illegible])

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

इस यन्त्र को अच्छे नक्षत्र और शुभ दिन में गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूप देकर सोने या चाँदी में मढ़वाकर वन्ध्या स्त्री के कण्ठ में बांधना चाहिये । जिस स्त्री के लड़का न होता हो या होकर मर जाता हो तो उसे इसके प्रभाव से निश्चयपूर्वक पुत्र होगा और जीवित रहेगा, इसमें सन्देह नहीं है । इस यन्त्र को महान प्रभावकारी जानना चाहिये ॥१॥

अथ मृतवत्सा लक्षणं यन्त्रं च (दत्तात्रेय तन्त्रे:) :

गर्भः सञ्जातमात्रो वा पक्षे मासे च वत्सरे । म्रियते द्वित्रिवर्षादियस्याः सा मृतवत्सका ॥ १ ॥ मार्गशीर्षे तथा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे । नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयैश्च कारयेत् ॥ २ ॥ कदलीस्तम्भसंयुक्तं नव-

रत्नसमन्वितम् । सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणस्थितमण्डलम् ॥ ३ ॥ तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्ते नामविश्रुताम् । गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपनैवेद्यसंयुतैः ॥४॥ वाराही च तथा चैन्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा । कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः ॥ ५ ॥ पूजयेन्मन्त्रभावेन तथा सप्तदिनावधि । अष्टमेऽह्नि सुतं चैकं कन्यानवकसंयुतम् ॥ ६ ॥ भोजयेद्दक्षिणां दद्यात्पश्चात्कृत्वाभिवादनम् । विसृज्य देवतां चाथ नद्यां तत्कलशादिकम् ॥ ७ ॥ प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् । सिद्धियोगो ह्ययं ज्ञेयो गोपनीयः प्रयत्नतः ॥ ८ ॥

मृतवत्सालक्षण और यत्न :

दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है कि, जिस स्त्री का गर्भ रहते ही गिर जाय, या गर्भ में बालक खण्डित हो जाय, या बालक उत्पन्न होते ही मर जाय, या दो-तीन वर्ष का बालक होकर मर जाय तो उस स्त्री को मृतवत्सा कहते हैं।

इसका उपाय : शङ्करजी द्वारा कहा गया यह योग करना चाहिये : अगहन मास या ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को घर लीप कर नवीन कलश स्थापित करे और उसमें चन्दन आदि से युक्त सुगन्धित जल भरे। उसके आगे षट्कोण यन्त्र लिखकर चारों ओर केले के खम्भे गाड़ दे। नवरत्नों की बन्दनवार लगाकर सुवर्ण की अँगूठी यन्त्र के बीच रक्खे और एकाग्रमन से गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप और नैवेद्य से इन देवियों की भक्तिभाव से पूजा करे : वाराही, ऐन्द्री, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी और वैष्णवी। इन माताओं का उपरोक्त यन्त्र के षट्कोण दलों में मन्त्रभाव से सात दिन तक पूजन करे। आठवें दिन एक कुमार और ९ कुमारियों को भोजन कराकर दक्षिणा दे। फिर उनको प्रणाम कर देवियों का विसर्जन करके कलश का नदी में विसर्जन करे। प्रत्येक वर्ष इस भाँति अनुष्ठान करने से दीर्घजीवी पुत्र उत्पन्न होता है। सद्यः सिद्धिप्रद यह प्रयोग यन्त्र सहित गुप्त रखना चाहिये। इसका मन्त्र यह है :

ॐ परब्रह्मपरमात्मने अमुकीगृहे दीर्घजीविसुतं कुरुकुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का दश हजार जप करने से सिद्धि होती है।

काकवन्ध्यालक्षणं यत्नं च।

पूर्वं पुत्रवती या सा पश्चाद्वन्ध्या भवेद्यदि। काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥ १ ॥ विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा माहिष

दुग्धके। महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ॥ २ ॥ एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्ययुक्तं च पूर्ववत्। सा गर्भं लभते नारी काकवन्ध्या सुशोभनम् ॥ ३ ॥

काकवन्ध्या लक्षण और यत्न :

जो एक ही बार सन्तान उत्पन्न करने के बाद वन्ध्या हो जाय उसको काकवन्ध्या कहते हैं। अब उसकी चिकित्सा कहता हूं।

इसका उपाय : विष्णुकान्ता को जड़सहित भैंस के दूध में पीस लेने के बाद भैंस के ही मक्खन के साथ ऋतुस्नान के बाद सात दिन खाने और पूर्व के समान हलका भोजन करने से तो काकवन्ध्या नारी सुन्दर गर्भ धारण करती है।

इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो शक्तिरूपाय अमुक गृहे पुत्रं कुरुकुरु स्वाहा।

१०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है।

अश्वगन्धीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे। योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ॥ १ ॥ सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या न संशयः। यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥ २ ॥

पुष्पनक्षत्रयुक्त रविवार के दिन असगन्ध की जड़ लाकर भैंस के दूध के साथ आधे पलभर सदा भक्षण करे। इस भाँति ७ दिन के सेवन करने से काकवन्ध्या नारी निश्चय गर्भ को धारण करती है। मेरे द्वारा कहे गये इस मन्त्र को ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये।

औषधिप्रयोगो यथा। तत्रादौ बन्ध्याशुद्धिप्रयोगः (तन्त्रसारे)।

एकविंशद्दिनं यावद्दुग्धेन सह मेथिकाम्। मेथी तोलकमेवं च खण्डकं तोलकद्वयम् ॥ १ ॥ घृतं तोलकमेकं च पिबेद्दुग्धेन मिश्रितम्।

औषधि प्रयोग इस प्रकार है : इसमें सर्वप्रथम तन्त्रसार के अनुसार बन्ध्याशुद्धि : २१ दिन तक दूध के साथ मेथी को पीना चाहिये। मेथी १ तोला, शकर १ तोला, तथा घी १ तोला—यह सब दूध के साथ मिलाकर पीना चाहिये।

मृतवत्सा मृतगर्भा काकबन्ध्या तथैव च ॥ २ ॥ पुत्रहीना च बन्ध्या च पञ्च चैवं प्रकीर्तिताः। संहरेत्सर्वदोषांश्च मेथीभक्षणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ नाडीशुद्धायां स्त्रियामुपरिऋतुकालमिदमौषधं देयम्।

मृतवत्सा, मृतगर्भा, काकबन्ध्या, पुत्रहीना, तथा बन्ध्या—इस प्रकार

पाँच प्रकार की बन्ध्या कही गई हैं। मेथी खाना सर्वोत्तम है। यह सभी दोषों का हरण कर लेता है। स्त्री की नाड़ी शुद्ध हो जाने पर ऋतुकाल के बाद यह औषधि देनी चाहिये।

पलाशपत्रयोगः।

दत्तात्रेयतन्त्रे। पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम्। ऋत्वन्ते तानि पीतानि बन्ध्या भवति गर्भिणी ॥ १ ॥ तत्र मन्त्रः।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि पलाश का एक पत्ता गर्भिणी के दूध के साथ ऋतु के अन्त में पीने से बन्ध्या गर्भिणी हो जाती है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमः सिद्धिरूपाय अमुकी पुत्रं कुरुकुरु स्वाहा।

१०८ बार जप करने से सिद्धि होती है।

चिकित्साशास्त्र के अनेक प्रयोग :

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत्। एकवर्णा गवा क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ १ ॥ ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्द्धं तद्दिनेदिने। क्षीरशाल्यान्नमुद्गांश्च लघ्वाहारं प्रदापयेत्। एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥ २ ॥ श्वेतायाः कंटकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत्। न कर्म कारयेत् किञ्चिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ॥ ३ ॥ शिफाबर्हिशिखायास्तु क्षीरेण परितोपेषितम्। पिबेदृतुमती नारी गर्भधारणहेतवे ॥ ४ ॥ अश्वगन्धाकषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम्। ऋतुस्नानताङ्गना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ॥ ५ ॥

समूल सर्पाक्षी (लक्ष्मणा) रविवार को उखाड़ लाये, उसे एक वर्णवाली गाय के दूध के साथ कन्या के द्वारा पिसवाये और ऋतुकाल में प्रतिदिन आधा-आधा पल बन्ध्या को पिलाये। उसे दूध, शालिचावल तथा मूंग का लघुआहार देवे। इस प्रकार सात दिन तक करने से बन्ध्या भी पुत्र को प्राप्त करती है। इसी प्रकार सफेद पुष्पवाली कण्टकारी को भी गर्भ देनेवाली कहा गया है। इसका सेवन करते समय बन्ध्या को अधिक शीत तथा अधिक गर्मी से बचाना चाहिये और उससे विशेष कार्य भी नहीं कराना चाहिये। गर्भ धारण के लिये मोरपङ्ख का चन्द्राङ्कित भाग दूध के साथ पीसकर पीना चाहिये। ऋतुकाल के बाद अश्वगन्धा का काढ़ा दूध में मिलाकर घी के साथ प्रातःकाल पीने से भी स्त्री गर्भ धारण करती है।

अथ गर्भप्राप्ति यन्त्रम्।

عوا	يوا	سو	ق
وا	وا	وا	وا
و	و	و	و
ے	ے	ے	ے

मेहतरजब्राईलका कौल है कि यह दुवा हज़रत अहमद मुज़तबी महम्मद मुस्तफेसे वास्ते पैदाइश फरजन्दके पहुंची है जिस्के लड़का पैदा न होता हो इस यन्त्र को स्त्री अपनी दाहिनी रान अर्थात् जङ्घा में बाँधै तो इन्शाल्लाफरजन्द अर्थात् लडका नेक जमाल अर्थात् सुन्दर रूपवाला पैदा होगा। अगर शक लावै तो काफर है। इति सन्तानोपायः।

मेहतर जिब्राईल का कौल है कि यह दुआ हजरत अहमद मुजतबी मुहम्मद मुस्तफे से वास्ते पैदाइश फरजन्द के पहुँची है। जिसके लड़का पैदा न होता हो वह स्त्री इस यन्त्र (देखिये चित्र ऊपर) अपनी दाहिनी रान, अर्थात् जांघ में बाँधें तो इन्शा अल्लाह फरजन्द अर्थात् लड़का नेकजमाल अर्थात् सुन्दर रूपवाला पैदा होगा। अगर इसपर शक लाये तो काफिर है। इति सन्तानोपाय।

अथ प्रथमरजस्वलायाः शुभाशुभम्। प्रथमो ज्ञायते कालो रजोदर्शनकारकः। शुभाशुभं प्रयत्नेन लक्षणज्ञा रजस्वला ॥१॥ रवौ वैधव्यमिन्दौ तु सुपुत्र जननी भवेत्। स्वात्महा मङ्गले सौम्ये बहुकन्या न संशयः ॥२॥ गुरौ सुपुत्रतां याति शनौ कुत्सितसन्ततिः। एवं ज्ञात्वा नरो धीमान् प्रायश्चित्तं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवताखण्डे मिश्रतन्त्रे एकादशस्तरङ्गः ॥ ११ ॥

प्रथम रजस्वला के शुभाशुभ लक्षण : रजोदर्शन का प्रथमकाल रजस्वला के शुभाशुभ लक्षणों को व्यक्त करनेवाला होता है। रविवार को प्रथम रजस्वला होनेपर स्त्री विधवा हो जाती है। सोमवार को प्रथम रजस्वला होनेपर स्त्री उत्तम पुत्र उत्पन्न करनेवाली होती है। मङ्गलवार को प्रथम रजस्वला होनेपर वह स्त्री स्वयं की हत्या करनेवाली होती है। बुधवार को

प्रथम रजस्वला होनेवाली स्त्री बहुत कन्याओं को पैदा करनेवाली होती है। बृहस्पतिवार को प्रथम रजस्वला होनेवाली स्त्री उत्तम पुत्रों को जन्म देनेवाली होती है। शनिवार को प्रथम रजस्वला होनेवाली स्त्री निन्दित सन्तानों को जन्म देनेवाली होती है। इस प्रकार जानकर बुद्धिमान प्रायश्चित्त कराये।

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के देवताखण्ड के मिश्रतन्त्र में
एकादशस्तरङ्गः ॥ ११ ॥

देवताखण्ड समाप्त।

वाराणसी तान्त्रिक टेक्स्टस सिरीज नं० ६

श्रीकृष्णयामल महातन्त्रम्

सं० - डॉ० शीतला प्रसाद उपाध्याय

(प्राध्यापक शैवागम सं० सं० वि० वि० वाराणसी)

तान्त्रिक साहित्य में यामलतन्त्रों का प्रमुख स्थान रहा है रुद्रयामल तन्त्र के प्रकाशन के बाद यह दूसरा यामल ग्रन्थ जो आपके समक्ष प्रकाशित होने जा रहा है।

आज के गवेषणात्मक युग में एक ऐतिहासिक प्रश्न यह है कि वैष्णव साधना साहित्य में तान्त्रिक दृष्टि कैसे प्रविष्ट हुई? प्राचीन काल से ही वैष्णव सम्प्रदाय की साधना में तत्त्व के ऊपर और लीला रहस्य के मूल में तान्त्रिक रहस्य किस-किस रूप में उपस्थित रहा है? इन सबके समाधान के लिए आवश्यक अन्य सामग्रियों में इस तन्त्र ग्रन्थ की उपादेयता स्वतः सिद्ध है, जैसा कि म० म० प० गोपीनाथ कविराज महोदय ने अपने ग्रन्थ "तान्त्रिक साधना और सिद्धान्त" (पृ० - २६०) में कहा है....."श्रीकृष्ण यामल महातन्त्र नामक ग्रन्थ में साधना और योग की दृष्टि के साथ वैष्णव दृष्टि कैसे मिल गयी थी, इसका पता चलता है....."।

इतना महत्वपूर्ण ग्रन्थ होते हुए भी यह अब तक मूल रूप में उपलब्ध नहीं रहा। यह संस्करण यथा उपलब्ध पाण्डुलिपियों आधार पर तैयार किया गया है। इसमें कुल २८ अध्याय हैं। प्रारम्भ में विस्तृत भूमिका दी गई है जिसके कुछ पृष्ठ हिन्दी भाषा में भी हैं।

इस तन्त्र ग्रन्थ के प्रकाशन से तान्त्रिक साहित्य का भण्डार अवश्यमेव समृद्ध हो सकेगा तथा यह कार्य साधकों, विद्वानों और अनुसन्धाताओं के लिए अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होगा।

ग्रन्थ अत्यन्त सीमित संख्या में छप रहा है। अतः पाठकों से निवेदन है कि ५०/- एडवांस भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा इस प्रकार एडवांस भेजने वालों को हम ग्रन्थ पर ३५% कमी काट कर वी. पी. से भेजेगें, डाक खर्च आप को देना होगा।

अत्यन्त शीघ्र प्रकाशि

तन्त्र ग्रन्थमाला ७

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

रामकुमार राय

प्राच्य प्रकाशन. वाराणसी